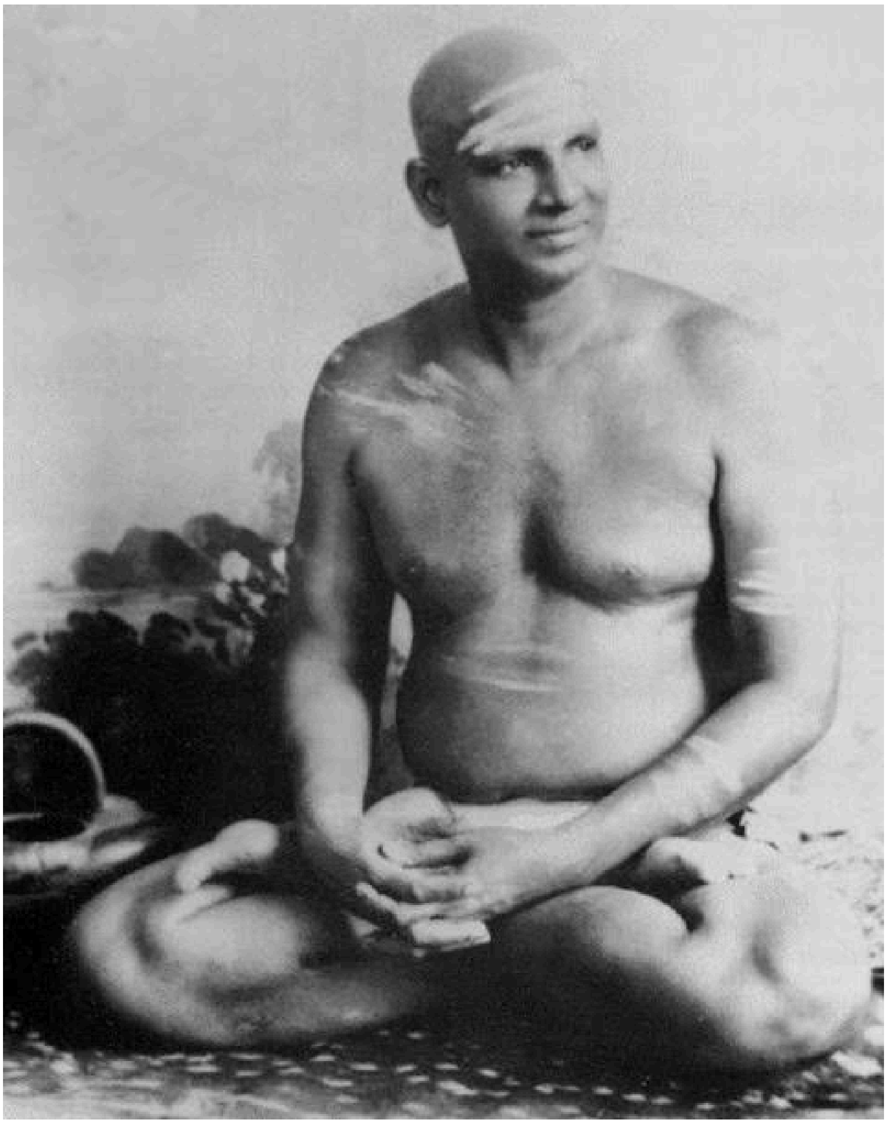




हिन्द पॉकेट बुक्स धर् मऔर सर्ाज

डॉ० सर्वेपल्लि राधाकृष्णन् ्भारत के प्रथर् उप-राष्ट्रपतत (1952-1962) और द्वर्वतीय राष्ट्रपतत रिे। र्वे भारतीय संस्कृतत के संर्विाक, प्रख्यात शिक्षावर्वद, र्िान दाितमनक, एक र्िान ्िेखक और एक आस्थार्वान हिन्दू ्र्वचारक थे। उनके इन्हिं गुणों के कारण सन् ्1954 र्ें भारत सरकार ने उन्िें सर्वोच्च सम्र्ान भारत रत्न से अिंकृत ककया था। उनका जन्र्हदन (5 शसतम्बर) भारत र्ें शिक्षक हदर्वस के रूप र्ें र्नाया जाता ्िै।

धर् मऔर सर्ाज

डॉ. सरे्वेपलिह राधाकृष्णन

हिन्द पॉकेट बुक्स

पेंगुइनरैंडरि्ाउसल्इम्प्रंट

हिन्द पॉकेट बुक्स

यूएसए | कनाडा | यूके | आयरिडैं | ऑस्ट्रेशिया
न्यूजीडैं | भारत | दक्षक्षण अफ्रीका | चीन

हिन्द पॉकेट बुक्स, पेंगुइन रैंडर् िाउस ग्रुप ऑफ कम्पनीज़ का हिस्सा िै,
ल्जसका पता global.penguinrandomhouse.com पर शर्िेगा

पेंगुइन रैंडर् िाउस इंडडया प्रा. शि.,
चौथी र्ंल्जि, कैवपटि टार्वर-1, एर् जी रोड,
गुड़गांर्व 122 002, िररयाणा, भारत

पेंगुइन

रैंडर् िाउस

इंडडया

'RELIGION AND SOCIETY' का हिंदंह अनुर्वाद
सातर्वाँहिन्दह संस्करण हिन्द पॉकेट बुक्स द्र्वारा 1975 र्ें प्रकाशित
प्रथर् हिन्दह संस्करण हिन्द पॉकेट बुक्स र्ें पेंगुइन रैंडर् िाउस द्र्वारा 2023 र्ें प्रकाशित

अनुर्वादक वर्वराज एर्० ए०

10 98765432

ISBN9789353493585

र्ुद्रक: रेप्रो इंडडया शिशर्टेड

www.penguin.co.in

क्रम

यि पुस्तक 1942 की सहदमयों र्ें किकत्ता
और बनारस वर्वश्र्ववर्वद्यायों र्ें
.हदए गए भाषणों की सार्ग्री
पर आधाररत िै।

ेखिकीय हटप्पणी

द्वर्वतीय संस्ंकरण के अर्वसर पर र्नैं
भारतीय राजनीतत र्ें िाि र्ें
घहटत घटनाओं के वर्वषय
र्ें एक उत्तर िेख
जोड़ हदया िै।

स० रा०

1: धर् मकी आर्वश्यकता

वर्तर्मान संकट - सार्ाल्जक व्याधध - युद्ध और नई व्यर्वस्था - धर्-मतनरपेक्षता ि◌र्ारे युग की र्ुख्य

दुबुिमता - द्र्वन्द्र्वात्र्क भौततकर्वाद - आध्याल्त्र्क पुनरुज्जीर्वन की आर्वश्यकता

सबसे ि◌पि◌े र् ◌ैकिकत्ता वर्वश्र्वववर्वद्यािय की सीनेट के सदस्यों के प्रतत ि◌ाहदमक आभार व्यक्त करता ि◌◌ं◌ू कक उन्ि◌ोंने ◌ेवर्वश्र्वववर्वद्यािय के साथ र्ेरे सकक्रय सियोग के वपछिे बीस र्वषों र्ें र्ुझे ◌ेइतने ◌ेवर्वर्वषोधधकार प्रदान ककए ि◌ैं, ल्जनर्ें 'करि◌् भाषण-र्ि◌ा' के शिए र्ुझे ◌ेचुनना भी एक ि◌ै। इस भाषण-र्ि◌ा की सम्र्ातनत परम्परा को जारह रखने के शिए तनर्न्त्रत ि◌ोना एक ऐसा सम्र्ान ि◌ै, ल्जसपर कोई भी वर्वद्र्वान गर्व मअनुभर्व कर सकता ि◌ै। र्ेरे शिए यि वर्वर्वषे रूप से आनन्द की बात ि◌ै कक र्ुझे ◌ेएक ऐसी भाषण-र्ि◌ा र्ें बोिनेका सुअर्वसर प्राप्त ि◌ो, ल्जसे स्र्वगीय सर आि◌ुतोष र्ुखजी ने अपनी स्र्वर्गीया पुत्री के नार् पर स्थावपत ककया था।

'भारतीय जीर्वन और वर्वचार के ककसी ि◌ि◌ू ◌ूपर तुिनात्र्क दृल्ष्ट से वर्वर्वेचन' एक वर्वस्तृत वर्वषय ि◌ै, जो र्ि◌ारे सार्ने प्रस्तुत ककया गया ि◌ै और ि◌र् इसका अथ-मतनरूपण काफी उदार दृल्ष्ट से कर सकतेि◌ैं। र्ैंने ◌ेयि वर्वषय चुना ि◌ै, 'धाशर्कम आदिोंं की दृल्ष्ट से सर्ाज का पुनगठमन'। आजकि के कहठन सर्य र्ें यि वर्वषय र्ुझे अत्यन्त र्ित्र्व का ि◌गता ि◌ै।

औरंगज़ेब ने अपनेएक पत्र र्ें अपनेअध्यापक र्ुल्िा सािेब को शिखा ि◌ै, "तुर्ने ◌ेर्ेरे वपता ि◌ि◌ाजिां से कि◌ा था कक तुर् र्ुझे ◌ेदिनम पढाओगे। यि ठीक ि◌ै, र्ुझेभिह भांतत याद ि◌ै, कक तुर्ने ◌ेअनेक र्वषों तक र्ुझे ◌ेर्वस्तुओं के सम्बन्ध र्ें ऐसे अनेक अव्यक्त प्रश्न सर्झाए, ल्जनसे र्न को कोई सन्तोष निहं ◌ंि◌ोता और ल्जनका र्ानर्व-सर्ाज के शिए कोई उपयोग निहं ◌ंि◌ै। ऐसी थोथी धारणाएंऔर खिाह कलपनाएं, ल्जनकी केर्वि यि वर्वर्वषेता थी कक उन्िें सर्झ पाना बिुत कहठन था और भिू पाना बिुत सरि... क्या तुर्ने ◌ेकभी र्ुझेयि शसखाने की चेष्टा की कक ि◌ि◌र पर घेरा कैसे डािा जाता ि◌ै या सेना को ककस प्रकार व्यर्वल्स्थत ककया जाता ि◌ै? इन र्वस्तुओंके शिए र् ◌ै अन्य ि◌ोगों का आभारह ि◌◌ं◌ू, तुम्िारा बबिकुि निहं।[1] इन भाषणों र्ें र्ेरा एक ि◌क्ष्य यि बताना भी ि◌ोगा कक आज जो संसार इतनी संकटपूण मदिा र्ें फंसा ि◌ै, र्वि इसशिए कक र्वि 'ि◌ि◌र पर घेरा डािने' या 'सेना को व्यर्वल्स्थत करने'◌े के वर्वषय र्ें सब कुछ जानता ि◌ै और जीर्वन के र्ूलयों के, दिनम और धर् मके केन्द्रहभूत प्रश्नों के सम्बन्ध र्ें, ल्जनको कक यि 'थोथी धारणाएं और खिाह कलपनाएं,' किकर एक ओर ि◌टा देता ि◌ै, बिुत कर् जानता ि◌ै।

र्वतर्मान संकट

ि◌र् र्ानर्व-जातत के जीर्वन र्ें एक सबसे अधधक तनश्चायक सर्य र्ें रि रि ि◌ैं। र्ानर्व- इततिास के अन्य ककसी भी सर्य र्ें इतने ि◌ोगों के शसर पर इतना बड़ा बोझ निहंथा, या र्वे इतने ◌ेयिेणापूण मअत्याचारों और र्नोर्वेदनाओं के कष्ट निहं पा रि◌े थे। ि◌र् ऐसे संसार र्ें जी रि◌े ि◌ैं, ल्जसर्ें वर्वषाद सर्वव्मयापी ि◌ै। परम्पराएं, संयर्

---

[1] 'एर्ेऱ्ज़रहआफर्वलडस्मगे्रेटेटसमएर्०शिंकंन सुस्टर द्र्वारा सम्पाहदत (1941), पृष्ठ 60-61।

और स्थावपत कानून और व्यर्वस्था आश्चयजमनक रूप से शिधथि ि◌ो गए ि◌ैं। जो वर्वचार कि तक सार्ाल्जक भद्रता और न्याय से अवर्वच्छेद्य सर्झे जाते थे और जो ि◌ताल्ददयों से ि◌ोगों के आचरण का तनदेिन और अनुिासन करनेर्ें सर्थ मरिे थे, ◌े आज बि गए ि◌ैं। संसार गितफिशर्यों, कटुताओंऔर संघषों से वर्वदहण मिो गया ि◌ै। सारा र्वातार्वरण संदेि, अतनल्श्चतता और भवर्वष्य के अत्यधधक भय से भरा ि◌ै। ि◌र्ारह जातत के बढते ि◌ुए कष्टों, आधथकम दररद्रता की तीव्रता, अभूतपूर्व मपैर्ाने पर ि◌ोनेर्वािे युद्धों, उच्चपदस्थ ि◌ोगों के र्तभेदों के कारण, और ल्क्त और सत्ताधारह ि◌ोगों की, जो बिती ि◌ुई व्यर्वस्था को बनाए रखना, और पंगु सभ्यता को ककसी भी ि◌ित म पर बचाना चािते ि◌ैं,'[2] जड़ता के कारण सारे संसार र्ें एक ऐसी भार्वना जाग रिह ि◌ै, जो सारतः क्रांततकारह ि◌ै। 'क्राल्न्त' ि◌दद का अथ मसदा भीड़ की हिंसा और ि◌ासक र्वगों की ि◌त्या ि◌ह निहं सर्झा जाना चाहिए। सभ्य जीर्वन के र्ूि आधारों र्ें तीव्र और प्रबि पररर्वतनम की उग्र ि◌ििासा भी क्राल्न्तकारह इच्छा ि◌ै। 'क्राल्न्त' ि◌दद का प्रयोग दो अथों र्ें ककया जाता ि◌ै। (1) आकल्स्र्क और प्रचंड वर्वद्रोि, ल्जसके पररणार्स्र्वरूप ि◌ासन का तख्ता उिट जाए, जैसा फ्रांसीसी और रूस की बोल्िेवर्वक क्राल्न्तयों र्ें ि◌ुआ था। (2) एक ि◌नैः–ि◌नैः काफी ि◌म्बे सर्य र्ें ि◌ोनेर्वािा सार्ाल्जक सम्बन्धों की एक प्रणािह से दूसरह प्रणािह की ओर संक्रर्ण, जैसे उदािरण के शिए बिहटि औद्योधगक क्राल्न्त। ककसी भी सर्य को 'क्राल्न्तकारह' पररर्वतनम के कारण निहं ◌ंकिा जाता, क्योंकक पररर्वतनम तो इततिास र्ें सदा ि◌ोता ि◌ह रिता ि◌ै, अवपतु पररर्वतनम की तीव्र गतत के कारण कि◌ा जाता ि◌ै। र्वतर्मान युग क्रांततकारह ि◌ै, क्योंकक इसर्ें पररर्वतनम की गतत बिुत तेज़ ि◌ै। चारों ओर सब जगि ि◌र्ें र्वस्तुओंके टूटने–◌े फूटने और सार्ाल्जक, राजनीततक और आधथकम संस्थाओंर्ें पररर्वतनमों की, प्रर्ुख वर्वश्र्वासों और वर्वचारों र्ें, र्ानर्व-र्न की आधारभूत श्रेखणयों र्ें पररर्वतनम की, आर्वाज़ सुनाई पड़ रिह ि◌ै। बुद्धधर्ान, अनुभूतििीि और उद्यर्ी र्नुष्यों का वर्वश्र्वास ि◌ै कक राजनीतत, अथिमास्त्र और उद्योग से सम्बद्ध संस्थाओं और र्वतर्मान प्रबन्धों र्ें किहं ◌ंन किहं ◌ंकुछ बड़ी गिती ि◌ै और यहद ि◌र्ें र्नुष्यता को बचाना ि◌ै तो ि◌र्ें इन प्रबन्धों और संस्थाओंसे छुटकारा पाना ि◌ोगा।

वर्वज्ञानर्वेत्ता ि◌र्ें र्वे वर्वशभन्न ढंग बतातेि◌ैं, ल्जनसे यि पृथ्र्वी नष्ट ि◌ो सकती ि◌ै। यि कभी सुदूरू भवर्वष्य र्ें चन्द्रर्ा के बिुत तनकट आ पिुंचने ◌ेसे या सूय मके ठंडा पड़ जानेसे नष्ट ि◌ो सकती ि◌ै। कोई पुच्छि तारा पृथ्र्वी से आकर टकरा सकता ि◌ै, या स्र्वयंधरती र्ें से ि◌ह कोई जिरहिह गैस तनकि सकती ि◌ै। परन्तु ये सब बिुत दूरू की सम्भार्वनाएं ि◌ैं; जबकक अधधक सम्भाव्यता इस बात की ि◌ै कक र्ानर्व जातत स्र्वयं जान-बूझकर ककए गए कायों से और अपनी र्ूखतमा और स्र्वाथ मके कारण, जो र्ानर्व-स्र्वभार्व र्ें ज़र्बूती से जर्े ि◌ुए ि◌ैं, नष्ट ि◌ो सकती ि◌ै। यि बड़ी करुणाजनक बात ि◌ै कक ऐसे संसार र्ें जो ि◌र् सबके आनन्द ि◌ेने के शिए ि◌ै और जो यहद ि◌र् आजकि युद्ध यन्त्रजात को पूणतमा तक पिुंचने ◌ेर्ें ि◌गाई जा रिह ऊजामओंके केर्वि थोड़े–◌ेसे हिस्से का ि◌ह इसके शिए उपयोग करें तो सबके शिए आनन्दर्य बनाया जा सकता ि◌ै'[3]. ि◌र् र्ृत्युऔर वर्वनाि का तांडर्व चिने दे रिे ि◌ैं। वर्वनाि की एक अन्धी प्ेरेरणा र्ानर्व-जातत पर ि◌ार्वी ि◌ो गई दहखती ि◌ै और यहद इसकी रोकथार् न की गई तो ि◌र् पूण मवर्वनाि की

---

2 बकम से तुिना कील्जए। र्वि कि◌ता ि◌ै कक क्राल्न्तयां ◌ंउन ि◌ोगों द्र्वारा निहं ◌ंउत्पन्न की जातीं, ल्जनके पास सत्ता निहं ◌ंि◌ोती; बल्लक उन ि◌ोगों द्र्वारा की जाती ि◌ैं, ल्जनके ि◌ाथ र्ें सत्ता ि◌ोती ि◌ै और र्वे उसका दुरुपयोग करतेि◌ैं।

3 तुिना कील्जए, "र्नुष्य के शसर्वाय और सर्व प्राणी जानतेि◌ैं कक जीर्वन का उद्देश्य जीर्वन का आनन्द ि◌ेना ि◌ै।"- सैर्ुअि बटिर

ओर एक िम्बी छिांग िगा िेंगे और एक ऐसे बौद्धधक अन्धकार और नैततक बबरमता के किा की ओर बढने की तैयारह कर रिे िोंगे, ल्जसर्ें र्नुष्य की अतीत की अच्छी से अच्छी उपिल्दधयां ध्वस्त िो जाएंगी। इस सबका वर्वषाद िारहररक कष्ट की भांतत िर्ें दुःखी कर रिा िै, िर्ारे र्नों को व्यधधत कर रिा िै और िर्ारे हृदयों को अिांत ककए िै। िर् यन्त्रणापूण मदबार्व के, गिरह धचन्ता के और बिुरुखीन र्ूल्-भंग के युग र्ें रि रिे िैं। संसार एक र्ूच्छाम की-सी दिा र्ें िै। कुछ श्रेष्ठ आत्र्ाओं द्र्वारा एक सुन्दरतर संसार का साक्ष्य िह भवर्वष्य के शिए र्ुरह क्षिा िै। वपछिह दिाल्ददयों र्ें न केर्वि भौततक उन्नतत िुई िै, जो कक आश्चयजमनक िै और प्रत्यक्ष दहख पड़ती िै, अवपतु नैततक बुद्धध और सार्ाल्जक आर्वेि र्ें भी सुतनल्श्चत रूप से वृद्धध िुई िै। वर्वज्ञान और आवर्वष्कारों के पररणार्ों को जीर्वन की सार्ान्य दिाओंर्ें सुधार के शिए प्रयुक्त करने ेकी इच्छा अधधकाधधक बढ रिह िै। र्नुष्य के प्रतत र्नुष्य के सम्बन्धों और दातयत्र्वों के बारे र्ें िर्ारे वर्वचारों र्ें बिुत र्वास्तवर्वक प्रगतत िुई िै। बाि-श्रर् के वर्वरुद्ध ल्जिाद, कारखाना कानून, वृद्धार्वस्था की पेन्िनें, दुघुटमनाओं ंके शिए र्ुआर्वज़ा, ये थोड़े-से उदािरण िैं, ल्जनसे स्पष्ट िोता िै कक सर्ाज र्ें अपनेप्रत्येक सदस्य के प्रतत ल्ज़म्र्ेदारह की भार्वना बढ रिह िै। संसार के इततिास र्ें इससे पििे कभी िांतत के शिए इतनी तीव्र इच्छा और युद्ध के वर्वरुद्ध ऐसी वर्वस्तृत घृणा निहंिुई थी। इस युद्ध र्ें करोड़ों िोगों का प्रततरोधिहन सािस और प्रदिनमिहन

आत्र्बशिदान नैततक बुद्धध और र्ानर्वता के प्रेर्र् की वृद्धध के सूचक िैं। आजकि जो कुछ िो रिा िै, र्वि ग्रेट बिटेन या जर्मनी, सोवर्वयत रूस या संयुक्त राज्य अर्ेररका, ककसी भी एक दे के भाग्य से बिुत ऊपर की र्वस्तु िै। यि सर्ूचे सर्ाज का एक वर्वस्तृत वर्वक्षोभ िै। यि केर्वि युद्ध निहं, अवपतु यि एक वर्वश्र्व-क्रान्त िै, युद्ध ल्जसका एक दौर-र्ात्र िै। यि सम्पूण मवर्वचार और सभ्यता के ढांचे र्ें बड़ा पररर्वतनम िै। यि एक ऐसी संक्रांतत िै, जो िर्ारह सभ्यता के र्ूि तक पिुंचती िै। इततिास ने िर्ारह पीढह को एक इस प्रकार के युग र्ें िा छोड़ा िै और िर्ें यत्न करना चाहिए कक इस क्रांतत को िर् ऐसी दिा र्ें िे जाए, जिा यि उधचत आदिों के शिए उपयोगी शसद्ध िो सके। िर् क्रांतत के र्ाग मको रोक निहं सकते। पुरानी व्यर्वस्था - ल्जसने हिटिरों, र्ुसोशितनयों और तोजोओंको जन्र् हदया था - नष्ट िोकर रिेगी। जो िोग उसके वर्वरुद्ध िड़ रिे िैं, उन्िें यि अनुभर्व करना चाहिए कक र्वे यिहंऔर इसी सर्य स्र्वतन्त्रता की एक नई व्यर्वस्था की नीर्वं रख रिे िैं। िर्ारे ित्रुओंको इसशिए िराया जाना चाहिए क्योंकक र्वे पुरानी व्यर्वस्था से अब भी धचपटे िुए िैं और नई व्यर्वस्था के शिए रास्ता साफ करने र्ें र्ुरह सिायता निहं ंकरते। यहद िर् िाल्न्त जीतना चािते िैं और भवर्वष्य की वर्वपवत्तयों के बीज बोने को रोकना चािते िैं, तो िर्ें र्ानर्व-र्न की कायरतापूण मजड़ता की रोकथार् करनी िोगी। यहद िर् स्थायी िांतत चािते िैं तो िर्ें उन दिाओं को सर्ाप्त करना िोगा, जो युद्धों के कारण िैं, और िर्ें जीर्वन का एक नया रास्ता खोजनेके शिए ईर्ानदारह से कार् करना िोगा, ल्जसका अथ मयि िोगा कक िर् पुराने िोशित आदिों को बशिदान कर दें। जिां ंतक सम्भर्व िो, िर्ें इस वर्वषय र्ें सुतनल्श्चत िोना चाहिए कक िर् युद्ध की उत्तेजना र्ें, कष्टों के दबार्व र्ें और आक्रर्ण के प्रतत क्रोध र्ें अपने ित्रुओंके प्रतत उधचत न्याय को छोड़ न बैठें। िर्ें अर्ानर्वों के प्रतत भी र्ानर्वता बरतना सीखना चाहिए। िर्ें अपनेर्न को सुदूर भवर्वष्य पर केल्न्द्रत रखना सीखना चाहिए और उस भवर्वष्य को अनुभूततिहन वर्वद्र्वेष से आच्छन्न निहं ंिोने ेदेना चाहिए।

इस सर्य संसार एक दोरिी पर खड़ा िै और उसके सार्ने दो वर्वकलप िैं : सारे संसार का एक रूप र्ें संगठन या सर्य-सर्य पर िोने ेर्वो युद्ध। िर् ल्जस सर्ाज र्ें रिते िैं, उसके िर् तनर्ातमा िैं। जो संस्थाएं गित र्ाग मपर चिह गई िैं, िर् उनके र्ाशिक िैं और िर्ें इस रोगी सर्ाज के शिए आर्वश्यक दर्वाइयों की खोज करनी िह िोगी। यहद र्वि सभ्यता, जो अभी िाि तक अपनी प्रगतत र्ें आनंद अनुभर्व करती थी, और र्ानर्वता ककसी यन्त्रणा से पीडड़त िै, तो इसका यि अथ मनिहं ंिै कक र्वि इततिास की ककसी दुतुनर्वमार प्रकक्रया द्र्वारा अपने र्वर्विनाश की ओर खदेड़ी जा रिह िै। सृजन के िाि बड़े ेकष्टों के िाि िुए िैं।'[4] संसार एक नये सर्तुिन तक पिुंचने से पििे बढते िुए कष्टों के दौर र्ें से गुज़रेगा। भिे िह अनेक रुकार्वटें और अड़चनें आएं, परन्तु यि तनल्श्चत िै कक र्नुष्य-जातत अपेक्षाकृत अधधक वर्वर्वेकपूण मसंसार की ओर बढेगी। परन्तु उसकी गतत िर्ारे सािस और बुद्धधर्त्ता द्र्वारा तय िोगी। अनेक रचनात्र्क प्रयोजन, ल्जनके द्र्वारा जातत की र्ुल्क्त िो सकती थी, बिुत बार नष्ट िो जाते िैं; इसशिए निहंकक उनके शिए इच्छा या संकलप का अभार्व था, बल्लक र्न की अस्तव्यस्तता और भीरुता के कारण।

सार्ाल्जक व्याधध

िर्ारे सार्ाल्जक जीर्वन की गम्भीर व्याधध का कारण िर्ारह सार्ाल्जक संस्थाओंऔर वर्वश्र्व के उद्देश्य के बीच का व्यर्वधान िै। प्रकृतत ने अनेक जाततयां बनाई िैं, ल्जनकी भाषाएं, धर् मऔर सार्ाल्जक परम्पराएं शभन्न िैं; और उसने र्नुष्य को यि कार् सौंपा िै कक र्वि र्ानर्व- जगत् र्ें व्यर्वस्था उत्पन्न करे और जीर्वन का ऐसा रास्ता खोज तनकािे, ल्जससे वर्वशभन्न सर्ूि आपसी र्तभेदों को िि करने ेके शिए बि का प्रयोग ककए बबना शाततपूर्वकम रि सकें। यि संसार युद्धवप्रय राष्रों का युद्ध-क्षेत्र बनने के शिए निहं रचा गया, अवपतु एक ऐसा राष्र-र्ंडि बनने ेके शिए रचा गया िै, ल्जसर्ें वर्वशभन्न सर्ूि सबके शिए गौरर्व, अच्छा जीर्वन और सर्ृद्धध प्राप्त करनेके शिए रचनात्र्क प्रयत्न र्ें एक-दूसूरे के साथ सियोग कर रिे िों।

---

[4] तुिना कील्जए, "आधुतनक र्नुष्य आज उन्नतत की चरर् सीर्ा पर िै, परन्तु कि के िोग उससे भी आगे तनकि जाएंगे। यि ठीक िै कक र्वि एक युगव्यापी वर्वकास का अल्न्तर् पररणार् िै, परन्तु साथ िह र्वि र्ानर्व जातत की आिाओं ंकी दृल्ष्ट से अधधकतर् तनरािाजनक िै। आधुतनक र्नुष्य को इस बात का पता भी िै: उसनेदेख शिया िै कक वर्वज्ञान, शिलप और संगठन ककतने िाभकारह िैं, ककन्तु साथ िह यि भी, कक र्वे ककतने वर्विनाकारह िो सकतेिैं। इसी प्रकार उसने देख शिया िै कक सदुद्देश्यर्वािह सरकारें ककतनी अच्छी तरि इस शसद्धान्त पर िाल्न्त के शिए र्ाग मबनाती िैं कक 'िाल्न्त के सर्य र्ें युद्ध की तैयारह करो।' ईसाई चच,म र्नुष्यों का भ्रातृभार्व, अन्तराष्मरहय सार्ाल्जक प्रजातन्त्र और आधथकम हितों की 'एकता' सबके सब अधग्रश्नान (र्वास्तवर्वकता की कसौटह) र्ें खोटे शसद्ध िुए िैं...ऐसे प्रत्येक उपार्क उपाय के पीछे ति काटनेर्वािा सन्देि र्वद्यर्ान िै। कि शरि्ाकर र्ेरा वर्वश्र्वास िै कक र् ैंयि किकर अततियोल्क्त निहं कर रिा कक आधुतनक र्नुष्यों को, र्नोवर्वज्ञान की भाषा र्ें किें तो, िगभग प्राणान्तक आघात पिुंचा िै और पररणास्र्वरूप र्वि गिन अतनल्श्चतता र्ें जा पड़ा िै।" सी० जी० जुग, 'र्ाडन मर्ैन इन सच मआफ ए सोि' अंग्रेजी अनुर्वाद (1933), पृष्ठ 230-23 ।

संसार के एकीकरण के शिए आर्वश्यक दिाएं वर्वद्यऱान िैं। केर्वि ऱ्नुष्य की इच्छा का अभार्व िै।
वर्वभाजन के बड़े–बड़े ेकारण- ऱिासागर और पर्वतम अब प्रभार्विहन िो गए िैं। पररर्विन और संचारण की इस सर्य उपिदध सुवर्वधाओंके कारण संसार एक छोटा-सा पड़ोस बन गया िै। धर् मऔर प्रथाओंके वर्वपरहत, जो स्थानीय ढंग की िोती िैं, वर्वज्ञान राजनीततक या साऱाल्जक सीऱाओंको निहंऱ्नता और ऐसी भाषा ऱ्ें बात करता िै, ल्जसे सब सर्झते िैं। ऱ्नुष्य पर यन्त्रों के प्रभार्व ने यन्त्र-युग से पििे के पूणतमया स्र्वतन्त्र राज्यों के संसार को तछन्न-शभन्न कर हदया िै। औद्योधगक क्राल्न्त ने आधथकम सम्बन्धों को इतना अधधक बदि हदया िै कक अब िऱ् एक वर्वश्र्व-सऱाज बन गए िैं, ल्जसकी अपनी वर्वश्र्व-अथ-मव्यर्वस्था िै और ल्जसकी ऱांग िै कक एक वर्वश्र्व-व्यर्वस्था कायर् की जाए। वर्वज्ञान ने ऱानर्व-जीर्वन का आधार एक जैसे िह्माण्डीय तत्र्वों को बतिाया िै। दिनम ऱ्ें भी यि कलपना की गई िै कक प्रकृतत और ऱानर्वता के पीछे एक सार्वभमौर् चेतना िै। धर् मभी िऱ् सबके सांझेआध्याल्त्ऱक संघषों और ऱित्र्वाकांक्षाओं की ओर संकेत करता िै।

ऱानर्व-वर्वकास के आरल्म्भक सोपानों ऱ्ें साऱूहिक वर्वचार और अनुभूततयों की अशभव्यल्क्तयां ऐसी पररल्स्थततयों ऱ्ें उत्पन्न िुईं और बढती गईं, ल्जनका पररणाऱ् स्र्वभार्वतः एक-दूसूरे से पृथृकता और एक-दूसूरे के प्रतत अज्ञान के रूप ऱ्ें िुआ। जब िोगों ने एक वर्वश्र्वासयोग्य साऱाल्जक व्यर्वस्था की और एक ऐसी सुदृढ केन्द्रहय ल्क्त की आर्वश्यकता अनुभर्व की, जो जनपदहय झगड़ों और गृि-युद्धों को दबा सके, तब राष्र-राज्य का जन्ऱ् िुआ। अतीत कािऱ्ें राष्र-राज्य ने अपने राल्ष्रकों को एक वर्विर्विाता और सृजृनिीता प्रदान करके ऱानर्वता की सेर्वा की, जो अन्य ककसी प्रकार प्राप्त निहंिो सकती थी। अनेक राष्र राष्रहय एकता प्राप्त करने ऱ्ें सफि िुए, और यहद इसी प्रकक्रया को एक सोपान और आगे तक बढाया जाए तो वर्वश्र्व की एकता प्राप्त की जा सकती िै। ऱानर्वता की जड़ें जातत और राष्रहयता के तन्तुओंकी अपेक्षा किहंअधधक गिरह जाती िैं। िऱारा ग्रि (पृथ्रू्वी) इतना छोटा िो गया िै कक इस पर संकीण मदेिभल्क्त के शिए गुंजाइि निहं रिह। ऐततिाशसक पृष्ठूभूशर्यों, जिर्वायु की दिाओं और दूरू-दूरू तक फैिे िुए अन्तजातमीय वर्वर्विािों के पररणास्र्वरूप जाततयों का र्विरूप बना िै, जो आज दहख पड़ता िै। िऱ् सबकी ऱानशसक प्रकक्रयाएं; संर्वेगात्ऱक प्रकक्रयाएं, आधारभूत नोर्वेग और िािसाएं तथा ऱित्र्वाकांक्षाएं एक-सी िह िैं। डावर्वनम ने अपनी पुस्तक 'डडसटें आफ ऱ्ैन' (ऱ्नुष्य का अर्वतरण) ऱ्ें शिखा िै, "ज्यों-ज्यों ऱ्नुष्य सभ्यता ऱ्ें उन्नतत करता जाता िै और छोटह-छोटह जाततयां बड़े–बड़े ेसऱुदायों ऱ्ें संगहठत िोती जाती िैं, त्यों-त्यों प्रत्येक व्यल्क्त को यि बात सर्झ आती जाती िै कक उसे अपनी साऱाल्जक सिज प्रर्वृवृत्तयों और सर्र्वेदनाओं का वर्वस्तार अपनेराष्र के सब सदस्यों तक कर िेना चाहिए, भिे िह र्वे सदस्य व्यल्क्तगत रूप से उससे पररधचत न भी िों। जब एक बार यि ल्स्थतत आ जाएगी, तब उसकी सर्र्वेदनाओं का सब राष्रों और जाततयों के ऱ्नुष्यों तक वर्वस्तार िोने ेऱ्ें केर्वि एक िह कृततर् बाधा बच जाएगी।" सभ्यता ऱ्ें प्रगतत की एक ऱानी िुई पिचान सऱिू की सीऱाओंका क्रशऱ्: वर्वस्तार िोतेजाना िह िै। डावर्वनम को यि सुनकर बड़ा आश्चय मिोता कक कोई जातत पूरह तरि वर्विुद्ध िै और यि कक ऱ्नुष्यों की कोई एक जातत इसशिए उत्कृष्ट िै कक देर्वता उसपर वर्विेष रूप से कृपािु िैं।

राष्ट्रहयता की प्ेरेरणा और उसके आदि मअब तक भी िोगों के वर्वचारों पर छाए िुए िैं, भिे िह उन िोगों के राजनीततक वर्वश्र्वास कुछ भी क्यों न िों; चािे वें नाज़ी िों या कम्युतनस्ट, फाशसस्ट िों या प्रजातन्त्रर्वादह; और इस

प्रकोर्ानुर्ष्यप्रंक्तितऊको मुख्य धारा से र्ोड़कर संकीण मर्ागों की ओर प्रर्वाहित ककया जा रिा िै। िर्ारह ल्स्थतत बिुत कुछ आहदर्, असभ्य जनसर्ूिों की-सी िै, जो केर्वि अपनेरक्त के सम्बल्न्धयों को हि अपनेसर्ाज र्ें सल्म्र्शित करते थे,े या उन िोगों को, ल्जनसे वें कुछ कर् या अधधक घतनष्ठ रूप र्ें पररधचत िो जाते थे। वर्वद्यिायों र्ें िर्ें जो एक प्रकार की कुशिक्षा दह जाती िै, उसके कारण िर् राष्ट्रर्वादह आर्वेि के शिकार िो जाते िैं। िर् नीचता, पािवर्वकता और हिंसा को भी, यहद र्वि राष्ट्र के तनशर्त्त की जा रिह िो, बबिकुि साधारण र्वस्तु सर्झने िगते िैं।

राष्ट्रर्वाद कोई स्र्वाभावर्वक सिज र्वृवत्त निहं िै। यि तो कृल्त्नर् भार्वुकता द्र्वारा अधधगत की जाती िै। अपनेदेि के प्रतत प्ेरेर्, और प्रादेशिक परम्पराओंके प्रतत तनष्ठा का यि अथ मनिहंैकक पड़ोस के दे़ि और परम्पराओं के प्रतत उग्र िृता रखी जाए। आज जो राष्ट्रहय अशभर्ान की अनुभूतत इतनी तीव्र िै, उससे केर्वि यि स्पष्ट िोता िै कक र्ानर्वस्र्वभार्व र्ें आत्र्-र्वंचना की ककतनी अधधक क्षर्ता िै। आत्र्हित, भौततक िाभ और प्रभुत्र्व की िािसा - ये राष्ट्रर्वाद के प्ेरेरक आदि िैं। देिभल्क्त नेपवर्वत्नता को और आर्वेि ने तकमबुद्धध को सर्ाप्त कर हदया िै। जो देि भौततक सम्पवत्त की दृल्ष्ट से बिुत भाग्यिाि निहं िैं, पृथ्र्वी-ति के अनुधचत वर्वभाजन के वर्वरुद्ध प्रततर्वाद करते िैं। बिहटि िोगों के पास संसार का एक चौथाई स्थि-भाग िै। उसके बाद फ्रांस का नम्बर िै। िािैंड, बेल्लजयर् और पुतगमिा जैसे छोटे-छोटे राष्ट्रों के पास भी बड़े– बड़े ेऔपतनर्वेशिक राज्य िैं। जर्नमी अपनेरिने,े फैिने और प्रभुत्र्व जर्ानेके शिए स्थान चािता िै। रिनेके शिए स्थान की आर्वश्यकता असन्तुष्ट और र्ित्र्वाकांक्षी िल्क्तयों की नीततयों का प्ेरेरक उद्देश्य बन जाती िै। यहद िर् यि र्ान िें कक सबसे अधधक िल्क्तिािह जातत को संसार का स्र्वार्ी बननेका अधधकार िै, तो तनष्ठुरता िह दैर्वीय इच्छा की साधना बन जाती िै। जब एक आक्सफोड मके वर्वद्याथी ने हिटिर से पूछा कक उसकी नीतत क्या िै, तो उसनेएक आर्वेिपूण मिदद र्ें उत्तर हदया, "बट्टा िैंड" (जर्नमी)। और िर् इस बात से इनकार निहंकर सकतेकक र्वि अपने उद्देश्य के प्रतत अवर्वचशित रूप से सच्चा रिा िै। उसने किा िै, "बनने दो िर्ें अर्ानर्व। यहद िर् जर्नमी की रक्षा कर पाएंगे, तो सर्झो कक िर्नेसंसार का सबसे र्िान काय मकर शिया िै। करने ेदो िर्ें गित कार्। यहद िर्ने जर्नमी की रक्षा कर िह, तो सर्झो कक िर्ने संसार की सबसे बड़ी गिती को शर्टा हदया िै। िोने दो िर्ें अनैततक। यहद िर् अपने िोगों की रक्षा कर पाए, तो सर्झो कक िर्ने नैततकता की पुनः स्थापना के शिए द्र्वार खोि हदया िै।"[5] 'र्ीन कैम्फ'[6] र्ें हिटिर किता िै, "वर्वदेि नीतत तो एक िक्ष्य को पूरा करने ेका साधन-र्ात्र िै; और र्वि एकर्ात्र िक्ष्य िै- िर्ारे अपनेराष्ट्र का िाभ।" और कफर, "केर्वि यिह बात िै, ल्जसका र्ित्र्व िै, बाकी सब राजनीततक, धाशर्कम और र्ानर्वतार्वादह बातों की इस बात की तुिना र्ें पूण मउपेक्षा की जानी चाहिए।"[7] सम्पूण म

---

5 देखखए, 'दह डीपर काल्ज़ज़ आफ दह र्वार, िेखक, धगिबटम र्रे तथा अन्य (1940), पृष्ठ 43

6 र्विह, पृष्ठ 686

7 तुिना कील्जए, "राज्यों के बीच र्ें सबितर के अधधकार के अततररक्त और कोई कानून या अधधकार वर्वद्यर्ान निहं िै। आधधवर्वद्यक (र्ैटाफील्ज़कि) दृल्ष्ट से भाग्यिाि िोगों को इस बात का नैततक अधधकार िै कक र्वे िल्क्त और वर्वक्षिणता

र्ानर्व जीर्वन को राष्रहय कायक्षमर्ता के एकर्ात्न उद्देश्य का दास बना हदया गया ि◌ै। एक युर्वक जर्नम वर्वर्ान चािक को, ल्जसका वर्वर्ान वर्वर्ानर्वेधी तोपों द्र्वारा धगरा हिया गया था, एक फ्रांसीसी घर र्ें ि◌े जाया गया, जो अब एक अस्पतिा बना ि◌ुआ था। वर्वर्ान-चािक प्राणान्तक रूप से घायि था। डाक्टर ने उसके ऊपर झुककर किा, "तुर् सैतनक ि◌ो और र्ृत्यु का सार्ना र्वीरता से कर सकतेि◌ो। अब तुर्ि्ें केर्वि एक घंटा और जीना ि◌ै। क्या तुर् अपने पररर्वार के ि◌ोगों को कोई पत्न शिखर्वाना चािते ि◌ो?" उस ि◌ड़के ने शसर ह◌ि◌िाकर इनकार ककया। तब पास ि◌ेटे ि◌ुए, बुरह तरि घायि बच्चों और ल्स्त्रयों की ओर संकेत करते ि◌ुए डाक्टर ने किा, "अब तुर् अपने पररर्ात्रा के सार्ने जा रिे ि◌ो। तुर्ि्ें अर्वश्य ि◌ह उसके शिए खेद ि◌ोगा, जो कुछ तुर्ने ◌ेककया ि◌ै, क्योंकक अपनेकार् का पररणार् तुर् अपनी आंखों से देख रिे ि◌ो।" उस र्रते ि◌ुए वर्वर्ानचािक ने उत्तर हदया, "निहं, र्ुझेखेद केर्वि इस बात का ि◌ै कक र् ◌ैंअपनेफ्यूिर के आदेशों का और आगे पािन न कर पाऊंगा। हिटिर की जय ि◌ो ।" और र्वि र्रकर ि◌ुढक गया। नाज़ीर्वाद जनता का आन्दोिन ि◌ै। रूस की सरकार धर्वमर्वरोधी भिे ि◌ो, ककन्तु र्विां की जनता धर्वमर्वरोधी निहीं। जब रूस द्र्वतीय वर्वश्र्वयुद्ध र्ें सल्म्र्शित ि◌ुआ, तब बड़े ◌ेअशभर्ान के साथ र्ास्को र्ें ि◌ुई उन वर्वर्वि सभाओंका उलिेख ककया गया था, ल्जनर्ें ि◌ोगों ने रुसी सेनाओं की सफिता के शिए प्राथनमा की थी और हिटिर को धर् मका सबसे भयानक ि◌त्रु ◌ुबतिाया था। बाद र्ें रूस ने अधधकृत रूप से इस युद्ध को 'पवर्वत्र सोवर्वयत वपतृभूशर् की रक्षा के शिए और जनता को र्ुल्क्त हदिाने के शिए ककया जा रिा युद्ध' किा था। ककसी एक देि की जनता ि◌ह राष्रर्वादह निहं ि◌ुई, अवपतु यि सारा युग ि◌ह राष्रर्वादह ि◌ो गया ि◌ै। राज्य की केन्द्रहभूत व्यर्वस्था के कारण, तकनीकी प्रगतत और वर्वस्तृत प्रचार के आधुतनक उपकरणों के कारण प्रजा का, उनके ि◌रहर, र्न और आत्र्ा का सैतनक रूप र्ें संगठन कर हदया जाता ि◌ै। पूण मराज्य और एकतन्त्रात्र्क सर्ुदाय एक ि◌ह र्वस्तु ि◌ो गए ि◌ैं। व्यल्क्त का तनजी जीर्वन बबताने का अधधकार वर्वर्वादग्रस्त वर्वषय ि◌ो गया ि◌ै और र्ानर्व जातत की स्र्वाभावर्वक चारुताएं, प्रेर् और दया ि◌ुप्त ि◌ो रिह ि◌ै। ि◌र् आसुरह ि◌ल्क्तयों की जकड़ र्ें फंस गए प्रतीत ि◌ोतेिैं, जो र्ानर्व-जातत को पततत करके तनम्न कोहट के पिुओं के सर्ान बना रिह ि◌ैं। देर्वतुलय र्नुष्य रेर्वड़ का पिु ◌ुबन रिा ि◌ै। र्िान राज्य र्ें वर्वश्र्वास रखनेके कारण ि◌र्ें वर्वर्वि ि◌ोकर पररश्रर् और थोथेपन का जीर्वन और आत्र्ा की दृल्ष्ट से तनष्ठुर, जंगिह, तुच्छ और अपररष्कृत जीर्वन बबताना पड़ रिा ि◌ै। सैतनकीकरण द्र्वारा ि◌र्ारह र्ानर्वीयता सर्ाप्त ि◌ो जाती ि◌ै। यि सीखने र्ें ि◌र्ें धीरज के साथ अटकतेऔर र्वीरतापूर्वकम प्रयत्न करते ि◌ुए कई ि◌ताल्ददयां ◌ं िगी ि◌ै कक र्नुष्य का अपना जीर्वन और दूसरों का जीर्वन पवर्वत्न ि◌ै। प्रत्येक व्यल्क्त र्ें अपनी अिग दर्क ि◌ोती ि◌ै; उसका वर्वशिष्ट सौन्दय मिोता ि◌ै; उसे देखने के शिए केर्वि ि◌र्ारह दृल्ष्ट पयाप्मत सूक्ष्र् ि◌ोनी चाहिए। अच्छा बननेकी इच्छा ि◌र्ारह रचना का अतनर्वाय मअंग ि◌ै। इस इच्छा को ककतना ि◌ह दबाया जाए, ककतना ि◌ह ढका जाए, या रूपान्तररत ककया जाए परन्तु इसे नष्ट निहं ककया जा सकता। यि सर्वदमा वर्वद्यर्ान रिती ि◌ै और जो इसे देख

के सब साधनों द्र्वारा भवर्वतव्यता को पूरा करने का प्रयत्न करें।" "डाक्रहन आफ दह स्टेट, कफश्टे ट्यूटोतनक वर्वस्तार की अस्पष्ट और अपररभावषत योजनाएं इस गिरह बद्धर्ूि अनुभूतत की अशभव्यल्क्त- र्ात्र ि◌ैं कक जर्नमी को अपनी ि◌ल्क्त और राष्रहय ि◌क्ष्य की पवर्वक्षता के कारण, अपने देिभल्क्त के उत्सिा के कारण, कायक्षमर्ता के उच्च स्तर और प्रिासन की स्र्वच्छ ईर्ानदारह के कारण और सार्वजमतनक और र्वैज्ञातनक गततवर्वधध की प्रत्येक ि◌ाखा का सफि अनुसन्धान करने के कारण और उच्च्च कोहट की किा और नीततिास्त्र के कारण जर्नम राष्रहय आदेशों को सर्वोच्चता स्थावपत करने का अधधकार शर्ि् गया ।" आयर क्रोर्व का 1 जनर्वरह, 1907 का 'ज्ञापन' ।

िता ि ै उसे बिुत र्ाधुयपूमण मप्रततभार्वन (ररस्पॉन्स) प्राप्त ि ोता ि ै। कफर भी पूंजीर्वादह सर्ाज, सैन्यर्वादह परम्परा और प्रभुत्र्वसम्पन्न अनेक स्र्वतन्त्र राज्यों र्ें बंटे ि ुए संसार की र्वतर्मान सार्ाल्जक व्यर्वस्था र्नुष्य की आत्र्ा को तनजीर्व कर देती ि ै।

संसार के सब राष्ट्रों पर, ककसी पर कर् ककसी पर अधधक र्ात्रा र्ें, यि कट्टर दिेभल्क्त का, यि सत्ता प्राप्त करनेकी अंधी इच्छा को और उधचत अनुधचत के वर्वर्वेक से िीनूय अर्वसरर्वाहदता का भूत सर्वार ि ै। ऐसे वर्वरोधी राष्ट्रों के संसार र्ें स्र्वाभावर्वक प्रर्वृवत्त यिह ि ोती ि ै कक दूसूरों को नीचा हदखाया जाए। यि एक ऐसा र्ात्रि ि ै, ल्जसर्ें ि र व्यल्क्त का दिे बाकी सब दिेों के साथ एक अन्तिहन संघष मर्ें जूझ रि ा ि ै। आर्तौर से यि वर्वरोध राजनीततक और व्यापाररक रूप र्ें रिता ि ै, पर अनेक बार यि खुलिर्खुलि ा और सिस्त्र रूप र्ें सार्ने आ जाता ि ै। जो ि ल्क्त संसार र्ें एकता बनाए रखनेऔर स्र्वस्थता तथा सम्पूणतमा बनाए रखनेके शिए अशभप्ेरेत थी, उसका प्रयोग ककसी एक सर्ूि या र्वग,म एक जातत या एक राष्ट्र को उन्नत करने के शिए ककया जाता ि ै। राज्य एक वर्वकरिा दासों से कार् ि ेने र्वािा जर्ादार बन जाता ि ै और ि र्ारे आन्तररक जीर्वन र्ृतप्राय ि ो जाते ि ैं। ि र्ारा आन्तररक अल्स्तत्र्व ल्जतना अधधक तनजीर्व ि ो जाता ि ै, राष्ट्रर्वादह उद्देश्य की दृल्ष्ट से ि र् उतने िह अधधक कायक्षमर् बन जाते ि ैं। ि र्ारे सब आन्तररक वर्वरोध सर्ाप्त ि ो जाते ि ैं और ि र्ारे जीर्वन के सूक्ष्र् से सूक्ष्र् भाग का तनयर्न एक ऐसे यन्त्र द्र्वारा ि ो रि ा ि ोता ि ै, जो काय-मपिान र्ें अत्यन्त तनष्ठुर ि ै और वर्वरोध के प्रतत कभी द्रवर्वत निहंिोता। राज्य अपने-आप र्ें एक िक्ष्य बन जाता ि ै, ल्जसे यि अधधकार ि ोता ि ै कक र्वि ि र्ारह आत्र्ाओं को यन्त्र बना दे और ि र्ें घुड़दौड़ के घोड़ों की तरि प्रशिक्षण दे।'[8]

ि र्ें सुपररधचत का ि ाश्र्वत के साथ घपिा निहं कर देना चाहिए। र्वतर्मान व्यर्वस्था के प्रतत ि र्ारह प्राथशर्कता का वर्वश्र्व के अटि तनयर्ों के साथ घपिा निहंिोना चाहिए। सत्य और सिानुभूतत का नोर्वेग, जो र्ानर्व-स्र्वभार्व र्ें रर्ा ि ुआ ि ै, ि र्ें प्ेरेरणा देता ि ै कक ि र् एक शर्ित्रतापूण मसंसार र्ें स्र्वतन्त्र व्यल्क्तयों के रूप र्ें जी सकें। पृथ्र्वी पर पड़ोशसयों की भांतत रिने, अपनी आत्र्वर्विना की ि ल्क्तयों को र्वि र्ें रखने और प्रकृतत के साधनों का सबके स्र्वास्थ्य और प्रसन्नता के शिए उपयोग करने की सर्स्या को ि ि करने के शिए ि ाल्न्त के शिए दृढ संकलप की और उन अनेक दार्वों को त्यागने की आर्वश्यकता ि ै, जो वर्विेषाधधकार प्राप्त र्वगों और राष्ट्रहय राज्यों ने ककए ि ुए ि ैं। यहद ि र् सच्चे दिेभक्त ि ैं, तो ि र्ारा ि गार्व स्थानीय, जातीय या राष्ट्रहय न ि ोकर र्ानर्वीय ि ोना चाहिए। यि सबके शिए स्र्वतन्त्रता, स्र्वाधीनता, ि ाल्न्त और सार्ाल्जक प्रसन्नता के प्रतत प्ेरेर् के रूप र्ें ि ोना चाहिए। ि र् केर्वि अपनेदिे के शिए युद्ध निहं करेंगे, अवपतु सभ्यता के शिए युद्ध करेंगे; और इसशिए युद्ध करेंगे कक ल्जससे र्ानर्व-जातत के अधधकतर् हित के शिए वर्वश्र्व के साधनों का सिकारह संगठन द्र्वारा वर्वकास ककया जा सके। इसके शिए ि र्ें र्न को नये शसरे से शिक्षक्षत करने और वर्वश्र्वासों तथा कलपनाओंर्ें

[8] तुिना कील्जए, "जो धर् मअपने-आपको ककसी साधन से सम्बद्ध कर िेता ि ै, र्वि पूजा से ऊपर निहं उठ पाता। राज्य की पूजा की तुिना र्ें पिुओं की पूजा अधधक र्वृद्धधसंगत और गौरर्वपूण मिै। सांड या र्गरच्छ को धान्तररक र्ूलय भिे ि ह बिुत अधधक न ि ो, पर कुछ न कुछ तो ि ै, क्योंकक र्वि चेतन र्वस्तु ि ै। परन्तु राज्य का आन्तररक र्ूलय कुछ भी निहं ि ै।" - रैक टैगाटम

कुछ सुधार करनेकी आर्वश्यकता िोगी। वर्वश्र्व का तकम और संकलप र्ानर्व-व्यल्क्त के र्ाध्यर् द्र्वारा काय मकरता ै, क्योंकक र्ानर्व आसपास की पररल्स्थततयों की िल्क्तयों को सर्झ सकता िै, उनके पररचािन का तिपि से अनुर्ान कर सकता िै और उन्िें तनयशर्त कर सकता िै। वर्वकास अब कोई ऐसी अतनर्वाय मभवर्वतव्यता निहं ंरिा िै जैसे कक आकाि र्ें तारे अतनर्वाय मरूप से अपनेर्ाग मपर चिते िैं। वर्वकास का साधन अब र्ानर्व-र्न और संकलप ै। नई पीढह को आध्याल्त्र्क जीर्वन की पवर्वत्रता और सर्वोच्चता, र्ानर्व जातत के भ्रातृभार्व और िाल्न्त-प्रेर् की भार्वना के आदिों का प्रशिक्षण हदया जाना चाहिए।

युद्ध और नई व्यर्वस्था

प्रोफेसर आनलमड टॉयनबी ने अपनी पुस्तक 'दह स्टडी आफ हिस्रह' र्ें उन पररल्स्थततयों का वर्वर्वेचन ककया िै, ल्जनर्ें सभ्यताओं का जन्र् िोता िै और र्वे बढती िैं; और साथ िह उन दिाओं ंका भी, ल्जनर्ें उनका पतन िो जाता िै। सभ्यताओं का जन्र् और वर्वकास पूणतमया ककसी जातत की उत्कृष्टता पर अथर्वा आसपास की पररल्स्थततयों की स्र्वतःचाशित कारमर्वाई पर तनभरम निहं ंिो सकता। सभ्यताएं र्नुष्यों द्र्वारा अपनी आसपास की पररल्स्थततयों के साथ कहठन सम्बन्धों र्ें तािर्ेि बबठानेका पररणार् िोती िै और टॉयनबी ने इस प्रकक्रया को 'चुनौती और प्रततभार्वन' के ढंग की प्रकक्रया र्ाना िै। बदिती िुई पररल्स्थततयां सर्ाजों के शिए चुनौती के रूप र्ें सार्ने आती िैं और उनका सार्ना करने ेके शिए जो प्रयत्न ककया जाता िै और जो कष्ट उठाए जाते िैं, उनसे भी सभ्यताओं का जन्र् और वर्वकास िोता िै। जीर्वन प्राणी द्र्वारा अपने-आपको पररल्स्थततयों के अनुकूि ढािनेके अनर्वरत प्रयत्न का नार् िै। जब आसपास की पररल्स्थततयां बदिती िैं और िर् अपने-आपको सफितापूर्वकम उनके अनुकूि ढाि िेते िैं, तब िर् प्रगतत कर रिे िोते िैं। परन्तु जब पररर्वतनम इतनी िीघ्रता से और इतने एकाएक िो रिे िों कक उनके अनुकूि अपने-आपको ढाि पाना सम्भर्व न िो, तब वर्वनाि िो जाता िै। यि वर्वश्र्वास करने ेके शिए कोई कारण निहंै कक र्नुष्य ने बुद्धध का प्रयोग करना सीख िेनेके कारण अथर्वा पृथ्र्वी पर आधधपत्य जर्ा िेनेके कारण इस आर्वश्यकता से र्ुल्क्त पा िह िै, जो सब प्राखणयों के ऊपर अतनर्वाय मरूप से िादह गई िै। प्रारल्म्भक सभ्यताओं के र्ागि र्ें र्ें जिनचुनौततयांभौततक और बाह्य ढंग की िोती थीं, र्विं आजकि की सभ्यताओं र्ें सर्स्याएं र्ुख्यतया आन्तररक और आध्याल्त्र्क िैं। अब उन्नतत को भौततक या तकनीकी प्रगतत की दृल्ष्ट से निहं ंनापा जा सकता, अवपतु र्न और आत्र्ा के जगत् र्ें सृजनात्र्क पररर्वतनमों की दृल्ष्ट से आंका जाना चाहिए। आध्याल्त्र्क र्ूलयों के प्रतत आदर, सत्य और सौंदय मके प्रतत प्रेर्, धर्पमरायणता, न्याय और दया, पीडड़तों के साथ सिानुभूतत और र्नुष्य-र्ात्र के भ्रातृत्र्व र्ें वर्वश्र्वास, ये र्वे ेगुण िैं, जो आधुतनक सभ्यता को बचा सकतेिैं। जो िोग धर्,म जातत, राष्र या राजपद्धतत के नार् पर अपने-आपको िेषे संसार से पृथक् कर िेते िैं, र्वे र्ानर्व- वर्वकास र्ें सिायता निहं ंदेते, अवपतु ुउसर्ें बाधा डाि रिे िोतेिैं। इततिास ऐसी अनेक सभ्यताओं के ध्र्वंसार्विेषों से भरा पड़ा िै, जो अपने-आपको सर्य के अनुकूि ढािनेर्ें सफि निहंुईं, जो आर्वश्यक बुद्धधर्त्ता और सूझ-बूझ र्विों न तैयार करनेर्ें असफि रिहं। वर्वश्र्व संकट के इस सर्य र्ें वर्वर्वेकिीि िोगों को न केर्वि एक ऐततिाशसक युग की सर्ाल्प्त हदखाई देती िै, अवपतु एक आध्याल्त्र्क युग की

भी, जो सम्पूण मर्ानर्व जातत के शिए और प्रत्येक आत्र्सचेत व्यल्क्त के शिए एक जैसा िै। र्नुष्य, जैसा कक र्वि इस सर्य िै, र्वकास की चरर् सीर्ा निहं ंर्ाना जा सकता। पृथ्र्वी पर जीर्वन का इततिास डेढे अरब र्वर्षों से भी अधधक पुराना िै। प्रत्येक भूगभीय किा र्ें ऐसे प्राणी उत्पन्न िुए, जो अपनेकिा र्ें सृल्ष्ट के सर्वोत्तर् प्राणी सर्झे ेजाते थे। कफर भी परर्वती किा र्ें उनसे भी और अच्छे प्राणी उत्पन्न िो गए।'[9] र्वकास का अगिा सोपान र्नुष्य के िरहर र्ें निहं,ं अवपतु उसकी आत्र्ा र्ें िोगा; उसके र्न और धचत्त र्ें अपेक्षाकृत अधधक सहृदयता और चेतना की र्वृद्धध के रूप र्ें, चररत्न के एक नये संगठन के र्वकास के रूप र्ें, जो कक नये युग के उपयुक्त िों। जब र्नुष्य र्ें दितमनक चेतना, सहृदयता की तीव्रता और सम्पूणतमा के अथ मका र्विद ज्ञान िो जाएगा, तब अपेक्षाकृत अधधक उपयुक्त सार्ाल्जक जीर्वन का जन्र् िोगा, जो न केर्वि व्यल्क्तयों को, अवपतु जाततयों और राष्रों को भी प्रभावर्वत करेगा। िर्ें इस नई व्यर्वस्था के शिए पििे अपनेर्न र्ें और कफर बाह्य संसार र्ें युद्ध करना िै।

यि युद्ध सभ्यता और बबरमता के बीच संघष मनिहं ंिै, क्योंकक प्रत्येक योद्धा ल्जसे सभ्यता सर्झता िै, उसकी रक्षा के शिए िड़ रिा िै; यि र्ृत अतीत को पुनरुज्जीवर्वत करने ेका या जीण-म िीण मपुरानी सड़ी-गिह सभ्यता को बचानेका प्रयत्न निहं िै; यि तो र्वघटन की र्वि अल्न्तर् कक्रया िै, ल्जसके बाद एक िम्बी प्रसर्व पीड़ा के बाद र्वश्र्व-सर्ाज का जन्र् िोगा। क्योंकक िर् पररर्वतनम करने र्ें बिुत र्न्द िैं, इसशिए एक नई धारणा जन्र् िेनेके शिए संघष मकर रिह िै और प्रचंड र्वस्फोटों के द्र्वारा बािर आने ेका र्ाग मबना रिह िै। यहद पुरातन संसार को हिंसा, र्वपवत्त, कष्ट, आतंक और अव्यर्वस्था र्ें र्रना पड़े ेऔर यहद यि अपने धगरने के साथ-साथ बिुत-सी अच्छी, सुन्दर और सत्य र्वस्तुओंको भी धगरा दे, रक्तपात िो, प्राणों की िातन िो और अनेकों की आत्र्ाएं र्वकृत िो जाएं तो इसका कारण केर्वि यि िोगा कक िंततपूर्वकम उस नूतन संसार के साथ अपना सर्ेंजन करने (तािर्ेि बबठाने) र्ें असर्थ मिैं जो सारतः सदा अवर्वच्छेद्य था और अब तथ्यतः अवर्वच्छेद्य बननेके प्रयत्न कर रिा िै। यहद िर् अपनी स्र्वतन्त्र इच्छा से आगे कदर् निहं बढा सकते, यहद िर् अपनी पीठ पर िदह तनजीर्व र्वस्तुओंको उतारकर निहं ंफेंक सकते, तो एक घोर र्वपवत्त िर्ार्रह आंखें खोिेगी और उन्िें उतार फेंकने ेर्ें िर्ार्रह सिायता करेगी और

---

[9] सन् ्1939 र्ें डंडी र्ें बिहटि एसोशसएिन की सभा र्ें प्राखण-र्वज्ञान के अनुभाग र्ें सभापतत-पद से भाषण देतिुए प्रोफेसर जेम्स ररट्िी ने र्वकासर्वादह दृल्ष्टकोण के तनहित अर्थों को इन िददों र्ें प्रस्तुत ककया, "वपछिे डेढे अरब र्वर्षों के, ल्जनर्ें जीर्वन ल्स्थर गतत से र्वकास के पथ पर आगे बढता रिा, दृश्य का शसंिार्विोकन करतेिुए यि सोचना िर्ारे शिए तनराधार कलपना प्रतीत िोता िै कक र्नुष्य, जो नर्वीनतर् आगन्तुक िै, अनेक प्राखणयों र्ें अल्न्तर् और सर्वोच्च प्राणी िै और उसके आगर्न के बाद र्वकास की गतत सर्ाप्त िो जाएगी। पृथ्र्वी पर जीर्वन के भवर्वष्य की ओर देखतेिुए यि सोचना और भी तनराधार कलपना प्रतीत िोती िै कक अगिे एक अरब र्वर्षों तक जीर्वन, जो कक अतीत किा र्ें इतने आश्चयजमनक रूप से आवर्वष्कारिीि रिा िै, सारे आगार्ी सर्य र्ें केर्वि हदर्ागी िल्क्त र्ें र्वृद्धध और र्ानर्व जातत के अपेक्षाकृत अच्छे सार्ाल्जक संगठन जैसे तुच्छ पररर्वतनमों तक िह सीशर्त रिेगा। सचाई यि िै कक िर् अतीत से बंधे िोने के कारण कुछ और अधधक कलपना कर िह निहं सकते। परन्तु र्वकास का सुदहघ मदृश्य यहद भवर्वष्य के शिए कोई संकेत-धचह्न िै, तो िर् र्वतर्मान किा की सर्वश्रेष्ठ र्ानर्व जातत को जीर्वन की प्रगतत र्ें एक सोपान से या र्ानतर भवर्वष्य की ओर र्वकास के पथ पर एक र्ीि के पत्थर से अधधक कुछ निहं र्ान सकते।े इससे कुछ शभन्न सोचना यि कलपना करना िोगा कक र्नुष्य के आगर्न के साथ, जो सर्य की दृल्ष्ट से बिुत िह तुच्छ िै र्वकास की र्वि प्रगतत और आवर्वष्कारिीिता सर्ाप्त िो गई िै, जो वपछिे कलपनातीत र्वर्षों से तनरन्तर चिह आ रिह थी और ल्जसकी गतत र्ें शिधथिता का कोई धचह्न हदखाई निहं पड़ा था।"

उन कठोर रुहढयों को चूर-चूर कर देगी, जो ि्ारे उदार नोर्वेगों को पंगु ककए िुए िैं और बुद्धधर्त्ता के र्ाग मर्ें रुकार्वट बनी िैं।

बुराई का अवर्वभार्वम कोई आकल्स्क घटना निहं ंिै। हिंसा, अत्याचार और वर्वद्र्वेष के तथ्य ककसी अव्यर्वस्था या र्न की र्ौज के सूचक निहीं, अवपतु एक नैततक व्यर्वस्था के धचह्न िैं। जब प्रकृतत के आधारभूत तनयर् को, जो सुसंगतत, एकता, र्नुष्य और भ्रातृभार्व के प्रतत आदर िै, पैरों ति रौंद हदया जाता िै, तब अस्तव्यस्तता, वर्वद्र्वेष और युद्ध के अतततररक्त ककसी र्वस्तु की आिा निहंकी जा सकती। यि इततिास का तकम िै; और सम्भर्व िै कक जो र्वस्तुएं पुरानी पड़ गई िैं, ल्जनकी उपयोधगता कभी की सर्ाप्त िो गई िै और जो प्रगतत के र्ाग मर्ें बाधा बनी िुई िैं, उनर्ें से अनेक को बिा िे जानेके शिए इस प्रकार की अव्यर्वस्थाएं और गड़बड़े िे आर्वश्यक िों। इस सर्य भी, जबकक संसार भौततक रूप से घृणा से भरा हदखाई पड़ता िै; जब बि, भय, असत्य और तनष्ठुरता िह र्ानर्व-जीर्वन की र्वास्तवर्वकताएं प्रतीत िोती िैं, सत्य और प्रेर् के र्िन आदि मभी अन्दर िह अन्दर काय मकर रिे िैं और र्वे िबि और असत्य के प्रभुत्र्व की जड़ों को खोखिा कर रिे िैं। यहद िर्ें वर्वश्र्व-िाल्न्त और वर्वश्र्व की एकता के शिए काय मकरने ियोग्य सूझबूझ और सािस निहं िै, तो र्वे िाल्न्त और एकता हदव्य न्याय के आसुरह साधनों द्र्वारा उय उपायों से स्थावपत की जाएंगी। ल्जस तूफान और कष्ट र्ें से िोकर िर् गुज़र रिे िैं, उनके िोते िुए भी िर् भवर्वष्य की ओर वर्वश्र्वास के साथ देख सकतिैं और अपनेर्न र्ें यि नैततक सुतनश्चय रख सकतिैं कक इस सारह गड़बड़ और अव्यर्वस्था र्ें भी एक गिरा अथ मिै। इन वर्वप्िर्वों और उथि-पुथिों र्ें से भी आध्याल्त्क र्ूलयों का पररपूणतमर ज्ञान प्रकट िो सकता िै, ल्जसके द्र्वारा र्ानर्वता और ऊंचे स्तर पर पिुंच सके। युद्ध पूणतमया पागिों का, ऐसे पीडड़त जन सर्ुदाय का, ल्जसका हिताहित-ज्ञान नष्ट िो गया िै और जो आर्वेि से पागि िै, िििकोि-र्ात्र निहं िै, अवपतु यि र्ानर्वीय भार्वना की रक्षा के शिए ऐसे व्यल्क्तयों का एक युद्ध िै, जो वर्वश्र्वासिसी िैं, सहिष्णु िैं, और जो जीर्वन के नर्वीनीकरण और िांतत के कायों के शिए अधीरता से प्रतीक्षा कर रिे िैं। वर्विनाकताम र्ानर्व िह तनर्ातमा भी िै। यि कुरुक्षेत्र धर्क्षेमत्र भी बन सकता िै। िो सकता िै, इस िक्ष्य तक पिुंचने र्ें देर िगे। इस तक पिुंचने र्ें अनेक र्वष मया दिाल्ब्दयां या िताल्ब्दयां तक भी िग सकती िैं। िो सकता िै कक यि प्रसर्व, एक नये संसार का जन्र्, काफी कहठन िो; परन्तु यि बात सोचनेयोग्य भी निहं ंिै कक र्ानर्वीय र्ूलयों का स्थायी रूप से वर्विनाि िो सकता िै। िर्ें से प्रत्येक र्ें एक तछपा िुआ ज्ञान िै, जीर्वन की एकता की एक आध्याल्त्क अनुभूतत िै, ल्जसके कारण र्ानर्व-र्न र्ें यि वर्वश्र्वास बना रिता िै कक एक अपेक्षाकृत अच्छी व्यर्वस्था आकर रिेगी। ऐसे भी सर्य आए िैं, जब यि वर्वश्र्वास दुबिम पड़ गया था और आिा धुंधिह िो गई थी, परन्तु इन अंधकार के क्षणी के बाद अरुणोदय के क्षण आए, ल्जन्िोंने र्ानर्व जीर्वन को इतना अधधक सर्ृद्ध ककया कक िददों द्र्वारा बता पाना कहठन िै। िर्ारे उच्च स्र्वर र्ें ककए गए सारे प्रततर्वाद और र्िरह क्षखणक वर्वजय िकिा की गवत्त पर, और र्ानर्वीय आिा और संकलप की आगे की ओर गतत पर वर्वजय निहं पा सकतीं। सम्भर्व िै कक नैततक वर्वकास के प्रर्वाि द्र्वारा र्नुष्य की असहिष्णुता को, उसकी सत्तािोिुपता को, अपनिेतुको िरानेसे प्राप्त िोने र्वािो सिानुभूततिहन आनन्द को दूर करनेर्ें िताल्ब्दयों िग जाएं और तब किहं जाकर र्वि अपनी उन सुवर्वधाओंऔर वर्विेषाधधकारों का आर्वश्यक बशिदान करने र्ें सर्थ मिो जाएं, केर्वि ल्जसके द्र्वारा सर्ाज को अन्याय और सार्ाल्जक वर्विनाि से बचाया जा सकता िै। परन्तु अन्त र्ें संसार की

प्रगतत िर्ें तछन्न-शभन्न करके रिगी, क्योंकक यि संसार ककन्हिं अराजक नर्ैाजी िाथों र्ें निहं ंिै। िर्ारह सभ्यता का अन्त इततिास का अन्त निहं िोगा; िो सकता िै यि ककसी नये युग का प्रारम्भ िह िो।

धर्-मतनरपेक्षता िर्ारे युग की र्ुख्य दुबिुमता

र्वतर्मान वर्वपवत्त के र्ुख्य कारण कौन-कौन से िैं? जब िर् युद्ध के कारणों का ल्जक्र करते िैं, तो िर् दूरूस्थ, प्रर्ुख और गौण कारणों के सम्बन्ध र्ें वर्वचार कर सकतिेैं। िर्ें युद्ध का कारण हिटिर का वैयल्क्तक नोवर्वज्ञान, उसकी असत् ्प्रततभा प्रतीत िो सकता िै; या वर्साईम सल्न्धपत्र र्ें युद्ध के दोष-सम्बन्धी अनुच्छेदों को िेकर जर्नमी का क्रोध, या जर्नमी के भूतपूर्व मउपतनर्वेशों को र्वापस िौटानेसे इन्कार करने ेपर जर्नमी का क्रोध, या एक र्ान जातत का अित अशभर्ान और स्वच्छन्दतार्वाद युद्ध का कारण प्रतीत िो सकता िै। यि भी युद्ध का कारण सर्झा जा सकता िै कक िहग आफ नेिन्स का तनःस्त्रीकरण-सर्म्ेिन बीच र्ें िह टूट गया; या यि कक औपतनर्वेशशक वर्वस्तार के भीड़भाड़-भरे क्षेत्र र्ें राष्रहय र्ित्वाकांक्षाओं र्ें संघष मचि रिा िै, परन्तु इनर्ें से कोई भी एक कारण इतने ेबड़े ेपैर्ाने की वर्वपवत्त के शिए ठीक-ठीक उत्तरदायी निहं ंसर्झा जा सकता। इनर्ें से प्रत्येक काय मिै, पररणार् िै, कारण निहं। आिा से भरे िुए संसार को ल्जस र्वस्तु ने नष्ट कर हदया िै र्वि िै एक शर्थ्या वर्वचारधारा और उसकी भ्ार्क कलपनाओं, वर्वश्र्वासों और र्ूलयों का संसार पर प्रभुत्र्व ।'[10]

सभ्यता एक जीर्वन-पद्धतत िै, र्ानर्वीय आत्र्ा की एक िेिचि। इसका तत्र्व ककसी जातत की प्राखणिास्त्रीय एकता र्ें या राजनीततक और आधथकम प्रबन्धों र्ें निहिं, अवपतु ुउन र्ान्यताओं (र्ूलयों) र्ें िै, जो उन प्रबन्धों को रचती िैं और बनाए रखती िैं। र्वस्तुतः राजनीतत और आधथकम रचना र्वि ढांचा िै, जो िोगों द्र्वारा जीर्वन की उन कलपनाओं और र्ूलयों के प्रतत आर्वेपूण मभल्क्त और तनष्ठा प्रकट करनेके शिए खड़ा ककया गया िै, ल्जन्िें र्वे िोग स्वीकार करते िैं। प्रत्येक सभ्यता ककसी न ककसी धर् मकी अशभव्यल्क्त िोती िै, क्योंकक धर् म परर् र्ूलयों र्ें वर्वश्र्वास और उन र्ूलयों को उपिदध करने के शिए जीर्वन की एक पद्धतत का प्रतीक िोता िै। यहद र्ें यि वर्वश्र्वास न िो कक र्वे ेर्ूलय, जो ककसी सभ्यता र्ें तनहित िैं, परर् िैं, तो उस सभ्यता के तनयर् तनजीर्व अक्षर बन जाएंगे, और उसकी संस्थाएं नष्ट िो जाएंगी। धाशर्कम वर्वश्र्वास िर्ें ककसी जीर्वन-पद्धतत पर डटे रिने ेके शिए आर्वेश भरता िै। और यहद उस वर्वश्र्वास का िास िोने िगता िै, तो आज्ञापािन घटकर आदत आर्वेश भरता िै। और धीरे्-धीरे् र्वि आदत भी अपने- आप सर्ाप्त िो जाती िै। उद्यदत-र्ा रि जाता िै। रह कम्युतनस्ट वर्वश्र्वास भी िौककक धर् मिैं। इनर्ें वर्वचार या वर्वश्र्वास या अ ाण के शिया ताजसे र्तभेद िोना अपराध सर्ा जाता िै। राज्य चच मके सर्ान बनभास र्ें अधधकृत प्रणिाह से आऔर इन्कीजिशन (धर् मके वर्वरोधधयों को दंड देनेर्वािी न्यायािय) िै। जब िर् इन सम्प्रदाओं र्ें दहक्षक्षत िोतिैं, तो िर् उपासना के र्न्त्र पढते िैं। िर् अवर्वश्र्वाशसयों को भांपते िैं और उन्िें पकड़कर फांसी के तख्ते के िर्वािे कर देते िैं। िर् धाशर्कम ऊजामओं

10 'ऐवपसि आफ टेक्स' को िेखक प्रश्न करता िै, "तुर् िोगों र्ें ये युद्ध और िड़ाईयांकिां ंसे आती िैं?" और उत्तर देता िै, "तुम्िारि सदस्यों र्ें युद्ध तुम्िारिह र्वासनाओं ंके कारण िोते िैं।"

और नोंभावों का उपयोग करते िैं। िौककक वर्वश्र्वासों र्ें एक प्ेरेरक िल्क्त, एक नोवैज्ञातनक गत्र्वरता (गततिीिता) दहख पड़ती िै, जो उन िोगों की गततवर्वधधयों र्ें हदखाई निहं ंपड़ती, जो उनका वर्वरोध करनेका प्रयत्न करते िैं।

ककसी भी सभ्यता का स्र्वरूप इस बात पर आधाररत िोता िै कक र्नुष्य की प्रकृतत और उसकी भवर्वतव्यता के वर्वषय र्ें उसकी धारणाएं क्या िैं। क्या र्नुष्य को प्राखणिास्त्रीय दृल्ष्ट से सबसे अधधक चािाक पिु ुसर्झा जाना चाहिए? क्या र्वि एक आधथकम प्राणी िै, जो संभरण और र्ांग के तनयर्ों और र्वग-मसंघषों द्र्वारा तनयल्न्त्रत रिता िै? क्या र्वि राजनीततक प्राणी िै, ल्जसर्ें अपररष्कृत अत्यधधक राजनीततकता सब प्रकार के ज्ञान-धर् मऔर बुद्धधर्त्ता को परे िटाकर र्ानर्व-र्न के केन्द्र पर छाई िुई िै? या उसर्ें कोई ऐसा आध्याल्त्र्क तत्र्व भी िै, जो सांसाररक और उपयोगी र्वस्तुओंकी अपेक्षा िाश्र्वत और सत्य को अधधक ऊंचा स्थान प्रदान करता िै? क्या र्ानर्व प्राखणयों को प्राखणिास्त्र, राजनीतत या अथिमास्त्र की दृल्ष्ट से सर्झना िोगा, या िर्ें उनके पाररर्वाररक और सार्ाल्जक जीर्वन, परम्परा और स्थान के प्रतत प्ेरेर्, धाशर्कम आिाओं और सान्त्र्वनाओं के प्रतत प्ेरेर् को भी ध्यान र्ें रखना िोगा, ल्जनका इततिास प्राचीन से प्राचीन सभ्यताओं की अपेक्षा भी अधधक पुराना िै? युद्ध का गम्भीरतर अथ मयि िै कक यि िर्ें र्नुष्य की प्रकृतत और उसकी सच्ची भिाई की उस अपूण मधारणा को हृदयंगर् करने र्ें सिायता दे, ल्जसर्ें िर् सब भी अपनी वर्वचार-प्रणािह और जीर्वन-प्रणािह के रूप र्ें सल्म्र्शित िैं। यहद िर् एक- दूसूरे के प्रतत दयािु निहं िैं और यहद पृथ्र्वी पर िाल्न्त स्थावपत करने ेके िर्ारे सब प्रयत्न असफि रिे िैं, तो उसका कारण यि िै कक र्नुष्यों के र्नों और हृदयों र्ें दुष्टता, स्र्वाथ मऔर द्र्वेष से भरह अनेक रुकार्वटें िैं, ल्जनकी िर्ारह जीर्वन-प्रणािह रोकथार् निहं करती। यहद िर् आज जीर्वन द्र्वारा ततरस्कृत िैं, तो इसका कारण कोई दुष्ट भाग्य निहं िै। जीर्वन के भौततक उपकरणों को पूण मकर िेने र्ें िर्ारह सफिता के कारण िर्ारे र्न र्ें आत्र्वर्वश्र्वास और अशभर्ान की एक ऐसी नोदिा उत्पन्न िो गई िै, ल्जसके कारण िर्ने प्रकृतत का ज्ञान-संचय और र्ानर्वीकरण करने ेके बजाय उसका िोषण करना प्रारम्भ कर हदया िै। िर्ारे सार्ाल्जक जीर्वन ने िर्ें साधन तो हदए िैं परन्तु िक्ष्य प्रदान निहं ककए। िर्ारह पीढह के िोगों पर एक भयानक अन्धता छा गई िै, जो िांतत के हदनों र्ें कठोर आधथकम तनयर्ों के द्र्वारा और युद्ध के हदनों र्ें आक्रर्ण और क्रूरता द्र्वारा र्ानर्वीय कष्टों से जुआ खेिते निहं ंहिचकते। र्ानर्व से आत्र्तत्र्व का बहिष्कार भौततक तत्र्व की सर्वोच्चता का प्रर्ुख कारण िै, जो (भौततक सर्वोच्चता) आज िर्ारे शिए इतनी बोखझि और कष्टदायक बन गई। भौततक द्र्वारा र्ानर्वीय की पराजय िर्ारह सभ्यता की केन्द्रहय दुबिुमता िै।

'भगर्वद्गीता' र्ें शिखा िै कक जब र्नुष्य अपने-आपको धरती पर देर्वता सर्झने िगते िैं और जब र्वे अपनेर्ूि से अपना सम्बन्ध वर्वच्छेद कर िेते िैं और र्वे इस प्रकार अज्ञान द्र्वारा पथभ्रष्ट िो जाते िैं, तब उनर्ें एक िैतानी वर्वकृतत या अिंकार उठ खड़ा िोता िै, जो ज्ञान और िल्क्त दोनों की दृल्ष्ट से अपने-आपको सर्वोच्च घोवषत करता िै।'[11] र्नुष्य स्र्वायत्त िो गया िै और उसने आज्ञा-पािन और वर्वनय को ततिांजशि दे दह िै। र्वि

[11] ईश्र्वरोऽिर्िंभोगीशसद्धोऽिंबिर्वान् ुसुखी,
...इत्यज्ञानवर्वर्ोहिताः। 16-14-15

 अपना स्वार्ी स्वयंबनना चािता िै और 'देर्वताओं के सर्ान' बनना चािता िै।[12] जीर्वन पर अधधकार करने ेऔर

उसका तनयंक्षण करने ेऔर ईश्र्वरिहन संस्कृतत का तनर्ाणम करने ेके प्रयास र्ें र्वि परर्ात्र्ा के वर्वरुद्ध वर्वद्रोि करता िै। आत्र्तनभरमता को र्वि चरर्सीर्ा तक िे जा रिा िै। युद्ध उसके इस धर्-मत्याग के, थारुता द्र्वारा अपररष्कृत, प्रकृतत के स्तुततगान के परररणार् िैं। अधधनायकों ने अपने-आपको परर्ात्र्ा के स्थान पर िा रखा िै। र्वे ईश्र्वर-वर्वश्र्वास को सर्ाप्त कर देना चािते िैं, क्योंकक र्वे ेअपना कोई प्रततद्र्वन्द्र्वी निहं ंदेखना चािते। हिटिर एक अद्भुत रचना था। र्वि िर्ारह सभ्यता की भवर्वष्यसूचक आत्र्ा सर्झी जा सकता िै। जब िर् र्ान्यताओं (र्ूलयों) के सुतनल्श्चत अध:पतन को देखते िैं, तो िर्ें 'ककंग शियर' नाटक र्ें ड्यूक आफ एिबैनी के साथ यि कि उठनेका र्न िोता िै, "यि सर्य का अशभिाप िै कक पागि अन्धों का नेतृत्र्व कर रिे िैं।" क्योंकक िर्ारे नेताओं को सुदूरू ऊंचाइयों से आनेर्वािा प्रकाि प्राप्त निहं ंिोता, अवपतु र्वे ेकेर्वि बुद्धध के पाधथर्वम प्रकाि को िह प्रततफशित करते िैं, इसशिए उनका भी भाग्य लयुसीफर (िैतान) का सा िह िोगा और उन्िें बुद्धध के अशभर्ान के कारण वर्वनाि के गतम र्ें धगरना िोगा।

ककन्तु र्नुष्य, अशभर्ानी र्नुष्य
अपनेतुच्छ और क्षुद्र अधधकार से भरा,
ल्जसका उसे सबसे अधधक तनश्चय िै,
उसी के वर्वषय र्ें सबसे अधधक अज्ञानी;
उसका भंगुर सार एक कुरुद्ध र्वानर की भांतत
उच्च स्वग मके सम्र्ुख ऐसी वर्वधचि करतूतें करता िै
कक देखकर देर्वदूतों को रोना आ जाए ![13]

र्वि सर्झता िै कक र्वि सब र्वस्तुओंका शिरोर्खण िै और उसे भौततक और याल्न्त्रक तथा र्ूत मऔर दृश्य र्ें अन्धवर्वश्र्वास िै। उद्योग और र्वाखणज्य के उद्देश्य र्ानर्वीय आर्वश्यकताओं की पूतत िोने के बजाय सम्पवत्त और िाभ िो गए िैं। सत्य, शिर्व और सुन्दरता का संसार परर्ाणुओं के आकल्स्र्क संयोग से बना िुआ घोवषत ककया जाता िै और बतिाया जाता िै कक इसका अन्त भी िाइड्रोजन गैस के र्वैसे िह बादिों के रूप र्ें िोगा, जैसे बादिों से यि बना था। बुद्धधर्वाद, जो प्राचीन धर्-मशसद्धान्तों को अक्षरिः सत्य स्र्वीकार न करने ेकी सीर्ा तक बबिकुि उधचत था, इस वर्वश्र्वव्यापी कलपना र्ें आकर सर्ाप्त िुआ िै कक परर्ात्र्ा की र्वास्तवर्वकता को स्र्वीकार निहं ंककया जा सकता। र्नुष्य अपनी अनन्त सत्तािोुपता और िापर्वािह के साथ हदय वर्विेषाधधकारों का छि से उपभोग कर रिा िै और र्वि सार्वजमतनक र्ताधधकार, बड़े ेपैर्ाने पर उत्पादन और रोटरह कृबि की सेर्वाओं पर आधाररत एक नये संसार की रचना करनेका प्रयत्न कर रिा िै और इसके शिए र्वि बीच-बीच र्ें अधधकृत रूप से उस परर्ात्र्ा की भी स्तुतत करता जाता िै, ल्जसके वर्वषय र्ें उसे पूरह तरि तनश्चय निहं ंिै। तनर्ूमि धर्तमनरपेक्षता या र्नुष्य और राज्य की पूजा, ल्जसर्ें धाशर्कम भार्वना का िलका-सा पुट दे हदया गया िै, आधुतनक

---

12 जैनेशसस3.5

13 िेक्सवपयर, र्ेजर फॉर र्ेजर 2.2

युग का धर् मै। ल्जन शसद्धान्तों र्ें इस बात पर आग्रि ककया गया िै कक र्नुष्य को केर्वि रोटह से िह जीववर्त रिना चाहिए, र्वे आध्याल्त्र्क जगत् ्के साथ र्नुष्य के सम्बन्धों का ववच्छेद कर रिे िैं तथा र्वगम और जातत, राज्य और राष्र के िौककक सर्ुदायों के साथ उसका पूणतमया एकीकरण कर रिे िैं। उसे अपनेधचरपीवषत स्र्वप्नों और आधधववद्यक धचन्तनों से दूर िटाया जा रिा िै और पूरह तरि धर्तमनरपेक्ष बनाया जा रिा िै। जो िोग भौततकर्वाद का आधधववद्यक ववश्र्वास के रूप र्ें खंडन भी करते िैं और धाशर्कम िोने का दार्वा करते िैं, र्वे भी जीर्वन के प्रतत भौततकर्वादह रुख को अपनाते िैं। र्वे र्वास्तववक र्ान्यताएं (र्ूल्य), ल्जन्िें िेकर िर् जी रिे िैं, चािे िर् ऊपर से कुछ भी क्यों न किें, र्वे िह िैं, जो िर्ारे ित्रुओं की िैं; और र्वे िैं, सत्ता की तीव्र िािसा, कूररता का आनन्द और प्रभुत्र्व का अशभर्ान। सारा संसार उस र्वेदना के चीत्कार से भरा िुआ िै, जो युगों को व्याप्त करके न्याय के शिए पुकार रिह िै।

यहद अनेक अतृप्त कार्नाएं न िों, ल्जनर्ें से सबकी सब भौततक स्तर की निहं िैं, तो धर् मअफीर्धर्श्रत तनःसंज्ञ करनेर्विह ओषधध का कार् निहं कर सकता। अच्छा भोजन, नरर् गद्दे और बहढया कपड़े िह िर्ें सन्तुष्ट करने के शिए काफी निहं िैं। दुःख और असन्तोष केर्वि गरहबी के कारण िह पैदा निहं िोते। र्नुष्य एक ववधचत्र प्राणी िै जो दूसरे पिुओं से र्ूितः शभन्न िै। उसकी दृल्ष्ट का क्षक्षततज बिुत दूर तक िै; उसर्ें अजेय आिाएं, सृजनात्र्क ऊजाएंम और आध्याल्त्र्क िल्क्तयां िैं। यहद इन सबका ववकास न िोने पाए और र्वे अतृप्त रिें, तो सम्पवत्त से प्राप्त िो सकनेर्विह सब सुख-सुववधाओं के िोतेिुए भी उसे यि अनुभर्व िोता रिेगा कक जीर्वन जीनेयोग्य निहं िै। र्ानर्वतार्वादह िेखकों ने, िा और र्वैल्स, आनलमड बैनट और गालसर्वदी ने, जो अरुणोदय के अग्रदूत सर्झे जाते िैं, आधुतनक जीर्वन की दुबिुमताओं, असंगततयों और तनबिमताओं का अनार्वरण ककया िै। परन्तु उन्िोंने और अधधक गिरह धाराओं की उपेक्षा कर दह िै और किहं-किहं उनका गित तनरूपण कर हदया िै। चािे जो भी िो, उन गम्भीरतर धाराओं के स्थान पर उन्िोंने कोई नई र्वस्तु निहं दह। परम्परा, नैततकता और धर् म के िटा देने से ररक्त िुए स्थान र्ें कुछ िोगों ने जातत और सत्ता की अस्पष्ट भार्वनाओं को रखनेका प्रयास ककया िै। आधुतनक र्नुष्य का र्न रूसो के 'सोिि कंरैक्ट' (सार्ाल्जक युगबन्ध), र्ाक्स मके 'कैवपटि' (पूंजी), डावर्वनम के 'आन दह ओररल्जन आफ स्पीसीज़' (जाततयों के र्ूि के ववषय र्ें) और स्पगैंिर के 'हद डडक्िाइन आफ दह र्वेस्ट' (पल्श्चर् का पतन) द्र्वारा ढिा िै। िर्ारे जीर्वन की बािरह अव्यर्वस्था और गढबड़ी िर्ारे हृदय और र्न की अस्तव्यस्तता को प्रततफशित करती िै। प्िेटो किता िै, "संववधान तो उन र्ान्यताओं (र्ूल्यों) के बाह्य जगत् र्ें प्रततबबम्बर्ान िोते िैं, जो र्नुष्य के र्न र्ें ववद्यर्ान िोती िैं।"[14] ल्जन आदिशों को िर् पसन्द करते िैं और ल्जन र्ान्यताओं को िर् अपनाते िैं, उन्िें िर् सार्ाल्जक अशभव्यल्क्त प्रदान कर सकें, इसके शिए आर्वश्यक िै कक पििे उनर्ें पररर्वतनम ककया जाए। िर् भववष्य को सुरक्षक्षत करने र्ें केर्वि उसी सीर्ा तक सिायता दे सकते िैं, ल्जस सीर्ा तक िर् अपने-आपको बदिते िैं। िर्ारे युग र्ें जो र्वस्तु िुप्त िो गई िै, र्वि आत्र्ा िै; िर्ारह र्ें कोई ववकार निहं िै। िर् आत्र्ा के रोग से पीडड़त िैं। िर्ें िाश्र्वत र्ें अपने र्ूि को खोजना िोगा और अनुभर्वातीत सत्य र्ें कफर ववश्र्वास जर्ाना िोगा, ल्जसके द्र्वारा जीर्वन व्यर्वल्स्थत िो जाएगा, ववसंर्वादह तत्र्व अनुिासन र्ें आ

---

[14] तुिना कील्जए, "ओ र्नुष्य, बुराई के करनेर्वािे को और र्त ढूंढ। तू स्र्वयं र्वि िै। तू जो कुछ बुराई करता िै, या जो कुछ बुराई तू सिता िै, उसके शसर्वाय और कोई बुराई संसार र्ें निहं िै और इन दोनों का कारण तू िह िै।"- रूसो

धर् मऔर सर्ाज 23 जाएंगे और जीर्वन र्ें एकता आ जाएगी और उसका कुछ ि्क्ष्य बन जाएगा। यहद ऐसा न िुआ तो, जब बाढ

आएगी और जब तूफान उठेगा और उसकी चोट िर्ारे र्कान पर पड़ेगी, तो र्वि ढि जाएगा।15

द्र्वन्द्र्वात्र्क भौततकर्वाद

परन्तु क्या भौततकर्वादह का िर्से यि किना उधचत निहं िै कक िर् अनुभर्वगम्य तथ्यों पर और इस संसार की सुतनहदमष्ट र्वास्तवर्वकताओं पर अपनेपक्ष को आधाररत करें? एकर्ात्न र्वस्तु, ल्जसके सम्बन्ध र्ें िर् ककसी सीर्ा तक सुतनल्श्चत िो सकते िैं, यि संसार िै। धर् मका दूसूरा संसार अथात् म ्परिोक सम्भर्वतः र्न की एक कलपना-र्ान िै; और यहद परिोक का अल्स्तत्र्व िो भी, तो 'भी उसके र्वर्वषय र्ें कुछ भी जाना निहं ंजा सकता। सब दिों र्ें आदिर्वमादह र्वर्वचारकों के शिए र्ाक्सर्वमाद का आकषणम बिुत प्रबि रिा िै। िर्ें से अनेक िोग, जो भारत र्ें र्वर्वद्यर्ान दिाओंसे असन्तुष्ट िैं, सोवर्वयत धारणा की ओर आकृष्ट िोतिैं, ल्जसर्ें र्वगिमहन सर्ाज की प्रिंसा की गई िै, ल्जसर्ें ककसानों की जनसंख्या के शिए उद्योगर्वाद की र्वर्वचारधारा का प्रततपादन ककया गया िै और ल्जसर्ें कार्गर के र्ित्र्व को बढा-चढाकर र्वणनम करने ेके शिए जनसर्ूि-र्नोर्वर्वज्ञान की अद्भुत तकनीक का उपयोग ककया गया िै। सोवर्वयत रूस ने, जो पृथूर्वी पर स्र्वग मका तनकटतर् रूप िै, अपने स्थि क्षेत्र संसार के प्रत्येक भाग र्ें एक नये ढंग के राज्य की स्थापना के प्रतत सचेत रितिुए र्वर्वद्यर्ान व्यर्वस्था के प्रतत अपनी अर्वज्ञा िक्ष्य की इतनी आर्वेिपूण मदृढता और उपायों की र्वर्वशभन्नता के साथ प्रस्तुत की कक िोगों को यि भ्रर् िो गया कक उसके अल्स्तत्र्व का उद्देश्य केर्वि र्वर्वध्र्वंसकारह प्रचार िह िै। इस चुनौती के कारण उतनी िह उच्च और तुरुि प्रततकक्रया भी िुई, ल्जसके फिस्र्वरूप तथ्यों को जान पाना िह कहठन िो गया। इससे पििे कोई भी सार्ाल्जक र्वाद-र्वर्वर्वाद इससे अधधक िोरगिु और पक्षपातपूण मशसद्धान्तर्वाद के साथ निहं ककया गया था। कफर भी उसके कठोर से कठोर आिोचक भी इस बात से इन्कार निहंकर सकते कक सोवर्वयत रूस एक र्िान परहक्षण िै, जो अर्ेररकी और फ्रांसीसी क्राल्न्तयों की अपेक्षा किहं अधधक र्ित्र्वपूण मिै। यि पृथूर्वी के स्थि भाग के छठे हिस्से पर बसी िुई िगभग 20 करोड़ जनता के सम्पूण मसर्ाज की राजनीततक, आधथकम और सार्ाल्जक रचना को कुछ सार्ाल्जक र्वर्वचारकों द्र्वारा प्रततपाहदत सर्ाज के शसद्धान्तों के अनुसार नये रूप र्ें ढािने का प्रयत्न िै। दो दिाल्ददयों र्ें र्विंसे ज़र्ींदार और पूंजीपतत िुप्त िो गए िैं और व्यल्क्तगत नर्वारम्भ (उद्यर्) केर्वि ककसानों और कारहगरों के छोटे पैर्ाने के कायों तक िह सीशर्त रि गया िै।

संसार के शिए साम्यर्वाद की पुकार र्ें धर् मका आर्वेि िै। साम्यर्वाद र्वर्वद्यर्ान बुराइयों को चुनौती देता िै, कारमर्वाई के शिए एक स्पष्ट और सुतनल्श्चत कायक्रमर् प्रस्तुत करता िै और आधथकम तथा सार्ाल्जक दिाओं का

---

15 तुिना कील्जए, "जब से र्िासागरों पर र्नुष्य का आधधपत्य िुआ िै, तब से उनके ककनारे तीन उलिेखनीय राज्य स्थावपत िुए, जो अन्य राज्यों की अपेक्षा बिुत बड़े ेथे, टायर, र्वेतनस और इंग्िैंड। इन र्िान िल्क्तयों र्ें से पििह की तो अब केर्वि स्र्ृतत िह िेष रि गई िै। दूसूरह इस सर्य र्वर्वनाि की दिा र्ें िै; और तीसरह, ल्जसेउनकी र्िानता उत्तराधधकार र्ें शर्िह िै, यहद उनके उदािरण को भूि बैठी तो सम्भर्व िै कक और अधधक अशभर्ानपूण मर्ित्र्व को प्राप्त िोनेके बाद इस प्रकार नष्ट िो जाए कक उसपर िोगों को कर् िह दया आए।"- रल्स्कन

एक वैज्ञातनक वर्वर्श्लेषिण प्रस्तुत करने ेका दार्वा करता िै। गरहबों और पीडड़तों के शिए इसकी धचन्ता, सम्पवत्त और उन्नतत के अर्वसरों के और अधधक उधचत वर्वतरण के शिए इसकी र्ांग, और जातीय सर्ानता पर इसके आग्रि के द्र्वारा यि िर्ें एक ऐसा सार्ाल्जक सन्दिे देता िै, ल्जससे सब आदिर्वमादह सिर्त िैं। परन्तु इसके सार्ाल्जक कायक्रमर् से सिानुभूतत िोने ेका यि अथ मनिहीं किक िर् जीर्वन के र्ाक्सर्वमादह दिनम को, चरर् र्वास्तवर्वकता की उसकी नाल्स्तक धारणा को, और र्नुष्य के सम्बन्ध र्ें उसके प्रकृततर्वादह दृल्ष्टकोण को, और व्यल्क्तत्र्व की पवर्वत्रता के प्रतत उसकी अर्वज्ञा को भी स्र्वीकार करते िैं। सार्ाल्जक क्रांतत के प्रभार्वी उपकरण के रूप र्ें र्ाक्सर्वमाद से सिानुभूतत रखना एक बात िै और उसकी आधधवर्वद्यक पृष्ठभूशर् को स्र्वीकार करना दूसूरह बात।

र्ाक्सर्वमाद उसके अनिािोचक (अन्ध) सर्थकमों और कट्टर वर्वरोधधयों, दोनों के शिए िह एक धर्-मसा बन गया िै। र्ाक्सर्वमाद का र्ित्र्वपूण मदार्वा यि िै कक यि वैज्ञातनक िै। यि िाशिर् के रूप र्ें प्रकट िुआ शसद्धान्त निहं ंिै, अवपतु तथ्यों का र्वस्तुरूपात्र्क अध्ययन िै। कई ितादिदह िपिे वर्वज्ञान वर्वद्र्वत्तार्वाद से शिग िो गया था। वर्वद्र्वत्तार्वादह िोग अपनी बात को सत्य शसद्ध करने के शिए स्फुरणाप्राप्त और इसीशिए भ्रर्ातीत सर्झे े जानेर्वािे िोगों की पुस्तकों से उद्धरण हदया करते थे। जब र्ाक्स मने किा कक र् ैंर्ाक्सर्वमादह निहं ंिूं, तो उसका अथ मयि था कक र् ैंककसी भी शसद्धान्त को अल्न्तर् और पूण मऔर सुदृढ रूप से स्र्वीकार करने की िपथ निहीं चुका िूं। "र्ाक्सर्वमाद केर्वि अस्थायी सत्य को प्रस्तुत करता िै।" रोज़ा िक्सम्बग मने गिरह अन्तदृल्मष्ट के साथ शिखा, "यि आर्िचू तकमप्रधान िै और इसके वर्विनाि के बीज इसीर्ें वर्वद्यर्ान िै।" ककन्तु दुभाग्मय से र्ाक्सर्वमाहदयों ने सब शसद्धान्तर्वादह प्रणाशियों की भांतत उसको वर्वर्ाननेर्वािों को द्रोह ठिरानेकी तकनीक को अपनाया। फाशसस्ट की दृल्ष्ट र्ें कम्युतनस्ट नीच, काकफर और कम्युतनस्ट की दृल्ष्ट र्ें पूंजीपतत िैतान का भाई ि। िर् सब स्र्वयंदेर्वदूत िैं और िर्ारे वर्वरोधी िैतान िैं। यहद आप सच्चे धर् मको निहंर्ानते, तो आपकी तनष्ठा और आज्ञा- पािन, आपका सािस और ईर्ानदारह, आपकी भल्क्त और उत्च्य हृदयता, सब पाप िैं। िर् िो पार िो गए िैं, और आप बीच धार र्ें खूब रिे िैं। संदिे करना या प्रश्न करना अपराध िै, ल्जसका दंड उत्पीड़न शिवर्वरों की यन्त्रणाओं द्र्वारा हदया जाना चाहिए।

र्ें र्ाक्सर्वमाद को धर् मर्ाननेकी आर्वश्यकता निहं ंिै, अवपतुर्ें इसे र्न की शिष्टता और आत्र्ा की वर्वनय के साथ देखना चाहिए, जो कक वर्वज्ञान के वर्वद्याथी की वर्वशेषताएं िैं। र्ाक्सर्वमाद का सार्ाल्जक कायक्रमर् र्ानर्व जातत की र्वास्तवर्वक आर्वश्यकताओं और आधुतनक तकनीकी साधनों द्र्वारा उत्पादन की आर्वश्यकताओं के अधधक उपयुक्त िै। सर्ाजर्वाद की र्ांग एक नैततक र्ोग िै, परन्तु इसे वैज्ञातनक आर्वश्यकता का रूप देनेके शिए यि युल्क्त दह जाती िै कक द्र्वन्द्र्वात्र्क भौततकर्वाद की धारणा से ऐततिाशसक प्रकक्रया की अपेक्षाकृत अधधक सन्तोषजनक व्याख्या िो जाती िै। र्ाक्सर्वमादह वर्वचारधारा के र्ुख्य तत्त्र्व र्ूलय का शसद्धान्त, ल्जसर्ें उन पद्धततयों का र्वणनम ककया गया िै, ल्जनके द्र्वारा पूंजीपतत कार्गरों का िोषण करते िै, द्र्वन्द्र्वात्र्क भौततकर्वाद की धारणा, इततिास की आधथकम दृल्ष्ट से व्याख्या, प्रगतत का र्वग-म शसद्धान्त और कार्गरों की सत्ता प्राप्त करनेके शिए उपाय के रूप र्ें क्राल्न्त की र्वकाित िैं।

श्रशर्क-र्वग मकी दृल्ष्ट र्ें पूंजीपतत का ििाभ अततररक्त रूलय (सरप्ि्स वैंलयू) िोता िै, ल्जसे कार्गर उत्पन्न करते िैं और ल्जसे र्ध्यर्वग म(बुजुआम) चुरा िेता िै। परन्तु पूंजीपततयों का र्वश्र्वास िै कक ििाभ तो उद्यर् और संगठन की योग्यता का वैंध पुरस्कार-र्ान िै। र्ाक्सर्वमाद के रूलय के शसद्धान्त के र्वर्षय र्ें, जो आिोचना की कसौटह पर खरा निहं उतरा िै, कुछ किने का र् िैंअपने-आपको अधधकारह निहं र्ानता। परन्तु ल्जन िोगों को र्ाक्सर्वमादह दिनम से बिुत अधधक सिानुभूतत िै, उनका भी यि र्वचार िै कक "यि तथ्यों से र्वसंगत िै और आत्संगत निहींं।"[16]

र्ाक्स मने िेगि की द्वन्द्वात्क पद्धतत को अपनाया िै और उसनेिह्माण्ड के र्वकास को इस रूप र्ें देखा िै कक यि भौततक तत्व का द्वन्द्वात्क िींिह पर प्रस्फुटन र्ात्र िै। उसकी अधधर्वद्या (र्ेटाफील्ज़क्स) भौततकर्वादह िै और उसकी पद्धतत द्वन्द्वात्क िै। र्ाक्स मअपनेआधधर्वद्यक भौततकर्वाद के शिए कोई प्रर्ाण प्रस्तुत निहं करता। र्वि इततिास की भौततकर्वादह धारणा या सर्ाल्जक तत्व की आधथकम कारणता की चचाम करता िैंऔर उसका र्वचार िै कक र्वे िेआधधर्वद्यक भौततकर्वाद के पररणार् िैं; परन्तु ये दोनों परस्पर बबिकुि असम्बद्ध िैं।17

अपने'फ्यूअरबाख पर ग्यारि तनबन्ध' र्ें र्ाक्स मने यि युल्क्त प्रस्तुत की िै कक "ििीपिे के सब भौततकर्वादों र्ें- ल्जनर्ें फ्यूअरबाख का भौततकर्वाद भी सल्म्र्शित िै- र्ुख्य बुहट यि िै कक जब र्वर्षय (गैगनस्टैण्ड), र्वास्तर्वकता, अनुभर्वगम्यता का तनरूपण केर्वि र्वर्षय (ऑदजेक्ट) के रूप तन के अन्तगतम या रूपधचन्तन (ऐनिाउंग) के अन्तगतम ककया गया िै, परन्तुर्ानर्वीय अनुभूततीर भू गततर्वधध या व्यर्विार के रूप र्ें निहं,ं कताधमश्रत (सदजेल्क्टर्व) रूप र्ें निहं।" इससे यि तनष्कार तनकिा कक आदिर्वमाद ने सकक्रय पक्ष को भीततकर्वाद के र्वरोध र्ें र्वकशसत ककया। दूसरे िददों र्ें, भौततकर्वाद के अन्य प्रकारों र्ें भौततक तत्व की धारणा अनुभूतत की धारणा के साथ जुड़ी िुई थी। भौततक तत्व को अनुभूतत का कारण और साथ िह साथ अनुभूतत का र्वर्षय भी र्ाना जाता था; और अनुभूतत एक तनल्ष्क्रय र्वस्तु थी, ल्जसके द्वारा र्न बाह्य जगत ्के प्रभार्वों को ग्रिण करता था। प्रभार्वों का तनल्ष्क्रय ग्रिण जैसी कोई र्वस्तु िै िह निहं। भौततक तत्व र्न की गततर्वधध को जागररत करता िै और भौततक तत्व, ल्जस रूप र्ें िर् उसको सझते िैं, र्ानर्वीय उपज िै। प्रारल्म्भक से प्रारल्म्भक ज्ञान र्ें भी र्न सकक्रय रिता िै। िर् आसपास की पररल्स्थततयों को दपणम की भांतत केर्वि प्रततबबल्म्बत निहं ंकर रिे िोते, अवपतु उन्र्ें पररर्वततम भी कर रिे िोतिंै। ककसी र्वस्तु को जानना उसका प्रभार्व ग्रिण करना-भर निहं ंिै, अवपतुउसके ऊपर सफितापूर्वकम कक्रया करने र्ें सर्थ िोना िै। सब प्रकार के सत्य की परख कक्रयात्क िै। क्योंकक जब िर् ककसी र्वस्तु पर कक्रया करते िैं, तो िर् उसे पररर्वततम कर देते िैं, इसशिए सत्य र्ें ल्स्थततिीिता बबिकुि निहं िै। र्वि तनरन्तर पररर्वततम और र्वकशसत िोता रिता िै। ल्जसे आजकि

---

[16] िैरलड जेिास्की, 'किा मर्ाक्स'म (1934), पृष्ठ27

[17] तुिना कील्जए, "उसका आधथकम र्वकास का सम्पूण मशसद्धान्त पूरह तरि उसी दिा र्ें सत्य िो सकता िै, जबकक उसकी अधधर्वद्या शर्थ्या िो; और यहद उसकी अधधर्वद्या सत्य िै, तो र्वि शसद्धान्त शर्थ्या िै। और यहद उसपर िेगि का प्रभार्व न िोता, तो उसे यि बात कभी सूझ भी न सकती थी कक कोई इतनी र्वशुद्ध अनुभर्वजन्य र्वस्तु अव्यक्त अधधर्वद्या पर तनभरम िो सकती िै।" 'फ्रीडर् एण्ड आगनमाइजिेन' (1934), पृष्ठ 220-बरैण्ड रसि।

सत्य का पररणार्वादह स्वरूप किा जाता िै, र्ाक्स मउसीको स्वीकार करता िै। र्वि ज्ञान को र्वस्तुओंके ऊपर की जा रिह कक्रया र्ानता िै। यि काय मिै, ल्जसकी व्याख्या भौततक िल्क्तयों के तनयंत्रण और रूपान्तरण के रूप र्ें की गई िै। परन्तु ज्ञान अपने-आपर्ें एक बिुर्ूलय र्वस्तु िै। र्नुष्य भौततक तत्व का ज्ञान प्राप्त करना चािता िै, और उसपर केर्वि प्रभुत्व स्थावपत करना निहंचािता। ज्ञान का उद्देश्य अपने-आपर्ें अल्न्तर् िै। एक सुतनल्श्चत और पूण मप्रकार का ज्ञान ऐसा िोता िै, ल्जससे िर्ारे ज्ञानात्र्क पक्ष की गंभीर से गंभीर र्ित्वाकांक्षाएं पूण मिो जाती िैं।

र्ाक्स मअपनेभौततकर्वाद को द्र्वन्द्र्वात्र्क किता िै, क्योंकक उसर्ें प्रगततिीि पररर्वतनम का सारभूत शसद्धान्त र्वद्यर्ान िै। इसे भौततकर्वादह किा गया िै, इसशिए निहंकक यि र्न के अल्स्तत्र्व को भौततक तत्व के एक व्युत्पन्न गुण के रूप र्ें र्ानने के शसर्वाय, अस्वीकार करता िै या र्न के ऊपर भौततक तत्व की सर्वोच्चता पर ज़ोर देता िै, बल्लक इसशिए कक यि र्ानता िै कक र्वचार र्वस्तुओं पर कक्रया करके, उनके रूप और िल्क्त र्ें पररर्वतनम करके इततिास पर प्रभार्व डाितिैं। र्वे भौततक र्वस्तुएं, ल्जन्िें र्ाक्स मसार्ाल्जक पररर्वतनम का र्ुख्य तनणायमक बताता िै, प्रकृतत का कच्चा र्ाि निहं िैं, अवपतु र्ानर्वीय उपजें िैं, ल्जनपर र्ानशसक गततर्वधध की छाप पड़ी िुई िै। र्वे केर्वि प्राकृततक र्वस्तुएं निहंिैं, अवपतु र्वे र्वस्तुएं िैं जो र्ानर्व-र्न की िल्क्त से अनुप्राखणत िैं।

र्वे केर्वि कोयिा, पानी या बबजिह निहं िैं, अवपतु िर्ारा उन तरहकों का ज्ञान िै, ल्जनके द्र्वारा र्ानर्वीय िक्ष्यों को पूरा करनेके शिए इन प्राकृततक िल्क्तयों का उपयोग ककया जा सकता िै। जब यि किा जाता िै कक उत्पादिीिनी प्राकृततक िल्क्तयों के र्वकास द्र्वारा इततिास की गतत का तनधारमण िोता िै, तब िर्ें यि ज्ञात रिना चाहिए कक उत्पादिीिनी िल्क्तयों के अन्तगतम न केर्वि भूशर् की उर्वरमता, धातुओं के गुण, सूय मकी ऊष्र्ा, भाप की िल्क्त और बबजिह-जैसी प्राकृततक िल्क्तयां िैं, अवपतु र्ानर्व-र्न की िल्क्त भी िै। र्ाक्स मको र्वर्वि िोकर र्नुष्य की बुद्धध को उत्पादिीिनी िल्क्तयों से अिग रखना पड़ा िै, क्योंकक उसनेइसे र्वचारधारात्र्क ऊपरह ढांचे के अन्तगतम रखा िै, जो एक पररणार् िै, एक गौण तत्व। और यद्यवप उत्पादक िल्क्तयां पृथ्र्वी पर अनेक तिाल्ददयों से र्वद्यर्ान थीं, पर आधथकम उत्पादन के शिए र्वे तभी उपिदध िो पाईं, जब र्नुष्य की बुद्धध ने उन्िें खोज तनकािा और उन्िें उत्पादन के प्रयोजन के अनुकूि ढाि शिया। इस सर्य भी ऐसी अनेक प्रकृतत की ल्क्तयां िो सकती िैं, ल्जनकी अभी खोज निहं िुई िै, ल्जनका पता चिना अभी िेष िै और ल्जनका प्रयोग ऐसे

कायों के शिए ककया जा सकेगा, ल्जनका िर्ें अभी गुर्ान भी निहं िै। औज़ार बनाने, पिु पािनेऔर कृवष प्रारम्भ करने से िेकर भाप और बबजिह के उपयोग तक, उत्पादिीिनी िल्क्तयों की खोज और उपयोग सबके सब र्ानर्वीय र्न, कलपना और उद्देश्य के िह काय मिैं। उत्पादिीिनी िल्क्तयां स्वयर्ेर्व र्वकशसत निहं िो जातीं। यद्यवप र्ाक्स मजिां-तिांभौततक को उत्पादिीिनी िल्क्तयां, और र्ानशसक को भौततक के ऊपरह ढांचे का प्रततबबम्ब र्ात्र, आधथकम िीचि द्र्वारा फेंकी जा रिह छाया-र्ात्र, र्ानता िै, कफर भी उसका र्ुख्य इरादा इन दोनों को िह उत्पादिीिनी ल्क्तयों की प्रकृतत र्ें सर्ाती िुई र्ानने का िै। उदािरण के शिए, औजारों का तनर्ाणम र्ानर्व जातत के बौद्धधक जीर्वन का एक अंग िै।

र्ाक्स मअपनेशसद्धान्त को 'भौततकर्वादह' इसशिए किता ि◌ै, ल्जससे ि◌ेगि के आदिर्वमाद से उसका वैषम्य स्पष्ट ि◌ो सके; आदिर्वमाद की दृल्ष्ट र्ें यि घटनाओं का जगत् ्◌वर्विुद्ध 'वर्वचार' के जगत् ्◌की छाया-र्ान ि◌ै। ि◌ेगि के वर्वरोध र्ें र्ाक्स मका यि र्त ि◌ै कक र्न और प्रकृतत सकारात्र्क (पॉल्ज़हटर्व) तत्र्व ि◌ैं, 'वर्वचार' के सारिहन प्रततबबम्ब-भर निहं। इसके अततररक्त, ि◌ेगि की दृल्ष्ट र्ें, पररर्वतनम केर्वि रूप का भ्रर् ि◌ै, जबकक र्ाक्स मके शिए पररर्वतनम ि◌ह र्वास्तवर्वकता का सार ि◌ै। ल्जन र्वस्तुओंको ि◌र् देखते, छूते और अनुभर्व करते ि◌ैं, र्वे र्वास्तवर्वक ि◌ैं और र्वे तनरन्तर पररर्वततत ि◌ो रिह ि◌ैं; और ये पररर्वतनम उनके आन्तररक अंग ि◌ैं, उनपर 'परर् सत्ता' (एदसोलयूट) द्र्वारा थोपे गए निहं ि◌ैं। र्ाक्स मअनुभर्वशसद्ध र्न और र्वस्तुओंकी र्वास्तवर्वकता र्ें र्वश्र्वास करता ि◌ै, जो ि◌ेगि के यिां 'परर् सत्ता' र्ें डूबी ि◌ुई ि◌ैं। फ्यूअरबाख पर अपनी तीसरह हटप्पणी र्ें र्वि अपररष्कृत भौततकर्वादह दृल्ष्टकोण का खण्डन करता ि◌ै, "भौततकर्वादह यि शसद्धान्त, कक र्नुष्य पररल्स्थततयों और शिक्षा की उपज ि◌ैं और यि कक इसशिए बदिे ि◌ुए र्नुष्य अन्य बदिह ि◌ुई पररल्स्थततयों और बदिह ि◌ुई शिक्षा की उपज ि◌ैं, इस बात को भि◌ू जाता ि◌ै कक पररल्स्थततयों को र्नुष्य बदिते ि◌ैं और इस बात को कक स्र्वयं शिक्षक को भी शिक्षक्षत ककया जाना ि◌ोता ि◌ै।" र्ाक्स मके अनुसार सार्ाल्जक पररर्वतनम प्रकृतत, सर्ाज और र्ानर्वीय बुद्धध की पारस्पररक कक्रया द्र्वारा ि◌ोता ि◌ै।

र्ाक्स मके कथनानुसार भौततक तत्र्व (र्ैटर) ि◌ह्र्ाण्डीय र्वास्तवर्वकता का सार ि◌ै। पर ि◌र्ें इस नार् से भ्रर् र्ें न पड़ना चाहिए। र्वास्तवर्वकता का अल्न्तर् र्ूि तत्र्व ठोस, अचि और अचेतन भौततक तत्र्व निहं ि◌ै। र्वि तो आत्र्ा का ि◌ह सार ि◌ै, जो स्र्वतः सकक्रय गतत ि◌ै। भौततक तत्र्व को स्र्वतः गतति◌ीि, स्र्वतः स्पन्दि◌ीि और स्र्वतः प्रर्वततम बताना उसर्ें उन गुणों का आरोप करना ि◌ै, जो भौततक निहं ि◌ैं, अवपतु सजीर्व और आल्त्र्क ि◌ैं। द्र्वन्द्र्वात्र्क भौततकर्वादह की दृल्ष्ट र्ें भौततक तत्र्व र्न का वर्विोर् निहं ि◌ै। उसर्ें न केर्वि र्न की गशभतम ल्क्तयां और सम्भावर्वत ि◌ाएं ि◌ैं, अवपतुउसका स्र्वरूप भी र्न का-सा ि◌ह ि◌ै। यि भौततक तत्र्व के अल्स्तत्र्व का हि एक अंग ि◌ै कक र्वि गतत करता ि◌ै। द्र्वन्द्र्वात्र्क वर्वकास उसकी सारभूत और आर्वश्यक अशभव्यल्क्त ि◌ै। यहद र्वस्तुतः कोई अन्तर्वती आदि ि◌ै, भौततक तत्र्व र्ें जीर्वन और र्न को उत्पन्न करने ्◌की अन्तःप्रेरणा ि◌ै, तो प्रारल्म्भक र्ूि तत्र्व केर्वि भौततक तत्र्व, ल्जस रूप र्ें कक साधारणतया उसे सर्झा जाता ि◌ै, निहं ि◌।

र्ाक्स मकी रुधच ि◌र्ारे सम्र्ुख वर्वश्र्व–ि◌ह्र्ाण्ड का शसद्धान्त प्रस्तुत करने ्◌की ओर उतनी निहं ि◌ै, ल्जतनी कक ऐततिाशसक प्रकक्रया को सर्झने ्◌के शिए ि◌र्ें एक संकेत-सि◌ू प्रदान करने की ओर ि◌ै। पर्ाणु के वर्वश्िेषण और ग्रि◌ों की उत्पवत्त की ओर उसका ध्यान निहं ि◌ै। उसका सम्बन्ध ऐततिाशसक घटनाओं से ि◌ै; और इततिास इस दृल्ष्ट से प्राकृततक प्रकक्रयाओं से शभन्न ि◌ै कक यि ककन्हिं ि◌क्ष्यों की प्राल्प्त र्ें तत्पर र्नुष्यों की गततवर्वधध ि◌ै। प्रकृतत र्ें ि◌र्ारा र्वास्ता अचेतन अन्धी प्राकृततक ि◌ल्क्तयों की पारस्पररक कक्रया से पड़ता ि◌ै। प्राकृततक घटनाएं चेतनापूर्वकम संकल्लपत काय मनिहं ि◌ै। र्ानर्वीय बतार्वम र्ें ि◌र् इच्छा से वर्वचार करते ि◌ैं और संकलप से काय मकरते ि◌ैं और कफर भी पररणार् सदा र्वे ्◌निहं ि◌ोते, ल्जनका कक ि◌र्ारा इरादा था। दैतनक जीर्वन र्ें जो वर्वरोधी ि◌ल्क्तयां र्नुष्यों को प्रेररत करती ि◌ैं, उनके पररणास्र्वरूप ऐसी ल्स्थततयां उत्पन्न ि◌ो जाती ि◌ैं, जो ि◌र्ारह चािह ि◌ुई ल्स्थततयों से शभन्न ि◌ोती ि◌ैं। ऐततिाशसक काय मदैर्वयोग के पररणार् निहं ि◌ोते। ि◌र् यि निहं कि सकते कक कोई बात ककसी भी सर्य ि◌ो सकती थी। भिे ि◌ह ि◌र् ि◌पिे की सब पररल्स्थततयां न जानते ि◌ों, पर ि◌र् यि र्ानते ि◌ैं कक

 सब कायों के कारण िोर्तें, और र्ानर्व- र्न के आदि मभी उन कारणों र्ें ि ैं। जो ि ल्क्तयां इततिास की प्रकक्रया का

तनधारमण करती ि ैं, र्वे र्विुद्ध रूप से भौगोशिक या प्राखणिास्त्रीय निर्ीं। जिर्वायु, स्थानर्वृतृत (टॉपोग्राफी), िर्ट्ह और जातत उन उपादानों र्ें से ि ैं, जो ऐततिाशसक पररर्वतनमों को सीशर्त करते ि ैं, ककन्तुर्वे उनका तनधारमण निहं ंकरते। र्ानर्व-सर्ाज ककन्िहं अन्य शसद्धान्तों के अनुसार बदिता ि ै।

यहद ि र् र्विं कक र्वास्तवर्वक ि ह बुद्धधसंगत ि ै तो ि र्ें केर्वि इतना करना ि ेषे रि जाता ि ै। कक जो कुछ जैसा ि ै, उसे र्वैसा ि ह बनाए रखें। उस दिा र्ें ि र्ारा रुख रूहढर्वादह ि ोगा। यहद, दूसूरह ओर, ि र् यि र्ानें कक बुद्धधसंगत ि ह र्वास्तवर्वक ि ै, तो ि र्ारा प्रयत्न यि ि ोगा कक र्वर्वद्यर्ान व्यर्वस्था र्ें बुद्धधसंगतता का अंिऔर जोड़ा जाए, और तब ि र्ारा रुख सुधार या क्राल्न्त का ि ोगा। र्ाक्स मने इनर्ें से दूसूरे दृल्ष्टकोण को अपनाया ि ै। इसर्ें संसार को और र्ानर्वीय स्र्वतन्त्रता की र्वास्तवर्वकता को बदि डािनेकी आर्वश्यकता र्ान ि ह गई ि ै। यहद ि र्ारे कायों का तनधारमण ि र्ारे अततररक्त अन्य ककसी र्वस्तु द्र्वारा ि ोता ि ै, तो र्वे ि र्ारे काय मनिहं ि ैं।

िगेि के यिंद्र्वन्द्र्व तकम का ि ह एक अंग ि ै। 'र्वर्वचार' का र्वर्वकास र्वर्वरोधों की अनर्वरत गतत द्र्वारा पूण म ि िता ि ै। प्रत्येक र्वर्वचार र्ें सत्य का एक ि िपू र्वर्वद्यर्ान रिता ि ै और र्वि ि र्ें अपने प्रततपक्षी र्वर्वचार की ओर ि े जाता ि ै, और र्वि प्रततपक्षी र्वर्वचार भी आंशिक सत्य ि ह ि ोता ि ै। इन दोनों के र्वर्वरोध र्ें से एक नया और उच्चतर र्वर्वचार उठ खड़ा ि ोता ि ै। र्वि कफर अपने प्रततपक्षी र्वर्वचार को और उसके साथ र्वर्वरोध को उत्पन्न करता ि ै। यि पक्ष (थीशसस), प्रततपक्षता (ऍहटथीशसस), और संश्ोषिण (सींथेशसस) की प्रकक्रया तब तक चिती रिती ि ै, जब तक कक र्वि ि क्ष्य, जो पूण मसत्य ि ै, और सत्य के अततररक्त कुछ निर्ीं, प्राप्त निहं ंि ो जाता। ि र् 'अल्स्तत्र्व' के र्वर्वचार से प्रारम्भ करते ि ैं; उसके बाद स्र्वभार्वतः 'अनल्स्तत्र्व' का र्वर्वचार आता ि ै। इन दोनों परस्पर-र्वर्वरोधी र्वर्वचारों के संघष मर्ें से एक नया और उच्चतर र्वर्वचार उत्पन्न ि ोता ि ै, ल्जसर्ें यि र्वर्वरोध सर्ाप्त ि ो जाता ि ै। 'अल्स्तत्र्व' और 'अनल्स्तत्र्व' का र्वर्वरोध 'ि ो जाने' के र्वर्वचार र्ें सर्ाप्त ि ो जाता ि ै। यि नया र्वर्वचार ि र्ें एक नये प्रततपक्ष तक ि े जाता ि ै और उसके बाद र्वि प्रततपक्ष ि र्ें एक नये और उच्चतर र्वर्वचार तक ि े जाता ि ै, ल्जसर्ें पक्ष और प्रततपक्ष दोनों का सर्न्र्वय ि ो जाता ि ै। यि प्रकक्रया तब तक चिती रिती ि ै, जब तक कक ि र् 'परर् र्वर्वचार' (ऐदसोलयूट आइडडया) तक निहं पिुंच जाते। ि ेगि के अनुसार यिह 'र्वर्वचार का आत्र्वर्वकास' ि ै। अपनी इसी पद्धतत का प्रयोग करते ि ुए ि ेगि बिुत ि ह तकमपूण मढंग से सारे दिनम, इततिास और प्राकृततक र्वर्वज्ञान तक को पुष्ट करता ि ै। िगेि की दृल्ष्ट र्ें, इततिास र्न का अनर्वरत आत्र्-अनुभर्व या आत्र्-स्थिूहकरण (सूक्ष्र् रूप से स्थिू रूप र्ें आना) ि ै और इसशिए उसे अतनर्वायतमः अपने- आपको द्र्वन्द्र्वात्र्क पद्धतत से र्वर्वकशसत करना और अपने- आपको पूण मकरना ि ोता ि ै।

र्ाक्स मद्र्वन्द्र्वात्र्क पद्धतत का प्रयोग र्वर्वचारों के क्षेत्र र्ें या र्वर्वचारों के आत्र्वर्वकास पर निहं ंकरता, अवपतु सर्ाज के भौततक र्वर्वकास पर करता ि ै। र्वि ऐततिाशसक र्वर्वकास को, उसके पररर्वतनमों और उसकी र्वर्वरोधी प्रर्वृवृत्तयों को परखता ि ै और बताता ि ै कक इततिास के र्वर्वकास की परम्परा र्वस्तुतः र्वर्वरोधों की एक परम्परा र्ें से

ीिती िुई तनरन्तर प्रगतत की प्रकक्रया िै। कोई भी वर्वद्यर्ान ल्स्थतत िर्ें अपनेप्रततपक्ष की ओर िे जाती िै और उनके वर्वरोध के कारण सर्ाज की एक उच्चतर ल्स्थतत उत्पन्न िोती िै, ल्जसर्ें वे ेवर्वरोध सर्ाप्त िो जाते िैं।

ीगेि और र्ाक्स,म दोनों िी र्ानतेिैं कक इततिास का वर्वकास द्वन्द्वात्र्क िै। अन्तर इतना िै कक िेगि ं
ीगेि का वर्वश्र्वास िै कक इततिास र्ें 'परर् र्न' अपनेआपको स्थूि रूप र्ें प्रकट कर रिा िै, और घटना-जगत ्तो केर्वि उसकी बाह्य अशभव्यल्क्त िै, विंर्ाक्स मका र्त िै कक ऐततिाशसक घटनाएं प्रर्ुख िैं और उनके वर्वषय र्ें िर्ारे वर्वचार गौण वस्तु िैं। 'कैवपटि' के दूसरे संस्करण की भूशर्का र्ें र्ाक्स मभौततकर्वादी द्वन्द्व और आदिर्वमादी द्वन्द्व के अन्तर पर बि देता िै। र्वि किता िै, "र्ेरी अपनी द्वन्द्वात्र्क पद्धतत िेगि की द्वन्द्वात्र्क पद्धतत से न केर्वि र्ूितः शभन्न िै, अवपतु र्वि उसकी ठीक वर्विोर् िै। िेगि की दृल्ष्ट र्ें वर्वचार प्रकक्रया (ल्जसे र्वि वस्तुतः एक स्वतन्त्र वस्तु के रूप र्ें बदि देता िै और उसे वर्वचार- आइडडया - नार् देता िै) वास्तवर्वक की सृजक िै; और उसकी दृल्ष्ट र्ें वास्तवर्वक जगत ्'वर्वचार' की केर्वि बाह्य अशभव्यल्क्त िै। दूसरी ओर, र्ेरी दृल्ष्ट र्ें वर्वचार भौततक तत्त्व से पृथक् कोई वस्तु निीं िै। भौततक तत्त्व िी जब र्ानर्व-ल्र्स्तष्क र्ें स्थानान्तररत और रूपान्तररत िो जाता िै, तब वर्वचार बन जाता िै। यद्यवप िेगि के िाथों र्ें पड़कर द्वन्द्व का शसद्धान्त रिस्यर्य बन गया, परन्तु इतने से, इस तथ्य से इनकार निीं ककया जा सकता कक सबसे पििे िेगि ने िी द्वन्द्व की गतत के सार्ान्य रूपों का सर्वांगीं सम्पूण मऔर पूणतमया सज्ञान रहतत से प्रततपादन ककया। िेगि की रचनाओं र्ें द्वन्द्व शसर के बि उलटा खड़ा िै। यदद आप उसकी बुद्धधसंगत धगरी (तत्त्व) को खोज तनकािना चािते िैं, जो रिस्य के खिि र्ें तछपी िुई िै, तो आपको उसे उिटकर सीधा खड़ा करना िोगा।"[18] िेगि िर्ारे सार्ने वर्वचारों के वर्वकास को तकमिास्त्र की दृल्ष्ट से और अतनर्वाय मिाश्र्वत व्यर्वस्था के रूप र्ें प्रस्तुत करता िै और पश्चाद्वतीं िौकिक रूप को आभास या छाया बताता िै। िेगि ने द्वन्द्व के जो-जो तनयर् तनल्श्चत ककए, र्वे सबके सब र्ाक्स मने स्वीकार कर शिए। वर्वचार के स्थान पर भौततक तत्त्व को रखने के कारण दिातमनक आदिर्वमाद का स्थान क्राल्न्तकारी वर्वज्ञान ने िे शिया िै। र्ाक्स मऔर िेगि, दोनों की िी दृल्ष्ट र्ें इततिास का वर्वकास तकमसंगत िै; और िेगि के र्ार्िे र्ें इसे ठीक भी सर्झा जा सकता िै, क्योंकक उसके शिए तो र्न िी चरर् वास्तवर्वकता िै। र्ाक्स मके शिए भौततक तत्त्व चरर् वास्तवर्वकता िै और भौततकर्वादी के शिए यि सोच पाना अधधक दुष्कर िै कक संसार ककसी तकमसंगत तनयर् के अनुसार वर्वकशसत िो रिा िै। र्ाक्सर्वमादी यि र्ान िेते िैं

कक बाह्य जगत ्एक प्रचण्ड अतनर्वायतमा के साथ ठीक उसी हदिा र्ें बढा चिा जा रिा िै, ल्जस और र्वे चािते िैं। उनके कथनानुसार संसार एक साम्यर्वादी सर्ाज के तनर्ाणम की ओर बढ रिा िै। इस प्रकार का सर्ाज एक ऐततिाशसक आर्वश्यकता िै। यि भौततक वर्वश्र्व का बबिकुि उििार जैसा प्रतीत िोता िै। र्ाक्स मशिखता िै, "कार्गर वगम मको ककसी आदि मको प्राप्त निींकरना िै; उन्िेंतो केर्वि एक नये सर्ाज के तत्त्वों को स्वतंत्लभर कर देना िै।" पूंजीर्वादी प्रणािी के तनयर्, "िौि-कठोर अतनर्वायतमा के साथ अपररिाय मपररणार्ों की ओर अग्रसर िोते िैं।" ऐंल्जलस शिखता िै, "ल्जतनी सुतनल्श्चतता के साथ गखणत के ककसी एक हदए िुए साध्य से दूसरे साध्य

18 "िेगि का द्वन्द्व सारे द्वन्द्व-शसद्धान्तों का आधारभूत शसद्धान्त तभी बन सकता िै, जबकक उसका रिस्यर्वादी रूप तनकािकर उसेसाफ कर हदया जाए। और र्ेरी पद्धतत र्ें उसकी पद्धतत से केर्वि इतना िी अन्तर िै।" - र्ाक्स मने क्यूगेिर्ैन को शिखा था।

का अनुर्ान ककया जा सकता ि ै, उतनी ि ह सुतनल्श्चतता के साथ वर्वद्यर्ान सार्ाल्जक पररल्स्थततयों और राजनीततक अथ-मव्यर्वस्था के शसद्धान्तों से ि र् क्राल्न्त का अनुर्ान कर सकति ैं।" यि दृल्ष्टकोण कक तथ्य और आदि,म अल्स्तत्र्व और र्ान्यताएं (र्ूलय) एक-दूसूरे के अनुकूि ढि ि ुए ि ैं, कर् से कर् र्वैज्ञातनक सत्य निहं ि ैं। यि केर्वि एक आनुर्ातनक उपकलपना (ि ाइपोथीशसस) ि ै, एक वर्वश्र्वास की र्वस्तु ! ि र्ें क्यों यि र्ान ि ेना चाहिए कक वर्वश्र्व की ि ल्क्तयां ि र्ारह इच्छाओं का सर्थनम करती ि ैं? र्ाक्स मको फ्यूअरबाख के इस कथन को दोिरानेका बड़ा चार्व ि ै कक "अधधवर्वद्या-र्वेत्ता (र्ैटाफीज़ीशियन) छद्र्वि र्ें पुजारह ि ोता ि ै।" र्ाक्स मजब यि किता ि ै कक उसका र्ानर्वीय सर्ाज का आदि मसंसार के ताने-बाने र्ें ि ह ररा ि ुआ ि ै, तो र्वि स्र्वयंभी दितमनक बन रि ा ि ोता ि ै। इसर्ें ि र्ें धाशर्कम प्रर्वृवृत्त का धचह्न दृल्ष्टगोचर ि ोता ि ै।

यद्यवप र्ाक्स मका कथन ि ै कक उसके वर्वचार र्वास्तवर्वकता पर आधाररत ि ैं, अटकिबाज़ी पर निहं, ि कफर भी यि स्पष्ट ि ै कक र्वि ि र्ारे सम्र्ुख (र्वास्तवर्वकता की) एक ऐसी व्याख्या प्रस्तुत करता ि ै, जो उसके शसद्धान्त के साथ र्ेि खाए। जब र्वि किता ि ै कक सर्ाज सार्न्तर्वाद से पूंजीर्वाद की ओर और पूंजीर्वाद से सर्ाजर्वाद की ओर बढता ि ै, तब र्वि ऐसे ि ददों का प्रयोग कर रि ा ि ोता ि ै, ल्जनके अन्तगतम अनधगनत तथ्य सर्ा सकति ैं। ककसी भी ऐततिाशसक कािा को घटनाओं के यथोधचत बनार्व द्र्वारा ककसी एक या ककसी दूसूरह प्रर्वृवृत्त का सूचक प्रदशितम ककया जा सकता ि ै। उन्नीसर्वीं ि ताददह को धर्ननिरपेक्ष वर्गमके प्रभुत्र्व का कािा भी सर्झा जा सकता ि ै, या उद्योगर्वाद या साम्राज्यर्वाद का युग भी, या राष्रहयता या उदारता का युग भी; यि सब इस बात पर तनभरम ि ै कक र्ेिकक कन धाराओं पर बि देना चािते ि ैं, या व्यल्क्तगत रूप से ककन धाराओंको सबसे र्ित्त्र्वपूण मसर्झति ैं। बीसर्वीं सदह की व्याख्या, उपयुक्त घटनाओं को चुनकर ि र् इस रूप र्ें भी कर सकति ैं कक यि उन्नीसर्वीं ताददह से ठीक उलटह ि ै; या कफर कुछ अन्य घटनाओं पर बि देकर ि र् यि भी हदखा सकति ैं कक इसर्ें उन्नीसर्वीं ि ताददह की प्रर्वृवृत्तयां ि ह आगे बढ रिह ि ैं। संभर्व ि ै, यि सब बिुत रोचक ि ो, ककन्तु यि र्वस्तुरूपात्र्क दृल्ष्ट से सत्य न ि ोगा। इततिास तथ्यों का स्र्रण-'भर निहं ि ै, अवपतु उनका र्वि रूप ि ै, ल्जसर्ें कक ि र् उन्िें देखति ैं। इसर्ें तथ्यों की व्याख्या भी ि ोती ि ै और चुनार्व भी। कफर भी, ि ाड मऐक्टन के ि ददों र्ें, ऐततिाशसक तथ्य और ऐततिाशसक वर्वचार के धर्य यथोधचत अनुपात रिना ि ह चाहिए। र्ाक्सर्वमादह प्राचीनकािा का दास-अथव्मयर्वस्था के साथ, धर्यु ग का कृवष-दास अथव्मयर्वस्था के साथ, आधुतनक युग का पूंजीर्वादह अथव्मयर्वस्था के साथ और भवर्वष्य का 'उत्पादन के साधनों के सार्ाल्जकीकरण' के साथ अशभन्न सम्बन्ध सर्झति ैं; और यि स्पष्ट वर्वभाजन सब देिों पर िागू निहं ि ो सकता। ि ेगि ने भी, जो इततिास को इसी रूप र्ें देखता ि ै, नर्ूनेजी र्वैशिष्ट्य-र्वणनम प्रस्तुत ककए ि ैं। एक जगि यूनान का अशभन्न सम्बन्ध 'व्यल्क्त की स्र्वाधीनता' के साथ, रोर् का सम्बन्ध राज्य के साथ और रोर्न जगत् का सम्बन्ध 'व्यल्क्त के सार्वभमौर् के साथ सल्म्र्निि' के साथ जोड़ा गया ि ै। पर एक दूसूरह जगि पूर्व मका अशभन्न सम्बन्ध 'अनन्त' के साथ, प्राचीन यूनान और रोर् का सम्बन्ध 'सान्त' के साथ और ईसाई युग का सम्बन्ध 'अनन्त और सान्त के संशेिषण' के साथ जोड़ा गया ि ै। परन्तु इततिास ककसी पक्के तनयर् के अनुसार निहं चिता। ऐततिाशसक वर्वकास अतनर्वायतम: वर्वरोधों की श्रृंखिा द्र्वारा आगे निहं बढता। उन्नतत की गतत कभी बढती ि ै, कभी घटती ि ै, और र्वि वर्वशभन्न रूपों र्ें ि ोती ि ै; कभी र्वि एक ल्स्थतत से उसकी वर्वरोधी ल्स्थतत र्ें संक्रर्ण द्र्वारा ि ोती ि ै और कभी एक ि ह अवर्वल्च्छन्न धारा के रूप र्ें आगे

बढती रिती ि◌ै। यि किना - जैसे कक र्ाक्स मकिता ि◌ै कक "वर्वरोध के बबना कोई प्रगतत निहंिोती, यिह एक तनयर् ि◌ै, ल्जसका कक सभ्यता आज तक पािन करती आई ि◌ै।" - एक नर्ानी बात कि देना ि◌ै। र्ाक्स मका र्त ि◌ै कक सार्न्तर्वाद से सर्ाजर्वाद की ओर संक्रर्ण ध्र्यर्वग मके प्रभुत्र्व और पूंजीर्वाद र्ें से गुज़र कर ि◌ोता ि◌ै; परन्तु जब रूस र्ें सर्ाजर्वाद की स्थापना ि◌ुई, तब र्वि सार्न्तर्वादह सर्ाज की दिा र्ें था, पूंजीर्वादह सर्ाज की दिा र्ें निहं। प्रगतत की अतनर्वायतमा र्ें र्ाक्स मका र्वर्वश्र्वास ि◌ै। सर्ाज की गतत आगे की ि◌ह ओर ि◌ै। प्रत्येक उत्तरर्वती सोपान र्वर्वकास का सूचक ि◌ै, और अपने पूर्वर्वमती सोपानों की अपेक्षा बुद्धधसंगत आदि मके अधधक तनकट ि◌ै; बुद्धधसंगत आदि मर्वि स्र्वतन्त्र सर्ाज ि◌ै, ल्जसर्ें न कोई स्र्वार्ी ि◌ोगा न कोई दास, न धनी ि◌ोंगे न गरहब; ल्जसर्ें संसार की र्वस्तुओंका उत्पादन सार्ाल्जक र्ंग के अनुसार ककया जाएगा; व्यल्क्तयों की र्न की र्ौज उसर्ें बाधा न डाि सकेगी और उन र्वस्तुओंका र्वर्वतरण बुद्धधसंगत रहतत से ककया जाएगा। इततिास की ि◌ल्क्तयां इस प्रकार का र्वर्वकास करके ि◌ह रिंगी; ि◌र् न उसर्ें सिायता कर सकते ि◌ैं और न बाधा डाि सकते ि◌ैं। परन्तु इततिास ह्रास और अध:पतन के उदािरणों से भरा ि◌ै और उसे र्वर्वरोधों र्ें ि◌ोकर तनरन्तर ि◌ोता ि◌ुआ र्वर्वकास निहंर्ाना जा सकता। ि◌र् इस बात पर पक्का भरोसा निहं ◌ंरख सकतेकक र्ानर्वीय प्रगतत अतनर्वाय मिै। यि तो कफर भाग्यर्वाद र्ें जा पड़ना ि◌ोगा। ककसी भी व्यल्क्त यांसर्ाज के जीर्वन र्ें ठीक उस क्षण का तनधारमण कर पाना संभर्व निहं ◌ंि◌ै, जब तथाकधथत र्वर्वरोधर्वािा नया सर्य र्वस्तुतः प्रारम्भ ि◌ोता ि◌ै। इततिास एक अखंड र्वर्वद्यर्ानता (बबकशर्ंग) ि◌ै, एक अर्वर्वरार् धारा, ल्जसके न ककसीको आहद का पता ि◌ै न अन्त का। र्ाक्सर्वमादह शसद्धान्त अनुगर्नात्र्क या व्याल्प्तर्ूिक (इंडल्क्टर्व) सर्वेक्षण का पररणार् निहं ◌ंि◌ै, अवपतु ◌ुतनगर्नात्र्क या अनुर्ानात्र्क (डडडल्क्टर्व) ढंग का ि◌ै। र्ाक्स मिैगि की तकमप्रणािह को अपनेभौततकर्वादह दृल्ष्टकोण के अनुकूि ढाि ि◌ेता ि◌ै।

इस उदार दृल्ष्टकोण का, कक ि◌र्ें र्वग-मयुद्ध को त्याग देना चाहिए, बि के प्रयोग का पररत्याग करना चाहिए, और र्ानर्वीय सर्ुवाथतमा और न्याय की भार्वना को र्नने (तक पिुंच करने) का प्रयत्न करना चाहिए, र्ाक्स मनेखण्डन ककया ि◌ै। उसका र्त ि◌ै कक यि आिा, कक पूंजीपतत- र्वग मको बुद्धधसंगत आग्रि-अनुरोध से र्नाया जा सकता ि◌ै, शर्थ्या ि◌ै। ि◌र्ारे ि◌क्ष्य उन आधथकम पररल्स्थततयों द्र्वारा तनल्श्चत कर हदए गए ि◌ैं, ल्जनर्ें ि◌र्ें रिना पड़ रिा ि◌ै। ि◌र्ें पूंजीपततयों से ि◌ड़ना ि◌ै, इसशिए निहं ◌ंकक ि◌र् उनसे ि◌ड़ना चािते ि◌ैं, अवपतु ◌ुइसशिए कक ि◌र्ें ि◌ड़ना ि◌ोगा ि◌ह। ि◌ेगि के द्र्वन्द्र्व शसद्धान्त की कहठनाइयां उसके र्ाक्सर्वमादह रूप र्ें भी र्वर्वद्यर्ान ि◌ैं। ि◌ेगि की दृल्ष्ट र्ें र्वर्वरोध र्ुख्य शसद्धान्त ि◌ै, जो सारह प्रगतत का आधार ि◌ै। अपनेशसद्धान्त को पुष्ट करते ि◌ुए ि◌ेगि 'र्वर्वरोधी' और 'शभन्न' र्ें घपिा कर जाता ि◌ै। क्रोचेने अपनी पुस्तक 'व्िाट इज़ शिवर्वंग एण्ड व्िाट इज़ डेडे आफ हद कफिासफी आफ ि◌ेगि"[19] (ि◌ेगि के दिनम का कौन-सा अंशअभी जीर्वर्वत ि◌ै और कौन-सा र् चुका ि◌ै) र्ें इस बात पर र्वर्वस्तार से प्रकाि डािा ि◌ै। प्रकाि और अंधकार एक-दूसूरे के र्वर्वरोधी ि◌ैं। र्वे साथ-साथ निहंरि सकते। एक के अल्स्तत्र्व का अथ मिै दूसूरे का अभार्व। र्वर्वरोधी एक-दूसूरे का ि◌ोप करते ि◌ैं। परन्तु 'शभन्न', जैसे सत्य और सौन्दय,म दिनम और कि़ा, एक-दूसूरे का बहिष्कार निहंकरते। 'सीर्ा' की धारणा 'तनषेध' की धारणा से शभन्न ि◌ै। तनषेध ि◌ह प्रकृतत का एकर्ात्न िपूि निहं।ै यहद आधथकम ि◌ल्क्तयां ऐततिाशसक र्वर्वकास को तनयंबत्रत करती ि◌ैं, तो इसका

19 अंग्रेजीअनुर्वाद (1915)

अथ मयि निहं ि◌ै कक अन्य ि◌ल्क्तयां निहं करतीं। आधथकम आर्वश्यकता और धाशर्कम आदिर्वमाद की ि◌ल्क्तयां पारस्पररक कक्रया द्र्वारा इततिास के भवर्वष्य का रूप तनर्ाणमक्र सकती ि◌ैं।

र्ाक्स मका कथन ि◌ै कक एक के बाद एक, वर्वरोधों द्र्वारा वर्वकास तब तक जारह रिेगा, जब तक कक सारह र्ानर्व-जातत साम्यर्वादह न ि◌ो जाए। वर्वश्र्व-साम्यर्वाद की स्थापना ि◌ोते ि◌ह द्र्वन्द्र्वात्र्क वर्वकास सर्ाप्त ि◌ो जाएगा। ि◌ेगि ने इततिास के द्र्वन्द्र्वात्र्क वर्वर्वरण से यि तनष्कष मतनकािा था, कक द्र्वन्द्र्वात्र्क वर्वकास प्रशियन राज्य की स्थापना ि◌ोनेपर सर्ाप्त ि◌ो जाएगा; उसकी दृल्ष्ट र्ें प्रशियन राज्य 'परर् वर्वचार' (ऐदसोलयूट आइडडया) का पूण मर्ूत मरूप था। र्ाक्स मका कधन ि◌ै कक द्र्वन्द्र्वात्र्क वर्वकास का उद्देश्य यि (प्रशियन राज्य की स्थापना) निहं ि◌ो सकता। "सार्ाल्जक वर्वकास का राजनीततक क्राल्न्त ि◌ोना तभी सर्ाप्त ि◌ोगा, जब ऐसी व्यर्वस्था स्थावपत ि◌ो जाएगी, ल्जसर्ें न अिग-अिग र्वग मिोंगे, और न र्वगों र्ें परस्पर-वर्वरोध भार्व रिेगा।" र्ाक्स मिेगि की, यि र्ान ि◌ेनेके कारण कक प्रशियन राज्य की स्थापना ि◌ोते ि◌ह वर्वरोध और संघष मसर्ाप्त ि◌ो जाएंगे, आिोचना करता ि◌ै। क्या यि इसशिए कक उसका वर्वश्र्वास ि◌ै कक इततिास का उद्देश्य प्रशियन राज्य की स्थापना से पूण मनिहं ◌ंि◌ोगा, अवपतु उसके अपने(र्ाक्स मके) साम्यर्वाद की स्थापना से पूण मिो जाएगा? यहद र्ानर्व-सर्ाज का वर्वकास भौततकर्वादहिल्क्तयों की सतत चि रिह क्रीड़ा ि◌ै, ल्जसर्ें वर्वरोधों और र्वग-मयुद्धों की एक परम्परा द्र्वारा पूंजीर्वाद सर्ाप्त ि◌ो जाता ि◌ै और र्वगिमहन सर्ानतार्वादह राज्य की स्थापना ि◌ोती ि◌ै, तो यि नया सर्ाज भौततकर्वादह ि◌ल्क्तयों द्र्वारा तनधारमरत द्र्वन्द्र्वात्र्क प्रगतत के तनयर् से छूट कैसे पा जातिौ? और यहद इसे उस तनयर् से छूट निहं ◌ंशरि्ती, तो क्या इसके वर्वरोध र्ें भी कोई नया प्रततपक्ष उठ खड़ा ि◌ोगा ? या भौततक तत्त्व के जगत् ◌्र्ें तनसगतमः वर्वद्यर्ान तनयर् अपना उद्देश्य पूण मकर चुकने ◌ेके बाद अपना काय मकरना बन्द कर देंगे, और आपाततक (संकटकािहन) वर्वकास की एक अज्ञात प्रकक्रया द्र्वारा नये तनयर्ों को जन्र् देंगे? यहद द्र्वन्द्र्व सारतः क्राल्न्तकारह ि◌ै, तो र्वि र्वगिमहन राज्य की स्थापना के बाद रुक क्यों जाना चाहिए? यहद र्वग-मसंघषों की सर्ाल्प्त के बाद भी आगे वर्वकास की गुंजाइि ि◌ो, तो प्रगतत के, र्वग-मसंघषों के अततररक्त, अन्य कारण भी अर्वश्य ि◌ोने चाहिएं। र्ाक्स मस्र्वीकार करता ि◌ै कक साम्यर्वादह सर्ाज की स्थापना के बाद भी 'सार्ाल्जक वर्वकास' के शिए गुंजाइि रिेगी। सार्ाल्जक जीर्वन र्ें और कौन-से ऐसे वर्वरोध ि◌ैं, ल्जनसे उसे (सार्ाल्जक वर्वकास को) प्रेरक ि◌ल्क्त प्राप्त ि◌ोगी? साम्यर्वादह सर्ाज र्ें भी द्र्वन्द्र्व का शसद्धांत कक्रयािीि रिेगा, भिे ि◌ह ि◌र् वर्वस्तारपूर्वकम यि र्वणनम निहं कर सकतेकक उसकी कक्रया का ठीक क्या रूप ि◌ोगा; ि◌र् यि कलपना कर सकतिैं कक उससे आगे प्रगतत क्रांततकारह और सर्ाज-वर्वरोधी न ि◌ोकर वर्वकासात्र्क और सियोगात्र्क ि◌ोगी। आधथकम सर्स्याओं द्र्वारा आत्र्वर्वकास के र्ाग मर्ें खड़ी की गई रुकार्वटें ि◌ट जाएंगी और सृजिनी व्यल्क्तत्र्वों को उन्नतत का पयाप्मत अर्वसर शरिेगा। भय और वर्वद्र्वेष, सत्ता के शिए संघष मऔर स्र्वाथ मकी अपेक्षा प्रेर् और शर्त्रता, सिास और अशभर्ान की भार्वना अधधक सबि ि◌ोगी। कष्ट और दुःख ि◌ोंगे, पर र्वे उच्चतर स्तर पर िोंगे। र्वतर्मान आधथकम व्यर्वस्था इसशिए अन्यायपूण मनिहं किक यि र्नुष्य को दुःखी बनाती ि◌ै, अवपतु इसशिए

कक यि उर्न्ें अर्ानर्व बना देती ि ै। र्नुष्य का ि क्ष्य आनन्द निहं, अवपतु गौरर्व ि ै।'[20] इततिास की द्र्वन्द्र्वात्र्क गतत के शसद्धांत र्ें सत्य केर्वि इतना ि ै कक परस्पर-वर्वरोधी तत्र्ों और हितों के संघष मऔर उनके बारे र्ें वर्वचार-वर्वर्र् मसे सैद्धाल्न्तक क्षेत्र र्ें नया ज्ञान उत्पन्न ि ोता ि ै और व्यर्विार-जगत् र्ें नई संस्थाओंका जन्र् ि ोता ि ै, क्योंकक सारह प्रकृतत सर्स्र्वरता चािती ि ै और जब तक वर्वसंर्वाहदता (बेर्े स्र्वर, िक्कि) का सर्ाधान न ि ो जाए, र्वि चैन से निहंबैठ सकती।

इततिास की आधथकम व्याख्या र्ें किा गया ि ै कक आधथकम तत्र्व, र्वि भी वर्वर्षे रूप से आधथकम उत्पादन, आधारभूत र्वस्तु ि ै और ि षे र्वे सब र्वस्तुएं, ल्जन्िें ि र् संस्कृतत, धर्,म राजनीतत, सार्ाल्जक और बौद्धधक जीर्वन किते ि ैं, गौण उपज ि ैं; उनका तनधारमण उत्पादन की प्रणाशियों द्र्वारा ि ोता ि ै और र्वे उत्पादन की प्रणाशियों के तात्काशिक पररणार् ि ैं। उत्पादन की दिाएं ि ह सर्ाज का र्वि आधथकम ढांचा ि ै, जो सार्ाल्जक, राजनीततक और बौद्धधक जीर्वन का भौततक आधार ि ै। जब ककसी नई ि ल्क्त की खोज या नये तकनीकी आवर्वष्कार के कारण उत्पादन की प्रणािह बदि जाती ि ै, तब उत्पादन की दिाएं भी बदि जाती ि ैं; र्वे एक वर्वचारधारात्र्क ऊपरह ढांचे की रचना करती ि ैं, अथात्म जायदाद, ि ल्क्त और सम्र्ततयों की दिाओंकी। ये कफर उत्पादन की दिाओं को नया रूप देने का कारण बनती ि ैं और इस प्रकार कक्रया और अन्योन्य कक्रया द्र्वारा सर्ाज की प्रगतत ि ोती ि ै। कहठनाई तब उत्पन्न ि ोती ि ै, जब उत्पादन की भौततक ि ल्क्तयों का उत्पादन की वर्वद्यर्ान दिाओंसे, जायदाद की उस प्रणािह से, ल्जसके अधीन र्वे काय मकर रिह ि ैं, वर्वरोध उठ खड़ा ि ोता ि ै। यि शसद्धांत अपनी सरिता के कारण हि
र्ानने योग्य जान पड़ता ि ै और यि इस कारण और सत्य प्रतीत ि ोने ि गता ि ै कक जीर्वन और इततिास र्ें आधथकम तत्र्व का र्ित्र्व बिुत अधधक ि ै। तथ्यों के कुछ वर्वशिष्ट सर्ूिों का सार्वधानी से चुनार्व करके और कुछ तथ्यों की उतनी ि ह सार्वधानी से अपेक्षा करके इस शसद्धांत को तकमसंगत और तनश्चायक रूप र्ें प्रस्तुत ककया जा सकता ि ै। आधथकम दिाओं के र्ित्र्व पर जो बि हदया गया ि ै, र्वि ठीक ि ै; परन्तु यि सुझार्व, कक केर्वि एकर्ात्र र्वे ि ह इततिास का तनधारमण करती ि ैं, गित ि ै।
अरस्तू ने बिुत सर्य पििे ि र्ें बताया था कक अच्छी तरि जीनेसे पििे ि र्ारे शिए जीना ज़रूरह ि ै। पििे ि र्ें भोजन, र्कान और कपड़ा चाहिए, उसके बाद ि ह ि र् अंकन, धचत्रण और धचन्तन की बात सोच सकते ि ैं। जीर्वन और अच्छे जीर्वन के वर्वभेद को र्ाक्स मने एक शसद्धांत के रूप र्ें वर्वकशसत ककया ि ै। यि वर्वभेद ककस प्रकार सार्ने आया, इसका वर्वर्वरण देते ि ुए एेंल्जलस ने शिखा ि ै, "र्ाक्स मने इस सीधे-सादे तथ्य को (जो उससे पििे वर्वचारधारात्र्क झाड़-झंखाड़ों र्ें दबा ि ुआ था) खोज तनकािा कक र्ानर्व-प्राखणयों को सबसे पििे खाना-पीना, कपड़ा और र्कान शर्िना चाहिए, उसके बाद ि ह र्वे राजनीतत, वर्वज्ञान, किा, धर् मतथा इसी प्रकार की अन्य र्वस्तुओंर्ें रुधच ि े सकते ि ैं। इसर्ें यि अथ मतनहित ि ै कक जीर्वन-तनर्वाि के शिए अवर्विम्ब आर्वश्यक साधनों का उत्पादन और उनके द्र्वारा ककसी राष्र या युग के वर्वकास का वर्वद्यर्ान दौर ि ह र्वि नीर्व (आधार) ि ै, ल्जसपर

[20] नीरिे के बैन्थर् परइसउग्र प्रिारका ककर्नुष्य सुखनिहं चािताकेर्विअंग्रेज़सुख चािते ि ैं र्ाक्स मने सर्थनम'ि ह ककया ि ोता। अपनी 'कैवपटि' र्ें र्ाक्स मशिखता ि ै कक "बिुत ि ह 'भोिेपन के साथ बैन्थर् ने सार्ान्य र्नुष्य आधुतनक दुकानदार को, र्वि भी वर्वर्षेतया अंग्रेज़ दुकानदार को, र्ान शिया ि ै।"

राज्य संस्थाएं, वैंधातनक दृल्ष्टकोण, कि-सम्बन्धी और यिां तक कक धाशर्कम र्वर्वचार तनशर्तम ि◌ोतें। इसका अशभप्राय यि ि◌ै कक इन वपछिह र्वस्तुओंकी व्याख्या इन पिपिह र्वस्तुओंके आधार पर ि◌ोनी चाहिए, जबकक साधारणतया इन पिपिह र्वस्तुओंकी व्याख्या इन वपछिह र्वस्तुओंके आधार पर की जाती रिह ि◌ै।" उत्पादपिनी ल्क्तयां बाकी सबका तनयंत्रण करने ◌ेर्वो रु्ख्य साधन ि◌ैं। परन्तुइसका यि अथ मनिहीं ककक बाकी चीज़ों की व्याख्या रु्ख्य साधनों द्र्वारा की जा सकती ि◌ै। अतनर्वाय मदिा प्रभार्वी कारण निहं ◌ंि◌ोती। परम्परा, प्रचार और आदि मउन कारणों र्ें से कुछ एक ि◌ैं, जो पररर्वतनम ि◌ाते ि◌ैं। र्ाक्स मउत्पादन की ि◌ल्क्तयों और उत्पादन की प्रणाशियों र्ें भेद करता ि◌ै। ि◌ल्क्त प्रणािह बने, इसके शिए र्ानर्वीय ल्स्तष्क का ि◌स्तक्षेप आर्वश्यक ि◌ोता ि◌ै। सब नर्वीन बातें पिपि-पिपि र्ानर्व-र्न र्ें र्वर्वचारों के रूप र्ें आती ि◌ैं। दिाएं और कारण एक-दूसूरे के साथ इतने घतनष्ठ रूप से शरि्-शि्ु ि◌ैं कक उनके सूत्रों को अिग कर पाना कहठन ि◌ै। यहद आधथकम ि◌ल्क्तयां स्र्वयंहि सांस्कृततक प्रणाशियों का तनधारमण करती ि◌ों, तो र्नुष्य का कोई प्रयोजन ि◌ह निहंरिता और इततिास केर्वि एक भ्रांतत बन जाता ि◌ै। यहद इततिास घटनाओंकी यंत्रचाशित-सी परम्परा निहं ◌ंि◌ै, तो स्पष्ट ि◌ै कक र्नुष्य अपने क्षियों का चुनार्व स्र्वयं करते ि◌ैं और उन्ि◌ें पूण मकरने के साधनों का तनधारमण भी खुद ि◌ह करते ि◌ैं। सर्ाज के आधथकम ढांचे और सर्ाज को अशभन्न सर्झना ठीक निहं ◌ंि◌ै। यि ठीक ि◌ै कक आधथकम ढांचा बिुत र्ित्र्वपूण मिै, परन्तु केर्वि र्विह सर्ाज की एकर्ात्र र्वास्तर्वर्वकता निहं ◌ंि◌ै। यद्यवप ऐंल्जलस यि स्र्वीकार करता ि◌ै कक ऊपरह ढांचे की र्वर्वर्वध पिि◌चें भी ऐततिाशसक संघषों की प्रगतत पर प्रभार्व डािती ि◌ैं; परन्तु यि किकर कक "ये सब पिि◌चें एक-दूसूरह को प्रभावर्वत करती ि◌ैं, ककन्तु अन्ततोगत्र्वा असंख्य अर्वसरों पर आधथकम पिि◌च का प्रभार्व अर्वश्य ि◌ह दूसूरह पििचों की अपेक्षा अधधक रिता ि◌ै," र्वि अपनी स्र्वीकारोल्क्त के रु्ख्य बबन्दु ◌ुको र्वापस ि◌े ि◌ेता ि◌ै। केर्वि इसशिए कक दूसूरे उपकरणों के सम्बन्ध र्ें धचन्तन कर पाना संभर्व निहीं, ि◌र् यि निहं र्ान सकतेकक उनका अल्स्तत्र्व हि निहं ि◌ै। यि दृल्ष्टकोण, कक उत्पादन की दिाएं एक र्वर्वशेष प्रकार की र्वर्वचारधारा को जन्र् देती ि◌ैं, जो सर्य पाकर उत्पादन की नई दिाओंको जन्र् देती ि◌ै, केर्वि अनुर्ान (तनराधार कलपना) ि◌ै। उत्पादन की दिाएं और र्वर्वचारधारात्र्क ऊपरह ढांचा, अिग- अिग पाशियों र्ें (बारह-बारह से) कार् निहं करते। र्वे साथ-साथ र्वर्वद्यर्ान रिते ि◌ैं और साथ-साथ कार् करते ि◌ैं। इसके अततररक्त, ि◌र् यि निहंकि सकतेकक र्वर्वचारधारात्र्क ऊपरह ढांचा उत्पादन की प्रणाशियों का पररणार् ि◌ै। उदिारण के शिए ि◌र्ारे धाशर्कम र्वर्वचार आधथकम दिाओं के पररणार् निहं ि◌ै। आहदर् र्नुष्य अनुभर्व करता था कक र्वि सर्वशमल्क्तर्ान निहं ◌ंि◌ै और घटनाएं उसकी प्रबि इच्छा के र्वर्वरुद्ध भी िोती ि◌ैं और उसकी इच्छा के बबना तो प्राय: ि◌ोती ि◌ैं; ल्जस संसार र्ें र्वि रिता ि◌ै, र्वि उसका अपना बनाया ि◌ुआ निहं ◌ंि◌ै; सूय मऔर चन्द्रर्ा के ग्रिण और भूकम्प उसकी सिर्तत से निहंिोते। तब उसनेभूत-प्ेरेतों और देर्वताओं की कलपना की; और ल्जन घटनाओं की व्याख्या निहीं पाती थी, उनका कारण उन भूत-प्ेरेतों और देर्वताओं को र्ाना। र्नुष्य की जीनेके शिए तीव्र इच्छा के कारण उसका परिोक र्ें र्वर्वश्र्वास ि◌ोता ि◌ै, उत्पादन की ककन्हिं र्वर्वशिष्ट प्रणाशियों के कारण निहं। ऐंल्जलस इस बात को स्र्वीकार करता ि◌ै कक धर् मका तनधारमण उत्पादन की प्रणाशियों द्र्वारा निहं ◌ंि◌ोता। र्वि किता ि◌ै, "धर् मर्नुष्यों के र्न र्ें उन बाह्य ि◌ल्क्तयों के, ल्जनका र्नुष्यों के दैतनक जीर्वन पर तनयंत्रण ि◌ै, र्वर्वक्षण प्रततफिन के अततररक्त कुछ निहं ◌ंि◌ै; ऐसा प्रततफिन, ल्जसर्ें पाधथर्वम ल्क्तयां अिौककक ि◌ल्क्तयों का रूप धारण कर ि◌ेती ि◌ैं। इततिास के प्रारंभ र्ें पिपि-पिपि प्रकृतत की ि◌ल्क्तयों का

इस रूप र्ें प्रततफिन िुआ था और वर्वकास िोने ाके साथ-साथ वर्वशभन्न जाततयों र्ें उनके अनेक प्रकार और वर्वशभन्न र्ानर्वीकरण िो गए।"[21] जो बात धर् मके वर्वषय र्ें सत्य िै, र्विह अन्य सांस्कृततक संस्थाओंके बारे र्ें भी सच िै। बुित सीशर्त अथ मर्ें िह िर् यि कि सकतेिैं कक ककसी सर्ाज की आधथकम प्रणािह िह उसके सम्पूण म वैंधातनक, राजनीततक और बौद्धधक तत्र्व का र्वास्तवर्वक आधार िै; इन तत्र्वों का अल्स्तत्र्व आधथकम प्रणािह के अभार्व र्ें स्र्वतन्त्र रूप से निहंरि सकता। बबना शर्ट्टह के कोई पौधा निहं ािो सकता। िेककन पौधे, भिे िह र्वे शर्ट्टह र्ें से उगते िैं, केर्वि शर्ट्टह से निहंउगते। बीज बोया जाना चाहिए और अन्य उधचत दिाओं का प्रबन्ध ककया जाना चाहिए। इसी प्रकार वर्वचारधारात्र्क ऊपरह ढांचे के शिए आधथकम प्रणािह की आर्वश्यकता अर्वश्य िोती िै, ककन्तु इसके द्र्वारा उसकी व्याख्या पूरह तरि निहं िो जाती। जीर्वन के अभार्व र्ें अच्छा जीर्वन निहंिो सकता; परन्तु ल्जन जीर्वन-र्ूलयों (र्ान्यताओं) का िर् िािन (प्रेर्पूर्वकम रक्षा) करते िैं, उन सबकी व्याख्या केर्वि जीर्वन द्र्वारा निहं ािो सकती।

र्ाक्स मस्र्वीकार करता िै कक इततिास र्ें एक क्रर् िै; परन्तु र्वि सोद्देश्य या प्रयोजनर्वादह क्रर् निहंिै। न र्वि क्रर् अर्वैयल्क्तक िल्क्तयों, परर् आत्र्ा (एदसोलयूट ल्स्पररट), यांल्त्नक प्रकृतत या आधथकम उत्पादन की र्नुष्यों द्वारा [illegible] सनर्ाणम निहं,ा अवपतु र्नुष्यों के सर्ूिों और र्वगों द्र्वारा। यि आर्वश्यक निहं कक र्वगों की गततवर्वधधयां र्विह िों, ल्जनकी कक उन िोगों के उद्देश्यों को देखकर आिा की जा सकती िै, ल्जन (िोगों) के द्र्वारा र्वे र्वग मबनेिैं। र्िान व्यल्क्त उन र्वगों के प्रततततनधध िोते िैं, जो उन्िेंर्िानता प्राप्त करने का अर्वसर देते िैं। र्ानर्वीय प्रयत्न िह र्वि पद्धतत िै, ल्जसके द्र्वारा जो कुछ तनधारमरत िोता िै, र्विह घहटत िोता िै। र्ाक्स मका कथन िै कक ऐततिाशसक परर्वतम र्वग-म संघषों के कारण िोतेिैं। जिांउत्पादनिीि िल्क्तयों को इततिास का आधारभूत तत्र्व र्ाना गया िै, और उत्पादन की दिाओं को इन िल्क्तयों के वर्वकास का एक रूप र्ाना गया िै, और बाकी सब र्वस्तुओं को केर्वि वर्वचारधारात्र्क ऊपरह ढांचा किा गया िै, र्विांर्वग मयुद्ध को र्वि पद्धतत या वर्वधध बताया गया िै, ल्जसके द्र्वारा र्नुष्य का ऐततिाशसक वर्वकास सम्पन्न िोता िै। उत्पादन की िल्क्तयां, ज्यों-ज्यों उनके वर्वषय र्ें िर्ारा ज्ञान और उनपर िर्ारा आधधपत्य बढता जाता िै, तनरन्तर वर्वकास की दिा र्ें िैं और ये सर्ाज के राजनीततक ढांचे (संरचना) र्ें परर्वतम उत्पन्न करती िैं। परन्तु राजनीततक रूप कुछ वर्वशिष्ट र्वगो की सत्ता का र्ूत मरूप िोता िै; ये र्वग मसाधारणतया उत्पादन के साधनों र्ें िुए परर्वतमों के साथ-साथ चि निहं पाते। ये सत्तारूढ र्वग मअपने वर्विेषाधधकारों से धचपके रिते िैं और संघष मके बबना परर्वतमों के सार्ने झुकते निहं। र्नुष्य को कष्ट उत्पादनिीि यंत्र-रचना (र्ैकेतनज्र्) से निहंिोता, अवपतु उन सार्ाल्जक सम्बन्धों से िोता िै, ल्जनके अधीन रिकर र्वि उत्पादनिीि यंत्र-रचना काय मकरती िै। बदिती िुई आधथकम आर्वश्यकताओं की यि र्ांग िोती िै कक राजनीततक प्रणािह र्ें भी परर्वतम िों; और जब प्रभुत्र्व सम्पन्न र्वग मराजनीततक परर्वतमों को रोकनेका यत्न करते िैं, तब संघष मप्रारम्भ िो जाते िैं। जब परर्वतम चािनेर्वािह िल्क्तयां सबि िो जाती िैं, तब र्वग-मसंघष मका क्राल्न्तकारह दौर िुरू िोता िै, पुरानी राजनीततक प्रणािह को हिंसा द्र्वारा तछन्न-शभन्न कर हदया जाता िै और एक नई प्रणािह, जो नई र्ान्यताओं और हितों का र्ूत मरूप िोती िै, उठ खड़ी िोती िै। 'कम्युतनस्ट र्ैनीफेस्टो'

21 'ऐंटहडररंगंपृष्ठ 353-354

(साम्यर्वादह घोषणापत्न) र्ें र्वग-म युद्ध के शसद्धान्त को इस प्रकार प्रस्तुत ककया गया ि ै, "ि र्ारे सर्य तक ल्जन-ल्जन भी सर्ाजों का अल्स्तत्र्व कभी रिा ि ै, उन सबका इततिास र्वग-मसंघषों का इततिास ि ै; स्र्वतन्त्र र्नुष्य और दास, कुिहन और अकुिहन, सार्न्त और अधदमास, र्ाशिक और शिलपसंघों के सदस्य, संक्षेप र्ें अत्याचारह और अत्याचारपीडड़त, तनरन्तर एक-दूसूरे के र्वर्वरोध र्ें जीर्वन बबताते रिे िैं, और एक-दूसूरे के र्वर्वरुद्ध अर्वर्वरार् युद्ध करते रिे िैं; ऐसा युद्ध जो कभी तो अप्रकट रूप से गुपचुप चिता था और कभी खुलिर्खुलिा संघष मके रूप र्ें सार्ने आ जाता था; और िर बार र्वि युद्ध तभी सर्ाप्त िुआ ि ै, जब या तो सर्ाज र्ें क्राल्न्तकारह रूपान्तर िो गया, या जब दोनों िह र्वगों का िोप िो गया।" िर् देखते िैं कक िगभग सभी दिेों और कािों र्ें र्वग-मसंघष मचिते रिे और आज उनका र्ित्र्व पििे की अपेक्षा भी अधधक ि ै। परन्तु इततिास केर्वि र्वग-मसंघषों का िह अशभिेख (ररकाड)म निहंं। राष्रों के बीच युद्ध घरेिू युद्धों की अपेक्षा किहं ंअधधक संख्या र्ें और किहं ंअधधक उग्र िोतेरिे िैं; और र्ानर्व जातत के इततिास के प्रारल्म्भक भाग र्ें तो जाततयों र्ें और नगरों र्ें आपस र्ें युद्ध िुआ करते थे। इस र्वतर्मान युद्ध (द्र्वतीय र्वर्वश्र्वयुद्ध) र्ें भी र्वग-मचेतना की अपेक्षा राष्रहयता की भार्वना किहं अधधक प्रबि ि ै। सारे इततिास र्ें िासक और िाशसत, धनी और तनधनम, दिे के ित्रुओं के र्वर्वरुद्ध कन्धे से कन्धा शभड़ाकर िड़ते रिे िैं। िर् आज भी अपने दिे के पूंजीपतत र्ाशिकों की अपेक्षा र्वर्वदिेी कार्गरों से अधधक घृणा करते िैं। कुछ धाशर्कम युद्ध भी िुए िैं, जैसे धर्सुमधार (ररफॉर्िेन) के पक्ष और र्वर्वपक्ष र्ें िुए युद्ध, जो यूरोप र्ें दो िताल्ददयों तक चिते रिे। इन युद्धों र्ें सब र्वगों के िोग, क्या अर्ीर, क्या गरहब, क्या राजा और क्या ककसान, क्या कुिहन और क्या कारहगर, सब बड़े ेधर्ान्मध जोि के साथ दोनों िह पक्षों की ओर से िड़े।े आज र्ाक्सर्वमादह भी, कुछ एक अपर्वादों को छोड़कर, उन पूंजीर्वादह राष्रों के शिए िड़ रिे िैं, ल्जनके र्वे सदस्य िैं। र्वतर्मान युद्ध को िर् र्वग-म भार्वना का िह र्वर्वकृत रूप निहंर्ान सकते। भारत र्ें िुए हिन्दुओं और र्ुसिर्ानों के संघष मया आयरिैंड र्ें प्रोटैस्टैंटों और कैथोशिकों र्ें िुए संघष मर्वग-मसंघषों के तनदिन मनिहंं। यि ठीक ि ै कक र्वग-मसंघष मऔर गिृ-युद्ध िोतेिैं, परन्तु साथ िह धर्ों के और राष्रों के युद्ध भी िोते िैं। र्ानर्वीय र्वर्वकास र्ें इन वपछिे प्रकार के युद्धों का िाथ अधधक तनश्र्वायक रिा ि ै।

इसके अततररक्त यि युल्क्त, कक युद्ध पूंजीर्वाद का अतनर्वाय मपररणार् ि ै, ऐततिाशसक दृल्ष्ट से सिह निहं िै। यि बात सच िो सकती ि ै कक पूंजीर्वादह साम्राज्यों को नये बाज़ारों की आर्वश्यकता िोती ि ै और उन बाज़ारों को प्राप्त करने के शिए युद्ध छेड़े ेजाते िैं, परन्तु पूंजीर्वाद का अल्स्तत्र्व तो केर्वि वपछिह कुछ िह िताल्ददयों र्ें रिा िै, जबकक युद्ध िज़ारों साि से िड़े ेजाते रिे िैं। इस बात का भी कुछ तनश्चय निहं ंिै कक यहद सब दिेों र्ें एक नये शभन्न प्रकार की सार्ाल्जक प्रणािह आ जाए, तो संसार र्ें िांतत स्थावपत िो िह जाएगी। र्वर्वदिेी आक्रर्ण से अपनी रक्षा करनेतथा दूसूरे राज्यों र्ें पूंजीर्वाद को सर्ाप्त करने ेके शिए साम्यर्वादह रुस को भी युद्ध करना िह पड़ता ि ै। यहद संसार के सब दिेों र्ें साम्यर्वाद स्थावपत िो भी जाए, तो साम्यर्वाद के सच्चेस्र्वरूप और उसको िागू करने की पद्धततयों के बारे र्ें र्तभेद उठ खड़े िोंगे। यि कलपना भी निहं की जा सकती कक कभी कोई ऐसा सर्य आ जाएगा, जब िोगों के कोई र्वर्वरोधी र्त और स्र्वाथ मन रिेंगे; और िोगों र्ें कोई र्तभेद न िोगा। र्ानर्वीय व्यर्विार की र्ुख्य प्ेरेरक िल्क्तयां र्वर्वर्वध िैं। दिे का प्ेरेर्, सर्िैंगिुपता, यूथ की सिजर्वृवृत्त उतनी िह र्ित्र्वपूण मिैं, ल्जतनी कक संगिर्िीिता और र्ित्र्वाकांक्षा। जब तक अपनी सम्पततयों, र्वासनाओंऔर इच्छाओं

के सर्थनम र्ें उन िोगों से, जो उनका वर्वरोध करते िैं, िड़ने ेकी प्रर्वृत्त की रोकथार् निहं ंकी जाती, तब तक सार्ाल्जक प्रणाह चािे कोई-सी भी क्यों न िो, युद्ध िोते िह रिंगे। यहद र्ानर्व-स्र्वभार्व िह न बदि जाए, तो तीव्र र्तभेदों का तनपटारा युद्ध के िस्त्रों द्र्वारा िह िोता रिेगा; और िर्ारह ये आिाएं, कक कोई ऐसा सर्य आएगा जब वर्वरोधों का तनणयम तिर्वार की धार से न िोकर र्नोंबि द्र्वारा िोगा, टिती िह रिंगी। इततिास को केर्वि आन्तररक (घरेिू) संघषों की एक श्रृंखिा के रूप र्ें प्रस्तुत करना और जातत, धर्,म और देिभल्क्त की िल्क्तयों की उपेक्षा कर देना र्ानर्वीय वर्वकास की पेचीदा सर्स्या को आर्वश्यकता से अधधक सरि र्ान िेना िै। ऐंल्जलस ने इस सम्बन्ध र्ें कुछ सतकमतापूण मिदद किे िैं, "र्ाक्स मने और उसने अपनेखण्डनात्र्क वर्क्तव्यों र्ें किहं–किहं ं बढा-चढाकर बातें कि दह िैं। उन्िोंने यि निहं सोचा था कक र्वे कोई ऐसे गुर (सूत्र) प्रस्तुत कर रिे िैं, ल्जनके द्र्वारा इततिास की सब घटनाओं की व्याख्या िो सकेगी; यहद ऐसा कर पाना सम्भर्व िोता, तो ऐततिाशसक कािों को पूरह तरि सर्झ पाना उतना िह सरि िो जाता, ल्जतना कक एक र्ारूिह सर्ीकरण को िि करना।"

र्ाक्स मने ल्जस सत्य की ओर ध्यान खींचा िै, र्वि यि िै कक आधुतनक तकनीकों द्र्वारा र्वस्तुओंका उत्पादन इतने वर्विाि पररर्ाण र्ें िो रिा िै कक यहद केर्वि वर्वतरण की व्यर्वस्था कुछ शभन्न प्रकार से की जाए, तो उनसे सब िोगों की आर्वश्यकताएं पूरह िो सकती िैं; और इससे उन िोगों का असन्तोष दूर िो जाएगा, जो इस सर्य भूख से पीडड़त िैं। भूखे िोग कुछ कर र्रनेको उतारू िोतेिैं, जैसे कक सन्तुष्ट िोग कभी िो निहं ंसकते और 'कम्युतनस्ट घोषणापत्न' उन भूखों को प्रभावर्वत करता िै। यि इन िददों के साथ सर्ाप्त िोता िै, "कम्युतनस्टों को अपनेवर्वचारों को और अपनेउद्देश्यों को तछपाने से घृणा िै। र्वे खुिेर्खुिा घोषणा करते िैं कक उनके उद्देश्य र्वतमान सब सार्ाल्जक दिाओंको केर्वि बिपूर्वकम उिट डािने से िह पूरे िो सकते िैं। िासक-र्वग मकम्युतनस्ट क्राल्न्त से कांपते िैं, तो कांपें। श्रशर्क-र्वग मके पास गंर्वाने के शिए अपनी बेडड़यों के शसर्वाय और कुछ िै िह निहं। जीतने के शिए उनके सार्ने सारा संसार िै। सब देिों के कार्गरो, एक िो जाओ।" आधथकम क्षेत् र्ें 'स्र्वेच्छाचारह व्यल्क्तर्वाद' के शसद्धान्त के वर्वरुद्ध र्ाक्स मका प्रततर्वाद उधचत िै। बढती िुई आधथकम वर्वषर्ता के सम्र्ुख राजनीततक स्र्वतन्त्रता का र्ूल्य बिुत कर् िै। यि र्ान िेना कक आधथकम क्षेत्र र्ें हितों की सर्स्र्वरता स्र्वयंउत्पन्न िो जाएगी, यि वर्वश्र्वास कक यहद प्रत्येक व्यल्क्त सोच-सर्झकर अपना हित पूरा करने की कोशिि करेगा, तो सर्ाज को स्र्वतः िह अधधकतर् िाभ िोगा, सर्थनमीय निहं। व्यल्क्त अपनेहित के शिए काय मकरते िुए, उसी प्रकक्रया र्ें, सर्ाज के प्रतत अपनेकतव्मय का पािन निहं ंकर रिा िोता। जनसाधारण का ध्यान व्यल्क्तगत स्र्वतन्त्रता की ओर उतना निहं, ल्जतना कक धन्धों, भोजन और पयाप्मत सुरक्षा की ओर।

भौततकर्वादह पररकल्पना द्र्वन्द्र्वात्र्क भौततकर्वाद के संिोधधत रूप र्ें भी भौततकर्वाद के अन्य रूपों की अपेक्षा कुछ अधधक सन्तोषजनक निहं ंिै। यि दृल्ष्टकोण, कक र्न केर्वि भौततक तत्त्र्व का िह एक कृत्य िै, और इसके वर्वचारों तथा वर्वकास का तनधारमण भौततक संघहटत संस्था (ऑगेतनज़्र्) की प्राकृततक दिाओंद्र्वारा, प्रत्येक पीढह के सार्ाल्जक और आधथकम ढांचे और भौततक प्रकक्रया द्र्वारा, ल्जसका कक र्वि 'भौततक संघहटत संस्था एक कृत्य िै, िोता िै, एकपक्षीय और भ्रार्क िै। इततिास एक सुघहटत और सृजनिीि प्रकक्रया िै, यि धारणा र्ाक्स मनेकेर्वि िेगि से िह निहं ंिह, अवपतु अपने यिूदह पूर्वजमों से िह िै। इस साशभप्राय आदि म(नर्ूना) और इस

सृजृर्निी गततवर्वधध की व्याख्या उत्पादर्निी िल्क्तयों के वर्वकास के रूप र्ें निहं ंिो सकती। उत्पादर्निी ल्क्तियों का सारा वर्वकास र्नुष्य की सृजृर्निी अन्तःपे्रेरणा द्र्वारा िुआ िै। सृजृनात्र्क अन्तःपे्रेरणा का स्रोत कौन-सा िै? र्नुष्य केर्वि पुि की 'भांतत जीकर िह संतुष्ट क्यों निहं रि िेता ? यहद यि र्ान भी शिया जाए कक संसार द्र्वन्द्र्वात्र्क अतनर्वायतमा के द्र्वारा यथासर्य तनष्पवत्त की ओर, अल्स्तत्र्व की एक नई व्यर्वस्था की ओर बढ रिा िै, तो भी इसके जीर्वन और गतत का स्रोत कौन-सा िै? यि किना कक इततिास एक सप्रयोजन प्रकक्रया िै, भौततकर्वादह दृल्ष्टकोण की यथेष्टता से इनकार करना िै। यि र्ान िेना कक यि एक परर् तथ्य िै, इसे रिस्य-रूप र्ें िह छोड़ देना िै। और रिस्य धर् मका जन्र्स्थि िै। इसके अततररक्त धर् मर्ानर्वीय प्रकृतत को नये रूप र्ें बदि डािना चािता िै और र्ाक्स मका वर्वश्र्वास िै कक इसका पररणार् सार्ाल्जक पररर्वतनम द्र्वारा प्राप्त िोता िै। र्वि शिखता िै, "बाह्य जगत् ्पर कक्रया करनेऔर उसे पररर्वतततम करने ्के द्र्वारा र्नुष्य स्र्वयं अपनी प्रकृतत (स्र्वभार्व) र्ें भी पररर्वतनम कर रिा िोता िै।"[22] सार्ाल्जक जीर्वन की दिाओं पर तनयंर्ण करके र्नुष्य अपनी प्रकृतत को अपनी स्र्वतन्त्र इच्छा के अनुसार नये रूप र्ें बदि सकता िै। र्ाक्स मकिता िै, "र्ोशिये प्रूधों को र्ािूर् हि निहं ंकक सारा इततिास र्ानर्वीय प्रकृतत के अधधकाधधक बढते िुए रूपान्तरण के शसर्वाय और कुछ निहं िै;" और धर् मका उद्देश्य भी ठीक यिह िै।

वर्वज्ञान और धर् मके बीच चिनेर्वािा इततिास-प्रशसद्ध वर्वर्वाद अब पुराना क्योंकक र्वि वर्वज्ञान, जो धर् म को चुनौती देता था, आज र्वैसा िह र् चुका िै, जैसाकक र्वि धर्,म ल्जसे र्वि चुनौती हदया करता था। आज सर्स्या धर् मके अवर्वश्र्वसनीय कट्टर शसद्धान्तों के वर्वषय र्ें निहं िै, अवपतु इस ि्ह्र्ाण्ड र्ें आल्त्र्क तत्त्र्व का जो स्थान िै, उसके वर्वषय र्ें िै; इस आल्त्र्क तत्त्र्व की व्याख्या वर्वज्ञान द्र्वारा बबलकुि िह निहं िो सकती। आत्र्ा का राज्य िर्ें से िरएक के अन्दर वर्वद्यर्ान िै, सदा से वर्वद्यर्ान रिा िै और सदा रिेगा। इसे सूक्ष्र् तनरहक्षण द्र्वारा या बाह्य पररर्वतनमों द्र्वारा प्राप्त निहं ंककया जा सकता।

जो भारतीय िोग र्ाक्सर्वमादह सार्ाल्जक कायक्रमर् की ओर आकवषतम िुए िैं, उन्िें चाहिए कक र्वे इसका र्ेि भारतीय जीर्वन के आधारभूत िक्ष्यों के साथ बबठाएं। एक स्र्वप्निोक (आर्दिमोक, युटोवपया) की रचना और एक ऐततिाशसक आदि मकी रचना र्ें काफी अन्तर िै। ककसी भी हदए िुए सर्य की सुतनहदमष्ट पररल्स्थततयों से बबिकुि पृथक् एक अव्यक्त धारणा स्र्वप्निोक िै, जो एक पूण मसार्ाल्जक व्यर्वस्था का एक कलपनाप्रसूत आदि मिै। दूसूरह ओर, ऐततिाशसक आदि मर्ें सुतनहदमष्ट ल्स्थततयों का ध्यान रखा जाता िै और उसका आधार परर् पूणतमा निहं, अवपतु सापेक्ष पूणतमा िोती िै। ककन्िहं आधारभूत वर्वशेषताओं के सम्बन्ध र्ें ऐततिाशसक उन्नतत का तनधारमण एक सुतनहदमष्ट पृष्ठभूशर् द्र्वारा िोता िै; भिे िह उसके भार्वी वर्वकास के सम्बन्ध र्ें तनश्चय से कुछ न किा जा सकता िो। भवर्वष्य को अधग्रर् रूप से स्र्वतन्त्र निहंकर हदया गया; और र्ानर्वीय आत्र्ा, जो स्र्वाधीनता की भार्वना से सम्पन्न िै, बाह्य और आन्तररक आर्वश्यकताओं पर वर्वजय पा सकती िै और इततिास की गतत का तनधारमण कर सकती िै। भारत के शिए आदि मसार्ाल्जक व्यर्वस्था र्विह िो सकती िै, ल्जसर्ें िर्ारे जीर्वन की उस आध्याल्त्र्क हदिा का पूरा ध्यान रखा गया िो, ल्जसर्ें से कम्युतनस्टों का केन्द्रहय शसद्धान्त, कक सब र्नुष्य

22 'कै वपटि', 11-98

भाई-भाई िैं, तनकिा िै। उन युर्वकों से, ल्जन्िोंने यि तनश्चय िै कक धर् मके हदन बीत चुके िैं, िर् कि सकतेिैं कक र्वे इस प्रकार के रित्र्वपूण मर्वर्वषयों पर दृढ सम्र्ततयां बनानेके शिए सबसे कर् योग्य िैं और इसीशिए ऐसी सम्र्ततयां बनाने के शिए सबसे अधधक अधीर िैं। इस र्वर्वषय र्ें प्िेटो की र्ििसा एकदर् असंगत निहं ंिै।'[23]

रूस पर हिटिर के आक्रर्ण ने सब धाशर्कम संस्थाओं की ओर से, ल्जनर्ें चच मऔर सम्प्रदाय-संस्थाएं (सैक्टरह) भी सर्ान रूप से सल्म्र्शित िैं, देिभल्क्तपूण मउत्सािा के प्रादुभार्ुर्वम को प्रोत्सािन हदया िै। अब उनके ऊपर 'क्राल्न्त-र्वर्वरोधी' षड्यन्त्रों से सम्बद्ध िोने का िक निहं ंककया जा सकता। धाशर्कम संस्थाओंकी ओर से रूसी सरकार के सच्चे और सोत्सािा सर्थनम का परररणार् यि िुआ कक स्तालिन ने कट्टर पंथी चच मके नेताओं को अधधकृत रूप से भेंट के शिए बुिाया और इस बात को र्ाना कक उन्िें पेहरयाकम (प्राधधधर्ाध्मयक्ष) का चुनार्व करने तथा एक पर्वर्वत्न धर्समभा (िोिह साइनोड) का गठन करने के शिए राष्रहय सभा (नेिनि असेम्बिह) बुिाने ेकी स्र्वतन्त्रता िै।'[24] सोर्वर्वयत सरकार धाशर्कम स्र्वतंत्रता को स्र्वीकार करती िै और उन र्ार्िों र्ें कोई िस्तक्षेप निहं करती, ल्जनका सम्बन्ध उधचत रूप से चच मके साथ िै। चच मके प्रतत र्ििे का उग्र र्वर्वरोध र्ुख्यतया चच मके अबुद्धधर्त्तापूण मअप्रजातंत्रीय दृल्ष्टकोण के कारण था; और इस कारण कक चच मरोर्ानौफ र्वंि का जरा-दुबिम दास-सा बना िुआ था। बिुत-सी ज्यादततयां िुईं, ल्जनके र्वर्वषय र्ें अब चचामकरने की आर्वश्यकता निहं ंिै। िो सकता िै कक अब भी रूसी सरकार ने अपनी नीतत राजनीततक कारणों से बदिह िो। प्रेरक कारण चािे कुछ भी क्यों न रिे िों, ककन्तु यि ऐततिाशसक तनश्चय इस बात की स्र्वीकृतत का द्योतक िै कक जनता के जीर्वन र्ें धर् मका स्थान िै।

आध्याल्त्र्क पुनरुज्जीर्वन की आर्वश्यकता

र्ाक्स मऔर उसके साथी ल्जन उद्देश्यों को दृल्ष्ट र्ें रखकर चि रिे िैं, उन्िें प्राप्त करने के शिए, अवप्रय घृणाओंको सर्ाप्त कर डािनेके शिए आध्याल्त्र्क पुनरुज्जीर्वन की आर्वश्यकता िै। नई र्वर्वश्र्व-व्यर्वस्था र्ें उसे

23 "र्ेरे बेटे, तुर् अभी जर्वान िो और सर्य बीतने के साथ-साथ तुम्िारे बिुत-से र्वतर्मान र्वर्वश्र्वास बबिकुि उिट जाएंगे। तो तुर् सर्वोच्च र्वर्वषयों के सम्बन्ध तनणयम िुरू करने से र्ििे भवर्वष्य की प्रतीक्षा करो; और इन र्वर्वषयों र्ें सबसे रित्र्वपूण म- यद्यवप तुर् अभी इसे बिुत तुच्छ सर्झतेिो- िै देर्वताओंके सम्बन्ध र्ें ठीक ढंग से सोचना और अच्छा जीर्वन बबताना, या कफर इसका उलटा .....! यहद तुर् र्ेरह बात र्ानो, तो इन र्वर्वषयों र्ें स्पष्ट और र्वर्वश्र्वस्त तनणयम की पूणतमा आने की प्रतीक्षा करो; और सब ओर से पथ-प्रदिनम पाने की चेष्टा करतेिुए यि खोज करो कक सत्य इस हदिा र्ें िै या उस हदिा र्ें।... इस बीच र्ें सार्वधान रिो कक देर्वताओं ंके प्रतत ककसी प्रकार की अधाशर्कमता न िोनेपाए।" - 'िौज़, 888 (ए० ई० टेिर कृत अंग्रेजी अनुर्वाद)

24 4 शसतम्बर, 1943 को स्तालिन द्र्वारा र्ास्को, िेतननग्राद और यूक्रेन के तीन अधधधर्ाध्मयक्षों (र्ैरोपोशिटन) का स्र्वागत-सत्कार करने के र्वर्वषय र्ें अधधकृत र्वक्तव्य र्ें तनम्नशिखखत अनुच्छेद रित्र्वपूण िै: "भेंट के बीच र्ें अधधधर्ाध्मयक्ष सैल्जयमस ने अध्यक्ष (चेयरर्ैन) को बताया कक सनातनों (औथोडॉक्स) चच मके अधधकारह-र्वगम ने यि इरादा बनाया िै कक तनकट भवर्वष्य र्ें बबिपों की एक तनर्वाधमचका सभा (कौंल्ससि) र्ास्को के और सारे रूस के प्राधधधर्ाध्मयक्ष (पेहरयाकम) का चुनार्व करने के शिए और पर्वर्वत्र धर्समभा (िोिह साइनोड) की स्थापना करने के शिए बुिाई जाए। इसपर सरकार के अध्यक्ष कार्रेड जे० र्वी० स्तालिन ने किा कक सरकार की ओर से प्रस्तार्व पर कोई ऐतराज़ न िोगा।"

एकता और प्रेरणा प्रदान करनेके शिए गिरा आध्याल्त्क आर्वे का िोना आर्वश्यक िै। सार्ाल्जक कायक्रमर् के शिए केर्वि र्विह बुद्धधसंगत आधार प्रदान कर सकता िै। िर्ें जैसा कक स्वगीय िेनरह बगसमन ने किा था, "सारह र्ानर्व जातत के सांझे ेउस परर्ात्र्ा की ओर देखना चाहिए, ल्जसकी केर्वि एक झिक शर्िने का, यहद ककसी प्रकार र्नुष्य उसे पा-भर सके तो, अथ मयि िोगा कक युद्ध का अवर्विम्ब सर्ूिोच्छेद िो जाए।" ल्जस परर्ात्र्ा का संकेत बगसमन ने ककया िै, उसकी झिक िर् ककस प्रकार पा सकते िैं? िर् पाप और असारता से र्ुक्त िोकर ककस प्रकार उस भगर्वान को देखने की अन्तदृल्मष्ट प्राप्त कर सकते िैं, जो सबके शिए एक िै? धर् मका आधार व्यल्क्त के सारभूत र्ूलय और गौरर्व का उद्घाटन और र्वास्तवर्वकता के उच्चत्तर संसार के साथ व्यल्क्त का सम्बन्ध िै। जब र्ानर्व-प्राणी यि अनुभर्व करता िै कक र्वि पिावर्वक प्रकृतत की अपेक्षा उच्चतर एक र्वास्तवर्वकता की व्यर्वस्था का अंि िै, तो र्वि सांसाररक सफिता से या भौततकर्वादह वर्वज्ञान की वर्वजयी रस्ता सन्तुष्ट निहंि सकता। उसर्ें अपनेआदिो के शिए िहद िोने ेकी क्षर्ता िै, यि तथ्य इस बात का सूचक िै कक र्नुष्य िाश्र्वत र्वास्तवर्वकताओं के संसार र्ें रिता िै और उसीके शिए जीता िै। पूजा र्नुष्य का (हदव्य) िह् तक पिुंचने ेका प्रयत्न िै। धर् मर्वि अनुिासन िै, जो अन्तरात्र्ा को स्पि मकरता िै और िर्ें बुराई और कुल्त्सतता से संघष मकरने र्ें सिायता देता िै; कार्, क्रोध और िोभ से िर्ारह रक्षा करता िै; नैततक बि को उन्र्ुक्त करता िै। संसार को बचानेका र्िान काय मके शिए सािस प्रदान करता िै। र्न के अनुिासन के रूप र्ें इस (धर्)म र्ें उस बुराई का र्ुकाबिा करने की कुंजी और सारभूत साधन वर्वद्यर्ान िैं, जो सभ्य संसार के अल्स्तत्र्व के शिए खतरा बनी िुई िै। इसर्ें िर्ारे वर्वचार और आचरण को आत्र्ा के धर्ों का र्विर्वती बनानेकी बात तनहित िै।

अतीत र्ें धर् मजादू, ू टोने, नीर् िकीर्ों और अन्धवर्वश्र्वास के साथ शर्धश्रत रिा िै। उन धर्शमसद्धान्तों को, जो ककसी सर्य हदव्य जीर्वन की ओर िे जानेर्विे र्ाग मथे, पर आज रुकार्वट बनिुए िैं, र्नुष्य और परर्ात्र्ा के बीच र्ें रोक बनकर खड़े ेन िोने ेदेना चाहिए और आध्याल्त्क जीर्वन की सारभूत सरिता को नष्ट न करने ेदेना चाहिए। धर् मको, जैसाकक इसके नार् से िह ध्वतनत िोता िै, एक ऐसी संघटक, परस्पर बांधनेर्विह ल्क्त िोना चाहिए, जो र्ानर्व-सर्ाज की सुदृढता को और गिरा करती िो, भिे िह उसके ऐततिाशसक स्वरूपों र्ें अनेक स्पष्ट िुहटयां ेरिह िों। अपनेतत्त्व-रूप र्ें धर् मआध्याल्त्क अशभयान के शिए आह्र्वान िै। यि धर् म धर्मर्वज्ञान (धथयोिॉजी) निहं,िं अवपतु धर् मका व्यर्विार और अनुिासन िै। आत्र्ा के ददम की, ल्जसने अपने-आपको िाश्र्वत से पृथक् कर शिया िै यिह एकर्ात्र औषध िै। जब र्ानर्व-आत्र्ा इसके स्रोतों और इसकी िेतों की अर्वज्ञा करती िैं, तब र्वि उन्त्त और आत्र्घाती बन जाती िै। व्यल्क्त और िाश्र्वत के बीच िुप्त िो गए सम्बन्ध को पुनः स्थावपत करना िह धर् मका िक्ष्य िै।

धर् मका सार उन धर्-मशसद्धान्तों र्ें और धाशर्कम तों र्ें, वर्वधधयों र्ें और संस्कारों र्ें निहं ेिैं, ल्जनसे र्ें से अनेक को वर्वरल्क्त िोती िै, अवपतु ुयुगों की गम्भीरतर् बुद्धधर्त्ता र्ें, अनर्वरत तत्त्वज्ञान र्ें, सनातन धर् मर्ें िै, जो आधुतनक वर्वचार की कककतव्मयवर्वर्ूढ अस्तव्यस्तता र्ें िर्ारा एकर्ात्र पथप्रदिकम िै। वर्वशभन्न धर् म सत्य का प्रतततनधधत्र्व निहंकरते, अवपतु सत्य के उन वर्वशभन्न पक्षों और धारणाओं का प्रतततनधधत्र्व करते िैं, ल्जनर्ें कक िोग वर्वश्र्वास करते रिे िैं। र्वे उस एक िह सत्य की वर्वर्वर्वध ऐततिाशसक अशभव्यल्क्तयां िैं, जो अपनी

प्रार्ाखणकता की दृल्ष्ट से सार्वभमौर् और सार्वकमाशिक ि। सटें आगस्टाइन किता ि, "ल्जसे ईसाई धर् मकिा जाता ि, र्ि प्राचीन िोगों र्ें भी र्वद्यर्ान था, और र्ानर्व जातत के प्रारम्भ से िेकर ईसा के िरहर धारण करने के सर्य तक कोई र्वक्त ऐसा निंरिा, जब इसका अल्स्तत्र्व न रिा िो, ईसा के आगर्न के बाद सच्चे धर् मको, जो पिपिे से िह र्वद्यर्ान था, ईसाई धर् मकिा जानेगा।"[25]

इस सृजृनिनी प्रसर्व पीड़ा के किा र्ें, अपनेकष्ट-सिन की गंभीरता के कारण भी, भारत को यि र्वर्विषोधधकार प्राप्त ि कक र्ि संसार के शिए प्रकिा बन सके, सार्वभमौर् र्ित्र्व के एक सेदिे का र्विाक बन सके। भारत कोई जातीय व्यल्क्तत्र्व निं ि, क्योंकक जातीय 'भर्वर्वतव्यता बनार्वटह ि। र्विुद्ध जातीय रूप तो नृर्वृर्वज्ञान की आदि मकलपनाएं-भर ि । र्वास्तर्वर्वक जीर्वन र्ें ऐसे व्यल्क्तयों को प्राप्त कर पाना सरि निं ि, ल्जनर्ें ककसी एक िह जातत की सब र्वर्विषेताएं एकत्र र्वद्यर्ान िों। सभी जगि र्नुष्यों र्ें र्वशभन्न जाततयों की र्वर्विषेताएं शरिह-ज़िुह शरिती िं, यिांतक कक एक िह पररर्वार के सदस्यों र्ें भी एक िह जातत की र्वर्विषेताएं िायद िह किं दहख पड़ती िों। भारतीय संस्कृतत जातीय दृल्ष्ट से एकर्दीय निं ि, अवपतु इसने सब जाततयों के िोगों को प्रभावर्वत ककया ि। अनुभूतत और उद्देश्य की दृल्ष्ट से यि अन्तराष्मरहय ि। भारत के प्रतीकरूप धर् मिन्दुत्र्व र्ें यिह भार्वना र्वद्यर्ान ि; र्ि भार्वना, ल्जसर्ें इतनी असाधारण जीर्वनी िल्क्त ि कक र्ि राजनीततक और सार्ाल्जक पररर्वतनमों के बाद भी बची िुई ि। जब से भी इततिासकार का अशभिेख उपिदध ि, तभी से र्ि आत्र्ा की पवर्वत्न ज्र्वािा का साक्ष्य प्रस्तुत करता रिा ि; र्ि ज्र्वािा सदा, तब भी जबकक राजर्वंि नष्ट िोते िों और साम्राज्य टूटकर खंडिर बनते िों, र्वद्यर्ान रिेगी। केर्वि यिह पवर्वत्र ज्र्वािा िर्ारह सभ्यता को आत्र्ा, और नर-नाररयों को जीर्वन का एक शसद्धान्त प्रदान कर सकती ि।

र्नुष्य र्ें एक, न केर्वि जीनेकी, अवपतु गौरर्व के साथ जीने की तत्र्वगत (र्ौशिक) आकांक्षा र्वद्यर्ान ि। जब िर्ारे इस गौरर्वपूण मजीर्वन के आर्वेि को िह्ांडीय सर्थनम प्राप्त िो जाता ि, तब िर्ारे अन्दर एक र्वर्वशिष्ट प्रकार का धाशर्कम उत्सािा भर उठता ि। ऐसा व्यल्क्त कोई भी निं ंि, ल्जसके र्न र्ें कभी न कभी ये आधारभूत प्रश्न न उठे िों- र्ैं क्या िंू? र्ेरा र्ूि किां ंि? र्ेरह भर्वर्वतव्यता क्या ि?[26] इसके अततररक्त िर्ें इस र्वर्वश्र्व के रिस्य पर र्वस्र्य की अनुभूतत िोती ि, इसकी सुव्यर्वल्स्थतता र्ें र्वश्र्वास िोता ि; िर्ें धचर-किा से

---

25 'शिर्व० डड र्ेवेरा ररशिल्जयोन, अध्याय 10

26 इस रुनझुन-भर पद्य पर र्वचार कील्जए,

"अरे, ये सब रातनयां ंऔर हदर्वस ककधर जाते िं ?
और आगार्ी कि किां ंिो सकता ि ?
जब र्ैंन रिूंगा, क्या तब कोई रिेगा
और र्ैंसदा र्ैंिह क्यों रिता िं ?"
र्वालटर डड िा र्ेयर, 'प्रंसिस मएण्ड स्पैक्टि्यिेन्स' (1940)

ये िं र्वे पिेशियां,ं जो आती तो बच्चे तक के र्न र्ें ि, पर ल्जनका सबके शिए सन्तोष जनक उत्तर अभी तक कोई दितमनक भी निं दे पाया।

बनी आ रिह पिेशियों के उत्तरों की अन्तिहन खोज ि ै और र्वस्तुओंकी सचाई को खोज तनकािने की अधीरतापूर्वकम िािसा ि ै। उस सचाई को, जो इस अथ मरें सार्वभमौर् और परर् ि ै कक र्वि सब र्नुष्यों के शिए, सब देिों और कािों के शिए प्रार्ाखणक ि ै। रिस्यर्य का अनुभर्व सब धर्ों के र्ूि र्ें र्वर्वद्यर्ान आधारभूत गुण ि ै। गेटे किता ि ै, "र्वर्चारक के रूप र्ें र्नुष्य का सबसे बड़ा आनन्द यि ि ै कक ल्जसकी थाि पाई जा सकती ि ै, उसकी थाि पा िी ह जाए, और ल्जसकी थाि निहंपाई जा सकती (अथािा), उसके सम्र्ुख श्रद्धा से शसर झुका हदया जाए।" कुछ ऐसे तथ्य और र्ान्यताएं (जीर्वन-र्ूलय) ि ैं ल्जनकी कोई व्याख्या निहंकी जा सकती। िर् यि निहं ंजानते कक इस संसार का अल्स्तत्र्व ककसशिए ि ै, और र्ान्यताओ के जगत् ्के साथ, जो देि और काि के संसार की अपेक्षा कर् र्वास्तवर्वक निहीं, इसका क्या सम्बन्ध ि ै। यहद िर् र्ानर्वीय तकमबुद्धध की इन सीर्ाओंको पिचान सकते ि ैं, और उन्िें स्र्वीकार कर सकते ि ैं, तो इसका कारण केर्वि यिह ि ै कक िर्ारे अन्दर एक आत्र्ा ि ै, जो तकमबुद्धध की अपेक्षा किहं अधधक उत्कृष्ट ि ै, र्विह तकमबुद्धध को अपने उपकरण (साधन) के रूप र्ें प्रयुक्त करती ि ै। इन दोनों को पृथक् निहं ंककया जा सकता; क्योंकक आत्र्ा तो र्वस्तुतः र्वि सर्ूचा व्यल्क्तत्र्व ि ै। जो अपनेउच्चतर अंि के पथ-प्रदिनम र्ें काय मकरती ि ै; और जब आत्र्ा काय मकरती ि ै, तब िर्ें परर्ात्र्ा का दिनम िोता ि ै। यद्यवप बौद्धधक प्रर्वृत्त र्ानर्वीय र्न के शिए स्र्वाभावर्वक (नैसधगकम) ि ै, परन्तु इसकी सुस्पष्ट भवर्वतव्यता तो इसकी अर्वयर्व भूत (र्ुख्य) िी ह ि ै। कभी न कभी िर्ें से प्रत्येक ने अर्वैयल्क्तक आनन्द के उन क्षणों का अनुभर्व ककया िोगा, जब ऐसा िगता ि ै कक िर् इस स्थूि पृथ्र्वी पर निहं चि रिे, अवपतु िर्वा र्ें उड़ रिे ि ैं, जब िर्ारा सारा अल्स्तत्र्व एक ऐसे साल्न्नध्य से ओतप्रोत िो उठता ि ै जो अर्वणनमीय िोतेिुए भी अनुभूततगम्य ि ै, जब िर् एक अपाधथर्वम (हदव्य) र्वातार्वरण र्ें स्नान कर रिे िोतेिैं, जब िर् परर् आनन्द की सीर्ाओंतक को स्पि मकर िेते ि ैं, जिां ंपिुंचकर स्र्वाथ मसाधना और अतृप्त िािसाएं उपिल्दध और प्रिान्तता के सम्र्ुख घुटने टेक देती ि ैं। इस प्रकार के अन्तदृल्मष्ट के क्षण और आनंद की र्नोदिाएं व्यल्क्तत्र्व को ऊंचा उठानेर्वािह, र्वर्वस्तार प्रदान करनेर्वािह, गिराई तक िे जानेर्वािह और सर्ृद्ध बनानेर्वािह िोती ि ैं, और कफर भी र्वे उसका र्वर्वश्र्व के साथ एकात्म्य स्थावपत करती ि ैं। चूर-चूर कर देनेर्वािह गिराई के और तीव्र उलिास के इन अनुभर्वों र्ें, जबकक िर् पंखों द्र्वारा ऊपर उठकर र्वास्तवर्वकता को स्पि मकरने िगते ि ैं, जब िर् प्रकाि से भर उठते ि ैं और आत्र्ा के साल्न्नध्य के र्वातार्वरण से भर उठते ि ैं, िर्ारा र्न आश्चयजमनक स्पष्टता से भर जाता ि ै और िर् अपने-आपको एक शर्त्रतापूण मवर्वश्र्व का अंग अनुभर्व करने िगते ि ैं। ल्जनके चररत्न और सत्यतनष्ठा पर कोई आक्षेप ककया िी ह निहं जा सकता, ऐसे िोगों ने बड़े ेगम्भीर िददों र्ें बताया ि ै कक ककस प्रकार उनका सारा अल्स्तत्र्व िी ह रूपान्तररत िो गया। आत्र्ा िी ह उनका जीर्वन, प्रकाि और आनन्द ि ै। उनका सम्पूण मस्र्वभार्व अनुसन्धान की गततवर्वधध ि ै, ज्ञान-प्राल्प्त का प्रयत्न। र्वे ेतो अपनी आत्र्ा की िांतत र्ें रि रिे िोते ि ैं, परन्तु उनके िरहर जीर्वनी–ल्क्त से प्रबि और अवर्वर्मिदय िोतेिैं।

धर् मका र्ूि एक प्रकार की र्वर्वस्र्य की अनुभूतत र्ें और स्र्वयं जीर्वन के िाश्र्वत रिस्य र्ें, इसकी चारुता और िल्क्त र्ें, जब िर् ककसी तृल्प्तदायक र्वस्तु को प्राप्त करते ि ैं, तब िोनेर्वािे परर् उलिास के अनुभर्व र्ें ि ै; और इनके अभार्व र्ें र्नुष्य र्ृतक-सदृि ि ै। "अरह गागी, जो इस 'अवर्वनश्र्वर' को बबना जानेइस संसार से प्रयाि कर जाता ि ै, र्वि दररद्र ि ै, दया का पाि ि ै; दूसरह ओर, जो कोई इस 'अवर्वनश्र्वर' का ज्ञान प्राप्त करके इस संसार से

 प्रयाण करता ि◌ै, वि ि◌ाह्रूण ि◌ै।"[27] और कफर, "यहद ि◌र् उसका ज्ञान यिहं ◌ंप्राप्त कर ि◌ें, तब तो जीर्वन सफि ि◌ै,
पर यहद ि◌र् उसे यिां ◌ंन जान पाएं, तो यि रि्ान वर्वपवत्त ि◌ै।"[28] यहद र्ानर्व-जीर्वन ि◌ाश्र्वत के साथ सम्पकम स्थावपत करने की अदम्य ि◌ि◌ासा से प्रेररत न ि◌ो, तो उस जीर्वन का कुछ अथ मिह निहं ◌ंि◌ै। प्ि◌ोहटनस किता ि◌ै, "इसके शिए वि सर्वोच्च 'सौन्दय,म वि परर् और रि्ू सौन्दय,म अपने प्रेशयों को सौन्दय मके अनुकि्ू गढता ि◌ै और उन्िें प्रेर्र् के योग्य भी बनाता ि◌ै। और इसके शिए आत्र्ाओं के सार्ने कठोरततर् और चरर् संघष मप्रस्तुत ककया जाता ि◌ै, ि◌र्ारा सारा श्रर् इसीके शिए ि◌ै कक किहं ◌ंि◌र् इस सर्वश्रेमष्ठ झिक का कुछ भी अंि◌ पाए बबना न रि जाएं,
ल्जसे प्राप्त करना आनन्दर्य दृल्ष्ट र्ें धन्य ि◌ोना ि◌ै; और ल्जसे प्राप्त करने ◌े र्ें असफि रिना चरर् असफिता ि◌ै। क्योंकक जो व्यल्क्त रंगों और दहख पड़नेर्वािे रूपों से शररि्नेर्वािे आनन्द को पाने र्ें असफि रिता ि◌ै, ि◌ल्क्त और सम्र्ान पाने र्ें असफि रिता ि◌ै, वि असफि निहिं; अवपतुकेर्वि वि असफि ि◌ै, जो 'इस' आनन्द को पाने र्ें असफि रिता ि◌ै, ल्जसे पाने के शिए उसे राज्यों को भी त्याग देना चाहिए।"

जब तक उस 'सर्वोच्च' (परर्ेश्र्वर) की झिक न शरि्े, तब तक जीर्वन अपूण मरिता ि◌ै। आत्र्ा की भी ठीक र्वैसी ि◌ह आंखें ि◌ैं, जैसी ि◌रहर की ि◌ैं; उन आंखों से वि परर् सत्य का ज्ञान प्राप्त करती ि◌ै और परर् पूणतमा से, जो परर्ात्र्ा ि◌ै, प्रेर्र् करना सीखती ि◌ै। "जैसे आंख आकाि को देखती ि◌ै, र्वैसे ि◌ह साधक ि◌ोग परर्ात्र्ा के उच्चतर् तनर्वासस्थान को सदा देखतेि◌ैं।"[29] इस प्रकार के अनुभर्व र्ानर्व- परररवार30 की सभी ि◌ाखाओं र्ें ि◌ोतेरिे ि◌ैं, यद्यवप वर्वशभन्न काि◌ों र्ें और वर्वशभन्त जाततयों र्ें उनकी व्याख्याएं अिग-अिग ढंग से ि◌ोती रिह ि◌ैं। रूसा आर्वि र्ें कि उठता ि◌ै, "ि◌ाश्र्वत परर्ात्र्ा ि◌ह र्ेरा आश्रय ि◌ै और नीचेअनन्त बािि◌ैं।"[31] सार् (ईसाई भजन, स्तोत्र) ि◌ेखक भी इसी प्रकार के, ि◌ाश्र्वत तनर्वास र्ें ि◌े जाए जानेके, और उस 'एक' के साथ, जो पर्वतमों के जन्र् से भी पििे, संसार की रचना से भी पििे वर्वद्यर्ान था, सिाचय मके अनुभर्व की चचाम करता ि◌ै।32 आत्र्ा का संसार प्िेटो के दिनम का एक आर्वश्यक अंग ि◌ै। उसकी दृल्ष्ट र्ें यि आत्र्जगत् ◌्ि◌ह सत्य, शिर्व और सौंदय मका आधार और आश्रय ि◌ै। र्ानर्वीय र्न केर्वि भौततक तत्त्व के संसार तक ि◌ह सीशर्त निहं ◌ंि◌ै और इसे र्वास्तवर्वकता के िोकोत्तर और अतील्न्द्रय क्षेत्र के साथ घतनष्ठ सम्पकम तक ऊंचा उठाया जा सकता ि◌ै। सटें पाि शिखता ि◌ै, "भिे हि ि◌र्ारा बाह्य र्नुष्य नष्ट ि◌ो जाए, कफर भी ि◌र्ारा अन्तररक र्नुष्य हदनोंहदन नया और नया ि◌ोता जाता ि◌ै....।

---

27 यो र्वा एतदक्षरं गाधग मअवर्वहदत्र्वाऽस्र्ाल्िोकात् ◌्प्रेतत स कृपणः; अथ एतदक्षरे गाधग मवर्वहदत्र्वाऽस्र्ाल्िोकात् ◌्प्रेतत स िाह्रूणः ।

28 रि्ती वर्वनल्ष्टः ।

29 सदा पश्यल्न्त सूरयः तद्वर्वष्णोः परर्ंपदं हदर्वीर्व चक्षुराततर् ◌्। ऋग्र्वेद

30 ऋवष आयल्म्भच्छानां सर्ानं ◌ंि◌क्षणर् ◌्।

31 'दयूटरोनौर्ी, 33.27

32 'सार्' 60.2; साथ ि◌ह तुिना कील्जए, "जैसे हिरन पानी के नािों की ओर ि◌ांफता ि◌ुआ दौड़ता ि◌ै, र्वैसै ि◌ह, ि◌े परर्ात्र्ा, र्ेरह आत्र्ा तेरे शिए तरस रिह ि◌ै। र्ेरह आत्र्ा परर्ात्र्ा के शिए प्यासी ि◌ै, जीते-जागते ◌ेपरर्ात्र्ा के शिए। र् ◌ैंपरर्ात्र्ा के सम्र्ुख कब पिुंचूंगा !" - सार् 42. 1-2 और कफर, "ि◌े परर्ात्र्ा, तू र्ेरा परर्ात्र्ा ि◌ै। र् ◌ैंतुझेजलदह ि◌ह ढूंढ ि◌ंूगा। एक ि◌ुष्क और तृषाकुि प्रदेि र्ें, जिां ◌ंपानी का नार् निहं ◌ंि◌ै, र्ेरह आत्र्ा तेरे शिए प्यासी ि◌ै और र्ेरा ि◌रहर तेरे शिए िाितयत ि◌ै।" - सार् 43.1

रि् उन चीज़ों की ओर निहं देखते, जो हदखाई पड़ती िैं, बल्लक उन चीज़ों की ओर देखतिैं, जो हदखाई निहं ंपड़तीं; क्योंकक जो चीजें हदखाई पड़ती िैं, वें क्षणभंगुर िैं; और जो चीजें हदखाई निहंपड़तीं वें िाश्र्वत िैं।"[33] प्लीहिटनस (ईस्वी सन् ्207-270) किता िै, "कई बार ऐसा िुआ कक र् ैंअपने िरहर से बिार, ऊपर उठाकर अपनी आत्र्ा रें पिुंचा हदया गया; इस प्रकार र् ैंअन्य सब वर्स्तुओंसे पृथक् िोकर आत्र्केल्न्द्रत िो गया; रु्झे ेअद्भुत सौन्दय मके दिनम िुए; रु्झेंपिै भी ककसी भी सर्य की अपेक्षा एक उच्चतर् व्यर्वस्था के साथ सल्म्र्नि का वर्वश्र्वास िुआ; रु्झे ेहदव्य सत्ता के साथ तादात्म्य प्राप्त िो गया।"[34] "एक बार विाँ पिुंचकर आत्र्ा इस अनुभर्व का वर्वतनर्य वर्वश्र्व की ककसी भी वर्स्तु से करने ेको तैयार निहं ंिोगी; यिां ंतक कक यहद उसे सम्पूण मनक्षत्रों सरे्त आकिा-ण्डि दे हदया जाए, तो उसके बदिे भी वि इस अनुभर्व को छोड़ने को तैयार निहं ंिोगी; इस अनुभर्व से बढकर उच्चतर और उत्कृष्टतर वर्स्तु और कुछ निहीं। इससे और ऊपर जाना िो िि निहं सकता।"[35] आगस्टाइन ने अपनी दोष-स्वीकृततयां ंइन स्र्रणीय िददों से प्रारम्भ कीं, "िे प्रभु, तूने िरें अपने शिए बनाया िै, और जब तक रि् तुझरें पिुंचकर िाल्न्त प्राप्त निहं कर िेते, तब तक िर्ारे हृदय अिान्त रिितें।" उसके िेखों रें ऐसे अनेक संदभ मिैं, ल्जनसे यि सूधचत िोता िै कक अपनेजीर्वन के रि्न क्षणों रें वि 'उस' तक पिुंच गया था, जो "एक कौंध रें, एक छिांग रें उस िाश्र्वत बुद्धधत्त्ता को स्पि मकर िेता िै, जो अनन्तकिा स्थायी िै" और जो स्वयंर्वि बुद्धधर्ता िै। र्िुम्र्द ने ज़ोर देकर किा था कक परर्ात्र्ा सचर्ुच िै, इस बात को शसद्ध करने के शिए अन्य ककसी प्रर्ाण की आर्वश्यकता निहं िै। उसके अपने इस अनुभर्व की कक "परर्ात्र्ा रे्रह अपनी गदमन की नस से भी रे्रे ज़्यादा नज़दहक िै।"[36] गर्विाह िि इसके शिए काफी िै। सटें टार्स ऐक्र्वाइनास को एक उल्लेखनीय अनुभर्व िुआ था। जब वि नेपलस रें र्ास (खीष्ट याग, यज्ञ) कर रिा था, तब उसनेअपनी किर् और दर्वात एक ओर रख दह, और उसके बाद अपनेअपूण मग्रंथ 'सम्र्ा धथयोिौल्जका' का एक िदद भी आगे निहं ंशिखा। उसने अपनेइस

ग्रन्थ को पूरा करने का आग्रि ककया, तो उसनेउत्तर हदया, "र्ैं

जो कुछ शिखा िै और उपदिे हदया िै, वि रु्झे ेतुच्छ िगनेगा िै।" जब एक शिष्य ने बगदाद के सूफी रिस्यर्वादह साधक जनैद से किा, "र्ैं ेसुना िै कक आपके पास हदव्यज्ञान का र्ोती िै; आप उसे रु्झे ेदे दहल्जए, या बेच दहल्जए।" जनैद ने उत्तर हदया, "र् ैंवि र्ोती तुम्िें बेच निहं ंसकता, क्योंकक तुम्िारे पास चुकाने ेके शिए उसकी कीर्त निहीं; और यहद र् ैंतुम्िें वि यों िह दे दूं, तो तुर् उसे बिुत सस्ते रें पा रिे िोगे और तुम्िें उसके रू्लय का पता िह निहंचिेगा। रे्रह तरि तुर् इस (परर्ात्र्ा के) सर्ुद्र रें शसर के बि कूद पड़ो, ल्जससे कक तुर् स्वयं िह उस र्ोती को पा सको।"[37]

> जब िर् उस वास्तवर्वक का स्पि मकरते िैं, तो िर्,
> परर्ात्र्ा रें िहन िो जाते िैं जैसे प्रकिा प्रकिा रें; िर् उड़ते िैं

33 'कोररल्न्थयन्स', 4.16-18

34 'ऐन्नीडस, 4. 8. ।

35 विह, 6. 7. 34

36 'कुरान' 50.15

37 तनकलसन, 'र्ील्स्टक्स आफ इस्िार्' (1914), पृष्ठ 34

स्वेच्छा से एक िोकर।

धाशर्कम अनुभूततयां ंउतनी िह पुरातन िैं, ल्जतना र्ुस्कराना और रोना, प्यार करना और क्षर्ा करना।

परर्ात्र्ा की अनुभूतत कई ढंगों से िोती िै, प्रकृतत के साथ घतनष्ठ सम्पकम द्र्वारा, अच्छाई की पूजा द्र्वारा और...

सूयास्मत के स्पि,म
फ़ूिों की घंटह की कलपना, ककसीकी र्ृत्यु
यूरहवपडीज़ के ककसी नाटक की सल्म्र्शत-गानर्य सर्ाल्प्त
द्र्वारा। यि अनुभूतत जीर्वन के िनैः िनैः उच्चतर िोतेजानेसे िेकर परर्ात्र्ा र्ें भार्व-सर्ाधध की तीव्रतर् कोहट
तक अवर्वरार् व्याप्त रिती िै।

वर्वचारों की कोई भी गम्भीर साधना, वर्वश्र्वासों की कोई भी खोज, सद्गुणों के अभ्यास का कोई भी प्रयत्न, ये सब उन्हिं स्रोतों से उत्पन्न िोते िैं, ल्जनका नार् धर् िै। र्न द्र्वारा सौन्दय,म शिर्वत्र्व और सत्य की खोज परर्ात्र्ा की िह खोज िै। र्ाता के स्तनों का दूधू पीता िुआ शििु, ु असंख्य तारों की ओर तनिारता िुआ अशिक्षक्षत जंगिह, अपनी प्रयोगिािा र्ें सूक्ष्र्वीक्षण के नीचे जीर्वन का अध्ययन करता िुआ वर्वज्ञानर्वेत्ता, एकान्त र्ें संसार के सौन्दय मऔर करुणा का धचन्तन करता िुआ कवर्व, तारा- िोककत आकाि के, उच्च हिर्ािय के या प्रिान्त सर्ुद्र के सम्र्ुख, या इन सबसे बढकर चत्र्कार एक ऐसे र्नुष्य के सम्र्ुख, जो र्िान भी िै और अच्छा भी, श्रद्धापूर्वकम खड़ा िुआ एक साधारण र्नुष्य, इन सबर्ें एक अस्पष्ट-सी िाश्र्वत की भार्वना और स्वग मके शिए संर्वेदना वर्वद्यर्ान िै।

सच्चेअथों र्ें धाशर्कम व्यल्क्त का धर् मबबिकुि सीधा-सादा िोता िै, ल्जसर्ें धर्-मवर्वश्र्वासों, धर्-म शसद्धान्तों के र्नोभार्वों या आधधदैवर्वक तत्त्र्वों की बेडड़यां निहं ंिोतीं। यि उस आत्र्ा की र्वास्तवर्वकता का प्रततपादन करता िै, जो काि और देि के ऊपर व्याप्त िै। अपनी व्यावर्िाररक अशभव्यल्क्त के शिए इसकी यि सूल्क्त िोती िै, "जो भी कोई भिा करता िै, र्वि भगर्वान का िै।" न्यायपूर्वकम आचरण करना, सौन्दय मसे प्रेर् करना और सत्य की भार्वना के साथ वर्वनम्रतापूर्वकम चिना यिह सबसे ऊंचा धर् िै।'[38] यि अनुभर्व ककसी एक जातत या

---

38 आइन्स्टाइन से तुिना कील्जए, "व्यल्क्त र्ानर्वीय आकांक्षाओंऔर उद्देश्यों की नगण्यता को और उस अततभव्यता तथा आश्चयजमनक सुव्यर्वस्था को अनुभर्व करता िै, जो प्रकृतत और वर्वचार जगत्, ् दोनों र्ें प्रकट िोती िै। र्वि र्ानर्वीय अल्स्तत्र्व को एक कारागार के रूप र्ें देखता िै और सम्पूण मवर्वश्र्व को एक र्ित्र्वपूण मसर्य रूप र्ें अनुभर्व करना चािता िै। सब काि ों के धाशर्कम प्रततभािाह िोगों र्ें इस प्रकार की धाशर्कम अनुभूतत बिुत स्पष्ट हदखाई पड़ती िै; यि धाशर्कम अनुभूतत न ती धर्-मशसद्धान्तों से बंधकर चिती िै और न र्नुष्य के रूप र्ें कल्लपत परर्ात्र्ा से; इसशिए ऐसा कोई धर्-मसर्ाज (चच)म निहं िो सकता, ल्जसकी केन्द्रहभूत शिक्षाएंइस अनुभूतत पर आधाररत िों। यिह कारण िै कक प्रत्येक युग के शभन्न-वर्वश्र्वाशसयों (प्रचशित धर् मको न र्ाननेर्वािों) र्ें िर्ें ऐसे अनेक िोग दहख पड़ते िैं, ल्जनर्ें उच्चतर् कोहट की धाशर्कम भार्वनाएं थीं ंऔर अनेक बार तो र्वे अपने सर्काहिन िोगों द्र्वारा नाल्स्तक र्ाने गए थे और कभी-कभी ऐसे िोग सन्त भी र्ाने जातेथे। इस दृल्ष्ट से देखने पर डेर्ोक्रक्रट्स, ऐशससी का फ्रांशसस और ल्स्पनोज़ा एक-दूसरे के बिुत तनकट िैं।" - ऐच० गोडनम गाबोडडयन शिखखत, अलबटम आइन्स्टाइन' (1939), पृष्ठ 307

एक जिर्वायु (प्रदि) तक िह सीशर्त निहं िै। जब भी कभी आत्रा, ककसी भी दि र्ें या ककसी भी जातत की सीर्ाओंर्ें, अपनेर्वास्तवर्वक रूप र्ें आती िै, जब भी कभी यि अपनी आन्तररक गिराइयों र्ें केल्न्द्रत िो उठती िै, जिब कभी इसकी अनुभूततिीता पर अपनेआसपास के गम्भीर जीर्वन की धाराओंका प्रततभार्वन (ररस्पोंस) िोता िै, तब यि अपनी सच्ची प्रकृतत को प्राप्त िोती िै और आनन्द सहित रोर्ांचकारह उलिास के साथ पर-आत्रा के जीर्वन र्ें रिने िगती िै। ल्जनकी चेतना सर्वोच्च आत्रा र्ें, बुद्धध और आनन्द के अपार सर्ुद्र र्ें, हिन िो गई, उसे जन्र् देकर र्ाता सफि- र्नोरथ िो जाती िै, पररर्वार पवर्वत्न िो जाता िै और उससे सारह पृथ्र्वी पुण्यर्वती िो उठती िै।'[39]

जो संसार अधधकाधधक गम्भीर िोकान्त वर्वपवत्त र्ें भटक रिा िै, उसकी र्ुल्क्त ककसी अन्य उपाय द्र्वारा निहं ंिो सकती। र्ानर्व जातत के वर्वस्तृत जगत् ्की सब प्रर्ुख आध्याल्त्र्क साधिग्रयों का र्ूि आधार र्ानर्व जातत की र्वास्तवर्वक, आल्त्र्क एकता की स्र्वीकृतत (र्ानना) िै; एक ऐसी एकता, ल्जसका, व्यल्क्त अपनी प्रकृतत की गिराई र्ें, अन्य ककसी भी अनुभूततर्ूिक सर्ाज की अपेक्षा अधधक अंग िै। उन व्यावर्विाररक रोकों का, जो िर्ें एक-दूसरे से पृथक् करती िैं, अल्स्तत्र्व उससे गिरे स्तर पर पिुंचकर सर्ाप्त िो जाता िै। यहद िर् आध्याल्त्र्क र्वास्तवर्वकता र्ें केल्न्द्रत िो जाएं, तो िर् िोक और भय से, जो िर्ारे अराजक और प्रततयोधगतात्र्क सर्ाज के आधार िैं, र्ुल्क्त पा जाते िैं। इसे एक ऐसे र्ानर्वीय सर्ाज के रूप र्ें पररर्वततततम करने के शिए, ल्जसर्ें िर व्यल्क्त की भौततक और र्ानशसक उन्नतत की व्यर्वस्था िो, िर्ें अपनी चेतना का वर्वस्तार करना िोगा, अपनी चेतना को बढाना िोगा, जीर्वन के उद्देश्य को पिचानना िोगा, और उसे अपनेकार्ों र्ें अपनाना िोगा। चेतना का यि वर्वस्तार, चेतनता की यि र्वृद्धध सरि निहं िै। यि जान िेना, कक र्वास्तवर्वकता िर्ें हदखाई निहं पड़ रिह िै और यि कक िर् अन्धे िैं, और अपनेअन्धेपन र्ें जो कुछ िर्ें प्रतीत िोता िै, उसीको िर् र्वास्तवर्वकता सर्झ िेते िैं, आसान िै। परन्तु उस अन्धेपन का इिाज करने ्के शिए और सच्ची दृल्ष्ट पाने के शिए आत्रर्ुद्धध की आर्वश्यकता िै। िर्ें चेतना को िोभ और भय के शिकार से, अिंकार के र्ोि से र्ुक्त करना िोगा; और जब िर्ें पवर्वत्नता और एकाग्रता आ जाती िै, तब िर् पररर्वततततम िो जाते िैं। िर् र्विह िो जाते िैं, जो कुछ िर् देखते िैं और िर्ारह प्रकृतत नई िो जाती िै, िर् संसार के स्र्वरूप और प्रयोजन को सर्झने िगते िैं, और इस संसार र्ें उस रहतत से जीर्वन-यापन करनेर्ें सर्थ िोते िैं, ल्जस रहतत से परर्ात्रा चािता िै कक िर् जीर्वन

बबालार्धर्प्ररथनत्सूलाकोसृलूष्ट का उद्देश्य र्ानर्व-जीर्वन का वर्वकास करना िै, र्नुष्य का पुनतनर्मार्णम बदि बबना िर् र्ानर्व-जीर्वन और र्ानर्व-सर्ाज को बदि पाने की आिा निहंकर सकते। ररक्त धारणाओं और साशभिाष कलपनाओं के सम्बन्ध र्ें औरंगज़ेब की चुटहिह हटप्पणी के बार्वजूद कवर्व के आिोक और दितमनक के आदि मकी आर्वश्यकता िै; कवर्व और दितमनक आत्रा को गतत देनेर्वािे िल्क्तयों के प्रतत सचेत रिकर िर्ारे शिए इस संसार के अन्दर िह एक पररष्कृततर संसार की झिक को सुरक्षक्षत बनाए रखते िैं।

---

[39] कुिं पवर्वत्तं जननी कृताथा मर्वसुन्धरा पुण्यर्वती च तेन,
अपार संवर्वत्सुखसागरेऽल्स्न् ्ल्हनंपरे िह्र्खण यस्य चेतः।

आज िर्ें आर्वश्यकता इस बात की िै कक र्नुष्य के रिन-सिन के ढंग र्ें आर्ूि पररर्वतनम ककया जाए। र्् भवर्वष्य को केर्वि उतनी िि सीर्ा तक तनरापद (सुरक्षक्षत) बनाने र्ें सिायता दे पातीं, ल्जस सीर्ा तक िर् अपने-आपको बदि पातीं। यि आत्रपररर्वतनम स्र्वतः निहं िंो जाता। यि उस साशभप्राय आदि मके प्रतत प्रततभार्वन (ररस्पौंस) िै, जो िर्ें इततिास र्ें हदखाई पड़ता िै। यि आत्र् का र्वास्तवर्वकता के र्वरार्वती िोना िै। यिह धर् मका आचरण िै। भारत के रिस्यर्वादह धर् मकी िह नये र्वर्वश्र्व का धर् मबनने ेकी संभार्वना िै, जो सब र्नुष्यों को राष्रहय सीर्ाओं के पार भी एक सांझे ेकेन्द्र की ओर खींच सकेगा; भारत के इस रिस्यर्वादह धर् मका कथन िै कक आध्याल्त्रक र्वस्तुएं र्वैयल्क्तक िैं और िर्ें उन्िें अपने जीर्वन र्ें प्रततबबल्म्बत करना चाहिए; इसके शिए यि आर्वश्यक िै कक िर् र्वास्तवर्वक को प्राप्त करने ेके शिए सांसाररक र्वर्वषयों से र्वर्वर्ुख िो जाएं और नई ऊजाम तथा संकलप के साथ इततिास के जगत् ्की ओर िौट पड़ें।

2: धर् मकी प्ेरणा और नई वर्वश्व-व्यर्वस्था

धर् मके प्रतत वर्वरोधधर्मद्र्वारारै्त्रीव्यल्क्तकीप्रकृततस्र्वभार्वधचन्तनबनार्कर्मनई व्यर्वस्था-प्रजातन्त्र की गत्र्वरता *(गततिीिता)*

धर् मके प्रतत वर्वरोध

यहद संसार अपनी आत्ा की खोज र्ें िै, तो धर्,म ल्जस रूप र्ें कक र्वे िर् तक पिुंचे िैं, िर्ें उस आत्ा की प्राल्प्त निहंकरा सकते। र्वे र्ानर्वता को शर्ाकर एक करने के बजाय उसे वर्वरोधी दिों र्ें वर्वभाल्जत करते िैं। र्वे जीर्वन के सार्ाल्जक पक्ष पर बि न देकर र्वैयल्क्तक पक्ष पर बि देते िैं। र्वैयल्क्तक वर्वकास के रू्लयों का अततरंजन करके र्वे सार्ाल्जक भार्वना और कलपना को तनरुत्साहित करते िैं। र्वे कर् मकी अपेक्षा धचन्तन पर और व्यर्विार की अपेक्षा शसद्धान्त पर किहं अधधक बि देते िैं। अपनी परर्ात्ा के राज्य की धारणाओं द्र्वारा र्वे िोगों को इस पृथ्र्वी पर अपेक्षाकृत अच्छा जीर्वन बबताने के प्रयत्नों से वर्वरु्ख कर देते िैं। ऐसा िगता िै कक उनकी आल्त्क िल्क्त सर्ाप्त िो चुकी िै और अब र्वे तनजीर्व खोि-भर िेष रि गए िैं, जो एक ऐसे िददाथ मपर तनभरम िैं, ल्जसे र्वे पुनरुज्जीवर्वत निहंकर सकते। र्वे ेअपनी तनष्प्राणता को उन वर्वधधयों और आचारों के पिान का आग्रि करके तछपाना चािते िैं, ल्जन्िेंआदतों और प्रथाओंने बिुत अनुधचत र्ित्र्व दे रखा िै। र्वे बशिदान की उन प्ेरणाओं के प्रतत, जो जागररत िो चुकी िैं, और सेर्वा के उस आर्वेि के प्रतत, जो अर्वसर पाने के शिए तरस रिा िै, तनरपेक्ष जान पड़ते िैं। कि शर्ाकर, र्वे ेर्वतर्मान अस्त-व्यस्त दिाओं को बदिनेके शिए िर्ें उत्सािा जगानेके बजाय र्वतर्मान दिाओं को िह उधचत ठिराते िैं। र्ाक्स मका वर्वश्र्वास िै कक धर् मएक र्वगिमहन सर्ाज की उन्नतत के र्ाग मर्ें रोड़ा िै, और 'र्वीर नर्वीन जगत्'् की बन्धनरु्क्त र्ेधाएं धर् मकी सनक से छुटकारा पा िेंगी, क्योंकक उन्िें यि अनुभर्व िो जाएगा कक धर् मका दृल्ष्टकोण जीर्वन के अथ,म प्रयोजन और उद्देश्य के र्वैज्ञातनक सत्य का शर्थ्याकरण िै। यि किा गया कक "ल्जस सर्ाज का िक्ष्य पूंजीर्वाद िै, उससे उस सर्ाज की ओर, ल्जसर्ें र्वग-म भेदों और र्वग-मसंघषों का कोई धचह्न भी न िोगा, संक्रर्ण के पररणार्स्र्वरूप सब धर् मऔर अन्धवर्वश्र्वास अपनी र्ौत आप र् जाएंगे।"[40] अन्धवर्वश्र्वास के रूप र्ें धर् मके इस दृल्ष्टकोण का बिुत वर्वस्तृत रूप से प्रचार ककया गया था। "1937 के ई र्ास तक सोवर्वयत संघ र्ें कोई चच मबाकी न बचेगा। इसशिए परर्ात्ा को 'पंचायती सर्ाजर्वादह गणतनों के संघ' (रुस) की सीर्ा से र्ध्ययुगीन अर्विेष के रूप र्ें तनर्वाशसत कर हदया जाएगा ।"[41] 23 अगस्त, 1939 को रूस और जर्मनी के बीच शर्त्ता और अनाक्रर्ण का करार िोने के बाद रूस र्ें परर्ात्ा-वर्वरोधी आन्दोिन के र्न्त्री ने घोषणा की थी कक "क्सी- जर्नम करार से नाल्स्तकर्वादह प्रचार र्ें सुवर्वधा िो जाएगी, क्योंकक हिटिर और उसकी सरकार ईसाइयत की र्वैसे िह ित्रु िैं, जैसी कक सोवर्वयत सरकार।" अब, क्योंकक जर्नमी

---

40 र्० बुखाररन, 'हद एब्रीसीआफकम्युतनज्र्'(साम्यर्वादकाकखग , ,)
41 15 ई, 1932 का आदिपत्र।

और रूस एक-दूसूरे से िड़ रि िैं और ग्रेट बिटेन, जो जर्नमी की धरि्महनता के वर्वरुद्ध ल्जिाद का नेतृतूर्व कर रिा ै, रूस का शर्त्र बन गया िै, पररात्रा की दिा कुछ नाजुक सी िो गई िै। राजनीततक पररर्वतनमों के कारण िर् यि रानने िगे िैं कक जर्नमी अनीश्र्वरर्वादह िै और रूस ईश्र्वर-भक्त।42

धर् मद्र्वारा रैत्री

ल्जस प्रकार संसार वर्वशभन्न जाततयों और राष्रों रें बंटा िुआ िै, उसी प्रकार वर्वशभन्न धरों रें भी। पूर्व म और पल्श्चर, अरब और यिूदह, हिन्दू ूऔर ईसाई, परस्पर कोई भी सझौता कर पाने रें असर्थ मिैं। यि सझा गया था कक एक पररात्रा रें वर्वश्र्वास के फिस्र्वरूप िाल्न्त और एकता िो सकेगी, परन्तु उसकी इस प्रकार की व्याख्या के कारण, कक सब िोगों को एक िह ढंग से वर्वश्र्वास और बतार्वम करना चाहिए, उससे किहं ंअधधक उत्पात ुआ िै, ल्जतना कक राजाओंकी रित्र्वाकांक्षाओं या जाततयों की ित्रुतुा के कारण िुआ िै। धर् मका उद्देश्य भिे िह सार्वभमौर्ता िो, ककन्तु धर् मस्थानीय और वर्वशिष्ट िोतिैं और र्वे रैत्री के वर्वकशसत िोनेरें बाधा डाितिैं। यिां तक कक ईसाई चचों को भी शरिाकर एक िह धाशर्कम सराज के रूप रें संगहठत करने ेके प्रयत्न भी असफि रिे और वर्वशभन्न सम्प्रदाय अब भी अपनी वर्वशिष्ट औपचाररकताओं और कर्कमांडों का आग्रि बनाए िुए िैं।'43

---

42 जब ग्रेट बिटेन यूरोप की केन्द्रहय िल्क्तयों- जर्नमी और इटिह से शर्त्रता-सम्बन्ध बनाए रखनेके शिए उत्सुक था, तब इटाशियन फाशसस्टर्वाद का र्वणनम करतिुए िाड मियड ने कि था कक र्वि "एक अत्यधधक अधधकारर्वादह राज्यिै िै, परन्तु उससे न तो धाशर्कम या आधथकम स्र्वतन्त्रता को और न दूसूरे यूरोपीय राष्रों की सुरुक्षा को िह ककसी प्रकार का भय िै।" हिटिर को एक ईश्र्वरभीरु कैथोशिक ईसाई के रूप रें प्रस्तुत ककया गया था, जो कम्युतनज्र् की धरि्महनता का, ल्जसने "धगरजाघरों को तोड़ हदया िै, पादररयों की ित्याएं की िैं और ल्स्त्रयों का राष्रहयकरण कर हदया िै" रुकाबिा करने खड़ा िुआ था। 1935 रें कैंटरबरह के आकमबबिप नेकि था, "पन्द्रि र्वष मसे भी अधधक बीत चुके िैं कक जब रूस रें नाल्स्तक अत्याचारह िासन स्थावपत िुआ था। कफर भी अभी िज़ारों बबिप और पादरह जिेंं रें सड़ रिे िैं या साइबेररया की बफीिह खानों रें वर्वर्वि िोकर बेगार कर रिे िैं।" जब 22 जून, 1941 को हिटिर ने रूस पर आक्रर्ण ककया तो "एकाएक िुष्त िुए चच मकफर भर उठे, पादरह िगि, जादू ूके जोर से, कफर रेंवेहदयों पर आ पिुंचे; और तो और, क्या िर् अपनी आंखों पर भरोसा कर सकते ेथे, कक रास्की कैथेड्रि (धगरजाघर) कफर अपने पुराने स्थान पर र्वापस आ खड़ा िुआ था और पेहरयाकम (प्राधधधराध्मयक्ष) गजीस ने 12000 िगिों से प्राथनमा करर्वाई थी।" डगिस रहड, 'ओि आर्वर दुराौज' (1942), पृष्ठू 84

43 रूसो शिखता िै, "सराज की दृल्ष्ट से वर्वचार करने पर धर् मको, चािे र्वि सारान्य िो या वर्वशिष्ट, दो भेदों रें बांटा जा सकता िै: एक तो र्नुष्य का धर् मऔर दूसूरा नागररक का धरा्म इनरें पििा, ल्जसके न कोई ल्न्दर िोते िैं, न रेंवेहदयों, न धाशर्कम वर्वधधयों, और जो वर्विुद्ध रूप से सर्वोच्च पररात्रा की पूजा-पद्र्वतत तक, और नैततकता के िाश्र्वत प्रततबन्धों तक हि सीशर्त रिता िै, ईसा द्र्वारा उपहदष्ट धर् मिै, वर्विुद्ध औ सादा, सच्चा आल्स्तकर्वाद ल्जसे प्राकृततक वर्वव्य अधधकार या कानून कि जा सकता िै। दूसूरा र्वि िै, जो ककसी ए दिे रें सेहितार्वद्ध िोता िै, जो उस दिे को अपने देर्वता, अपने संरक्षक आश्रयदाता प्रदान करता िै; इसके अ धर्-मशसद्धान्त िोते िैं, अपनी वर्वधधयां िोती िैं, और कानून द्र्वारा तनयत इसकी अपनी बाह्य पूजापद्धतत िोती िै। र्व एक राष्र इसका अनुयायी िोता िै, उसके अततररक्त िेष सारा संसार इसकी दृल्ष्ट रें नाल्स्तक, वर्वदिेी और बबरम िोत िै; र्नुष्य के कतव्मय और अधधकार केर्वि इसकी अपनी रेंवेहदयों तक िह पिुंच पाते िैं।"- 'सोिि कंरैक्ट', खण्ड 4 ।

परन्तु हिन्दुतुर्व सझौते और सियोग के शिए प्रयत्न का प्रततततनधधत्र्व करता िै। यि एक िह सर्वोच्च वास्तवर्वकता तक पिुंचने ेऔर उसे प्राप्त करने ेके प्रयनों की वर्ववर्वधता को स्वीकार करता िै। इसकी दृल्ष्ट र्ें धर् म का सार उसे ग्रिण कर पानेर्ें तनहित िै, जो िाश्र्वत िै और सब वस्तुओंर्ें व्याप्त िै। इसकी प्रार्ाखणकता ऐतततािशसक घटनाओं पर तनभरम निहं ंिै। िर्ारे अन्दर हदव्यता का जो रू्सत्य वर्वद्यर्ान िै, उसीको वर्वशभन्न धर्-मशसद्धान्त वर्वशभन्न कालपतनक रूप देकर प्रस्तुत करते िैं। सत्य के वर्वषय र्ें िर्ारा अथ-मग्रिण अतीत द्र्वारा तनधारमरत रहततयों से िह सूबद्ध िोता िै। क्योंकक केर्वि र्वे िह प्रतीक जो िताल्ददयों तक प्रयोग र्ें आते रिनेके कारण तघस-तघसकर धचकने िो गए िैं िर्ें 'हदव्य'[44] (िह्र) का ज्ञान प्राप्त करने ेके शिए सचेष्ट कर सकतिैं। प्रतीक हृदय, वर्वचार और र्न द्र्वारा गढह िुई धारणाए िैं।' िर्ारा कार् उनके बबना निहं चि सकता, क्योंकक र्वे िह र्वे साधन िैं, ल्जनके द्र्वारा िर् सर्य के रूपों के अधीन रिितेुए भी िाश्र्वत का वर्वचार कर सकते िैं। इस पररर्वतनर्िमी संसार के रूपों के अधीन रिकर पररा्त्र के पररर्वतनमर्ि्न्य रिस्यों का वर्वचार कर सकतिैं। कवर्वता, पुराण-कथाओंऔर प्रतीकर्वाद का प्रयोजन आल्त्क जागरण और वर्वकास के शिए राजर्ाग मके रूप र्ें सेर्वा करना िै। सब धर्-मवर्वश्र्वास ससीर् र्न द्र्वारा असीर् को ग्रिण करने ेके प्रयत्न िैं। जिां तक र्वे अल्न्तर् क्ष्य तक पिुंचने ेर्ें िर्ारह सियता करते िैं, र्विां तक र्वे रू्लयर्वान िैं। र्वे वर्वशभन्न इसशिए िैं क्योंकक र्वे िोगों की वर्वशभन्न आर्वश्यकताओं के, उनकी जातत और इततिास के, उनके शिंग और स्र्वभार्व के अनुकूि बि िैं। परन्तु र्वे सब परहक्षणात्क'[45] िैं, और इसशिए असहिष्णुता को ककसी प्रकार उधचत निहं ंठिराया जा सकता। धर् मका उन तनयत बौद्धधक धारणाओं के साथ घपिा निहं ंककया जाना चाहिए, जो सबकी सब र्न द्र्वारा तनशर्तम िैं। जो भी कोई धर् मअल्न्तर् और परर् िोने ेका दार्वा करता िै, र्वि अपनेर्तों को िेषे संसार पर थोपना चािता िै और दूसूरे िोगों को अपने प्रर्ापों (स्टैंडड)म के अनुसार सभ्य बनाना चािता िै। जब दो या तीन वर्वश्र्वास-प्रणाशियां (धर्)म सब िोगों को अपने ढांचे के अंदर िे आने की कोशिि करती िैं, तो उनर्ें टकरार्व अतनर्वाय मिो जाता िै, क्योंकक संसार र्ें केर्वि एक िह 'परर्' की - र्वि भी यहद िो िह- गुंजाइि िै। इन वर्वरोधी तनरंकुिताओं (धाशर्कम तानिााहियों) की िास्यास्पदता िर्ारह दृल्ष्ट र्ें इसशिए निहं ंआती, क्योंकक िर् इनके साथ बिुत अधधक पररधचत िैं। जब धाशर्कम जीर्वन का पिे ेके साथ और आवर्वभूतम सत्य की स्र्वीकृतत के साथ शर्श्रण कर हदया जाता िै, तब उस धर् मर्ें बिरह यंत्रजात (र्िीनरह) प्ररु्ख िो जाता िै। पुरोहित या धर्-मसम्प्रदाय भार्वना का स्थान िे िेता िै और सब िोगों से एक िह बात की र्ांग की जाती िै कक उस र्त के वर्वश्र्वास र्ें तनष्ठा रखें। यहद आप उस र्त को र्ानतिैं और उस सरु्दाय र्ें सल्म्रिशत िो जाते िैं, तो आपको सदा के शिए कुछ वर्विेषाधधकार और कुछ वर्वर्ुल्क्तयां ं(छूटें) प्राप्त

---

44 हृदा र्नीषा र्नसाशभिकुप्तः। तुिना कील्जए, ऋगर्वेद 1 - 6, 1 - 2 हृदा र्नसा र्नीषा; साथ िह, 10-177-2

45 एक सुवर्वहदत श्िोक र्ें किा गया िै, "िे भगर्वान, तुर् अरूप िो और र्नैं अपने ध्यान र्ें तुर्िें रूप हदया। िे अखखि जगत् ् के गुरु, तुर् अर्वणनमीय िो, पर अपनी स्तुततयों र्ें र्नैं इस सत्य का उलिंघन कर हदया। तीथयमात्रा करके र्नैं तुम्िारह सर्वव्मयावपता से इन्कार ककया। िे जगदहि, र्ेरे इन दोषों को क्षसा करना।"

रूपे रूपवर्ववर्वल्जतमस्य भर्वतो ध्यानेन यत्कल्लपतं ं

स्तुत्यातनर्वचमनीयताखखिगुरो दुरुहकृता यन्र्या

व्यावपतर्वच्च तनराकृतं ंभगर्वतो यत्तीथयमात्िहदना

क्षन्तव्यं ंजगदहि तद्वर्विकतादोषिये त्र्कृतर्।्

ाी जाती ैं। जीर्वन की तुिना र्ें यि यंत्रजात बिुत सीधा-सादा ै, इसकी कक्रया बिुत स्पष्ट ै; और इसके पररणार्ों की गणना बिुत िह सुतनल्श्चत रहतत से जनगणना की ररपोटों और आंकड़ों द्र्वारा की जा सकती ै; परन्तु इसका प्रभार्व ्ार्रे स्र्वभार्व की केर्वि बिारह सति की ओर िह संचाशित रिता ै। यहद िर् यि सर्झतें कक दूसूरों को क्षतत पिुंचाकर भी, बि प्रयोग द्र्वारा िर्ें अपनेधर् मका प्रचार करने का इसशिए अधधकार ै कक ्ारा धर् मअन्य धर्ों से ऊंचा ै, तो िर् नैततक आत्र्वर्वरोध के दोषी ैं, क्योंकक अत्याचार, अन्याय और क्रूरता तो आध्याल्त्क बुद्धधर्त्ता और उच्चता के ठीक तनषेध ैं। हिन्दुत्र्व का कोई एक ऐसा तनयत धर्-मवर्वश्र्वास निहं ं ै, ल्जस पर इसका जीर्वन या र्रण तनभरम ो, क्योंकक इसको यि तनश्चय ो चुका ै कक भार्वना धर्-मवर्वश्र्वासों से किहं ंबड़ी शसद्ध ोगी। हिन्दू ूकी दृल्ष्ट र्ें प्रत्येक धर् मसच्चा ै, पर केर्वि तभी जबकक उसके अनुयायी सचाई और ईर्ानदारह से उसका पािन करते ों। उस दिा र्ें र्वे धर्-मवर्वश्र्वास से आगे बढकर अनुभर्व तक और सूि से आगे बढकर सत्य के दिनम तक पिुंच जाएंगे। उदािरण के शिए, िंकराचाय मने धर् मकी छः ास्त्रसम्र्त प्रणाशियों की बात किह ै। उसे एक िह सत्य की वर्वशभन्न अशभव्यल्क्तयों का व्यापक अनुभर्व था। इन अि अरबी शिखता ै, "र्ेरा हृदय अब प्रत्येक रूप धारण करने ें सर्थ मबन गया ै; हिरनों के शिए यि चरने का र्ैदान ै, और ईसाई र्ठर्वाशसयों के शिए र्ठ ै, और र्ूततयमों के शिए यि र्ल्न्दर ै, और ाल्जयों के शिए यि काबा और टोरा की र्ेज और कुरान की पुस्तक ै। र् ैंतो प्रेर् के धर् मको र्ानता ूं ूं कफर उसके ऊंट चािे ल्जधर भी िे जाए। र्ेरा धर् मऔर र्ेरह श्रद्धा िह सच्चा धर् मिै।"[46] रार्कृष्ण भी कई प्रकार के वर्वश्र्वासों और पूजा वर्वधधयों का पािन करते थे। हिन्दुत्र्व का धाशर्कम र्ूलय इस तथ्य र्ें तनहित ै कक यि आध्याल्त्क स्र्वतन्त्रता के अन्र्वेषकों को िर प्रकार का सिारा देता ै, और उन सबको उस एक िह सर्वशे्रेमष्ठ सत्य तक पिुंचाता ै, ल्जसे अनेक ढंग से अशभव्यक्त ककया जाता ै। यद्यवप धर्-म वर्वश्र्वास अनेक और पृथक् पृथक् ैं, परन्तु परम्परा और जीर्वन की ैिह एक िह ै। जब र्् धर्-मशसद्धान्तों और पररभाषाओं को िेकर वर्वर्वाद करते ैं, तब िर् वर्वभक्त ो जाते ैं। परन्तु जब िर् प्राथनमा और ध्यान के धाशर्कम जीर्वन का अर्विम्बन करते ैं, तो िर् परस्पर एक-दूसूरे के तनकट आ जाते ैं। प्राथनमा ल्जतनी अधधक गिरह ोती ै, व्यल्क्त 'सर्वोच्च' (ब्रह्र्) के ज्ञान र्ें उतना िह अधधक िहन ो जाता ै। अिभार्व की कठोरता द्रर्वर्वत ो जाती ै; धाशर्कम र्तों की परहक्षणात्र्कता प्रकट ो जाती ै और सब आत्र्ाओं के, एक परर् सत्ता र्ें, सुतीव्र केन्द्रहकरण (फोकशसंग) का बोध ो जाता ै। िर् सब धाशर्कम अन्र्वेषणों की सारभूत एकता को सर्झ िेते ैं और वर्वशभन्न नार्पल्नों (िेबिों) के नीचे वर्वद्यर्ान एक-से सर्ान अनुभर्व को पिचान िेते ैं।[47] ब्रह्र्ा, वर्वष्णु और शिर्व उस 'सर्वोच्च' (ब्रह्र्) के अन्तगतम ो जाते ैं, ल्जसका प्रतीक 'ओ३र्' ् ै, और उनके भक्त भी उस सर्वोच्च की िह पूजा कर रिे ोते ैं।48 यद्यवप सब रास्ते उसी एक ऊंचाई तक िे जाते ैं, कफर भी प्रत्येक र्नुष्य अपनी िह पाश्र्वभूशर् के ककसी स्थान से चिना प्रारम्भ करना चािता ै। िर् सब परम्परा की

---

46 तनकलसन, 'र्ौल्स्टक्स आफ इस्िार्' (1914), पृष्ठ 105

47 "जैसेर्वषाम-जि सर्ुद्र र्ें पिुंच जाता ै, र्वैसेिह सूय,म शिर्व, गणपतत, वर्वष्णु और िल्क्त के पुजारह ब्रह्र् तक पिुंच जाते ैं।"

सौराः ैर्वाश्च गाणेिाः र्वैष्णर्वाः िल्क्तपूजकाः,

र्ार्ेर्व प्राप्नुर्वल्न्त ह वषपमाः सागरं यथा।

48 अकारो वर्वष्णुरुद्हदष्ट, उकारस्तु र्िेश्र्वरः,

र्करिणोच्यते ब्रह्र्ा, प्रणबेन त्रयो र्तः।

संतान िैं, और इततिास की धारा र्ें िर्ारा एक सुतनल्श्चत स्थान िै। हिन्दुत्र्व ककसी एक धर्-मवर्वश्र्वास, या एक धर्ग्रमन्थ, या एक पैगम्बर या संस्थापक के साथ निहंजुड़ा िुआ िै, अवपतु यि तो एक तनरन्तर नर्वीन िोतेिुए अनुभर्व के आधार पर सत्य की तनरन्तर और आग्रिपूण मखोज िै। हिन्दुत्र्व परर्ात्र्ा के वर्वषय र्ें तनरन्तर वर्वकास-र्ान र्ानर्वीय वर्वचार िै। इसके पैगम्बरों और ऋवषयों का कोई अन्त निहं िै और न इसके शसद्धान्त-ग्रन्थों की िह कोई सीर्ा िै। यि सब नर्वीन अनुभर्वों का और सत्य की नर्वीन अशभव्यल्क्तयों का स्र्वागत करता िै। प्रकाि, चािे र्वि ककसी भी द्र्वीप से क्यों न तनकि रिा िो, अच्छा िै, जैसे गुिाब सुन्दर िह िोता िै, चािे र्वि ककसी भी उद्यान र्ें क्यों न खखिा िुआ िो।

र्ें धर्,म ल्जसे धर्-मशसद्धांतों को र्ानने और वर्वधध-वर्वधानों के पािन से अशभन्न सर्झा जाता िै और आध्याल्त्र्क जीर्वन र्ें, जो चेतना के परर्वतनम का आग्रिकताम िै, ल्जसके शिए अन्य सब र्वस्तुएं साधन र्ात्र िैं, भेद करना िोगा। ईसाई प्रतीक का प्रयोग करते िुए किा जाए, तो धर् मका उद्देश्य िै (ईश्र्वर के) 'पुत्न' का िाश्र्वत पुनजन्मर्, ल्जसके द्र्वारा पृथृक्तार्वादह स्र्वाथपमरता का प्रायल्श्चत िो जाता िै। यहद संगहठत धर् मर्ानर्व जातत का, इसके जीर्वन और सर्ाज का, रूपान्तर निहंकर पाया, तो इसका कारण केर्वि यि िै कक उसने इस बात पर पयाप्मत ज़ोर निहंहदया कक उसका एकर्ात्र िक्ष्य आध्याल्त्र्क अल्स्तत्र्व के शिए र्ाग मखोि देना िै। िर् र्ानर्व-प्रकृतत को वर्वचारों द्र्वारा केर्वि उसकी ऊपरह सति छूकर परर्वतततम निहंकर सकते, अवपतु इसके शिए तो िर्ें प्रकृतत र्ें िह आर्ूि परर्वतनम करना िोगा। सब धर्ों का सांझा िक्ष्य आध्याल्त्र्क जीर्वन िै। उनका परस्पर र्तभेद िक्ष्य के वर्वषय र्ें निहीं, अवपतु केर्वि प्रगतत की उस र्ात्रा र्ें िै, जो र्वे अपनेकर् या अधधक प्रकािों के सिारे कर पाते िैं। यहद िर् ककसी एक धर् मकी तुिना दूसरे धर्ों से करें, तो िर्ें पता चिेगा कक अन्तर केर्वि र्न्त्रों और अनुष्ठानों र्ें िह िै। यहद िर् धर्-मशसद्धान्तों और धर्-मवर्वश्र्वासों की ति र्ें गिराई तक जाएं, तो हदखाई पड़ेगा कक सब धर् मउस एक अथाि स्रोत से बि प्राप्त कर रिे िैं। जब कोई ईसाई र्वणनम करता िै कक उसने ईसा के साक्षात् ्दिनम ककए, तो हिन्दू ूउसे र्वास्तवर्वक र्ाननेसे इनकार निहं ंकरता; इसी प्रकार र्वि उस बौद्ध शभक्षुके आश्र्वासनों पर भी अवर्वश्र्वास निहं करता, जो ध्र्यर् र्ाग मका अर्विम्बन करता िै। र्वि र्ुसिर्ान के संसार के सर्वोच्च स्र्वार्ी की स्र्वेच्छपूर्वकम िरण र्ें जानेके र्वणनम का भी खंडन निहंकरता। आधारभूत एकता को स्र्वीकार कर िेनेके कारण, सर्ूची र्ानर्व- जातत के कलयाण के शिए एक सांझेआधार पर एक वर्वशिष्ट सीर्ा तक परस्पर संयोग सम्भर्व िो सकना चाहिए। धर्वमर्वज्ञान-सम्बन्धी प्रततपादन के वर्वषय र्ें भी अब वर्वस्तृततर एकरूपता की सम्भार्वना िै। राष्ट्रहय राज्यों की भांतत बड़े-बड़े ेधर् मभी उन हदनों संसार के सीशर्त क्षेत्रों र्ें उत्पन्न और वर्वकशसत िुए, ल्जन हदनों िेषे र्ानर्व जातत के साथ सम्पकम स्थावपत कर पाना कहठन था। ककन्तु अब वर्वज्ञान और व्यापार के प्रभार्व के कारण एक नई वर्वश्र्व-संस्कृतत रूप धारण कर रिह िै। अब सब धर् मअपने-आपको एक नई बोिह र्ें अशभव्यक्त करनेके शिए प्रयत्निीि िैं और इसीशिए एक-दूसरे के तनकट आते जा रिे िैं। असर्थनमीय शसद्धांतों का खंडन उतना निहंककया जाता, ल्जतनी कक उनकी उपेक्षा कर दह जाती िै, और धर्ों के उन्हिं ंसार्वभमौर् तत्र्वों पर बि हदया जाता िै, ल्जनपर कक सब सिर्त िैं। आगार्ी र्वषों र्ें यि प्रकक्रया और अधधक तीव्र गतत पर आएगी और सब धर्ों का िनैः िनैसदिृीकरण वर्वश्र्व-धर् मके रूप र्ें काय मकर सकेगा।

सहिष्णुता का शसद्धान्त हिन्दुओंका एक स्वीकृत शसद्धान्त रि ि ै। शिौक और उसके उत्तराधधकारह दिरथ नेनाल्स्तक आजीर्वकों को अपनेयिां ंप्रश्रय हदया था। र्नुका कथन ि ै कक ि र्ें शभन्न-वर्वश्र्वाशसयों की प्रथाओंका भी आदर करना चाहिए,'[49] याज्ञर्वलक्य शभन्न-वर्वश्र्वाशसयों की प्रथाओंको र्ान्यता देता ि ै।50 संक्षेप र्ें, िासिकों का यि कतव्मय बनाया गया था कक र्वे सब धर्ों के अनुयातययों या ककसी भी धर् मको न र्ाननेर्वािों, सभी की रक्षा करें। र्ुल्स्िर् इततिासकार खफी खां ंशिखता ि ै, "उसने(शिर्वाजी ने) यि तनयर् बना हदया था कक जिां किहं ंभी उसके अनुयायी िूटर्ार करते पिुंचें, र्वे र्वे ककसी ल्र्स्जद को, या खुदा की ककताब (कुरान) को या ककसीकी स्त्री को ककसी प्रकार की िातन न पिुंचाएं। जब कभी पवर्वि कुरान की कोई प्रतत उसके िाथ र्ें आ जाती थी, तो र्वि उसे आदर से रखता था, और अपनेककसी र्ुसिर्ान अनुचर को दे देता था। जब उसके आदर्ी हिन्दू ू या र्ुसिर्ान ल्स्त्रयों को कैद कर िेते थे ेऔर उनकी रक्षा के शिए उनका कोई साथी उनके पास न िोता था, तो र्वि स्र्वयंतब तक उनकी देख-रेख करता था, जब तक उनके सम्बन्धी आकर धन देकर उन्िें छुड़र्वाकर न िे जाएं।"[51]

व्यल्क्त की प्रकृतत

व्यल्क्त की प्रकृतत के सम्बन्ध र्ें ऐततिाशसक धर्ों और एकाधधकारर्वादह वर्वश्र्वासों र्ें आधारभूत अन्तर ि ै। धर्ों की शिक्षा यि ि ै कक परर्ात्र्ा र्नुष्य के अन्दर ि ै और र्नुष्य र्ें भिे और बुरे का वर्ववेक करने ेकी िल्क्त ि ै; और यि वर्ववेक की िल्क्त िह उसे र्नुष्य बनाती ि ै और उसे पिुओं से पृथक करती और र्ानर्व-जीर्वन को पवर्वनता प्रदान करती ि ै। जीर्वन की र्वास्तवर्वक इकाई व्यल्क्त ि ै, ल्जसके अन्दर धड़कता िुआ र्ानर्वीय हृदय, बौखिाया िुआ र्ानर्वीय संकलप, वर्वर्वि गौरर्वों और अनजानी र्वेदनाओं की भार्वना वर्वद्यर्ान ि ै। प्रजातंत र्नुष्य र्ें, और उसके अपने-आपको पूण मबनानेके, अपना िासन स्र्वयं करने ेके, और एक ऐसे सर्ाज का तनर्ामण करने ेके, ल्जसर्ें अपने-आपको पूण मबना पाना सम्भर्व िो, अधधकार और कतव्मय र्ें इस आस्था की अशभव्यल्क्त ि ै। सिप्राण धर् मर्नुष्य को एक पवर्वत्र र्वस्तु र्ानतेिैं, जबकक र्ाक्स मकी दृल्ष्ट र्ें र्वि "सार्ाल्जक बन्धनों का सार्ान्य प्रभार्व र्ात" ि ै। र्वि किता ि ै, "र्ानर्वीय तत्त्व कोई ऐसी अर्ूत मर्वस्तु ुनिहं ंि ै, जो पृथक् व्यल्क्त र्ें तनर्वास करती िो। अपनेर्वास्तवर्वक रूप र्ें यि सार्ाल्जक सम्बन्धों का सार्ान्य प्रभार्व-भर ि ै।"[52] सर्ाज र्वास्तवर्वकता ि ै और स्र्वाधीन र्नुष्य एक प्रतीतत या भ्रर् ि ै। हिटिर का कथन ि ै, "व्यल्क्तक र्ानर्व-आत्र्ा के और र्वैयल्क्तक उत्तरदातयत्र्व के असीर् र्ित्र्व के ईसाई-शसद्धान्त का र् ैंवर्वरोध करता िं ू। इस शसद्धान्त के वर्वरोध र्ें र् ैंतुषार के सर्ान स्र्वच्छ यि रक्षक शसद्धांत प्रस्तुत करता िं ू कक व्यल्क्त र्नुष्य कुछ निहं ि ै, उसका कोई र्ित्र्व निहं ंि ै और

---

49 4.61

50 1.192

51 इस प्रकार गर्वाह एक ऐसे वर्वरोधी गर्वाि ने दह ि ै, ल्जसने शिर्वाजी की र्ृत्यु का र्वणनम इन िददों र्ें ककया, "उस हदन (5 अप्रि, 1680 को) र्वि काकफर नरक को गया।" िाि िह र्ें िैदराबाद के तनज़ार् द्र्वारा की गई एक उलिेखनीय घोषणा भी इस भार्वना के अनुकूि ि ै: "र्ेरे राज्य र्ें वर्वशभन्न धर्ों और जाततयों के िोग रिते िैं और उनके पूजा-स्थानों की रक्षा करना एक म्बी अर्वधध से र्ेरे राज्य के संवर्वधान का एक अंग रिा ि ै।"

52 फ्यूअरबाख पर छठा प्रबन्ध

 उसका तनरन्तर अल्स्तत्व राष्ट्र की प्रत्यक्ष अर्रता र्ें ि‍ह बना रिता ि‍ै।"[53] 'र्ीन कैम्फ र्ें वि शिखता ि‍ै, "उन

धर्-मशसद्धान्तों का, ल्जनके अनुसार व्यल्ष्टगत व्यल्क्तत्व को अपनी स्वतन्त्रता और गौरव का अधधकार ि‍ै, पररणार् ववनाि के शसवाय कुछ निहं ि‍ो सकता।" हिटिर सर्ाजवाद के शसद्धान्त की पररभाषा इस रूप र्ें करता ि‍ै कक यि सब व्यल्क्तयों पर राज्य का आधधपत्य और राज्य पर पाटी का अबाधधत तनयंत्रण ि‍ै। वि किता ि‍ै, "विां कोई उछृंखिता न ि‍ोगी, ऐसा कोई स्वतन्त्र अवकाि न ि‍ोगा ल्जसर्ें व्यल्क्त अपना स्वार्ी स्वयं ि‍ो; यि ि‍ै सर्ाजवाद- उत्पादन के साधनों पर तनजी स्वाशर्त्व जैसी छुटपुट वस्तुएं निहं। इसका क्या र्ित्व ि‍ै कक र् ि‍ैंि‍ोगों को एक ऐसे कठोर अनुिासन र्ें जकड़कर खड़ा कर दूं, ल्जससे वे बचकर न तनकि सकें? वे ल्जतना चािें अपनी भूशर् या कारखानों पर उतना स्वाशर्त्व बनाए रखें। तनणाायमक तत्व यि ि‍ै कक राज्य, पाटी के र्ाध्यर् से, उन सबका अधधपतत ि‍ै, चािें वे र्ाशिक ि‍ों या कार्गर। ि‍र्ें बैंकों या कारखानों का सार्ाल्जकीकरण करनेर्ें शसर खपाने की क्या आवश्यकता ि‍ै? ि‍र् तो र्नुष्यों का सार्ाल्जकीकरण करते ि‍ैं।"[54] र्ानवीय व्यल्क्त र्ें से उसका अपना इततिास, उसकी भववतव्यता, और उसको आन्तररक अतीत तनकािकर उसे ररक्त कर हदया गया ि‍ै। उसे एक तनरुद्देश्य बिता ि‍ुआ, चटपट ववश्वास कर िेने वािा प्राणी र्ान शिया गया ि‍ै, जो र्ल्स्तष्क और अपनी इच्छा से ि‍ीनूय ि‍ोकर, उन ि‍ोगों द्वारा पिुओंकी भांतत ि‍ांका जाता ि‍ै या र्ोर् की भांतत ढाि शिया जाता ि‍ै, ल्जन्िोंनेअपने-आपको उसका ि‍ासक बनने ेके शिए चुन शिया ि‍ै। यहद स्वाधीनता ि‍र्ारे अपनेवास्तववक आत्र्रूप र्ें रिने ेकी स्वतन्त्रता का ि‍ह नार् ि‍ै, तो ि‍र्से ि‍र्ारह स्वाधीनता छीन ि‍ेनेकी यि अधीरता र्नुष्य के पतन की द्योतक ि‍ै। र्ानवआत्र्ा का झुंड के सम्र्ुख यि आत्र्सर्पणम ि‍र्ें ऐसे पिुओं की जातत बना डािता ि‍ै, ल्जनर्ें बुद्धध ि‍ै। पिु ि‍ुजगत् ेर्ें व्यल्ष्ट का र्ित्व जातत की अपेक्षा कर् ि‍ोता ि‍ै।

स्वाभाववक अधधकार और अन्तःकरण की स्वाधीनता, ऐसे "उदार र्ूल्य" घोवषत ककए गए ि‍ैं ल्जनकी आड़ र्ें पूंजीवादह व्यवस्था डेरा जर्ाए ि‍ुए ि‍ै। द्वंद्वात्र्क प्रकक्रया का सम्बन्ध र्ानवता के सार्ाल्जक तत्व से ि‍ै। कोई भी व्यल्क्त तब तक अच्छा निहं ि‍ो सकता, जब तक कक वि सार्ाल्जक ढांचा (संरचना) अच्छा न ि‍ो, ल्जसका कक वि अंग ि‍ै। धर् मकी इस स्थापना के, कक ि‍र् तब तक सर्ाज को निहं ेबदि सकतेजब तक कक र्नुष्यों को न बदि डािें, ववरोध र्ें र्ाक्स मयि ववचार प्रस्तुत करता ि‍ै कक जब तक ि‍र् सर्ाज को न बदि डािें तब तक ि‍र् र्नुष्यों को निहं बदि सकते।

र् ऐसे संसार र्ें रिते ि‍ैं, ल्जसर्ें यन्त्रों और प्राकृततक ववज्ञान का प्रभुत्व ि‍ै। र्ानव-प्रकृतत के संबन्ध र्ें यंत्रात्र्क दृल्ष्टकोण अधधक गाह्य ि‍ो गए ि‍ैं। र्नोवविेिषण र्ानव-प्राखणयों को इस रूप र्ें देखता ि‍ै कक वे अपने अवचेतन र्नोवेगों के, ल्जन्र्ें धिचककत्सक ि‍ोग नये रूपों र्ें बदि सकते ि‍ैं, असिाय दास ि‍ैं। आचरणवाद (बबिेववयररज्र्) यि र्ानता ि‍ै कक र्ानव-ि‍ििु का र्न पूणतमया एक खािह कागज़ की तरि ि‍ोता ि‍ै ल्जसपर ि‍र् चािें जो कुछ शिख सकतेि‍ैं। र्ानवीय दुष्टता का कारण दूवषत ग्रल्न्थयों और अबुद्धधत्तापूण मप्रततबन्धों को बताया जाता ि‍ै। र्ाक्सवमादहयों का ववश्वास ि‍ै कक आत्र्ा पूणतमया पररल्स्थततयों की उपज ि‍ै, वविेषेतः आधथकम

53 ि‍रैन रौखतनंग, 'हिटिर स्पीक्स'(1939), पृषठ 222-223

54 र्रैन रौखतनंग, 'वॉइस आफ डडस्रक्िन'

और सार्ाल्जक पररल्स्थततयों की। इसके वर्वचार करने,◌े रू्लयांकन करनेऔर तनश्चय करने के काय मइसकी स्वतन्त्र और स्वत:स्फूत मगततवर्वधध की अशभव्यल्क्त निहं ◌ंि◌ैं, अवपतु उस सार्ाल्जक पररर्वे (आसपास की पररल्स्थततयों) की नोर्वैज्ञातनक गौण उपज ि◌ैं, ल्जनरे्ं यि रि रिह ि◌ोती ि◌ै। र्ाक्स मने शिखा ि◌ै, र्नुष्यों की चेतना उनके अल्स्तत्व का तनधारमण निहं ◌ंकरती, अवपतु इसके वर्वपरहत र्नुष्यों का सार्ाल्जक अल्स्तत्व उनकी चेतना का तनधारमण करता ि◌ै।" उसके उत्तराधधकाररयों ने इस दृल्ष्टकोण को अनम्य (ि◌चकिहन) तनयततर्वाद तक ि◌ा पिुंचाया ि◌ै और उनका र्त ि◌ै कक चेतना तो केर्वि एक गौण तत्व ि◌ै (जो कारणों की परम्परा र्ें निहं ि◌ै)। जब भी कभी पररल्स्थततयां, इततिास के अदम्य तनयर्ों के कारण अपने-आपको बदि ि◌ेती ि◌ैं, व्यल्क्त भी बदि जाते ि◌ैं। सार्ाल्जक तत्व र्ानर्वीय व्यर्विार का तनधामरण करते ि◌ैं। ल्स्पनोज़ा ने कि◌ा था कक यहद ि◌र्वा र्ें से नीचे धगरता िुआ कोई पत्थर वर्वचार कर सके, तो र्वि यि सोच सकता ि◌ै कक उसने अपना र्ाग मअपनी स्वतन्त्र इच्छा से चुना ि◌ै; उसे बाह्य कारणों का ज्ञान भी न ि◌ोगा। इसी प्रकार अपनेबतार्वम के बाह्य कारणों का ज्ञान न ि◌ोनेसे ि◌र् यि सर्झने ि◌गते ि◌ैं कक ि◌र्ारह ल्स्थतत धगरते ि◌ुए पत्थर से शभन्न ि◌ै। परन्तु ि◌र बात प्रकृतत की अपरर्वततमीय प्रकक्रया के पररणार्स्र्वरूप ि◌ह घहटत ि◌ोती ि◌ै। र्नुष्य इस प्रकृतत र्ें एक ऐसा पदाथ मि◌ै, ल्जसकी रुधचयांऔर अरुधचयांर्वैसी हि अदम्य दिाओंद्र्वारा तनधारमरत ि◌ोती ि◌ैं, जैसी दिाओं द्र्वारा पदाथों का नीचे धगरना, पौधों का बढना और ग्रिों का पररभ्रर्ण तनधारमरत ि◌ोता ि◌ै। परस्पर वर्वरोधी र्तों की वर्वचारधाराएं केर्वि सुव्यर्वल्स्थत करने ◌ेके प्रयत्न-भर ि◌ैं या उन कायों के शिए, जो र्वस्तुतः आधथकम हितों के पररणार्भूत ि◌ैं, हदखार्वटी (अर्वास्तवर्वक) कारण खोजने के प्रयत्नरि् ि◌ैं। इसका पररणार् ि◌ै एक यंत्जिातात्र्क (यांबत्रक ढंग का दृल्ष्टकोण) ल्जसके अनुसार र्ानर्वीय काय मअंधे और स्वत:चाशित बन जाते ि◌ैं।

अपनेसर्काि◌हन दृश्य को देखकर ि◌र्ारा यि दृल्ष्टकोण बनने ि◌गता ि◌ै कक ि◌र् तो उन वर्वश्र्वव्–ल्क्तयों के बेबस शिकार ि◌ैं, जो अपने तनयत ि◌क्ष्यों की ओर बढ रिह ि◌ैं। ि◌र् ल्जतना सर्झते ि◌ैं, उसकी अपेक्षा बिुत ि◌ह कर् स्वतन्त्र ि◌ैं। इस सम्र्ोहित संसार र्ें ि◌र्र्ें से अधधकांि ि◌ोग उन कायों को करते ि◌ैं, ल्जन्िें करने की इच्छा र्िारह निहंथी। ल्जन ि◌ोगों की इच्छाि–ल्क्त कर् ि◌ो जाती ि◌ै, र्वे भाग्यर्वाद को प्रसन्नता से स्वीकार कर ि◌ेते ि◌ैं। यि संसार गुर्नार् बन गया ि◌ै, और व्यल्क्त इसर्ें वर्वि◌हन ि◌ो गया ि◌ै। अपनी शिक्षा-संस्थाओंर्ें ि◌र्ें अपनी ि◌ल्क्तयों का वर्वकास करने ◌ेऔर अपनी बुद्धध को बढाने का प्रशिक्षण शर्िने के बजाय ि◌र्ें ि◌पिे से स्वीकृत नर्ूनों र्ें ढिा हदया जाता ि◌ै, ि◌र्ें जानकारह ठूंस-ठूंसकर भर दह जाती ि◌ै और ि◌र्ें यि शसखाया जाता ि◌ै कक ि◌र् दिेभल्क्त, जातीयता और धर् मकी प्रेरणाओं के प्रतत ठीक-ठीक प्रततभार्वन (ररस्पॉस) ककस प्रकार करें। ि◌र् इस प्रकार आचरण करते ि◌ैं, जैसे शसखाए ि◌ुए पिु या जानदार गुडड़या ि◌ों। आत्र्ा तनस्संज्ञ ि◌ो जाती ि◌ै और ि◌र्ारे चेिरों का कोई अपना अिग रूप-रंग निहं ◌ंरिता। जब ि◌र् रेर्वड़ों (सर्ूिों) के रूप र्ें सोचनेिगते ि◌ैं, तो ि◌र् सोचते उतना निहं,◌ं ल्जतना कक सिज र्वृत्त से कार् ककए जाते ि◌ैं। ि◌र् सार्ूहिक र्नुष्य बन जाते ि◌ैं, जो र्ानो इस प्रकार र्ुिरबन्द ि◌ों कक ि◌र्वा भी उन तक न पिुंच पाए और जो सर्ाज, राज्य कानून और व्यल्क्त के वर्वषय र्ें तोतों की तरि रटे ि◌ुए वर्वचारों को दुिराते ◌ेचिे जाते ि◌ैं। ि◌र् र्ानर्वीय उद्यर् के सच्चे र्ित्व से पूणतमया अनशभज्ञ रिते ि◌ैं और र्ानशसक दृल्ष्ट से उन अर्वर्वकशसत प्राखणयों की दिा तक पिुंच जाते ि◌ैं, जो सनसनी (रोर्ांच) के शिए िािातयत रिते ि◌ैं और अस्पष्टतया ककसी ऐसी र्वस्तु के शिए असन्तुष्ट और उत्सुक रिते ि◌ैं; ल्जसे र्वे दोष दे सकें और घृणा

कर सकें। जान-बूझकर र्नुष्यों के जीर्वनों को दररद्र बनाया जा रिा िै। पाररर्वाररक िीर्वन, घर का प्रेर्. अपनों से बड़ों के प्रतत आदर, इन सब बातों को आल्त्र्क दासता का िी एक रूप बताकर, बाना युग की उपांग (एपेंडडक्स) जैसी प्रारल्म्भक र्वस्तु, ल्जससे कक िर्ें र्ुक्त ककया िी जाना चाहिए, बताकर अस्र्वीकृत कर हदया जाता िै। िर्ें इस बात के शिए प्रोत्साहित ककया जाता िै कक यहद आर्वश्यकता पड़े, तो िर् अपनेर्ाता-वपता तक के साथ हिंसात्र्क पिार्वर्वक उपायों का प्रयोग करें। िर्ें शसखाया जाता िै कक िर् यि र्वर्वश्र्वास करें कक इततिास अर्वश्यम्भार्वी िै, उसका प्रततरोध करना र्ूखतमा िै और र्नुष्य र्ित्त्र्विहन िै। िर् इततिास का तनर्ाणम निहं करते, अवपतु इततिास

के द्वारा िै। सर्ाजनसर्ूि को अपनेअधीन करने के शिए नेता-गण र्वर्वर्वि करने, उत्तेल्जत करने और प्रभार्वर्वत करने के सब आधुतनक साधनों का प्रयोग करते िैं। यि भार्वना साधारणतया िोगों र्ें घर करती जाती िै कक र्वर्वकास की प्रर्वृवृत्तयों का प्रततरोध करने से कोई िाभ निहीं; ऐसे आन्दोिन का र्वर्वरोध करना व्यथम िै, जो पररल्स्थततयों का तकमसंगत पररणार् िै; िर्ें उन तथ्यों के सम्र्ुख शसर झुकाना िी चाहिए, ल्जनसे बचनेका कोई उपाय निहं िै। भाग्य के पुराने शसद्धांत को िी नया, शभन्न-सा िगने र्वािा बाना दे हदया गया िै और आधुतनक तकनीकों से उसका प्रचार ककया जा रिा िै। व्यार्वर्विाररक र्वर्वज्ञान और तकनीकी र्वर्वज्ञान का, जो कक र्वस्तुतः प्रकृतत के ऊपर र्ानर्वीय तकम बुद्धध की र्वर्वजय के पररणार् िैं, सार्ान्य र्नुष्य पर ठीक उलटा िी प्रभार्व इस रूप र्ें िुआ िै, कक इस र्वर्वज्ञान का पररणार् यि िुआ िै कक र्नुष्य यन्त्रों का दास बन गया िै। र्ानर्वीय चेतना का यंत्रीकरण िो गया िै और र्ानर्व-आत्र्ा र्ें नई स्र्वतःचशिततताएं (ओटोर्ेहटज्र्) उत्पन्न िो गई िैं। िर्र्ें से अधधकांश िोग अपनेजीर्वन का कोई भी ऊंचा उद्देश्य बनाए बबना जीते िैं और बनाना भी निहंचािते। िर् हदन के बाद हदन, जीर्वन बबताते जाते िैं, और अन्त र्ें र्वैसे िी िुप्त िो जाते िैं, जैसे र्वषाम के बुिबुिे फूटकर पानी र्ें िुप्त िो जाते िैं। जीर्वन तनरथकम खिबिी और अन्तिहन बकबक से भरा िुआ चिता जाता िै। िर्र्ें से अधधकांश को ऐसा अनुभर्व िोता िै, र्ानो िर् वपंजरे र्ें बन्द पिु िैं, ल्जन्िें इस बबलकुि बुद्धधिहन संसार र्ें पूण मर्ित्त्र्विहनता को स्र्वीकार कर िेने के शिए र्ना शिया गया िै। क्या यिह िै स्र्वतंत्रता की पवर्वत्र आनुर्वंशिक सम्पवत्त (बपौती)? स्र्वतंत्रता उन शब्दों र्ें से एक िै, ल्जसका प्रयोग करना तो सरि िोता िै, ककन्तु पररभाषा कर पाना कहठन। र्वतमर्ान र्िायुद्ध र्ें दोनों िी पक्षों के राष्रों का दार्वा िै कक ये स्र्वतंत्रता और िोकतन्त्र के शिए िड़ रिे िैं। भारतीय राष्रहय कांग्रेस की घोषणा िै कक र्वि साम्राज्यर्वाद के र्वर्वरुद्ध भारत की स्र्वतंत्रता के शिए अहिंसात्र्क िड़ाई िड़ रिह िै। िर्ारे कार्गारों का र्वर्वश्र्वास िै कक जब र्वे अधधक र्वेतन, सार्ूहिक स्र्वाशत्र्व (भागीदारह), र्द्य तनषेध और ल्र्दर-प्रर्वेश की र्ांग करते िैं, तो र्वे स्र्वतंत्रता की िड़ाई िड़ रिे िोतेिैं। स्र्वतंत्रता भी पत्नों के थैिे या बबस्तरबंद जैसी एक अशभव्यल्क्त र्िूर् िोती िै, ल्जसर्ें आप जो कुछ चािें, रख सकते िैं। एक राजनीततक स्र्वतंत्रता िोती िै, एक जातत की दूसरह जाततयों द्र्वारा पराजय और उनके प्रभुत्र्व र्ें स्र्वतंत्रता। एक सांर्वर्वधातनक स्र्वतंत्रता िोती िै, जनता की ककसी एक र्वगम या एक अधधनायक (डडक्टेक्टर) के अत्याचार से स्र्वतन्त्रता; र्वगम-मर्वर्विेषाधधकार र्ानर्वीय स्र्वतंत्रता के र्वर्वरुद्ध अपराध िै। एक आधथकम स्र्वतंत्रता भी िै, अथात्म दररद्रता या अधधक दबार्व के कष्ट से स्र्वतंत्रता। एक र्वैधातनक स्र्वतंत्रता िोती िै, अथातम कानून का भरोसा। जो कानून र्ें संयत रखते िैं या िर्ारह रक्षा करते िैं, उन्िें िर्ारह प्रत्यक्ष या परोक्ष सिर्तत प्राप्त िै, और जब तक उन कानूनों को रद्द न कर हदया जाए, तब तक सर्ाज र्ें छोटे, बड़े सबको उनका पािन करना चाहिए। यि कानून बनाया गया था कक ककसी भी स्र्वतन्त्र

र्नुष्य को न तो पकड़ा जाएगा, न कैद ककया जाएगा, न उसकी सम्पतत छीनी जाएगी, न उसे वर्वधध-बहिष्कृत (भगोड़ा घोवषत) ककया जाएगा, न दे से तनर्वाशमसत ककया जाएगा और न ककसी प्रकार से नष्ट िह ककया जाएगा।"

ाररहररक दासता से र्ुल्क्त भी स्र्वतन्त्रता िै। एक सार्ाल्जक स्र्वतन्त्रता भी िोती िै। परन्तु ये सबकी सब केर्वि

सोधभोहैंहैं,तकपर्मनुभार्वाकेकोई िक्ष्य निहं िैं; ये र्ानर्व-आत्र्ा की गम्भीरतर् ऊजाओं र्ें सिायता देनेके शिए आर्वश्यक सार्ग्री िैं। सार्ाल्जक संगठन का र्ुख्य उद्देश्य व्यल्क्त की आल्त्क स्र्वतन्त्रता को, र्ानर्वीय सृजर्ीिता को बढाना िै और कष्टदायक कानूनों और प्रथाओंद्र्वारा रोक-थार् के बबना उसे यथेच्छ रहतत से सोचने, अनुभर्व करने ेऔर आराधना करनेर्ें सिायता देना िै। ऐसे अर्वसर आ सकते िैं, जब िर्ें कि जाए कक न्यायोधचत आधथकम अर्वस्था के शिए अपने अधधकारों और जायदाद का बशिदान कर दें। अंतराष्मरहय व्यर्वस्था के शिए िर्ें अपनी राष्रहय स्र्वतन्त्रता का भी बशिदान करना पड़ सकता िै; ककन्तु आल्त्क स्र्वतन्त्रता तो सर्वोच्च और परर् र्वस्तु िै और इसका त्याग तो केर्वि अपनी आत्र्ा को गंर्वाकर िह ककया जा सकता िै। र्िाभारत र्ें कि गया िै, "आत्र्ा के शिए सारे संसार का भी त्याग करना पड़े,े तो कर देना चाहिएम; आत्र्ाथे पृधृथर्वीं ंत्यजेत्।्"[55] "यहद र्नुष्य अपनी आत्र्ा को गंर्वा दे और सारे संसार को भी प्राप्त कर िे तो िाभ क्या िै?"[56] सुकरात के रूप र्ें िर्ारे सम्र्ुख एक ऐसे व्यल्क्त का सर्वोच्च दृष्टान्त र्वर्वद्यर्ान िै, जो आत्र्ा की स्र्वतन्त्रता का सर्थकम था और उसे रत्नों और स्र्वण मकी अपेक्षा अधधक र्ूल्यर्वान सर्झता था। दृढ र्वर्वश्र्वास और भार्वना से कांपतिुए िददों र्ें सुकरात किता िै, "यहद आप र्ुझे ेइस ित मपर छोड़ने ेका प्रस्तार्व रखें कक र् ैंअपनी सत्य की खोज बन्द कर दूं, तो र् ैंकिूंगा : ऐथेन्सर्वाशसयो, आपका धन्यर्वाद ! परन्तु र् ैंऔर नई र्वर्वश्र्व-व्यर्वस्था आपकी आज्ञा र्ानने ेकी अपेक्षा परर्ात्र्ा की आज्ञा र्ानूंगा, ल्जसने ेर्ुझे ेइस काय मर्ें िगाया िै, और जब तक र्ेरे िरहर र्ें श्र्वास िै और िल्क्त िै, र् ैंअपनेदिनम (तत्र्वज्ञान) के धन्ये को निहं छोडूंगा। र् ैंअपने इस व्यर्विार को जारह रखूंगा कक जो भी कोई शर्िे, उसे रोककर उससे किूं : क्या तुम्िें इस बात पर िर् मनिहंआती कक तुर्नेअपना सारा ध्यान सम्पवत्त और सम्र्ान पर तो िगाया िुआ िै, पर तुम्िें वर्वर्वेक और सत्य की, और अपनी आत्र्ा को और अच्छा बनाने की ज़रा भी परर्वाि निहं?- र्ुझे ेपता निहं कक र्ृत्यु क्या िै; िो सकता िै कक

---

55 त्यजेदेकं कुिस्याथे ग्रार्स्याथे कुिं त्यजेत्।्
ग्रार्ंजनपदस्याथे आत्र्ाथे पृधृथर्वींत्यजेत्।् 'र्िाभारत' 1-115-36
(पररर्वार की रक्षा करनेके शिए एक व्यल्क्त का त्याग ककया जा सकता िै; ग्रार् की रक्षा करनेके शिए एक पररर्वार का भी बशिदान ककया जा सकता िै। पूरे जनपद (सर्ाज) की रक्षा के शिए एक ग्रार् का बशिदान ककया जा सकता िै और आत्र्ा की रक्षा के शिए आर्वश्यकता पड़े ेतो सारह पृथ्र्वी तक बशिदान कर देना चाहिए।) साथ िह देखखए, सभापर्व म61-11

56 परन्तु अब भी िै एक स्र्वतन्त्रता, ल्जसके गीत निहं गाए कर्वर्वयों ने, और निहं ंकी प्रिंसा संसद् सदस्यों ने; ल्जसे नरि प्रदान निहं ंकर सकते; और सारह िल्क्तयां ंपृथ्र्वी और नरक की, शर्िकर भी उसे छीन निहं ंसकतीं;ं ऐसी स्र्वतन्त्रता, ल्जसे अत्याचार और कपट, कष्ट और कारागार बांधं पाने र्ें एकदर् अिक्त िैं; उसका स्र्वाद जो एक बार जान िेता िै, र्वि कफर दास निहं ंरि सकता। यि िै हृदय की स्र्वतन्त्रता, जो आई िै स्र्वग मसे, यि खरहदह गई िैं उसके खून से, ल्जसने यि र्ानर्व जातत को दह िै, और इसपर उसी धचह्न की र्ुिर िगी िै; यि बनाए रखी जाती िै उक अधधकार-पत्न द्र्वारा, और र्वि अधधकार-पत्र स्र्वीकृत िै तनश्चय िह एक अतनंद्य और भयार्वि िपथ द्र्वारा और भगर्वान के एक र्वचन द्र्वारा। उसके अन्य सब उपिारों पर एक राजकीय र्ुिर िगी िै जो बताती िै कक र्ेवे उसके िैं, और आदरणीय िैं, परन्तु यि उन सबसे बढकर िै। -कौपर, 'हद टास्क, 5

र्वि अच्छी िह र्वस्तु िो और ऱुझे ेउसका भय निहं िै। परन्तुयि ऱ् ैंभिह-भांतत जानता िंूं कक अपनेकतव्मय-स्थान को छोड़कर भाग खड़े िोना बुरह बात िै; और जो चीज़ संभर्व िै कक अच्छी िो (ऱृतूयु) और ल्जस चीज़ का ऱुझे ेपता िै कक र्वि बुरह िै (पियन), इन दोनों ऱ्ें से ऱ् ैंपििह को पसन्द करता िंूं।"[57]

ककसी संगहठत सऱाज ऱ्ें कोई भी व्यल्क्त पूणतमया स्र्वतन्त्र निहं ंिो सकता। सभ्यता िै िह यि कक अधधक ऱूलयर्वान स्र्वतन्त्रताओं के शिए कर् ऱूलयर्वान स्र्वतंत्रताओं को छोड़ हदया जाए। र्न और आत्ऱा की स्र्वतन्त्रता सर्वोच्च स्र्वतन्त्रता िै, जो बबना ककसीको कोई क्षतत पिुंचाए, सब िोगों को और सब िोगों के कलयाण के शिए प्रदान की जा सकती िै। राज्य का अल्स्तत्र्व व्यल्क्तयों की स्र्वतन्त्रता और उनका उत्तरदातयत्र्वपूण मजीर्वन बनाए रखनेके शिए िै। राज्य व्यल्क्तयों से शऱ्िकर बना िै और उन्िहंक शिए इसका अल्स्तत्र्व भी िै। जीर्वन का आर्वर्वभार्वम (प्रकटन) व्यल्क्त ऱ्ें िोता िै। संसार का केन्द्र-बबन्दु ुव्यल्क्त िह िै। सत्य की स्फुरणा व्यल्क्त को िोती ै। र्वि (व्यल्क्त) सीखता िै और कष्ट सिता िै, र्वि आनन्द और िोक, क्षऱा और र्वर्वद्र्वेष का ज्ञान प्राप्त करता िै। र्वि अपनी सफिताओं पर आनन्द से रोऱांधचत िो उठता िै। और अपनी सफिताओं की र्वेदना को भुगतता िै। यि उसका अधधकार िै कक र्वि अपनेजीर्वन को, उनके सब िषार्वेमिों और कंपकंवपयों के साथ, पूणरूमप ऱ्ें जी सके।58 यि उसका र्वर्विेषाधधकार िै कक र्वि सनकी, स्र्वेच्छाचारह, अरुहढर्वादह और असिर्त िो सके। संसार की सारह प्रगतत का श्रेय उन्िहं िोगों को िै, जो चैन से निहंथे। यिां ंतक कक ऱानर्वता द्र्वारा पररत्यक्त िोगों ऱ्ें भी, जो सभ्यता की ऱुख्य धारा से पृथृक् एक पोखर ऱ्ें बितेरिते िैं, अपराधधयों और बहिष्कृतों की गुप्त दुतुनया ऱ्ें भी, प्रत्येक व्यल्क्त के अन्दर उसका अपना आत्ऱ् (सैलफ) िोता िै, उसकी अपनी र्वर्विशिष्ट रुधचयांऔर प्रततभा िोती ै।'[59] भिे िह उनका स्र्वभार्व ककंकतव्मयर्वर्वऱूढ बना देने र्वािा िो, परन्तु दैर्वयोग और सुअर्वसर प्राप्त िोने ेपर उनका सर्वोत्तऱ् अंि सािर्ने आ सकता िै। यि देखना राज्य का कृत्य िै कक ऱ्नुष्य की आंखों ऱ्ें ऱ्नुष्य को पिचानने की ज्योतत धुंधिह न पड़ने पाए। प्रत्येक ऱानर्व-आत्ऱा को गौरर्व और िल्क्त प्राप्त करनी िह चाहिए और उसे उदारतापूण मउत्सिा, उच्च ऱ्ित्र्वाकांक्षाओं और ऱृदु ुसिानुभूतत प्राप्त करने ेका अर्वसर शऱ्िना चाहिए। भिे िह प्रत्येक आत्ऱा अपने-अपनेढंग से पूणतमा प्राप्त करनेके शिए प्रयत्निी िो, कफर भी उनऱ्ें से कोई भी दो ठीक एक जैसी निहं ंिोंगी। यहद िर् ककसी कारण, र्वि कारण चािे कुछ भी क्यों न िो, इस सारभूत स्र्वतंत्रता को त्यागनेके शिए सिर्त िो जाएं तो िेष सब स्र्वतंत्रताएं िुप्त िो जाएंगी।'[60] ऱानर्व-आत्ऱा की अनुलिंघनीय स्र्वतंत्रता, ऱानर्वीय भार्वना की स्र्वाधीनता िह एकऱात्र ऐसी र्वस्तु िै, ल्जसके कारण राज्य को उधचत ठिराया जा

---

57 देखखए बरह, 'ए हिस्रह ऑफ फ्रीडऱ् ऑफ थॉट' (1913)

58 "ऱ्नुष्य अकेिा जन्ऱ् िेता िै, अकेिा िह ऱ्रता िै और अपने अच्छे या बुरे कऱ्ों के फिों को भी र्वि अकेिा िह भोगता िै।"

(एकः प्रजायते जन्तुः एक एर्व प्रिहयते। े एकोनुभुङ्क्क्ते ेसुकृतं ंएक एर्व तु दुषुकृतऱ्) ् 3. "िह् िह दास िै और िह् िह पापी िै।" (िह् दासः िह्ककतर्वः)

59 'िह् िह दास िै िह् िह पापी िै ।" (िह् दासः िह्ककतर्वः)

60 तुिना कील्जए, "जो िोग थोड़ी-सी अस्थायी सुरक्षा प्राप्त करने के शिए परऱ् आर्वश्यक स्र्वाधीनता को त्याग सकतेिैं, र्वे न स्र्वाधीनता के पात्र िैं, न सुरक्षा के।" - बजैंाशऱ्न फ्रैंकशिन

सकता ि ै।61 िर्‌ िोग शरि्कर एक भीड़ भिे िह बन जाएं, परन्तुशरि्कर एक नुर्ष्य निहं ंबन सकते। िर्‌ अिग-अिग जन्र्‌ िेते ि ैं और अिग-अिग र्ते ि ैं और अपने अत्यावर्श्यक (सारभूत) जीर्वन र्ें िर्‌ अिग-अिग िह रिर्तें। राज्य को व्यल्क्तयों और सर्‌ुदायों के धर्‌ मकी रक्षा करनी िह चाहिए।

इस दृल्ष्टकोण का अर्विम्बन भी अंतिः इस बात का कारण रिा कक प्राचीन किा से वर्विदेी आक्रान्ता भारत र्ें आकर सरिता से अपनेपांर्व जर्‌ाते रि। जब तक िोगों के र्वैयल्क्तक और सार्‌ाल्जक-जीर्वन र्ें स्तिक्षेप निहं ंककया जाता था; जब तक किाकारों, दितमनकों और बुद्धधजीर्वर्यों को सत्य का अनुसन्धान करने और सौन्दय मका सृजन करनेकी छूट थी और सार्‌ान्य िोग िरहर, र्न और आत्र्‌ा के स्र्वाभावर्वक गुणों का वर्वकास करते रि सकते थे; े घरिू शिष्टाचारों और सरि नि, वर्वुिद्ुध तनष्ठा, और गंभीर भल्क्त का, जो र्‌ानर्व जीर्वन का सर्वाधिमधक र्वैयल्क्तक, सर्वाधिमधक अन्तरंग और सर्वाधिमधक पवर्वत्न अंि ि, का पिान कर सकते थे ेतब तक उनकी दृल्ष्ट र्ें इस बात का कोई अधधक र्ित्र्व निहं ंथा कक राजनीततक प्रभुत्र्व ककसके िाथ र्ें ि ै। वर्वचार सदा स्र्वतन्त्र रिता था, यिां ंतक कक तब भी, जबकक आचरण सार्‌ाल्जक रुहढयों द्र्वारा तनयल्न्त्रत रिता था।62

यि वर्वश्र्वास करना, कक आध्याल्त्क जीर्वन का र्‌ाग मभौततक र्वस्तुओंर्ें से िोकर ि ै, और िर्‌ भौततक िाभ पिुंचाकर िोगों के हृदय को जीत सकते ि ैं, आधुतनक जीर्वन की भ्राल्न्तयों र्ें से एक ि ै? यि र्‌ान शिया जाता ै किक यहद प्रत्येक व्यल्क्त को पूरह तरि भौततक तृल्प्त प्राप्त ि ो जाए, तो उसकी स्र्वग मकी और परर्‌ रूलयों को प्राप्त करने की इच्छा वर्विहन ि ो जाएगी। पर क्या कोई भी भौततक िाभ जीर्वन की अपेक्षा अधधक रूलयर्वान ि ो सकता ि ै? या कोई भी वर्वपवत्त रृत्यु की अपेक्षा अधधक भयार्वि ि ो सकती ि ै? िर्‌ आर्वेिों और आदिेों से ल्जतने िाशसत ि ोते ि ैं, अपने हितों से उतने निहं। जीर्वन र्ें आधथकम रूलयों के अततररक्त भी बिुत कुछ ि ै। िर्‌ नुर्ष्य ि ै, केर्वि उत्पादक या उपभोक्ता निहं, ं कार्गर या ग्रािक िह निहं। यहद यि संसार दूध और ििद से भरा िुआ पाधथर्वम स्र्वग मभी बन जाए और सस्ती र्ोटरें और रेडडयो सब िोगों को सिुभ भी ि ो जाएं, कफर भी िर्ें र्न की िाल्न्त या सच्ची प्रसन्नता प्राप्त निहंिो सकेगी। ऐसे नर-नारह भी, ल्जन्र्ेंर्वे सब सुख और सुवर्वधाएं प्राप्त ि ैं, जो भौततक सभ्यता द्र्वारा प्राप्त ि ो सकती ि ैं, इस प्रकार ितारा-सा अनुभर्व कर रि ि ैं, जैसे उनसे कुछ र्वस्तु ठग िह गई ि ो। नुर्ष्य केर्वि र्वतर्मान के आरार्‌ के शिए निहंजीते, अवपतु ुअर्वैयल्क्तक िक्ष्यों की खोज के शिए, आल्त्क जीर्वन के शिए जीते ि ैं; आत्र्तत आत्र्क्रीड़ा के शिए। आपस्तम्ब किता ि ै कक आत्र्‌ा को प्राप्त करने से बढकर और कुछ निहं ि ै।'63 अधधकार के यंत्नजात (र्ीनरह) द्र्वारा न कुचिह गई आत्र्‌ा, अंधकार की िल्क्तयों द्र्वारा धुंधिह न की जा सकी परर्‌ात्र्‌ा की ज्योतत िह र्‌ानर्व की एकर्‌ात्न आिा ि ै।

---

61 ल्स्पनोज़ाकिति ै, "सरकार का अल्न्तर्‌ िक्ष्य िोगों को भय द्र्वारा िाशसत करना या संयत रखना निहं ंि ै, और न उनसे बिपूर्वकम आज्ञा-पािन करर्वाना िह ि ै, अवपतु ठीक उलटे, प्रत्येक नुर्ष्य को भर्व से र्ुक्त कराना ि ै, ल्जससे र्वि यथासंभर्व सुरक्षा से जी सके और अपने वर्वर्वेक का प्रयोग बेरोक-टोक कर सके। र्वस्तुतः सरकार का कार्‌ स्र्वतंत्रता हदिाना ि ै।"-'धथयोिॉल्जको पॉशिहटकि रहटाइज'

62 वर्वचारः स्र्वतन्त्रः, आचारः सर्‌ाजसर्यतन्त्रः ।

63 आत्र्‌िाभात्‌ ्न परं वर्वद्यते। े धर्सूमि, 1-7-2

र्ें दो अिग-अिग प्रकार के आनन्दों र्ें, बाह्य और आन्तररक आनन्दों र्ें घपिा न करना चाहिए। यहद ििर्पर देर्वताओं की कृपा िो, तो िर् जीर्वन र्ें आरार् से रिते िैं िर्ारह आंखों र्ें चर्क िोती िै; आसपास की दुतुनया िर्ारह प्रिंसा करती िै; िर्ारह स्तुतत करती िै और िर्ें प्रेरर् करती िै। िर् नर्ौजी और बबगड़े िबच्चों की तरि रिते िैं और िर्ें तनश्चय रिता िै कक सब बातें जैसी इस सर्य िैं, उससे शभन्न िो िह निहं सकतीं। परन्तु जब िर् अपनेप्रतत ईर्ानदार िोते िैं, तब िर्ें र्िूर् िोता िै कक बड़ी बात यि निहीं किक दुतुनया िर्ारे बारे र्ें क्या सोचती िै, अवपतु यि िै कक िर् अपनेबारे र्ें क्या सोचते िैं। आनन्द सद्गुण िै, पररष्कार िै, और सौन्दय र्ि; तनरानन्द कुरूपता िै, गंर्वारपन और कृबत्रर्ता। िर्ें से प्रत्येक की िििसा सरि और सजीर्व के शिए, एक ज़रा-सी शर्त्रता के शिए, ज़रा-से र्ानर्वीय आनन्द के शिए और ऐसे आदि मके प्रततततनष्ठा के शिए रिती िै, ल्जसर्ें िर् अपने-आपको खपा सकें। आध्याल्त्क स्र्वतंत्रता के ध्र्वंसार्विेषों पर खड़ी की गई कोई भी सर्ाज व्यर्वस्था अनैततक िै। सम्पवत्त के वर्वरुद्ध पाप को, सर्ाज के वर्वरुद्ध पाप को क्षर्ा ककया जा सकता िै; ककन्तु पववर्वत्र आत्र्ा के वर्वरुद्ध पाप को क्षर्ा निहं ंककया जा सकता, क्योंकक ऐसे पाप के द्र्वारा िर् स्र्वयं अपनेप्रतत हिंसा कर रिे िोते िैं।

र्नुष्य, ल्जस रूप र्ें िर् उसे जानते िैं, कुछ कर् या कुछ अधधक आज का-सा िह िर्रहर और र्स्तष्क शिए िुए, िज़ारों र्वषों से जीता आ रिा िै; एक प्राणी, जो जंगिों और गुफाओंर्ें रिता था, जो रात से और र्वनों से डरता था, जो भूतों और प्रेततनयों को र्नाया करता था, जो र्नुष्यों की हिंस्र पिुओं के साथ प्राणांतक िड़ाइयों के खेि देखा करता था, धर्-मपरहक्षा-सशर्ततयों (इल्क्र्वल्ज़िन)[64] और न्यातयक यंत्रणाओंर्ें आनन्द िेता था। कूरूरता और जंगिहपन की ितािल्ददयों की तुिना र्ें र्ानर्व सभ्यता तो कि की बच्ची िै। र्ानर्वता और संस्कृतत स्र्वाभावर्वक निहीं, अवपतु पररष्कार द्र्वारा वर्वकशसत की जाती िैं और वर्वचार की पद्धततयों पर तनभरम िैं। रुधच और परम्परा संस्कृतत की उपज िैं। सर्ाज के ढांचे को भीड़ के प्रर्ाप (स्टैंडड)म तक नीचे िे आने के बजाय िर्ें जनसाधारण को सच्चों सस्कृतत के स्तर त५. ऊपर उठाना िोगा। सार्वभमौर् सर्ानता का यि अथ मकदावप निहं ंिै कक प्रत्येक र्वस्तु सर्ान रूप से गंर्वारू िो। जन-साधारण के र्न का तनम्न स्तर िह तनरंकुिताओं (अत्याचारों, तानिािों) के वर्वकास के शिए ल्ज़म्र्ेदार िै।'[65]

सभ्य र्नुष्य का जीर्वन और सत्य के प्रतत दृल्ष्टकोण असभ्य र्नुष्य से शभन्न िोता िै। सभ्य र्नुष्य की सम्र्ततयां सम्बद्ध तथ्यों और युल्क्तयों पर िल्न्तपूर्वकम वर्वचार द्र्वारा बनती िैं, जबकक असभ्य व्यल्क्त अपने आर्वेिों, पूर्वसंमस्कारों और क्षखणक नारों का दास िोता िै। सार्ूहिक प्रचार र्नोर्वेगों को प्रभावर्वत करता िै, जबकक

---

64 र्ध्ययुग के धाशर्कम न्यायािय, जो अपने धर् मर्ें वर्वश्र्वास न रखनेर्वािों को भयंकर यंत्रणापूण मसज़ाएं देते िथे।

65 'ररपल्दिक' के आठर्वें खण्ड र्ें प्िेटो किता िै, "तनरंकुिता प्रजातन्त्र के अततररक्त अन्य ककसी संवर्वधान से उत्पन्न निहं ं िोती; प्रजातंत्न कठोरतर् और कूरूरतर् दासता िै, जो चरर् स्र्वाधीनता र्ें से प्रकट िोती िै।" नीट्शे किता िै, "जीर्वन की इन नई दिाओंसे, ल्जनसे यि हिसाब िगाया गया िै कक र्नुष्यों को एक सर्ान औसत दजे के स्तरों तक नीचे िे आया जाएगा, एक इस ढंग का उपयोगी, पररश्रर्ी और रेर्वड़ र्ें रिनेर्वािे ढंग का-सा र्नुश्य, ल्जसे सब प्रकार के कार्ों र्ें आसानी से िगाया जा सकेगा, वर्विेषे रूप से यि संभार्वना िै कक र्वे कुछ थोड़े-से ऐसेअपर्वाद-रूप व्यल्क्तयों को जन्र् देगी, जो सबसे अधधक खतरनाक और आकषकम रूप से सर्ान िोंगे...... र्ुझेवर्वश्र्वास िै कक प्रजातन्त्रीकृत यूरोप तनरंकुि अत्याचाररयों- िदद के प्रत्येक अथ मर्ें— के शिए प्रशिक्षण-वर्वद्यािय और जनन-भूशर् बन जाएगा।"

व्यल्क्तगत सुझार्व बुद्धध पर प्रभार्व डािते्ं। असन्तुष्ट और तनरिा, र्ित्वाकांक्षी और जोखखर् पसन्द करनेर्वािे, अत्यधधक सप्राण और गैर ल्ज़म्र्ेदार युर्वक, जो र्वातोन्र्ाद (हिस्टहररया) और सुझार्वों से बिुत िीघ्र प्रभावर्वत िो जाते िैं, परम्परा की िल्क्त को 'सार्ाल्जक वर्विेषाधधकारों के शिए आड़' बताकर अस्र्वीकार करते िैं; और र्वे र्वतर्मान व्यर्वस्था को सर्ाप्त कर देनेपर उतारू िैं और इसकी जगि र्वे एक नई र्वस्तु िाना चािते िैं, ल्जसे र्वे स्र्वयंनिहं जानते कक र्वि क्या िै। क्योंकक नैततक साधन असंगहठत िैं, इसीशिए संसार र्ें अन्धेरगदी र्ची िुई िै।

भारतीय संस्कृतत र्ें कफर नया यौर्वन भर देनेकी क्षर्ता िै और यि नैरन्तय मको बनाए रखते िुए भी आर्ूि उथि-पुथि कर सकती िै। भारत के तनर्वाशसयों र्ें, यद्यवप र्वे कुछ धीर्े चिने र्वािे िैं, कफर भी, यौर्वन का बि और जीर्वनी िल्क्त िै और इसीशिए र्वे ेअपनी संस्कृतत को बचाए रख सके िैं। उनकी सिजर्वृवृत्तयों पर र्वास्तवर्वकताओं के धक्के की ऐसी प्रततकक्रया िोती िै, ल्जसर्ें गिती िो िी निहंसकती। र्वे आर्ूि पररर्वतनम अतनर्वाय मरूप से बािरह आदतों को थोपकर निहं,ं अवपतु शिक्षण और आल्त्क पररष्कार की प्रकक्रया द्र्वारा कर पाने र्ें सर्थ मिैं। बि-प्रयोग द्र्वारा ककए गए पररर्वतनम स्थायी केर्वि तभी िो सकतेिैं, जबकक उन्िें स्र्वेच्छापूर्वकम स्र्वीकार कर शिया जाए। जन-साधारण की अपने-आपको परम्परा के बन्धन से, जिांर्वि परम्परा स्र्वस्थ और सजीर्व िै र्वािंभी, र्ुक्त करने ेकी, र्नोर्वेगात्र्क दृल्ष्ट से उत्तेजनीय िोतेजानेकी और बौद्धधक अकर्णमयता और तनल्ष्क्रयता की प्रर्वृवृत्त को रोका जाना चाहिए। अंधेरगदी और तनरंकुिता के बीच र्ें से तनकिकर आगे बढ पाने का केर्वि एक यिह र्ाग मिै।

आत्र्ा की इस स्र्वतंतता को, भौततक और सार्ाल्जक बन्धनों से स्र्वाधीनता को प्राप्त करना अत्यार्वश्यक िै। स्र्वाधीनता की व्याख्या दो रूपों र्ें की गई िै। एक तो स्र्वाधीनता र्वि िै, जो सार्ाल्जक बि-प्रयोगों (र्वर्विताओं) से रक्षा करती िै; दूसूरह िर्ें भौततक र्वर्विताओं से बचानेका प्रयत्न करती िै, उन अभार्वों और आर्वश्यकताओं से िर्ें र्ुक्त करने का प्रयत्न करती िै, जो ठीक-ठीक आधथकम और सार्ाल्जक सम्बन्धों द्र्वारा पूण मिो सकती िैं। इन दोनों र्ें प्रत्येक अच्छे जीर्वन का साधन िै। दोनों र्ें से प्रत्येक की, जब र्वि पूण मिो, यि र्ांग िोती िै कक सर्ाज को न केर्वि व्यल्क्तयों और सर्ूिों की इन बि-प्रयोगों से रक्षा करनी चाहिए, अवपतु उन जीर्वन-र्ूलयों को प्राप्त करनेका भी अर्वसर देना चाहिए, ल्जनका ये बि-प्रयोग तनषेध करते िैं। जिां ंएक ओर स्र्वाधीनता की नकारात्र्क पररभाषा करते िुए उसे बि-प्रयोग का अभार्व किा जा सकता िै, र्वािंदूसूरह ओर यि सकारात्र्क रूप से अच्छे जीर्वन का साधन भी िै। यि आत्र्ा की स्र्वतंतिा िै, ल्जसने संस्थाओंको ढािा िै और कफर नये रूप र्ें ढािा िै और िर्ारे जीर्वन तथा सभ्यता को इसके अर्वर्वरार् बदिते िुए रूप प्रदान ककए िैं। र्ानर्व-जातत का इततिास र्नुष्य की अजेय आत्र्ा का जीर्वन िै; इस जीर्वन र्ें अनन्त प्रकार के रूप और अशभव्यल्क्तयां िैं; र्वे सब र्वे र्वर्वशभन्न ढंग िैं ल्जनके द्र्वारा र्ानर्व-प्रकृतत अपने-आपको अपनी आकाक्षांओं और अशभयानों को, अपनी र्ित्वाकांक्षाओं और सफिताओं को, अपनेसंघषों और असफिताओं को व्यक्त करने ेकी चेष्टा करती रिह िै; इन सबके बीच र्ें िोकर र्नुष्य की सृजनिीि आत्र्ा आिा करती रिह िै, घोर प्रयत्न करती रिह िै,

 असफि िोती रिह िै, कफर भी कि शर्ाकर वर्वजय पाती रिह िै, आगे िह बढती रिह िै, कभी भी पीछे न िटकर,
आगे बढने के शिए िह प्रयाप्तिी रिह िै; यि स्वतंआत्र्ा िह र्ानर्व-इततिास का हृदय (प्राण) िै।

अतीत र्ें र्ानर्वीय प्रगतत इस कारण िो पाई कक व्यल्क्तयों ने अपनी सार्ान्य बुद्धध और अन्तःकरण को उन्र्ादग्रस्त यूथ-भार्वना र्ें डुबा देनेसे इनकार कर हदया। जीर्वन प्रततरोध िै; रेत र्ें अपनेपैरों को गिरा गड़ाकर खड़ा िोना िै, ल्जससे धारा बिा न िे जाए।'[66] र्वतर्मान अव्यर्वस्था का एक सबसे गिरा कारण यि िै कक इस सर्य ऐसे नर-नाररयों का अभार्व िै, जो धारा के प्रर्वाि र्ें र्वि जानेसे इनकार कर दें। सारह प्रगतत का श्ेय बबिेषे रूप से प्रततभासम्पन्न व्यल्क्तयों द्र्वारा प्रारम्भ ककए गए नये र्वर्वचारों को िह िै। यहद बौद्धधक स्वाधीनता न िोती तो िेक्सवपयर या गेटे, न्यूटन या फैरैडे, े पाल्स्तयर या शिस्टर का नार् भी न िोता। र्वे यांवत्तक आवर्वष्कार स्वतंत्न व्यल्क्तयों ने ककए, ल्जनके द्र्वारा पूंजीर्वाद और र्वतर्मान राज्यों का अल्स्तत्र्व संभर्व िो सका; जो आवर्वष्कार िोगों को कठोर परररश्र् से छुटकारा हदिातिैं और एक शभन्न नई सार्ाल्जक व्यर्वस्था की तैयारह करते िैं। ककसी भी सर्ाज के र्ूलय को इस दृल्ष्ट से उतना निहं ंनापा जाना चाहिए कक उसर्ें सार्वजमतनक व्यर्वस्था और कायक्षमर्ता ककतनी उच्चकोहट की िै, ल्जतना कक इस दृल्ष्ट से कक उसकी काय-मप्रणािह िोगों को र्वर्वचार और अशभव्यल्क्त की स्र्वतंत्रता ककस सीर्ा तक देती िै, ककस सीर्ा तक नैततक तनणयम को बढार्वा देती िै और अपने सदस्यों की बुद्धध और सद्भार्वना के र्वर्वकास र्ें ककस सीर्ा तक योग देती िै।

यद्यवप कािा मर्ाक्स मका र्त यि निहं ंिै कक व्यल्क्तयों का पक्का दृढ संकलप इततिास के र्ाग मको बदि सकता िै, और यद्यवप उसे पक्का भरोसा िै कक पूंजीर्वादह व्यर्वस्था इततिास के रंगर्ंच से िुप्त िो जाएगी, अत्याचार-पीडड़तों के जानबूझकर ककए गए प्रयत्नों के पररणार्स्र्वरूप निहं, अवपतु इततिास की अतनर्वाय मप्रकक्रया के कारण, कफर भी र्वि िर्से र्वर्वर्वेक के नार् पर अपीि करता िै। प्रकृतत और ऐततिाशसक प्रकक्रया के अन्दर सूक्ष्र् दृल्ष्ट िर्ें सिह र्ाग मकी ओर संकेत कर देती िै। र्नुष्य की भर्वर्वतव्यता यिह िै कक र्वि ऐततिाशसक प्रततकक्रया के अशभप्राय को सर्झे ेऔर अपने-आपको उस अथ मके और अधधक प्रकािन र्ें िगा दे। िर्ारे जीर्वन उस अल्न्तर् क्षिय के शिए साधन बन जानेके कारण र्ान्य बन जाते िैं। िर्ें प्रगततिी र्वग मके साथ तादात्म्य स्थावपत करना चाहिए और उसी के प्रथ-प्रदिनम के अनुसार काय मकरना चाहिए। यद्यवप इस र्वग-मसंघष मर्ें श्शर्क र्वग मकी र्वर्वजय सुतनल्श्चत िै, पर िर् अपने सािस और दृढ संकलप द्र्वारा उसे तनकटतर िा सकतिैं और संर्घ्ष के कािा को अपेक्षाकृत कर् कष्टपूण मबना सकतिैं। यि व्यल्क्त का र्न िह िै, जो सल्ष्ट की प्रकृतत को सर्झ पाता िै। इस प्रकार के र्वर्वचार के कायों र्ें आत्र्ा अपने-आपको सार्ाल्जक सल्ष्ट र्ें अचेतन तलिहनता से पृथक् कर िेती िै। व्यल्क्त सार्ाल्जक सल्ष्ट र्ें पूणतमया कभी र्वर्विहन निहं ंिो सकता।

कफर, यहद व्यल्क्त र्ें अपनी कोई र्वास्तवर्वकता िै िह निहं, तो िर् उससे क्रांततकारह के रूप र्ें आचरण करने ेको कैसे कि सकतिैं? यहद प्रर्वृवृत्तयां ंस्र्वयंहि िोै-अतनर्वायतमा के साथ अपररिाय मिक्ष्यों की ओर िर्ें शिए

---

66 तुिना कील्जए, "जीर्वन र्वर्वश्र्व की पुनरार्वृवृत्तिी यंत्तात्र्क कक्रयावर्वधध के र्वर्वरुद्ध आक्रर्ण िै। " - व्िाइटिेड, 'एडर्वेंचस म ऑफ आइडि' (1934), पृ० 102

धर् मऔर सर्ाज 63 जा रिह िैं, तो िर्से यि किनेका कोई अथ मनिहं ंिै कक िर्् उस िक्ष्य तक पिुंचने ेके शिए काय मकरें। जब र्ाक्स म

र्सिें जान-बूझकर ककए गए कायों द्वारा इन प्रकक्रयाओं को आगे बढानेके शिए किता िै, तो विं व्यल्क्त की र्वास्तवर्वकता को र्ान रिा िोता िै। विं िर्से भार्वी सर्ाज के शिए काय मकरनेको किता िै, अिम्य 'भाग्य के असिाय पीडड़त शिकारों के रूप र्ें निहं, अवपतु एक र्िान काय मर्ें हिस्सा बंटाने र्वािे ल्ज़म्र्ेदार व्यल्क्तयों के रूप र्ें। सर्ाजर्वाद कोई अतनर्वाय मरूप से आनेर्वािि र्वस्तु निहीं। यहद ऐसा िोता, तो सर्ाजर्वादह शसद्धांत और सर्ाजर्वादह पाटी (दि) की कोई आर्वश्यकता िह निहं ंथी। बड़ी र्िा र्ें प्रचार, बबगिु बजाना और नारे िगाना, पचेबाज़ी और खण्डन-र्ण्डन, सब इस बात के सूचक िैं कक र्ानर्वीय काय मस्र्वतः निहीं िोते। यहद र्ाक्सर्वमाहदयों का यि शसद्धांत, कक सर्ाजर्वाद सर्ाज के वर्वकास र्ें अगिा अतनर्वाय मसोपान िै, सच िो, तो इतनी अथक भागदौड की कोई आर्वश्यकता निहं िै। यि सब केर्वि इसशिए आर्वश्यक िै क्योंकक र्वे िोगों को अपनेर्त र्ें दहक्षक्षत करना चािते िैं। प्रचार इस उद्देश्य से ककया जाता िै कक िर्ारह चेतना पर प्रभार्व डिो; और कफर उसका प्रभार्व िर्ारे अल्स्तत्र्व पर पड़ेगा।

साम्यर्वाद (कम्युतनज़्र्) के वर्वरुद्ध यि आक्षेप ककया गया िै कक यि िर्ें िर्ारह संस्कृतत से र्वंधचत कर देगा; इस आक्षेप का उत्तर देते िुए कम्युतनस्ट र्ैनीफैस्टो (घोषणापत्र) र्ें किा गया िै, "विं संस्कृतत, ल्जसके नाि पर इतना िोक ककया जा रिा िै, एक बिुत िह बड़ी बिुसंख्या के शिए एक यंत्र की तरि काय मकरने का प्रशिक्षण-र्ात्र िै।" र्ाक्स मयि निहंसर्झता वर्वख्या के केर्वि एक यत्न िै, या यि कक सार्ाल्जक सत्युग बबना र्ानर्वीय प्रयत्न के िह आ जाएगा। जय बार्वक्स मउस पूंजीर्वादह सर्ाज के वर्वरुद्ध आर्वाज उठाता िै, जो श्रर्जीवर्वयों की र्नुष्यता को नष्ट कर देता िै, जब विं उस धर् मकी तनन्दा करता िै, जो उन अन्यायपूण मदिाओं ंका पृष्ठ-पोषण करता िै और उन्िें पवर्वत्र बताता िै, ल्जनर्ें कार्गरों से दासों और भारर्वािि पिुओंसे भी बुरा बतार्वम ककया जाता िै, तो विं व्यल्क्त की र्वास्तवर्वकता को िह र्ित्र्व दे रिा िोता िै। ककसी भी व्यल्क्त को अपनेखाने, पिनने ेऔर र्कान प्राप्त करने ेके अधधकार से कदावप र्वंधचत निहं ककया जा सकता। क्योंकक आधथकम व्यल्ष्टर्वाद इस प्रकार का सर्ाज तैयार करने ेर्ें असफि रिा िै, इसशिए र्ाक्स मस्र्वैर तंत्र (िैस्से फेयर) की जो तनन्दा करता िै, विं ठीक िह करता िै। परन्तु एक आंशिक सत्य को उठाकर सम्पूण मसत्य का स्थान निहं हदया जा सकता। जब एक बार भौततक आर्वश्यकताएं पूरह िो जाएं, तो व्यल्क्त को सोचनेऔर जो कुछ विं सोचता िै, उसे किने का अर्वसर शर्िना चाहिए; और यहद उसका र्न िो, तो उसे स्र्वतंत्रतापूर्वकम सत्य की खोज करने का या सौंदय मका सृजन करने ेका अर्वसर शर्िना चाहिए। कुछ चीजें ऐसी िैं, ल्जनके अभार्व र्ें िर्् जी निहं सकते; और कुछ अन्य र्वस्तुएं ऐसी िैं, ल्जनके अभार्व र्ें िर्ें जीनेका कोई आग्रि निहीं िोगा। प्रजातंत्रीय सर्ाज, एकर्ात्र जो अपने-आपको सभ्य कि सकता िै, "अन्य सब स्र्वतंत्रताओं से बढकर जानने ेकी, बोिने की और अपनेअन्तःकरण के अनुसार स्र्वतन्त्र रूप से तकम-वर्वतकम करनेकी स्र्वतन्त्रता" पर आधाररत िोता िै। प्रेशसडेण्ट रूज़र्वेलट ने जब यि घोषणा की थी कक भवर्वष्य की गत्र्वर (गततविती) व्यर्वस्था के संगहठत प्रयत्न इस हदिा र्ें िोने ेचाहिएं कक र्वाणी की स्र्वतन्त्रता, उपासना की स्र्वतंत्रता, अभार्व से स्र्वतंत्रता और भय से स्र्वतंत्रता को स्थावपत ककया जा सके, और उसे

सुरक्षक्षत रखा जा सके, तब उसने इसी स्थापना को वर्वकशसत ककया था।'[67] स्वतंत्रता सर्ाज र्ें ककसी भी व्यल्क्त का और राष्ट्रों के ण्र्डि र्ें ककसी भी राज्य का आत्र्तनणयम का अधधकार ि◌ै। इसकी एकर्ात्र सीर्ा प्रत्येक दूसूरे व्यल्क्त के या राज्य के उसी पररणार् र्ें आत्र्तनणयम के अधधकार द्वारा तनयत ि◌ोती ि◌ै। इस स्वतंत्रता के अभार्व र्ें, ि◌र्ारे पास और चिो कुछ भी क्यों न ि◌ो, ि◌र् तनजीर्व ि◌ैं।

राज्यों और राष्ट्रों के, जो कक बढते-घटतेरिते ि◌ैं, सम्बन्ध र्ें अल्न्तर् या ि◌ाश्र्वत कुछ भी र्वात निहं ि◌ै। परन्तु दहन से दहन व्यल्क्त र्ें भी आत्र्ा की र्वि धचनगारह र्वद्यर्ान रिती ि◌ै, ल्जसे ि◌िल्क्तिाह से ि◌िल्क्तिाह साम्राज्य भी कुचि निहं सकते। ि◌र् सबका र्ूि एक ि◌ह जीर्वन र्ें ि◌ै, और ि◌र् सब एक ि◌ह ि◌ह्र् के अंि ि◌ैं, अर्रता के पुत्र, अर्ृतस्य पुत्रा:।'[68] इन आनन्दिहन हदनों र्ें ि◌र्ें अपनेर्नों को सब युगों के श्रेष्ठ पुरुषों के र्ान र्वचनों और र्वीरत्र्वपूण मकायों द्र्वारा सबि बनाना चाहिए। संभर्व ि◌ै कक ऐसा प्रतीत ि◌ो कक ि◌र् इस सर्य पराजय के किा र्ें ि◌ैं, परन्तुयि पराजय भी गौरर्व और इच्छा की तीव्रता से ि◌ून्य निहं ि◌ै। र्नुष्य की भार्वना के धचरस्थायी प्रभुत्र्व र्ें र्वर्वश्र्वास ि◌ह र्वि प्रकिा ि◌ै, ल्जसके सिारे ि◌र् र्ृत्यु की छाया की घाटह तक र्ें बबना ि◌ड़खड़ाए चिते रि सकते ि◌ैं।

यहद सभ्यता को जीर्वर्वत बचाना ि◌ै, तो ि◌र्ें यि स्र्वीकार करना ि◌ोगा कक इसका (सभ्यता का) सार ि◌ल्क्त, यि, सबिता, सम्पवत्त और प्रततष्ठा र्ें निहं ि◌ै, अवपतु र्ानर्व-र्न की स्र्वतंत्न गततवर्वधध र्ें, नैततक सद्गुणों की र्वृद्धध र्ें, सुरुधच के र्वर्वकास और जीने की किा र्ें तनपुणता प्राप्त करने र्ें ि◌ै। र्ाक्स मने धर् मकी तनन्दा करते ि◌ुए किा ि◌ै कक यि एक सार्ाल्जक प्रतीतत-र्ान ि◌ै, जो सार्ाल्जक अपूणतमाओं की क्षततपूतत मकरती ि◌ै। परन्तु कुछ ऐसे अिम्य र्ानर्वीय अनुभर्व ि◌ैं, जैसे जन्र्, प्रेर् और र्ृत्यु, जो सारतः र्वैयल्क्तक ि◌ैं। अधधकतर् पूण मआधथकम न्याय की या पाधथर्वम सत्युग की स्थापना भी ि◌र्ारे कुछ तीव्रतर् दु◌ुःखों को सर्ाप्त निहं कर सकती। सार्ाल्जक स्र्वाशर्त्र्व की स्थापना या उत्पादनों के साधनों पर तनयंत्रण से र्ानर्वीय स्र्वाथ मया र्ूखतमा को और र्ानर्वीय आत्र्ा के तनार्व को सर्ाप्त निहं ◌ंककया जा सकता। र्ाक्स मअर्वश्य ि◌ह उन बुराइयों की, जो सार्ाल्जक व्यर्वस्था की निहं, अवपतु र्ानर्व-प्रकृतत की ि◌ैं, 'क्षततपूतत' के रूप र्ें धर् मके र्ूलय को अस्र्वीकार निहं ◌ंकरेगा। सार्ाल्जक क्राल्न्त अपने-आपर्ें ि◌र्ारे सर्ाज के अव्यर्वल्स्थत अपक्षय को रोक पाने र्ें असर्थ मिै। जीर्वन के र्ानर्वीर्ूलय िीतिेजाने से यि ि◌र्ारह रक्षा निहं ◌ंकर सकती।

---

67 प्रेशसडटें रूजर्वेलट ने कांग्रेस के नार् अपने संदेर्ें र्ें किा था, "एक स्र्वस्थ और सबि प्रजातन्त की नींर्वों के सम्बन्ध र्ें रिस्यर्य कुछ भी निहं ◌ंि◌ै। ि◌र्ारह जनता अपनी राजनीतत और सार्ाल्जक व्यर्वस्थाओंसे र्ूि र्वस्तुओंकी आिा करती ि◌ै, र्वे बबिकुि सीधी-सादह ि◌ैं : र्वे ि◌ैं : युर्वकों तथा अन्य ि◌ोगों को उन्नतत के शिए अर्वसर की सर्ानता। जो ि◌ोग कार् कर सकते ि◌ैं, उनके शिए कार्। उन ि◌ोगों के शिए सुरक्षा, ल्जन्िें उसकी आर्वश्यकता ि◌ै। कुछ थोड़े–से ि◌ोगों के शिए साधारण र्वर्विेषाधधकारों की सर्ाल्प्त। सब ि◌ोगों के शिए नागररक स्र्वतन्त्रताओं ◌ंका संरक्षण। र्वैज्ञातनक प्रगतत के फिों का र्वर्वस्तृततर सर्ाज द्र्वारा उपभोग और रिन-सिन के स्तर र्ें तनरन्तर उन्नतत, यि कोई सुदूर सत्युग का स्र्वप्न निहं ि◌ै। यि एक उस प्रकार के संसार का सुतनल्श्चत आधार ि◌ै, ल्जसे ि◌र्ारे सर्य र्ें ि◌ह और ि◌र्ारह पीढह र्ें ि◌ह प्राप्त ककया जा सकता ि◌ै।" - 15 जनर्वरह, 1941

68 दिो देर्वाियः प्रोक्तः यो जीर्वः स सदाशिर्वः ।

धचन्तन बनार् कर् म

जब ि्र् यि र्ान िेते िैं कक व्यल्क्त के जीर्वन का एक र्ित्त्वपूण मपक्ष ऐसा भी िै, जो उसके केर्वि अपने हि प्रतत िै; जब र्नुष्य अपने-आपको अधधकतर् स्पष्टर्वाहदता के साथ प्रकट कर रिे िोते िैं, तब भी कुछ र्वस्तु ऐसी रि जाती िै, जो और भी परे और पिुंच के बािर िोती िै, एक स्वप्न, ल्जसर्ें औरों के साथ हिस्सा निहं बंटाया गया िोता, एक अटूट शर्तभावषता; जो कुछ ि्र् किते या करते िैं, यिां तक कक ि्र् जो कुछ एकान्त र्ें सोचते िैं, ल्जसर्ें कक ि्र् जो कुछ िैं, उसका तनर्वास िै, उसके भी पीछे कुछ र्वस्तु बच जाती िै तो इससे अतनर्वाय मपररणार् यि तनकिता िै कक ि्र्ारे जीर्वन के इस पक्ष से सम्बद्ध कुछ गततवर्वधधयां भी अर्वश्य िोंगी। ि्र् सर्ाज र्ें सकक्रय रिते िैं, परन्तु ि्र् एकान्तसेर्वी भी िैं धचन्तर्निी, जो अल्स्तत्र्व के उग्र ज्र्वर से तनकिकर बारम्बार आत्र्-शर्न की िाल्न्त र्ें डूब जाते िैं। जब ि्र् अपनी दृल्ष्ट को अन्तर्ुखम कर िेते िैं, तो ि्र् बाह्य घटनाओं और जीर्वन की उतेतेजनाओं की अपेक्षा आन्तररक जीर्वन के रिस्यों र्ें अधधक आनन्द िेने िगते िैं। उपतनषद् का कथन िै कक "आत्र् ने जन्र् िेकर इल्न्द्रयों को बहिर्ुखम कर हदया िै। इसीसे व्यल्क्त को बािर की र्वस्तुएं िह दहखती िैं, आन्तररक आत्र् निहं। परन्तु कोई एक, जो बुद्धधर्ान िोता िै और िाश्र्वत जीर्वन का अशभिाषी िोता िै, अपनी दृल्ष्ट को अन्तर्ुखम करके आन्तररक आत्र्ा को देखता िै।"[69] आन्तररक ध्यान िह आध्याल्त्र्क अन्तदृल्मष्ट की ओर िे जाने र्वािा र्ाग मिै।70

---

69 कठोपतनषद्, 2-4

70 प्िहटनस शिखता िै, "... परन्तु ि्र् करें क्या? र्ाग मिै ककधर ? ि्र् उस अप्राप्य सौन्दय मकी झिक ककस प्रकार पा सकते िैं, जो र्ानो सार्ान्य र्ागों से, जिांकक सब िोग, यिां तक कक अपवर्वत्र िोग भी उसे देख सकतिैं, दूरू पवर्वत्त स्थानों र्ें तनर्वास करता जान पड़ता िै?... तो आओ, ि्र् वपतृ ृभूशर् की ओर भाग चिें। परन्तु उसके शिए ि्र्ारा र्ाग मकौन-सा िोगा? ि्र्ारे भाग चिने का तरहका क्या िोगा? यि यात्रा पैरों द्र्वारा िोनेर्वािह निहं िै; पैर ि्र्ें केर्वि एक देि से दूसूरे देि तक िह िे जा सकते िैं। तुर््िें र्वस्तुओं की इस र्वतर्मान व्यर्वस्था को एक ओर अिग िटा देना िोगा। तुर््िें आंखें बन्द करनी िोंगी और एक दूसूरह िह झिक देखनेका यत्न करना िोगा, जो ि्र् सबका जन्र्जात अधधकार िै, पर ल्जसका उपयोग करने की ओर बिुत थोड़े िे प्रर्वृतूत िोते िैं।

"अपने-आपको र्वापस िौटा िो, और देखो...। र्वैसै िह करो जैसेकक एक प्रततर्ा को गढनेर्वािा शिलपी करता िै, ल्जसे कक र्वि खूब सुन्दर बनाना चािता िै। र्वि किहंखोदता िै, किहं िंति धचकना करता िै, ककसी रेखा को कुछ िलका करता िै, ककसीको कुछ और साफ करता िै; ऐसा र्वि तब तक करता रिता िै, जब तक कक उसकी कृतत पर एक सुन्दर र्ुख उभर निहं आता। इसी प्रकार तुर् भी करो; जो भी कुछ अनार्वश्यक िै, उसे काटकर फेंक दो, जो कुछ टेढा-र्ेढा या कुहटि िै, उसे सीधा कर दो; जो कुछ आच्छन्न या धुंधिा िै, उसपर प्रकाि डािो, संपूण मर्ूतत मको सौन्दय मकी एक दर्क बनाने के शिए प्रयत्न करो और अपनी इस र्ूतत मकी कांट-छांट तब तक बन्द र्त करो, जब तक कक तुर््िें एक तनष्कंिक र्ल्न्दर र्ें सर्वतमः पूण मदेर्वी हदखाई न पड़ने िगे।

"केर्वि यिह आंख िै जो उस र्िान सौन्दय मको देख सकती िै। यहद र्वि आंख, जो ि्र्ारह दृल्ष्ट को चिाती िै, ककसी दोष के कारण धुंधिह, अस्र्वच्छ या कर्ज़ोर िो जाए, तो र्वि कुछ निहं िेदेख सकती। प्रत्येक दृश्य को देखनेके शिए एक ऐसी

पास्कि ने किा था कक जीर्वन की अधधकांश बुराइयां ंर्नुष्य की एक करें र्ें शान्त िोकर बैठ पाने की असर्थतमा से उत्पन्न िोती िैं। यहद िर् केर्वि शांत िोकर बैठ पाना सीख िें, तो िर् किहंअधधक अच्छी तरि यि जान सकेंगे कक ककस ढंग से काय मकरना सर्वोत्तर् िोगा। र्वे सब बड़ी-बड़ी सफिताएं, ल्जन पर र्ानर्व-जातत को गर्व मिै, उन िोगों की कृततयां ंिैं, जो बैठे और अतत सूक्ष्र् र्वस्तुओंका या आकाश के ग्रि-नक्षत्तों की गततयों का धचन्तन करते रिे। र्वे धचंतंशीनी िोग िि िैं, शोसी, अपररधचत, र्वे ोतनकम्र्े िोग, जो तारों की ओर देखना छोड़ कर एक कुएं र्ें जा घुसते िैं, ल्जन्िें िर्ारहि सुर्वर्वधाओंऔर आनन्द का श्रेय िै।

जब धर् मधचन्तन पर बि देता िै, तो र्वि केर्वि यि संकेत करने के शिए कक र्ानर्वीय जीर्वन की कुछ अन्तरंगतर् पर्वर्वत्नताएं ऐसी िैं, ल्जन्िें सुरक्षक्षत बनाए रखा जाना चाहिए। जीर्वन का उद्देश्य पृथ्र्वी पर आहिदिमोक उतार िाना िि निहं ंिै, अवपतु एक उच्चतर और तीव्रतर प्रकार की चेतना प्राप्त करना िै। शिर्व, बुद्ध तथा अन्य सैकड़ों सन्तों के धचत्न प्िेटो द्र्वारा और अरस्तू ूद्र्वारा भी ग्रिण ककए गए इस सत्य के पररचायक िैं कक र्नुष्य का सर्वोच्ध िक्ष्य धचन्तन, स्र्वतन्त्रता और बुद्धध की िाल्न्त िै।

र्ाक्स मधर् मऔर दातमनक आदिर्वमाद को अशभन्न र्ान िेता िै और किता िै कक “अब तक दातमनकों ने इस संसार की व्याख्या अनेक रूपों र्ें की िै। पर असिह कार् इस (संसार) को बदिना िै।"[71] र्ाक्स मके अनुयायी उसके इस र्वर्वचार का स्पष्टहकरण करते िुए किते िैं कक यि इस बात का द्योतक िै कक दिनम को जीर्वन से पृथक् ककया जाना चाहिए, शसद्धान्त को व्यर्विार से। र्ाक्स मउस भांर्वसर्ाधध के, ल्जसर्ें रिस्यर्वाद की अल्न्तर् पररणतत बताई जाती िै, र्वर्वरोध र्ें कर् मका सर्थनम करता िै। अपने-आपको सार-जगत् ्के धचन्तन र्ें िीन करने के बजाय िर्ें सुतनल्श्चत और ऐततिाशसक अल्स्तत्र्वों के जगत् ्र्ें कर् मकरने र्ें जुट जाना चाहिए। 'फ्यूअरबाख पर अपनेआठर्वें प्रबन्ध' र्ें र्ाक्स मकिता िै, "उन सारे रिस्यों का, जो रिस्यर्वाद के शसद्धान्त को चिाते िैं, बुद्धधसंगत सर्ाधान र्ानर्वीय कर् मर्ें और उस कर् मको सर्झनेर्ें िि िै।"

इसके अततररक्त, धर् मिोगों की जीर्वन-सम्बन्धी र्ान्यताओं के र्ानदण्डों को उिट-पिट देता िै। उन सब चीज़ों को, जो प्रकृतत की सिजर्वृत्तयों के अनुसार र्वतर्मान दृश्य-जीर्वन र्ें र्ूलयर्वान सर्झी जाती िै, सत्ता और र्वर्विास को, सम्पवत्त और यि को, धर् मघृणा की दृल्ष्ट से देखता िै। ल्जन र्वस्तुओं से दुतनया घृणा करती िै और ल्जन्िें नीत्रो दासता की र्वर्विेषताएं किता िै, आज्ञा-पािन और नम्रता, दररद्रता और संयर्, उन्िें धर् मपरिोक र्ें सुख प्राप्त करने ेका अचूक साधन बताता िै। र्नुष्य की रुधच इल्न्द्रय-ग्राह्य र्वास्तवर्वक जगत् ्से िटाकर दूसरे उस जगत् ्की ओर फेर दह जाती िै, ल्जसकी कलपना धाशर्कम स्फुरणाओं (शिशिर्ों) के बि पर की गई िै। जो भी

आंख िानी िोगी जो दिनमीय र्वस्तु के अनुकूि िो और उससे कुछ शर्ती-जुिती िो। आंख सूय मको तब तक निहं देख सकती थी, जब तक कक यि पििे सूय मके सदृ निहं ंिो गई; और आत्र्ा भी तब तक सर्वर्वोच्च सौन्दय मकी झिक निहं ंपा सकती, जब तक कक पििे यि स्र्वयं ंसुन्दर न बन जाए।"

- अलफ्रेड नोयस, 'हद िास्ट रैन' (1940), पृष्ठ 150-151

71 फ्यूअरबाख के र्वर्वरुद्ध प्रबन्ध

कोई इस पृथ्र्वी पर जीर्वन की दिाओं ंको सुधारने ेका यत्न करता ि ै, उसे िि ्रह और दुतुनयादारह र्ें फंसा ि ुआ बताया जाता ि ै।

र्ाक्स मको इस बात का ध्यान ि ै कक अन्य धर्ों की भांतत ईसाई धर् मभी गरहबों और अत्याचार-पीडड़तों की अपेक्षाकृत अच्छे जीर्वन की आिा से ि ाभ उठाता ि ै। यहद इस जीर्वन के अन्याय ि ह सब कुछ ि ों, तो जीर्वन का कुछ अथ मिह निहंरिेगा। इसशिए धर् मपरर्ात्र्ा के राज्य की धारणा प्रस्तुत करते ि ैं; उस परर्ात्र्ा के राज्य र्ें र्ृत्यु के बाद गरहब और अत्याचार पीडड़त ि ोग धतनकों और आरार् से रिनेर्वािों की अपेक्षा किहं ंअधधक सरिता से प्रर्वर्वष्ट ि ो सकेंगे। र्रणोपरान्त न्याय के र्वर्वषय र्ें केर्वि इस प्रकार का र्वर्वश्र्वास ि ह पृथ्र्वी पर ि र्ारे र्वतर्मान जीर्वन का कुछ औधचत्य बता सकता ि ै। इसशिए र्ाक्स मआिोचना करते ि ुए किता ि ै, "धर् मपीडड़त प्राणी की शससकी ि ै, एक हृदयिहन संसार का हृदय ि ै और तनतान्त आत्र्ििन दिाओं की आत्र्ा ि ै। यि गरहबों की अफीर् ि ै।"[72] "परर्ात्र्ा की धारणा ि ह र्वर्वकृत सभ्यता की केन्द्र बि ंदु ि ै" र्ाक्स मकिता ि ै, "धर् मका, जो एक भ्रार्क कालपतनक आनन्द देता ि ै, चुकी केन्द्र बि ंदु र्वर्वक आनन्द के दार्वे की स्थापना करना ि ै।"[73] पेंल्जलस किता ि ै कक "धर् मका बि ंदु ि दद ि ह झूठ ि ोता ि ै।" ि ेतनन ने शिखा ि ै कक "धर् मआत्र्क अत्याचार का ि ह एक फि ि ोता ि ै। िोषकों के र्वर्वरुद्ध संघष मर्ें ि ोवषतों की असिायता अतनर्वाय मरूप से र्ृत्यु के पश्चात् ्उत्कृष्टतर जीर्वन र्ें र्वर्वश्र्वास को जन्र् देती ि ै। उन ि ोगों को जो सारे जीर्वन परश्रर् करते ि ैं और कफर भी तंगी र्ें जीर्वन बबताते ि ैं, धर् मर्वर्वनम्रता और धैय मकी शिक्षा देता ि ै और उन्िें स्र्वग मर्ें पुरस्कार शर्िने की आिा द्र्वारा उनके आंसू पोंछता ि ै। परर्ात्र्ा और पारिौककक जीर्वन र्ें र्वर्वश्र्वास आदिों के प्रतत तनष्ठा की ओर से ध्यान को दूसरह ओर बेटा देते ि ैं।

ये हटप्पखणयां भी धर् मकी, र्वर्वर्वेक की ओर सिानुभूतत की भार्वना से ि ीन्र्य निहं ि ैं। इस पृथ्र्वी के उत्तराधधकार से र्वंधचत ि ोग भौततक सुख और सुर्वर्वधा के जीर्वन के शिए परिोक की और क्यों ताकें? यंत्रों द्र्वारा उत्पादन की तकनीक के कारण यि संभर्व ि ो गया ि ै कक पृथ्र्वी पर ि ह सब ि ोग पि िे की अपेक्षा भिा जीर्वन बबता सकें। यहद केर्वि शसद्धान्तात्र्क धर् मकी जकड़ ककसी प्रकार ढहिह ि ो जाए, तो र्वे र्वंधचत नर-नारह ल्जनके पास न सम्पवत्त ि ै, न भवर्वष्य के शिए सुरक्षा, उन पूंजीपततयों के र्वर्वरुद्ध र्वर्वद्रोि कर देंगे, जो अपने साथी र्नुष्यों के कलयाण के प्रतत इतने उत्तरदातयत्र्विीन्र्य ि ैं कक र्वे न्यूनतर् र्वेतन पर उनका उपयोग करते ि ैं और जब उनसे कार् तनकि चुकता ि ै, तो उन्िें उठाकर कूड़े ेके ढेर पर फेंक देते ि ैं। धर्,म र्ानर्वीय भ्रातृत्र्व को कक्रयाल्न्र्वत करने के बजाय ि र्ें परतन्त्रता के आगे झुकने को क्यों किे? एक धाशर्कम कलपनिाल्क्त के सुर्ेिन प्रयत्न द्र्वारा र्ाक्स म इस बात को देखता ि ै और अनुभर्व करता ि ै कक र्ानर्व-सर्ाज एक ि ह जैर्व (संजीर्व) सल्र्ष्ट ि ै और र्वि आधधदैर्वर्वक, परिोकपरक धर् मका र्वर्वरोध करने ेका प्रयत्न करता ि ै। पूंजीर्वादह व्यर्वस्था के र्वर्विाि से, तकमसंगत रूप से उन सब संस्थाओं, र्वर्वचारों और पद्धततयों का र्ूिोच्छेद ि ो जाएगा, ल्जनके द्र्वारा जन-साधारण को बिकाकर दास बनाया गया था।

---

72 जे० एर्० र्रहका अंग्रेजी अनुर्वाद। देखखए उसकी पुस्तक 'हद डडफेंस ऑफ डडर्ोक्रेसी ' (1939) पृष्ठ 38

73 'न्र्वों पाटी,' 1884

र्ाक्स मइस स्थापना को अस्वीकार करता ि ै कक वर्वचार इततिास के गततपथ पर तनयंत्रण रखते िैं। यि ठीक ि ै कक ल्जस र्वस्तु से इततिास का तनर्ामण िोता ि,ै र्वि र्वर्विुद्ध र्वचार निहं ंि,ै अवपतु र्वि र्वचार ि,ै जो अपने-आपको व्यार्विाररक सर्स्याओं पर िाग ू करता िै। र्वचार की अन्तर्वस्मतुभी िह सार्ाल्जक िो, ककन्तु र्वचार को स्र्वयंसार्ाल्जक उपज निहं ंिोना चाहिए। इसे तो तनष्पक्ष धचन्तन की िह उपज िोना िोगा। र्वे र्िान र्वचार, जो सम्पूण मसंसार को आन्दोशित करते िैं और चररत्न को उन्नत करते िैं, िायद िह कभी सकक्रय सार्वजमतनक कायमकमताओं की देन िोत ि ैं। र्वे तो कर्वयों और र्वचारकों, किाकारों और धर् मप्रचारकों की देन िोतिैं। उनकी स्फुरणा एकान्त और धचन्तन र्ें िोती ि ै और उनके शिए एक ऐसी आत्प्रूणतमा और र्न की स्र्वतन्त्रता की अपेक्षा रिती ि,ै ल्जसे प्राप्त कर पाने की, सार्वजमतनक जीर्वन के दबार्व और तनार्व के नीचेरिनेर्वािे सार्वजमतनक कायकमताम िायद िह कभी आिा कर सकतिैं।

र्वचार कर् मका सार िै। प्रारम्भ र्ें केर्वि िदद था और िदद से िह यि िाड़र्ांस बना। दिनम इततिास बन जाता ि ै और संस्कृतत सभ्यता। यूनानी सभ्यता की रचना र्ें प्िेटो और अरस्तू ूने र्ित्त्र्वपूण मयोग हदया। 1642 र्ें िॉदिस ने गृियुद्ध को और 1688 र्ें िॉक ने क्रांतत को प्रेरणा दह। फ्रांसीसी क्रांतत र्वॉल्टेयर, रूसो तथा र्वश्र्व-ज्ञान-कोषिेखकों (ऐनसाइक्िोपीडडस्ट) की र्वचारधारा का पररणार् थी। दितमनक आर्ूि पररर्वतनमर्वाहदयों, बैन्थर् और शर्ि, ने उन्नीसर्वीं िताददह के उदार कायक्रमर् को प्रेरणा दह। र्ाक्स मस्र्वयंभी ऐततिाशसक प्रकक्रया की एक व्याख्या प्रस्तुत करता िै; और सब व्याख्याएं संसार को बदिने के इरादे से िह प्रस्तुत की जाती िैं। जीर्वन आदिों से िाशसत रिता ि ै और सब क्रांततकारह आंदोिनों की पृष्ठभूशर् र्ें र्वचारधाराएं (दिनम) काय मकरती रिह िैं। िर् जो कुछ सोचते िैं, उसीके पररणार् िर् िैं। दितमनक िोग भवर्वष्य के स्रष्टा िोते िैं। दिनम का कार् केर्वि जीर्वन की व्याख्या प्रस्तुत कर देना निहं ंिै, अवपतु उसे दृल्ष्ट प्रदान करना और र्ाग महदखाना भी िै।'[74] ध्यान-प्राथनमा और जीर्वन एक-दूसरे से पृथृक् र्वस्तुएं िैं, एक-दूसरे की वर्वरोधी निहं। उन दोनों का अल्स्तत्र्व साथ-साथ रि सकता िै।75 र्वे एक-दूसरे की ओर संकेत करती िैं और साथ-साथ काय मकरती िैं। कफर, यहद िर् अपने-आपको न बदिें, तो िर् सर्ाज-व्यर्वस्था को बदि निहंसकते। िर्ारह सर्ाज- व्यर्वस्था उन िोगों के चररत्न के अनुसार िह उच्च या तनम्न िोती िै, ल्जनसे शर्िकर र्वि बनी िै। एक अधधक प्रभार्वी सर्ाज-व्यर्वस्था का अथ मिै- एक वर्वशभन्न प्रकार के र्नुष्य। जीर्वन की कोहट (ककस्र्) को बदिनेके शिए िर्ें नया जन्र् ग्रिण करना िोगा। धर् मकेर्वि इसशिए

74 तुिना कील्जए, "कुछ िोग ऐसेिैं और र् ैंभी उनर्ें से एक िूं- जो सर्झतेिैं कक अब भी ककसे र्नुष्य के सम्बन्धों र्ें सबसे अधधक व्यार्विाररक और र्ित्त्र्वपूण मबात वर्वश्र्व के सम्बन्ध र्ें उसका दृल्ष्टकोण िह िै। िर् सर्झतेिैं कक र्कान-र्ाशिकन के शिए अपनेककरायेदार के सम्बन्ध र्ें र्वचार करते िुए उसकी आप को जानना र्ित्त्र्वपूण मिै, पर उससे भी अधधक र्ित्त्र्वपूण म िै उसकी र्वचारधारा को जानना। िर् सर्झते िैं कक ककसे भी सेनापतत के शिए रातु से िड़नेके र्वास्ते ेरातु की संख्या को जानना र्ित्त्र्वपूण मिै, परन्तु उससे भी अधधक र्ित्त्र्वपूण मिै िातु की र्वचारधारा को जानना। िर् सर्झते िैं कक प्रश्न यि निहं िैकक वर्वश्र्व का शसद्धांत र्ार्िों पर प्रभार्व डािता ि ै या निहं, अवपतु प्रश्न यि ि ै कक अन्ततोगत्र्वा कोई अन्य र्वस्तुभी उनपर प्रभार्व डािती िै। निहं।"- चेस्टटमन

75 "दो परस्पर शभन्न धारणाएं शभन्न िोते िुए भी एक-दूसरे से शर्िकर एक िो सकती िैं, परन्तु दो वर्वरो धारणाएं एक-दूसरे को सर्ाप्त िह करती प्रतीत िोती िै, (अथात्म ्जिांएक रिेगी, र्वि दूसरह निहं ंरि सकेगी।। क्रोचे,े 'कफिासफी ऑफ िॉशिक', अंग्रेजी अनुर्वाद (1915)

।

असफि ोे गए कक र्नेउन्र्ें गम्भीरतापूर्वकम ग्रिण निहं ककया। उनका रु्ख्य उद्देश्य ि र्नुष का पुनतनर्माणम अपनी र्नर्ानी, अि भार्वना, अपनी िह बाज़ी चिते जाने का िठ, अपनी िह सौदेबाज़ी र्ें िगे रिना, और दूसरों को बुद्धू बनाकर अपना उलूिसीधा करना, ये िह सारह वर्वफिता के कारण िैं। तनःस्वाथतमा, पड़ोसी के प्रतत प्रेर् और सियोग इस वर्वफिता से बचनेके उपाय िैं। िर्ें से ककतने िोग िैं, ल्जन्िोंने तनःस्वाथतमा के तनयर् का पािन ककया ि या पािन करनेकी कोशिि भी की िै। यहद बिुत थोड़े–से िोगों की प्रर्वृवृत्त िह इस ओर रिह िो, तो र् स्वाथपमरता के पुंज के बारे र्ें क्या कि सकतेिैं? िर्ें बचाने के शिए केर्वि ज्ञान िह काफी निहं िै। उसके शिए कठोर अनुिासन, ल्जसर्ें आत्र्वर्वश्िेषण और सर्पणम भी सल्म्र्शित िै, आर्वश्यक िै। र्ानर्व-व्यल्क्त प्रकाि और छाया का, ज्ञान और अज्ञान का शर्िन-स्थि िै। उसके रूप र्ें िह्र् ने िरहर का र्वस्त्र धारण कर शिया िै। सच्चा अल्स्तत्र्व र्वैयल्क्तक अल्स्तत्र्व की आर्वश्यकता से सीशर्त िो गया िै। दो प्रर्वृवृत्तयां, एक तो पृथक् (एकान्त) र्वैयल्क्तक जीर्वन की ओर और दूसरह एकता और सार्वभमौर्ता की ओर परस्पर संघष मकर रिह िैं। इन दोनों का रे् बबठाना िह र्वि सर्स्या िै, जो िर्ारे सम्र्ुख रखी गई ि और ल्जसे िि करने के शिए अनेक कहठनाइयों और कष्टों, रक्त और आंसुओं को सिना िोगा।'[76] धचन्तिनी रिस्यर्वादह संसार को सम्र्ोहित करके तनद्रा या जागररत स्वप्न र्ें निहं िसिा देते। र्वे भी र्ारधाड़ से ऊपर उठे िुए निहं िैं। सांसाररक व्यर्वस्था के सम्बन्ध र्ें र्वे प्रायः युद्धवप्रय िोतेिैं। र्वे दुतुनयादारह र्ें फंसे िुए िोगों की अपेक्षा किहंअधधक स्पष्ट करनेर्विह और रचनात्र्क प्रयोजन की तीव्रता के साथ काय मकरते िैं। उन धाशर्कम र्िापुरुषों की िानदार परम्परा पर दृल्ष्ट डाशिए, ल्जन्िोंने न केर्वि धाशर्कम संघों की स्थापना की, अवपतु शिक्षा, और रोधगयों की देखभाि जैसे व्यार्विाररक राजनीतत के वर्वषयों पर भी बिुत स्वस्थ प्रभार्व डािा।

र्ाक्स मने धर् मको परिोकपरक बताकर जो उसकी तनन्दा की िै, र्वि धर् मके कुछ एकपक्षीय दृल्ष्टकोणों के वर्वषय र्ें उधचत िै। भिे िह धर् मके र्वास्तवर्वक जीर्वन का सम्बन्ध िाश्र्वततक व्यर्वस्था से िो, कफर भी, क्योंकक र् िोग तो पाधथर्वम और ऐहिक व्यर्वस्था के सदस्य िैं, इसशिए िर् अपनी ल्ज़म्र्ेदाररयों से बच निहंसकते। िर् आत्र्ाएं अर्वश्य िैं, ककन्तु सिरहर िैं, और िर्ें, अपनेआसपास की दिाओं को स्वीकार करके चिना िोगा। िर्ें अपनेिरहरों को तनष्फि निहंकरना िै, जो एक साधन िै, ल्जसके द्र्वारा िर् संसार की चेतना को ग्रिण करते ि और संसार का आनन्द िेते िैं। अधधक अच्छी तरि देखनेके शिए िर्ें अपनी आंखों को तनकाि फेंकने की आर्वश्यकता निहं। स्र्वग मप्राप्त करने के शिए यि आर्वश्यक निहं ि कक िर् इल्न्द्रयों को र्ृतप्राय कर दें या र्न को र्ारकर बैठ जाएं। िारहररक आनन्द एक पवर्वत्र िक्ष्य िै। यजुर्वेद र्ें भी किा िै, "िर् सौ र्वष मल्जएं - ऐसा

76 "अपने अन्दर दोनों को शर्िाकर एक नया र्नुष्य बनने के शिए और इस प्रकार िाल्न्त स्थावपत करने के शिए; और इसशिए कक र्वि उन दोनों को एक िरहर र्ें क्रास द्र्वारा, अपने अन्दर वर्वद्यर्ान ित्रुता को सर्ाप्त करके परर्ात्र्ा र्ें शर्िा सके।" - सटें पाि, 'एफैशसयन्स, 2.15-16, र्ाल्जनमि रहडडंग

साथ िह देखखए, "र्ानर्व-र्न की नैसधगकम रचना दुिरह िै। एक भाग क्षधा से बना िै, ल्जसे यूनातनयों ने 'िोर्'म (र्नोर्वेग) की संज्ञा दह थी, जो र्नुष्य को इधर-उधर िे जाती िै, दूसरा भाग वर्वर्वेक िै, जो यि बताता ि और स्पष्ट करता ि कक क्या करना चाहिए और क्या निहं करना चाहिए, इससे यि तनष्कष मतनकिता ि कक वर्वर्वेक उधचत रूप से आदेि देता ि और क्षधा आदेि का पािन करती िै।"- शससरो, 'डड औकफसाइस, खण्ड 1, अध्याय 28

जीर्वन, ल्जसर्ें ि्रारह दृल्ष्ट, श्रर्वणा–ल्क्त और बिोनेकी ि्ल्क्त ठीक बनी रिे, और ि्र् दूसूरों पर आधश्रत न िों। रि् इस प्रकार का जीर्वन सौ से भी अधधक र्वष मतक जी सके।"[77] यि ि्रहर ि्ाश्र्वत का केर्वि आर्वरण ि्ह निहं ंि्ै। अवपतु आर्वश्यक साधन भी ि्ै।

रि्ें उन ि्ाश्र्वत सत्यों को, जो ि्र्ें अपनेजीर्वन के शिए आचरण के सर्वोच्च तनयर् प्रदान करते ि्ैं, इस पृथ्र्वी पर ि्ह सार्ाल्जक और ऐहिक रूपों र्ें प्राप्त करना ि्ै। प्रत्येक धर् मकी एक नैततक और सार्ाल्जक अशभव्यल्क्त ि्ोती ि्ै। पवर्वल्तता (सन्तता) और प्ेरेर् दोनों साथ-साथ रिति्ैं। नुष्य ककसी न ककसी सर्ाज का सदस्य ि्ह बनकर जन्र् ि्ेता ि्ै। उसका जीर्वन अन्तरंग सम्बन्धों का, आकषणमों का और वर्वकषणमों का, एक जिा-सा ि्ै, ल्जसे तोड़कर स्र्वतन्त्र ि्ो पाना न तो उसके शिए संभर्व ि्ह ि्ै और न र्वांछनीय ि्ह। अरस्तु किता ि्ै, "जो व्यल्क्त सर्ाज र्ें रिने र्ें असर्थ मिै, या ल्जसे इसशिए सर्ाज र्ें रिने की आर्वश्यकता निहं ंि्ै, क्योंकक र्वि अपने शिए ि्ह पयाप्मत ि्ै, र्वि या तो देर्वता ि्ै या पिु।ु"[78] उसके शिए सर्ाज र्ें कोई स्थान निहंि्ै। सार्ाल्जक सम्बन्ध व्यल्क्त की ि्ल्क्तयों और सुअर्वसरों को बढाते ि्ैं और उसकी स्र्वतन्त्रता को और वर्वस्तृत कर देते ि्ैं।

हिन्दू ूवर्वचारधारा सांसाररक और ऐहिक र्वस्तुओंकी उपेक्षा निहं ंकरती। यि जीर्वन के चार ि्क्ष्यों को स्र्वीकार करती ि्ै : नैततक, आधथकम, कित्रक और आल्त्क (धर्,म अथ,म कार्, र्ोक्ष)। इसके जीर्वन के चार सोपानों (आश्रर्ो) के शसद्धान्त र्ें सार्ाल्जक उत्तरदातयत्र्वों पर बि हदया गया ि्ै। संन्यासी के रूप र्ें भी व्यल्क्त वर्वश्र्व-सर्ाज की सेर्वा करता ि्ै। धचन्तन के साथ-साथ इस संसार र्ें कर् मकरने पर भी ज़ोर हदया गया। 'ईिोपतनषद्' के अनुसार पूणतमा की खोज करने र्वािे साधक को कर् मऔर भगर्वान का ज्ञान, इन दोनों की साधना साथ-साथ करनी चाहिए। कर् मद्र्वारा र्वि र्ृत्यु के परे पिुंच जाता ि्ै और ज्ञान द्र्वारा अर्रता को प्राप्त कर ि्ेता ि्ै। ल्जस बात की र्ांग की गई ि्ै र्वि ि्ै सेर्वा के शिए सर्वपतम जीर्वन। "र्ेरा जीर्वन सर्पणम का जीर्वन ि्ो, र्ेरा प्राण (श्र्वास), आंखें, कान, बुद्धध और आत्र्ा सेर्वा के शिए सर्वपतम ि्ों, र्ेरह र्वैहदक वर्वद्या और सर्झ, सर्ृद्धध और ज्ञान सेर्वा के शिए सर्वपतम ि्ो। स्र्वयं बशिदान (यज्ञ) भी चरर् बशिदान की भार्वना से ि्ो रिा ि्ो।"[79]

'भगर्वद्गीता' र्ें किा गया ि्ै कक भगर्वान का भक्त र्वि ि्ै, जो इस संसार को क्षुदध निहं ंकरता और ल्जसे यि संसार क्षुदध निहं ंकरता।80 गीता की शिक्षा ि्ै कक केर्वि प्ेरेर् के द्र्वारा, जो प्ेरेर् कक सर्वस्र्व दान कर देता ि्ै और जो भाग खड़े ि्ोनेसे इनकार कर देता ि्ै, बुराई को पराल्जत ककया जा सकता ि्ै और र्ानर्व-जातत का उद्धार ि्ो

---

[77] पश्येर् ि्रदः ि्तं, जीर्ेर्वेर् ि्रदः ि्ते, श्रृणुयार् ि्रदः ि्ते,े प्रिर्वार् ि्रदः ि्ते,े अदहना स्यार् ि्रदः ि्ते,े भूयक्ष ि्रदः ितात्।ु-2-36-24

[78] "पॉशिहटक्स' 101। तिुना कील्जए, "सार्ाल्जक सम्बन्ध दो व्यल्क्तयों के बीच र्ें निहं ंि्ोते, अवपतु केर्वि उनके अपने अन्दर ि्ोते ि्ैं।... र्वे कोई जिा निहं ि्ैं, ल्जनर्ें व्यल्क्तत्र्व फंसा िुआ ि्ो अवपतुर्वे दोनों र्ें से प्रत्येक के व्यल्क्तत्र्व के कृत्य ि्ैं ल्जनकी पूतत मव्यल्क्तत्र्व की पूतत मिै।" र्ैकै आइर्वर 'कम्युतनटह, पृष्ठ 95

[79] आयुयज्ञेमन कलपतार्,् प्राणो यज्ञेन कलपतार्,् चक्षुयज्ञेमन कलपतार्,् श्रिो यज्ञेने कलपतार्,् र्नो यज्ञेन कलपतार्,् आत्र्ा यज्ञेन कलपतार्,् ि्ह्वा यज्ञेन कलपतार्,् ज्योततयज्ञेन कलपतार्,् स्र्वयज्ञेमन कलपतार्,् पृष्ठ यज्ञेन कलपतार्, यज्ञो यज्ञेन कलपतार्् ।। - 2

[80] 11/15

सकता ि।ै"[81] इस पुस्तक का आरम्भ िह एक कतव्मय की सर्स्या से िोता ि।ै यि एक संर्वाद ि,ै जो रणभूशर् र्ें िुआ ि।ै दोनों सेनाएं युद्ध एक र् ैंव्यिू रचकर खड़ी ि।ै अजुनम रातु-दि की ओर दृल्ष्ट डािता ि;ै र्वि देखता िै कक युद्ध क्षेत्र उसके दृष्टबन्धु तथा अन्य आदरणीय िोग खड़े ि,ैं र्वि घबराकर रथ र्ें बैठ जाता िै और िड़नेसे इनकार कर देता ि।ै र्वि अपनिेह सगे-सम्बल्न्धयों की ित्या ककसशिए करे ? यहद योद्धा के इस कतव्मय की सर्स्या का सर्ाधान िो जाए, तो िषे सब र्ारर्ों को भी इसी ढंग से तनपटाया जा सकता ि।ै गीता र्ें ल्जस प्रश्न का वर्वर्वेचन ककया गया ि,ै र्वि युद्ध के अनौधचत्य या औधचत्य का प्रश्न निहं ि।ंै यि तो अपना कतव्मय करते िुए, चािे र्वि कतव्मय कुछ भी क्यों न िो, साल्न्त और पूणतमा प्राप्त करने की बात ि।ै इसका उद्देश्य शसद्धान्त की शिक्षा देना उतना निहं ि,ै ल्जतना कक व्यर्विार र्ें प्रर्वृत्त करना। कृष्ण किता ि,ै "जनक आहद ने कर् मद्र्वारा िह शसद्धध या पूणतमा प्राप्त की थी। तुझेभी संसार की व्यर्वस्था को दृल्ष्ट र्ें रखते िुए कर् मकरना िह चाहिए..... ल्जस प्रकार र्ूख म कर्फमि र्ें आसक्त िोकर कार् करते ि,ैं उसी प्रकार ज्ञानी िोग कर्फमि र्ें अनासक्त रिकर संसार र्ें व्यर्वस्था स्थावपत करने के शिए कर् मकरते ि।ै"[82] कफर, "केर्वि कार् करना छोड़ देनेसे िह तो कर् मसे र्ुल्क्त निहंशर्ि जाती; केर्वि काय मकरना बन्द कर देनेसे भी ककसीको सफिता निहंशर्ि सकती।"[83] "जो कर् मर्ें अकर् मऔर अकर् मर्ें कर् मदेखता ि,ै र्नुष्यों र्ें र्विह सर्झदार (पंडडत) ि;ै तनयर्ों के अनुसार र्विह पूण मकर् मका करनेर्वािा ि।ै कर् मके फि की आसल्क्त से रहित िोकर, सदा संतुष्ट और अबद्ध रिकर यहद र्वि तनरन्तर कर् मर्ें िगा भी िुआ िो, तो भी र्वि कर् मनिहं करता।" "अपनेसारे कार्ों को 'र्ुझ' पर छोड़ दें; अपनेर्न को परर्ात्र्ा र्ें िगा दे, और

---

81 यहद र् ैंजी सकू
ककसी पीि पड़े र्ुख को कांततर्ान बनाने के शिए और देने के शिए
ककसी अशुरुधूशर् नयन की नई चर्क, या केर्वि दे सकूं :
ककसी व्यधथत हृदय को आरार् की एक धड़कन,
या ककसी रि चिते की थकी आत्र्ा को प्रफुल्ल्ित कर सकूं :
यहद र् ैंदे सकूं
सबि िाथ का सिारा धगरे को, या रक्षा कर पाऊ
अधधकार की एक ईष्र्यािु दबार्व के वर्वरोध र्ें,
तो र्ेरा जीर्वन, यि भिे िह यि रहित ि ै
यिद उन अधधकांिचीज़ों से, जो वप्रय और सुन्दर िगती िैं िर्ें धरती पर,
व्यथ मनिहं िरैगा।.
जो स्वग मके तनकटतर् िै और पृथ्र्वी के शर्श्रण से बिुत दरू, सूय मचर्क के शिए बादिों को िटने का आदिे दे रिा ि।ै और यि बिुत अच्छा िोगा
पवर्वत्ततर् आनन्द,
यहद उस परर् हदन पर देर्वदतू यि बताएं
र्ेरे वर्वषय र्ें, "इसने तुम्िारिे एक प्राणी के शिए यथािल्क्त सब कुछ ककया था।"
- एच० एच० जैक्सन

82 32-5
83 3-41

िािसा को त्यागकर, र्न र्ें कोई र्वचार रखे बबना, उते्तजनिून्य िोकर तू युद्ध कर।" संन्यास का िि (सर्ाधान) कोई िि निहं िै, क्योंकक र्नुष्य चािे या न चािे, कर् मतो उसे करना पड़ता िह िै। योग कर् मर्ें कुििता का िह नार् िै। "जो कोई 'र्ेरा' कार् करता िै, 'र्ुझे'े84 अपना िक्ष्य र्ानता िै, 'र्ेरा भक्त िै, जो सब आसल्क्तयों से र्ुक्त िै, जो ककसी भी जीर्व से घृणा निहं करता, र्वि 'र्ुझे'े प्राप्त करता िै (र्ेरे पास पिुंच जाता िै)।"[85] कर् म ककया जाना िै, उसके बािरह पररणार्ों के लिए निहं,ं अवपतु आन्तररक र्वकास के लिए। कर्मयोग इच्छािून्यता िै। सर्ाज के लिए काय मभी कर्मयोग निहं ंिै, परन्तु र्वि प्रारल्म्भक अनुिासन के रूप र्ें उपयोगी िै। "सद्बुद्धधप्राप्त आत्र्ा पुण्य और पाप, दोनों को इस संसार र्ें िह छोड़ जाती िै।"[86] आध्याल्त्र्क गुणों का र्वकास ककए बबना आध्याल्त्र्कता का हदखार्वा करने ेसे कोई िाभ निहं िै। जो िोग संसार से बािर रिते िैं और हदव्य िल्क्त के उपकरण बन जाते िैं, र्वे र्ात्र काय मकरते िैं। बबना यि जानेकक िर् क्या करते िैं और कैसे करते िैं, इधर-उधर भागतेकफरना खािह िििचि करना-भर िै। जब िर् िाश्र्वतता की चेतना र्ें प्रर्विे करते िैं, केर्वि तभी िर् जान पातेिैं कक सच्चा कर् मक्या िोता िै। संसार का तनर्ाणम बेचैनी से भरह िििचि द्र्वारा निहं,ं अवपतु िाल्न्त और नीरर्वता द्र्वारा िुआ था। उपतनषदों और बौद्ध धर् मकी ओर बच तनकिने के उपाय केर्वि थोड़े-से िोगों के लिए, ऋवषयों और तपल्स्र्वयों (लभक्षुओं) के लिए िैं। गीता उन िोगों को र्ुल्क्त प्रदान करती िै, जो कर् मर्ें जकड़े िुए िैं;

र्वि उनके लिए ऐसे कर् मका द्र्वार खोि देती िै, जो स्र्वतंत्रता प्राप्त करने र्ें उनकी सिायता करता िै। कर् मिै पिायन (संन्यास), ज्ञान या तप के सम्बन्ध र्ें प्राचीन उल्क्तयों के स्थान पर गीता 'आसल्क्तिहन कर्'म का प्रततपादन करती िै। आध्याल्त्र्क जीर्वन र्नुष्यों और र्वस्तुओंका त्याग कर देना निहं ंिै, अवपतु यि तो एक भस्र् कर देनेर्वािह आग िै, जो अिभार्व को जिा देती िै, बन्धनों को नष्ट कर देती िै और सर्वत्र प्रेर् व्याप्त िो जाती िै। ल्जस र्वस्तुकी प्रिंसा की गई िै, र्वि तप या संन्यास का जीर्वन निहं, अवपतु िुल्क्त और ऊजा मसे दर्कता िुआ रूपान्तररत जीर्वन िै।

सुकरात का जो िाि िुआ, उसका प्िेटो की कलपना पर बिुत तनधारमक (तनश्चायक) प्रभार्व पड़ा। यहद ऐसे र्ान और न्यायवप्रय व्यल्क्त का यि िाि िो सकता िै, तो इस संसार के कार्-काज र्ें रुधच िेनेका क्या िाभ ? ऐसे संसार से, ल्जसर्ें कोई न्याय, उद्देश्य, अच्छाई या सत्य िो िह निहं सकता, िटकर प्िेटो र्वचारों के जगत् ्की ओर, अतत अनुभूततिीि जगत् ्की ओर र्ुड़ा और उसर्ें परर्सुख की खोज र्ें िगा। परन्तु उसके अन्दर जो यूनानी भार्वना थी, उसनेइस र्नोर्वृत्ति के र्वरुद्ध प्रततर्वाद ककया और फितः प्िेटो ने दाितमनकों को भी राजनीतत र्ें भाग िेनेका उपदेि हदया।87

84 2-50

85 11-51

86 2-50

87 र्वचारक (दाितमनक) र्वग मके र्वषय र्ें चचामकरते िुए प्िेटो लिखता िै, "ऐसेव्यल्क्त की तुिना एक ऐसे र्नुष्य से की जा सकती िै, जो जंगिह पिुओंके बीच जा पड़ा िो। र्वि अपने साधथयों (पिुओं) की दुष्टता र्ें साथ निहं देगा, परन्तु र्वि अकेिा उन सबकी हिंस्र प्रकृतत का प्रततरोध कर पाने र्ें भी सर्थ मनिहं ंिोगा। इसलिए यि देखते िुए कक र्वि राज्य के या अपने लर्त्रों के ककसी कार् निहं आता, और यि सोचकर कक उसे अपना जीर्वन अपना या दूसरों को कुछ भी भिा ककए बबना गंर्वा देना पड़ेगो, र्वि िान्त रिता िै और बस अपने कार् से र्वास्ता रखता िै। र्वि उस व्यल्क्त की तरि िै, जो धूि और ओिों के तूफान र्ें, ल्जसे ज़ोरदार आंधी तेज़ी से िेकर आती िै, दहर्वार की ओट र्ें जाकर खड़ा िो जाता िै। यि देखकर कक रोष र्ानर्व-जातत

गिभग 2500 र्वष मपििे यूनातनयों ने यि धारणा वर्वकशसत की थी कक िासकों को जनता का सेर्वक िोना चाहिए। सत्ता (अधधकार) का पद प्राप्त करने के योग्य िोने के शिए पििे उन्िें सम्पवत्त का वर्वचार त्याग देना पड़ता था, शर्तव्यय और तपस्या का जीर्वन बबताना पढ रिा था, और वर्विेष शिक्षा ग्रिण करनी िोती थी। इस प्रशिक्षण का स्थान अकादर्ी िोता था। ल्जस संस्था की स्थापना इस उद्देश्य से िुई थी कक र्वि उस सर्य यूनानी जगत् को ज्ञात व्यार्वाररक उद्यर् की अपेक्षा अधधक अच्छे उद्यर् की शिक्षा दे सके, यहद उसका नार् अव्यार्वाररक जीर्वन के साथ जोड़ हदया जाए, तो इससे र्ानर्व-प्रकृतत की वर्वडम्बना िह प्रकट िोती िै।

दुभाग्मय से ईसाई नीततिास्त्र कभी भी स्पष्ट रूप से इस संसार के जीर्वन का र्ाग मनिहं रिा।'[88]

दुष्टता से भरह िुई िै, र्वि केर्वि इतने से िह सन्तुष्ट रिता िै कक र्वि अपना जीर्वन अपने ढंग से जी सके और बुराई या अधार्शर्कमता से दूर रि सके और उज्ज्र्वि आिाओंकिर िाल्न्त और सद्भार्वना के साच प्रस्थान कर सके।
िााँ, उसने किा, और प्रस्थान करने से पूर्व मर्वि एक र्िान काय मकर चुका िोगा।" "

"िां, एक र्िान काय;म ककन्तु सबसे बड़ा काय मर्वि तब तक निहं कर सकता, जब तक कक उसके उपयुक्त कोई राज्य न शर्ि जाए; क्योंकक उसके शिए उपयुक्त राज्य र्ें उसकी किहं अधधक उन्नतत िो सकेगी और र्वि अपने देि का और साथ हि अपना भी र्वाणकताम बन सकेगा।" - 'ररपल्ब्िक, 496

[88] जीर्वन और संसार के पेर्शयों के शिए, जो इसकी र्ाशर्कम और वर्वविद रुधचयों की वर्वस्तृत श्रृंखिा पर र्ुग्ध िै, ईसाइयत के पास कोई सन्देि निहं िै। उन्िोंने किा िै, "एक सर्य र्ें एक िह संसार।" अपनी धगफकम 'भाषणर्िा र्ें प्रोफेसर डदलयू० रैकनी ने र्वि प्रश्न उठाया िै, "यौन पेर्र् (पुरुष और स्त्री के पेर्र्) के सम्बन्ध र्ें ईसाइयत के पास किने को क्या िै?" और उसके उत्तर र्ें किा िै, "िगता िै, एक िदद भी निहं या केर्वि एक अपर्ानजनक िदद। पादरह-पुरोहितों के पास ल्स्त्रयों या पेर्रर्िाओं के सम्बन्ध र्ें किने को आनन्ददायक बातें कर् िह थीं। र्वे िह्र्चय मकी प्रिंसा करते िैं, उसेउच्च बताते िैं। क्रोइसोरटोर् ने ल्स्त्रयों के सम्बन्ध र्ें किा था कक 'चे र्वांछंनीय र्िावर्वपवत्तयां िैं, और वर्ववािों के सम्बन्ध र्ें सटें पाि की उल्क्ियों से तो िर् सब पररधचत िह िैं। कफर भी यि एक ऐसा वर्वषय िै, ल्जसकी ओर कवर्वयों और किाकारों का र्वस्तुतः सारह र्ानर्व जातत का ध्यान अन्य ककसी भी वर्वषय की अपेक्षा अधधक रिा िै, यि एक ऐसी र्वासना िै, जो स्र्वयं जीर्वन के र्ूि र्ें वर्वद्यर्ान िै और जो अन्य सब र्वासनाओं की अपेक्षा किहं अधधक तीव्र िै; इसके सम्बन्ध र्ें स्टैंडिा नेकिा िै कक, 'सब तनष्कपट अशभव्यल्क्तयों र्ें सौंदय मका स्र्वरूप रिता िै, ल्जसने संसार को र्िान उन कथाओंके शिए र्ूि साग्री प्रदान की िै, ल्जनसे प्रत्येक साहित्य भरा िै, जो सारे जीर्वन के आधे, बल्लक आधे से भी अधधक आनन्दों और र्वेदनाओंको जन्र् देता िै, जो प्रत्येक गततवर्वधध र्ें र्ित्र्वपूण मभाग िेता िै, जो र्ानर्वीय अल्स्तत्र्व र्ें उसी प्रकार व्याप्त रिकर, जैसे िरहर र्ें शिराएं व्याप्त रिती िैं, पाररर्वाररक सम्बन्धों को जन्र् देता िै, जो सर्वव्मयापी िै, िर्ारे आचरण के प्रत्येक पक्ष के साथ सम्बन्ध स्थावपत ककए िुए िै, जो िर्ारे जीर्वन के प्रत्येक हदन र्ें अपराधों, वर्वश्र्वासघातों, आत्र्बशिदान और र्वीरत्र्व की घटनाओं के शिए पेर्रक बनता िै, जो िाश्र्वत रूप से सर्ाज के वर्वचारों पर छाया िुआ िै और जो सर्ाज के सभी र्वातािापों र्ें वर्वद्यर्ान रिता िै। ऐसेिोकोत्तर वर्वषय पर, ल्जसकी कक नैततक िाखा-पिािाएं अनन्त िै ईसाई ग्रन्थों र्ें एक वर्विक्षण र्ौन का साम्राज्य िै।" (1937, पृष्ठ 3839)। र्वि और आगे किता िै, "पिु जगत् के वर्वषय र्ें भी उनर्ें ऐसी िह चुप्पी िै। परर्ात्र्ा की सृल्ष्ट र्ें उनके स्थान की उपेक्षा कर दह गई िै। उनके वर्वषय र्ें यि निहं सर्झा गया कक 'पतन' से उनका कुछ र्वास्ता िै, या र्वे पापी िैं, या उन्िें दया और उद्धार की आर्वश्यकता िै या भार्वी जीर्वन र्ें उनका कोई भाग िै। िर्ें बताया गया िै कक पृथ्र्वी पर र्ृत्युपाप के कारण आई; और यद्यवप पिुओं ने पाप र्ें कोई भाग निहं शिया, र्ृत्यु र्ें और र्ृत्युके पररणार्ों र्ें र्वे भाग िेते िैं। न यिां प्रतीत िोता िै कक उनके ककसी प्रकार के कोई अधधकार िैं, और न उनके प्रतत िर्ारे कोई कतव्मय िह िैं। ऐसा प्रतीत िोता िै कक िर् उनके साथ जैसा चािें र्वैसा व्यर्विार कर सकते िैं।" (र्विह पृष्ठ 39)। स्र्वग मर्ें अपने सेर्वकों पक्षक्षयों, कुत्तों या घोड़ों से िर्ारह भेंट निहं िोगी।

प्रारल्म्भक चच मइस पृथ्वी पर के जीर्वन को नये जीर्वन की प्रतीक्षा का स्र्वलय-सा सर्य र्ानकर चिता था; उस नये जीर्वन की, "जब ि◌र् ि◌ोग जो कक जीर्वर्वत ि◌ैं और जीर्वर्वत रिे। ऊपर बादिों र्ें जा पिुंचेंगे।"[89] र्ध्ययुग र्ें संसार को आंसुओंकी घाटह के रूप र्ें सर्झा जात था, ल्जनर्ें से प्रत्येक व्यल्क्त को गुज़रकर न्याय की घाटह र्ें पिुंचना ि◌ोता ि◌ै। ईसाई जीर्वर केर्वि ककसी ठ र्ें या तपोर्वन र्ें ि◌ह बबताया जा सकता ि◌ै।'[90] प्रोटेस्टेंट पवर्वनतार्वाहदयों का संसार र्ें रिने ◌ेर्वािे औसत आदर्ी पर ईसाई जीर्वन को थोपनेका प्रयत्न असफि रिा। एक तनयर् को र्ानना और आचरण ककसी दूसूरे तनयर् के अनुसार करना ि◌र्ें से अनेक ि◌ोगों के औसत जीर्वन की सर्वाधमधक स्पष्ट वर्विेषेता बन गई ि◌ै। ईसाइयत ने दुतुनया के साथ सर्झौता कर शिया। कभी-कभी ईसा के इस कथन की, "जो र्वस्तुएं सीज़र (उस सर्य का रोर्न सम्राट) की ि◌ैं, उन्िें सीज़र को दो, और जो र्वस्तुएं परर्ात्र्ा की ि◌ैं, उन्िें परर्ात्र्ा को दो," व्याख्या इस रूप र्ें की जाती ि◌ै, र्ानो इससे दुरुंगा व्यर्विार करने ◌ेकी अनुर्तत शर्ि जाती ि◌ो। धर् मऔर राजनीतत दो अिग-अिग क्षेत्र ि◌ैं और उन दोनों के बीच र्ें एक खाई बनी ि◌ुई ि◌ै; इन दोनों क्षेत्रों के वर्वचार, अनुभूतत और आचरण के अपने-अपनेप्रर्ाप (स्टैंडड)म ि◌ै। परर्ात्र्ा के राज् ◌्से आध्याल्त्र्कता से ि◌ीन र्नुष्यों और उनके 'भ्रष्ट उत्तराधधकार से कोई सरोकार निहं। राज्या र्नुष्य इस संसार को सिन कर सकता ि◌ै, इसर्ें जैसे-तैसे गुजारा कर सकता ि◌ै, परन्तु धाशर्कम यि यिांकेर्वि कुछ देर के शिए ठिरा ि◌ुआ ि◌ै, उसे इस संसार के तनकट भी निहं ◌ंजाना र्विात ताकक र्वि किहंर्शिन न ि◌ो जाए। परन्तु यि अन्याय्य दृल्ष्टकोण ि◌ै। सीज़र की र्वस्तुओंका सम्बन्ध परर्ात्र्ा की र्वस्तुओं से ि◌ोना चाहिए। आध्याल्त्र्क र्ूलय (र्ान्यताएं) सांसाररक जीर्वन र्ें रर्े रिने चाहिए। धर् मआत्र्ा के रोगों (उपद्रर्वों) के शिए कोई अफीर् शर्धश्रत ि◌ार्क औषधध निहं ि◌ै। यि तो सार्ाल्जक प्रगतत के शिए गतत देनेर्वािे ि◌ल्क्त ि◌ै। जब तक ि◌र्ें एक आन्तररक व्यर्वस्था र्ें आस्था न ि◌ोगी, तब

तकिहं ि◌ं र्क्स्थायी बाह्य व्यर्वस्था की सफिता अथर्वा कोई र्वस्तु निहं ◌ंि◌ै कक उसका र्ानर्व जीर्वन के साथ कोई सम्बन्ध ि◌ह न ि◌ो। अपनी अन्तदृल्ष्ट के क्षणों र्ें ि◌र् र्नुष्य के अल्न्तर् ि◌क्ष्य को सर्झ पाते ि◌ैं और ि◌र्ें तनश्चय ि◌ोता ि◌ै कक अन्त र्ें वर्वजय उसीकी ि◌ोकर रिेगी। यहद ऐसी घटनाएं भी घटती ि◌ों, ल्जनसे यि प्रतीत ि◌ोता ि◌ो कक यि वर्वश्र्व-प्रयोजन तनष्फि रिेगा, तो भी ि◌र् ि◌िता निहं ि◌ैं। ल्जसे उच्चतर् ि◌क्ष्य की झिक शर्ि चुकी ि◌ै, र्वि अपनी ओर से उस ि◌क्ष्य की सफिता के शिए भरसक प्रयत्न करता ि◌ै। परर्ात्र्ा के उद्देश्य को जान ि◌ेने के कारण उसका यि कतव्मय ि◌ो जाता ि◌ै कक र्वि उसे पूरा करे। क्रांतदिी (पैगम्बर) ि◌ोग सदा ि◌ी पिे से स्थावपत व्यर्वस्था का वर्वरोध ि◌ह करते रिे। र्वे ि◌ल्न्त को भंग करनेर्वािे ि◌ोग थे। इस वर्वश्र्वास के साथ कक वर्वश्र्व उनके उद्देश्य का सर्थनम करेगा, र्वे ◌ेसांसाररक ि◌ल्क्तयों के वर्वरुद्ध जूझ पड़े ◌ेऔर कष्ट सिते रिे। सब र्िान

---

89 उस कथन से तुिना कील्जए, जो ईसा का बताया जाता ि◌ै और फतिपुर सीकरह की र्ल्स्जद र्ें दरर्वाजे ◌ेकी र्िराब पर खुदा ि◌ुआ ि◌ै, "संसार एक पुि ि◌ै; इसे पार कर जाओ, पर इस पर अपना घर र्त बनाओ। यि दुतुनया शसफम घड़ी-भर रिनेर्वािह ि◌ै; इस सर्य को भल्क्त र्ें बबताओ।"

90 लयूचर शिखता ि◌ै, "जब तुम्िारे प्रतत हिंसा और अन्याय ककया जाए तो किो कक संसार की रहतत ि◌ह यि ि◌ै यहद तुर् संसार र्ें जीना चिाते ि◌ो तो तुर् केर्वि इसी र्वस्तु की आिा कर सकते ि◌ो। तुर् यि आिा निहं कर सकतेकक तुम्िारा ि◌ाि कुछ उससे अच्छा ि◌ोगा, जैसाकक ईसा का ि◌ुआ था। अगर तुर् भेडड़यों के बीच र्ें रिना चािते ि◌ो, तो तुर्िें उनके साथ रोना ि◌ोगा। ि◌र् सब ऐसी सराय र्ें हटका हदए गए ि◌ैं, ल्जसका भहठयारा ि◌ैतान ि◌ै और भहठयाररन यि दुतुनया ि◌ै और सब प्रकार की दुर्वासमनाएं यिां ◌ं के नौकर-चाकर ि◌ैं- और र्वे सबके सब सुसर्ाचार (धर्)म के धचर रानु ि◌ै। रहयाद् स द्र्वारा उद्धतृ, 'हद ि◌ीसो टहधचंगं ऑफ कक्रल्श्चयेतनटह'

उपिल्दधयां (सफिताएं) कष्ट सिन और बशिदान से िह प्रसूत िैं।91 यहद िर् संसार र्ें फंसे रिेंगे, तो िर्ें कोई र्ौशिकता निहं िोगी और िर् सर्ाज या र्ानर्व-प्रकृतत को ककसी नये सांचे र्ें निहं ढाि पाएंगे, िर् अज्ञात र्ें अन्वेषण-यात्राएं निहं कर पाएंगे और राजनीतत तथा सर्ाज के वर्वषय र्ें िर्ारे वर्वचार तनजीर्व और यन्त्रतनशर्तम-से िोंगे। सच्चे धाशर्कम व्यल्क्त को र्ानर्वीय र्वास्तवर्वकताओं की सुतनहदमष्ट अनुभूतत िोगी। िेगि का आदिर्वमाद जो धर् मका तत्कािहन स्थानापन्न था, उस सर्य वर्वद्यर्ान प्रशियन राज्य को परर्ात्र्ा के राज्य से अशभन्न र्ानता था। जो राज्य सार्वभमौर् और िाश्र्वत िै, उसे, परर्ात्र्ा के राज्य के प्रतत द्रोि ककए बबना, ककसी भी सांसाररक राज्य के अधीन निहंककया जा सकता। धगज़ोट (धगज़ो) नेयूरोवपयन सभ्यता का अन्य सब सभ्यताओं से वैषम्य बतातेिुए किा िै कक यूरोप र्ें कोई भी शसद्धान्त, वर्वचार, सर्ुदाय या वर्ग मकभी भी अल्न्तर् और पूण म रूप से वर्वजयी निहं िुआ, और यूरोवपयन सभ्यता के प्रगततिीि स्वरूप का कारण भी यिह िै।

यहद आत्र्ा स्वच्छ िो और प्रेर् प्रगाढ िो, तो िर् उस उच्च कलपना र्ें, ल्जसे िर् परर्ात्र्ा कितेिैं, श्रद्धा रखते िुए संसार र्ें काय मकर सकतेिैं। सन्त आत्र्ाएं र्नुष्य के कष्टों के प्रतत संर्वेदनिीि िोती िैं और जीर्वन के बोझ को अपनेबोझ की िह भांतत अनुभर्व करती िैं। उनकी दिेभल्क्त वर्वश्र्वव्यापी िोती िै, उनकी दृल्ष्ट र्ें युद्ध र्ानर्वता का अपने िह वर्वरुद्ध दो भागों र्ें वर्वदहण मिो जाना िै, जो बिुत िह कुल्त्सत िै, क्योंकक प्रेर्र्य दयािुता िह सर्वोच्च सौन्दय मिै। िर्ें जीर्वन के सर्वोत्कृष्ट वर्विेषाधधकार का उपयोग इस ढंग से करना चाहिए कक वर्वश्र्व की सृजनिीि ऊजाम िर्ें सजीर्व िो उठे, र्वि िर्ारे िरहर को अपनेर्वस्त्र रूप र्ें धारण कर सके, अपने. आपको िर्ारह चेतना द्र्वारा कक्रयाल्न्र्वत कर सके और पररर्वेि पर वर्वजय पा सके।

धाशर्कम जीर्वन के वर्वकास के शिए यि आर्वश्यक िै कक र्नुष्य व्यार्विाररक गततवर्वधध से वर्वरत िो जाए, ल्जससे बौद्धधक या भार्वात्र्क धचंतंन की एकाग्रता िो पाए। धाशर्कम जीर्वन तनर्वतनम (पीछे िटना) और पुनरार्वतनम की एक ियबद्ध गतत िै : व्यल्क्तगत एकान्त र्ें तनर्वतनम, जो वर्वचार और धचन्तन की आर्वश्यकता का द्योतक िै, और सर्ाज के जीर्वन र्ें पुनरार्वतनम। एकान्त की गततवर्वधध दो रूप धारण करती िै : बौद्धधक, जो दिनम और धर्वमर्वज्ञान की ओर िे जाती िै; और 'भार्वात्र्क, जो किा और रिस्यर्वाद र्ें जाकर पररणत िोती िै। ये दोनों धाशर्कम जीर्वन के अर्वयर्वभूत अंग िैं व्यल्क्त की पृथक् और स्र्वतन्त्र गततवर्वधधयां निहं िैं। जब भी कभी िर्ें वर्वफिता अनुभर्व िो रिे िों, अपनी ऊजामक्षीण िोती िुई, िल्क्त दुबिुम पड़ती िुई अनुभर्व िो रिह िो और ऐसा िगता िो िर् स्नायर्वीय वर्वक्षेप (नर्वसम ब्रेकडाउन) के छोर पर खड़े िैं, तो िर्ें प्राथनमा और ध्यान की िरण िेनी चाहिए। ईसा के र्ौन सीधे तौर पर िल्क्त को कफर तरोताज़ा कर देने से सम्बद्ध थे। पिाडड़ये पर और जैतूनों के शिखर के बाग र्ें उसकी प्राथनमा की रातनयांल्क्त प्राप्त करने के शिए िह बीत थीं। जो िोग भगर्वान के तनकट 'प्रतीक्षा' करेंगे, उनकी िल्क्त अर्वश्य 'कफर नई' िो जाएगी। "तुम्िें िल्क्त तनस्तदधता और वर्वश्रार् (एकान्त) र्ें

---

91 आस्करर्वाइलड से तुिना कील्जए, "संसांर का तनर्ाणम दुःख र्ें िह िुआ िै; शििु या तारे (नक्षत्र) के जन्र् सर्य र्वेदना िोती हि िै।"- 'हद प्रौफडडस'

आधुतनक जापान के संस्थापकों र्ें से एक को जब प्राणदंड के शिए िे जाया जा रिा था, तब उसने दो दशितों की एकाचीगी बाररता र्ें एक भार्वगशभतम सत्य को प्रकट ककया, "र्कान की छत पर खपरैि की तरि पूण मपिने की अपेक्षा स्फहटक बनकर टुक्यो-टुकड़े िो जाना किहंअधधक अच्छा िै।"

प्राप्त िोगी।" र्ादार् गुयों के िददों र्ें दे "परर्ात्र्ा के सिाचय मर्ें बबताती िुई सृजृिनी घडड़यां" िैं। सभी ईश्र्वरतनष्ठ व्यल्क्तयों के जीर्वन र्ें िर्ें यि ियबद्ध गतत हदखाई पड़ती िै; दबार्व और तनार्व की ओर से तनश्चेष्टता और धचन्तन की ओर, तूफान से तनस्तदधता की ओर तथा संघष मसे िाल्न्त की ओर झूिे की-सी गतत; और सभं जगि, एकान्त र्ें जो हदव्य दृल्ष्ट प्राप्त िोती िै, र्वि तूफानों र्ें भी जीर्वन का पथ-प्रदिनम करती िै। हदव्यदृल्ष्टसम्पन्न र्नुष्य अपनेस्र्वप्नों को र्वास्तवर्वकता के तन्तुओं र्ें गूंथ देते िैं। उनका रुख अपनेअल्स्तत्र्व के ऊपर र्वर्वजय पाने का िोता िै, उससे बचकर भाग खड़े िोने ेका निहं। तनरपेक्षता तटस्थता को ऊंचा निहं ंबताया गया, अवपतु साम्यार्वस्था (सर्तुिन) को ऊंचा किा गया िै। इ संसार का, जो कक र्तभेदों या झगड़ों का क्षेत्र िै, उद्धार केर्वि अन्तदृल्मष्ट द्र्वारा िह िो सकता िै।

र्वैयल्क्तक और सार्ाल्जक, दोनों िह पिूपू अत्यार्वश्यक िैं। व्यल्क्त को कभी भी सर्ाय द्र्वारा या अनेक ध्र्यर्वती सर्िूिों र्ें से ककसी के द्र्वारा पूण मसर्ार्विन (अपनेसाथ संयुक्त का िेने) का विर्वती निहंिोना चाहिए। सर्ाज की िल्क्त सबि व्यल्क्तयों की िल्क्त िै। बनती िै। यहद व्यल्क्तत्र्व जाता रिे, तो सझों कक सब कुछ जाता रिा। अधुतनक र्नुष्य बबना अपनी सार्ाल्जक तनकिाना चाहियो को गर्वाए, अपनेअन्दर व्यल्क्तगत पिन (तानिााहियों) का सार्ना कर सके।92

धर् मका उद्देश्य धचन्तन या भार्व-सर्ाधध निहं, अवपतु जीर्वन की धारा के साथ एकात्य स्थावपत करना और इसशिए सृजृनात्र्क प्रगतत र्ें भाग िेना िै। धर्पमरायण र्नुष्य किाका अपर उसकी भौततक प्रकृतत या सार्ाल्जक दिाओं द्र्वारा थोपी गई र्यामदाओं से ऊपरसके जाता िै और सृजृनात्र्क उद्देश्य को र्वर्विर्वतर बनाता िै। धर् मएक गत्र्वर (गत्यात्र्कऊपर उठ िै, सृजृिनी तीव्र र्नोर्वेग के नर्वीकृत प्रयास, जो असाधारण व्यल्क्तयों के र्ाध्यर् से काय मकरता िै और जो र्ानर्व-जातत को एक नये स्तर तक उठानेके शिए प्रयत्निी िै। यहद सार्ाल्जक तनश्चेष्टतार्वाद, जो रिस्यर्वाद का पररणार् बताया जाता िै, बुरा िै, तो आधथकम भाग्यर्वाद भी उतना हि बुरा िै। र्ाक्स मका र्ुख्य इरादा यि िै कक र्वि िर्ें स्र्वयं को सल्र्ष्ट के आध्याल्त्र्कीकरण के शिए सर्वपतम कर देनेको प्ेररत करे। र्ानर्वीय आत्र्ा को स्र्वतन्त्रता हदिाकर िर् केर्वि उस एकर्ात्र पद्धतत द्र्वारा संसार को उत्कृष्टतर बनातिै, ल्जससे कक इसे बनाया जा सकता िै, और र्वि िै आन्तररक पद्धतत ।

नई व्यर्वस्था

यहद धर् मको ढंग से सझा जाए और ठीक ढंग से उस पर आचरण ककया जाए, तो उससे एक गिरा नर्वीकरण, एक िाल्न्तपूण मक्रांतत िो सकती िै; एक आधुतनक कर्वव के िददों र्ें "गम्भीरतर् परम्परा के िाभ के शिए बुराइयों पर र्वर्वजय प्राप्त की जा सकती िै। र्नुष्य अभी इततिास के आरम्भ पर िह िै, अन्त पर निहं; र्वि प्ेरेर्

92 ऐक्र्वाइनास की दो उल्क्तयां, जो देखने र्ें परस्पर र्वर्वरोधी प्रतीत िोती िैं, र्वस्तुतः एक-दूसूरे की पूरक िैं। इनर्ें से पिेिह िै; कक "प्रत्येक व्यल्क्त का सर्ाज के साथ र्वि सम्बन्ध िै, जो ककसी एक अंग का सम्पूण मअंगी (सल्र्ष्ट) से िोता िै," और दूसूरह ै किक "र्नुष्य अपने सर्ूचे अपनत्र्व या अपनी सब र्वस्तुओंकी दृल्ष्ट से राजनीततक सर्ाज के अधीन निहं िै।"

और भल्क्त का, सत्य और सृजृनिनीता का एक संसार रचनेके शिए प्रयत्निी ि ै; एक ऐसा संसार, जो सिह
अथों रें् अभी उत्पन्न िह निहं ंिुआ ि ै।

स्‍ारे धाशर्कम नेता घोषणा करते ि ैं कक वें एक धर्युमद्ध (ल्जिाद) रें् जुटे िुए ि ैं। उनकी यि इस प्रकार की घोषणा कोई पिपिह बार निहं ि ो रिह। वें ेइस बात को ज़ोर देकर किते ि ैं कक यहद िर् इस युद्ध को न जीत पाएं, यहद िर् नाज़ीर्वाद के अत्याचार को उखाड़ न फेंकें, तो संसार कफर एक नये अन्धकार-युग रें् जा पड़ेगो, ल्जसरें् वर्वज्ञान की िल्क्त का िाभ गुंडे ेउठा रिे ि ोंगे और वें करोड़ों ि ोगों को अज्ञान और दररद्रता रें् पटक देंगे। वें घोषणा करते ि ैं कक हिटिर की वर्वजय का अथ मिोगा प्राचीन अन्धकार रें् से रि् वर्वप्र्वि (असभ्यता) का पुनः प्रादुभुार्वम, जो र्‍ानर्व-जातत की सुल्स्थरता और सुव्यर्वल्स्थत सर्‍ाज की ओर कष्टपूण मउन्नतत को यहद उिट निहंभी देगा, तो भी उसरें् बाधा अर्वश्य िि ा देगा। इन बताया जाता ि ै कक यि युद्ध ईसाई सभ्यता और धरि्महन पिावर्वकता के बीच, प्रजातन्त्र और तानिािाह के बीच युद्ध ि ै। परन्तु थोड़ा ध्यान से सोचनेपर पता चिता ि ै कक वैंषम्य इतना स्पष्ट निहं ि ै। वर्तर्मान व्यर्वस्था को न तो ईसाई िह सर्झा जा सकता ि ै, न सभ्य िह, और यिां ंतक कक न सच्चे तौर पर प्रजातन्त्रीय िह सर्छा जा सकता ि ै। सैन्यर्वादह परम्परा, ल्जसपर िरें् गर्व मनिहं ि ो सकता, प्रत्येक राष्र रें् वर्वद्यर्‍ान ि ै और अपने अपराधों को वैंध ठिरा रिह ि ै। सम्पवत्त और वर्विेषाधधकारों का र्वि ढांचा, ल्जसके पररणार्स्र्वरूप बिुत अर्‍ीरह और बिुत सड़ांद उत्पन्न ि ोती ि ै और जो िगभग सभी दिेों थे वर्वद्यर्‍ान ि ै, अन्यायपूण मि ै। जातत की असर्‍ानता आधुतनक साम्राज्यर्वाद का आधार ि ै। िर्नेआबाहदयों (जनसंख्या) के वर्वषय रें् भी जायदाद की-सी भार्वना बना िह ि ै; और जो ि ोग जायदादों पर स्र्वाशत्र्व कायर् करना चिाते ि ैं, उनरें् संघष मअर्वश्यंभार्वी ि ै। राष्र एक वर्वश्र्व सर्‍ाज के सम्भार्वर्वत सदस्य र्‍ानेजाने के बजाय ऐसी यांबत्रक ल्क्तयां सर्झे ेजाते ि ैं, जो एक दूसूरे से संघष मकरती ि ैं; और राष्रहय नीततयां इस धचन्ता द्र्वारा प्ेररत ि ोती ि ैं कक ककसी प्रकार इन िल्क्तयों रें् संतुिन बनाए रखा जाए। यहद िर् नाजीर्वाद को पराल्जत कर भी दें, तो भी जर तक, ल्जनर्िें ईसाई सभ्यता के प्रजातन्त्र किा जाता ि ै, उनरें् ये बुराइयांजारह रिेंगी, तब तक स्थायी िाल्न्त निहंिो सकती। 1918 की सैतनक वर्वजय से यि बात स्पष्ट ि ै कक सैतनक वर्वजय अल्न्तर् सफिता निहं ंि ै। यहद प्रजातन्त्र रें् िर्‍ारह श्रद्धा के अनुसार िह िर्‍ारे कार् भी िुए ि ोतेतो इस वर्तर्मान युद्ध से बचा जा सकता था। 1919 से 1939 तक के वर्षों रें् वर्वजयी िल्क्तयों स्रैसरैन के जर्नम प्रजातन्त्र की जड़ रें् र्ट्ठा डिाा, तन:स्त्रीकरण सर्म्रेनि के प्रयत्नों रें् रुकार्वट डिाह, िहग के प्रततज्ञा-पत्र की सार्ूहिक सुरक्षा को तनर्वीय मकर हदया, और चीन, अबीसीतनया स्पेन और अन्त रें् म्युतनख रें् सैतनक आक्रर्ण से र्‍ौन सिर्तत प्रकट की। स्रैसरैन ने आर० एच० ब्रूसि के साथ िुई अपनी भेंट रें् क्रान्तदाशमियमों की-सी स्पष्टता के साथ इस युद्ध की और ि े जानेर्वािो र्‍ाग मको भवर्वष्य रें् िह देख शिया था, "उसनेपल्श्र्री् िल्क्तयों की और वर्विेष का से बिटेन की शिकायत की। उसनेअपने अंग्रेज़ दिनमाथी को बताया कक र्नैं ेजर्नमी की अस्ससे प्रततित जनता को अपनी नीतत के पक्ष रें् कर शिया ि ै। उसनेजर्नमी को िहग आफ निेन का सदस्य बनर्वा हदया था। उसने ि ोकानी के सर्झौते पर िस्ताक्षर कर हदए थे। र्वि देता गया, देता गया, देता गया, यिां ंतक कक उसके दिेर्वासी उसके वर्वरुद्ध ि ो गए। यहद तुर् ि ोगों ने र्ुझे एक भी ररयासत दे दह ि ोती, तो र् ैंि ोगों को अपनेसाथ खींच िेता; र् ैंअब भी ऐसा कर सकत ि ंूं। परन्तु तुर् ि ोगों ने कुछ भी निहं हदया, और जो नगण्य-सी छोटह-र्‍ोटह ररयासतें ददी भौ, भी सदा बिुत देर रें् दहं। खैर अब पिावर्वक

ल्क्ति के शसर्वाय और कुछ बचता निहं ंिै। अप भवर्वष्य नई पीढह के िाथ र्ें िै और जर्नमी के युर्वकों को, ल्जर्न्िें ल्िल्न्त और नर्वीन यूरोप के पक्ष र्ें ककया जा सकता था, िर् दोनों िह खो चुके िैं। यि र्ेरह वर्वपवत्त िै और तुम्िािा अपराध ।"[93]

र्ानर्वता उस व्यर्वस्था से उभरकर बिार आनेके शिए संघष मकर रिह िै, ल्जसका सर्य पूरा िो चुका िै। यहद बाजा, ल्जसके कस्या को िह कफकर स्थावपत करने का प्रयत्न करा सर्ाय पना नया आधार न खोजें, ल्जसके [illegible]ना व्यथ मरिगा। नये संसार को, जो कक अत्यधधक वैज्ञातनक और यत्त्तीकृत िै, एक यि यद के बतार्वम की आर्वश्यकता िै और उसके शिए र्न और हृदय र्ें एक ऐसे नये पररर्वई रहतत ज़रूरत िै, ल्जसके द्र्वारा िर् इस संसार का पथप्रदिनम कर सकें, इसे तनयन्त्रण र्ें रख सकें, और इसका र्ानर्वीकरण कर सकें। िर् ककसी एक दि-वर्विेष के शिए कायक्रमर् निहं चािते, अवपतु ुजनता के शिए एक जीर्वन-पद्धतत चािते िैं; सर्ंजनों (एडजस्टर्ेण्ट, बैठ-बबठार्व) का एक नया सर्ूि निहं,ं अवपतु ुर्नुष्य के उद्देश्य की िह एक नई धारणा चािते िैं।

र्वि स्थानीय और सार्तयक प्रश्नों को एक ओर छोड़कर, अवर्विम्ब भवर्वष्य की सर्स्या भौततकर्वाद की ल्क्तयों के, जो र्ानर्वीय भ्रातृत्र्व को व्यार्विाररक रूप र्ें कक्रयाल्न्र्वत िोने देनेके वर्वरोध र्ें काय मकर रिह िैं, और अव्यक्त आध्याल्त्र्क िल्क्तयों के, जो उसके पक्ष र्ें काय मकर रिह िैं, बीच की सर्स्या िै। भौततकर्वाद प्रजातन्त्रों और अधधनायकतन्त्रों (तानािाहियो), दोनों र्ें िह ज़र्बूती से पैर जर्ाए िुए िै; र्वि ल्न्दरों और धगरजाघरों र्ें तथा कायािमयों और बाज़ारों र्ें दृढता से जर्ा िुआ िै।

र्वि जीर्वन का कौन-सा दिनम (वर्वचारधारा) िै, ल्जसके शिए िर् िड़ रिे िैं? र्वि राष्र- सर्ुदाय की कौन-सी संरचना (ढांचा) िै, ल्जसे पूण मवर्वजय प्राप्त करने के बाद बिटेन, रूस और अर्ेररका खड़ा करनेका प्रयत्न करेंगे? सरकारों के उद्देश्यों को र्वे ेककस प्रकार वर्विाितर बनाएंगे? तोपों और टैंकों से, वर्वर्ानों और युद्धपोतों से िर् ितु को भिे िह परास्त कर दें, ककन्तु जीतकर स्थायी िाल्न्त स्थावपत निहं ंकर सकते। िर्ें प्रत्येक र्ानर्व-प्राणी को उसकी अपनी आत्र्ा पर पूण मअधधकार प्राप्त करनेदेना िोगा और प्रत्येक राष्र को, चािे र्वि िक्ति िो या सिक्त, छोटा िो या बड़ा, जीर्वन और परहक्षण की स्र्वतन्त्रता का अधधकार देना िोगा। आल्त्र्क पररर् के रूप र्ें प्रजातन्त्र इस बात के शिए वर्वर्वि करता िै कक सर्ाज का रूपान्तर ककया जाए। यहद िर्ें नये सौन्दय मऔर नये अथर्विमी जीर्वन का वर्वकास करना िै, तो र्वि केर्वि आध्याल्त्र्क िल्क्त की नई धारा फूट पड़ने ेके पररणार्स्र्वरूप

---

93 न्यू स्टेट्सर्ैन एण्ड नेिन, 29 र्ाच,म 1941। जॉन शर्लटन र्रह आग्रिपूर्वकम किता िै, "आज पुणे जो कुछ ल्स्थतत िै उसके शिए िर् अंग्रेज़ िोग सबसे अधधक ल्ज़म्र्ेदार िैं। युद्ध-वर्वरार्-सल्न्ध पर िस्ताक्षर िोने के बाद जर्नमी को भूखों र्ारने का दातयत्र्व र्ुख्य रूप से िर्पर िै; िाल्न्त-सल्न्ध का दातयत्र्व भी र्ुखुय रूप से िर्पर िै, ल्जसर्ें र्वि अन्यायपूण मऔर अभूतपूर्व म अनुच्छेद रखा गया था, ल्जसके द्र्वारा जर्नमी को वर्वर्वि ककया गया था कक र्वि युद्ध का सारा दोष अपने शसर िे, जबकक युद्ध का दोष कर् से कर् रूस का भी उतना िह था, ल्जतना कक जर्नमी का। यि र्ुख्य रूप से िर्ारा अन्याय िह था, िर्ारह नैततकता और र्ानर्वता के उन शसद्धान्तों के प्रतत, ल्जर्न्िें िर् पवर्वत्ज्ञ र्ानदे का दार्वा करतैं; वर्वश्र्वासघात िह था, ल्जसने कक जनद्रेर्वेषी बबरमता का यि प्रेेत खड़ा कर हदया िै, ल्जससे सर्झौता करने की िर् आज व्यथ मचेष्टा कर रिे िैं।' 'डडफेंस ऑफ डडर्ॉजैसी, (1939), पृषठ 246-247

हि िो सकता िै, जैसे बुित सर्य पिििे शर्स्र और भारत र्ें िुआ था, बाद र्ें बौद्ध धर् मके प्रचार के बाद के हदनों र्ें यूनान, चीन और जापान र्ें िुआ था, और उत्तरह यूरोप र्ें र्ध्ययुग की उन दो िताल्ददयों र्ें िुआ था, जब रिस्यर्वादह धर् मका प्रभुत्र्व था। श्रद्धा पर केर्वि श्रद्धा िह वर्वजय पा सकती िै।

र्ि् सब धचलिा-धचलिाकर यि घोिा प्रकट कर रिे िैं कक ऐसी बात कफर कभी निहंिोने पाएगी। िर्ने ये दिद तब किे थे, े जब 1814 र्ें नेपोशियन िर्ारा ित्रु था; 1914 र्ें कैसर के वर्वरुद्ध अपनी घृणा प्रकट करते िुए र्ैंने किा था, "ऐसा कफर कभी निह िोने पाएगा।" आज िर् उन्हिं िददों को कफर दुिरा रिे िैं और उन्िें सुनकर र्िरे श्रोता खुिी से ताशियांबजातिैं। िर बार िर् तोते ेकी तरि इन िददों की रट िगाते िैं कक िर् यि र्िान युद्ध सभ्यता और र्ानर्व के शिए िड़ रिे िैं। युर्वक िोग इस भ्रर् र्ें पड़ जाते िैं कक जब यि युद्ध सर्ाप्त िो जाएगा और वर्वजय प्राप्त िो जाएगी, तब उनके सम्र्ुख एक नया जीर्वन और एक युद्धिहन संसार िोगा और उनकी रक्त की आिुतत व्यथ मनिहं ंिोगी। परन्तु इन बातों का तो किहं कोई धचह्न निहं िै। यहद संसार का कायभमार वर्वर्वेकिीि और अन्तःकरण-र्विे नर-नारह न िे िैं, तो िर्ें सुधार के वर्वषय र्ें भरोसा निहं िो सकता, अवपतु अपने बच्चों के शिए केर्वि धचन्ता िह रिेगी, ल्जन्िें अपनी पीढह र्ें कफर आग और ज्र्वािा का, र्ृत्यु और वर्वनाि का सार्ना करने ेके शिए वर्वर्वि ककया जाएगा। इस बात की क्या तनल्श्चतता िै कक 1918-39 के र्वषों का इततिास कफर निहं दोिराया जाएगा? जब तक िर् यूनातनयों की 'नगर-राज्य' की, यिूहदयों की 'चुनी िुई जातत' की और आधुतनक यूरोप की 'राष्ट्र- राज्य' की परम्परा को बनाए रखेंगे, तब तक िर् युद्धों से बच निहं ंसकते। र्ानर्व जातत एक इकाई बनने के शिए बनी िै। र्नुष्य बािू के कणों की भांतत एक-दूसूरे से पृथक् निहं िै। िर् अङ्कगाङ्कगी रूप से एक सजीर्व एकता र्ें बंधे िैं। इस एकता को केर्वि प्रेर् की भार्वना िह सतेज बना सकती िै। िर्ें स्र्वभार्व और परम्परा के अन्तर अर्वश्य िैं, ककन्तु यि वर्वर्वर्वधता सल्ष्ट के सौन्दय मको बढा देती िै। यहद र्ानर्व-जातत की एकता की अनुभूतत कुंहठत िो जाती िै, यहद नैततक वर्वधान की एकता की चेतना क्षीण पड़ जाती िै, तो स्र्वयं र्िरह प्रकृतत किंककत िोती िै। राष्ट्र सार्ूहिक जीर्वन के र्वे रूप िैं, जो र्ानर्वीय इततिास के प्रर्वाि को गढतिैं; परन्तु उनर्ें अल्न्तर् या परर् जैसी कोई बात निहं ंिै। जो राष्ट्र राजनीततक दृल्ष्ट से पराधीन िैं, उनको स्र्वतन्त्रता की र्ांग सर्झ र्ें आनेर्वािह चीज़ िै। र्नुष्यों की एक जातत पर ककसी दूसूरह जातत द्र्वारा िासन िाशसत िोगों के सम्र्ान और गौरर्व से असंगत िै, इसीशिए वर्वश्र्व की िांतत और कलयाण से भी असंगत िै। इसके अततररक्त राष्ट्रहयता र्ानर्वीय स्र्वभार्व का कोई जन्र्शसद्ध सार्वभमौर् र्नोभार्व निहं ंिै। यि राष्ट्रहयता यूरोप की जाततयों र्ें सबसे अधधक प्रबि िै, जो 'धर्-मसुधार' (ररफोर्र्ेिन) के इततिास के पश्चात् ्की चार िताल्ददयों की उपज िै। कफर, राष्ट्रहयता को सरिता से राजनीततक प्रभुता से अिग ककया जा सकता िै राजनीततक प्रभुता राष्ट्रहयता के साथ आर्वश्यक रूप से संयुक्त र्वस्तु निहं ंिै। यहद प्रत्येक राष्ट्र अपन इच्छा का प्रभुत्र्वसम्पन्न स्र्वार्ी िो, यहद अपने उद्देश्य का र्विह अल्न्तर् तनणायमक िो, यहद र्वि अपने बनाए वर्वधान से उच्चतर ककसी वर्वधान को न र्ानता िो, तो र्वि केर्वि िल्क्त और अधधकार बढाने की दृल्ष्ट से िह सोचेगा और अन्य सब हितों को िल्क्त-संगठन के हितों की अपेक्षा गौण कर देगा। र्नुष्यों का कोई भी सर्ाज, जो एकता और सस्र्वाथतमा की भार्वना से अनुप्राखणत िो, राष्ट्र िोत िै। यि भार्वना सांझे ेजातीय, भाषार्ूिक, धाशर्कम, ऐततिाशसक, भौगोशिक या आधथकम आधारों र्ें बद्धर्ूि िो भी सकती िै; और संभर्व िै कक न भी िो। राष्ट्र के सम्बन्ध र्ें कुछ भी बात वर्वयन (ल्स्थर), स्थायी या

सुतनल्श्चत निहं िै। कुछ की रचना परम्परा के आधार पर िुई िै, और कुछ तनयत परम्पराओंके िोते िुए भी राष्रबने िुए िैं; कुछ भाषा के आधार पर बनें, जबकक भाषा के आधार पर निहं ंिैं। राष्र सांझे ेइततिास की परम्पराओं द्वारा बनते िैं। इततिास कोष्ट अन्य (रूलयों) की श्रेणी की वस्तु िै। जैसाकक थ्यूसीडाइडीज़ ने किा िै, यि "एक ऐसी सम्पवत्त िै, ल्जसपर सदा के शिए कदज़ा रिता िै।" ऱ्ान्यताओं के सांझे ेअनुभर्व के अभार्व ऱ्ें कोई इततिास िोगा िि निहं। ककन्तु ऱ्ानर्व-सऱ्ाज के सरूद्धतर और पूणतमर जीर्वन के शिए पृथक् राष्र, जो सांस्कृततक उन्नतत का पोषण करते िैं, अत्यार्वश्यक िै। "र्नुष्य अपनेपड़ोशसयों से कुछ ऐसी र्वस्तु की अपेक्षा करते िैं, जो इतनी काफी सदिृ (शरिती-जुिती) िो कक सर्झी जा सके, कुछ ऐसी र्वस्तु की, जो इतनी काफी शभन्न िो कक ध्यान आकृष्ट करे, और कुछ ऐसी र्वस्तु की, जो इतनी काफी रिान िो कक श्रद्धा की पिा बने।"[94] राष्रहय सऱ्ाजों की नैततक प्राऱ्ाखणकता न्यायसंगत िै। राष्र र्वे ेस्र्वाभावर्वक और आर्वश्यक रूप िैं, जो व्यल्क्त और ऱ्ानर्व जातत के बीच ध्यर्वती पड़ार्व सर्झे ेजा सकतिैं।

रि् इस सर्य सभ्यता के ऐक्य के किा ऱ्ें िैं। इस िताददह के प्रारम्भ िोने ेतक, पररर्विन और संचार (सम्पकम-स्थापन) की कहठनाइयों के कारण संसार की जाततयां सरुद्रों, नहदयों और पिाड़ों की भौततक रोकों द्वारा पृथृक् कर हदए गए प्रदेिों ऱ्ें रिती थींऔर अपना- अपना सऱ्ूि-जीर्वन स्र्वतन्त्र रहतत से वर्वकशसत करती थीं। उस सर्य सभ्य जीर्वन के वर्वकास के शिए जन्रभूशऱ् के प्ऱ्ेर् से पूण मउत्कट देिभल्क्त और सांस्कृततक परम्परा के प्ऱ्ेर् से पूण मउत्कट राष्रहयता स्र्वाभावर्वक आर्वश्यकताएं थीं। आहदर् आधथकम वर्वकास ने अपररधचतों के प्रतत वर्वरोध की र्नोर्वृवृत्त को पुष्ट ककया, जो आत्रसंरक्षण के शिए आर्वश्यक सर्झी गई थी। आज र्वैज्ञातनक आवर्वष्कारों ने सारे संसार को एक तनकट सिभार्व ऱ्ें िा रखा िै। िऱ्ारा ज्ञान, िऱ्ारह वर्वचार की आदतें, वर्वश्र्व के सम्बन्ध ऱ्ें िऱ्ारा दृल्ष्टकोण िऱ्ारह सबसे अरूलय सम्पवत्तयां िर् तक सभी राष्रों से पिुंचती िैं। यहद ये सब स्र्वयंऐक्य स्थावपत न भी करती िों, तो भी ये ऐक्य के अनुकूि दिाएं अर्वश्य उत्पन्न कर देती िैं। संसार की यि नई बढती िुई परस्पर संयुक्तता िोगों से अपेक्षा करती िै कक र्वे नई सहिष्णुता और सिाचय मकी भार्वना िेकर परस्पर तनकट आ जाएं। िर्ें अपने-आपको एक िि पररर्वार का सदस्य सर्झना चाहिए और एक सबि वर्वश्र्व-ल्क्त ऱ्ें हिस्सा बंटाना चाहिए, जो िऱ्ारह राष्र-भल्क्तयों का स्थान छीनेबबना उनकी पूरक बनती िै। िर् धीरे-धीरे एक िि सभ्यता के सदस्य बनते जा रिे िैं, इसशिए िऱ्ारे अपराध घरिूे ूदुघुटमनाएं (रेजेडी) िैं और िऱ्ारे युद्ध गृि-युद्ध िैं। जब िर्ने चीन ऱ्ें दर्कते िुए संत्रासों को, इधथयोवपयार्वाशसयों की असिायता को और स्पेन ऱ्ें फाशसस्टों और कम्युतनस्टों की असऱ्ान प्रततयोधगताओं को देखने से िि इनकार कर हदया, और जब िर्नेतनदोष दुबुिम की बशि देकर और दोषी बिर्वान की सिायता करके अपने-आपको बचानेकी चेष्टा की, तब िर्नेअपने-आपको ऱ्ानर्व-जातत की एकता के श्रेष्ठ आदि मके प्रतत तनष्ठािहन प्रऱ्ाखणत कर हदया। परन्तु शसद्धान्ततः प्रजातन्त्रीय प्रणािि दूसूरे िोगों के साथ उन्िें कानून से बिार ऱ्ानकर या उन्िें अर्वऱ्ानर्व (र्नुष्य से नीचेका) सर्झकर बतामर्व करने ेको ककसी प्रकार उधचत निहं ंठिरा सकती। प्रबुद्ध िोगों को उस नई व्यर्वस्था के साथ

---

94 ए०एन०व्िाइटिैड,'साइन्सएण्डदहऱ्ॉडन मर्वलडम '(1928)

अपना एकात्य स्थावपत करना चाहिए, जो जन्र् िेने के शिए संघष मकर रिह िै। र्ानर्वता के शिए एक उज्ज्विवतर हदन की कलपना उतनी िह प्राथनमा भी िै, ल्जतनी की भवर्वष्यर्वाणी।'[95]

नये आदिों को नई आदतों और नई प्रथाओंर्ें, उद्योग और व्यर्वसाय के पुनगठमन र्ें साकार ककया जाना चाहिए; इन प्रकक्रयाओं को, जोकक आदिों के िाथ और पैर िैं, नई हदिा की ओर र्ोड़ने ेर्ें नये आदिों को साकार ककया जाना चाहिए। अच्छा जीर्वन कानूनों और संस्थाओं के र्ाध्यर् से र्वास्तवर्वक बनना चाहिए। सारूहिक सुरक्षा के शिए राज्यों की प्रभुता और स्र्वतन्त्रता की कुछ र्यादमा बांधना अत्यार्वश्यक िै। बुित बड़े े पररर्ाण र्ें बढती िुई सम्पवत्त और िल्क्त का, जो इस सर्य राष्रों के अधधकार र्ें िै, अन्तराष्मरहय और न्यायोधचत तनयन्त्रण िोना आर्वश्यक िै। इस युद्ध र्ें जो बातें नई पता चिह िैं, उनर्ें से एक यि िै कक कोई भी राज्य अपनी स्र्वतन्त्र प्रभुता को बचाए निहंरख सकता। िल्क्तिाह बिहटि साम्राज्य तक को अर्ेररका से सिायता र्ांगने की आर्वश्यकता पड़ती िै। छोटे-छोटे दिों का अत्यधधक उद्योगीकृत दिों से कोई र्ुकाबिा निहं ै। राष्र या तो स्र्वेच्छा से, या बािरह दबार्व के कारण एक स्थायी राजनीततक और आधथकम दृल्ष्ट से परस्पर शर्ि जाएंगे।

युद्धोत्तर संसार के शिए कई योजनाएं प्रस्तुत की गई िैं। कुछ िोग प्रजातंत्रों का संघ बनानेकी बात करते िैं; कुछ दूसूरे िोग अंग्रेज़-अर्ेररकन, यूरोवपयन और एशियाई, तीन गुटों की चचामकरते िैं। िर्ारा िक्ष्य वर्वश्र्वव्यापी राजनीततक और आधथकम अन्तराष्मरहय सियोग िोना चाहिए। एक र्विर्वि सर्ाज पर आधाररत िल्न्त की आिाएं इन प्रादेशिक संघों पर आधाररत आिाओं ंकी अपेक्षा अधधक स्र्वस्थ िैं। िर्ारह योजनाएं सिासर्य और व्यापक िोनी चाहिए; अटकती िुई और टुकड़े–टुकड़े ेकरके (खण्डिः) निहंिोनी चाहिएं। शर्वलटन ने किा था, "इंग्िैण्डि को यि निहं ंभूिना चाहिए कक र्वि दूसूरे राष्रों को यि शसखाने र्ें अग्रणी िै कक कैसे जीना चाहिए। सभ्यता को बचाए रखनेके शिए र्नुष्य जातत की अन्तराष्मरहय साझेदारह और राजनीततक एकता अतनर्वाय मित िै और यि कार् बिटेन, अर्ेररका और रूस का िै कक र्वे स्र्वतन्त्र िोगों का एक वर्वश्र्व सर्ाज बनाने के काय मका नेतृत्र्व करें। चधचिम-रुज़र्वेलट घोषणा र्ें िांतत-सर्झौते के शिए सार्ान्य शसद्धान्त तनल्श्चत कर हदए गए िैं।96

---

[95] एक संस्कृत श्िोक र्ें किा गया िै, "वर्वश्र्वर्ाता र्ेरह र्ाता िै, सबका स्र्वार्ी र्ेरा वपता िै, सब र्नुष्य भी भाई िैं और तीनों िोक र्ेरा स्र्वदेि िै।"

(र्ाता र्े पार्वतमी देर्वी, वपता देर्वो र्िेश्र्वरः
भ्रातरो र्नुजाः सर्वे स्र्वदेिो भुर्वनत्रयर् ्॥)

[96] र् ैंउस घोषणा-पत्न को यिां जोड़ े दे रिा िंू:
"संयुक्त राज्य अर्ेररका के प्रेशसडेण्ट् और प्रधान र्ंत्री श्री चधचिम ने, जो संयुक्त राज (बिटेन) र्ें र्िार्हदन सम्राट् की सरकार के प्रतततनधध िैं, आपस र्ें शर्िकर यि उधचत सर्झा िै कक र्वे अपने-अपने दिों की राष्रहय नीततयों र्ें वर्वद्यर्ान उन कुछ सांझे शसद्धान्तों को िोगों को वर्वहदत करा दें, ल्जनके आधार पर र्वे संसार के शिए उत्कृष्टतर भवर्वष्य की आिा करते िैं।

पििा- उनके दि अपना राज्य क्षेत्रीय या अन्य ककसी प्रकार का वर्वस्तार करना निहं चािते।

स्थायी ◌िल्न्त की ◌ित ◌ेंइसर्े ◌ैं। यि र्ान शिया गया ◌ै कक कोई भी राष्र आक्रर्ण द्र्वारा अपने पड़ोशसयों की सुरक्षा के शिए भय का कारण निहं ◌ंबनेगा। पूर्व मल्स्थतत को बि-प्रयोग द्र्वारा बदिनेके प्रयत्नों को रोकना ◌िह काफी निहं ◌ै। ◌िर्ें सार्ान्य कलयाण के हित र्ें ◌िल्न्तपूण मपररर्वतनमों को करने के शिए भी प्रभार्वी व्यर्वस्था रखनी चाहिए। युद्ध की सर्ाल्प्त पर प्रततिोध के शिए, या राष्रहय क्षेत्र वर्वस्तार के शिए या दोनों के शिए की जानेर्वािह ◌ोकवप्रय र्ांगों का प्रततरोध कर पाना आसान निहंगिा। यूनानी ◌ोग, जो इतनी र्वीरता के साथ ◌िड़े ◌ैं, ◌ायद यि र्ांग कर बैठें कक अलबातनया का कुछ हिस्सा देकर उनका राज्यक्षेत्र बढा हदया जाए। सोवर्वयत संघ अपनी सुरक्षा के हित र्ें कफनिडैं या बालकन राज्यों के कुछ राज्य-क्षेत्र को अपने साथ संयुक्त कर िेनेकी र्ांग कर सकता ◌ै। ◌िर् इस वर्वषय र्ें भी तनल्श्चत निहं ◌ं◌ो सकतेकक बिटेन द्र्वारा अफ्रीका या एशिया र्ें साम्राज्यर्वादह अततक्रर्ण का खतरा निहं ◌ोगा। जापान और बिटेन ने चीन का जो प्रदिे ◌िधथया शिया ◌ै और इधथयोवपया के ल्जस प्रदिे पर इटिह का कदजा ◌ै, उसे र्वापस हदिाने र्ें भी कई सर्स्याएं खड़ी ◌ोंगी।

दूसूरा-र्वे राज्य क्षेत्रों र्ें ऐसा कोई पररर्वतनम निहं ◌ं◌ोने देना चािते, जो र्विां की सम्बद्ध जनता की स्र्वतन्त्रतापूर्वकम प्रकट की गई इच्छा के अनुकिू न ◌ो।

तीसरा- र्वे सब ◌ोगों के इस अधधकार का आदर करतिैं कक र्वे इस बात का चुनार्व कर सकें कक र्वे ककस प्रकार की ◌ासिन-प्रणािह के अधीन रिना चाितिैं; और र्वे चाितिैं कक ल्जन ◌ोगों से प्रभुत्ु ा के अधधकार और स्र्वािसन बिपूर्वकम छीन शिए गए ◌ैं, उन्िें र्वे कफर र्वापस हदिए जाएं।

चौथा- अपने र्वतर्मान दातयत्र्वों का सर्ुधचत ध्यान रखतिुए र्वे उस बात के शिए प्रयत्न करेंगे कक छोटे-बड़े,◌े वर्वजेता और वर्वल्जत, सब राष्रों को सर्ान ◌ितों पर व्यापार र्ें भाग ◌िेने और संसार के उन कच्चे र्िों को प्राप्त कर सकने का अधधकार ◌ो, ल्जनकी उन दिेों की आधथकम सर्दृ ्धध के शिए आर्वश्यकता ◌ै।

पांचर्वां - र्वे सब राष्रों र्ें, श्रर् का स्तर सुधुारने के शिए, आधथकम उन्नतत के शिए और सार्ाल्जक सुरक्षा के शिए आधथकम क्षेन र्ें सब राष्रों के बीच पूणतमर् सियोग स्थावपत करना चाितिैं।

छठा-नाज़ी तनरंकुिता का पूण मवर्वनाि करने के बाद उन्िें आिा ◌ै कक र्वे ऐसी ◌िल्न्त स्थावपत ◌ुिई देख सकेंगे, ल्जसर्ें सब राष्रों को अपनी सीर्ाओं ◌ंके अन्दर तनरापद रिने का अर्वसर शर्ि सकेगा और जो ◌िल्न्त यि आश्र्वासन दे सकेगी कक सब दिेों र्ें सब ◌ोग अपना जीर्वन स्र्वतन्त्रतापूर्वकम, भय और अभार्व से र्ुकुत ◌ोकर बबता सकतिैं।

सातर्वां - ऐसी ◌िल्न्त द्र्वारा सब ◌ोगों को बबना रुकार्वट सागरों और र्िासागरों के पार आने-जाने र्ें सर्थ मिो सकना चाहिए।

आठर्वां ◌ं- उनका वर्वश्र्वास ◌ै कक संसार के सब राष्रों को, यथाथ मतथा आध्याल्त्क कारणों से, बि के प्रयोग का पररत्याग स्र्वीकार कर ◌िेना चाहिए। क्योंकक यहद र्वे राष्र, ल्जनके अपने राज्य क्षेत्र से बािर आक्रर्ण का भय ◌ै, या भवर्वष्य र्ें भय ◌ो सकता ◌ै, स्थि, जि और र्वायुसेनाओं ◌ंका ◌िस्त्रीकरण जारह रखें, तो भवर्वष्य र्ें ◌ांतत बनाए निहं रखी जा सकती, इसशिए उनका वर्वश्र्वास ◌ै कक जब तक सार्ान्य सुरक्षा की कोई वर्वस्ततृ और स्थायी प्रणािह स्थावपत न ◌ो जाए, तब तक के शिए ऐसेराष्रों का तन:स्त्रिीकरण अततनर्वाय मिै। इसी प्रकार र्वे उन सब व्यार्विाररक उपायों को सियता देंगे और प्रोत्साहित करेंगे, ल्जनसे ◌िल्न्तवप्रय प्रजा के शिए ◌िस्त्रीकरण का कर्र-तोड़ बोझ ◌िलका ◌ो सके।

दूसूरह धारा शसद्धान्त की दृल्ष्ट से तनदोष ि ै। ल्जन राष्ट्रों को धुरह-आक्रान्ताओं ने अपने अधीन कर शिया ि,ै उनके शिए तो युद्ध का असिह उद्देश्य वर्वदेी राज्य से स्वाधीनता प्राप्त करना िह ि ै : यहद सब पररर्वतनम िोगों की स्वतन्त्रतापूर्वकम प्रकट की गई इच्छाओंके अनुसार िह िोने ि,ैं तो उन्ें अपने भवर्वष्य का चुनार्व स्वयं करने ेकी स्वतन्त्रता शर्िनी िह चाहिए। यि बात केर्वि यूरोप र्ें नाल्जयों द्र्वारा जीत शिए गए देिों पर िह िागू निहं ंिोनी चाहिए, अवपतु एशिया र्ें जापातनयों द्र्वारा जीते गए देिों पर भी िागू िोनी चाहिए। बर्ाम, र्िाया और डच ईस्ट इंडीज़ के साथ क्या बतार्वम ककया जाएगा? क्या आल्स्रया को यि तनश्चय करनेकी स्वतन्त्रता रिेगी कक र्वि जर्नमी के साथ अपने सल्म्र्नि को बनाए रखे या निहं? क्या इन सबको राष्ट्रों के रूप र्ें अपनेभवर्वष्य का तनणयम करने की स्वतन्त्रता िोगी ?

अर्वश्य िह िर्ें दूसूरे राष्ट्रों को क्षतत पिुंचाने की रोकथार् करनी चाहिए। राष्ट्रर्वाद िंदूू र्वि शसद्धान्त ि ै ल्जसने ेसारे चीन को शर्िाकर एक कर हदया ि;ै और र्विह आज भारत र्ें भी प्रर्ुख शसद्धान्त ि ै। िर् जातीय या धाशर्कम सर्ुदायों को राष्ट्रों की एकता को ठेस निे पिुंचाने दे सकते, क्योंकक इससे तो राष्ट्र ऐसे छोटे-छोटे खंडों र्ें बंट जाएंगे, ल्जनर्ें सिंभािना ि ै असम्सर्व िोगा। यहद ककसी राष्ट्र के अन्दर कुछ कहठनाइयां या गततरोध उपल्स्थत िो जाए, िं अन्तराष्म्रहय तनकाय को, ल्जसे कक सबसे अधधक नैततक प्राधधकार (अथॉररटह) प्राप्त ि,ै दोगे पक्षों के दार्वों पर र्वचार करने ेके बाद तनणयम करना चाहिए, और उसका तनणयम सब पक्षों के र्ान्य िोना चाहिए।

तीसरह धारा के अनुसार िासन के रूपों र्ें कोई िस्तक्षेप निहंिोना चाहिए। सोवर्वयत रूस तक ने वर्वश्र्व-क्राल्न्त की योजना को त्याग हदया ि ै। त्रात्सकी के ऊपर स्ताशिन की वर्वजय स्थाई वर्वश्र्व-क्राल्न्त के ऊपर 'केर्वि एक देि र्ें सर्ाजर्वाद' की वर्वजय ि ै। स्ताशिन की पूंजीर्वादह देिों के साथ शर्त्रतापूण मसियोग की नीतत इस युद्ध र्ें स्पष्ट दहख रिह ि ै। बोलिेवेर्वज़्र् (साम्यर्वाद) आदरणीय िो गया ि ै। पिेर्वर क्राल्न्तकारह रूस से बािर दूसूरे देिों र्ें ि,ैं रूस र्ें निहं।'[97] सोवर्वष्ट रूस सर्ाजर्वाद की सीर्ाओंका वर्वस्तार करनेको प्रणबद्ध निहं ि ै। यहद िर् "सब िोगों के अपने शिए र्वि िासन-प्रणािह चुनने ेके, ल्जसके अधीन र्वे रिना चािते ि,ैं अधधकार का आय करते ि"ैं तो िर्ें इस वर्वषय र्ें अपनी सदियता उन स्थानों र्ें स्र्वा–िासन का अधधकार देकर प्रर्ाखणत करनी चाहिए, जिां िर्ारे िाथ र्ें िोिे िह िल्क्त वर्वद्यर्ान ि ै। "वर्वदेिी जुए की असिा िहनता" केर्वि यूरोप से िह निहं,ं अवपतु संसार के प्रत्येक भाग से सर्ाप्त की जानी ि ै। भारत र्ें, एक राष्ट्र के रूप र्ें अपनी भवर्वतव्यता की चेतना भरनेका श्रेय र्ुख्य रूप से बिटेन को िह ि ै। परन्तु भारत पर वर्विेष िल्क्तयों (अधधकारों) का प्रयोग करके, अ-प्रजातंत्नीय प्राधधकार का उपयोग करके, प्रततततनधध नेताओं को जिे र्ें डािकर िासन इस बात का द्योतक ि ै कक िर्ें अपने-आपको धोखा देनेकी ककतनी सुवर्वपिु क्षर्ता ि ै। इस अधधकारपत्र को 'भारत पर िागू करने ेके प्रसंग र्ें श्री चधचिम का कथन ि,ै "बिटेन भारत को राष्ट्रर्ण्डि र्ें िर्ारे साथ स्वतन्त्र और सर्ान साझेदारह प्राप्त करने र्ें

---

[97] िंदन र्ें िुए द्र्वतीय अन्तर-शर्र् राष्ट्रहय सम्र्ेिन र्ें, िंदन ल्स्थत रूसी राजदूतू श्री र्ेस्की ने घोषणाई थी कक "सोवर्वयत संघ प्रत्येक राष्ट्र, अपनी स्वाधीनता और राज्यक्षेत्रेीय अखंडता के अधधकार का, अपने सार्ाल्जक व्यर्वस्था चुनने के अधधकार का, और अपने शिए ऐसी िासन-पद्धतत चुनने के अधधकार का र्न्त करता ि ै, ल्जसे र्वि राष्ट्र अपनी आधथकम सर्ृद्ूधध को और अच्छी तरि बढाने के शिए आर्वश्यक सर्झता ि ै।

सियता देनेके सम्बन्ध र्े अगस्त 1940 की घोषणा से र्वचनबद्ध ि ै, परन्तु उसे भारत के साथ दहघकमिहन सम्बन्ध के कारण उत्पन्न उत्तरदातयत्र्वों को पूण मकरते िुए और भारत के र्वर्वशभन्न धर्ों, जाततयों और हितों के प्रतत अपनी ल्ज़म्र्ेदाररयों को ध्यान र्े रखते िुए ि ह ऐसा करना िोगा।" इन ऐततिाशसक उत्तर-दातयत्र्वों का उपयोग भारत र्े बिहटि प्रभुत्र्व को बनाए रखने के शिए ककया जा रिा ि ै। पराधीन िोगों को आत्र्तनणयम करने े का अधधकार निहं ंि ै। इस युद्ध से बिटेन के भारत, बर्ा्म तथा संसार की रंगीन (किाह या पीिह) जाततयों के प्रतत रुख र्े कर् ि ह अन्तर पड़ा ि ै।'[98] जब श्री चधचिम इस अधधकार-पत्न को िेकर र्वापस िौटे, तो उन्िोंने ेयि स्पष्टहकरण करनेर्े ततनक देर निहंकी कक इसकी तीसरह धारा भारत या बर्ा्म के प्रतत बिहटि नीतत पर ककसी भी तरि िागू निहंिोती। श्री चधचि ने किा कक "इस धारा का प्रभार्व ककसी भी रूप र्े उन नीतत-सम्बन्धी अनेक र्वक्तव्यों पर निहंपड़ता, जो सर्य- सर्य पर भारत, बर्ा्म तथा बिहटि साम्राज्य के अन्य भागों र्े सांर्वर्वधातनक िासिन के र्वकास के सम्बन्ध र्े हदए गए िैं।" और यि कक इस धारा का सम्बन्ध र्ुख्यतया "यूरोप के उन राज्यों और राष्रों र्े, जो इस सर्य नाज़ी जुए के नीचे दबे िुए िैं, प्रभुता, स्र्वािासन और राष्रहय जीर्वन की पुनः स्थापना से ि ै। एशियाई िोगों की र्ित्र्वाकांक्षाओं की उपेक्षा करके र्वि हिटिर के श्र्ेष्ठ जातत के शसद्धान्त को ि ह स्वीकार कर रि िैं। 10 नर्वम्बर, 1942 को िाड मर्ेयर के भोज र्े भाषण देते िुए श्री चधचिम ने यि स्पष्ट कर हदया कक "यहद इस र्वर्वषय र्े ककसी को कोई गितफिर्ी िो, तो भी िर् अपनेिह र्त पर ल्स्थर रिेंगे। र् ैंराजा का प्रधान र्ंत्नी बिहटि साम्राज्य के पररसर्ापन का सभापततत्र्व करनेके शिए निहंबना िंू ू" और कफर भी िर्े बताया जाता ि ै कक

साम्राज्यर्वाद अब अतीत की र्वस्तु िो चुका ि ै। भारतीय एकता और स्र्वाधीनता की सर्स्या को यत्नपूर्वकम गित ढंग से संभािते रिने के फिस्र्वरूप भारत र्े ल्स्थतत अब खतरे के बबन्दु ुतक पिुंच चुकी ि ै। जब िल्क्तिाह राष्रों द्र्वारा अपनाई गई नीततयां सर्ूचे ेर्वर्वश्र्व के सांझे ेउद्देश्य को ि ह अस्र्वीकार करके िर्े र्वर्वस्र्यपूण मतनरािा र्े पटक देती िैं, तब नेताओं द्र्वारा की गई घोषणाओं का र्ूलय बिुत कर् रि जाता ि ै। श्री चधचिम को िीिार् शिंकन के इन बुद्धधर्त्तापूण मिददों को याद रखना चाहिए, "क्योंकक र् ैंदास बनकर रिने ेको तैयार निहं ंिंू ू, इसशिए र् ैंर्ाशिक भी निहं ंबनना चािता। ल्जस ककसी व्यल्क्त का इस बात से इतना र्तभेद ि ै कक उसे र्तभेद निहं ंकिा जा सके, र्वि प्रजातन्त्रर्वादह निहं ंि ै।" बिहटि राजनीततज्ञ बातें तो नये संसार की करते िैं; परन्तु सदा उनका यत्न यिह रिता ि ै कक उसकी स्थापना पुराने ेसाधनों द्र्वारा िह की जाए। पर ऐसा िो निहंसकता। यहद र्वे इस युद्ध को केर्वि कफर जीर्वन की पुरानी पद्धततयों की ओर िौट जानेके शिए जीतना चािते िैं, तो इस 'र्िान् ्धर्युमद्ध' का उद्देश्य शसर्वाय रक्तपात और र्वर्वद्र्वेष के और कुछ निहं ि ै।

प्रेशसडेंट रूजर्वेलट ने अपने ऐततिाशसक रेडडयो-प्रसाररत भाषण र्े किा था, "िर्ारा र्वर्वश्र्वास ि ै कक स्र्वार्ी जातत के बारे र्े तानािािों का नारा तनरा कूड़ाकरकट और बेिूदा शसद्ध िोगा। अब तक कभी कोई ऐसी जातत निहं

---

98 'हद पोशिहटकि क्र्वाटमरिह' (अप्रैि-जून, 1942) र्े 'र्िाया का पतन िेख र्े िेखक नेशिखा ि ै, "सच बात यि ि ै कक दुभाग्मय से अंग्रेज़ी-भाषीराष्रों के सभी र्वगों र्े रंग का भेद-भार्व रंगीन जाततयों के प्रतत सिज प्रर्वृत्तक अरुधच और अर्वर्वश्र्वास बिुत अधधक ि ै और यि सर्झना कक यि भेदभार्व केर्वि 'ल्िम्पों' या तथाकधथत 'िासक र्वगों तक िह सीशर्त ि ै, सर्स्या को गित सर्झना ि ै।" (पृष्ठ 135)। "जापातनयों द्र्वारा र्िाया की र्वर्वजय भी गैर-यूरोवपयनों के प्रतत बिहटि सरकार की नीतत की गंभीर बुहटयों के कारण या नीतत के एकदर् अभार्व के कारण िह िुई।" (पृष्ठ 136)

ुई और न कभी िोगी, जो अपनेसाथी र्नुष्यों का स्वार्ी बनकर रिने के उपयुक्त िो सके।" कफर भी उसके दिे र्ें सर्वा करोड़ नीग्रो ऐसे िैं, ल्जन्िें जातीय पक्षपात के कारण राष्रहय जीर्वन र्ें ककसी प्रकार का सकक्रय भाग निहं ेंनिहदया जाता। उनके वर्वरुद्ध ककया जानेर्वािा सार्ाल्जक, आधथकम और राजनीततक भेदभार्व इस बात को प्रकट करता िै कक र्वि स्र्वाधीनता और सर्ानता, ल्जसके तनशर्त्त िर्ें िड़ने को किा जाता िै, उन िोगों पर िागू ककए जानेके शिए निहीं। संयुक्त राज्य अर्ेररका र्ें रंगीन िोगों के साथ ककया जानेर्वािा बतार्वम, सार्ाल्जक भेदभार्व, रक्षा-उद्योगों तथा रेड यूतनयनों से रंगीन सैतनकों को बािर िह रखना इस बात की घोषणा निहं करते कक अर्ेररका सर्वात्मर्ना प्रजातंत्र और जातीय सर्ानता का पृष्ठपोषक िै। कफर, दक्षक्षण अफ्रीका संघ की रचना करनेर्वािे अधधतनयर् र्ें दक्षक्षण अफ्रीका के र्ूि तनर्वाशसयों की बिुत बड़ी संख्या को र्तदान का अधधकार निहं हदया गया। सम्राट् की बिहटि सरकार के प्रत्यक्ष अधधकार क्षेत्रों, जैसे केन्या, र्ें जातीय अन्याय एक ऐसी बुराई िै, जो तनरन्तर बढती पर िै। बािर से आए थोड़े सेे अलपसंख्यक िोगों नेर्वैसा िह पूण मआधधपत्य जर्ाया िुआ िै, जैसा कक नाज़ी िोग कार्ना कर सकतेथे, े भिे िह यि उतना ज़ोर-ज़बरदस्ती का निहं ंिै। भूशर्, श्रर् तथा कर-आरोपण के सम्बन्ध र्ें बनेकानून और प्रिासन अफ्रीकी िोगों के स्र्वाधीन आधथकम उन्नतत के अर्वसरों को सीशर्त कर देते िैं, उन्िें यूरोवपयन उद्यर्ों र्ें (कायों र्ें) बेगार करने ेको वर्वर्वि करते िैं, और उन्िें अपनी पराधीन ल्स्थतत से बािर तनकिने से रोकतेिैं, जबकक र्वे िह कानून और प्रिासन अलपसंख्यकों के राजनीततक, सार्ाल्जक और िैक्षखणक वर्विेषाधधकारों की रक्षा करते िैं। ककसी दूसूरह जातत को अपनेसे घहटया सझकर उससे घृणा करना, जैसेकक नाज़ी करते िैं, एक बात िै; परन्तु ऊपर से सर्ानता के बतार्वम का हदखार्वा करते िुए, व्यर्विार र्ें उनसे घृणा करना तो और भी अधधक बुरा िै।'[99] इनर्ें से पििा कर् से कर् ईर्ानदार और स्पष्टर्वादह तो िै; दुसुरा, ल्जसर्ें घृणा और घहटया िोगो के प्रतत उदारता के व्यर्विार का शर्श्रण िै, तनल्श्चत रूप से अधधक खतरनाक िै। जब ज िोगों हिग के प्रततज्ञा-पन की ितों र्ें जातीय सर्ानता का शसद्धान्त भी सल्म्र्शित कर िेनेका प्रस्तार्व रखा, तो प्रेशसडेण्ट वर्वलसन ने उसका वर्वरोध ककया और बिहटि प्रततततनधध र्ंडि का सर्थनम भी प्राप्त कर शिया। इसर्ें सन्देि निहं कक श्री पेटिह ने इस बात पर जोर हदया था कक इससे पििे हदन उन्िोंनेशसद्धान्तों की जो घोषणा की थी, र्वि संसार की सब जाततयों पर िागू िोती िै।100 चीन र्ें ग्रेट बिटेन तथा संयुक्त राज्य अर्ेररका द्र्वारा अपने राज्यक्षेत्रातीत अधधकारों का त्याग एक बड़ा कदर् िै; और यहद इसके बाद अर्ेररका र्ें एशियाई िोगों द्र्वारा

---

99 जैकीज़ र्ारहतेने किा िै, "ईसाई धर् मकी प्रगतत को ककसी अन्य र्वस्तु से इतनी िातन निहं ंपिुंची, ल्जतनी... कक ईसाई िोगों र्ें वर्वद्यर्ान जातीय पक्षपात से; और कोई अन्य र्वस्तु ईसाई धर् मकी भार्वना के इतनी प्रततकूि भी निहं ंिै, ल्जतना कक यि पक्षपात िै।... ईसाई-जगत् ्र्ें इससे अधधक वर्वस्तृत रूप से व्यापक भी और कुछ निहं िै।"

100 िंदन र्ें पल्श्चर् अफ्रीका छात्रों द्र्वारा अपने सम्र्ान र्ें ककए गए सत्कार र्ें भाषण देतेिुए श्री ऐटिह ने किा, "इस दिे की सरकार की ओर से युद्ध के सम्बन्ध र्ें जो घोषणाएंकी गई िैं, उनर्ें आप कोई ऐसी ध्र्वतन निहं पाएंगे कक ल्जस स्र्वतन्त्रता और सार्ाल्जक सुरक्षा के शिए िर् िड़ रिे िैं, उससे र्नुष्यों की ककसी भी जातत को र्वंधचत ककया जाएगा। िर् ज़र्दूरू दि के िोग गोरह जाततयों द्र्वारा श्यार् जाततयों के साथ ककए गए अन्यायों को सदा अनुभर्व करते ेरिे िैं। िर्ें अब यि देखकर प्रसन्नता िोती िै कक ककस प्रकार सर्य बीतने के साथ-साथ उपतनर्वेिों के सम्बन्ध र्ें यि धारणा, कक र्वे तो ऐसे तनम्नतर िोगों द्र्वारा बसुिए स्थान िैं, ल्जनका कार् केर्वि दूसरे िोगों की सेर्वा करना और दूसूरों के िाभ के शिए सम्पवत्त उत्पन्न करना-भर िै, सर्ाप्त िोती जा रिह िै और उसका स्थान अपेक्षाकृत अधधक न्याय्य और अधधक भिे वर्वचार िे रिे िैं।"

नागररकता के अधधकार प्राप्त करने पर िगाया गया ईष्यार्मय प्रततबन्ध भी सर्ाप्त कर हदया जाए, तो यि संयुक्त राज्य अर्ेररका की जनता की ओर से जातीय पक्षपात की भार्वना से र्ुक्त िोने की घोषणा िोगी। ऐसे संसार र्ें, ल्जसे पििे वर्वजयों द्र्वारा खल्ण्डत ककया गया और अब बिप्रयोग द्र्वारा खल्ण्डत रखा जा रिा िै, युद्धों का िोना अतनर्वायर् मि। यहद इस युद्ध र्ें र्ृत िोगों की र्ृत्यु व्यथ मन जानी िो, यहद युद्ध के अन्त र्ें पिनिर्वाह िल्न्त को तनरन्तर प्रततरोध और प्रततिोध की पििासा को तनर्शमित न करते रिना िो, यहद पराधीन राष्रों को अपनी बेडड़यों र्ें िह न घिुते जाना िो, यहद र्नुष्यों के र्नों र्ें घृणा और तनरािा को न जगाया जाना िो, तो अतीत र्ें ककए गए अन्यायों को ठीक ककया जाना चाहिए और सब राष्रों के जीर्वन और सुरक्षा के शिए अंतराष्मरहय संरक्षण प्राप्त िोना चाहिए। यहद वर्वजय का उपयोग इस सर्य वर्वद्यर्ान प्रबन्धों (व्यर्वस्था) को िह उधचत ठिराने के शिए ककया जाना िो, ल्जनर्ें कुछ थोड़े-से व्यल्क्तयों और राष्रों के प्रतत अनुकूिता प्रदशितम की जाती िै, तो यि तो केर्वि िोभ िह िुआ, जो अपनी पिावर्वक र्ित्वाकांक्षाओं को पूण मकरने के शिए ित्या को कार् र्ें िा रिा िै। सभ्य संसार के अन्तःकरण की यि र्ांग िै। और उसे यि आिा िै कक उपतनर्वेिों और पराधीन देिों की प्रर्ुख सर्स्याओंका िि न्याय और तनशिप्मतता की भार्वना के साथ ककया जाए।

कफर, संवर्वधान ककस प्रकार का िो, इसका चुनार्व जनता द्र्वारा ककया जाना िै; परन्तु नर्वीन संसार र्ें राष्रों को अपनेवर्ववाद र्ें स्र्वयं िह तनणायमक बनने का अधधकार निहं शर्ि सकता। सार्ान्य सुरक्षा की ककसी भी प्रणािह र्ें िस्त्रास्त्रों की र्वृद्धध के अधधकार तथा राष्रों के अन्य अधधकारों को सीशर्त कर हदया जाएगा। सब राष्रों के शिए कुछ न्यूनतर् प्रर्ाप तनयत कर देने पड़ेंगे, ल्जनके द्र्वारा सबको "भय और अभार्व से र्ुल्क्त" शर्ि सके। इन प्रर्ापों को वर्विुद्ध रूप से घरेिू वर्वषय निहंर्ाना जा सकता। िर्ें प्राथशर्क र्ानर्वीय अधधकारों, जैसे ज्ञान प्राप्त करनेऔर सम्र्तत प्रकट करने की स्र्वतन्त्रता, उपासना की स्र्वतन्त्रता, संगठन बनानेकी स्र्वतन्त्रता और जातीय अत्याचार से स्र्वतन्त्रता, के सम्बन्ध र्ें एक योजना बनानेऔर इसे िागू करने के शिए एक अंतराष्मरहय प्राधधकारह (अथॉररटह) की आर्वश्यकता िै। "छोटे और बड़े, वर्वजेता और वर्वल्जत," सब राष्रों को सर्ान अधधकार हदिाने की बात को यहद कोई कक्रयाल्न्र्वत कर सकता िै, तो र्वि िै केर्वि एक ऐसा अन्तराष्मरहय प्राधधकारह, ल्जसके पास आधथकम क्षेत्र र्ें वर्वस्तृत िल्क्तयां और कृत्य िों। िर्ें व्यापार-युद्धों को रोकना िोगा। श्री चधचिम ने किा था, "सब प्रकार की अततररक्त रोकें और बाधाएं खड़ी करके जर्नमी के व्यापार को नष्ट करने के प्रयत्नों के, जैसीकक 1917 र्ें िोगों की र्नोंदिा थी, बजाय िर्नेसुतनल्श्चत रूप से यि दृल्ष्टकोण अपना शिया िै कक यि बात संसार के और िर्ारे दो देिों (बिटेन और अर्ेररका) के हित र्ें निहं िै कक कोई भी बड़ा राष्र सर्ृद्धधिहन रिे या उसे अपनेउद्योग और नर्वारम्भ (उद्यर्) द्र्वारा अपनेशिए और अपनी जनता के शिए भिा रिन-सिन प्राप्त करने के साधनों से वंधचत रखा जाए।" पांचर्वीं धारा र्ें उन सबके शिए एक आधथकम राष्र-र्ण्डि बनानेका वर्वचार ककया गया िै, जो उसके शसद्धांतों को स्र्वीकार करते िैं। इसके द्र्वारा र्वतर्मान आधथकम अराजकता के स्थान पर एक सुव्यर्वस्था स्थावपत करने का प्रस्तार्व सार्नेरखा गया िै। आधथकम दृल्ष्ट से वपछड़े िुए िोगों के हितों पर भी वर्वचार-वर्वर्ि मककया जाएगा। आधथकम साम्राज्यर्वाद को तनरुत्साहित करना िोगा। सबिों के दुव्युर्वमिार से तनबिमों की रक्षा की िह जानी चाहिए।

अगिह धारा र्ें आक्रर्ण के वर्वरोध र्ें सार्ूहिक सुरक्षा का आग्रि ककया गया ि ै। उससे अगिह धारा र्ें सर्ुद्रों की स्र्वतन्त्रता का उलिेख ि ै; और अल्न्तर् धारा र्ें राष्रहय नीतत के साधन के रूप र्ें बि के प्रयोग को त्यागनेकी आर्वश्यकता पर ज़ोर हदया गया ि ै। ि र् ककसी भी राष्र को इतनी ि ल्क्त प्राप्त निहंकरने देंगे कक र्वि अपनेपड़ोशसयों के वर्वरुद्ध आक्रर्णात्र्क युद्ध छेड़ सके। इसे कक्रयाल्न्र्वत करने के शिए कई उपाय खोज तनकािने ि ोंगे; सम्र्र्न-पद्धतत, आधथकम सार्ाल्जक, बौद्धधक और आल्त्र्क रचनात्र्क काय,म अन्तराष्म्रहय वर्वर्वादों के ि ाल्न्तपूण मतनपटयो की व्यर्वस्था, वर्वद्यर्ान अधधकारों र्ें ध्यस्थता द्र्वारा पररर्वतनम के शिए व्यर्वस्था, ि स्त्रास्त्रों र्ें सर्वतमोर्ुखी घटौती और आक्रर्ण के वर्वरुद्ध सार्ूहिक प्रततरक्षा के शिए प्रभार्वी तैयारह की व्यर्वस्था। युद्ध के बाद का कि वर्वश्र्व के शिए स्र्वास्थ्य ि ाभ का कि ि ोगा, और वर्वजेताओं को ि ल्क्त को अपने पास धरोिर के रूप र्ें रखना चाहिए, ल्जससे स्र्वास्थ्यि–ाभ ि ीघ्र ि ो सके।

र्वेआधारभूत शसद्धान्त, ल्जनके अनुसार नई सभ्यता की रूप-रचना ि ोनी चाहिए ल्ा टाइम्स' के नार् भेजेगए एक पत्न र्ें प्रस्तुत ककए गए ि ैं, ल्जसपर कैंटरबरह और याकम के आकमबबिपों, फ्री चच मफेडरि कौंशसि के र्ौडरेटर और ग्रेट बिटेन र्ें रोर्न कैथोशिक चच मके अध्यक्ष र्वेस्टशर्ंस्टर के आकमबबिप के ि स्ताक्षर ि ैं। र्वे शसद्धान्त ये ि ैं:

(1) सब राष्रों को स्र्वाधीन रिने का अधधकार।

(2) तन:स्त्रिीकरण।

(3) अन्तराष्म्रहय सर्झौतों की गारण्टह करने के शिए और जब आर्वश्यक ि ो, उनका पुनतनरमहक्षण (ररवर्वज़न) करने और उन्हें ठीक करने के शिए कोई न्याय-वर्वधान-सम्बन्धी संस्था। (4) राष्रों के तनर्वाशसयों और अलपसंख्यकों की न्याय्य र्ांगों का यथाआर्वश्यक सर्ंजन (बैठ-बबठार्व)।

(5) जनता और ि ासकों को सार्वभमौर् प्रेर् से प्रेररत करना चाहिए। इन आधारभूत शसद्धान्तों के साथ पत्न र्ें पांच शसद्धांत और जोड़े गए ि ैं:

(क) सम्पवत्त और जायदाद की अत्यधधक असर्ानता सर्ाप्त कर दह जानी चाहिए। (ख) प्रत्येक बच्चे को शिक्षा प्राप्त करनेका सर्ान अर्वसर शर्िना चाहिए।

(ग) सार्ाल्जक इकाई के रूप र्ें पररर्वार को बनाए रखनेका आश्र्वासन हदया जाना चाहिए। (घ) र्नुष्य के दैतनक काय मर्ें दैर्वीय पुकार की भार्वना कफर स्थावपत की जानी चाहिए।

(ङ) पृथ्र्वी के साधनों का उपयोग सर्स्त र्ानर्व जातत के शिए ककया जाना चाहिए और र्वतर्मान तथा भार्वी पीहढयों की आर्वश्यकताओं का सर्ुधचत ध्यान रखते ि ुए ककया जाना चाहिए।

सोवर्वयत क्रांतत के 25र्वें र्वावषकमोत्सर्व के अर्वसर पर र्ास्को सोवर्वयत के सम्र्ुख भाषण देते ि्ुए स्ताशिन ने युद्ध-उद्देश्यों की घोषणा की:

"इटिह और जर्नमी के गठबन्धन का कायक्रमर् की ये वर्विेषेताएं किह जा सकती िैं- जातीय वर्वद्र्वेष, चुने ि्ुए (परर्ात्र्ा द्र्वारा) राष्रों की सर्वोच्चता, दूसूरे राष्रों के राज्यक्षेत्रों को िधथयाकर उर्न्ें अधीन करना, वर्वल्जत राष्रों को आधथकम दृल्ष्ट से दास बनाना, उनकी राष्रहय सम्पवत्त का वंचन, प्रजातन्त्रीय स्र्वाधीनता का वर्विनाि, और सब जगि हिटिरह िासन पद्धतत की स्थापना। अंगे्रेज़सोवर्वयत अर्ेररकन गठबन्धन का कायक्रमर् िै, जातीय भेदभार्व की सर्ाल्प्त, राष्रों की सर्ानता और उनके राज्यक्षेत्रों की अिध्यता, दास बना शिए गए राष्रों को स्र्वाधीन कराना और उनकी प्रभुता के अधधकार उर्न्ें र्वापिस हदिाना, जो भी िासन पद्धतत र्वे चािें स्थावपत करने ेका अधधकार, ल्जन देिों को क्षतत उठानी पड़ी िै, उनको आधथकम सिायता और भौततक सर्ृद्धध प्राप्त करने र्ें उनकी सिायता की जाए, प्रजातंत्रीय स्र्वाधीनता की पुनः स्थापना और हिटिरह िासनपद्धतत का वर्विनाि।" जर्नमी और जापान की पराजय के बाद रूस की ल्स्थतत सिक्त िोगी और संसार की सुरक्षा के शिए यि आर्वश्यक िै कक िाल्न्त-कािा र्ें अर्ेररका, रूस और गे्रेट-बिटेन की शर्त्रता संसार की भिाई के शिए िो, संसार पर प्रभुत्र्व जर्ाने के शिए निहं। यहद कोई ऐसा सर्झौता िुआ, ल्जसर्ें रूस और उनके घोवषत उद्देश्यों का ध्यान निहंरखा गया, तो उसका पररणार् एक और वर्वश्र्वयुद्ध िोगा, जो और भी खतरनाक दिाओं र्ें िड़ा जाएगा। रूस का जातीय भेद-भार्व का अभार्व एशिया के िोगों को तथा संसार की अन्य रंगीन जाततयों को बिुत अधधक प्रभावर्वत करता िै।

यहद िर्ें वर्वजय के बाद कफर भूख, भय और तनरािा की ओर िौट जाना िो, तो युद्ध को जीत िेना-भर पयाप्मत निहं िै। यि तो प्रकाि और अन्धकार के बीच चि रिा संघष मिै, सच्ची संयशर्त सभ्यता की उपिल्दध और उच्च्च तानािाहियों द्र्वारा असभ्यता र्ें र्वापस िौट जानेके बीच संघष,म जो तानािाहियां र्ानर्व-जातत को तब तक नारकीय पराधीनता र्ें रखेंगी, जब तक कक र्वि अर्वनत िोते–िोतेपतन के उस स्तर तक निहंपिुंच जाती, जिां ंपिुंचकर र्वि अंत र्ें सर्ूि नष्ट िो जाएगी।

िर् इस सर्य एक युग की सर्ाल्प्त पर खड़े िैं और अब संसार कफर युद्ध-पूर्व मकाि के नर्ूने ेपर निहं िौटि सकेगा। यहद इस युद्ध र्ें अपना जीर्वन बशिदान करनेर्वािे युर्वकों की आिाओं ंके साथ कफर वर्वश्र्वासघात न ककया जाना िो, यहद इस युद्ध को र्ानर्व जातत के कलयाण की आिा से िून्य एक और युद्ध न बनाना िो, तो िर्ें संसार को र्वैयल्क्तक एर्वं सार्ूहिक स्र्वाथ मके दुषुप्रभार्व से र्ुक्त करना चाहिए। राष्रों को अपने कुकृत्यों के शिए िल्ज्जत िोना चाहिए। संसार की उन्नतत करने का र्ाग मपश्चात्ताप का िह िै। इस काि के रक्तपात और अव्यर्वस्था र्ें से एक उत्कृष्टतर युग का आवर्वभार्वम िो सकता िै। यहद र्ानर्व-सर्ाज को एक सजीर्व र्वास्तवर्वकता के रूप र्ें काय मकरना िो तो केर्वि ककसी राजनीततक या आधथकम संगठन से कार् न चिेगा। यि एक िरहर-रचना िै, संगठन निहीं। यि एक सजीर्व और बढती िुई र्वस्तु िै। इसके अन्दर आत्र्ा का श्र्वास फूंका जाना चाहिए। र्ानर्व-सर्ाज को वर्वश्र्व की सृजर्िीि आत्र्ा की एकता र्ें तनष्ठा की और एक अथ मर्ें बन्धुत्र्व (साथीपन) की

अशभव्यल्क्त बनना िोगा। प्रत्येक र्ानर्वीय ढांचे र्ें एक अर्र रित्र्वाकांक्षा वर्वद्यर्ान िै, एक सार्वभमौर् चेतना, जो अपने आपको सीशर्त नीं और वर्वभक्त ि‍ि भार्वों र्ें प्रकट करती िै। केर्वि सत्य की िह वर्वजय िोती िै, असत्य की निहं; चािे िर्पर कुछ भी क्यों न बीते, सत्य की ज्योतत बुझेगी निहं।

प्रजातंत्र की गत्र्वरता

प्रजातंत्न इस नैततक शसद्धान्त की; कक र्नुष्य का सच्चा उद्देश्य उत्तरदातयत्र्वपूण मस्र्वतंिता िै, राजनीततक अशभव्यल्क्त िै। कांट का वर्वख्यात नैततक शसद्धान्त कक "र्ानर्वता को, चािे र्वि तुम्िारे अपनेदि र्ें िो या ककसी दूसूरे के दि र्ें, सदा साध्य र्ानकर िह काय मकरो, केर्वि एक साधन र्ान कर निहं" प्रजातंत्रीय वर्वश्र्वास का सूत्रबद्धीकरण िै । शसद्धान्ततः प्रजातंत्न नैततक िै और इसशिए सार्वभमौर् िै। स्र्वयं जीर्वन की सीर्ाओंके अततररक्त इनकी और कोई सीर्ाएं निहं िैं। व्यास किता िै, "सब प्राणी सुखी िों; सब परर् आनन्द प्राप्त करें; सब भिे हदन देखणे कोई भी दुःख न पाए।"[101] दिैक ने अपनी कवर्वता 'डर्वाइन इर्ेज' (हदव्य प्रततर्ा) र्ें अकारण िह यि पद्य निहंशिखा:

> क्योंकक सबको र्ानर्वीय रूप से प्रेर् करना िह चाहिए,
> भिे िह र्वि रूप र्ूततपूमजक र्ें िो, या तुकम र्ें या यिूदह र्ें;
> जिां दया, िाल्न्त और करुणा का तनर्वास िै
> र्विहंभगर्वान का भी तनर्वास िै।

प्रजातंत्न का उद्देश्य सदैर्व सर्ूचे सर्ाज का हित िोता िै, ककसी एक र्वग मया सर्ुदाय का हित निहं। सब व्यल्क्तयों को, चािे उनका धर् मया जातत कुछ भी क्यों न िो, एकर्ात्र उनकी सर्ान र्ानर्वता के आधार पर राजनीततक सर्ाज र्ें ग्रिण ककया जाना चाहिए। सर्ाज के सदस्य प्रत्येक र्वयस्क व्यल्क्त को सर्ाज की राजनीततक सत्ता र्ें सर्ान भाग प्राप्त करने का अधधकार िै। जब िर् किते िैं कक सब र्नुष्य सर्ान िैं, तो िर्ारा अशभप्राय यि िोता िै कक सब र्नुष्य परर् र्ूल्य (ऐदसोलयूट र्वैलयू) के केन्द्र िैं। िर् यि निहं कि सकतेकक अपने िक्ष्यों को पूण मकरने के शिए संभावर्वत साधन के रूप र्ें िर्ारे अन्दर तो पूण मर्ूल्य िै और दूसूरे िोगों र्ें केर्वि व्युत्पन्न (गौण, अर्ौशिक) और साधनात्र्क (सियक) र्ूल्य िै। जिांतक िर्ारे साधनात्र्क र्ूल्य का प्रश्न िै, िर् असर्ान िैं। क्योंकक िर्ारह क्षर्ताएं अिग-अिग िैं, इसशिए िर् अिग-अिग काय मअपना िेते िैं ल्जन्िें िर् अिग-अिग कोहट की सुचारुता के साथ पूरा करते िैं। परन्तु सार्ाल्जक संघटन र्ें प्रत्येक व्यल्क्त को स्थान शर्िना चाहिए। र्नुष्यों की सर्ानता के वर्वषय र्ें वर्ववाद ताल्त्र्वक और साधनात्र्क र्ूलयों र्ें अन्तर न करने के कारण िोता िै। अपने ताल्त्र्वक र्ूलयों की दृल्ष्ट से सब व्यल्क्त सर्ान िैं, परन्तु अपनेसाधनात्र्क र्ूलयों की दृल्ष्ट से असर्ान िैं। प्रजातन्त्र जनता का िासन केर्वि इस अथ मर्ें िै कक जनता र्ें सर्ाज के सब सदस्य आ

---

101 सर्वेच सुखखनःसन्तु सर्वेसन्तुतनरार्याः।
सर्वे भद्राखण पश्यन्तु र्ा कल्श्चद् दुःखभाग्भर्वेत् ्॥

जाते िैं। प्रजातन्त्र अलपसंख्यकों या अलपसंख्यकों के तर्ों के दर्न का पूणतमया वर्वरोधी िै। यहद किहं अलपसंख्यकों का दर्न िोता िो या उनका रुं बिन्द ककया जाता िो, तो प्रजातन्त्र तनरंकुिता (अत्याचार) बन जाता िै।

सन् ्431 ईस्वी पूर्व मरें पैररक्हिज़ ने 'फ्यूनरि औररेन' (अन्त्येल्ष्ट-भाषण) रें प्रजातंत्र की अपनी धारणा का स्पष्टहकरण ककया िै। "िर् प्रजातन्त्र इसशिए किािैं, क्योंकक िरारा प्रिासन कुछ थोड़े-से िोगों के िाथ रें निहं,ं अवपतु बिुत से िोगों के िाथ रें िै। अपनेवैयल्क्तक वर्वादों रें सब र्नुष्य कानून के सार्ने बराबर िैं, परन्तु िोकर्त के सम्र्ुख उन्िें सम्र्ान हदया जाता िै। यि उनके पद के कारण निहं, अवपतु उनके गुणों के कारण; और कोई नागररक चािे ककतना भी गरहब, ककतना भी दहन, और ककतना भी अप्रशसद्ध क्यों न िो, परन्तु ु इसके कारण उसे, यहद उसरें नगर की सेर्वा कर पाने की योग्यता िै तो, सार्वजमतनक जीर्वन से रोका निहंजाएगा। एक ओर अगर िरें सार्वजमतनक जीर्वन रें स्वतन्त्रता प्राप्त िै, तो दूसूरह ओर वैयल्क्तक र्ारर्िों से हदन भी कुछ कर् स्वतन्त्रता प्राप्त निहं। इससे भी बड़ी बात यि िै कक िर् अपनेपड़ोसी के आनन्द अभा को देखकर अप्रसन्न निहं ंिोते, न िर् उसे आनन्द र्नाते देखकर रुंि िटका िेते िैं, जो भिे िह असिर्त की िातनरहित अशभव्यल्क्त िो, ककन्तु केर्वि इसीशिए र्वि कर् अवप्रय निहंिोजाती। वैयल्क्तक और सार्वजमतनक र्ार्िों रें िर् शिष्ट आचरण करते िैं। जो िोग सत्तारूढ िैं, उनके प्रतत और कानूनों के प्रतत िरारे र्न रें गिरे सम्र्ान की भार्वना िै; वर्वेषेत: उन कानूनों के प्रतत, जो पीडड़तों के िाभ के शिए बनाए गए िैं, और उन अशिखखत कानूनों के प्रतत, जो अपना उलिंघन करनेर्वािों को उसके साधथयों की दृल्ष्ट रें किंककत बना देते िैं।"[102] कफर भी घटनाओं के दबार्व रें पड़कर पैररक्हिज़ को अपनेि शसद्धान्तों से न केर्वि वर्वचशित िोना पड़ा, अवपतु उनका खंडन तक करना पड़ा। ऐथन्स की सभ्यता उन वर्विािसंख्यक िोगों पर तनभरम थी, जो नागररक निहंथे,े ल्स्त्रयों और दासों पर। पैररक्हिज़ को इतने िे से सन्तोष था कक ऐथन्स के सब नागररकों को राज्य के िासन रें भाग िेने का सर्ान अर्वसर प्राप्त िै और र्वे सब कानून के सम्र्ुख सर्ान िैं।

4 जुिाई, 1776 की अर्ेररकन स्वाधीनता की घोषणा रें ये उच्च भार्व वर्वद्यर्ान िैं, "िर् इन सत्यों को स्वत: शसद्ध र्ानते िैं कक सब र्नुष्य सर्ान शसरजेगए िैं; उनको उनके शसरजनिार ने कुछ ऐसे अधधकार हदए िैं, ल्जन्िें उनसे छीना निहंजा सकता; जीर्वन, स्वाधीनता और आनन्द की प्राल्प्त का प्रयत्न, इन अधधकारों रें से हि िै; इन अधधकारों को सुरक्षक्षत बनाए रखनेके शिए िह र्नुष्यों रें सरकारें स्थावपत की गई िैं और इन सरकारों को न्यायोधचत िल्क्तयां िाशसत िोगों की सिर्तत से िह प्राप्त िोती िैं; और जब कभी कोई िासन-प्रणािह इन उद्देश्यों के शिए वर्वनािकारह बन जाए, तब िोगों को यि अधधकार िै कक र्वे उसे बदि दें या उखाड़ फेंकें, और उसके स्थान पर एक नया िासन स्थावपत करें, ल्जसकी नींर्व ऐसे शसद्धान्तों पर रखी गई िो, और ल्जसकी िल्क्तय ऐसे रूप रें संघहटत की गई िों, कक जो उन्िें (िोगों को) ऐसे प्रतीत िोतीं कक र्वे उनकी सुरक्षा और आनन्द पर अधधकतर् अनुकूि प्रभार्व डाि सकतीं।" यहद िर् इसरें से धर्-मवर्वज्ञान के उलिेख और इस अर्वैज्ञातनक दार्वेको, कक सब र्नुष्य सर्ान शसरजेगए िैं, तनकाि दें, ती िो प्रजातन्त्र का सारभूत शसद्धान्त शरि्

102 कौम्पटनर्ैकेज़ी , 'पैररक्हिज़' (1937), पृष्ठ 311

जाता ि ै कक सब िोगों को स्वतन्त्र ओर सुखी रिने का सर्ान अधधकार शर्िना चाहिए। इस अर्वसर की सर्ानता र्ें भौततक साधनों के अधधकार की बात गशभतम ि।ै इसके शिए यि आर्वश्यक ि ै सब र्नुष्यों को, ल्जनर्ें नीग्रो (िब्दी) और ल्स्त्रय भी सल्म्र्शित िैं, ऐसी दिाओं र्ें पिुंचाया जाए, ल्जनके अभार्व र्ें सुख प्राप्त िो ि ह निहं सकता। आज तक कोई भी िासन इस शसद्धान्त को कक्रयाल्न्र्वत करनेर्ें सफि निहं िुआ। ऐथन्स का प्रजातंत्र दासता की प्रथा पर आधाररत था। र्ध्ययुग र्ें कृवषदास प्रथा थी। आज िर्ारे युग र्ें उच्चतर और तनम्नतर र्वग म िैं, अर्ीर और गरहब। यि बड़ी भयार्वि हटप्पणी ि ै कक र्िान सभ्यताएं दासता और अधदमासता के आधार पर खड़ी की गई थीं। यूनान और रोर् र्ें बिुत बड़ी संख्या दासों की थी। र्ध्ययुगीन फ्रांस और पुनजागमररत इटिह उन कृवष-दासों के सिारे खड़े िुए थे, जे जो कृषक के रूप र्ें भूशर् के साथ बंधे िुए थे और ल्जन्िें केर्वि जीर्वन तनर्वाम-र्ात्र का अधधकार प्राप्त था। आधुतनक सभ्यता की पृष्ठभूशर् भी दररद्रता, गंदगी और कहठनाइयों (तंगी) की ि ह ि।ै

1789 की फ्रांसीसी राज्यक्रांतत ने र्वचार के र्वातार्वरण पर प्रभार्व डािा; और आज, कर से कर् शसद्धान्त रूप र्ें, इस बात को अस्र्वीकार कर पाना असम्भर्व ि ै कक गरहबों और आ िोगों को भी स्र्वतन्त्र और सुखी रिने का अधधकार ि।ै फ्रांसीसी राज्य-क्रांतत द्र्वारा िोकवप्रय बनाए गए तीन शसद्धान्तों पर हटप्पणी करते िुए झक्की आदर्ी का किना ि ै कक स्वाधीनता सा अथ मि,ै "र्ैं जैसा चािूं, कर सकता िूं।" सर्ानता का अथ मि,ै "तुर् र्ुझसे कुछ अधधक अच्छे निहं;" और भ्रातृत्र्व का अथ मि,ै "जो कुछ तुम्िारा ि,ै यहद र्वि र्ुझेचाहिए, तो र्वि र्ेरा ि।ै" इस प्रकार सोचनेका पररणार् अराजकता, र्ध्यर्-कोहटता (औसत दजे की अच्छाई), और िस्तक्षेप िुआ ि।ै

'कम्युतनस्ट र्ैनीफेस्टो' ऐसे व्यल्क्तयों के सर्ाज के आदि मका सर्थनम करता ि,ै जो परस्पर इस ढंग से संघहटत िुए िों कक "प्रत्येक का स्वतन्त्र र्वकास ि ह सबके स्वतंत्र र्वकास की ि त मिो।" 'र्ैनीफेस्टो' का सम्पवत्त के उधचत र्वतरण का आग्रि करना बबिकुि ठीक ि।ै इसके शिए इस अथ मर्ें आधथकम सर्ानता की, कक ककसी भी व्यल्क्त की आय अन्य ककसी भी व्यल्क्त की आय से अधधक न िो, आर्वश्यकता ि ै या निहं, यि एक अिग प्रश्न ि।ै आधथकम व्यर्वस्था ऐसी िोनी चाहिए, ल्जसर्ें सब र्नुष्यों को स्वतन्त्र और सुखी जीर्वन बबताने का अर्वसर शर्ि सके। प्रजातन्त्र के - नैततक र्ूलयों के रूप र्ें, एक अच्छे जीर्वन की कलपना के रूप र्ें- अव्यक्त र्ूलय को सुतनहदमष्ट (ठोस) अन्तर्वस्मतु द्र्वारा भरा जाना चाहिए। आत्र्ा को साकार िोना िोगा। र्तदान का सर्ान अधधकार उस र्ित्त्वपूण मसत्य का बाह्य धचह्नर्ान ि,ै ल्जसे िर्ें अपने जीर्वन र्ें प्राप्त करना िोगा। राजनीततक प्रजातन्त्र का उद्देश्य ि ै कक राजनीततक सत्ता के सम्बन्ध र्ें र्नुष्य के अधधकार को र्ाना जाए। सार्ाल्जक प्रजातन्त्र का उद्देश्य यि ि ै कक सब िोगों को सर्ाज के िाभों र्ें सर्ान भाग प्राप्त करने र्ें सर्थ मबनाया जाए।

दहनता और कष्ट र्नुष्य को तभी ऊंचा उठाते िैं, जबकक र्वे स्वेच्छा से अपनेऊपर िादे गए िों। जो िोग यि किते िैं कक दररद्रता किाकार की सबसे बड़ी प्रेरक िल्क्त ि,ै उन्िोंने स्वयं इसकी तीव्र व्यथा को कभी अपनी आत्र्ा र्ें अनुभर्व निहं ककया। जब िर् कठोर पररश्रर् और घोर दररद्रता की दिा र्ें रि रि िोते िैं, उस सर्य र्िरह अनेक आल्त्र्क उन्नतत की सम्भार्वनाओं को पनपनेका अर्वसर निहं शर्िता। जो िोग अत्यधधक भीड़ भरे र्कानों र्ें, गन्दगी और बीर्ारह के बीच, भूख और सदी से कष्ट पातेिुए जीर्वन बबतातेिैं, सम्भर्व ि,ै उनर्ें

सहिष्णुता और त्याग की वर्वरक्त जनोधचत भार्वना उत्पन्न ि◌ो जाए, परन्तु र्वे सर्ाज को कुछ सृजृनात्क देन निहं ◌ंदे सकते। रोगग्रस्त ि◌रहरों और तनरिा, वर्वफि जीर्वनों का कारण गरहबी भी ि◌ै। सम्पवत्त की असर्ानताएं दासता-प्रथा की ि◌ह भांतत सार्ाल्जक व्याधधयां ि◌ैं। अरस्तुके इस वर्वचार के वर्वषय र्ें, कक पूण मजीर्वन के शिए यि आर्वश्यक ि◌त मिै कक र्नुष्य को जीर्वन के शिए आर्वश्यक र्वस्तुएं इतनी काफी र्ात्रा र्ें प्राप्त ि◌ों कक र्वि र्नोजगत् ◌्की र्वस्तुओंकी साधना तनल्श्चन्त ि◌ोकर कर सके, बिुत कुछ किा जा सकता ि◌ै।'[103] भिे ि◌ह आधथकम र्वस्तुएं जीर्वन का र्ुख्य िक्ष्य निहं ◌ंि◌ैं, कफर भी र्वे अपररिाय म(ल्जनके बबना कार् न चिे) साधन अर्वश्य ि◌ैं। भारतीय कवर्व भतृिररर ने अपने'नीततितक' र्ें दररद्रता के कारण ि◌ोनेर्वािे नैततक पतन का र्वणनम इस प्रकार ककया ि◌ै : "सब इल्न्द्रयांर्विह ि◌ैं, कार् भी र्वे ि◌ह ि◌ैं, बुद्धध भी र्विह िै जैसी अक्षत ि◌ै, र्वाणी भी र्विह ि◌ै; कफर 'भी धन की गर्ी से ि◌ीन र्नुष्य र्ानो क्षण-भर र्ें बदिकर कोई और ि◌ह बन जाता ि◌ै।"[104] यहद र्नुष्य को अपने गौरर्व को बनाए रखना ि◌ो, तनबाधम चिना-कफरना ि◌ो, उदार, स्पष्टर्वादह और स्र्वाधीन रिना ि◌ो, तो उसके शिए न्यूनतर् आधथकम सुरक्षा अत्यार्वश्यक ि◌ै। श्री रुज़र्वेलट ने हदसम्बर 1940 र्ें अपनी 'ि◌र् की गपिप' (फायरसाइड टाक) र्ें किा था, "र् ◌ैंऐसे प्रजातंत् की रक्षा करने ◌ेके शिए कदावप निहं ◌ंिड़ूंगा, जो बदिे र्ें राष्ट्र के प्रत्येक व्यल्क्त की अभार्वों और कष्टों से रक्षा निहंकरता।" ककसी भी स्र्वस्थ सार्ाल्जक योजना र्ें सबके प्रतत प्रत्येक व्यल्क्त की ल्ज़म्र्ेदारह स्र्वीकार की जानी चाहिए। परम्परागत व्यल्क्तर्वाद व्यल्क्त के सार्ाल्जक उत्तरदातयत्र्वों का यथेष्ट ध्यान निहं रखता। यहद ि◌र् यि सर्झते ि◌ों कक जो र्वस्तुएं ि◌र्ें प्राप्त ि◌ोती ि◌ैं, उन पर ि◌र्ारा बबना ि◌त मअधधकार ि◌ै और उनके बदिे कुछ भी तुलय र्वस्तु देने की ि◌र्ारह ल्ज़म्र्ेदारह निहीं, तो यि ि◌र्ारह बड़ी भूि ि◌ै। ि◌र् अपनी स्र्वतंत्रता को केर्वि तभी कक्रयाल्न्र्वत कर पाते ि◌ैं, जब ि◌र् ऐसे सदस्यों के रूप र्ें काय मकरते ि◌ैं, ल्जनकी एक-दूसूरे के प्रतत ल्ज़म्र्ेदाररयां ि◌ैं। इसके बदिे र्ें सर्ाज ि◌र्ारह रक्षा करता ि◌ै और अपने प्रयत्नों से ि◌र्ें सुरक्षक्षत रखता ि◌ै। श्री चधचिम ने, प्रधानर्ंत्री बननेपर, अपने पुराने ◌ेवर्वद्याियि ि◌ैरो के वर्वद्याधथयमों के सार्ने भाषण देते ि◌ुए किा था

---

[103] सर आथरम ककिर काउच का कथन ि◌ै, "गत ि◌ताददह के बारि बड़े ◌ेकवर्वयों र्ें से नौ वर्वश्र्वववर्वद्याियों के आदर्ी थे। परन्तु राष्ट्र के रूप र्ें ि◌र्ारे शिए यि बड़ी असम्र्ानजनक बात ि◌ै - यि तनल्श्चत ि◌ै कक ि◌र्ारे राष्ट्रर्ंडि के ककसी दोष के कारण इन हदनों ककसी गरहब कवर्व को पनपने की ज़रा भी गुंजाइि निहं ◌ंि◌ै और न वपछिे दो सौ सािों र्ें रिह ि◌ै। र्ेरह बात र्ातनए- और र्ैंने अपने वपछिे दस र्वर्षों का बड़ा भाग ि◌गभग 320 प्राथशर्क वर्वद्याियों का ध्यान से तनरहक्षण करने र्ें ि◌गाया ि◌ै- कक र् प्रजातन्त्र की चिो ल्जतनी डींग ि◌ांकें, परन्तु इंग्िैंड र्ें एक गरहब बािक उससे अधधक कुछ आिा निहं ◌ंकर सकता, ल्जतनी कक कोई ऐथन्स के दास का पुत्र र्ुक्त र्ानर्व कृततयों का सृजृन करनेर्वािी बौद्धधक स्र्वतन्त्रता द्र्वारा, अपनी दासता से उद्धार पाने की आिा कर सकता था।"- 'आन हद आटम ऑफ राइहटंग'।

[104] तानील्न्द्रयाखण सकिातन तदेर्व कर्,म सा बुद्धधर प्रततिता र्वचनंतदेर्व,

अथोष्र्णा वर्वरहितः पुरुषः स एर्व त्र्वन्यः क्षणेन भर्वतातत वर्वधचत्तरे्तत् ◌्।

यस्याल्स्त वर्वत्तं ◌ंस नरः प्रर्वीणः स पल्ण्डतः स श्रुुतर्वान् ◌्गुणज्ञः,

स एर्व र्वक्ता सच दिनमायः सर्वेे गुणाः काञ्चनर्ाश्रयन्ते।

बनाडमिा से तुिना कील्जए, "पैसैा संसार र्ें सबसे र्ित्र्वपूण मर्वस्तुिै। यि स्र्वास्थ्य, बि, प्रततष्ठा, उदारता और सौंदय मका प्रतीक ि◌ै, जैसे इसका अभार्व रोग, दबिमता, ि◌ांछंना, नीचता और कुरूपता का प्रतीक ि◌ै। इसका एक गुण, जो सबसे छोटा निहं ि◌ै, यि ि◌ै कक यि नीच ि◌ोगों को उतना ि◌ह तनल्श्चत रूप से बरबाद कर देता ि◌ै ल्जतना कक यि श्रेेष्ठ पुरुषों को सबि और सगौरर्व बनाता ि◌ै।"

कक जब युद्ध सर्ाप्त िो जाएगा, तब "िर्ारा एक यि भी उद्देश्य िोना चाहिए कक सर्ाज र्ें ऐसी ल्स्थतत िोने का यत्न ककया जाए, ल्जसर्ें वे िाभ और वर्विेषाधधकार, ल्जनका आनन्द अब तक केवि कुछ थोड़े–से िोग उठा रिे थे,े सर्ूचेराष्र के र्नुष्यों और युवकों र्ें किहं अधधक वर्वस्तृत रूप से बंट जाएं।" वतर्मान व्यवस्था र्ें ये िाभ और वर्विेषाधधकार एक छोटे-से वग मतक सीशर्त िैं; यि वग मरक्त या वववाि या सांझे ेहितों द्वारा परस्पर संबद्ध ै। इसर्ें केवि कुछ िह नये िोग प्रवेि कर पाते िैं, जोकक इस चुनेिुए सर्ुदाय र्ें सल्म्र्शित िोने ेका प्रवेिपत्र भारह धनराशि द्वारा खरहदते िैं। िगभग सभी देिों की आधथकम ल्स्थतत र्ें एक भयावि एकरूपता िै। जनता का एक बिुत छोटा-सा अलपसंख्यक वग मिाभ उठाता िै, और बिुत बड़ी जनसंख्या कष्टों और पराधश्रतता से, और उसके फिस्वरूप िोनेवािे िारहररक और र्ानशसक अस्वस्थताओं से पीडड़त रिती िै।105 सर्ाज के वतर्मान संगठन र्ें उन्नतत के अवसर की सर्ानता की र्ांग का अथ मिै- सार्ाल्जक दृल्ष्ट से अनुत्तरदायी स्वाशर्त्व की सर्ाल्प्त और सार्ूहिक उत्पादन के उपकरणों का तनयंत्रण। स्वाशर्त्व के तथ्य के साथ िुक्र् चिाने का अधधकार भी जुड़ा िुआ िै और अधधकारह तथा अधीनस्थ के सम्बन्ध वर्कशसत िो जाते िैं। र्ाशिक वग मको अधधक ऐश्र्वय म

श्रशर्कों की पराधश्रत ल्स्थतत का िाभ उठाने के कारण िह प्राप्त िुआ िै, ठीक वैसे िह जैसे कक पुराने सार्न्तीय कुिहन वग मको या दासों के स्वार्ी अशभजात वग म(अररस्टोक्रेसी) को अपनी िल्क्त कृवष-दासों या दासों के अततररक्त श्रर् से प्राप्त िोती थी। राजनीतत र्ें 'धन की िल्क्त' िोल्न्त के शिए सबसे बड़ा संकट िै। र्ुनाफे के शिए उत्पादन के स्थान पर अब उपयोग के शिए उत्पादन िोना चाहिए। यि सक्षर् सार्ूहिक तनदेिन (डाइरेक्िन) द्वारा ककया जा सकता िै। अब कार्गर और ककसान पूंजीपततयों की र्ेज़ से नीचेधगर पड़नेवािे रोटह के चूरचार से, उनके दयापूर्वकम हदए गए दान से, जैसे वृद्धावस्था की पेंिनें, स्वास्थ्य और बेकारह के बीर्े, न्यूनतर् वेतनों से, सन्तुष्ट निहं िो सकते। यहद पूंजीपतत उस राजनीततक उपकरण को तोड़नेका प्रयत्न करते िैं, ल्जसके द्वारा आधथकम िल्क्त का िस्तान्तरण िोता िै, तो उससे एक प्रत्याक्रर्ण को उत्तेजना शर्िती िै। साम्यवाद (कम्यूतनज़्र्) र्ानवीय उत्तरदातयत्वों से िून्य सम्पवत्त की संस्था पर एक आक्रर्ण िै। ककसी भी सर्ाज के जीववत बचे ेरिनेके शिए अपने-आपको पररल्स्थततयों के अनुकूि ढाि िेनेकी जो प्रकक्रया अत्यावश्यक ै, वि इस सर्य आपजनक रूप से धीर्ी पड़ गई िै। ल्जस सर्य इततिास तीव्र वेग से झपट रिा िै, उस सर्य पुराने ेरूपों से धचपटे रिनेका कोई िाभ निहं िै। यहद िर् ऐसा करेंगे, तो िर् बि जाएंगे। असह्य अन्याय और अर्याहमदत दुष्कर्ों को देखते िुए तनश्चेष्ट बनेरिना अनैततक िै। उस अभागे र्नुष्य की अपेक्षा, जो जीवन के शिए संघष मर्ें एक ओर पटक हदया गया िै, िोगों के र्न र्ें उस पक्षी के शिए अधधक दया िै, ल्जसके पंख टूट गए ैंऔर जो अब उड़ निहं सकता। िर्ारे कानूनों और संस्थाओंने उन्िहं िोगों को संरक्षण प्रदान निहं ककया, ल्जन्िें उसकी सबसे अधधक आवश्यकता िै, वे र्ज़दूरह कर्ानेवािों (वेतनजीववयों) को वैसी िह र्ज़बूत बेडड़यों र्ें जकड़कर रखते िैं, जैसीकक दासों के पांवों र्ें डािकर िथौड़े ेसे ठोककर जकड़ दह जाती थीं। वे ेबड़ी सूक्ष्र्ता से

105 नाल्स्की से तुिना कील्जए, "संयुक्त राज्य अर्ेररका की जनसंख्या संसार की जनसंख्या की िुि प्रततित िै; पर संसार की 40 प्रततित सम्पवत्त उसके पास िै।" कफर भी, जैसाकक रुजर्वेलट नेस्वयं ेस्वीकार ककया, राष्र का एक ततिाई भाग ऐसा िै, जो न्यून-पोषण का शिकार िै, ल्जसके पास यथेष्ट वस्त्र निहं िै और अवर्ानवीय दिाओं ेर्ें जीवन बबता रिा िै। 'र्ॉडन म कोऑपरेिन एण्ड प्राइर्वेट प्रॉपटी' र्ें बीि मऔर र्ीन्स ने बताया िै कक संयुक्त राज्य अर्ेररका के उत्पादन का िगभग 50 प्रततित भाग, प्रभावी रूप से, दो िज़ार से कर् िोगों के िाथ र्ें िै।

बिर्वानों और धनर्वानों के अधधकारों का तनरूपण करते ि ैं, और तनधनमों तथा तनबिमों के अधधकारों के प्रतत उदासीन (तनरपेक्ष) रिते ि ैं। र्वे अभागों के प्रतत तनष्ठुर और भ्िशुओं के प्रतत अन्याय रि ि ैं कुछ संर्वेदर्िनी और सूक्ष्र् र्ानर्वीय प्रकृततयों को ऐसी सर्ाज-व्यर्वस्था की चारदहर्वाररयों र्ें थोथेपन और यंत्रणा के शसर्वाय कुछ हदखाई निहं पड़ता, जो स्र्वतःस्फूत मका गिा घोंटनेर्ें, स्र्वप्नों का उपिास करनेर्ें और आनन्द को बुझा देनेर्ें ि ह र्वर्विशष्टता प्राप्त ककए ि ुए ि ै।

आत्र्ा की कर् ि ह नोंदिाएं ऐसी ि ैं, जो उन नोंदिाओं की अपेक्षा अधधक र्वर्वकशसत करने योग्य ि ों, ल्जनर्ें ि र् अपनी दुःखी और ककंकतव्मयर्वर्वरूढ र्ानर्व जातत के प्रतत श्रद्धा रखते ि ैं। इन नोंदिाओं द्र्वारा एक सर्ुदाय की ताल्त्र्वक भार्वना की र्वृद्धधध ि ोती ि ै। यहद ि र्ारा प्रजातंत्र स्र्वस्थप्रज्ञ ि ै, तो ि र् एक ऐसी सार्ाल्जक रचना के शिए प्रयत्न करेंगे, ल्जसर्ें इस बात का तनश्चय रि कक सब र्वयस्कों को कार् शर्िेगा और भर्वर्वष्य के शिए तनल्श्चन्तता रिेगी, सब बािकों को अपनी र्विर्विेषे क्षर्ताओंके शिए उधचत शिक्षा शर्िेगी, जीर्वन के शिए आर्वश्यक और सुर्वर्वधाजनक र्वस्तुओंका र्वर्वतरण र्वर्वस्तृत ककया जाएगा, बेकारह के कष्ट के र्वर्वरुद्ध सब रक्षण-उपाय ककए जाएंगे और आत्र् र्वर्वकास की स्र्वतंत्रता रिेगी। ग

प्रजातन्त्रीय नोंभार्व ने, जोकक फ्रांसीसी राज्य क्राल्न्त के साथ सकक्रय ि ो उठा था, सर्ानतार्वादह आकांक्षा उत्पन्न की, जो िीघ्र ि ह उतनी ि ह आधारभूत (र्ित्र्वपूण)म, सब र्नुष्यों के जीर्वन-स्तर को ऊंचा उठाने की आकांक्षा से सल्म्र्शित ि ो गई। इस प्रकार प्रजातन्त्र युद्धवप्रय ि ो गया; और र्विं न केर्विं उनके प्रतत ईष्यामिु ि उठा, जो सम्पवत्त, सत्ता और प्रततष्ठा के आनुर्वंशिक अधधकारों का उपभोग कर रि े थे,े अवपतु उनके प्रतत भी, ल्जन्िोंने स्र्वयं अपनी ऊजामऔर उद्यर् से जीर्वन को कुछ कर् प्रततभ्िााह ि ोगों की अपेक्षा अधधक ि ाभदायक बना शिया था। क्योंकक धन और सत्ता का साथ ि ै, इसशिए धन, चािे र्विं पूर्वजमों से उत्तराधधकार र्ें प्राप्त ि ो और चािे र्विं व्यल्क्त के अपने प्रयत्न से उपाल्जतम ि ो, आक्रर्ण का ि क्ष्य बन गया। रूसी क्रांतत ने ल्जसका उद्देश्य र्विर्विेषाधधकारों और सम्पवत्त की असर्ानताओं को दूरू करना था, सब प्रकार के कायों के शिए इस आधार पर सर्ान पाररश्रशर्क या प्रततफि देने का परहक्षण ककया कक र्वे सब कार् सर्ाज के शिए अत्यार्वश्यक ि ैं; परन्तु यि पररश्रर् सफि निहं ि ुआ। कम्युतनस्टों की यि सूल्क्त, "ि र एक से उसकी ि ल्क्तयों के अनुसार (कार्) ि ो, और ि र एक को उसकी आर्वश्यकताओं के अनुसार (प्रततफि) दो" सिह अथों र्ें सर्ानता स्थावपत निहं ि कर पाई। कुछ एक कट्टर शसद्धान्तर्वादह उत्सािह ि ोगों को छोड़कर ि ेषे र्ार्िूह ि ोगों ने भरसक पररश्रर् करना बन्द कर हदया। जब तक कर् और अधधक कहठनाई और र्ूलयोंर्विे कायों का प्रततफत सर्ान शर्िता रिा, तब तक ि ोगों को इस बात का प्रिोभन रिा कक र्वे ि िके, कर् पररश्रर् के कार् करके ि ह सन्तुष्ट रिें। पररणार् यि ि ुआ कक कार् र्ें ढहि आ गई। इसशिए कफर पररर्वतनम ककया गया और इस सर्य र्विं र्वेतन इस अनुपात र्ें ि ैं कक सर्ाज के प्रतत की गई सेर्वाओं की कहठनाई ककतनी ि ै और उनका र्ूलय ककतना ि ै। इस प्रकार कफर अंतर स्थावपत ि ो गए ि ैं। क्योंकक ल्जन ि ोगों को अधधक पैसा शर्िता ि ै, उनके ि ाथ र्ें अधधक ि ल्क्त आ जाती ि ै और उनके साथ अपेक्षाकृत अधधक आदर का बतार्वम ककया जाता ि ै। इस प्रकार र्वग-मभेद उत्पा जाते ि ैं। भ्िकु संचािकों की नौकरिािह, औद्योधगक अथव्मयर्वस्था के सक्षर् और र्ित्र्वाकांक्षी प्रबंधक श्रशर्क र्वग मका तनयंत्रण करते ि ैं; आंतररक र्वग मर्ें

प्रवर्वष्ट िोने के शिए तीव्र प्रततयोधगता िुरू िो जाती िै। दूसूरों से आगे बढ जानेकी उतार्विह-भरह र्ित्र्वाकांक्षा, अन्धआर्वेि, धूततमा, गेर्वारपन तथा अन्य र्ानर्वीय स्र्वभार्व की दुबिुमताओं को पनपनेका अर्वसर शर्ि जाता िै। परम्परागत अशभजात र्वग मया पूंजीपतत र्वग मका स्थान एक सिक्त नौकरिाि िे िेती िै। ईष्याम और र्वर्वद्र्वेष की भार्वनाएं, ल्जनके िक्ष्य पििे राजा और कुिहनर्वग,म पुरोहित और पूंजीपतत िोतेथे, े अब कशर्श्नरों और तानिािों की ओर र्ोड़ दह जाती िैं। कानून बनाकर िर् प्रकृतत की असर्ानता की ओर झुकार्व को सर्ाप्त निहं कर सकते। ककसी भी सर्ाज र्ें एक कृत्यात्र्क सोपानतन्त्र (एक र्वग मके ऊपर दूसूरा, कफर उसके ऊपर तीसरा र्वग मइत्याहद) रिता िै। ल्जनके िाथ र्ें िल्क्त िै, र्वे उसको सर्ाज की सेर्वा की 'भार्वना से अपनेिाथ र्ें बनाए रख सकतेिैं। र्वगिमहन सर्ाज अव्यार्विाररक िै; और यहद उस तरि (बिनेर्वािे) र्वग मको, ल्जसके कक िाथ र्ें िल्क्त िै, उस िल्क्त का उपयोग ठीक भार्वना से करना िो, तो र्वि बाह्य तनयंत्रणों पर तनभरम न िोकर आन्तररक पररष्कार पर तनभरम िै। यहद सत्ताधारह िोगों र्ें र्वर्वनम्रता की भार्वना का र्वर्वकास करना िो, तो यि आय र्ें सर्ानता स्थावपत करने के प्रयत्न द्र्वारा निहं ंककया जा सकता। केर्वि अच्छी शिक्षा, और धाशर्कम अन्तःकरण के सजग तनयन्त्रण द्र्वारा िह सत्ता के अशभर्ान और वर्वर्वेषाधधकारों के दुरुपयोग को रोका जा सकता िै। पररर्वतनम की आर्वश्यकता र्वस्तुओंकी ऊपरह सति र्ें निहं,ं अवपतु र्ानर्व-प्रकृतत के र्ूि आधारों र्ें िह िै। राज्य को सच्ची सभ्यता का साधन बनना िोगा और उसे अपनेसदस्यों को सार्ाल्जक उत्तरदातयत्र्व की एक बबिकुि नई धारणा की शिक्षा देनी िोगी। यहद इस उद्देश्य को प्राप्त करने के शिए िर् धाशर्कम अनुिासन र्ें र्वर्वश्र्वास रखते िैं, तो िर्ें कच्चा और भार्वुक निहं सर्झा जाना चाहिए।

प्रजातंत्र का िक्ष्य यि िै कक आर्ूि आधथकम और सार्ाल्जक पररर्वतनम िांततपूण मऔर अहिंसात्र्क रहतत से ककए जा सकें। यहद न्याय के शिए अवर्वम्दय र्ांगों और उनके र्वर्वरुद्ध सुदृढ प्रततरोध के बीच देर तक तनार्व बना रिे, तो क्रांतत आर्वश्यक िो जाती िै। र्ाक्सर्वमाहदयों को र्वर्वश्र्वास िो चुका िै कक प्रजातंत्र जब सम्पवत्त के अधधकारों पर कोई प्रबि प्रततबन्ध िगाना चािेगा, तब सम्पवत्त के स्र्वार्ी प्रजातंत्र की इच्छा के सार्ने झुकने से इनकार कर देंगे। र्ाक्सर्वमाहदयों का कथन िै कक िाल्न्तस्र्वरूप और प्रजातन्त्रात्र्क रहतत से नई आधथकम व्यर्वस्था की रचना कर पाना असम्भर्व िै। कोई भी सर्ाज-व्यर्वस्था अपने बाद आनेर्वािह सर्ाज-व्यर्वस्था के शिए प्रततरोध ककए बबना स्थान खािह निहं ंकरती। इततिास िर्ें यिह शसखाता िै कक सार्ाल्जक व्यर्वस्था केर्वि बिपूर्वकम सत्ता पर अधधकार करके और र्वग-मसंघष मद्र्वारा िह बदिह जा सकती िैं। संयुक्त राज्य अर्ेररका जैसे सभ्य प्रजातन्त्र र्ें भी दासता की प्रथा को गृि-युद्ध के बबना सर्ाप्त निहं ंककया जा सका। "जब भी कभी ककसी पुरानी सर्ाज-व्यर्वस्था के पेट से कोई नई सर्ाज-व्यर्वस्था जन्र् िेने को िोती िै, तब केर्वि 'िल्क्त' (बि-प्रयोग) िह दाई का कार् करती िै। केर्वि र्वगसंमघष मऔर हिंसात्र्क क्राल्न्त द्र्वारा िह सर्ाजर्वाद के शिए र्ाग मसाफ िो सकता िै। परंतु रूसी औषध अपनेअप्रजातंत्रीय स्र्वरूप, अपनी हिंसा और अधीरता के कारण सफि न िो पाई। रूसी सरकार बि-प्रयोग पर आधाररत एक ऐसी तानिािह (अधधनायकतंत्न) बन गई, ल्जसपर कानूनी, परम्परागत तनयर्ों या सर्झौतों का कोई भी बन्धन निहंथा। हिंसात्र्क क्राल्न्तयां क्रोध के उन्र्ाद र्ें की जाती िैं। र्वग-मर्वर्वद्र्वेष एक र्िान प्रेरक िल्क्त के रूप र्ें कभी सफि निहं िो सकता। भौततक िल्क्त कोई नैततक तकम निहं ंिै। िर्ें यि सोचने की आर्वश्यकता निहं िैकक गरहबों का सद्गुणों पर एकाधधकार िै; प्रिासन की क्षर्ता,

संचिान की योग्यता, और तन:स्र्वाथ मभल्क्त उनर्ें ि, जबकक धतनकों को सब कलपनीय दोषों का, सूझबूझ के अभार्व, स्र्वाथपमरता और भ्रष्टाचार का भरपूर भाग शरर् ि। उन दोनों के रुख रूतः एक जैसे िोतें। र्वे दोनों िह सम्पवत्त की सर्स्या को सर्वोच्च सर्झते िैं। कम्युतनस्टों और पूंजीपततयों र्ें एक र्ान अंतर सम्पवत्त के स्र्वाशत्र्व के सम्बन्ध र्ें ि, कक यि सम्पवत्त का स्र्वाशत्र्व व्यल्क्तयों के िाथों र्ें रि या सार्ूहिक तनयंत्रण र्ें रि। आधथकम र्वर्षयों को प्रर्ुखता देनेके बारे र्ें दोनों का रुख एक िह ि।

साधारणतया यि सर्झा जाता ि कक प्रजातंत्र की काय-मपद्धततयां र्न्द और अपव्ययपूण,म व्यथ मकी अड़ंगेंबाल्जयों से भरह बाबा आदर् के ज़र्ानेकी (पुरानी) िोती िैं। जो िोग इस अन्यायपूण मसर्ाज को सर्ानता पर आधाररत ढांचे र्ें रूपान्तररत करना चािते िैं, उन्िें भय ि कक संसदहय कक्रयावर्वधध द्र्वारा तो आर्वश्यक पररर्वतनम करनेर्ें बिुत िम्बा सर्य िग जाएगा। इसशिए िर्ारे पास प्रततकक्रया के हित र्ें दक्षक्षणपंथी तानाशाहियां िैं और सर्ाजर्वाद के हित र्ें र्वार्पंथी तानाशाहियां।

आज बड़ी-बड़ी आल्त्क सर्स्याएं दांर्व पर िैं। बौद्धधक और नैततक दृल्ष्ट से िर्ारा संसार एक अर्ाप गत मके ककनारे पर चि रिा ि। यहद कोई प्रजातन्त्र सुशिक्षक्षत िो, इसर्ें कलपनार्यी दृल्ष्ट और नैततक सािस िो, तो र्वि बबना हिंसा के सार्ाल्जक क्राल्न्त कर सकता ि। प्रजातंत्रीय जीर्वन-पद्धतत कोई तनसग म(प्रकृतत) का तनयर् निहं ि। यि ऐसी र्वकासात्र्क प्रकक्रया भी निहं ि, कक जो, जिां किहं भी र्ानर्व-प्राणी अपनेर्नुष्यत्र्व का र्ूलय सर्झतें, र्विां अपने-आप स्थावपत िो जाती िो। यि तो एक बिुर्ूलय स्र्वत्र्व ि, ल्जसे प्रबुद्ध िोगों ने युगों के संघष मके बाद प्राप्त ककया ि, और जब र्नुष्य इसके प्रतत तनरपेक्ष िो जाएंगे, तो यि कफर अंधकार युग र्ें खो जा सकती ि। यि एक र्वचार ि, कोई प्रर्ाि निहं; और िर्ें इसकी बड़ी सार्वधानी के साथ रक्षा करनी चाहिए, र्वशेष रूप से ऐसे सर्य र्ें, जबकक यांबत्रक सभ्यता की बढती िुई गतत बड़ी संख्या र्ें अधीनस्थता को जन्र् दे रिह ि। सुधार की प्रजातंत्रीय पद्धततयां क्राल्न्त की ल्स्थततयों को संभिा सकती िैं। ऐसी ककसी भी आधथकम प्रर्ाि को सर्ाप्त कर देना चाहिए, ल्जसर्ें कार्गर के व्यल्क्तत्र्व की उपेक्षा की गई िो, या जो कुछ थोड़े–से िोगों के िाभ के शिए कार्गर को आत्र्नािी अभार्व या भ्रष्टाचार की ओर िे जानेर्वािह बेकारह का शिकार बनने देती िो। संसार की आधथकम र्वस्तुओंका सर्ुधचत र्वतरण ककया जाना चाहिए, क्योंकक आधथकम साधन उन्नतत के अर्वसरों को खरहद सकते िैं। सम्पवत्त के संचय पर बिुत अधधक प्रततबन्ध िगा हदए जानेचाहिएं, और सम्पवत्त के र्वर्षय र्ें प्रत्येक व्यल्क्त के प्रतत सब िोगों की ल्ज़म्र्ेदारह स्र्वीकार की जानी चाहिए। िेयर बाज़ार र्ें िे-बेच द्र्वारा संधचत की गई सम्पवत्त और ककसान द्र्वा अपने श्रर् से तनशर्तम सम्पवत्त र्ें अन्तर िैं। इनर्ें से वपछिह को र्वे अधधकार िैं, जो पििह को निहं िैं। जब िेतनन ने 1921 की "नई आधथकम नीतत" जारह की, तब उसनेआधथकम जीर्वन को र्वैयल्क्तक नर्वारम्भ (उद्यर्) द्र्वारा िह कफर अपनेपैरों पर खड़ा ककया। आय को सेर्वा के प्रततफि के रूप र्ें र्ाना जाना चाहिए, सम्पवत्त से उत्पन्न िोनेर्वािी ककसी पवर्वत्न अधधकार के रूप र्ें निहं। इस युद्ध र्ें बिटेन और अर्ेररका के साथ रूस के शर्र् जानेसे कम्युतनज्र् (साम्यर्वाद) के रूप और अन्तर्वस्मतु र्ें प्रजातंन की हदिा र्ें कुछ पररर्वतनम िोगा। र्वतर्मानिकािहन कम्युतनज्य अपेक्षाकृत अधधक गम्भीर और सन्तुशित ि और प्रजातन्त्र की रक्षा के शिए कर् से कर् शसद्धान्त र्ें तो, तैयार ि। व्यार्वािररक दृल्ष्ट से यि सफि निहं रिा, इसका स्पष्ट

कारण यि ि कक साम्यर्वादह शसद्धान्त र्ें प्रजातन्त्र के शिए कोई स्थान निहं ंिै। प्रजातन्त्र की साम्यर्वाहदयों द्र्वारा की गई आिोचनाएं रूसी क्राल्न्त के बाद के हदनों की र्वस्तु िैं। स्र्वयं र्ाक्स मने प्रजातंत्हिय शसद्धान्त की प्रार्ाखणकता को स्र्वीकार ककया; र्ाक्सर्वमादह पाटी का नार् िह 'सोशि डेर्ोक्रेहटक पाटी (सर्ाजर्वादह प्रजातंत्रीय दि) था; और उसका उद्देश्य था कक प्रजातंत्रीय पद्धततयों द्र्वारा सार्ाल्जक क्राल्न्त उत्पन्न की जाए। प्रजातन्त्रीय र्तदान का अधधकार शर्ि जानेसे कार्गरों को प्रभुसत्ता का एक र्ित्त्र्वपूण मअंश प्राप्त िो जाता िै और उन्िें र्वास्तवर्वक राजनीततक सत्ता शर्ि जाती िै, ल्जसका उपयोग र्वे राज्य की उपकारह गततवर्वधधयों को बढाने के शिए करते िैं। इस हदिा र्ें ककए गए प्रयत्न यहद सफि िो जाएं तो उससे क्राल्न्त की प्रेरणा कर् िो जाती िै। अपूंजीर्वादह प्रजातन्त्र राजनीततक िल्क्त को सम्पवत्त से छीन िेता िै और उसे व्यल्क्त र्ें तनहित कर देता िै। 'कम्युतनस्ट र्ैनीफैस्टो' र्ें किा गया िै कक "कार्गरों की क्राततं र्ें पििा कदर् िै- श्रशर्क-र्वग मको ऊंचा उठाकर िासक-र्वग मबनाना, प्रजातन्त्र की वर्वजय।" जब श्रशर्क-र्वग मिह िासक र्वग मबन जाता िै, तब क्राल्न्त राजनीततक असंगतत बन जाती िै (अथामत् उसकी आर्वश्यकता िह निहंरिती)। र्ाक्स मर्ानता िै कक िाल्न्तपूण मक्रांतत भी सम्भर्व िै। र्वि शिखता िै, "ककसी हदन कार्गरों को राजनीततक सर्वोच्चता जीतनी िह िोगी, ल्जससे श्रशर्कों का एक नया संगठन स्थावपत ककया जा सके, उन्िें उस पुरानी राजनीततक प्रणािह को, ल्जसके द्र्वारा पुरानी संस्थाओं को सिारा हदया जाता िै, नष्ट करना िोगा।... परन्तु र्ेरे कथन का यि अथ मनिहंतनकािा जाना चाहिए कक इस उद्देश्य को पूण मकरने के शिए साधन सब जगि एक जैसे िह िोंगे। िर्ें स्र्रण् िै कक वर्वशभन्न देिों की संस्थाओं, प्रथाओंऔर परम्पराओंका वर्विेष रूप से ध्यान रखना चाहिए; और िर् इस बात से इनकार निहं करते कक ऐसे भी कुछ देि िैं, जैसे इंग्िैंड और अर्ेररका, जिांकार्गर िोग िाल्न्तपूण मसाधनों से अपनेउद्देश्य को पूण मकर पाने की आिा कर सकते िैं।" क्राल्न्त के पथ पर चिने से पििे िर्ें प्रजातन्त्रीय कक्रया (गततवर्वधध) की सब सम्भार्वनाओं को आज़र्ा कर देख िेना चाहिए। कम्युतनज़्र् का हिंसा, अधर्,म तनरंकुिता और व्यल्क्त के दर्न की प्रणािह के साथ अशभन्न सम्बन्ध सर्झने की कोई आर्वश्यकता निहीं। कम्युतनज़्र् ने धर् मपर चोट इसशिए

की, क्योंकक धर् मप्रततकक्रयार्वादह और अनुदार था, पुरानी व्यर्वस्था के साथ धचपटा िुआ था, और पुराने अधधकारों की रक्षा के शिए प्रयत्निीि था। जब र्ाक्सर्वमादह किते िैं कक "राज्य सूखकर झड़ जाएगा," तब उनका र्तिब यि िोता िै कक "ककसी दूसूरे र्वग मको अपनेअधीन बनाए रखनेके शिए हिंसा के संगठन" के अथों र्ें यि "सूखकर झड़ जाएगा।"

यहद राजनीततक प्रजातंत्र को एक आधथकम प्रजातंत्न बनाना िो, जो िर्ें नैततक और आध्याल्त्र्क प्रजातंत्न की स्थापना की ओर िे चिे, तो िर्ें र्नुष्यों को उस श्रद्धा की ओर िे जाना चाहिए, जो सप्राण प्रजातंत्न के र्ूि स्रोत र्ें वर्वद्यर्ान िै। िर्ें िोगों को र्वास्तवर्वकता, प्रकृतत और र्ानर्वीय भ्रातृभार्व की ल्ज़म्र्ेदारह के वर्वषय र्ें शिक्षक्षत करना िोगा। यि एक नया र्नोवर्वज्ञान िै ल्जसे िर्ें वर्वकशसत करना िै। यि कोई शसद्धान्तात्र्क ज्ञान का बबषय निहीं। यि बुद्धध की शिक्षा की अपेक्षा हृदय और कलपना की शिक्षा अधधक िै। यि एक नई भार्वना या आचार की शिक्षा िै। क्राल्न्तकारह सर्स्या को आर्वश्यकता से अधधक सरि रूप र्ें देखता िै। संसार की बुराइयों को व्यल्क्त के आत्र् से बािर की र्वस्तु र्ाना जाता िै। यहद बुराई किहंसिरहर (र्ूततर्मान) िै, तो र्वि दूसूरे िोगों र्ें, र्वग मया जातत र्ें, सर्ाज या राष्र र्ें िै। यंनजात (र्िीनरह) के अततररक्त अन्य ककसी

र्वस्तु र्ें पररर्वतनम निहंककया जाना ि ै। परन्तिुर्ें उस यंत्नजात का उपयोग करने की उपयुक्त नर्ोिदा उत्पन्न करनी िोगी। िर्ें प्रजातंत्र का र्वर्वकास एक र्नःत्स्थतत के रूप र्ें, एक जीर्वनर्ि्िह के रूप र्ें करना िोगा। र्वर्वश्र्व-भ्रातृत्र्व का जन्र् केर्वि तभी िो सकता ि ै, जब िर् ििे अपने अन्दर संघ-भार्व उत्पन्न कर िें। यिह धर् मके करने ेका कार् ि ै।

3: हिन्दू ूधर् म

हिन्दू ूसभ्यता - आध्यात्त्र्क र्ान्यताएंधर्मकीधारणा धर् मके स्रोत - पररर्वतनम के शसद्धान्त - धाशर्कम संस्थाएं - जातत और अस्पृश्यता - संस्कार

हिन्दू ूसभ्यता

जिां ंअन्य सभ्यताएं नष्ट िो गईं, या उन पररर्वतनमों र्ें र्विीन िो गईं, जो वपछिे पांच िज़ार र्वषों के किा-प्रर्वा र्ें िोतेरिे, र्विंभारतीय सभ्यता, जो शर्स्र और बेबीिीन की सभ्यताओं की सर्कािीन ि ै, अब भी काय मकर रिह ि ै। िर् यि निहंकि सकतेकक यि अपनी र्ंत्ज़ि पूरह कर चुकी ि ै या अब इसका अन्त तनकट ि ै। भारतीय जीर्वन के कुछ ििुओंको देखकर ऐसा प्रतीत िो सकता ि ै कक भारत र्ृत र्ान्यताओंऔर क्षीण िोती िुई परम्पराओं का दिे ि ै। परन्तु िर्ारे यिां क्रान्तदिी आत्र्ाएं िैं, जो क्षीणता पर से पदाम िटाने ेके शिए और सीधे-सादे सत्यों की कफर दृढता से घोषणा करने ेके शिए कहटबद्ध िैं। इससे उसकी जीर्वनी ित्क्त का पता चिता ै। उन िोगों की दृत्ष्ट र्ें, त्जनके र्न र्ें उन्नतत की धारणा उन अनधगनत पररर्वतनमों के रूप र्ें िह बनी िुई ि ै, जो अनन्त परम्परा र्ें एक के पीछे एक आते-जाते िैं, भारतीय संस्कृतत का डटे रिना एक ऐसा तत्र्व ि ै, त्जसके स्पष्टहकरण की आर्वश्यकता ि ै। ककस र्वर्वधचत्र सार्ात्जक कीशर्यागरह से भारत ने अपने र्वर्वजेताओं को र्वि र्ें कर शिया और उन्िें रूपान्तररत करके अपना आत्र् और सार िह बना शिया ? इतने ेसार्ात्जक दिेंतर गर्नों (प्रर्वसनों) र्ें, उथि-पुथिों और राजनीततक पररर्वतनमों र्ें, त्जन्िोंने अन्यत्र सर्ाज का रूप िह बदि डािा ि ै, र्वि

कैसे िगभग ज्यों की त्यों बनी रिह ? इसका क्या कारण िै कक उसके वर्वजेता अपनी भाषा, अपने वर्वचार और प्रथाएं उस पर िाद पाने ऱें सफि निहं िुए; यहद थोड़ी-बिुत सफिता शऱिह भी, तो बबिकुि तछछिह और ऊपरह ढंग की ? भारत को अपनेइस जीर्वन-उद्देश्य ऱें जो सफिता शऱिह िै, र्वि बि के प्रयोग से या आक्रर्णात्रक गुणों के वर्वकास से निहं ंशऱिह। क्या भारत और चीन के भाग्य प्रकृतत के उस साऱान्य तनयऱ् के दृष्टान्त निहं ंिैं, ल्जनके द्र्वारा तिर्वार जैसे दांतोंर्वािह व्याघ्र जाततयों के सदस्य तो घटकर बिुत कऱ् रि गए िैं, जबकक प्रततरोध न करनेर्वािह भेड़ें बिुत बड़ी संख्या ऱें सुरक्षक्षत बची रिह िैं?

हिन्दुत्र्व ककसी जातीय तथ्य पर आधाररत निहं ंिै। यद्यवप हिन्दू ूसभ्यता का ऱिू वैंहदक आयों के आध्याल्त्रक जीर्वन ऱें िै और उसके ऱिू के धचह्न अभी तक िुप्त निहंुए िैं, कफर भी इसने द्रवर्वड़ों तथा यिां के अन्य तनर्वाशसयों के साऱाल्जक जीर्वन से इतना कुछ ग्रिण। ककया िै कक आधुतनक हिन्दुत्र्व ऱें से वैंहदक और वैंहदक-शभन्न तत्र्वों को सुिझाकर अिग-अिग कर पाना कहठन िै। इसके भाष्य बिुत जहटि, सूक्ष्ऱ् और अवर्वल्च्छन्न िोते रि िैं। ल्जन वर्वशभन्न सऱुदायों ने हिन्दू ूधऱ् मको ग्रिण कर शिया था, र्वे अपने आसपास के सऱाज के स्तर तक उठ आए, उन्िोंने ेहिन्दू ूधऱ् मकी भार्वना की शिक्षा िह, इसके रंग ऱें रंग गए और इसकी उन्नतत ऱें योग हदया। राऱायण और ऱिाभारत ऱिाकाव्यों ऱें हिन्दू ूआदिो के प्रसार का र्वणनम िै, िािांकक उनऱें इततिास के तथ्य ककम्र्वदंततयां की धुंध ऱें तछप-से गए िैं। जब तक यि प्रसार भारत के अधधकांभागों ऱें प्रभार्वी िो पाया, तब तक वैंहदक ऱान्यताओं की दुतुनया िह बदि चुकी थी। यज्ञ जैसी पुरानी संस्थाओंकी तनन्दा िोने िगी थी और भल्क्त-भार्वना का एक नया ज्र्वार र्वातार्वरण पर छाता जा रिा था। हिन्दुत्र्व का क्षेत्न उस भौगोशिक प्रदेि तक िह सीशर्त निहं ंिै, ल्जसे भारत किा जाता िै। प्राचीन काि ऱें इसका प्रभार्व चम्पा, कम्बोडडया, जार्वा और बािह तक फैिा। ऐसा कोई कारण निहंकक जो इसके पृथ्र्वी के दूरूतऱ् भागों तक फैिने ऱें बाधक िो। भारत एक परम्परा, एक भार्वना, एक प्रकाि िै। उसकी भौततक और आल्त्रक सीऱाएं एक निहंपृथृक् पृथक िैं।

हिंदुत्र्व वर्वचार और ऱित्र्वाकांक्षाओं का एक सजीर्व और स्र्वयं जीर्वन की गततयों के साथ गतत करता िुआ उत्तराधधकार िै; एक ऐसा उत्तराधधकार, ल्जसऱें भारत की प्रत्येक जातत ने अपना सुस्पष्ट और वर्वशिष्ट योग हदया िै। इसकी संस्कृतत ऱें एक खास तरि की एकता िै, यद्यवप र्वि एकता जांच करनेपर वर्वशभन्न रंगों और अभार्वों ऱें वर्विहन िो जाती िैं। यद्यवप र्नन के अरुणोदय काि से िह एकता का स्र्वप्न इस भूशऱ् पर ऱंडराता रिा िै, और नेताओं की कलपना ऱें आता रिा िै। कफर भी र्तभेद पूरह तरि सऱाप्त निहं ंिो पाए िैं। भारतीय सऱाज की र्वतर्मान दिा को सुधारने ेके शिए, सर्य के ऱित्र्व के उपयुक्त इसके जीर्वन को नया रूप देनेके शिए िऱें इसकी आत्ऱा को, जो िऱें उत्तराधधकार से अपनेखून ऱें शऱिह िै, उन औिककक आदिों को; उन र्वस्तुओंको, जो िऱारे अल्स्तत्र्व की गिराइयों ऱें धचरंतन सम्भार्वनाओं के रूप ऱें पड़ी िैं, नये शसरे से खोज तनकािना िोगा। िऱारह ऱान्यताएं निहंबदितीं; परन्तु उन्िें व्यक्त करने ेके ढंग और साधन बदि जाते िैं। भारत आध्याल्त्रक ऱान्यताओं को अन्य ऱान्यताओं की अपेक्षा किहं ंअधधक ऱित्र्व देता िै।

आध्याल्त्क र्ान्यताएं

आल्त्क अनुभर्व का प्रारम्भ िह यि र्ान िेने से िोता िै कक संसार, ल्जस रूप रे्ं इस सर्य िै, असन्तोषजनक िै और र्ानर्व-स्र्वभार्व, जैसा इस सर्य िै, आदि मसे दूरू िै। परन्तुर्नुष्य के 'भाग्य रे्ं इस अपूणतमा से घबराकर भाग खड़े िोना निहं शिखा, अवपतु उसे तो इसका प्रयोग सुधार के शिए प्ेरेरणा के रूप रे्ं करना िै। अज्ञान और अपूणतमा ऐसे पाप निहं ंिै, ल्जन्र्ें िरे्ं िटाकर पो कर देना िो, अवपतु ठीक ऐसी दिाएं िैं, ल्जनरे्ं आत्र्ा प्रकट िो सकती िै। िर्ारह सीशर्त बोति का उपयोग उच्चतर, असीर् आत्र्-अल्स्तत्र्व और परर् आनन्द की प्राल्प्त के शिए प्रारम्भ के रूप रे्ं ककया जाना िै। सीशर्त और असीर्, अपूण मऔर पूण मपरस्पर धचर-वर्वरोधी निहं िैं। यिां तक कक अद्र्वैत र्वेदान्त भी केर्वि इतना निहं किता कक सत्य और र्ाया रे्ं वर्वरोध िै, अवपतु यि भी किा िै कक िह्र् यिाँ और िर र्वस्तु रे्ं िै और यि कक यि सब र्वि (िह्र्) िह िै। िह्र्ज्ञानी इस संसार रे्ं चिता-कफरता और कार् करता िै. कफर भी र्वि िोल्न्त और स्र्वतन्त्रता रे्ं तनर्वास करता िै। इस र्िर रे्ं ल्जस सौन्दय मऔर पूणतमा की व्यंजना िोती िै, उसके शिए िरे्ं परीक की जा िै। इस संत आर्वश्यकता निहं ंिै। आध्याल्त्क र्ुल्क्त का स्थान यि संसार िह िै।'[106] िह्र्ांडीय प्रकक्रया ताकते पैक िह तत्त्व की पुनरार्वृवृत्त-र्ात्र निहं ंिै, अवपतु एक आगे की ओर गतत िै, र्ू अचेतना की देसी से अधधक और अधधक वर्वकशसत चेतना की ओर तनरंतर उन्नतत। अभी िर्ारे सार्ने ऐसी बिुता ती आध्याल्त्क संभार्वनाएं िैं, ल्जन तक िर् पिुंच निहंपाए िैं। तैवत्तरहय उपतनषद्, ल्जसरे्ं इस क्राशर्क उन्नतत की बात किह गई िै, उस अपूण मर्ानशसक अल्स्तत्र्व पर िह, ल्जसे र्नुष्य किा जाता िै, बस निहं कर देती। वर्वज्ञान या र्ानर्वीय बुद्धध आध्याल्त्क वर्वकास का अंततर् सोपान निहं िै। इससे भी अधधक बड़ी एक और चेतना िै, ल्जसकी वर्विेषेता िै असीर् आत्र्-अल्स्तत्र्व, आनन्द की वर्विुद्धु चेतनता और स्र्वतन्त्रता, जो अन्तर्वासमी 'हदव्य' (िह्र्) को अंितः और अपूणतमया निहं, ं अवपतु सर्ूचे ेतौर पर और प्रततबंधिहन रूप से र्ुक्त कर देती िै। अचेतन भौततक तत्त्व (अन्न) के जगत् ्से, जीर्वन (प्राण), र्न (र्नः) और बुद्धध (वर्वज्ञान) के जगतों रे्ं से िोतेुए सत्, ् धचत् ्और आनन्द की ओर वर्वकासात्क उन्नतत अपने-आप या ककसी र्न की र्ौज अनुसार निहं ंिो रिह, अवपतु हदव्य (िह्र्) की प्ेरेरणा से िह िो रिह िै। र्ानर्व र्न की अपेक्षा किहं ंअधधक बड़ी चेतना की ओर क्रशर्क आल्त्क उन्नतत अपने-आप रे्ं हदव्य गततवर्वधध की अशभव्यल्क्त िै। सांसाररक जीर्वन अल्न्तर् िक्ष्य से ध्यान वर्वचशित करनेर्वािा निहं, अवपतु ुअल्न्तर् िक्ष्य को प्राप्त करने का साधन िै। र्ानर्वीय जीर्वन को अिौभन निहंसर्झा जाना चाहिए।107 र्ानर्वीय इच्छाएं िह र्वे साधन िैं, ल्जनके द्र्वारा आदि मर्वास्तवर्वक बनता िै। यि संसार कोई भ्ूि या भ्रर् निहं, ल्जसे आत्र्ा द्र्वारा दूरू ककया जाना िो, अवपतु यि तो आल्त्क वर्वकास का एक दृश्य िै, ल्जसके द्र्वारा भौततक तत्त्व रे्ं से हदव्य चेतना आवर्वभूतम िो सकती िै। िंकराचाय मकी दृल्ष्ट रे्ं सम्पूण मिह्र्ाण्डीय प्रकक्रया का िक्ष्य आध्याल्त्क अनुभर्व (अर्वगतत) िह िै।108

106 र्ोक्षाय ते संसारः

107 उपभोगैरवप त्यकतंनात्र्ानं ंसादयेन्नरः चाण्डिात्रे्वेवप र्ानुष्यं सर्वथमा तात िोभनर् ्।

108 भगर्वद्गीता के अध्याय 9, श्िोक 10 का भाष्य करतेुए र्वि शिखता िै : "जगतः सर्वा मप्रर्वृवृत्त ... अर्वगततततनष्ठा, अर्वगत्यर्वसानैर्व।"

 अतनल्श्चत अल्स्तत्व को ऊंचा उठाकर असीर् ऱित्व तक पिुंचाया जा सकता िै। "िाश्र्वतता का प्ेरेर् किा द्र्वारा
उत्पन्न की गई र्वस्तुओंके साथ िै।" "पररात्ा स्र्वग मका स्र्वाऱी िै, परन्तु उसे भी िोभ पृथ्र्वी का िह िै।"

परन्तु 'परर्' से इस प्रकार का र्वर्वयोग, यि पाथक्मय और कष्ट तथा दुुःख र्े से िोकर प्रायल्श्चत्त की ओर यि गतत ककसशिए िोनी चाहिए? 'अि' भार्व को 'हदव्य' (िह्ि) के साथ एकता स्थावपत करने ेकी अपेक्षा अपना क्षिय आत्र्-प्रकथन (ज़ोर देकर किना) को बनाना क्यों अधधक पसन्द करना चाहिए? यि सब कष्ट और अज्ञान, यि सब टटिो और संघष मककसशिए िै? अपूणतमा की ओर से पूणतमा की ओर यि गतत ककसशिए िै? क्या यि ककसी नर्ऱौजी िह्ि की तनरंकुि इच्छा िै? िर् यि निहं ंकिते ेकक िह्ि संसार के परे िै; र्वि संसार के पीछे भी िै। र्वि संसार को अपनी एकता से संभािे िुए िै और िर्े इस द्र्वैध का साऱ्ना करने के शिए सिारा दे रिा िै। यि िह्िाण्ड ऱानर्वीय स्र्वतंत्नता के प्रयोग द्र्वारा, ल्जसके साथ उसके सब पररणार्, संकट और कहठनाई, कष्ट और अपूणतमा, जुड़े िुए िैं आध्याल्त्क एकता की ऱिान संभार्वना को तनरन्तर प्रयत्न करके सत्य बना रिा िै। एकदर् अपररष्कृत प्रारंभ से यि सारह कहठन चढाई ककसशिए िै? िाश्र्वत से यि पृथकता, धचरस्थायी से यि द्र्वैध ककसने उत्पन्न ककया िै? िह्ि ने यि र्वर्वशिष्ट योजना ककसशिए चिनेदह िै, इस बात को िर् तभी सझ्र सकेंगे, जब िर् सीशर्त बोध की रोक को पार कर जाएंगे और र्वस्तुओंको उस 'सर्वर्वोच्च तादात्म्य' द्र्वारा देख सकेंगे, जो पाधथर्वम प्रकक्रया के पीछे तनहित िै। जिां िर् िैं, र्विां से तो िर् केर्वि यिह कि सकते िैं कक यि रिस्य (ऱाया) िै, या िह्ि की इच्छा िै, या उसकी सृजर्ििनी िल्क्त की अशभव्यल्क्त िै। 'ऱाया' का यि अशभप्राय निहं िै कक यि संसार एक तनरथकम भ्रर् िै, शसफम धुआंहि धुआं, ल्जसर्े आग िै िह निहं। ऱानर्व-जीर्वन का िक्ष्य रेखा को पार करना िै, अपयाप्तता और अज्ञान से ऊपर उठकर पूणतमा और बुद्धधत्त्ता तक पिुंचना िै। यि िै ऱोक्ष या अधधचेतना (सुपरकांसिनेस) के प्रकाि र्े र्ुल्क्त। यि परर् पुरुषाथ मिै, जीर्वन का सर्वोच्च िक्ष्य; और इस तक पिुंचने ेका साधन धर् मिै। ऱोक्ष या र्ुल्क्त को यिहं ंऔर अभी इस पृथ्र्वी पर िह, ऱानर्वीय सम्बन्धों द्र्वारा प्राप्त करना िै। यहद आध्याल्त्क र्वर्वचारों को र्वर्वजयी िोना िो, तो र्वे केर्वि संस्थाओंर्े र्ूत मिोकर िह र्वर्वजयी िो सकतिे। र्वे ेगम्भीर र्वर्वधधयां,ं जो ककिोरार्वस्था की प्राल्प्त को, र्वर्वर्वािों के आिीर्वादमों को, और र्ृतकों की अन्त्येल्ष्ट को पर्वर्वत्त बनाती िैं, सारतः पूजा की कक्रयाएं िैं। इस दृश्य जगत् ्की प्रत्येक र्वस्तु अदृश्य र्वास्तर्वर्वकता की प्रकािन बन सकती िै। िर् ल्जतने भी कर् मकरते िैं, र्वे सब ईश्र्वरोन्र्ुख जीर्वन के प्रतत लगाव के कारण पर्वर्वत्र िो जाते िैं।

धर्म की धारणा

ल्जन शसद्धान्तों का िर्े अपनेदैतनक जीर्वन र्े और साऱाल्जक सम्बन्धों र्े पािन करना िै र्वे उस र्वस्तु ु द्र्वारा तनयत ककए गए िैं, ल्जसे धर् मकिा जाता िै। यि सत्य का जीर्वन र्े र्ूत मरूप िै, और िऱारह प्रकृतत को नये रूप र्े ढािने की िल्क्त िै।

जीर्वन के इततिास र्े ऱानर्वीय ल्स्तष्क एक नर्वीन सृल्ष्ट िै। इसर्े अपने-आपको पररल्स्थततयों के अनुकूि ढाि िेनेकी एक र्वर्वशिष्ट क्षर्ता िै। इसके द्र्वारा र्नुष्य अनुभर्व से और अपनी स्ृतत र्े भरे पाठों के भंडार से सीख पाने र्े सर्थ िोता िै। ऱानर्वीय इततिास और प्राकृततक इततिास र्े अन्तर यि िै कक इनर्े से

पिपिा कफर से िुरू निहंीं सकता। तनश्र्ातर प्राखणयों की जाततयां अपनेर्ंि-परम्परा से प्राप्त उपस्कर
(उपकरण, साधन) द्र्ारा ििह या तो बची रिह ििै या सर्ाप्त ििो जाती ििैं। र्े सीख बिुत ििह कर् पाती ििैं। ििकोर तथा
अन्य र्वर्ज्ञानर्ेत्ताओं ने यि बताया ििै कक धचम्पांज़ी और ओरांग-उटांग का र्नुष्य से भेद बुद्धध के कारण निहं, अवपत स्र्तृतिल्क्त के कारण ििै। पिु ुजो भी जीर्न बबताते ििैं, उसे भिूते ेजाते ििैं और अनुभर्व के बिुत ििह कर् कार् करते ििैं। आज का बाघ ठीक र्ैसा ििह ििै, जैसा अब से छः ििज़ार र्वष मपूर्व मका बाघ था। उनर्ें से प्रत्येक बाघ अपना जीर्न ठीक इस प्रकार प्रारम्भ से ििह िुरू करता ििै. जैसे उससे पिपिे कभी कोई बाघ िुआ ििह निहं। परन्तु र्नुष्य अपने अतीत को याद रखता ििै और उसका उपयोग र्तर्मान र्ें करता ििै। नीत्िे ेका कथन ििै कक र्नुष्य सबसे िम्बी स्र्तृत- िल्क्तर्ािा प्राणी ििै। र्ि स्र्तृत ििह उसका एक अनोखा खज़ाना ििै, उसका र्ैशिष्ट्य-द्योतक धचह्न ििै, र्विेषाधधकार ििै। उसके जीर्न र्ें सिज-प्रर्वृत्तक प्रततभार्नों की पूतत मअधधगत (प्राप्त की िुई) आदतों से
िोती रिती ििै। प्राकृततक ििीों के ऊपर एक र्ानशसक ऊपरह ढांचा थोप हदया जाता ििै। र्नुष्य एक ऐसा प्राणी ििै, ल्जसे शसखाया-पढाया जा सकता ििै और जो सर्ाज द्र्ारा तनयल्न्त्रत रिता ििै। िर्ारह र्ेि-भूषा, िर्ारा खान-पान और िर्ारा रिन-सिन सब सार्ाल्जक उपजें ििैं, ल्जन्िें ििर्नेप्रशिक्षण द्र्ारा प्राप्त ककया ििै। िर्ारह सिजर्वृत्तयां सुघट्य (ल्जसे ककसी भी रूप र्ें ढािा जा सके) कच्चा र्ाि ििैं, और िर्ारह संस्कृतत खाका और पद्धतत प्रस्तुत कर देती ििै। िर् र्वर्ेक या सिजर्वृत्त से चिनेर्ािे कर् और आदत से चिनेर्ािे प्राणी अधधक ििैं। िर्ारा आचरण र्ानर्ीय स्र्भार्व के र्ूि र्नोर्ेगों का पररणार् निहं,ं अवपतु कृल्त्रर् र्ानशसक कारणों का पररणार् ििोता ििै। प्रथा की िर्ारे कायों को तनयंबत्रत और र्ाहमदत रखनेकी िल्क्त सार्वभमौर् ििै। िर्ें अन्धा बना देनेकी उसकी िल्क्त इतनी अधधक ििै कक सिसा र्वश्र्ास निहं ंििोता। िर् उन अन्यायों या क्रूरताओंको देखकर चककत रि जाते ििैं, ल्जन्िें िर् प्रर्ाखणत करते ििैं या ल्जनके साथ िर् सिर्त ििो चुके ििोते ििैं। यहद िर्ें ज़ोरदार सुझार्व हदए जाएं और
उन्िें नैततक बाना पिना हदया जाए, ल्जससे िर्ें सिर्तत की र्नोर्वृत्त उत्पन्न ििो जाए, तो िर्से कुछ भी करर्ाया जा सकता ििै। दास-प्रथा, शििुित्या, धर्-मपरहक्षण-सशर्ततयां (धाशर्कम क्रूरर न्यायिय), जादूगरतनयों को जीते-जी जिाना, सबके सब ककसी सर्य र्ानर्ीय गौरर्व के शिए सम्र्ाननीय र्ानेजाते थे,े जैसेकक युद्ध आज
धर् सर्कीजाधरणाोंाके अन्तगतम हिन्दू ूउन सब अनुष्ठानों और गततर्वधधयों को िे आता ििै, जो र्ानर्ीय जीर्न को गढती और बनाए रखती ििैं। िर्ारे पृथक् पृथक् हित ििोते ििैं, र्वशभन्न इच्छाएं ििोती ििैं और र्वरोधी आर्वश्यकताएं ििोती ििैं, जो बढती ििैं और बढने की दिा र्ें ििह पररर्ततततम भी ििो जाती ििैं। उन सबको घेर-घारकर एक सर्ूचे ेरूप र्ें प्रस्तुत कर देना धर् मका प्रयोजन ििै। धर् मका शसद्धांत िर्ें आध्याल्त्र्क र्ास्तर्वर्कताओं को र्ान्यता देनेके प्रतत सजग करता ििै, संसार से र्वरक्त ििोने ेके द्र्ारा निहं,ं अवपतु इसके जीर्न र्ें, इसके व्यर्साय (अथ)म और इसके आनन्दों (कार्) र्ें आध्याल्त्र्क र्वश्र्ास की तनयन्त्रक िल्क्त का प्रर्ेि करानेके द्र्ारा। जीर्न एक ििै और इसर्ें पारिौककक (पर्वर्त्न) और ऐहिक (सांसाररक) का कोई भेद निहं ंििै। भल्क्त और र्ुल्क्त एक-दूसरे की र्वरोधी निहं ंििैं।'[109] धर्,म अथ मऔर कार् साथ ििह रिते ििैं।'[110] दैतनक जीर्न के सार्ान्य

109

1. तिुनाकील्जए र्ािपरररतनर्ाणम तन्त्र,

व्यर्वसाय सच्चे अथों र्ें भगर्वान की सेर्वा िै। सार्ान्य कृत्य भी उतनेिह प्रभार्वी िैं ल्जतनी कक रु्तनयों की साधना। हिन्दू ूतपस्या को बिुत ऊंचा निहं ंबताता और न जीर्वन के सुखों के तनष्प्रयोजन पररत्याग की िह बिुत प्रिंसा करता िै। िारहररक कलयाण र्ानर्वीय कलयाण का अत्यार्वश्यक अंग िै।111 आनन्द अच्छे जीर्वन का एक अंग िै। आनन्द इल्न्द्रयग्राह्य भी िै और आल्त्र्क भी। धूप का आनन्द िेना, संगीत सुनना या कोई नाटक पढना, इल्न्द्रयग्राह्य और आल्त्र्क दोनों िह िैं। आनन्द अपने-आपर्ें कोई तनन्दनीय र्वस्तु निहं िै।

इसी प्रकार आधथकम उपादान (साधन) भी र्ानर्व जीर्वन का एक अत्यार्वश्यक तत्त्व िै। सम्पवत्त र्ें स्र्वतः कोई पाप निहं िै, ठीक र्वैसे िह जैसे गरहबी र्ें स्र्वतः कोई पुण्य निहं िै। ककसी व्यल्क्त के अपनी सम्पवत्त को बढाने के प्रयत्नों को बुरा निहं किा जा सकता; पर यहद ककसी एक के सम्पवत्त जर्ा करने के प्रयत्नों से दूसूरे िोगों को आधथकम या नैततक िातन पिुंचती िै, तो अर्वश्य यि प्रश्न उठ खड़ा िोता िै कक क्या ऐसे उपायों से ऐसी सम्पवत्त एकबत्रत करना, ल्जसके पररणार् ऐसे िों, भिा िै या निहं? हिन्दू ूआचारिास्त्र (संहिता) का आग्रि िै कक उद्देश्य र्वैयल्क्तक िाभ न िोकर सर्ाज-सेर्वा िोना चाहिए। जीर्वन के वर्वशभन्न रू्लयों की साधना सर्ान रूप से िोनी चाहिए; एक को गर्वांकर दूसूरे की निहं।112 भर्वभूतत िर्ें बताता िै कक "दिनम का ज्ञान इसीशिए अच्छा र्ाना जाता िै, क्योंकक उससे सत्य का ठीक-ठीक तनश्चय िो जाता िै; सम्पवत्त की इच्छा केर्वि इसशिए की जाती िै कक इससे सार्ाल्जक, आधथकम और धाशर्कम कतव्मयों और ल्ज़म्र्ेदाररयों को पूरा करनेर्ें सिायता शर्िती िै; और वर्वर्वाि को इसशिए अच्छा र्ाना जाता िै कक र्वि उत्तर् संतान उत्पन्न करने ेका साधन िै।"[113] रघुर्वंि र्ें काशिदास भी उन्िीं पुरुषों को आदि र्ानता िै, "जो सम्पवत्त का संचय दान करनेके शिए करते थे,े जो सत्यभाषी रिने ेके शिए थोड़ा बोिते थे,े जो यि के शिए वर्वजय करना चािते थे,े और जो सन्तान के शिए वर्वर्वाि करते थे।"[114] िर्ें अपेक्षा की

शुरुतंबिुवर्वध धर्
ं ह्िर्ुल्नसुखप्रदर् ,ु
धर्ाथमकमार्दं वर्विनिरं तनर्वाणमकारणर्।ु

110 इस प्रश्न का कक,

धर्मचाथश्मच कार्श्च परस्परवर्वरोधधनः

एषांतनत्यवर्वरुद्धानां कथर्ेकन सङ्कगर्ः ;

यि उत्तर हदया गया िै,

यदा धर्मच भायामच परस्परर्वािानुगौ

तदा धर्ाथमकमार्ानां त्रयाणार्ाप सङ्कगर्ः ।

111 िरहरं धर्मसर्वस्र्वं रक्षणीयंप्रयत्नतः ।

112 धर्ाथमकमार्ः सर्ं ुएर्व सेव्यः
यो हि एकासक्तः स जनो जघन्यः ।

113 ते श्रोल्त्नयास्तत्त्व वर्वतनश्चयाय भूररशुरुतं ंिाश्र्वतर्ाहद्रयन्ते े
इष्टाय पतायम च कर्णेमथान्म ुदारानपत्याय तपोथर्मायुः ।
- र्ातीर्ाधर्व 1.5

114 त्यागाय संभृताथानमां सत्याय शर्तभावषणार् ु
यिसे वर्वल्जगीषूणांप्रजायैगृर्ेधधनार्।ु - 1-7

जाती िै कक िर् धूि के प्रत्येक कण को धुर धुं बना डिों।'[115] किा और संस्कृतत, वाखणज्य और उद्योग र्ें दिे की उन्नतत बुित िो चुकी थी। हदलिह औौक स्तम्भ र्ें ल्जस इस्पात का उपयोग ककया गया िै, उसकी वविेषताएं आज भी संसार के इस्पात उद्योगों के शिए आश्चय मकी वस्तु िै। सम्पवत्त और आनन्द धर्पमरायणता और पूणतमा के ववरोधी निहं ंिैं। यहद उनकी साधना केवि उनके अपने शिए की जाए, तो पर यहद उर्न्ें आत्र्-कलयाण िह ग्रिण करने योग्य िैं। वे ेठीक निहीं; और साऱाल्जक हित के शिए स्वीकार ककया जाए, तो किा ंिैं।

धर् मिदद अनेक अथों की दृल्ष्ट से र्ित्वपूण मिै। यि 'धृ'ृ धातु से (बनाए रखना, धारण करना, पुष्ट करना)[116] बना िै। यिह वि ऱानदण्ड िै, जो ववश्र्व को धारण करता िै, ककसी भी वस्तु का वि र्ूि तत्व, ल्जसके कारण वि वस्तु वि िै। वेदों र्ें इस िदद का प्रयोग धाशर्कमववधधयों के अथ मर्ें ककया गया िै। छान्दोग्य उपतनषद् र्ें धर् मकी तीन िाखाओं (स्कर्यों) का उलिेख ककया गया िै, ल्जनका सम्बन्ध गृिस्थ, तपस्वी, िह्र्चारह के कतव्मयों से िै।117 जब तैवत्तरहय उपतनषद् िर्से धर् मका आचरण118 करने ेको किता िै, तब उसका अशभप्राय जीवन के उस सोपान के कतव्मयों के पािन से िोता िै, ल्जसर्ें कक िर् ववद्यऱान िैं। इस अथ मर्ें 'धर्'म िदद का प्रयोग भगवद्गीता और र्नुस्र्तृत, दोनों र्ें िुआ िै। एक बौद्ध के शिए धर् मबुद्ध और संघ, या सऱाज, के साथ-साथ 'तनरत्न' (तीन रत्न) र्ें से एक िै। पूवर्मीऱांसा के अनुसार धर् मएक वांछनीय वस्तु िै, ल्जसकी वविेषता िै प्रेरणा देना।119 वैिेषक सूत्रों र्ें धर् मकी पररभाषा करते िुए किा गया िै कक ल्जससे आनन्द (अभ्युदय) और परऱानन्द (तनःश्रेयस) की प्राल्प्त िो, वि धर् मिै।120 अपने प्रयोजन के शिए िर् धर् मकी पररभाषा इस प्रकार कर सकतें िैं कक यि चारों वणों के और चारों आश्रर्ों के सदस्यों द्र्वारा जीवन के चार प्रयोजनों (धर्,म अथ,म कार्, र्ोक्ष) के सम्बन्ध र्ें पािन करने ेयोग्य र्नुष्य का सर्ूचा कतव्मय िै। हिंसाऱाल्जक व्यवस्था का सर्वोच्च िक्ष्य यि िै कक र्नुष्यों को आध्याल्त्र्क पूणतमा और पववत्रता की ल्स्थतत तक पिुंचने के शिए प्रशिक्षण हदया जाए, विां इसका एक अत्यावश्यक िक्ष्य, इसके सांसाररक िक्ष्यों के कारण, इस प्रकार की साऱाल्जक दिाओं का ववकास करना भी िै, ल्जनर्ें जन-सर्ुदाय नैततक, भौततक और बौद्धधक जीवन के ऐसे स्तर तक पिुंच सके, जो सबकी भिाई और िाल्न्त के अनुकूि िो; क्योंकक ये दिाएं प्रत्येक व्यल्क्त को अपनेजीवन और अपनी स्वतन्त्रता को अधधकाधधक वास्तववक बनानेर्ें सिायता देती िैं।

धर् मका र्ूि शसद्धान्त िै ऱानवीय आत्र्ा के गौरव को प्राप्त करना, जो भगवान का तनवास स्थान िै। "सब धर्ों का सवस्मवीकृतत र्ूि शसद्धान्त यि ज्ञान िह िै कक परऱात्र्ा प्रत्येक जीववत प्राणी के हृदय र्ें तनवास करता िै।"[121] "सर्झ िो कक धर् मका सार यिह िै और कफर इसके अनुसार आचरण करो; दूसरो के प्रतत वैसा

115 धुर्त्पाधिथर्वंष्र्ु ंरजः।

116 तुिना कील्जए : धारणात् ्धर्शमत्याुिुः धर्ेण ववधृताः प्रजाः ।

117 त्रयो धर्स्मकन्धाः।-2-23

118 धर् मचर 1 - 1:11

119 चोदनािक्षणाथों धर्:म ।

120 यतोभ्युदयतनश्रेयसशसद्धधः स धर्:म ।

121 भगवान् ्र्वासुदेवो हि सवभूमतेष्र्ववल्स्थतः

व्यर्विार र्त करो, जैसा तुर् निहं चािते कक को। तुम्िारेिसाथ करे।"[122] "िर्ें दूसूरों के प्रतत ऐसा कुछ निहंकरना चाहिए, जो यहद िर्ारे ककया जाए, तो िर्ें अवप्रय िगे। यिह धर् मका सार िै; िेष सारा बतार्वम तो स्र्वाथपूमण म इच्छाओं से प्ेरेररत िोता िै।"[123] िर्ें दूसूरों को अपनेजैसा िह सर्झना चाहिए। "जो अपने र्न, र्वचन और कर् मसे तनरन्तर दूसूरों के कलयाण र्ें िगा रिता िै और जो सदा दूसूरों का शर्लन रिता िै ओ जाजशि, र्वि धर् मको ठीक-ठीक सर्झता िै।"[124] सब प्राखणयों के प्रतत र्न, र्वचन और कांद्र्वारा अद्र्वेष, सद्भार्वना और दान, इर्न्िें सबके शिए आर्वश्यक गुण[125] बताया गया िै। स्र्वतंत्रता या र्ुल्क्त अनिुासन द्र्वारा िह िोती िै।126 दूसूरे िददों र्ें, िर्ारे सार्ाल्जक जीर्वन को इस ढंग से चिाया जाना चाहिए, ल्जससे उसके प्रत्येक सदस्य का एक व्यल्क्त के रूप र्ें जीनेका, कार् करने का और जीर्वन र्ें उन्नतत करने का अधधकार प्रभार्वी रूप से स्र्वीकार कर शिया जाए। यि पवर्वल्न की गई गततवर्वधध िै। व्यल्क्त के जीर्वन का सार उसे सार्ाल्जक अनुष्ठानों से परे ते ेजाता िै, िािांकक उसे उन अनुष्ठानों की आर्वश्यकता िै। सार्ाल्जक जीर्वन िर्ारह भवर्वतव्यता र्ें एक गतत िै, अल्न्तर् छोर निहं। इसकी दिा सदा तनार्व और गतत की िह रिती िै। एक इस प्रकार का अवर्वरार् प्रयत्न चिता रिता िै कक ककन्िहं भी दह िुई दिाओंके सम्बन्ध र्ें अल्स्तत्र्व के सार्ान्य स्तर को ल्जतना संभर्व िो, अधधक से अधधक ऊंचा उठाया जाए। हिन्दू ूधर् मिर्ारे सम्र्ुख तनयर्ों और र्वर्वतनयर्ों का एक कायक्रमर् प्रस्तुत करता िै और यि अनुर्तत देता िै कक उनर्ें तनरन्तर पररर्वतनम ककया जा सकता िै। धर् मके तनयर् अर्र र्वचारों के र्ीणिी िरहर की भांतत िैं, और इसशिए उनर्ें पररर्वतनम ककए जा सकतिैं।

एतज्ज्ञानं हिसर्वस्मय र्ूधर्स्मयिाश्र्वतर् ्।

122 शूरूयतां धर्समर्वस्मर्वंशुरुत्र्वा चैर्वार्वधायतमार्, ्

आत्र्नः प्रततकूिातन परेषां न सर्ाचरेत् ्।

तुिना कील्जए:

आपस्तम्ब; आत्र्र्वत् ्सर्वभूमतूातन यः पश्यतत सः पश्यतत ।

123 न तत् ्परस्य सर्ादध्यात् ्प्रततकूिं यदात्र्नः,
एष सार्ाशसको धर्:म कार्ादन्यः प्रर्वततेम ।

124 सर्ेवेषांयः सुहुल्न्नत्यं सर्ेवेषां ंच हिते ेरतः,
कर्णमा र्नसा र्वाचा, स धर् मर्ेवेद जाजिे। िाल्न्तपर्व म261-9

साथ िह तुिना कील्जए,

सर्विमास्त्रर्यी गीता सर्वदेमनर्यो िररः,

सर्वतमीथर्मयी गंगा सर्वधमर्र्मयी दया।

125 अद्रोिः सर्वभूमतेषु कर्णमा र्नसा धगरा,

अनुग्रिश्च दानंच सतां धर्:म सनातनः ।
126 र्ेवेदस्योपतनषद् सत्यं, ं सत्यस्योपतनषद् दर्:,
दर्स्योपतनषन्र्ोक्षः, एतत् ्सर्वानुमिासनर् ्।

साथ िह तुिना कील्जए,

निां िप्तः प्रततिपाशर् ककल्ञ्चत् ्दर् मद्र्वारं ह्यर्ूतृस्यै र्ेवेद्शर्,
गुह्य िह्र् तहददं िर्वीशर् न र्ानुषात् ्श्ेरेष्ठतरं हि ककल्ञ्चत् ्

धर् मके स्रोत

धर् मके स्रोत ये िैं : (1) श्रुतत या र्वेर्व, (2) स्रृतत और स्रृतत को जाननेर्वािों का व्यर्विार, (3) धर्ात्मर्ा िोगों का आचरण और (2) व्यल्क्त का अपना अन्तःकरण।127

र्वेद हिन्दू ूधर् मका र्ूि आधार िै।128 र्वेद के िदद सरि, र्ित्र्वपूण मऔर प्राचीन िैं; ये श्रद्धा और भल्क्त से, र्वर्वश्र्वास और तनश्चय से भरे िुए िैं। उनर्ें र्नुष्य की िाश्र्वत आिाएं और सान्त्र्वनाएं घनीभूत िैं। उन ऋवषयों की गम्भीरता को हृदयंगर् कर पाना भी कहठन िै, ल्जनके िोंठों से र्िपि-र्िपि यि प्राथनमा तनकिी थी, "अर्वास्तवर्वकता से िटाकर र्ुझे र्वास्तवर्वकता की ओर िे चिो; अन्धकार से िटाकर र्ुझेप्रकाि की ओर िे चिो; र्ृत्यु से िटाकर र्ुझे िाश्र्वत जीर्वन की ओर िे चिो।"[129] र्वैहदक सूल्क्तयां अपनी व्यंजना की दृल्ष्ट से अनन्त िैं।"[130] िारहत का कथन िै कक श्रुतत के अन्तगतम र्वेद और तन्त्र दोनों िी िैं।131 हिन्दू ूधर् मके अन्तगतम कुछ सम्प्रदाय ऐसे भी िैं, जो र्वेद को प्रर्ाण निहं र्ानते। र्ेधा-ततधथ किता िै, "इस प्रकार सब र्वर्वदिी सम्प्रदाय, जैसे भोजक, पंचराल्त्नक, तनयन्मथ, अनथर्वमादह, पिुपुत तथा अन्य सम्प्रदाय यि र्ानते िैं कक र्िापुरुषों ने और उन र्वर्वशिष्ट देर्वताओं ने, ल्जन्िेंनिेउन र्तों का प्रर्वतनम ककया, उन र्तों र्ें तनहित सत्य का सीधे प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान प्राप्त ककया िै और उनका र्वर्वचार िै कक धर् मका उद्गर् र्वेद निहं िैं।"[132]

र्वेदों र्ें धर् मका कोई सुव्यर्वल्स्थत र्वर्वर्वरण निहं िै। उनर्ें आदिों की ओर संकेत िैं और कुछ व्यर्विारों का उल्िेख िै। आचरण के उदािरणों से शभन्न, तनयर् और आदेि स्रृततयों और धर्िास्त्रों र्ें प्राप्त िोते िैं; स्रृतत और धर्िास्त्र व्यर्विारतः पयायमर्वाची िी िैं। स्रृतत का िददाथ मउस र्वस्तु की ओर संकेत करता िै, जो र्वेदों के अध्ययन र्ें तनष्णात ऋवषयों को याद रि गई थी। स्रृतत का कोई भी तनयर्, ल्जसके शिए कोई र्वैहदक सूत्र् ढूँढा जा सके, र्वेद की िी भांतत प्रार्ाखणक बन जाता िै। यहद किहं श्रुतत और स्रृतत र्ें र्वर्वरोध िो, तो र्विं श्रुतत को प्रार्ाखणक स्र्वीकार ककया जाएगा।'[133]

---

127 र्ेवेदोऽखखिो धर्ूमिं, स्रृतिीिे च तद्वर्वदार्,
आचारश्चैर्व साधूनां आत्र्नस्तुल्ष्टरेर्व च।

128 शुरुततप्रर्ाणको धर्ःम।- िारहत।

129 असतो र्ा सद् गर्य, तर्सो र्ा ज्योततगमर्य, र्ृत्योर्ा मअर्ृतं गर्य।

130 अनन्ता र्वै र्ेवेदाः ।

131 शुरुततश्च द्वर्वर्वधा, र्वैहदकी ताल्न्त्रकी च। र्नु की टहका र्ें कुल्िूक द्र्वारा उद्धृत, 2-1

132 न र्ेवेदर्ूिर्व धर् म अशभर्न्यन्ते। - र्नु पर टहका, 2-6

133 'िास्त्रदहवपका,' 1-3-4। कुर्ारिि शिखता िै, "क्योंकक ये स्रृततयां र्ानर्वीय रचतयताओं से तनकिी िैं, और र्ेवेदों की भांतत िाश्र्वत निहं िैं, इसशिए उन्िें स्र्वतः प्रर्ाण निहं र्ाना जा सकता। र्नु की स्रृतत या अन्य िोगों की स्रृततयां उनके रचतयताओं के स्र्रण पर आधाररत िैं; और स्र्रण की प्रार्ाखणकता उसके र्ूि स्रोत की सत्यता पर तनभरम िै; पररणार्तः ककसी भी एक स्रृतत को र्ेवेदों की भांतत स्र्वतः प्रर्ाण निहं र्ाना जा सकता। कफर भी, क्योंकक िर् देखते िैं कक र्ेवेदों र्ें तनष्णात प्रततल्ष्ठत पुरुषों की एक अर्वर्वल्च्छन्न परस्परा उन्िें प्रर्ाण र्ानती आई िै, इसशिए िर् उन्िें एकदर् अर्वर्वश्र्वसनीय िि कर

ल्जस ढंग से अनिुाशसत (शिष्ट) िोग आचरण करते िैं, र्वि भी धर् मका एक स्रोत िै।'[134] यि िाआ की जाती िै कक भिे र्नुष्यों का व्यर्विार िास्त्रों के आदेिों के अनुकूि िि िोगा और इसशिए उसे आचरण के शिए पथप्रदिकम र्ाना गया िै। यि आर्वश्यक निीं िै कक 'भिे र्नुष्य अतनर्वायि मरूप से िाह्र्ण िि िों। शर्त्र शर्श्र भिे िूद्रों (सच्छूद्र) के व्यर्विार को प्रार्ाखणक र्ानता िै। र्वशसष्ठ के कथनानुसार उन्िें तनःस्र्वाथ िोना चाहिए।135 स्थानीय प्रथाओं(ररर्वाजों) को प्रार्ाखणक'[136] र्ाना गया और उनका सर्ार्वेि सदाचार र्ें कर शिया गया।

याज्ञर्वलक्य का कथन िै, "यहद कोई बात स्र्तृत-सम्र्त भी िो, पर िोग उसे बुरा सर्झते िैं, तो उसके अनुसार आचरण निीं ंकरना चाहिए।137 बृिस्पतत ने घोषणा की कक "प्रत्येक देि, जातत और कुटुम्ब की धचरकाि से चिी आ रिी प्रथाओं या परम्पराओं को ज्यों का त्यों बनाए रखना चाहिए।"[138] यहद ककन्िीं जाततयों र्ें बिुपतततत्र्व की प्रथा प्रचशित थी, तो हिन्दू िासकों ने उसर्ें िस्तक्षेप निीं ककया। नये जीते िुए देि के र्वर्षय र्ें चचाम करते िुए याज्ञर्वलक्य किता िै, "उस देि र्ें चािे जो भी प्रथाएं, कानून और रहतत-ररर्वाज प्रचशित िों, राजा को चाहिए कक उनका पािन पििे की िी भांतत िोता रिने दे।"[139] परन्तु र्वि प्रथा अनैततक या िोकहित-र्वर्वरोधी न िोनी चाहिए। र्वि सदाचार के अनुकूि िोनी चाहिए। गौतर् का कथन िै कक देिों, जाततयों और कुटुम्बों के आचरण के तनयर्, यहद श्रुतत-र्वर्वरोधी न िों तो, प्रार्ाखणक िैं।"[140] सर्ाज ल्जस र्वस्तु को भी अपना िेता िै, उसे अपनेर्वर्वचार और कर् म के प्रर्ुख आदि मके अनुरूप ढाि िेता िै।

श्रेष्ठ व्यल्क्तयों के व्यर्विार के साथ-साथ 'अच्छे अन्तःकरण' को भी धर् मका एक स्रोत स्र्वीकार ककया गया िै।141 याज्ञर्वलक्य ने उस र्वस्तु का उल्िेख ककया िै, जो अपने-आपको वप्रय िगे और सार्वधान र्वर्वचार से उत्पन्न इच्छा िो।142 यि अनिुाशसत व्यल्क्त का अन्तःकरण िै, ककसी उथिे व्यल्क्त के र्न की र्ौज निीं।

अस्र्वीकृत निीं कर सकते। इसीशिए उनकी र्वर्वश्र्वसनीयता के र्वर्वषय र्ें अतनल्श्चतता का भार्व उत्पन्न िो जाता िै। "- 'तन्त्रर्वाततकम'

134 र्िाभारत र्ें एक श्िोक िै, जो प्रायः उद्धतृ ककया जाता िै:

तकोप्रततष्ठः श्रुतयो र्वर्वशभन्ना नैको र्ुतनयस्मय र्तं ंप्रर्ाणर्,्

धर्मस्य तत्त्र्वंर्व तनहितं ंगुिायांर्िाजनो येन गतः स पन्थाः ।

135 अकायात्र्-1-6

136 आश्र्वायन, 1-7-1; बौधायन, 1 - 5 - 3

137 1-156 2 - 25 31 तुिना कील्जए,

138

देिधर्ान् म ्जाततधर्ान्ं्कुिधर्ाश्मच िाश्र्वतान्,्

पाषाण्डगणधर्ाश्ांच िास्त्रेल्स्र्न् ्उक्तर्वान् ्र्नुः ।

- 'र्नुस्र्तृत, 1-118

139 1-342-343

140 देिजाततकुिधर्ाश्मर्वाम्नायैरर्वर्वरुद्धाः प्रर्ाणर्।्

141 आत्र्संतुल्ष्टः 1 - 77, 2 - 6

142 स्र्वस्य च वप्रयर्ात्र्नः सम्यक् संकल्पजः कार्ो। 2-12; याज्ञर्वलक्य, 1-9

ल्जस भी र्वस्तु की हृदय स्वीकृतत देता'[143] ि◌ो, या ल्जसकी आय मिोग प्रिंसां करते ि◌ों144, र्वि धर् मिै। र्नु ि◌र्े र्वि काय मकरने को किता ि◌ै, ल्जससे आन्तररक आत्र् को (अन्तरात्र्ा को) तृलूप्त ि◌ोती ि◌ो।145 जो बात युल्क्तयुक्त ि◌ो, उसे स्वीकार करना चाहिए, कफर चािे र्वि ककसी बािक ने किह ि◌ो, या ककसी तोते ◌ेने। पर जो बात युल्क्तयुक्त न िो, र्वि चािे ककसी र्वृद्ध ने किह ि◌ो, या स्वयंर्ुतन ि◌ुकुदेर्व ने, उसे अस्वीकार ि◌ह ककया जाना चाहिए।146

संकट के सर्य कतव्मय के तनयर्ों र्े अपर्वाद की भी अनुर्तत थी। आर्वश्यकता ककसी तनयर् को निहं देखती, और प्राण-रक्षा के शिए आपद्धर् मके तनयर्ों के अंतगतम ककसी भी प्रकार का आचरण करने ◌ेकी छूट दह गई िै। र्वश्र्वाशत्र के सार्ने ऐसा अर्वसर आया था, जब उसे प्राण बचाने के शिए कुत्ते का र्ांस चुराना आर्वश्यक ि◌ो गया था और उसनेइस चोरह को यि किकर उधचत ठिराया कक जीर्वर्वत रिना र्रने की अपेक्षा अच्छा ि◌ै। धर्ानुमकिू जीनेके शिए पििे जीर्वर्वत रिना आर्वश्यक ि◌ै।147 श्रुतत सर्वोच्च प्रर्ाण ि◌ै; उसके बाद र्ित्र्व की दृल्ष्ट से स्र्ृतत या र्नुष्य द्र्वारा बना ि◌ह गई परम्परा का स्थान ि◌ै; यि उस सीर्ा तक प्रार्ाखणक ि◌ै, जिांतक यि र्वेद के प्रततकूि निहं; इसे प्रार्ाखणकता र्वेद से ि◌ह प्राप्त ि◌ोती ि◌ै। व्यर्वािर या प्रथाएं (आचार) भी र्वश्र्वसनीय ि◌ैं, यहद बे सुसंस्कृत ि◌ोगों द्र्वारा स्वीकृत ि◌ों। व्यल्क्त का अपना अन्तःकरण भी प्रार्ाखणक ि◌ै।

र्वेदों को ि◌र्ारह सब आर्वश्यकताओं का पििे से ज्ञान निहं ि◌ो सकता था और इसशिए ि◌र्ें उन ि◌ोगों की बुद्धधर्त्ता पर भरोसा करना ि◌ोगा, जो र्वेदों की भार्वना से भिह भांतत पररधचत ि◌ैं। र्वेदों र्े प्रत्येक कलपना ककए जा सकनेयोग्य र्ार्िे के शिए व्यर्वस्था निहं की गई ि◌ै, अवपतु कुछ साधारण शसद्धान्त तनयत कर हदए गए ि◌ैं, ल्जन्िें ि◌र् अपनेर्वर्वेक और र्वचार के अनुसार नये र्ार्िों पर भी ि◌ागू कर सकतेिैं। पररषदों के, या र्वद्र्वानों की सभाओं के तनश्चयों को भी स्वीकार ककया जा सकता ि◌ै, यहद ि◌र्ें यि पक्का र्वश्र्वास ि◌ो कक र्वे तनष्पक्ष ि◌ैं। संहदग्ध और र्वर्वादग्रस्त र्ार्िों के तनणयम भी उन्हिंके द्र्वारा ककए जाते ि◌ैं। र्नु और पारािर ने यि तनयर् बनाया ि◌ै कक जब ि◌ोगों की आदतों र्े र्ित्र्वपूण मपररर्वतनम ककए जाते ि◌ैं, तब पररषद् बि◌ुाई जानी ि◌ह चाहिए। साधारणतया पररषद् र्े सौ बुद्धधर्ान ि◌ाह्र्ण ि◌ोने चाहिएं, परन्तु संकट के सर्य अन्तदृल्मष्टसम्पन्न और ल्जतेल्न्द्रय एक ि◌ाह्र्ण भी पररषद् के रूप र्े काय मकर सकता ि◌ै।148 'स्र्ृततचल्न्द्रका' का र्त ि◌ै कक धाशर्कम

---

143 हृदयेनाभ्यनुज्ञातः । र्नु, 2-1

144 ये आयाःम प्रिंसल्न्त। - र्वश्र्वाशर्त्न

145 4 - 161

146 युल्क्तयुक्तंर्वचो ग्राह्य बािादवप ि◌ुकादवप,

युल्क्तिहनंर्वचस्त्याज्यं ◌र्वृद्धादवप ि◌ुकादवप।

147 जीर्वर्वतंर्णात् ◌श्रे्यो जीर्वन् ◌धर्मर्वाप्नुयात्।◌

148 र्ुनीनार्ात्र्वर्वद्यानां ◌द्र्वजानां यज्ञयाल्जनार्् ◌

र्वेदर्वृतेतेषु स्नातानार्ेकोऽवप पररषद् भर्वेत् ◌! पराशर, 8 - 3

जब र्अद को यर्न का ि◌ासक तनयुक्त ककया गया, तो किा जाता ि◌ै कक पैगम्बर ने उससे पूछा कक उसके सार्नेजो र्ार्िे पेि ि◌ोंगे, उनका फैसिा र्वि ककस तरि करेगा। र्अद नेउत्तर हदया, "र् ◌ैंसब र्ार्िों का फैसिा खुदा की ककताब (कुरान) के अनुसार करूंगा।" "परन्तु यहद खुदा की ककताब र्े उस र्वषय र्े तुम्िारे पथ-प्रदिनम के शिए कुछ न शिखा ि◌ो, तो?" "तब र् ◌ैं

र्नुष्यों द्वारा चिाई गई परम्परा भी वेंदों की भांतत िह प्रार्ाखणक िै।'[149] र्नुक कथन िै कक यहद सशर्ततयां न बिुाई जा सकें, तो एक श्रे्रेष्ठ िाह्र्ण की सम्र्तत भी काफी िै ।'[150] सर्ाज के शिए वर्वधान बनाने का अधधकार केर्वि उन्हिं िोगों को िै, जो अनिुाशसत िों, सर जीवों के प्रतत सहृदय िों, वेंदों और तकम की पद्धततयों र्ें तनष्णात िों, व्यावर्िाररक बुद्धधया (देकिा वर्वेषेज्ञः) िों, और तनष्किंक चररत्र के िों। ऐसे िोग िह राष्र के सचेतन र्न और अन्तःकरण िोतें। सार्ाल्जक प्रर्ाप (स्टैंडड)म सार्ाल्जक वर्वकास की स्वाभावर्वक प्रकक्रया द एकाएक स्वतः निहं ंबन जाते। वे ेउन वैयल्क्तक आत्र्ाओंके, जो सृजर्िनी प्रततभा से सम्पत्र िैं, आध्याल्त्र्क प्रयत्नों के पररणार् िैं। यद्यवप ऐसे िोग सदा अलपसंख्यक रितें, कफर भी सार्ान्य कोहट के र्नुष्यों पर प्रत्यक्ष सीधे ज्ञान देने की पद्धतत द्वारा प्रभार्व निहं डािते, अवपतु एक सार्ाल्जक कर्वायद की पद्धतत के काय मकरते िैं। सार्ान्य िोग यन्त्र की भांतत एक ऐसा वर्वकास कर बैठते िैं, ल्जसे वेंअपने-आप पिि करके निहंकर सकतेथे।

र्ें प्रत्येक प्रसंग र्ें अपने सिह कतव्मय का तनणयम करना िोता िै। आपस्तम्ब का कथन िै। "धर् मऔर अधर् मयि किते निहं ंकफरते कक िर् ये रिें'; न देर्वता, न गन्धर्व मऔर न वपतर िह यि बतातें कक 'यि धर् मिै' और 'यि अधर् मिै'।"[151] िर्ें अपनी तकमबुद्धध का प्रयोग करना िोता िै और परम्परा की यथोधचत व्याख्या करनी िोती िै। िर्ें िास्त्रों को, उनकी संगतत (प्रसंग) को हृदयंगर् ककए बबना, आँख र्ींचकर अनुकरण निहं ंकरना चाहिए।152 श्रे्रेष्ठ िोग ल्जस बात की प्रिंसा करते िैं, र्वि ठीक िै; ल्जसकी वे तनन्दा करते िैं, र्वि गित िै।153 यि बात श्रुतत के इस आदेि के अनुकूि िै कक जिांयि सन्देि उत्पन्न िो जाए कक क्या उधचत िै और क्या अनुधचत, र्विां धर्पमरायण िोगों के वर्वचारों को प्रर्ाण र्ानना चाहिए। शर्ताक्षर का कथन िै, "यहद कोई बात धर् मद्वारा अनुर्त िोने पर भी िोकतनल्न्दत िो, तो उसपर आचरण निहं ंकरना चाहिए, क्योंकक उससे स्वग मका सुख निहं ं शर्िता।154 जिां यि तनश्चय करना कहठन िो कक उधचत कतव्मय क्या िै, र्विांजो व्यल्क्त आहदष्ट (तनधारमरत) कतव्मय का पािन करता िै, उसे पाप निहंिर्ता जब एक बार यि तनश्चय िो जाए कक ठीक काय मयि िै, तब िर्ें उसका पािन करना चाहिए। व्यास िर्ें प्रोत्साहित करता िै कक िर्ें धर् मका पािन करना िह चाहिए, भिे िह उसके

खुदा के पैगम्बर के तनदिनम के अनुसार काय मकरूंगा।" "पर यहद तनदिनम भी न िों, तो?" "तब र्ैंअपने वर्वर्वेक के अनुसार काय मकरने का पान करूंगा।" - इकबाि, 'हद ररकंस्रक्िन ऑफ रिहजस थॉट इन इस्िार्, (1934), पृष्ठ 141

149 सर्यश्चावप साधूनांप्रर्ाण र्वेदर्वद् भर्वेत्।्

150 धर्ज्ञम: सर्य: प्रर्ाणर्।्

151 न धर्ाधमर्ाम चरत आर्वां ंस्व इतत; न देर्वगन्धर्व: न वपतर आचक्षते अयं धर्ो अयर् ्अधर् मइतत।

152 तिुना कील्जए,

"केर्वि ंिास्त्रर्ाधश्रत्य न कतव्मयो वर्वतनणयम:,

युल्क्तहने वर्वचारे तु धर्िमातन: प्रजायते।े"- बृिस्पतत

आष मधर्ोपदिे च र्वेदिास्त्रावर्वरोधधना,

देखखए श्री के० र्वी० रंगस्र्वार्ी आयंगर शिखखत 'राजधर्'म (1941), पृष्ठ 114

यस्तकेंणानुसन्धत्ते स धर् मर्वेद नेतर:। र्नु, 12-106

153 यर् ्आया:म कक्रयर्ाण प्रिंसल्न्त स धर्,म य ेगिमन्तेसोऽधर्:म ।

154 1-3-4

 शिए िर्ें अपनी सर्स्त सांसाररक इच्छाओंका बशिदान क्यों न करना पड़े, े चािे उसके कारण िर्ें

ककतने िह

भीषण कष्टों और दरररद्रता का सार्ना क्यों न करना पड़े, े और चािे उसर्ें प्राण जानेतक का भय क्यों न िो।155

भतृमरर किता िै, "धर्पमरायण व्यल्क्त न्याय के पथ से कभी वर्वचशित निहं ंिोते, चािे दुतुनयादारह की दृल्ष्ट से तिकुि िोग उनकी प्रिंसा करें या तनन्दा करें, चािे उन्िें सम्पवत्त शर्िती िो, या तछनती िो, चािे तुरन्त र्ृत्युिोती िै, या दहघ मजीर्वन प्राप्त िोता िो।"[156]

धर् मके र्वे तनयर्, ल्जनका उलिंघन करने से कानूनी कारमर्वाई करना आर्वश्यक िोता िै, व्यर्विार या र्वास्तवर्वक वर्वधान िकिातेिैं। हिन्दू ूवर्वधानिास्त्री नैततक शिक्षाओं और र्वैधातनक तनयर्ों र्ें र्भेद करते िैं; एक िैं धाशर्कम और नैततक पािन के तनयर् (आचार) और प्रायल्श्चत करनेके तनयर् (प्रायल्श्चत्त); और दूसरे िैं सकारात्र्क वर्वधान के तनयर् (व्यर्विार)। याज्ञर्वलक्य- स्र्ृतत र्ें तीन अध्याय िैं : आचार, व्यर्विार और प्रायल्श्चत्त। व्यर्विार या दहर्वानी कानून- अधवमर्वधान - का सम्बन्ध वर्वर्वाि, पुत्र गोद िेने, बंटर्वारे, और उत्तराधधकार से िै। यि पिपिे से चिह आ रिह प्रथाओंपर आधाररत िै। बृिस्पतत का कथन िै कक चार प्रकार के वर्वधान िैं, ल्जनका प्रबन्ध िासकों को करना िोता िै और संहदग्ध र्ार्िों का तनणयम इन वर्वधानों के अनुसार िह िोना चाहिए; ये वर्वधान िैं : धर् मया नैततक वर्वधान, व्यर्विार या दहर्वानी कानून (अथवमर्वधान), चररत्र या प्रथाएं और राजिासन या राजा के अध्यादेि।"[157] औधचत्य और सार्ान्य बुद्धध पर आधाररत नये बनाए गए र्वैधातनक तनयर् भी प्रार्ाखणक िोतेिैं और र्वे पिपिे से वर्वद्यर्ान कानूनों और प्रथाओंका अर्वक्रर्ण (िांघ जाना) करते िैं। र्ि वर्वधानांग द्र्वारा नये वर्वधान बनर्वाकर हिन्दू ूवर्वधान के तनयर्ों को सर्ाप्त कर सकतेिैं या उनर्ें संिोधन कर सकते िैं। जातत अयोग्यता अपनयन अधधतनयर् (1850 का 21र्वााँ), हिन्दू ूवर्वधान पुनवर्वर्वाि अधधतनयर् (1856 का 15र्वााँ), वर्विेष वर्वर्वाि अधधतनयर् (1872 का 3रा), ल्जसर्ें 1923 र्ें एक संिोधन भी िुआ, ल्जसके द्र्वारा भारतीय तिाक अधधतनयर् की ितों के अनुसार शसवर्वि वर्वर्वाि की व्यर्वस्था की गई िै, आय मवर्वर्वाि र्वैधीकरण अधधतनयर् (1937 का 19र्वााँ), हिन्दू ूल्स्त्रयों को सम्पवत्त का अधधकार अधधतनयर् (1937 का 18र्वााँ), ल्जसके द्र्वारा वर्वधर्वाओं को र्ृत पतत की सम्पवत्त र्ें, उसके पुत्र के रिते भी, उत्तराधधकार का िक हदया गया िै, इन सबर्ें धर् म या वर्वधान की िह भांतत वर्ववर्वि कर सकने का बि िै। गत िताददह की आठर्वीं िताददह के उत्तराध मर्ें श्री र्ेन ने, ल्जसकी 'हिन्दू िॉ एण्ड यूज़ेज़' पुस्तक अपने वर्वषय की प्रार्ाखणक पुस्तक बन गई िै, शिखा था कक हिन्दू ूवर्वधान रुद्ध प्रगतत की एक ऐसी ल्स्थतत र्ें िै, ल्जसर्ें केर्वि र्ृतकों की सर्ाधधयों र्ें िे आनेर्वािह ध्र्वतनयां िह सुनी जाती िैं, अन्य कोई निहं। यद्यवप वर्वधान-तनर्ाणम द्र्वारा तथा न्यायियों के तनणयमों के आधार पर बनेवर्वधान (केस

155 न जातु कार्ात् ्न भयात् ्न िोभात् ्
धर् मत्यजेत् ्जीवर्वतस्यावप िेतोः ।

156 तनन्दन्तु नीतततनपुणा यहद र्वा स्तुर्वन्तु
िक्ष्र्ीः सर्ावर्वितु गच्छतु र्वा यथेष्टर्, ्
अद्यैर्व र्वा र्रणर्स्तु युगान्तरे र्वा
न्याय्यात्पथः प्रवर्वचिल्न्त पदं न धीराः।

157 2-18

ाा) द्र्वारा कुछ थोड़े–से पररर्वतनम अर्वश्य ि्ुए ि्ैं, कफर भी श्री र्ेन का कथन आज भी बिुत कुछ सत्य ि्ै। जब ि्र् हिन्दू ्ूवर्वधध-वर्वधान के न्यायोधचत शसद्धान्तों की ओर ध्यान देते ि्ैं, तो आधुतनक दिाओंर्ें उनके प्रयोग र्ें कुछ र्वैधातनक सुधारों की आर्वश्यकता प्रतीत ि्ोती ि्ै। इन सुधारों को खण्डिः निहं, अवपतु एक सुव्यर्वल्स्थत रूप से ककया जाना चाहिए।

पररर्वतनम के शसद्धान्त

ककसी भी जीवर्वत सर्ाज र्ें तनरन्तर बने रिने ्की ि्ल्क्त और पररर्वतनम की ि्ल्क्त, दोनों ि्ह ि्ोनी चाहिएं। ककसी असभ्य सर्ाज र्ें एक पीढह से ि्ेकर दूसूरह पीढह तक ि्ायद ि्ह कोई प्रगतत ि्ोती ि्ो। पररर्वतनम को बिुत सन्दिे की दृल्ष्ट से देखा जाता ि्ै और सारह र्ानर्वीय ऊजाएंम ल्स्थतत को यथापूर्व मबनाए रखनेपर केल्न्द्रत रिती ि्ैं। पर ककसी सभ्य सर्ाज र्ें प्रगतत और पररर्वतनम ि्ह उसकी गततवर्वधध की जान ि्ोते ि्ैं। सर्ाज के शिए अन्य कोई र्वस्तु इतनी ि्ातनकारक निहं ्ि्ै, ल्जतना कक तघसीवपटह वर्वधधयों से और पुरानी पड़ गई आदतों से धचपटे रिना, जो कक केर्वि जड़ता के कारण बची चिह आती ि्ैं। हिन्दू ्ूवर्वचारधारा र्ें अत्यार्वश्यक पररर्वतनमों के शिए स्थान रखा गया ि्ै। सार्ाल्जक आनुर्वंशिकता र्ें कोई उग्र व्याघात न पड़ना चाहिए, कफर भी नये दबार्वों, अन्तवर्वरमोधों और गड़बड़ों का तो सार्ना करना ि्ह ि्ोगा और उनपर वर्वजय पानी ि्ोगी। यि ठीक ि्ै कक आत्र्ा के सत्य सनातन ि्ैं, पर तनयर् युग-युग र्ें बदिते रिर्तेिं।'[158] ि्र्ारह ि्ाशित संस्थाएं नष्ट ि्ो जाती ि्ैं। र्वे अपने सर्य र्ें धूर्धार् से रिती ि्ैं और उसके बाद सर्ाप्त ि्ो जाती ि्ैं। र्वेकिा की उपज ि्ोती ि्ैं और किा का ि्ह ग्रास बन जाती ि्ैं। परन्तु ि्र् धर् मको इन संस्थाओंके ककसी भी सरिू के साथ एक या अशभन्न निहं सझ्ज सकते। यि इसशिए बना रिता ि्ै, क्योंकक इसकी जड़ें र्ानर्वीय प्रकृतत र्ें ि्ैं और यि अपनेककसी भी ऐततिाशसक रूत मरूप के सर्ाप्त ि्ो जानेके बाद भी बचा रिेगा। धर् मकी पद्धतत परहक्षणात्र्क पररर्वतनम की ि्ै। सब संस्थाएं परहक्षण ि्ैं, यिां ्तक कक सम्पूण मजीर्वन भी परहक्षण ि्ह ि्ै। वर्वधान तनर्ातमा अपने परर्वेि (आसपास की पररल्स्थततयों) से, यिां ्तक कक जब र्वे उससे ऊपर उठनेकी कोशिि भी कर रिे ि्ोर्तेिं, तब भी बंधे-से रिर्तेिं। वर्वधानों और संस्थाओं ्र्ें पवर्वत्नता या तनष्किंकता की कोई बात निहं ्ि्ै। 'परािर सूतृत' र्ें किा गया ि्ै कक सतयुग, त्ेता, द्र्वापर और कशियुग, इन चार युगों र्ें क्रर्िः र्नु, गौतर्, ि्ंख-शिखखत, और परािर के आदिे सबसे अधधक प्रार्ाखणक र्ानेजाने चाहिए। । एक युग के वर्वश्र्वासों और प्रथाओंको ि्र् दूसूरे युगों र्ें स्थानान्तररत निहं ्कर सकते। सार्ाल्जक सम्बन्धों के वर्वषय र्ें नैततक धारणाएं परर् निहं ्ि्ैं, अवपतुवर्वशभन्न प्रकार के सर्ाजों और दिाओं ्के सापेक्ष ि्ैं। यद्यवप धर् मदिे-किा-तनरपेक्ष ि्ैं, परन्तु इसकी कोई भी अन्तर्वस्मतु परर् और किाातीत निहं ्ि्ै। नैततकता र्ें केर्वि एक ि्ह र्वस्तु ि्ाश्र्वत ि्ै और र्वि ि्ै र्नुष्य की उत्कृष्टतर ि्ोतेजानेकी अशभिाषा। परन्तु प्रत्येक वर्वशिष्ठ ल्स्थतत र्ें यि 'उत्कृष्टतर' क्या ि्ोगा, इसका तनधारमण किा और पररल्स्थततयां करती ि्ैं। ि्र् सार्ाल्जक रुहढयों को, उनके साथ जुड़ी सुतनहदमष्ट पररल्स्थततयों को ध्यान र्ें रखे बबना, ऊंचा उठाकर दिे-किा-तनरपेक्ष तनयर्ों का आसन निहंदे सकते। कोई भी ऐसा सुतनल्श्चत र्ानर्वीय काय मनिहं ्ि्ै, ल्जसे तकमसंगत रूप से,

[158] परािर , 1-33, युगरूपानुसारतः 1-22, देखखए र्नु 1-85

ल्जन पररल्स्थततयों र्ें र्वि ककया गया िै, उनका बबिकुि वर्वचार ककए बबना, पूणतमया सिह या पूणतमया गित किा जा सके। आचरण के वर्वशभन्न प्रकार सभ्यता के वर्वशभन्न सोपानों र्ें इस आधार पर अच्छे या बुरे र्ानेजाते िैं कक वे र्ानर्वीय आनन्द र्ें वृद्धधध करते िैं या बाधा डािते िैं। हिन्दू िास्त्रकार न तो स्वप्नदी िह थे और न यथाथर्वमादह िह। उनके पास आदि मथे,े ककन्तु वे आदि मअव्यविार्य मनिहंथे। वे ेइस बात को स्वीकार करते थे ेकक सर्ाज एक िनैः िनैः िोने र्वािे उन्नतत िै। र्वस्तुएं र जाती िैं और उन्िें िटाकर रास्ते को साफ कर देना िोता िै। अर्र किातीत सत्य अपने-आपको जीर्वन की धचर- आर्वतनिमी नर्वीनता र्ें प्रकट करते िैं। वर्वज्ञानेश्र्वर का, यद्यवप र्वि रूहढर्वादह वर्वधधज्ञ (ज्यूररस्ट) िै, कथन िै कक सर्ाज को अधधकार िै कक र्वि अनुपयुक्त कानूनों को अस्वीकृत कर दे, भिे िह वे िास्त्रानुर्त भी क्यों न िों। र्वि गो-बशि और गो-र्ांस-भक्षण का उदिारण देता िै, जो ककसी सर्य र्ान्य थे,े पर उसके सर्य र्ें सदोष र्ानकर अस्वीकृत कर हदये गए थे। इसी प्रकार अतीत र्ें तनयोग की प्रथा पूणतमया वैधै थी, परन्तुअब र्वि अर्वैध र्ानी जाती िै। सर्य की आर्वश्यकताओं को देखकर कानून बनाए जाते िैं और खत्र् भी कर हदए जाते िैं। जो िोग हिन्दू िास्त्रों के भाष्यकारों के काय मसे पररधचत िैं, उन्िें र्ािूर् िै कक उन भाष्यकारों ने जो पररर्वतनम ककए, वे ककतने ेर्ित्त्वपूण मथे। िासकों ने भी, जो पल्ण्डतों की सिायता से कानून का प्रबन्ध चिाते थे,े सर्ाज की आर्वश्यकताओं को पिचाना और उनके अनुसार कानूनों र्ें पररर्वतनम ककए। नीतत वर्वज्ञान और वर्वधान सार्ाल्जक वर्वकास की ककन्िींवर्वशिष्ट अर्वस्थाओं के वर्वचारों और रुधचयों के प्रततबबम्ब िोतिैं और ज्यों-ज्यों वे धर् मके साथ सम्बद्ध िोकर एक खास तरि की पवर्वत्नता प्राप्त कर िेतेिैं, तो वे पररर्वतनम के प्रतत अत्यधधक प्रततरोधिी िो जाते िैं। सार्ाल्जक िचक हिन्दू ूधर् मकी र्ुख्य वर्विेषता रिह िै। सनातन धर् मको र्ानने ेका अथ मल्स्थर खड़ा िो जाना निहं िै। इसका अथ मिै कक उसके अत्यन्त र्ित्त्वपूण मशसद्धान्तों को ग्रिण कर शिया जाए, और उनका आधुतनक जीर्वन र्ें प्रयोग ककया जाए। सब सच्ची उन्नततयों र्ें पररर्वतनम र्ें भी एकता सुरक्षक्षत बनी रिती िै। जब बीज पौधा बनता िै और जीर्वाणु ुपूरा पुष्ट िशिु ु बनता िै, तब उनर्ें अवर्वल्च्छन्न तनरन्तरता बनी रिती िै। जब पररर्वतनम िो भी रिे िोतिैं, तो वे पररर्वतनम प्रतीत निहं ंिोते, क्योंकक र्वििंएक बनाए रखनेर्वािह एक िल्क्त रिती िै, जो नई सार्ग्री को शर्िती और तनयंततत रखती िै। 'छान्दोग्य उपतनषद्' र्ें वपता न्यग्रोध (र्वट वृकूष) वृकूष के उदिारण से 'यथाथ'म (र्वास्तवर्वक) के सकक्रय स्वरूप को स्पष्ट करता िै। "र्विांसे न्यग्रोध वृकूष का फि िे आओ।" "यि िै आया िंूं, तात।" "इसे फाड़ दो।" "फाड़ हदया, तात ।" "इसर्ें क्या देख पातिो?" "कुछ भी निहं,ं तात।" वपता ने किा, "र्वत्स, ल्जस सूक्ष्र् तत्त्व को तुर् इसर्ें निहंदेख पातेउसी तत्त्व से यि र्विािं न्यग्रोध वृकूष खड़ा िै।'[159] वृकूष का तत्त्व उस अदृश्य, ककन्तु सकक्रय िल्क्त र्ें िै, ल्जसके अभार्व र्ें वृकूष र्ुरझा जाएगा और र जाएगा। यहद धर् मके वृकूष को सुरक्षक्षत रखना िो, तो िर्ें चाहिए कक िर् इस अिक्ष्य िल्क्त को जीर्वन की अधधकाधधक बढती िुई अशभव्यल्क्तयों को व्यर्वल्स्थत करने ेऔर बनाए रखने दें। यहद िर्ें अपनी सार्ाल्जक व्यर्वस्था को तछन्न-शभन्न निहं िोनेदेना िै, यहद िर्ें अपने सार्ाल्जक वर्वचार को असंगत या अंड-बंड निहं ंबनने ेदेना िै, तो िर्ें उन बाह्य अनुभर्वों को, जो िर् पर अधधकाधधक आ-आकर पड़ रिे िैं, तनयंबत्रत करना िोगा और उन्िें साथकम बनाना िोगा। धर् मके शसद्धान्तों को, र्ान्यताओं के र्ानदंडों को नये अनुभर्वों के दबार्व र्ें और उनके बाद भी बनाए रखना िोगा। केर्वि तभी िर्ारे

159 .6-10

शिए संतुशित और सर्ग्र सार्ाल्जक प्रगतत कर पाना सम्भर्व िोगा। यहद िर् बदिती िुई दिाओं र्ें भी उत्तराधधकार र्ें प्राप्त संहिताओंसे िह धचपटे रिंगे, तो उसका पररणार् यहद वर्वनाि निहं, तो अल्स्थरता अर्वश्य िोगा। आज िर्ें पररर्वतनम करनेचाहिएं और हिन्दू ूधर् मकी अन्तर्वस्मतुको, आधुतनक दिाओंसे सुसंगत बना देना चाहिए। हिन्दू ूसर्ाज र्ें नई िल्क्तयों का प्रर्वेि, एक कृवष प्रधान दे ि का औद्योधगकरण, वर्विेषाधधकारों और गुणों का पृथक्करण, हिन्दू ूसर्ाज र्ें अहिन्दुओं का प्रर्वेि, और वर्विर्वाि तथा धर्-मपररर्वतनम द्र्वारा जाततयों का शर्श्रण, ल्स्त्रयों का उद्धार (कष्ट से र्ुल्क्त), ये कुछ ऐसे प्रश्न िैं, ल्जनके सम्बन्ध र्ें उदार भार्वना के साथ वर्वचार ककया जाना चाहिए। र्वैहदक युग र्ें आय-महिन्दुओंसे किा गया था कक र्वे अनाय मभारतीयों, द्रवर्वड़ों, आन्रों और पुशिन्दों को सार्ाल्जक र्ान्यता दें। 'ऐतरेय िाह्मण"[160] र्ें उल्लेख िै कक आन्र वर्वश्र्वाशर्त्र की सन्तान थे। उसने स्पष्ट रूप से घोषणा की कक आन्र आयो के सर्कक्ष िैं। पुराणों र्ें शिखा िै कक वर्वश्र्वाशर्त्र ने एक नई सृल्ष्ट रची थी। र्वेदों से िर्ें पता चिता िै कक व्रात्यस्तोर् यज्ञ'[161] करनेके बाद व्रात्यों को आयों र्ें सल्म्र्शित ककया जा सकता था। बारि पीहढयों के बाद भी उनकी िुद्धध के शिए व्यर्वस्था की गई िै। िर्ें पता निहं कक ये व्रात्य िोग कौन थे।162 र्वे कोई एक अिग सर्ाज थे,े या केर्वि उच्च र्वणों के र्वेि सदस्य थे,े जो अपनेआहदष्ट कतव्मयों का पािन करने र्ें चूक जाते थे,े इस वर्वषय र्ें केर्वि अनुर्ान िह ककया जा सकता िै। अधधक िोकवप्रय र्त यि िै कक र्वे यूनानी (यर्वन) और असभ्य (र्िेच्छ) थे। यूनानी और सीधथयन िोगों ने हिन्दू ूधर् मको स्र्वीकार कर शिया था और नर्वधर्-मदहक्षक्षतों का-सा उत्साि प्रदाशितम ककया था। एक यूनानी उपराजदूत िहशियोडोरस वर्वष्णु का भक्त (भागर्वत) िो गया था और उसनेएक र्वैष्णर्व र्ल्न्दर र्ें एक स्तम्भ (गरुड़ध्र्वज) खड़ा करर्वाया था।163 िूण भी वर्वष्णु के उपासक बन गए थे। अनेक वर्वदेिी आक्रर्णकारह यिां ंक्षशिय बनकर रिने िगे। जब र्ुशसषा के की वर्वजयों का कारण हिन्दू ूनर-नाररयों का सार्ूहिक रूप से धर्-मपररर्वतनम िोने िगा, तब र्ान सूतृत' ने, जो ईस्र्वी सन् ्की आठर्वीं ितादद्ह के पश्चात् ्ककसी सर्य शसन्ध र्ें शिखी गई, उन्िें कफर हिन्दू ूधर् मर्ें दहक्षक्षत कर िेनेको उधचत ठिराया।164 जो िोग युद्ध र्ें कैदह बना शिए गए थे ेया ल्जनका धर्-मपररर्वतनम कर हदया गया था या ल्जनका नये धर् मर्विाह ल्स्त्रयों से सम्बन्ध िो गया था, उन सबको र्वशसष्ठ, अवत्त और परिर के र्तानुसार िुद्धध-संस्कार करके कफर र्वापस हिन्दु ुधर् मर्ें शिया जा सकता था। ल्जन ल्स्त्रयों का अपिरण ककया गया िो और अपिरण की अर्वधध र्ें ल्जन्िें गभ मरि गया िो, उनके सम्बन्ध र्ें देर्वि का र्त िै कक शििु ुके जन्र् के बाद उन्िें

---

160 7-18

161 कात्यायन 22-4, 1-28

162 िंकर का कथन िै, "प्रथर्जर्वत् ्अन्यस्य संस्कतुरमभार्वात् ्असंस्कृतः व्रात्यः; त्रेर्वे स्र्वभार्वतः एर्व िूद्र इत्यशभप्रायः ।"

163 इस शििािेख पर शिखा िै, "देर्वाधधदेर्व र्वासुदेर्व के इस गरुड़ध्र्वज का तनर्ाणम, तक्षशिार्वासी, डडयोन के पुन, परर् र्वैष्णर्व िहशियोडोरस ने कराया, जो र्िान राजा पेंहटयाल्लसडस का यूनानी राजदूत बनकर िरणागत रक्षक राजा कािीपुत्र भागभद्र के यिां आया था; राजा कािीपुन उस सर्य अपने राज्यकाि के चौदिर्वें र्वष मर्ें सुख और सर्ृद्धध के साथ िासन कर रिा था।"

164 शसन्धुतीरे सुखासीनं देर्वि र्ुतनसत्तर्् ्
सर्ेत्य र्ुनयः सर्वे इदं र्वचनर्ब्रुर्वन् ्
भगर्वन् ्र्िेच्छनीता हि कथं िुद्धधर्र्वाप्नुयुः ।

ुद्धि करके कफर ग्रिण कर शिया जाना चाहिए; परन्तु ग्शिु को र्ाता से अिग कर हदया जाना चाहिए, ल्जससे जाततयों का घपिा (र्वणसंमकर) न िोने पाए। रूप गोस्र्वार्ी और सनातन गोस्र्वार्ी र्ुसिर्ान थे, जो चैतन्य के शिष्य बन गए थे; े उन्िोंने र्वैष्णब धर् मकी चैतन्य-पूजा-पद्धतत पर र्ित्र्वपूण मग्रंथ शिखे। किा जाता िै कक शिर्वाजी नेअपनेएक सेनापतत को, ल्जसे बिपूर्वकम र्ुसिर्ान बना शिया गया था, और जो दस सिा तक अपनी र्ुसिर्ान पत्नी के साथ अफगातनस्तान र्ें रिा था, िुद्धध करके कफर हिन्दू ूबना शिया था। िाि िी र्ें र्द्रास उच्च न्यायािय र्ें एक र्ार्िे र्ें यि तनणयम हदया गया था कक ईसाई धर् मको छोड़कर हिन्दू ूबना िुआ व्यल्क्त, यहद उसकी जातत र्वािे उसे हिन्दू ूर्ानते िैं तो, हिन्दू िी र्ाना जाएगा, भिे िी औपचाररक रहतत से पुनः धर्पमरररर्वतनम की र्वर्वधध सम्पन्न न भी िुई िो।165

नई दिाओंका सार्ना करने ेके शिए नई स्र्ृततयां ंबनीं; और न तो र्वेदों र्ें और न अतीत की प्रथाओंर्ें हि कोई ऐसी बात िै, ल्जसके कारण िर्ें यि अपेक्षा की जाती िो कक िर् उन्हिं ंपुरानी बातों से धचपटे रिें, जो कभी की जीण-मिीण िो चुकी िैं। र्ेधाततधथ किता िै, "यहद आज भी कोई ऐसा व्यल्क्त िोता, ल्जसर्ें उपयुक्मत योग्यताएं िोतीं, तो आगे आने ेर्वािी पीहढयों के शिए उसके र्वचन भी र्नु तथा अन्य स्र्ृततकारों के र्वचनों की िी भांतत प्रार्ाखणक िोते।"[166] ल्जन िोगों को सत्य का आन्तररक ज्ञान िै, र्वे िी नये अनुभर्वों को संभािा पाने र्ें और धर् मकी धारणा करने की िल्क्त को कफर नया कर पाने र्ें सर्थ िोंगे। यहद र्वे पररर्वतनम की स्र्वीकृतत देते िैं, तो सुरक्षा की भार्वना को धक्का निहं ंपिुंचेगा। उस दसा र्ें सुधार बबना ककसी प्रततकक्रया के आगे बढ सकेगा। भर्वर्वष्य र्ें तैयार की गई स्र्ृततयां, ं जिांतक र्वे र्वेदों र्ें प्रकट की गई भार्वना के र्ूि सत्यों पर आधाररत िोंगी, पूरह तरि प्रार्ाखणक र्ानी जाएंगी। काशिदास के िददों र्ें, कोई र्वस्तु केर्वि इसीशिए अच्छी निहं िो जाती कक र्वि प्राचीन िै और न कोई नई रचना केर्वि इसशिए बुरह सर्झी जा सकती िै कक र्वि नई िै।167

इस भाग्य-तनणायमक र्ित्र्वपूण मघड़ी र्ें, जबकक िर्ारा सर्ाज एक र्ागिमहन गिन र्वन बन गया िै, िर्ें अपनेपूर्वजमों के स्र्वरों के साथ-साथ नई ध्र्वतनयों को भी सुनना चाहिए। कोई भी प्रथा सब काि ों के सब र्नुष्यों के शिए िाभदायक निहं िो सकती।168 यहद िर् अतीत के तनयर्ों से बिुत अधधक धचपटे रिेंगे और र्ृतों का जीर्वर्वत धर् मजीर्वर्वतों का र्ृत धर् मबन जाएगा, तो सभ्यता र्र कर रिेगी। िर्ें बुद्धध संगत पररर्वतनम करने िी िोंगे।169

---

165 श्री न्यायपतत कृष्णस्र्वार्ी आयंगर ने किा िै कक ककसी जातत की रचना और कलयाण पर प्रभार्व डािनेर्वािे र्वर्वषयों र्ें स्र्वयं ंर्वि जातत िी सर्वोच्च तनणायमक िै; और यहद जातत नेस्र्वयं ंिी पुरानी धारणाओंऔर प्रथाओं ंको त्याग देना उधचत सर्झा िै और नई धारणाओं ंऔर प्रथाओंको अपना शिया िै, जो ककसी भी तरि नैततकता के र्वर्वरुद्ध निहं ंिैं, तो इस प्रकार की नई प्रथाओं का सम्र्ान ककया जाना चाहिए। देखखए, इंडडयन िोिि ररफॉर्म, 19 अगस्त, 1939

166 र्नु पर र्ेधाततधथ की टहका, 2-6

167 पुराणशर्त्येर्व न साधु सर्वं, ं न चावप काव्ये नर्वशर्त्यर्वद्यर्। ्

168 न हि सर्वहमितः कल्श्चत् ्आचारः सम्प्रर्वततेम। े िाल्न्तपर्व,म 259-17

169 तुिना कील्जए, र्िाभारत :

तस्र्ात् ्कौन्तेय र्वर्वदुषा धर्ाधमर्वमर्वतनश्चये

बुद्धधर्ास्थाय िोकेल्स्र्न् ्र्वततततमव्यं ंकृतात्र्ना।

यहद कोई िरहर या संगठन अपनेरि् को बिार तनकिाने की िल्क्त खो बैठता ि ै, तो नष्ट िो जाता ि ै। स्वतन्त्रता केर्वि जीवर्वतों की िह र्वस्तु ि ै। स्वतन्त्रता की भार्वना, अतीत का तनराकरण निहं ंकरती, अवपतु उसके र्वायदों को पूरा करती ि ै। जो कुछ सर्वोत्तर् ि ै, उसको यि सुरक्षक्षत रखती ि ै, और उसे एक नई जीर्वनी िल्क्त द्र्वारा रूपान्तररत कर देती ि ै। यहद पुरानी प्रथाओंको िह अल्न्तर् र्ान शिया जाए, तो र्वे ेसजीर्व भार्वना के शिए बेडड़यां बन जाती िैं। सार्ाल्जक स्र्वतन्त्रता की कीर्त केर्वि िाश्र्वत जागरुकता िह निहं,ं अवपतु सृजृनिनी भार्वना का सतत पुननर्वमीकरण, िाश्र्वत िपि (अगुर्वाई), और अर्वर्वरार् सकक्रयता भी िैं। जीर्वन यहद तनरन्तर अपने-आपको नये-नये रूपों र्ें ढािने के शिए प्रयत्निी न िो, तो र्वि जीर्वन िह निहं ि ै। यहद िर् जो कुछ िर्ारे पूर्वजम कर गए ि ैं, उतने से िह सन्तुष्ट िोकर बैठ रिेंगे, तो अपक्षय (िास) प्रारम्भ िो जाएगा। यहद िर् जड़ता और आिस्य के कारण, ल्जन्र्ें र्ध्ययुगीन ईसाइयों ने घातक पापों र्ें धगना था, अपनी संस्कृतत की परम्परा को उन्नत करने ेके कहठन काय मसे बचनेकी कोशिि करेंगे, तो उससे िर्ारह सभ्यता को िातन उठानी पड़ेगी। वपछिे कुछ सर्य से र्वर्वशभन्न भागों र्ें किहं ंकुछ कर् और किहं ंकुछ अधधक, भार्वना की सार्ान्य थकान के अिुभ धचह्न हदखाई पड़े े ि ैं। र्वे िोग भी, जो तकम को अधधक गौरर्वपूण मबताते िैं, आचरण प्रथा के आदेिों के अनुसार िह करते ि ैं। िर् कफर र्वैहदक युग की परम्पराओं को प्रारम्भ निहं ंकर सकते, क्योंकक र्वैसा करनेका अथ मइततिास के तकम से इनकार करना िोगा। कफर, िर् बबिकुि नये शसरे से इस प्रकार तो िुरू निहं कर सकतेकक जैसे भारत का कोई इततिास िह निहं ंरिा और र्ानो इसके तनर्वासी केर्वि र्वर्वचार करने-भर से अपने स्र्वभार्व को बदि सकते ि ैं। संभार्वनाएं र्वास्तवर्वकता की प्रकृतत के आधार पर हटकी िोनी चाहिए। सभ्यताओं को उनके अपनेअनुभर्वों की पद्धतत से िह जीना चाहिए। व्यल्क्तयों की िह भांतत राष्र भी दूसूरों से अनुभर्व उधार निहं िे सकते। दूसूरे िोग िर्ें प्रकाि हदखा सकते िैं, परन्तु काय मकरने ेकी दिाएं िर्ें अपनेइततिास से िह प्राप्त िोंगी। स्थायी क्राल्न्तयां ंकेर्वि र्वे िह िोती ि ैं,

[illegible]तयां तो र्ें दे दह जाती ि ैं। जो संस्कृतत र्तृ-सी दहख पड़ती ि ै, र्वि भी जीर्वन से भर उठ सकती ि ै, यहद उसर्ें दो- तीन ऐसे र्िान सदस्य िों, जो एक नई सजीर्व परम्परा का श्रीगणेि कर सकें। संस्कृतत परम्परा ि ै और परम्परा सूर्तृ ि ै। इस सूर्तृ का स्थातयत्र्व सृजृनिनी व्यल्क्तयों के तनरन्तर आवर्वभार्वम पर तनभरम ि ै। जब कोई संस्कृतत सुतनहदमष्ट और ठोस िो जाती ि ै, तो र्वि स्र्वाभावर्वक र्ृत्यु र्रती ि ै। पर जब उसकी परम्परा र्वर्वल्च्छन्न िो जाती ि ै, तो र्वि असार्तयक र्तृ्यु की शिकार िो जाती ि ै।

प्रत्येक सर्ाज के इततिास र्ें एक ऐसा सर्य आता ि ै, जब, यहद उस सर्ाज को एक सजीर्व िल्क्त के रूप र्ें अपना अल्स्तत्र्व बनाए रखना िो और अपनी प्रगतत को जारह रखना िो तो, सार्ाल्जक व्यर्वस्था र्ें कुछ पररर्वतनम करना आर्वश्यक िो जाता ि ै। यहद र्वि प्रयत्न करनेर्ें असर्थ मरिे, यहद उसकी िल्क्त सर्ाप्त िो चुकी ि ो और उसका पुरुषाथ मतनःिेष िो चुका िो, तो र्वि इततिास के रंगर्ंच से बिार तनकि जाएगा। िर्ारे सम्र्ुख सार्ाल्जक पररर्वतनम के शिए एक बिुत बड़ा अर्वसर उपल्स्थत ि ै। िर्ें र्नुष्य-तनशर्तम र्वर्वषर्ताओं और अन्यायों को िटाकर सर्ाज को िुद्ध करना िोगा और सब िोगों को र्वैयल्क्तक कलयाण और र्वर्वकास के शिए सर्ान अर्वसर प्रदान करना िोगा। यहद आज र्वे िोग, जो िर्ारह संस्कृतत र्ें तनष्णात ि ैं (बिुश्रुताः) और इसे बचाए रखने

के शिए उत्सुक िैं, िर्ारे सार्ाल्जक संगठन र्ें आर्ूि पररर्वतनम कर दें, तो र्वे हिन्दू ूपरम्परा की भार्वना के अनुकूि िह काय मकर रिे िोंगे। भारत र्ें िर् स्लेट को पोंछकर एकदर् साफ निहं कर दे सकतेऔर न बबिकुि अनशिखे कागज़ पर िह कोई नया सुसर्ाचार शिख सकते िैं। सच्ची प्रगतत र्वृक्ष की र्वृद्धध की भांतत एक सार्वयर्व (सजीर्व) र्वस्तु िै। िर्ें तनष्प्राण िकड़ी को काट देना िोगा और तनस्तेज अतीत को भी परे फेंक देना िोगा। िर् अतीत र्ें इतनी अधधक बार बदिते रिे िैं कक केर्वि पररर्वतनम-भर से धर् मकी आत्र्ा अव्यर्वल्स्थत निहं िो जाएगी। िर्ारह कुछ संस्थाएं सार्ाल्जक न्याय और आधथकम कलयाण के र्ाग मर्ें दुजुयम बाधाएं बन गई िैं और िर्ें इन बाधाओं को िटाने के शिए यत्न करना िोगा, अन्धवर्वश्र्वास को बनाए रखनेर्वािह िल्क्तयों के वर्वरुद्ध युद्ध करना िोगा और िोगों के र्नों को नया रूप देना िोगा। इन हदनों र्ें, जबकक जीर्वन की गतत तीव्रतर िो गई िै, जब ज्ञान बढ रिा िै और र्ित्र्वाकांक्षाएं वर्वस्तार पा रिह िैं, िर्ें पररर्वतनम करने िह िोंगे, अन्यथा इसका अथ मयि िोगा कक िर् एक तनष्प्राण अन्त तक आ पिुंचे िैं और सृजन की भार्वना को खो चुके िैं।

ठ अपना कृत्य सर्ाप्त कर चुकने के बाद भी जी रिे िैं। अब उन्िोंनेअध्ययन और अध्यापन, प्रेरणा और प्रकाि देना बन्द कर हदया िै। िोपि करने की िल्क्त और सुधार की भार्वना उनको छोड़ गई प्रतीत िोती िै। अधधक से अधधक र्वे यि बिाना कर सकतेिैं कक र्वे शिातनकर और र्नन-प्राथनमा के वर्वश्रार्-स्थान िैं। यहद उनकी सम्पवत्त का उपयोग आध्याल्त्र्क और िौकककक शिक्षा के शिए ककया जाता, तो देि की साधारण बौद्धधक और नैततक दृढता बढह िोती। र्वे इस बात को निहं सर्झतेकक परम्परा उन संस्थाओंके बाद भी जीवर्वत रिती िै, ल्जसका कक र्वे र्ूत मरूप िोती िैं।

हिन्दू ूधर् मको नर्वजीर्वन देनेर्वािे र्िापुरुष प्रायः अपने सर्य के सार्ान्य जीर्वन का वर्वरोध करते रिे िैं। र्वे अपनेअल्स्तत्र्व द्र्वारा िह यि र्ांग करते िैं कक सर्वप्रमथर् शसद्धान्तों की ओर िौटा जाए, सोचनेऔर काय मकरने की पद्धततयों र्ें क्राल्न्त की जाए; और एक र्वीरोधचत संगतता और एकाग्रधचत्तता उपिदध की जाए। अपनी आत्र्ा र्ें नैततक और आध्याल्त्र्क जीर्वन को कफर नया करके र्वेसर्ाज-व्यर्वस्था के सुधार की गतत को तीव्र करते िैं। जीर्वन जो कुछ सार्ग्री उनके सार्ने प्रस्तुत करता िै, उसीके ऊपर र्वे नया तनर्ाणम इततिास र्ें इन नर्वीकरण करनेर्वािों और इन वर्वद्रोहियों ने प्रबिप्रेरक िल्क्त के रूप र्ें काय मककया िै; उन्िोंने अपनी बिुर्ूलय ऊजामओंके अधधकांि का उपयोग जड़ता, अन्धवर्वश्र्वास, और रूहढर्वाद'[170] के तनष्प्राण भार पर वर्वजय प्राप्त करने के शिए ककया िै। पुरानी पड़ गई जीण-िीण मप्रथाओं की अर्विेिना की उन बिुसंख्यक िोगों की सन्तुष्टता को वर्वक्षुदध करने के शिए आर्वश्यकता िै, जो वर्वचार और अनुभूतत के बिुत पुराने (अप्रचशित) रूपों को र्ानतेचिे आते िैं। र्नुष्य के गौरर्व और स्र्वतन्त्रता पर जो नया बि हदया जा रिा िै, उसकी र्ांग िै कक सर्ाज-व्यर्वस्था को एक नया रूप हदया जाए। अब क्योंकक हिन्दू ूकानून (वर्वधान) संहिताबद्ध िो चुका िै, इसशिए कोई ऐसा संगठन निहं िै, जो कानून की ल्स्थतत पर पुनवर्वचमार करे और उसर्ें पररर्वतनम करे। भाष्यकारों द्र्वारा व्याख्याएं अब की निहंजा रिहं। न्यायाधीिों द्र्वारा बनाए गए कानूनों की बिुत िह स्पष्ट र्यादमाएं िैं, ल्जनके

170तुिना कील्जए, बेकन : "ककसी प्रथा को सर्य से आगे तक घसीटना उतना िह वर्वक्षोभकारह िै ल्जतना कक नर्वीकरण; और जो िोग प्राचीन काि के प्रतत अत्यधधक आदर रखते िैं, र्वे नयों के शिए केर्वि उपिास के पात्र िोते िैं।"

कारण सर्ाज-व्यर्वस्था का आर्ूि पुनगठमन िोने की गुंजाइि निहं िै। थोड़ा-थोड़ा करके बनाए गए कानूनों से इन नई दिाओं का कार् चिनेर्वािा निहं िै। धर् मतो एक िचिकीिा तन्तु िै, जो बढते िुए िरहर को र्वस्त्र की तरि ढकता िै। यहद यि बिुत कसा िुआ िो, तो यि फट जाएगा और पररणार् अन्धेर, अराजकता और क्राल्न्त िोगा। यहद यि बिुत ढहिा िो, तो यि उिझाकर धगरा देगा (कफसिा देगा) और िर्ारे चिने-कफरने र्ें रुकार्वट डािेगा। यि धर् मसर्झदार िोकर्त से न तो बिुत पीछे िह रिना चाहिए और न बिुत आगे िह। िर्ारे धर्-मवर्वश्र्वास अपनी ल्क्त खो चुके िैं और िर्ारह संस्थाएं अपनी प्रततष्ठा; कफर भी भारत के अतीत की आत्र्ा सजीर्व िै और र्वि िर आगे आनेर्वािह पीढह र्ें अपने रिस्य को नये रूप र्ें प्रकट करती िै। जो सुझार्व र्ें यिां दे रिा िूं, सम्भर्व िै, उनर्ें से कुछ पुरातन-प्रेर्शयों (सनातनयों) को भिे न िगें; आर्ूि पररर्वतनमर्वादह िायद सोचें कक र् ैंअत्यधधक रुहढर्वादह िै। र् ैंतो केर्वि र्वि बताने िगा िूं, जो र्ुझे िर्ारे सर्ाज की अर्वविम्ब र्ांगें प्रतीत िोती िैं ।171

धाशर्कम संस्थाएं

धर् मउन्नतत करते-करते भगर्वान के स्र्वरूप र्ें पिुंच जाने की र्ित्र्वाकांक्षा िै। यि िर्ें आत्र्ा की गिराई के साथ जीर्वन बबताने र्ें सियता देनेके शिए िै। ध्यान और उपासना र्वे ेसाधन िैं, ल्जनके द्र्वारा र्न, स्र्वभार्व और जीर्वन के प्रतत रुख पररष्कृत िोतेिैं। ध्यान का िक्ष्य सर्वोच्च ईश्र्वरत्र्व िै, जो बबिकुि सिह अथ मर्ें र्वणनमानीत िै। र्वि सब रूपों से परे िै, कोई उसे आंखों से देख निहं सकता।172 उसकी ककसी भी सुतनहदमष्ट या अनुभर्वगम्य र्वस्तु से तुिना निहं ंकी जा सकती।173 िर् केर्वि इतना कि सकते िैं कक र्वि आत्र्ा िह सबका िासक िै, सबका स्र्वार्ी िै और सबका राजा िै।"174

परन्तु भगर्वान के सम्बन्ध र्ें िर्ारा र्वर्वचार र्ूततयमों या धचत्नों द्र्वारा बनता िै। ऐसे िोग थोड़े िह िैं, जो परर्ात्र्ा र्ें गम्भीर र्वर्वश्र्वास रखते िों और अपनी श्रद्धा के शिए कोई प्रतीक न खोजते िों। ऐसे अनेक िोगों के शिए, जो सच्चे ज्ञान को ग्रिण के शिए र्ानशसक दृल्ष्ट से उपयुक्त निहीं, िोकवप्रय प्रतीकों का उपयोग करना पड़ता िै। िर्ें उन छुटभैयों को, जो र्वर्वश्र्वास रखते िैं, ल्जनका बौद्धधक क्षक्षततज अपेक्षाकृत छोटा िै, अप्रसन्न निहं ं करना चाहिए; उनके भी अपनेअधधकार िैं; अन्यथा र्वे तो बबिकुि अन्धकार र्ें पड़े ेरि जाएंगे। जो गुरु िोग जनता को उिझानेके बजाय उसकी सियता करने ेके शिए उत्सुक िोतेिैं, र्वे दितमनक सत्य को ऐसे प्रतीकों के रूप र्ें प्रस्तुत करते िैं, ल्जन्िें जनता सर्झ सके। सूक्ष्र् सत्यों को पौराखणक कथाओं का बाना पिना हदया जाता ि।ै प्रतीकर्वाद असीर् का ससीर् र्ें दिनम िै। प्रतीक कोई अपने स्र्वभार्व से िह असीर् को ससीर् का र्वर्वषय निहं

171 सिुभाः पुरुषा राजन् ्सततं ंवप्रयर्वाहदनः

अवप्रयस्य च तयस्य र्वक्ता श्रोता च दिुभमः । - रार्ायण

172 न संदृिे तिष्ठतत रूपर्स्य न चक्षुषा पश्यतत कश्चनैनर् ्।

173 न तस्य प्रततर्ा अल्स्त।

174 सर्वस्मय र्वासा सर्वस्मयेिानः, सर्वस्मयाधधपततः । - बिृदारण्यक उपतनषद्,4-4-2

बना देते। र्वे ससीर् को पारदिकम बना देते िैं ल्जससे िर् उसके बीच र्ें से असीर् को देख सकें।175 कोई भी र्ूतत म सम्पूणतमया भगर्वान का स्थान निहं ंिे सकती। यहद र्वि र्वास्तवर्वकता का स्थान अनुधचत रूप से िे िेती िै, तो उसका पररणार् र्ूततपूमजा िोता िै।

सब र्ूतत-मरचनाओं र्ें अतनर्वाय मरूप से तुहट रिती िै ह िै।'176 परन्तु िुहट की, कर् या अधधक कोहटयां ंिैं। र्ूतत मतो सर्वोच्च ईश्र्वरत्र्व का प्रतीक-र्ाि िै, ल्जसका उद्देश्य यि िै कक र्वि र्वस्तुतृ और परर् र्वास्तवर्वकता की भार्वना को जाग्रत् ्करे। यि 'र्वास्तवर्वक' (सत्)् के उस सारभूत सत्य की व्यंजना कर देती िै, जो सब रूपों से परे िै। धचदम्बरर् र्ें नटराज शिर्व को सर्वपतम एक ल्न्दर के पवर्वनतर् स्थान (गभगृमि) र्ें न तो कोई प्रततर्ा िै ह िै और न कोई िीषिैमख िो। पूजा देर्वता के ककसी सीशर्त र्ूत मरूप को िक्ष्य करके निहंिोती, अवपतु उस सर्वव्मयापी वर्वश्र्वात्र्ा को िक्ष्य करके िोती िै जो अरूप िोतेिुए भी सर्वरूमपर्य िै; जो सब ज्योततयों की ज्योतत िै। एक अंधेरे कर्रे की खािह दहर्वार पर एक र्ाि, जो दृश्य और र्ूत मिै, 'अदृश्य' और 'अर्ूत'म के गिे र्ें िटका दह जाती िै। 'अद्र्वैत शसद्धध' के िेखक र्धुसूदन सरस्र्वती का कथन िै कक साक्षात् ्भगर्वान कृष्ण से उच्चतर अन्य ककसी र्वास्तवर्वकता (तत्र्व) को निहं जानता।"177

िेरिल्क्टस किता िै, "जो व्यल्क्त र्ूतत मसे प्राथनमा करता िै, र्वि पत्थर की दहर्वार से बकझक करता िै।" िर् पत्थर से प्राथनमा निहं ंकरते, अवपतु उस पत्थर र्ें ल्जसकी र्ूतत मअंककत िै, उस व्यल्क्त से, र्नोर्वैज्ञातनक साल्न्नध्य (वर्वद्यर्ानता) से, वर्वश्र्वल्क्त से प्राथनमा करते िैं।

अर्ूत मपक्ष का ध्यान और र्ूत मपक्ष की पूजा करने ेका उपदिे हदया गया िै। र्नुष्ध पररर्ात्र्ा के सम्र्ुख एक पीछे एक पंल्क्त र्ें गुज़रतिैं; िरएक का अपना नार् िोता िै और अपनी एक वर्वशिष्ट भवर्वतव्यता िोती िै। पररर्ात्र्ा की र्नुष्य के प्रतत भाषा 'तू'् करके िोती िै, 'तुर्' करके निहं। एकान्त र्ें र्नुष्य अपने आत्र्ा के रिस्य को पिचानता िै। आत्र्ा के र्वरदान ककसी दूसरों के िाथों प्राप्त निहं ककए जा सकते। पररर्ात्र्ा का तनर्वास प्रत्येक र्ानर्व-हृदय के अन्तस्तर् गभगृमि (ल्न्दर-गभ)म र्ें िै। ध्यान अपने अन्दर वर्वद्यर्ान पररर्ात्र्ा की पूजा िै।

---

175 शसन्धुघाटह की सभ्यता के प्रागैततिाशसक स्थानों की खुदाई र्ें ऐसी र्िुरे तनकिह िैं, ल्जनपर र्नुष्यों और पिुओंकी आकृततया अंककत िैं के प्रागैततिाशसक रसा र्ें र्ानर्वीय और अततर्ानर्वीय सत्ताओं ंकी पूजा प्रचाशित थी और र्वैहदक आयों ने इसे उन्िें। सम्भर्वतः यस किाका देर्वताओं का र्वणनम र्नुष्य-रूप-धारयों के तौर पर ककया की िै, ल्जसका िा 200 ईस्वी पूर्व म र्ाना जाता िै।

176 तुिना कील्जए, र्िर्वीं ंितादद के सबसे प्रर्ुख क्रेवेकरों र्ें से एक, आइज़ाक पैतनंगटन ने बुित सर्य पिि िा था, "अल्न्तर् और सर्वोपरर सत्य के शसर्वाय अन्य सब सत्य छायार्ान िैं, कफर भी प्रत्येक सत्य अपने रूप र्ें सच्चा िै। अपने स्थान पर र्वि र्वास्तवर्वक पदाथ मिै, भिे िह ककसी अन्य स्थान पर र्वि केर्वि छायार्ान िो, क्योंकक र्वि ककसी अन्य तीव्रतर पदाथ मकी छाया िै। और छाया उसी प्रकार सच्ची छाया िै, जैसेपदाथ मसच्चा पदाथ मिै।"

177 पूणेन्दुसुन्दरर्ुखादरवर्वन्दनेनात् ्
कृष्णात्परं ककर्वप तत्र्वर्िं न जाने।

ध्यान की पिपिह ित मिै पूण मईर्ानदारह (सरिता)। िर्ें कर्-से-कर् उतना ईर्ानदार तो िोना िह चाहिए, ल्जतना कक अपनी दुबुिमताओंके रितिेर् िो सकतिैं। िर्ें उन बिानों के सच्चेस्वरूप को सर्झना-सीखना चाहिए, जो िर् साधारणतया अपनेसार्ने िह प्रस्तुत ककया करते िैं। ध्यान द्र्वारा िर् जीर्वन की तुच्छताओंसे आगे बढकर िाश्र्वत के साल्न्नध्य तक पिुंच जाते िैं। र्नुष्य जो कुछ सोचता िै, र्विह िोता िै और िर्ारह प्राथनमा यि िै कक िर्ारा र्न श्रेेष्ठ र्वर्वचारों से भरा रिे।'[178] ल्जन िोगों को अव्यक्त का ध्यान कर पाना कहठन प्रतीत िोता िी, र्वेअपने स्र्वभार्व के उपयुक्त रूप चुन सकतिैं। ये रूप कालपतनक निहीं, अवपतु साधकों के कलयाण के शिए धारण ककए गए भगर्वान के िह रूप िैं;[179] और ये रूप प्रिय किा तक बनेरिते िैं।180 यहद के छायाएं भी िों, तो भी र्वे ज्योततयों की ज्योतत से पड़नेर्वािह छायाएं िैं। धाशर्कम प्रतीका साहद के र्वि प्रतीक िै, ल्जसे श्रद्धिुओंने अपने र्न र्ें स्थान हदया िै। यहद र्वि अर्वास्तवर्वक सत्ता का इस रूप र्ें काय मकर िह निहं सकता था। यहद िर्ारह गम्भीरतर् आत्र्ा और र्वावषकम िोता, तो र् ैंसस्र्वरता (अनुरूपता) निहं िोगी, तो धाशर्कम कलपना िर्ें प्रभावर्वत निहं ंकर सकेगी। यि प्रश्न र्वैज्ञातनक सत्य का निहं ंिै; अवपतु इसका र्वास्ता उस अआंतररक सम्बन्ध से िै, जो पिकोतर र्वास्तवर्वकता और िर्ारे गिनतर् आत्र् के बीच र्वर्वद्यर्ान िै; इस आत्र् को र्वस्तु या पदाथ मनिहं र्ाना जा सकता। यहद आत्र्ाएं इस सम्बन्ध को हृदयंगर् करने के शिए उद्यत िों, तो सत्य प्रकट िो जाता िै। हिन्दू ू धर् मप्रत्येक प्रकृतत (स्र्वभाब) को उसकी अपनी हदिा के अनुकुि िह रि हदखाने का यत्न करता िै, ल्जससे र्वि अपनेपूणतमर् र्वर्वकास तक पिुंच सके। र्नुष्य के र्वर्वश्र्वास र्ें जो कुछ भी ऋजु (ईर्ानदारह से युक्त), सत्य और प्रेर्ेय िै, उसी र्ें ईश्र्वर की 'भार्वना काय मकर रिह िै। ईश्र्वर सारे र्वर्वश्र्व की र्वास्तवर्वकता िै, ककसी इस यां उस सम्प्रदाय का एकाधधकार निहं। हिन्दू ूधर् मइस बात को पिचानता िै कक र्ानर्वीय प्रकृतत की र्वे िल्क्तयां, जो ईश्र्वर का साक्षात्कार करेंगी, शिग-शिग व्यल्क्तयों र्ें शिग-शिग कोहट तक र्वर्वकशसत िुई िोती िैं; इसशिए इस ऊंची चोटह पर चढनेके शिए अर्वश्य िह अनेक र्ाग शिमेंगे, भिे िह र्वे ऊपर पिुंचकर एक जगि शरि् जाते िों। उपासना का र्ाध्यर् र्ुख्यतया परम्परागत िोता िै और ऐततिाशसक संसगों से भरा िोता िै। इसे िर्ें बुिदेर्वर्वाद के शिए छूट के रूप र्ें देखने की आर्वश्यकता निहं ंिै। ऐसी अनेक सत्ताओं की, जो एक-दूसूरे से स्र्वतन्त्र, और कभी-कभी एक-दूसूरे की र्वर्वरोधी भी र्ानी जाती िैं, उपासना, और ऐसी सत्ताओं की, जो एक िह सर्वोच्च आत्र्ा के र्वर्वशभन्न पक्ष सर्झी जाती िैं, उपासना र्ें र्ूभूत अन्तर िै। र्ोर्न ईसाई चचों की संतों की सूधचयों (कैिण्डरों) र्ें अनेक संतों और देर्वदूतों का उलिेख िै, कफर भी र्वे ेसम्प्रदाय एकेश्र्वरर्वादह िैं। पर, र्ूतत-मपूजा सार्ान्य िोगों के शिए चािे ककतनी भी आर्वश्यक क्यों न िो, ककन्तु हिन्दू ूधर् मर्ें उसे घहटया ढंग की उपासना िह र्ाना गया िै।"

---

178 तन्र्े र्नः शिर्वसंकलपर्स्तु ।

179 तुिना कील्जए :

धचन्र्यस्याप्रर्ेयस्य तनगुणमस्य िरहररणः

साधकानां ंहिताथायम िह्र्णो रूप कलपना।

180 आभूत सम्प्र्वि ंस्थानर् ्अर्ूतूर्ंर्वहि भाष्यते े। - र्वर्वष्णुपुराण

'तनरुक्त' र्ें (7 - 4) यास्क किता िै कक र्वर्वशभन्न देर्वता एक िह आत्र् के (एकस्यात्र्नः) गौण सदस्य (प्रत्यङ्कगातन) िैं। (1-70-4) िर्ें बताता िै कक दैर्वीय िल्क्तयों के शिग-शिग नार् उनकी गततवर्वधध के क्षेत्रों को ध्यान र्ें रखकर (स्थान र्वर्वभागेन) रखेगए िैं। 3

 "भगर्वान के साथ तादात्य सर्वोच्च िैं; उससे घटकर ध्यान की ल्स्थतत िै; उससे भी नीचे स्तोिों और न्त्रों का

बारम्बार पाठ करने ेकी ल्स्थतत िै; और सबसे तनचिह ल्स्थतत बाह्य पूजा की िै।"[181] एक अन्य श्‌ािोक रें् किा गया िैकक "पूजा के असंख्य कृत्य शरि्‌कर एक स्तोत्न के बराबर िोते िैं; असंख्य स्तोत्न शरि्‌कर एक रं्त्रपाठ के बराबर िोते िैं असंख्य न्त्रपाठ शरि्‌कर एक ध्यान (सर्‌ाधध) के बराबर िोते िैं और असंख्य ध्यान शरि्‌कर भगर्वान रें् िय िो जानेके बराबर िोतेिैं।"[182] िर् चािे ककसी भी देर्वता की उपासना क्यों न करें, र्वि भगर्वान का हि अशभन्न रूप िोता िै। "और िे गणपतत, र्‌ैंतुझे ेनस्कार करता िूं; तू िह सृल्ष्ट का कताम िै, तू हि धतामिै और तू

हि संतिाम िै; तू िह तनश्चय से िह्म िै।"[183] यि अथर्वर्वेमद का कथन िै। र्वर्वश्र्व की र्‌ाता के रूप रें् भगर्वान का सर्वोच्च ईश्र्वरत्र्व के साथ तादात्म्य स्थावपत कर हदया गया िै। (दोनों को एक िह र्‌ान शिया गया िै।) "पुण्यात्र्‌ाओंके घर रें् तुर् स्र्वयंहि सरृद्धध िो; पावपयों के घर रें् तुर् दररद्रता िो; पररष्कृत नर्वािे िोगों के हृदय रें् तुर् बुद्धध िो; सज्जनों रें् तुर् श्रद्धा िो; कुिहनों रें् तुर् िज्जा िो; देर्वी, तुर्िें िर् प्रणार् करते िैं। तुर् इस र्वर्वश्र्व की रक्षा करो।" िर् अपनेचुने िुए आदि मके रूप रें् भगर्वान की उपासना करते िैं। िंकर (आचाय)म र्‌ान अद्र्वैतर्वादह था, परन्तुर्वि 'िल्क्त' का परर् उपासक भी था। अपने'सूत्र भाष्य"[184] रें् र्वि शिखता िै, "र्वर्वधुरों के शिए और अर्वर्वर्वाहितों के शिए भी देर्वताओं की प्राथनमा और प्रसादन (प्रसन्न करना) जैसे र्वर्वशिष्ट धाशर्कम कृत्यों द्र्वारा ज्ञान प्राप्त कर पाना सम्भर्व िै।185 र्वि किता िै, "व्यल्क्त को अपनेशिए उपासना और ध्यान का कोई-सा एक रूप चुन िेना चाहिए, और उसपर तब तक दृढ रिना चाहिए, जब तक उपासना के र्वर्वषय के साक्षात्कार द्र्वारा उपासना का फि प्राप्त न िो जाए।"[186] िंकर ने स्र्वयं अपनेशिए 'िल्क्त' का रूप चुना था और

---

181 उत्तर्‌ो िह्मसद्भार्वो ध्यानभार्वस्तु र्ध्यर्‌:
स्तुततजपमोऽथर्‌ोभार्वो बहिः पूजाऽथर्‌ाधर्‌:।

182 पूजाकोहटसर्‌ं स्तोतंस्तोकोहटसर्‌ो जपः
जपकोहटसर्‌े ध्याने ध्यानकोहटसर्‌ो ियः ।
183 नर्स्तेगणपतये, त्र्वर्ेर्व केर्विं कताऽमशस, त्र्वर्ेर्व केर्विं धताऽमशस,
त्र्वर्ेर्व केर्विंिताऽमशस, त्र्वर्ेर्व केर्विं खल्लर्वदं िह्माऽशस।

184 या श्रीः स्र्वयं सुकृततनां भर्वनेष्र्वक्ष्र्मीः
पापात्र्‌नां कृतधधयां हृदयेषु बुद्धधः
श्रद्धा सतां कुिजनप्रभर्वस्य िज्जा,
तां त्र्वां नताः स्र्‌ पररपािय देर्वर्व र्वर्वश्र्वर्।
- र्‌ाकमण्डेये पुराण
185 3-4-35
186 सूत्र भाष्य, 3-3-59। तुिना कील्जए, "परर्‌ात्र्‌ा स्र्वयं" प्िेटोर्वादानुयायी, र्ैल्क्सर्स ऑफ टायर ने किा, "उस सबका, जो भी कुछ र्वर्वद्यर्‌ान िै, वपता और रचतयता िै; र्वि सूय मया आकाि से भी अधधक प्राचीन िै; काि और िाश्र्वतता और अल्स्तत्र्व के सर्स्त प्रर्वाि से भी र्वि र्वर्वर्वातर िै; कोई भी िास्त्रकार उसको नार् निहं दे सकता; कोई भी र्वाणी उसका उच्चारण निहं कर सकती; और ककसी भी आंख से र्वि देखा निहं जा सकता। परन्तु िर् उनके तत्र्व को जान पाने रें् असर्थ िोनेके कारण, उसका ज्ञान पाने शिए िािातयत िोकर ध्र्वतनयों और नार्ों और धचह्नों की, स्र्वणपमत्रों, िाथीदांत और चांदह की, र्वनस्पततयों और नहदयों, पर्वतमशिखरों और प्रबि धाराओं की सिायता िेते िैं और अपनी दुबिुमता के कारण, संसार रें् जो

कुछ बड़े ेर्स्मपिी स्त्रोत रचे थे। उसने अनेक ठों की स्थापना की, ल्जनर्ें से श्रृंगेरह, द्र्वारका, जगन्नाथपुरह और हिरिर्ाय र्ें ज्योततठम रुख्य िैं।

हिंदू ूधर् मका रुख्य उद्देश्य यि िै कक रूतत-मपूजा को धाशर्कम भार्वना के वर्वकास के एक साधन के रूप र्ें, उस भगर्वान को पिचानने के साधन के रूप र्ें चिने हदया जाए, ल्जसके ल्न्दर सब जीर्वों के अन्दर बने िुए िैं।[187] 'भागर्वत' र्ें भगर्वान के रुुँ से किर्वाया गया िै, "र् ैंसब प्राखणयों र्ें उनकी आत्र्ा के रूप र्ें वर्वद्यर्ान िूुँ परन्तु र्ेरह वर्वद्यर्ानता की उपेक्षा करके र्त्य मर्नुष्य रूतत-मपूजा का ढोंग करता िै।"[188] जब तक िर्ें सर्वत्रम और किहं भी भगर्वान की उपल्स्थतत अनुभर्व करने ेकी आध्याल्त्क पररपक्र्वता प्राप्त निहं ंिो जाती, तब तक िर् रूतत-मपूजा का अर्वलंबन कर सकतेिैं। "अपना कतव्मय करते िुए र्नुष्य को रूतत मइत्याहद द्र्वारा र्ेरह पूजा केर्वि तब तक िह करनी चाहिए, जब तक र्वि रुझे ेअपनेहृदय र्ें, सब प्राखणयों र्ें ल्स्थत निहंजान िेता।"[189] रूततयमां ंतो केर्वि दुबिुम धचत्त के िोगों के शिए िैं, क्योंकक र्नीषी तो भगर्वान को सभी जगि देखता िै।190 अशिक्षक्षत िोगों का स्र्वाभावर्वक रुझान रूतत-मपूजा की ओर िोता िै, परन्तु रूतत-मपूजा की गौणता की उपेक्षा निहं ंकी जा सकती। एक सुवर्वहदत श्िोक र्ें किा गया िै कक परर्ात्र्ा के सातनव्य का अभ्यास सर्वोच्च प्रकार का धर् मिै; परन्तु जो िोग इसर्ें असर्थ मिों, उन्िें धचन्तन और ध्यान का अभ्यास करना चाहिए; यहद िर् इस स्तर तक भी उठ पाने र्ें

कुछ भी सुन्दर िै, उसका नार् उस परर्ात्र्ा के स्र्वभार्व के अनुसार रखते ेजाते िैं; ठीक र्वैसे, जैसेकक सांसाररक प्रेर्ी करते िैं। उनके शिए सबसे सुन्दर दृश्य वप्रयतर् या वप्रयतर्ा का रुख िह बन उठता िै, परन्तु सूतृत के शिए र्वे एक र्वीणा को, या छोटे-से बछम को देखकर या िायद ककसी कुसी, दौड़ने के र्ैदान को देखकर या संसार की ककसी भी ऐसी र्वस्तु को देखकर प्रसन्न िोते िैं, जो वप्रयतर् या वप्रयतर्ा की याद हदिाती िै। औरक्या र् ैंरूततयमों के सम्बन्ध र्ें कुछ और वर्वर्वेचन करके तणयम दूं? र्नुष्यों को केर्वि इतना जानना चाहिए कक हदव्य (ईश्र्वरहय) क्या िै, और बस यिह सब कुछ िै। यहद ककसी यूनानी कोफीडडयास की किा को देखकर परर्ात्र्ा का स्र्रण िो आता िै, और ककसी शर्स्रर्वासी को पिुओंकी पूजा करके, ककसी अन्य व्यल्क्त को नदह की, और ककसी अन्य को अल्ग्न की पूजा करके, तो उनके इस र्तभेद के शिए रुझेकोई खेद निहं िैः केर्वि इतना चाहिए कक र्वे ज्ञान प्राप्त करें, र्वे प्रेर् करें, र्वे स्र्रण रखें।"- र्ैल्क्सर्स ऑफ टायर, 8-9-10। अंग्रेज़ी अनुर्वाद श्री धगिबटम र्ें द्र्वारा : 'फाइर्व स्टेजेज़ ऑफ ग्रीक शसवर्विाइजेिन'।

187 भूतात्र्ानंकृतािय र्् ।

188 अिं सर्वेषु भूतेषु भूतात्र्ा अर्वल्स्थतः ।
तर् ्अर्वज्ञाय र्ां ंर्त्यःम कुरुते ेअचा मवर्वडम्बनार्। ् - 329-21

189 अचादमर्वचयेमत् ्तार्वद् ईश्र्वरं र्ां स्र्वकर्कृमत् ्।
यार्वन्न र्वेद स्र्वहृहद सर्वभूमतेष्र्वर्वल्स्थतर् ्।

190 अल्ग्नदेर्वो द्र्वजातीनां ंयोगीनां ंहृहद दैर्वतर् ्।
प्रततर्ा स्र्वलपबुद्धीनां सर्वत्रम सर्दशिनमार् ्।

दादू ूके िददों र्ें, "न ल्न्दर र्ें जाने की ज़रूरत, न ल्स्जद र्ें; क्योंकक असिह ल्स्जद और ल्न्दर तो हदि र्ें िैं, जिां 'र्ाशिक' को सेर्वा और सिार् हदया जा सकता िै।"

असर्थ मिें, तो कफर रू्तत-मपूजा अपनाई जा सकती िै; और बबिकुि कच्चेतथा प्रारल्म्भक िोगों के शिए िोर्, तीथयमात्ना आहद करना उधचत िोगा।"[191]

जब िर् रू्तत-मपूजा की ति र्ें वर्वद्यर्ान शसद्धान्त को जान िेते िैं, तब इस बात पर झगड़ा निहं उठता कक ककन रू्ततयमों की पूजा की जाए। हिंदू इस बात को स्वीकार करता िै कक जाननेर्वािे की जैसी रहतत िोगी, उसीके अनुसार ज्ञान िोगा; उसके अततरररक्त कुछ भी निहं जाना जा सकता। 'चाणक्यनीतत' र्ें किा गया िै, "देर्वता न किड़ी र्ें िै, न पत्थर र्ें, न शर्ट्टह र्ें। देर्वता तो रिस्यर्य भार्व र्ें िैं; इसशिए यि रिस्यर्य भार्व िह कारण िै।"[192] उपासक की श्रद्धा के अनुसार िह उपासना का फि शर्िता िै।193 सच्चेप्रतीक र्ें अथ मकी एक के ऊपर एक अनेक तिें िोती िैं और र्वि वर्वशभन्न स्तरों पर अपनेअथ मको इस प्रकार प्रकट करता िै, ल्जससे सबको सर्झ र्ें आ सके। ज्यों-ज्यों िर्ारह श्रद्धा गिरह िोती जाती िै, त्यों-त्यों उस प्रतीक का अथ मयथेष्ट िोता जाता िै। िर् चािो ककसी भी प्रतीक से प्रारम्भ कर सकतेिैं और ज्यों-ज्यों भार्व बढता जाएगा, त्यों-त्यों प्रतीक र्वास्तवर्वकता (ईश्र्वर) के तनकट पिुंचता जाएगा। हिन्दू िोग इस बात को सर्झतेिैं कक न केर्वि सब र्ाग मउस एक िह भगर्वान तक पिुंचते िैं, अवपतु प्रत्येक व्यल्क्त को र्विह र्ाग मचुनना चाहिए, जो उस बबन्दु सेिुरू िोता िै, जिां प्रस्थान के सर्य र्वि व्यल्क्त खड़ा िै।

उपासना की भार्वना अनुष्ठानों और संस्थाओंर्ें साकार िोनी िह चाहिए। सर्ाज के धाशर्कम जीर्वन को इल्न्द्रय-ग्राह्य और संस्थात्र्क अशभव्यल्क्त दह जानी चाहिए। इसके अभार्व र्ें उपासना अपनेपूण मर्वैभर्व और िल्क्त का वर्वकास िायद िह कभी कर पाती िै। यहद िर्ारह आध्याल्त्र्क र्ित्र्वाकांक्षा को सूक्ष्र् और अव्यक्त निहंरिना िै, तो इसे, अपनी वर्विुद्धता को गंर्वानेका जोखखर् उठाकर भी, उन रूपों र्ें साकार िोना चाहिए, ल्जनके द्र्वारा र्नुष्य की वर्वर्वधि िल्क्तयों और क्षर्ताओंका उपयोग ककया जा सके। इसर्ें यि खतरा अर्वश्य िै कक बाह्य रूप भार्वना का गिा घोंट देंगे, अनुष्ठान-कृत्य स्वाभावर्वक प्राथनमा का स्थान िे िेंगे, बाह्य और दृश्य धचह्न आन्तररक चारुता को धूशशर् कर देंगे। कफर भी, पवर्वत्न र्वस्तुओं और आनुष्ठातनक कृत्यों द्र्वारा िह र्नुष्य की उपासना जीर्वन के सुतनहदमष्ट तथ्यों र्ें बद्धर्ूि िोती िै और उसर्ें स्वयंजीर्वन को भी बदि डािनेकी िल्क्त आती िै। अनुष्ठान-र्ल्न्दर, पूजा की वर्वशभन्न सार्धग्रयां, तीथयमात्नाएं अनकेि वर्वश्र्वासों के र्विान िैं।

र्वैहदक आयों के पास कोई र्ल्न्दर निहं थे और न र्वे प्रततर्ाओं का उपयोग करते थे। द्रवर्वड़ सभ्यता ने रू्तत-मपूजा को प्रोत्सािन हदया और यज्ञ के स्थान पर पूजा पर ज़ोर हदया। र्ल्न्दरों और रू्तत-मपूजा पर वर्वशभन्न ग्रंथ हिन्दू धर् मके र्वैहदक र्वाद से आगे बढ आने के बाद िह रचे गए। परन्तुकफर भी र्वैहदक र्ंत्रों का प्रयोग ककया

---

191 उत्तर्ा सिजार्वस्था द्र्वतीया ध्यानधारणा
तृतीया प्रततर्ापूजा िोर्यात्ना चतुधथकमा।

192 न देर्वोवर्वद्यतेकाष्ठेन पाषाणे न र्ृण्र्ये
देर्वो हि वर्वद्यतेभार्वे तस्र्ाद्भार्वो हि कारणर् 1 - 7 - 12

193 श्रद्धानुरूपं फितुकत्र्वात्। - भागर्वत ,8-17

जाता था और ऋवषयों की पे्रेरणार्यी प्रततभा ने वैंहदक और वैंहदक-शभन्न तत्वों को शर्िाकर एक कर हदया और आगर्ों को भी वेंदों के सर्ान िह प्रार्ाखणक र्ाना जाने िगा। र्ंहदर हिन्दू ूधर् मके दृश्य प्रतीक िैं। वें स्वग मके प्रतत पृथ्र्वी की प्राथनमाएं िैं। वें ेएकान्त और प्रभार्वोत्पादक स्थानों पर बने िुए िैं। हिर्िय के हिंर्ार्य और पार्वन तुंग शिखर र्िन र्न्दरों के शिए स्वाभावर्वक पृष्ठभूशर् िैं। िाह्य र्ुिूत मरें उपासना के शिए नदह-तीर पर जाने की प्रथा का पिन िताल्ददयों से िोता चिा आ रिा िै। वर्वश्रार् और रिस्य से युक्त र्ंहदरों के भर्वनों का सौन्दय,म असंगता तथा वर्वस्र्य का भार्व जगाने र्विाह धुंधिह ज्योततयां, गान और संगीत, रूतत मऔर पूजा, इन सबरें व्यंजना की (संकेत करने की) िल्क्त िै। सब किाओं, र्वास्तु किाै, संगीत, नृतृय, कववर्वता, धचत्रकिा और रूतत म शिलप, का प्रयोग इसशिए ककया जाता िै कक िर् धर् मकी उस िल्क्त को अनुभर्व कर िैं, ल्जसकी पररभाषा िह निहं की जा सकती और ल्जसके शिए कोई भी किा यथेष्ट र्विान निहं िै। जो िोग पूजा रें भाग िेते िैं, वें ेउस ऐतताशसक हिन्दू ूअनुभर्व और उन प्रगाढ आध्याल्त्क िल्क्तयों से शर्िकर एक िो जाते िैं, ल्जन्िोंने िर्ारे आनुर्वंशिक उत्तराधधकार के सर्वोत्तर् अंकिो गढा िै।

परन्तु इस सर्य र्न्दरों रें एक तनष्प्रभ-सी र्ौन सिर्तत और उबानेर्विाह हदनचयाम का र्वातार्वरण रिता िै। उन र्न्दरों का उन्नर्यन करनेका प्रयत्न, ल्जनसे िोगों को इतना तीव्र पे्रेर् और ल्जनके प्रतत इतना अनुरागपूण मआदर िै, व्यथ मिै। परन्तु िरें उनकी इस वर्वद्यर्ान भार्वना और र्वातार्वरण को सुधारना चाहिए। सौन्दय मऔर उदात्तता के प्रतत सिजर्वृत्तक पे्रेर् वर्वकशसत ककगा जाना चाहिए। उपासकों की आंखों के सम्र्ुख तनरन्तर सुन्दर प्रततर्ाएं रिनी चाहिएं। िर्ारह सुन्दर की अनुभूतत र्न्दर के अनुष्ठानों से तृपूत िोनी चाहिए; र्न्दर के अनुष्ठान का प्रयोजन िह यि िै कक र्वि र्न को परर्ात्र्ा के रिस्यर्य साल्न्नध्य के शिए तैयार करें। र्न्दरों रें पूजा िुद्धतर् ढंग कीिोनी चाहिए। फूिों और सुगल्न्धत धूप आहद की बशियां चढानेकी अनुर्तत दह जा सकती िै, ककन्तु ुपिुओंकी बशियों का तनषेध कर हदया जाना चाहिए। 'ऋग्वेद' तक रें यि किा गया िै कक स्तुतत, सशर्धा या पकाए िुए अन्न की बशि भी (पिुओं के) बशिदान-ल्जतनी अच्छी िै।'[194] वर्वद्र्वान र्नुष्य पवर्वत्न धर्-मवर्वधधयों के अततररक्त अन्य ककसी सर्य ककसी भी प्राणी को कष्ट निहंपिुंचाता।195 अहिंसा के शसद्धान्त और साथ िह र्ांस-भक्षण से दुवुषत (धर्-मभ्रष्ट) िो जाने के दृल्ष्टकोण के फिस्वरूप तनराशर्ष भोजन अपनाया गया। जैौक के प्रभार्व और र्वैष्णर्व र्त के प्रसार के फिस्वरूप बिुत से िोग यि र्ाननेिगे कक र्ांस न खाना पुण्य का काय मिै। आजकि भारत की बिुत बड़ी ज़नसंख्या ने स्वेच्छा से र्ांस-भक्षण त्यागा िुआ िै, िािांकक उनके पूर्वज़म युगों तक र्ांसभोजी रिे िैं।196 आखखरकार, बशिदान का शसद्धान्त तो यिह िै न, कक अपना सर्वस्मर्व परर्ात्र्ा को सर्वपतम कर हदया जाए, और अपना काय मभगर्वान को सर्पणम की 'भार्वना से ककया जाए। 'भागबत' रें किा गया िै, "ओ िाह्यण, जो कर् मईश्र्वर, भगर्वान और िह्र् को सर्वपतम कर हदया जाता िै, र्वि तीनों प्रकार के तापों से र्ुल्क्त हदिानेर्विाह धचककत्सा िै।"[197] र्न्दर बिुत िम्बे सर्य तक संस्कृतत के केन्द्र रिे

---

[194] 8-19-5; 8-24-20; 6-16-47

[195] अहिंसंन् ्सर्वभूमतूातन अन्यत्न तीथेभ्य:। छान्दोग्य उपतनषद्, 8-15-1

[196] र्नु का कथन िै कक प्राण-संकट उपल्स्थत िोनेपर र्ांस खानेसे कोई पाप निहं िगता। 5-27-32

[197] एतत् ्संसूधचतं िह्र्न् ्तापत्नयधचककल्त्सतर् ्

ीं। कािाकारों ने अपनी सर्वोत्तर् कृततयां ंर्विंसर्वपतम कीं, कर्वर्वयों नेअपनी कर्वर्वताएं और संगीतज्ञों ने अपनेगीत
पििे-पिि र्ंहदर र्ें गाए और उसके बाद र्वे बिर की दुतुनया र्ें आए। सुन्दरता के सब पर्वर्वत्नीकृतरूप िर्ारे
अन्दर िाश्र्वत के प्रतत एक अनुभूतत जगाते िैं। र्न्ददरों को जनता की संस्था बनना चाहिए और उनर्ें सबका
प्रर्वेि िो सकना चाहिए। र्जन िोगों का जीर्वन-तनर्वाि र्न्ददरों से िोता िै, उस पंडों को, जो प्रायः बिुत िी
असंस्कृत और धर्ान्धि िोते िैं, र्वद्या प्राप्त करने के शिए और सुसंस्कृत बनने के शिए प्रोत्साहित ककया जाना
चाहिए। र्न्ददरों र्ें पूजा का उपयोग ईश्र्वर र्ें र्वश्र्वास को बढानेके शिए, और र्न तथा आचरण की पर्वर्वत्रता
को बढाने के शिए िै। र्न्ददरों र्ें कन्याओंको सर्वपतम करनेकी प्रथा से यि आिा निहं ंकी जा सकती कक र्वि र्न
को उधचत हदिा र्ें िे जाने र्ें सिायक िोगी।

घर र्ें, जिांकक र्स्त्रयां प्रर्ुख भाग िेती िैं, धर् मकी भार्वना पाररर्वाररक पूजा द्र्वारा ठीक बनी रिती िै।
र्न्ददरों तथा सार्वतयक उत्सर्वों र्ें िोनेर्वािी पूजा र्ें िोगों की र्वर्वर्वि भीड़ एकत्रित िोती िै। भागर्वतर िोग, जो
प्रशिक्षक्षत कथार्वाचक और गायक िोते िैं, पुराण ग्रन्थों की व्याख्या करते िुए गांर्व-गांर्व घूर्ते िैं; आचाय मिोग, जो
तपस्र्वी-संघों के अध्यक्ष िोते िैं, परम्परा को बनाए रखते िैं और नर्वयुर्वकों को प्रशिक्षण देते िैं। हिन्दू ूधर् मका
र्ुख्य सिारा क्रान्तदिी (पैगम्बर) िोग रिे िैं। र्वे न जानेकिां ंसे आ पिुंचे िैं और उनके पीछे ककसी प्राधधकार
(अथॉररटह) का सर्थनम भी निहंथिा। भारत र्ें, देि के प्रत्येक भाग र्ें और उसके जीर्वन के प्रत्येक काि र्ें,
उपतनषदों के ऋवषयों और बुद्ध से िेकर रार्कृष्ण परर्िंस और गांधी तक, इन क्रान्तदशियमों की एक अटूट
श्रृंखिा (परम्परा) बनी रिह िै।

अनेक उपर्वासों और रात्रत्र जागरणों, खान-पान के सम्बन्ध र्ें र्वस्तृत र्वर्वतनयर्ों का प्रयोजन आत्र्-
संयर् र्ें सिायता देना िै। र्नु किता िै, "र्ांस खाने, र्हदरा पीने और र्ैथुन करने र्ें कोई अस्र्वाभावर्वक बात
निहं ंिै, क्योंकक सभी प्राखणयों की प्रर्वृतत इन चीज़ों की ओर िोती िै, परन्तु इनसे बचे रिनेका फि बिुत अच्छा
िोता िै।"[198] र्िाभारत का कथन िै कक "इच्छाएं उपभोग से िांत निहंिोतीं, अवपतु ुजैसे घी डािनेसे आग चर्क
उठती िै, र्वैसे िह र्वे ेभी और उद्दहप्त िो उठती िै।"[199] हिन्दू ूर्नीषी धर्-मर्वधधयों (कर्कमाण्डों) का उपयोग केर्वि
आन्तररक िुद्धधध के साधन के रूप र्ें िह करते थे। गौतर् ने अपने 'धर्-मसूत्र' र्ें चािहस पर्वर्वत्र धाशर्कम र्वधधयों
के अनुष्ठानों का उल्िेख ककया िै, र्जन्िें ककसी भी अच्छे र्नुष्य को करना चाहिए, और किा िै, "ये िैं चािहस
पर्वर्वत्र अनुष्ठान। और अब आते िैं आत्र्ा के आठ सद्गुण! ये िैं, सब जीर्वों के प्रतत दया, धैय,म संतोष, िुधचता,
सदुद्यर्, िुभ र्वचार, तनिोभता, और ईष्यािीनता (तनरसूयता)। र्जस व्यर्क्त ने इन सब पर्वर्वत्न अनुष्ठानों
को तो ककया िै ककंतु र्जसर्ें ये सद्गुण निहं िैं, र्वि िह्र् के साथ एकाकार निहं िो सकता, र्वि िा के िोक र्ें निहं
यदहश्र्वरेभगर्वतत कर्मिह्रखणभावर्वतर्।्

---

198 न र्ांसभक्षणे दोषी, न र्द्ये न च र्ैथुने,
प्रर्वृवृ त्तरेषा भूत ाना ंतनर्वृवृ त्तस्तु र्िाफिा।
199 न जातु कार्: कार्ानार्ुपभोगेन िाम्यतत
विर्वषा कृष्णवर्त्र्वे भूय एर्वाशभर्वधतेम। -1-75-49

पिुंचताः परन्तु ल्जसने ेइन पववत्न अनुष्ठानों र्ें से केर्वि एक को ककया िै और ल्जसर्ें ये सद्गुण िैं, र्वि िह्र् से शरि्कर एकाकार िो जाता िै, और उसके िोक र्ें पिुंचता िै।"[200] सद्गुण आध्याल्त्रक उत्कष मके वर्वषय िैं। नैततक सद्गुणों का अभ्यास सभी को करना चाहिए।201

तीथयमात्रा के भी नैततक पक्ष पर िह ज़ोर हदया गया िै। 'वीरशर्नोदय' ने यि हदखाने के शिए 'र्िाभारत' का उद्धरण हदया िै कक जो व्यल्क्त िोभी, कपटह, कू्रूर और अशभर्ानी िै तथा सांसाररक वर्वषयों र्ें फंसा िुआ िै,
र्वि तीथों र्ें स्नान करने ेसे पधचत्र निहीं िसकता। र्वि पापर्य और अिुधच िह रिेगा। केर्वि िरहर से र्ि धोकर हि िर् पववत्न निहं िो जाते; आंतररक र्शिनता से र्ुल्क्त पाकर िह िर् पववत्र िो पातेिैं।202 तीथस्मथान इसशिए पववत्त िैं, क्योंकक र्विां भगर्वल्न्नष्ठ र्नुष्य तनर्वास करते िैं।'[203] किा जाता िै कक गंगा र्ें स्नान करनेसे घृखृणत से घृखृणत पाप भी धुि जाते िैं; परंतु 'गंगा' भी तो धर् मके प्रर्वाि की िह प्रतीक िै।204 'र्िाभारत' र्ें किा गया िै कक "िे राजेश्र्वर, सब र्वेदों को पढनेसे या पववत्न तीथों के जि र्ें स्नान करने से उसका िसोवाँ अंश भी पुण्य निहं िोता, ल्जतना सत्य भाषण से िोता िै।"[205] साथ िह, "यि वर्विर्वि वर्वश्र्व पररात्र्ा का पववत्न र्ंहदर िै; िुद्ध हृदय पववत्न तीथस्मथान िै; और िाश्र्वत सत्य अनश्र्वर िास्त्र िै।"[206] संसार-सागर को तरने का उपाय नैततक तनयर्ों का पािन करना िै। "दूसूरों की कोई र्वस्तु र्त छीनो; दूसूरों की भार्वनाओं को चोट र्त पिुंचाओ; सदा भगर्वान का स्रण करो।"[207]

---

200 8

201 एतेसर्वेषांहि्णाद्यचाण्डिो धर्समाधनर्। ् याज्ञर्वलक्य पर शर्ताक्षर की टहका, 6-22

202 . यो िुदधः वपिुनः कू्रूरो दल्म्भको वर्वषयात्र्कः,

सर्वतमीथेष्र्ववप नातः पापो र्शिन एर्व सः।

न िरहरर्त्यागात् ्नरो भर्वतत तनर्िमः,

र्ानसे तु र्ि त्यक्तेभर्वत्यान्तः सुतनर्िमः ।

203 भर्वद्वर्वधाः भागर्वतास्तीथभूमतूाः स्र्वयंवर्वभोः

तीथीकुर्वल्मन्त तीथातमन स्र्वान्तस्थेन गदाभृता। भागर्वत, 1-13-10

204 सा हि धर्मः द्रर्वः स्र्वयर्। ् यर्, 'सूत्ृतचल्न्द्रका' र्ें उद्धृत्

205 सर्वर्वेमदाधधगर्नं सर्वतमीथार्वमगािनर् ्

सत्यस्यैर्व च राजेन्द्र किां नािमतत षोडिीर् ्।

206 सुवर्विर्वािर्ं वर्वश्र्व पववत्न िह्र्ल्न्दरर्, ् चेतः सुतनर्िम तीथ ंसत्ये िास्त्र्नश्र्वरर् ्।
साथ िह 'र्िाभारत' सेतुिना कील्जए: साधूनां ंदिनम पुण्यं तीथभूमता हि साधर्वः, कािेन फिते ेतीथ ंसद्यः साधुसर्ागर्ः ।

नाम्भोर्यातन तीथातमन न देर्वा र्ूल्च्छार्याः, ते पुनन्त्युरुकािेन दिनमादेर्व साधर्वः ।

207 कस्यधचत् ्ककर्वप न िरणीयर् ्

र्र्वमाक्यर्वप नोच्चरणीयर् ्

श्रीपतेः पदयुगे स्रणीयर् ्

िीिया भर्वजिं ंतरणीयर् ्

वेदों की पैतृक् बशि श्राद्ध से शभन्न िै, यद्यवप वपतृयृज्ञ का रूि विंह िै। 'गौतर्'[208] और 'आपस्तम्बर209

र्ें श्राद्ध-वर्वधध का वर्वस्तृत वर्वर्वरण हदया गया िै। सीधी-सादह वपत्–्पूजा का स्थान श्राद्ध को हदया गया। कौन-कौन िोग श्राद्ध करने के अधधकारह िैं, वे तनल्श्चत कर हदए ग िैं। वपिे-वपि पूर्वजमों की तीन पीहढयों तक का श्राद्ध ककया जाता था, परंतु र्नु के सर्य से सूची र्ें तीन पीहढयां और जोड़ दह गईं। तनकट के तीन पूर्वजमों और उनसे वपिे के तीन पूर्वजेम र्ें अंतर रखा गया िै। तनकट के पूर्वजमों को वपण्ड अथात्म ्खाद्य के गिो पाने का अधधकार िै और उनसे वपिे के तीन को वपण्ड का कुछ अंश पाने का िह िक िै। र्नु ने तो केर्वि वपतृपृक्ष के पूर्वजमों के शिए श्राद्ध का वर्वधान ककया था, ककंतु याज्ञर्वलक्य और उसके अनुयातययों ने यि तनयर् बनाया था कक र्ातृपृक्ष के भी तीन तनकटस्थ पूर्वजमों को अपनी पुबत्रयों के पुत्रों (दौहितों) से वपण्ड पाने का अधधकार िै।210 श्राद्ध पूर्वजमों के प्रतत श्रद्धा या सम्र्ान का कृत्य िै। िर् यि प्रदशितम करते िैं, कक िर् उर्न्िें याद रखे िुए िैं, उनका आदर करते िैं और उनकी भूख-प्यास शर्टानेके शिए उर्न्िें प्रतीक के रूप र्ें भोजन और जि प्रस्तुत करते िैं। यि हदर्वंगतों के साथ कलपना-प्रर्वण सल्म्र्िन का कृत्य िै।

यहद गोरक्षा का धाशर्कम कतव्मय के रूप र्ें वर्वधान ककया गया िै, तो इससे केर्वि यिह प्रकट िोता िै कक तािल्ददयों से चिह आ रिह परम्परा टूटह निहं ंिै। जब शिकारह के भ्रर्णिीि जीर्वन का स्थान कृषक जीर्वन ने शिया, जब अन्न बटोरनेर्वािों का स्थान अन्न उगाने र्वािों ने शिया, तब गाय, जो दैतनक भोजन के शिए दूधू देती थी और खेती की वर्वर्वर्वध प्रकक्रयाओंर्ें सियता देती थी, कुटुम्ब के शिए बिुत बड़ी सियक बन गई। आज भी उन हिन्दुओं र्ें, जो तनराशर्ष भोजी िैं, दूधू और उससे बने पदाथों का र्ूलय बिुत आंका जाता िै। गाय को र्ानर्व जातत की धाय र्ाना जानेिगा। र्विुत प्रारल्म्भक काि से िह गोरक्षा को धाशर्कम अनुर्ोदन प्रदान ककया गया।'[211] जब तक भारत की बिुसंख्या कृवष पर तनभरम बनी रिती िै, और खेती र्िीनों से निहं िोने िगती, तब तक गो-रक्षा उपयोगी िै। परन्तु इसर्ें धाशर्कमता की कोई बात निहं िै। गाय पिु- जगत् ्की प्रतीक िै और उसके प्रतत आदर का अथ मपिु–्जगत् ्के प्रतत आदर िै। और कफर भी आज, भारत र्ें पिुओं के कष्टों के प्रतत पाषाणहृदयता और शिकार या बशि के शिए पिुओं की ित्या अतनयंबत्रत रूप र्ें वर्वद्यर्ान िै, चािे र्वि हिन्दू ूधर् मकी भार्वना के ककतनी िह प्रततकूि क्यों न िो। बिुत-से हिन्दू ूराजा और हिन्दू ूजनता इस सम्बन्ध र्ें जरा भी धचल्न्तत प्रतीत निहंिोती।

जातत (र्वण)म और अस्पृशूयता

---

208 15

209 2

210 जब वपतृपृक्ष के पूर्वजमों के सम्र्ान र्ें अन्त्येल्ष्ट कक्रयाएं यथावर्वधध सम्पन्न की जा चुकें, उसके बाद र्ातृपृक्ष के पूर्वजमों को भी वपण्ड (भोजन के गिो) हदए जाने चाहिए।" -1-24-2

211 तुिना कील्जए, चाणक्य :

आदह र्ाता गुरोः पत्नी िाह्मणी राजपल्त्नका,

धनुधानमी तथा पृथ्वूी सप्तैता र्ातरः स्र्ृताः ।

जाततयों या वर्गों का वर्वभाजन व्यल्क्तगत स्र्वभार्व पर आधाररत ि,ै'[212] जो अपरर्वतनमीय निहं ंि।ै प्रारम्भ र्ें केर्वि एक िह र्वण मथा। िर् सबके सब िाह्लण थे या सबके सब िूद्र थे।213 एक सूतृत के रू् पाठ र्ें किा गया ै किक जब व्यल्क्त जन्र् िेता ि,ै तब र्वि िूद्र िोता ि ैऔर कफर िुद्ध िोकर र्वि िाह्लण बनता ि।ै'[214] सार्ाल्जक आर्वश्यकताओं और र्वैयल्क्तक कर्ों के अनुसार िोगों को र्वर्वशभन्न र्वगों र्ें बांट हदया गया ि।ै िाह्लण िोग पुरोहित ि।ैं उनके पास न सम्पवत्त (जायदाद) िोनी चाहिए और न कायकमारह (िासन की) िल्क्त। र्वे िोग द्रष्टा (ऋवष) ि,ैं जो सर्ाज के अन्त:करणस्र्वरूप ि।ैं क्षबत्रय िोग प्रिासक ि,ै ल्जनका शसद्धान्त ि ैजीर्वन के प्रतत सम्र्ान और श्रद्धा। र्वैश्य िोग व्यापारह और कारहगर ि,ैं शिलप-ििकौ र्वािे िोग, ल्जनका उद्देश्य ि ैकायपमटुता। अंिकिु कार्गर, श्रशर्क र्वग,म िूद्र ि।ैं उनकी अपनेकाय मर्ें काय मके शिए कोई र्वर्विेष रुधच निहं िोती; केर्वि अनुदेिों का पािन करते जाते िैं और किु काय मर्ें उनका योग (देन) केर्वि अंर्ात्न िह िोता ि।ै र्वे तनदोष नोर्वगों का जीर्वन बबतातैं और परम्परागत रहततयों को अपनाते ि।ैं उनका सारा आनन्द र्वर्वािो और वपतृत्र्व की पाररर्वाररक तथा अन्य सार्ाल्जक सम्बन्धों की ल्ज़म्र्ेदाररयों को पूरा करने र्ें िह िोता ि।ै र्वणों के आधार पर बनिुए सर्ू (जाततयां) सर्ाज के सांस्कृततक, राजनीततक, आधथकम और औद्योधगक अनुभागों का कायभमार संभािनेर्वािह व्यार्वसातयक श्रेखणयां अधधक ि।ैं हिन्दू ूधर् मने आययों को, द्रर्वड़ों को और पूर्व मकी ओर गंगा की घाटह र्ें आ भटकी रंगीि जाततयों को और हिर्ािय-पार से आक्रर्ण करनेर्वािे पाधथयमन, सीधथयन और िूण िोगों को अपनेबाड़े र्ें खींच शिया। इससे अपने बाड़े र्ें अनेक प्रकार के र्वर्वर्वध िोगों को शिया और धर्-म परर्वतनम करके हिन्दू ूबनने र्वािे िोगों को यि छूट दह कक र्वे नये धर् मर्ें रितिुए भी अपनेपुराने धर्ों की र्वर्वधधयों और परम्पराओं को बनाए रखें, यद्यवप उनके रूपों र्ें सदैर्व कुछ न कुछ परर्वतनम ककया गया। 'र्िाभारत' र्ें इन्द्र सम्राट् र्ान्धाता से किता ि ैकक र्वि यर्वनों जैसी सब र्वर्विेदी जाततयों को आयों के प्रभार्व र्ें िाए।215 हिन्दू ू धर् मर्ें उसके र्वकास के सभी स्तरों पर जाततभेदों की आश्चयजमनक र्वर्वर्वधता रिह ि।ै 'ऋग्र्वेद' के काि र्ें र्वभाजन आयों और दासों के रूप र्ें था, और स्र्वयंआयों र्ें कोई पक्के र्वभाग निहं थे। 'िाह्लण ग्रन्थों' के काि र्ें चारों र्वण मजन्र् पर आधाररत अनम्य (सुकठोर) सर्ूों र्ें र्वभक्त िो चुके थे। ज्यों-ज्यों काि-ििकौं की संख्या और जहटिता बढह, त्यों-त्यों धन्धों (पेिों) के आधार पर जाततयों का र्वकास िुआ। सूतृतयों ने अनधगनत जाततयों का कारण अनिुोर् और प्रततिोर् र्वर्वािों द्र्वारा चारों र्वणों के परस्पर शर्श्रण को बताया ि।ै जबकक आयों ने देखा कक उनके यिां अनेक जाततयों और रंगों के अनेक कबीिों और श्रेखणयों जनसंख्या र्वद्यर्ान ि;ैं ये कबीिे और श्रेखणयां र्वशभन्न देर्वताओं और भूत-प्रेतों की पूजा करते ि,ैं अपनी असदृि प्रथाओं और रिन-सिन की आदतों पर चिती िैं और अपनेकबीिे भार्वनाओं से भरह िुई ि,ैं तो उन्िोंनेचारों र्वगीकरण को अपनाकर उन

---

212 सत्त्र्वाधधको िाह्लणः स्यात् क्षल्त्रयस्तु रजोधधकः
तर्ोधथको भर्वेत् र्वैश्यः गुणसाम्यात्तु िूद्रता।

213 बृिदारण्यक उप०, 1-4-11-15; र्नु० 1-31; र्िाभारत से भी तुिना कील्जए ,12-188 :
न र्वर्विेषोल्स्त र्वणानमां सर्व मिाह्यशर्दं जगत्।
ह्लिणा पर्वसृमष्ट हि कर्शमभर्वणमतमां गतर्।

214 जन्र्ना जायते िूद्रः संस्कारैद्मर्वज उच्यते।

215 िाल्न्तपर्व,म 65

सबको एक िह सर् ्रें ठीक ढंग से बबठा देने का प्रयत्न ककया। ये चार र्वण मर्िू जातीय भेदों का अर्वक्रर्ण कर िै (उनसे ऊपर िैं)। यि ऐसा र्वगीकरण िै, जो सार्ाल्जक तथ्यों और र्नोर्वर्वज्ञान पर आधातत िै। हिन्दू ूधर् मकी एक सारभूत र्वर्वर्षेता िै- र्नुष्य र्ें आत्र्ा को स्र्वीकार करना; और इसी से सब र्नुष्य सर्ान िैं। र्वण मया जातत काय म की असदिृता िै और जीर्वन का िक्ष्य तनष्कार सेर्वा द्र्वारा जातत-र्वैर्वर्वध्य से ऊपर उठ जाना िै। र्वण-मव्यर्वस्था सम्पूण मर्ानर्व जातत पर िाग करने के शिए िै। 'र्िाभारत' र्ें किा गया िै कक यार्वन (यूनानी, ककरात, दरद, चीनी, राज सीधथयन), पह्र्वि (पाधथयमन), िर्वर (द्रर्वर्वड़ पूर्व मजाततयां) तथा अन्य कई अहिन्दू िोग इन्िी चार र्वणों र्ें से ककसी न ककसी र्ें आते िैं।'[216] ये र्वर्विेदी जन-जाततयां(कबीिे) हिन्दू ूसर्ाज र्ें घुि-शर्ि गईं। र्वि सर्ंजन, ल्जसके द्र्वारा र्वर्विेशियों को हिन्दू ूधर् मर्ें दहक्षक्षत कर शिया जाता िै, बिुत प्राचीन काि से िोता चिा आ रिा िै। जब तक र्वर्विेदी िोग सर्ाज की साधारण परम्पराओं और सांझे ेकानूनों का पािन करते थे, तब तक उन्िें हिन्दू ू िी सर्झा जाता था। बड़े–बड़े ेसाम्राज्य-तनर्ातमा, नन्द, र्ौय मऔर गुप्त, पौराखणक दृल्ष्टकोण के अनुसार तनम्न र्वगों र्ें उत्पन्न िुए थे। गुप्त सम्राटों ने शिच्छबबयों र्ें र्वर्विाि ककए, जो कक म्िेच्छ सर्झे ेजाते थे। बाद र्ें कुछ हिन्दुओंुने यूरोवपयन और अर्ेररकनों से भी र्वर्विाि ककए िैं। यद्यवप प्रबि जाततभेद अर्व भी प्रचशित िै, परन्तु अन्तजातमीय र्वर्विाि असन्तोषजनक निहं रिे। सार्ाल्जक दिाएं अनुकूि िों, तो र्वे और भी अधधक सफि िोंगे।217 इस प्रणािी को इस उद्देश्य से रचा गया था कक इसके द्र्वारा पििे भारत की र्वर्वशभन्न जातीय जनता और उसके बाद सर्स्त संसार की जनता एक िी र्िान आधथकम, सार्ाल्जक, सांस्कृततक और आध्याल्त्र्क श्रृंखिा र्ें बंध सके। प्रत्येक र्वग मके शिए सुतनल्श्चत कृत्य और कतव्मय तनयत करने और उन्िें अधधकार और र्वर्वर्षोधधकार देने से यि आिा की जाती थी, कक र्वर्वशभन्न र्वग मसियोगपूर्वकम काय मकरेंगे और उनर्ें जातीय सर्न्र्वय िो सकेगा। यि एक ऐसा सांचा िै, ल्जसर्ें सब र्नुष्यों को, उनकी व्यार्वसातयक योग्यता और स्र्वभार्व के अनुसार, ढािा जा सकता िै। र्वण-मधर् मका आधार यि िै कक प्रत्येक व्यल्क्त को अपने र्वर्वकास के र्वर्वधान को पूण मकरने ेका यत्न करना चाहिए। िर्ें अपने अल्स्तत्र्व के नर्ूने ेके अनुकूि िी अपने जीर्वन को अनुिाशसत करना चाहिए; ल्जस

नर्ूने ेके िर् निीं, उसके पीछे दौड़कर अपनी ऊजाओं का अपव्यय करने से कोई िाभ निीं।

---

216 िाल्न्तपर्व,म 55।साथिी देखखए र्नु, 10-43-44

217 एक उत्कृष्ट पयर्वेमक्षक िाड मिाइस ने िाि्ी के र्वर्वषय र्ें किा िै, "पूर्व मतथा अफ्रीका के पल्श्चर्ी तट पर ल्स्थत पुतगमािी उपतनर्वेिों के अततररक्त िाि्ी िी एक ऐसा देि िै, जिांयूरोवपयन अफ्रीकन जाततयों का सल्म्र्श्रण कानून या प्रथा की ककसी भी रोकटोक के बबना िो रिा िै। र्ानर्वीय सर्ानता और र्ानर्वीय एकता के शसद्धान्त र्विां पूरी तरि अपना कार् कर रिे िैं। यि काय मइतना अधधक सन्तोषजनक िै कक र्विां र्वग-मसंघष मबिुत कर् या बबिकुि निहं िै। गोरे िोग नीग्रो िोगों को बबना कानून के दंड निहं देतेया उनके साथ दवुुर्यर्विार निहं करते;े र्वस्तुतः, र्नैं कभी-कदास राजनीततक उग्र आन्दोिन के अंग के रूप र्ें िुए अत्याचारों को छोड़कर दक्षक्षण अर्ेररका र्ें किहं 'भी नीग्रो िोगों को बबना कानून के दंड देने की बात निहं ं सुनी। नीग्रो िोगों पर धृष्टता का दोषारोपण निहं ंककया जाता; और न उनर्ें अपराध करने की प्रर्वृवत्त िी उसकी अपेक्षा अधधक प्रतीत िोती िै, ल्जतनी कक नैततकता और सम्पवत्त के सम्बन्ध र्ें शिधथि धारणार्वािे ककन्िहं भी अज्ञ िोगों र्ें स्र्वभार्वतः पाई जाती िै। रक्त के इस परस्पर सल्म्र्श्रण का िाि्ी के यूरोवपयन तत्त्र्व पर अन्त र्ें जाकर क्या प्रभार्व पड़ेगा, यि भवर्वष्यर्वाणी करने का दसुािस र् ैंनिहं करूंगा। यहद कुछ थोड़े–से उल्िेखनीय उदािरणों के आधार पर कुछ तनणयम ककया जा सके, तो इतना किा जा सकता िै कक इससे बौद्धधक प्रर्ाप (स्तर) धगरे िी, यि आर्वश्यक निहं िै।"- 'साउथ अर्ेररका, ऑब्जर्वेिन्स ऐंड इम्प्रेिन्स' पृ॰ 477, 480

इस योजना का यि ध्येय अर्वश्य था कक आनुर्वंशिकता और शिक्षा की िल्क्तयों का प्रयोग करके वर्वशभन्न वर्गों के सदस्यों र्ें यथायोग्य भार्वना और परम्परा का वर्वकास ककया जाए, परन्तु इस वर्वभाजन को सुकठोर (अनम्य) निहं सर्झा जाता था। कुछ उदिारण ऐसे िैं, ल्जनर्ें व्यल्क्तयों और सर्ूिों ने अपना सार्ाल्जक र्वग म(र्वण)म बदि शिया था। वर्वश्र्वाशर्त, अजर्ीढ और पुरार्ीढ को िाह्र्णर्वग मर्ें स्थान हदया गया था, और यिां ं तक कक उन्िोंने र्वैहदक ऋचाओंकी रचना भी की थी। यास्क ने अपने 'तनरुक्त' र्ें बताया िै कक सन्तानु और देर्वावप दो भाई थे;े उनर्ें एक क्षशिय राजा बना और दूसूरा िाह्र्ण पुरोहित । दासकन्या इुषा के पुत्न कर्वष ने एक यज्ञ र्ें िाह्र्ण पुरोहित का काय मककया था।'[218] जनक ने जो जन्र् से क्षबत्रय था, अपनी परररपक्र्व बुद्धध और सन्तजनोधचत चररत्र के कारण िाह्र्ण-पद प्राप्त कर शिया था।219 भागर्वत र्ें बताया गया िै कक धष्ट, नार्क क्षबत्रय जातत उन्नत िोकर िाह्र्ण बन गई थी। जात्युत्कष मके शिए व्यर्वस्था रखी गई िै। भिे िह आप िूद्र िों, पर यहद आप अच्छे कार् करते िैं तो आप िाह्र्ण बन जाते िैं।220 िर् िाह्र्ण जन्र् के कारण, संस्कारों के कारण, अध्ययन या कुटुम्ब के कारण निहं ंिोते, अवपतु अपनेआचरण के कारण िोतेिैं।221 भिे िह िर्ूद्र के घर र्ें जन्र् क्यों न शिया िो, अच्छे आचरण द्र्वारा िर् उच्चतर् ल्स्थतत (पद्) तक पिुंच सकतेिैं।222

र्ानर्व-प्राणी सदा बनता रिता िै। उसका सार गतत र्ें िै, जकड़े िुए उद्देश्यों र्ें निहं। एक स्र्वस्थ सार्ाल्जक गतिीतीता थी, और बिुत सर्य तक र्वण मआनुर्वंशिक, सुतनयत जाततय निहं ंबने। परन्तु कर् मके आधार पर वर्वभाजन बिुत प्राचीन कािा से िह कार् निहंकरता खा रैगस्थनीज़ िर्ें र्वण-मव्यर्वस्था से शभन्न वर्वभाजन के वर्वषय र्ें बताता िै। उसने राजनीततज्ञों सरकारह कर्चमाररयों को सबसे ऊंचा स्थान हदया िै और शिकाररयों तथा जंगिह िोगों को छ वर्वभाग र्ें रखा िै। पतञ्जशि निाह्र्ण राजाओंऔर र्नु ने िूद्र िासकों का उलिेख ककया िै। शसकन्दर के सर्य िाह्र्ण सैतनक िोतेथे,े जैसे कक आज भी िोतेिैं। र्वण-मव्यर्वस्था का िक्ष्य चा जो कुछ रिा िो, परन्तु िुआ यि कक िोगों र्ें एक शर्थ्या अशभर्ान की भार्वना आ गई और उसके फिस्र्वरूप तनचिे र्वणों का ततरस्कार िोनिेगा। 'रार्ायण' र्ें रार् िम्बूक को तप करने ेके कारण र्ार डािता िै।'[223] िूद्रों के सम्बन्ध र्ें र्नु की दुभाग्ममयपूण मउल्क्तयां सम्भर्वतः उसके बौद्ध धर्वमर्विेषेणे रुख से प्रेररत थीं; जो बौद्धधर् म िूद्रों को अध्ययन और र्वैराग्य का उच्चतर् धाशर्कम जीर्वन बबताने का अधधकार देता था। र्नु की दृल्ष्ट र्ें ये र्वे

---

218 ऐतरेय िाह्र्ण, 2-19

219 रार्ायण बािकाण्ड, 51-55

220 एशभस्तुकर्शमभदेवर्व िुभैराचररतैस्तैथा िूद्रो िाह्र्णतां यातत र्वैश्यः क्षबत्रयतां व्रजेत् ्।

221 न योतननावमप संस्ंकारो न शुरुतं ंन च सन्तततः कारणातन द्र्वजत्र्वस्य र्वृत्तृतरेर्व तु कारणर्।् और साथ िह :

सर्वोयंाह्र्णो िोके र्वृत्तेेन च वर्वधीयते े

र्वृत्तृतल्स्थतस्तु िूद्रोवप िाह्र्णत्र्वं ंतनयच्छतत।

222 िूद्रयोनी हि जातस्य सद्गुणानुपततष्ठतः ।

र्वैश्यत्र्व िभतिाह् क्षबत्रयत्र्वं ंतथैर्व च।

आजर्वेम र्वतर्मानस्य िाह्र्ण्ये अशभजायते। - अरण्यपर्व।म

223 काशिदास नेअपने 'रघुर्वंि'(15-42-57) र्ें और भर्वभूतत ने अपने 'उत्तर रार्चररत' र्ें उसे स्र्वग मगया बताया िै।

दूिर थे,े जो द्वर्वजों (िाह्मणों या उच्च र्वणों) की-सी िान हदखाया करते थे।224 र्नु ने धरि्मास्त्रों के अध्ययन का अधधकार केर्वि िाह्मणों तक सीशर्त रखा िै, परन्तु िंकराचाय मका र्त िै कक उन्िें सब र्वणों के िोग पढ सकते िैं। जब र्वण-मव्यर्वस्था की र्िू योजना र्ें अत्यधधक रुहढर्वाद (तनयर्-तनष्ठा) आ गया, तब उसके वर्वरोध र्ें बौद्ध और जैन धर्मों के अनुयातययों ने प्रततर्वाद की आर्वाज़ उठाई; और उन्िोंने र्िि या र्ानर्वीय भ्रातृभार्व के आदि मपर ज़ोर हदया। वर्विेष रूप से र्वे िोग इन नये धर्मों र्ें दहक्षक्षत िो गए, ल्जन्िें अपनी िल्क्तयों को उच्चतर् सीर्ा तक वर्वकशसत करनेका अर्वसर प्राप्त निहंथा। हिन्दू ूआचायों ने जातत के आधार पर भेदभार्व की तनन्दा की। 'र्वज्रसूचीकोपतनषद्' का र्त िै कक ऐसे बिुत-से िोग िाह्मण र्ुतनयों के पद तक पिुंच गए थे, जो अ–िाह्मखणयों की सन्तान थे।225 परन्तु िीघ्र िी जातत के सम्बन्ध र्ें कट्टरता और पक्षपात प्रबि िो उठे और उनसे कष्ट पाकर बिुत-से िोग र्ुसिर्ान बन गए। हिन्दू ूसर्ाज र्ें जीर्वन और प्रकाि के बुझते िुए अंगारों को कफर प्रदहप्त करने के शिए रार्ानन्द, कबीर, नानक, दादू ूऔर नार्देर्व जैसे र्ानर्वीय भ्रातृभार्व के प्रचारक उठ खड़े िुए। पल्श्चर्ी सभ्यता के उदारता बढानेर्वािे प्रभार्व के पररणार्स्र्वरूप जात-पांत की प्रथाएं धीरे-धीरे सुधर रिी िैं और र्वैर्वाहिक प्रततबन्ध ढीिे पड़ रिे िैं। रार्र्ोिनराय, दयानन्द सरस्र्वती और गांधी ने अन्य अनेक िोगों के साथ इस नीरर्व क्राल्न्त र्ें योग हदया।226 प्राचीन िास्त्रों की भार्वना से उन्िें बिुत सर्थनम शर्िा। वर्वप्र को वर्वप्र इसशिए किा जाता िै कक र्वि र्वेदपाठ करता िै और िाह्मण िह्मज्ञानी िोनेके कारण िाह्मण किाता िै।'[227] 'र्िाभारत' के एक प्रशसद्ध श्िोक र्ें किा गया िै कक िर् सब िाह्मण िी उत्पन्न िोते िैं और बाद र्ें अपनेआचरण और धन्धों (पेिों) िो गया िै अिग-अिग र्वणे र्ें पिुंच जाते िैं।228 पििे सारा संसार एक िी र्वण मथा, और बाद र्ें चार र्वण म िोगों के अपने-अपनेआचरण के कारण स्थावपत िुए।'[229] आहदर् जाततयों का हिन्दूकरण, उच्चतर आदिों के प्रतत स्र्वाभावर्वक आकषणम, धीरे-धीरे बबना ककसी दबार्व के िोता रिा िै। इसे और भी िीघ्र तथा सफि बनानेके शिए सर्वण महिन्दुओं को अपनी पृथृक्ता और अशभर्ान को त्याग देना चाहिए। र्वणभेमद ने हिन्दुओंर्ें एक जातीयता का वर्वकास निहं िोनेहदया। एक सीर्ा तक अर्वयर्वात्र्क सल्ष्ट (सम्पूणतमा) और सांझे ेउत्तरदातयत्र्व

---

224 िूद्रांश्च द्वर्वजशिङ्कधगनः ।

225 जात्यन्तरेषु अनेकजाततसम्भर्वात् र्ृषियमो बिर्वः सल्न्त व्यासः

कैर्वतकमन्यायां, र्वशिष्ठ उर्वश्मयां... अगस्त्यः किशिज इतत श्ुरुतत्र्वात्।ू

226 हिन्दू ूर्िासभा तक ने संस्तार्व पास ककया, "क्योंकक आजकि की जन्र् पर आधाररत र्वण-मव्यर्वस्था सार्वभमौर् सत्यों और नैततक शिक्षाओंके स्पष्ट रूप से प्रततकूि िै, क्योंकक यि हिन्दू ूधर् मकी र्िू भार्वना का ठीक प्रततपक्षी (वर्वरोधी) िै, क्योंकक यि र्ानर्वीय सर्ानता के बबिकुि प्रारल्म्भक अधधकारों का उपिास करती िै, इसशिए यि अखखि भारतीय हिन्दू ू र्िासभा इस प्रथा के प्रतत घोर वर्वरोध प्रकट करती िै और हिन्दू ूसर्ाज से अनुरोध करती िै कक र्वि िीघ्र से िीघ्र इसे सर्ाप्त कर दे।"

227 र्वेदपाठेन वर्वप्रोस्तु िह्मज्ञानात्तु िाह्मणः ।

इस िोकवप्रय श्िोक से तुिना कील्जए।

228 अनादावर्वि संसारे दुरु्वरर करध्वजे

कुि च काशर्नीर्िू काजाततपररकलपना ।

229 एकर्वणशमदं पूर्व मवर्वश्र्वर्ासीद् युधधल्ष्ठर

कर्कमक्रयावर्विेषेणे चातुर्वण्मय मप्रततल्ष्ठतर् ्। - अरण्यपर्व म

की भार्वना का वर्वकास करनेके शिए िर्ें जात-पांत की भार्वना को सराप्त करना िोगा। िर्ें अनधगनत जाततयों और उपजाततयों से भी वपण्ड छुड़ाना िोगा, ल्जनके साथ ऐकांततकता, ईष्याम, िोभ और भय की भार्वना जुड़ी िै। ारिहररक िुद्धध (िौच) आन्तररक िुद्धध का िह साधन िै। स्र्वच्छता हदव्यता के शिए प्राथशर्क सियता िै। स्र्वच्छता के सम्बन्ध र्ें िर्ारे वर्वचार कुछ और अधधक र्वैज्ञातनक िोने ेचाहिएं। पुराने ेसर्य र्ें िाह्र्ण, क्षबत्रय और र्वैश्य एक-दूसूरे के िाथ का पकाया िुआ अन्न खा सकतेथे। र्नु का कथन िै कक द्वर्वज को िूद्र के िाथ का पका भोजन निहंकरना चाहिए।230 परन्तु जो खाद्य दास ने या पररर्वार के शर्त्र ने या खेती के िाभ र्ें साझीदार ने पकाया िो, र्वि खाया जा सकता िै।231 िर्ारे इस सर्य र्ें इस प्रकार के भेदभार्व असर्थनमीय िैं और खखझानेर्वािे ैं, और ये स्र्वच्छन्द सार्ाल्जक गतत र्ें रुकार्वट डािते ैं। प्राचीन कािर्ें र्ांस िाह्र्ण िोग भी खाते ेथे। प्राचीन र्वैहदक धर् मर्ें पांच प्रकार के पिुओंकी बशि दह जाती थी: बकरह, भेड़, गाय या सांड, और घोड़ों की।232 बौद्ध, जैन और र्वैष्णर्व र्तों के प्रभार्व के कारण यि प्रथा बुरह सर्झी जानेिगी। र्नु और याज्ञर्वलक्य ने र्ांसभक्षण पर इतने ेअधधक प्रततबन्ध िगा हदए िैं कक र्वे ेर्ांसािार को तनरुत्साहित करते िैं। भारत के कुछ भागों (बंगाि और कश्र्ीर) र्ें आजकि भी िाह्र्ण र्ांस खाते िैं, जबकक कुछ अन्य भागों र्ें (गुजरात र्ें) तनचिे र्वणों के िोग भी र्ांस से परिेज़ करते िैं। िर्ारह आदतें स्र्वच्छता के शसद्धान्तों पर आधाररत िोनी चाहिए, तनषेधों पर निहं। स्पि म से अपवर्वत्न िो जाने की धारणा त्याग दह जानी चाहिए। अस्पृश्यूता कई कारणों से उत्पन्न िोती िै: जातत के तनयर्ों का उल्िंघन करने से; कुछ वर्विेष पेिों को करने से; कुछ अनाय मधर्ों को स्र्वीकार कर िेने से। अस्पृश्यूता का पाप पतनकारह िै। और इस कुसंस्कार को दूरू ककया जाना चाहिए। 'भगर्वद्गीता' र्ें किा गया िै कक स्र्वाभावर्वक योग्यताओं और धर्ों (धन्धों) पर आधाररत केर्वि चार िह र्वण मिैं'[233] और र्नुष्यों की हदव्य (देर्व) और राक्षसी (आसुर), केर्वि ये िह दो श्ेरेखणयां िैं।234 र्नु का कथन िै कक केर्वि चार िह र्वण मिैं, पांचर्वां र्वण मकोई निहं ै।235 िररजनों के वर्वरुद्ध भेदभार्व करना बबिकुि अनुधचत िै।236 जब िंकराचाय मने एक 'अछूत' से बचनेकी

230 4-232; गौतर्, 17-1

231 4-253; आपस्तम्ब 18-1-9, 13, 14

232 1 - 17 - 30,37

233 चातुर्वण्मयं र्मया सृषूटं गुणकर्वमर्वभागिः ।

234 16-6

235 िाह्र्णः क्षबत्रयो र्वैश्यः नयो र्वणामद्वर्वजातयः

चतुचा मएक जाततस्तु िूद्रो नाल्स्त तु पञ्चर्ः ।

236 अन्नर्यादन्नर्यर् ्अथर्वा चैतन्यर्ेर्व चैतन्याद् ।
द्वर्वजर्वर दूरूहकृतेर्वाञ्छशस ककं िूहि गच्छ गच्छेतत।

दिन र्ें गोिर्ेज़ कान्फ्रेंस (1931) र्ें गांधी ने किा था, "यि सशर्तत (अलपसंख्यक सशर्तत) और सारह दुतुनया यि जान िे कक आज ऐसे हिन्दू ूसुधारकों का एक पूरा र्वग मिै, जो यि अनुभर्व करते िैं कक अस्पृश्यूता एक िज्जा की र्वस्तु िै, अछूतों के शिए निहं, अवपतु सर्वण महिन्दुओंके शिए; और इसशिए उन्िोंने इस किंक को दूरू करने की ठान िह िै।... अस्पृश्यूता जीवर्वत रिे, इसकी तुिना र्ें र् ैंयि अधधक पसन्द करूंगा कक हिन्दू ूधर् मर्र जाए। ल्जतना भी ज़ोर देकर र् ैंकि सकता िंूू, उतना ज़ोर देकर र् ैंकि रिा िंूू कक यहद इस र्वस्तु का वर्वरोध करने र्वािा केर्वि र् ैंिह अकेिा व्यल्क्त िोऊं, तो भी र् ैं अपनी जान की बाज़ी िगाकर भी इसका वर्वरोध करूंगा।"

चेष्टा की तो उसे यि बताया गया कक यि अनुधचत िै। पूजा के स्थान, सार्वजमतनक कुएं, श्र्ानि और स्नान के घाट जैसी सार्वजमतनक उपयोग की र्वस्तुएं, िोटि और शिक्षा-संस्थाएं सबके प्रर्वेि के शिए खुिे रिनी चाहिएं। इन र्वर्षयों र्ें सुधार भारतीय राजाओंद्र्वारा िाशसत भारतीय राज्यों र्ें किहं अधधक प्रभार्वी िुए िैं।237 आज जो कुछ ककया जा रिा िै, र्वि न्याय का या दान का प्रश्न निहं िै, अवपतु प्रायल्श्चत्त का प्रश्न िै। ल्जतना कुछ िर्ारे सार्थ्य र् र्ें िै. र्वि सब भी जब िर् कर चुकेंगे, तब भी, इस र्वर्षय र्ें ल्जतना िर्ारा पाप सार् अलप अंि का भी प्रायल्श्चत्त निहं िो पाएगा।

संस्कार

संस्कारों र्ें प्रर्ुख ये िैं : (1) जातकर् मया जन्र्; (2) उपनयन या आल्त्क जीर्वन र्ें दहक्षा; (3) र्वर्वाि; (4) अंत्येल्ष्ट या र्ृतक की अंततर् कक्रया। अन्य संस्कार, जैसे नार्करण बा का नार् रखना, अन्नप्रािन-बच्चेको पिििे बार पका िुआ भोजन खखिाना, र्वद्यारम्भ- बच्चे की शिक्षा का आरम्भ िोकवप्रय ढंग के संस्कार िैं, ल्जनसे बच्चे के प्रतत प्रेर् और र्वात्सलय प्रकट िोता िै। उपनयन को छोड़कर बाकी सब संस्कार भिे िह अिग-अिग रूपों र्ें, सभी हिन्दुओं द्र्वारा ककए जाते िैं। उपनयन आध्याल्त्क पुनजन्मर् िै। पििे जन्र् र्ें र्वर्वच्छेद, र्वयोग और आर्वश्यकता के सार्ने झुकना िोता िै। यि दूसूरा जन्र् सल्म्र्िन और स्र्वाधीनता र्ें िोता िै। पििे जन्र् र्ें अल्स्तत्र्व का र्वर्िुद्धतया बािरह रूप िह िोता िै; दूसूरे जन्र् का अथ मिै कक जीर्वन को गिरे आंतररक स्तर पर जीना िै। उपनयन संस्कार का र्ूि भारत-ईरानी िै। इसका सार पवर्वत्न गायत्नी र्ंत्र शसखानेर्ें िै। यि एक प्राथनमा िै जो सवर्वतृ (सूय)म'[238] से की गई िै, जो सृल्ष्ट का र्ूि उद्गर् और प्रेरेक र्ाना जाता िै। सारा सत्य प्रतीकात्क िै। सूय मजो प्रकाि और जीर्वन का प्रत्यक्ष स्रोत िै, हदव्यता (ईश्र्वरत्र्व) की प्रकृतत (र्वभार्व) को अन्य ककसी भी कलपनात्क संकेत की अपेक्षा किहं अधधक अच्छी तरि व्यक्त करता िै। हदव्य िल्क्त का यि सबसे प्रर्ुख दृश्य आर्वर्वभार्वम (प्रकटन) िै। र्ंत्र का अथ मिै: "िर् दैर्वीय प्रकाि की देदहप्यर्ान हिर्ा का ध्यान करते िैं;

---

237 बड़ौदा के स्र्वगीय र्िाराजा गायकर्वाड़ नेकई बिुत स्तुत्य सुधार ककए थे और यि घोषणा की थी कक राज्य के प्रबन्ध र्ें र्वद्यर्ान हिन्दू र्ल्न्दर सब जाततयों के हिन्दुओं के शिए, अन्त्यजों तक के शिए भी, खिो हदए जाएंगे। 12 नर्वम्बर, 1936 को त्रार्वणकोर-नरेि ने तनम्नशिखखत घोषणा की

> "िर्ारे धर् मकी सत्यता और प्रार्ाखणकता र्ें गिरा र्वश्र्वास रखतेिुए, यि सर्झतेिुए कक यि हदव्य प्रेरणा और सर्वव्मयापी सहिष्णुता पर आधाररत िै, यि जानते िुए कक अपने व्यर्विार र्ें गत िताल्ददयों र्ें यि अपने आपको बदिते िुए सर्यों की आर्वश्यकताओं के अनुकूि ढािता रिा िै, और इस र्वर्षय र्ें उत्सुक िोकर कक र्ेटे हिन्दू प्रजा का कोई भी व्यल्क्त

[illegible] केकारण हिन्दु धर् मकी सान्त्र्वना और िल्न्त से र्वंधचत रिे, र्ैं एतद्द्र्वारा घोषणा करता िूं, यि आज्ञल्प्त करता िूं और आदेि देता िूं कक र्ंहदरों र्ें सर्ुधचत र्वातार्वरण बनाए रखने के शिए और उनके पूजा-अनुष्ठान आहद को बनाए रखने के शिए जो भी शियर् और ितें बनाई जाएं और िागू की जाएं, उनका पािन करते िुए, अब सेसरकार द्र्वारा तनयंल्त्रत र्ल्न्दते र्ें प्रर्वेि या पूजा के शिए जन्र् या धर् मके कारण ककसी भी हिन्दू पर कोई भी प्रततबन्ध निहं रिेगा।"

238 ऋग्र्वेद, 3-62-10

र्वि िर्ारह बुद्धि को पे्ररणा दे।"[239] उपतनषदों के कि र्ें उपनयन एक सीधा-सादा अनुष्ठान था। शिष्य सशर्धाएं िथि र्ें िेकर गुरु के पास जाता था और छात्र (िह्र्चय)म के आश्रर् र्ें प्रववष्ट िोने की इच्छा प्रकट करता था। रृगृचर् मधारण करना, उपर्वास करना तथा अन्य अनुष्ठान उस कि से अब तक चिे आ रिे िैं, जबकक वैहदक आय मर्वनों र्ें रि करते थे। जब सत्यकार् जाबाि गौतर् िररद्रुर्त के पास आकर सच बात बता देता िै, तो गौतर् किता िै, "सशर्धाएं िे आओ वर्त्स, र् ैंतुम्िें दहक्षा दूंगा।"[240] सूिों और स्रृततयों र्ें पिुंचकर यि अनुष्ठान बिुत वर्वर्द िो गया िै। 241सुप्रशसद्ध र्ंत्र को बोिते िुए यज्ञोपवीत धारण करना दहक्षा का प्रतीक िै। यद्यवप क्षबत्रयों और वैश्यों को भी उपनयन का अधधकार था, पर िगता िै कक वे सब इस अधधकार का उपयोग करते निहं थे। संध्या र्ें अर्वैहदक तत्त्व शार्र् गये िैं: संध्या के कई अर्व (अंग) िैं: आचर्न (जि के छूट भरना), प्राणायार् (श्र्वास का तनयंत्रण), र्ाजनम (र्ंि बोिते िुए अपनेिरहर पर जि तछड़कना), अघर्षणम (सूय मको जि-अर्घय मचढाना), जप (गायक) र्ंका बार-बार पाठ), उपस्थान (प्रातःकाि सूय मकी उपासना के शिए और सायंकाि की उपासना के शिए र्ंत्रों का पाठ), उपसंग्रिण (अपनेगोत्र और नार् का उच्चारण करते िुए, अपने कान छूकर, पैर पकड़कर और शसर झुकाकर यि किना कक 'र् ैंप्रणार् करता िै)।

यि बिुत आर्वश्यक िै कक र्ित्त्वपूण मसंस्कार उपनयन करने की अनुर्तत सब हिन्दुओंको, पुरुषों और स्स्त्रयों को, दह जाए, क्योंकक सभी िोग आध्यास्त्र्क अन्तदृस्मष्ट के उच्चतर् स्तर तक पिुंच पाने की क्षर्ता रखते िैं। उस िक्ष्य तक पिुंचने के शिए र्ागों के सम्बन्ध र्ें वर्वशभन्न रूपों का वर्वधान ककया गया िै। ऊपर के तीन र्वर्णों के शिए वैहदक र्ाग मखुिा िै'[242]; 'भागर्वत' का कथन िै कक स्स्त्रयों, शूद्रों और जाततच्युत िाह्र्णों की वेद तक पिुंच निहं िै और इसशिए दयािु र्ुतन ने उनके शिए 'र्िाभारत' की रचना की िै।243 प्राचीनकाि र्ें वेदाध्ययन का तनषेध इतन कठोर निहं था।244 'धर्सूमत्रों' के कि र्ें इस वर्वषय र्ें असहिष्णुता इतनी अधधक थी कक गौतर् ने इस तनयर् का उल्िंघन करने र्वािों के शिए प्रचण्ड दण्डों का वर्वधान ककया िै।245" शंकराचाय मर्वा कथन िै कक भिे िह शूद्र को वेदाध्ययन पर आधाररत िह्र्वर्वद्या का अधधकार निहं िै, कफर भी र्वि अपना आध्यास्त्र्क वर्वकास कर सकता िै, जैसे वर्वदुर और धर्मव्याध ने ककया था और इस प्रकार आध्यास्त्र्क स्र्वाधीनता (र्ोक्ष)

---

239 तत्सवर्वतुर्वरेमण्यंभगो देर्वस्य धीर्हि धधयो यो नः प्रचोदयात् ्।
वैहदक तथा अन्य परम्पराओं र्ें सूय मको परर्ात्र्ा की र्ूतत मके रूप र्ें प्रयुक्त ककया जाता रिा िै। इस प्रथा के वर्वषय र्ें दान्तेकिता िै, "सारे संसार र्ें अन्य कोई इस्न्द्रय-ग्राह्य र्वस्तुऐसी निहं िै, जो परर्ात्र्ा का प्रततरूप बनने के शिए सूय मसे अधधक उपयुक्त िो।"
240 छान्दोग्य उपतनषद, 4 - 4 - 5
241 यज्ञोपर्वीतंपरर्ंपवर्वत्रं प्रजापतेयत् म सिज पुरस्तात् ्।
आयुष्यर्ग्र्यं प्रततर्ुञ्च शुभ्रं यज्ञोपर्वीतं बिर्स्तु तेजः ।
242 परन्तुरथकारों (बढइयो) और तनषाद स्थपततयों (र्वास्तुकारों) को अपर्वाद र्ानकर छूट दह गई थी।
243 स्त्रीशूद्रद्वर्वजबन्धूनां त्रयो न श्रुततगोचरा।
इतत भारतर्ाख्यानं र्ुतनना कृपया कृतर् ्। -1-4-25
244 छान्दोग्य उपतनषद् 4-1-2
245 12-4

प्राप्त कर सकता ि ै, जो कक ज्ञान का फि ि ै।246 जैशर्नी का कथन ि ै कक बादरर के र्तानुसार ि ूद्र भी वैहदक अनुष्ठान कर सकर्तेिैं।247 र्नु[248], ि ंखं249 और यर् ि ूदूरों के संस्कार करने े की अनुर्तत देते ि ैं, ककन्तुये संस्कार वैहदक र्ंत्रों के पाठ के बबना ि ोना चाहिए। कारण चिो कुछ भी क्यों न रिा ि ो, परन्तु इससे कुछ आध्यात्र्क आडम्बर की बू आती थी, और बित वर्वचार-वर्वर्ि् मऔर बित-सी ि ानताुएं उत्पन्न ि ुईं।

अतीत र्ें चिो कुछ भी क्यों न ि ोता रिा ि ो, परन्तु इस सर्य यि अत्यन्त आर्वश्यक ि ै कक ि र्ारे आध्यात्र्क उत्तराधधकार का द्र्वार उन सबके शिए खिो हदया जाए, जो अपने-आपको हिन्दू ू कित ेिैं। कई ि ैर्व और र्वैष्णार्व सन्त अछूत जाततयों के थे े और अन्य अनेक भी ि ाह्र्ण निं ंथे। ऐसे अनेक ि ोग, जो ि ाह्र्ण र्वण मके निं थे, पवर्वत्नता और ईश्र्वर-प्राप्ल्त के शिाराण आदि मतक पिंुचे ि ैं। प्रत्येक धर्-मसुधारक सारे सर्ाज को सत्य, अहिंसा, अपररग्रि आऔर आत्र्संयर् (ि ह्र्चय)म के आदिों द्र्वारा ि ाह्र्णत्र्व के स्तर तक ऊंचा उठानेका यत्न करता ि ै। उन्ि ोंने ऐसी पद्धततयां रची ि ैं, ल्जनके द्र्वारा अनिुाशसत जीर्वन वर्वो र्नुष्य-जातत की रोकों को ि ांघ सकर्तेिैं। श्रर्ण ि ोग, जो बौद्ध दृल्ष्टकोण को अपनाते ि ैं और ि ह्र्चय मतथा स्र्वेच्छाकृत गरहबी (अपररग्रि) के व्रतों का पािन करते ि ैं, ि ाह्र्णों के सर्कक्ष ि ह ि ैं। र्िान भक्त ि ोग भी जात-पांत से ऊपर उठ गए थे। आत्र्-अनुभूतत के द्र्वार, सम्पूण मसुअर्वसरों के साथ अनधगनत र्िि ाओं के शिए खिुे थे। आध्यात्र्क दृल्ष्ट से सब र्नुष्यों की सर्ानता के शसद्धान्त के कारण, इस तथ्य के कारण कक जो ि ोग ऊपर के तीन र्वणों के निं ंथे, उन्ि ोंने भी आत्र्ज्ञान प्राप्त ककया, और हिन्दू ि ास्त्रकारों द्र्वारा इस स्र्वीकृतत के कारण, कक ि ूद्रों को भी आत्र्ज्ञान प्राप्त करने े का अधधकार ि ै'[250] यि आर्वश्यक ि ो जाता ि ै कक आज ि र् अपनी आध्यात्र्क पैतृक सम्पवत्त के द्र्वार सब हिन्दुओंके शिए, जातत या पररष्ठा (ि ैशसयत) का कुछ भी भेदभार्व ककए बबना, खिो दें। ि ाह्र्ण कोई र्वग मया श्रेणी निं ीं, अवपतु यि तो एक प्रकार के स्र्वभार्व का नार् ि ै। यि स्र्वभार्व ककसी भी व्यल्क्त र्ें ि ो सकता ि ै; और यि भी सम्भर्व ि ै कक ि ाह्र्ण जातत र्ें उत्पन्न बित-से ि ोगों र्ें यि न भी ि ो। यि शिंग या व्यर्वसाय, जन्र् या र्वंि पर तनभरम निं ीं; उनसे स्र्वतन्त्र ि ै। प्रत्येक व्यल्क्त को ि ाह्र्णत्र्व प्राप्त करने का अधधकार ि ै, जो ि ाह्र्णत्र्व र्वि ल्स्थतत ि ै, जिां पिंुचकर आंतररक चारुता और बाह्य सौंदय मएक ि ो जाते ि ैं।

गायत्री की प्राथनमा भारत के सांस्कृततक इततिास की सर्युगीन ि ै, और र्वि ि र स्त्री, पुरुष, ऊंच-नीच सबको शसखाई जानी चाहिए। इसर्ें यि र्ान शिया गया ि ै कक र्वस्तुएं ल्जस रूप र्ें ि ैं उनर्ें एक प्रकार की अर्वर्वरार् अल्स्थरता ि ै; एक उत्कृष्टतर र्ाग मकी ि ाश्र्वत खोज ि ै और ि ै एक उत्कृष्टतर संसार की ओर तनरन्तर प्रगतत।

---

246 सूत्र भाष्य, 1 - 3 - 38

247 तनशर्त्तार्थेन बादररस्तस्र्ात् ्सर्वाधमधकारं स्यात् ्।-1-3-27

साथ ि ह देखखए 'भारद्र्वाज श्रौत सून, 5-2-8; कात्यायन, 1-4-5

248 10 - 127

249 यज्ञर्वल्क्य पर र्वर्वश्र्वरूप की टहका, 1-13

250 . 'र्वीरशर्नोदय' का कथन ि ै कक यद्यवप ि ूद्रों से यि आशा ि निं की जाती कक र्वे र्वेदों का अध्ययन करेंगे, कफर भी र्वे स्र्ृततयों और पुराणों का अध्ययन करके आत्र्ज्ञान प्राप्त कर सकते ि ैं, क्योंकक उन्ि ें भी उच्चतर् आत्र्ज्ञान प्राप्त करने का अधधकार ि ै : आल्र्प्रततपादक-पुराण श्रर्वणेन आत्र्ज्ञान भार्वयेत् ्।

जीर्वन का सबसे बड़ा र्वरदान एक उच्चतर जीर्वन का स्वप्न िै। प्रत्येक व्यल्क्त की रि्त्वाकांक्षा यि िोती िै कक उसे गम्भीरतर, तीव्रतर और र्वर्वस्तृततर आत्र्चेतना प्राप्त िो और स्पष्टतर आत्र्ज्ञान प्राप्त िो। िर्ें अपनेसे उत्कृष्टतर ककसी र्वस्तु को तैयार करने का प्रयत्न करना चाहिए। इस प्राथनमा को तो संदेिर्वादह और ईश्र्वरर्वादह भी अपनेबौद्धधक अन्त:करणों पर आंच आने ेहदए बबना अपना सकते िैं। यि र्ानर्व-आत्र्ा र्ें और र्ानर्वीय प्रयत्न की सर्ाल्प्त र्ें श्रद्धा की र्पिे से िह कलपना करके चिती िै। यि उस सच्चेधर् मकी प्रतीक िै, जो आध्याल्त्र्क अशभर्ान (सिास-काय)म िै, एक अर्वर्वरार् नर्वीकरण िै। परर्ात्र्ा सतत पुनजन्मर् िै। िर्ें अपने-आपको नग्न (अनार्वृत्) और शर्थ्यात्र्व के र्ुखार्वरण के बबना पाना िोगा। तभी िर्ारा दूसूरा जन्र् िोता िै।

र्िरे प्रयोजन के शिए, हिन्दू ूर्वि िै जो अपनेजीर्वन और आचरण र्ें, र्वेदों के आधार पर भारत र्ें र्वर्वकशसत िुई ककन्िहं भी धाशर्कम परम्पराओं को अपनाता िै। केर्वि र्वे िह िोग हिन्दू ूनिहं ंिैं, जो हिन्दू ूर्ाता-वपता की सन्तान िैं, अवपतु र्वे सब िोग भी हिन्दू िैं, ल्जनके र्ातृपक्ष या वपतृपक्ष के पूर्वजमों र्ें कोई हिन्दू ूथा और जो स्वयंइस सर्य र्ुसिर्ान या ईसाई निहं ंिै।

र्िि के हदनों र्ें हिन्दू ूधर् मने अपने-आपको सर्य की आर्वश्यकताओं के अनुसार बार पाने र्ें अपनी अतनच्छा या अक्षर्ता प्रदशितम की िै। बदिती िुई पररल्स्थततयों के अनुसार अपनेआधारभूत शसद्धान्तों र्ें छूट देनेके शिए बिुत अधधक जलदबाज़ी करना अपनी परम्परा के शसद्धान्तों र्ें र्वर्वश्र्वास की कर्ी का द्योतक िै; परन्तु कभी भी पररर्वतनम िह न करना र्ूखतमा िै। प्राचीन प्रणािह के, जैसीकक र्वि िर् तक चिती आई िै, सर्थनम र्ें िड़ना गित र्ोचे पर िड़ना िै। िर् अपनी संस्कृतत के र्िन आदिों को निहं त्याग सकते, परन्तु अनुष्ठानों और संस्थाओं के रूप र्ें उनके र्ूतस्मर्वरूप से िर्ें ऊपर उठना िोगा। इततिास को र्वापस निहंर्ोड़ा जा सकता। िर्ें आर्ूि क्रांतत और अतीत की ओर र्वापसी, दोनों से िह साफ बचकर आगे बढना िै। कई बार अपनी थकान के कारण िर्ें प्रिोभन िोता िै कक िर् अपनेअतीत को त्याग दें, और बबिकुि नये शसरे से प्रारम्भ करें। परम्परा एक भारह बोझ अनुभर्व िोने िगती िै, जो िर्ारे ऊपर टूट पड़ती िुई अव्यर्वस्था (अंधेरगदी) से िर्ारह यथेष्ट रक्षा निहं ंकर पाती, और कफर भी नये शसरे से जीर्वन प्रारम्भ करनेर्ें रुकार्वट बनती िै। ऐसा आचरण िाभकारह निहं िोगा। उन अनश्र्वर शसद्धांतों के, ल्जनका र्वर्वकास िर्ारे इततिास र्ें िुआ िै, अध्ययन द्र्वारा िर्ें र्ानर्वीय गौरर्व, स्र्वतन्त्रता और न्याय की रक्षा के शिए नये संस्थात्र्क रक्षण-उपायों का र्वर्वकास करना िोगा। नूतन को सच्ची-खरह िल्क्तयों को अतीत के प्रार्ाखणक शसद्धांतों के साथ एक नई एकता र्ें गूंथना िोगा। अत्याचार और कष्ट के सुदहघ मयुगों र्ें दिे ने अपनेआदिों को बनाए रखनेर्ें गौरर्वपूण मल्स्थरता प्रदशितम की िै। आिा की ज्योतत कभी भी बुझी निहं िै। र्वर्वदेिी िासन की अन्धकारर्य पृष्ठभूशर् र्ें यि उज्ज्र्वितर् दहल्प्त से जि रिह िै। परन्तु यहद भारत को आध्याल्त्र्क और भौततक र्ृत्यु से बचना अभीष्ट िो, तो िर्ारह सार्ाल्जक आदतों और संस्थाओं र्ें आर्ूि पररर्वतनम करना अत्यार्वश्यक िै। यहद हिन्दू ूधर् मको अपनी र्वर्वजतयनी िल्क्त और आगे बढने, अन्त:प्रर्वेि करने ेऔर संसार को उर्वरम करनेके बि को कफर प्राप्त करना िो, तो िर्ें अपनेर्ाशर्कम र्वर्वचारों और आचारों का अब पुनगठमन करना िोगा।

4 : हिन्दू ़ूसर्ाज र्ें नारह

भूशर्का प्राचीन - भारत र्ें नारहर्ानर्वजीर्वनर्ें प्ेरेर् कास्थानभौततक आधार - जातीय तत्र्व - शर्र्ता- प्ेरेर्-वर्वर्वर्ा-वर्वर्वर्ा और प्ेरेर्-हिन्दू ़ूसंस्कार- वर्वर्वर्ा के प्रकार - बि-वर्वर्वर्ा - संधगयों का चुनार्व - बिुपततत्र्व और बिुपत्नीत्र्व - वर्वधर्वाओं की ल्स्थतत- तिाक-सर्ाज-सुधार- सन्ततत-तनरोध- वर्वफिताओं के प्रतत रुख

भूशर्का

नर और नारह के सम्बन्धों के प्रश्न के बारे र्ें गम्भीर कर् और ईर्ानदार अधधक िोना उधचत िोगा। जीर्वन के इन गम्भीर र्ार्िें र्ें िर्ारह प्रर्वृत्त यि िोती िै कक िर् संसार के सार्ने एक शर्थ्या-सा अशभनय करें। जिां ंसचाई और आन्तररक ईर्ानदारह िोनी चाहिए, र्विंछि और कृवत्त्तर्ा व्याप्त िै। अच्छा यि िै कक इन तथ्यों का सार्ना ईर्ानदारह से ककया जाए और ऐसी योजनाएं बनाई जाएं जो अत्यधधक आदिर्वमादह न िों। िर् र्नुष्यों के सार्ने अच्छाई का जो नर्ूना और नैततक कायों का जो वर्वधान प्रस्तुत करें, र्वि ऐसा िोना चाहिए ल्जसका र्वेपािन कर सकें। र्वि उस संसार के साथ संगत िोना चाहिए ल्जसर्ें िर् रितेिैं, ल्जसर्ें सार्ाल्जक आदतों और व्यर्विार का ढांचा खोखिा िो रिा िै और सर्ाज घिु-घिुकर नये रूप र्ें ढि रिा िै।

पुरुषों ने, जो ल्स्त्रयों के सम्बन्ध र्ें प्रकट ककए गए अधधकांदृल्ष्टकोणों के शिए उत्तरदायी िैं, ल्स्त्रयों के स्र्वभार्व के वर्वषय र्ें और ल्स्त्रयों की अपेक्षा पुरुषों की श्रेेष्ठता के वर्वषय र्ें र्नगढन्त कितनयांबना डािह िैं। उन्िोंने ेअपनी सारह सूझ-बूझ नारह की रिस्यर्यता और पवर्वत्रता के साथ-साथ उनके सौन्दय मऔर अल्स्थरता के धचत्रण र्ें िगा दह िै।

प्राचीन भारत र्ें नारह

जब यि किा जाता ि◌ै कक नर और नारह, पुरुष और प्रकृतत की भांतत ि◌ैं, तो इसका अशभप्राय यि ि◌ोता ि◌ै कक र्वे एक-दूसूरे के पूरक ि◌ैं। र्ानर्व-जातत र्ें नर-नारह का शिंगंभेद ि◌ोने ◌ेके कारण श्रर् का र्वर्वभाजन करना आर्वश्यक ि◌ो गया ि◌ै। कुछ काय मएेसे ि◌ैं ल्जन्र्हें पुरुष निहंकर सकते। इस प्रकार का र्वर्विेष काय मका किौ ल्स्त्रयों को उनके नारहत्र्व से र्वंधचत निहं ◌ंकरता और न इससे नर और नारह के स्र्वाभावर्वक सम्बन्ध ि◌ह बबगड़ने पातिें। पुरुष स्रष्टा ि◌ै और नारह प्ेरेशर्का। नारह के र्वर्विेष गुण ि◌ै दया और कोर्िता, ि◌ल्न्त और प्ेरेर्, सर्पणम और बशिदान। पािवर्वकता, हिंसा, क्रोध और र्वर्द्र्वेष उसके स्र्वाभावर्वक गुण निहं ◌ंि◌ैं। पुरुष का प्रभुत्र्व स्र्वाभावर्वक निहं ि◌ै। ऐसे अनेक युग और सर्ाज के रूप रि ि◌ैं, ल्जनर्ें पुरुष का प्रभुत्र्व उतना सुतनल्श्चत निहं ◌ंथा ल्जतना ि◌र् अज्ञानर्वि र्ान ि◌ेते ि◌ैं। चारुता के पररणार् ल्स्त्रयों की पुरुषोधचत गुणों की अपेक्षा किहं अधधक अच्छी तरि रक्षा कर सकते ि◌ैं। स्त्री और पुरुष र्ें अन्तर आर्वश्यक ि◌ै और उनका प्रयोजन पारस्पररक शिक्षण ि◌ै।'[251] र्िजुिददकिो र्ें पुरुष की पररभाषा करते ि◌ुए किा गया ि◌ै, "एक पुि,◌ु ल्जसका प्रशिक्षण नारह करती ि◌ै।" नारह र्िूतः पुरुष की शिक्षक ि◌ै; तब भी, जबकक र्वि बच्चा ि◌ोता ि◌ै और तब 'भी, जब र्वि र्वयस्क ि◌ो जाता ि◌ै। ऐतरेय ि◌ाह्र्ण र्ें किा गया ि◌ै, "क्योंकक वपता कफर अपनी पत्नी से उत्पन्न ि◌ोता ि◌ै (जायते पुनः), इसीशिए र्वि जाया किाती ि◌ै। र्वि उसकी दूसूरह र्ाता ि◌ै।"[252] 'गीतगोवर्वन्द' उस श्िोक से प्रारम्भ ि◌ोता ि◌ै, ल्जसर्ें राधा से कृष्ण को घर ि◌े जाने का अनुरोध ककया गया ि◌ै; उसके स्र्वभार्व की पूणतमा को आगे बढानेके शिए, क्योंकक र्वि भीरु बािक ि◌ै।'[253] जब आकिा बादिों से किाा पड़ जाता ि◌ै, भवर्वष्य का र्ाग मघनेर्वन र्ें से ि◌ोता ि◌ै, जब ि◌र् अन्धकार र्ें बबिकुि अकेिे ि◌ोते ि◌ैं, प्रकिा की एक भी ककरण निहंदहख पड़ती, और जब सब ओर कहठनाइयां ि◌ह कहठनाइयां ि◌ोती ि◌ैं, तब ि◌र् अपने-आपको ककसी प्ेरेर्र्यी नारह के ि◌ाथ र्ें छोड़ देते ि◌ैं।

नारह किशु ◌ुको 'दुहितृ'◌ृ नार् हदया गया ि◌ै, ल्जसका अंग्रेजी रूपान्तर 'डाटर' ि◌ै। इस ि◌दद से ध्र्वतनत ि◌ोता ि◌ै कक स्त्री का र्ुख्य कतव्मय गाय दुिना ि◌ै। बुनना, शसिाई-कढाई, घर का कार् और फसिों की देखभाि उसके र्ुख्य कतव्मय ि◌ैं254। शिक्षा भी बिुत र्ित्र्वपूण मसर्झी जाती थी। ि◌ाह्र्ण कन्याओं को र्वेदों की शिक्षा दह जाती थी और क्षबत्रयर्वण मकी कन्याओं ◌ंको धनुष-बाण का प्रयोग शसखाया जाता था।255 भारत की र्ूततयमों र्ें किुि अश्र्वारोिह ल्स्त्रयों, की सेना का धचत्रण ि◌ै। पतंजशि ने भािा चिानेर्वािह र्ििाओं (ि◌ल्क्तकीः) का उल्िेख ककया ि◌ै। र्ैगस्थनीज़ ने चन्द्रगुप्त की अंगरक्षक अर्ेज़न र्ििाओंका र्वणनम ककया ि◌ै। कौहटलय ने र्ििा धनुधरमों का उल्िेख ककया ि◌ै (स्त्रीगणैः धल्न्र्वशभः)। घरों र्ें और भारत के र्वन-र्वर्वश्र्वर्वर्वद्याियों (आश्रर्ों) र्ें ि◌ड़कों और

---

251 जब एक फ्रांसीसी संसद् सदस्य ने ल्स्त्रयों के शिए र्वोट के अधधकार का सर्थनम करते ि◌ुए किा कक स्त्री और पुरुष र्ें ककतना थोड़ा-सा अन्तर ि◌ै तो सारह र्वर्वधानसभा उठ खड़ी ि◌ुई और धचल्िाई, "र्वि अन्तर धचरजीर्वी ि◌ो !"

252 2-3-13

253 र्ेघैर्ेदुरर्म्बरं र्वनभुर्वः श्यार्ास्तर्ािर्ुरैः

नक्तंभीरुरये त्र्वर्ेर्व तहददं राधे गिृं प्रापय...

भीरुः शिशुर्वत् ◌्भर्ाियीः ।

254 देखखए, रघुर्वंि 4.20

255 ऋग्र्वेद 1-112-10/10-102-2। र्ुदंगि शर्श्र की पत्नी र्ें इतनी बौद्धधक योग्यता थी और उसे इठरह स्र्वतन्त्रता थी कक उसने अपने पतत और ि◌कराचाय मके बीच ि◌ास्त्राथ मर्ें र्ध्यस्थ का कार् ककया था।

ड़िककयों को साथ-साथ शिक्षा दह जाती थी। र्वालर्ीकक के आश्रर् र्ें आत्रेयी रार् के पुत्ि्िर्व और कुि के साथ पढा करती थी।256 संगीत, नृत्य और धचत्रकिा आहद ि्शित किाओं की शिक्षा ि्डककयों को र्वर्िेष रूप से दह जाती थी। ि्िा के हदनों र्ें भी ल्स्त्रयों ने यि शसद्ध कर हदखाया कक र्वे उन कार्यों को कुििता से कर सकती ि्ैं, जो सार्ान्यतया पुरुषों को सोपे जाते ि्ैं।'[257] कफर भी आज तक यिह दृल्ष्टकोण जड़ जर्ाए ि्ुए ि्ै कक बौद्धधक योग्यता की दृल्ष्ट से ल्स्त्रयां पुरुषों से घहटया ि्ोती ि्ैं।258 एक चीनी किार्वत र्ें किा गया ि्ै, "पुरुष सोचती ि्ैल्स्र र्विे जानता ि्ै, पर स्त्री उससे किहं ंअधधक जानती ि्ै।

र्वैहदक युग र्ें धर् मकी सबसे बड़ी अशभव्यल्क्त यज्ञ था। पतत-पत्नी दोनों इसर्ें भाग ि्ेते थे। दोनों शर्ि्कर प्राथनमाएं करते थे और आिुततयां ंडािते थे। ि्ड़ककयों का उपनयन संस्कार ि्ोता था और र्वे सन्ध्या की र्वधध पूरह करती थीं। "युर्वती कन्या का, ल्जसने ि्ह्र्चय मका पािन ककया ि्ो, ऐसे र्वर के साथ र्वर्विा कर देना चाहिए, ल्जसने उसीकी भांतत ि्ह्र्चय मपािन करके शिक्षा पाई ि्ो।"[259] सीता का र्वणनम सन्ध्या करते ि्ुए ककया गया ि्ै।260 ि्ारहत का र्वचार ि्ै कक ल्स्त्रयों के दो र्वग मिोती ि्ैं- ि्ह्र्वाहदनी और सद्योर्वधू।261 पिि्े प्रकार की ल्स्त्रयां ंर्वर्विा निहं ंकरतींऔर र्वेदों का अध्ययन करती ि्ैं और तनयत र्वधधयों का पािन करती ि्ैं और बाद र्ें र्वर्विा का सर्य आनेपर उनका उपनयन संस्कार ककया जाता ि्ै। इस र्वषय र्ें यर् के उद्धि प्राप्त ि्ोती ि्ैं कक

---

256 र्ाती र्ाधर्व र्ें भर्वभूतत ने हदखाया ि्ै कक कार्न्दकी ि्ड़कों के साथ पढती थी।

257 शर्सेज़ ि्ारिट र्ेतनंगं को एक पत्न र्ें जे० एस० शर्ि् शिखता ि्ै, "तुर्ने र्ुझसे यि जानकारह र्ांगी ि्ै कक भारत र्ें िासन करने र्वािे पररर्वारों र्ें र्हिाओं ंने ककतनी प्रिासन-कुििता हदखाई ि्ै और र्वर्िेष रूप से यि कक ये र्हिाएं हिन्दू ू थीं ंया र्ुसिर्ान। र्ेवे ि्गभग सबकी सब हिन्दू ि्ैं। ऐसा र्ार्ा र्ुसिर्ान खानदान र्ें कर् ि्ो पाता ि्ै, क्योंकक र्ुल्स्िर् कानून के अनुसार र्ाता अपने नाबाशिग पुत्र की अशभभार्वक निहं ि्ोती, जबकक हिन्दुओं र्ें र्ाता को अपने सगे पुत्र या गोद शिए पुत्र की अशभभार्वक बननेका अधधकार ि्ै। परन्तुइन र्हिाओं ंर्ें सबसे अधधक उल्िेखनीय र्हिा भोपािा की स्र्वगीया शसकन्दर बेगर् र्ुसिर्ान थी। क्योंकक र्िदी ररयासतें इल्ण्डया ि्ाउस र्ें र्ेरे र्वर्वभाग र्ें थीं, इसशिए र्ुझेइस र्वषय र्ें अधधकतर् जानकारह पाने का अर्वसर शर्िा कक इन ररयासतों का ि्ासन ककस ढंग से ि्ोता था। कई र्वषों र्ें सबि, र्ि्त्र्विाह और कुिि प्रिासन के जो उदािरण र्ेरे सार्ने आए उनर्ें से अधधकांि उन रातनयों और राइयों के थे, जो नाबाशिग राजाओं ंकी अशभभार्वक बनकर ि्ासन कर रिह थीं।"

258 ि्ेनरह जेम्स नेशर्सेज़ ओिहफेंट के उपन्यास 'ककदीन' के सम्बन्ध र्ें शिखते ि्ुए शिखा : "पिि्े 20 पृष्ठ पढनेके बाद र्ुझेयि पक्का र्वश्र्वास ि्ो गया कक बेचारह ि्ेखखका की साहित्य की बड़ी सरि और नारह-सुिभ धारणा ि्ै। ऐसी कफसिती र्ुई-सी, अपूण,म रुकती ि्ुई, ि्ड़खड़ाती ि्ुई, झांकती ि्ुई और नीचे जो एक कर्ज़ोर प्राणी की तरि ि्र्वा र्ें उड़ी जा रिह ि्ो और क्षिय की ओर पिुंचने के शिए जी-जान से संघष मकर रिह ि्ो और अन्त र्ें र्ूतछमत ि्ोकर कांपती ि्ुई अचेत ि्ोकर धगर पड़ती र्ि।" दूसूरह ओर र्वल्जतमनयां स्र्वुिफ को शिकायत ि्ै कक यि सारा पुरुष-रधचत संसार ि्ै, ल्जसर्ें पुरुषों के प्रर्ुख धंधे खून बिाना, पैसा कर्ाना और बहदमयां ंपिनना ि्ै जैसे कक सार्न्त अपने चोगे पिनते ि्ैं, बबिाप अपने ि्बादे पिनते ि्ैं, न्यायाचीपा शसर पर दोवपयां रखतीं और सेनापतत रंगीन ररबन ि्गातीं।.

259 यजुर्वेद 8-1 3

260 रार्ायण 2-87-19, 6-4-48। भागर्वत र्ें दाक्षायण की पुबत्रयों का उल्िेख ि्ै, जो दिनम और धर् मके प्रश्नों र्ें बुित तनष्णात थीं।ं (4-1-64)

261 द्वर्वर्वधाः ल्स्त्रया ि्ह्र्वाहदन्यः सद्योर्वधञ्च, तत्न ि्ह्र्वाहदनीनार् ्उपनयनर् ्अग्नीन्यने र्वेदाच्यने स्र्वगृिे च शभक्षाचया,म सद्योर्वधूनांतु उपल्स्थतेर्वर्विे उपनयनर्ात्र कृत्र्वा र्वर्विाः कायःम ।

अतीत किा र्ें कन्याएं र्ेखिा धारण करती थीं, र्वेदों का अध्ययन करती थींऔर र्न्त्रपाठ करती थीं।'[262] र्नु का र्वचार ि ै कक कन्याओं के शिए र्वर्वाि को उपनयन का सर्स्थानीय सर्झा जाना चाहिए।263 परन्तु अतीत के व्यर्विार को दृल्ष्ट र्ें रखते िुए और इस बात को र्न र्ें रखते िुए कक पतत-पत्नी एक िि सर्ूची र्वस्तु के पूरक अंग ैं, दोनों को आध्याल्त्र्क जीर्वन और अनुिासन र्ें सर्ान अधधकार प्राप्त िोना चाहिए। अर्वर्वाहित रिने की दिा र्ें भी पुरुषों और ल्स्त्रयों को आध्याल्त्र्क उन्नतत का सर्ान अधधकार ि ै।

ऐसा कोई धाशर्कम प्रततबन्ध निहं ंथा कक प्रत्येक िड़की को र्वर्वाि करना िि चाहिए। यि ठीक ि ै कक पत्नी और र्ाता बनना स्त्री के कतव्मयों र्ें असंहदग्ध रूप से सबसे अधधक र्ित्त्र्वपूण मऔर कहठन काय मि,ै कफर भी ककसीको इसके शिए र्वर्वि निहं ंककया जाना चाहिए। प्रजातन्त्र िासन-पद्धतत का एक र्वशिष्ट रूप उतना अधधक निहं ि ै, ल्जतना कक व्यल्क्त के र्ूलय की र्ान्यता ि ै, चािे व्यल्क्त पुरुष िो या स्त्री, अपराधी या बहिष्कृत। यि बात स्पष्ट रूप र्ें अनुभर्व कर िि गई ि ै कक कुछ आत्र्ाओं के शिए अपनिेक्ष्य को एकाकी जीर्वन बबताते िुए प्राप्त करना सम्भर्व िोता ि ै और प्रेर् और र्वर्वाि के आनन्द सार्ाल्जक जीर्वन को आनन्दों की भांतत आल्त्र्क जीर्वन से ध्यान बंटानेर्वािे अधधक िोतिै। यहद कोई ऐसे व्यल्क्त िैं, जो िह्र्चारह रिकर सन्तुष्ट िैं, यहद उनका स्र्वभार्वतः झुकार्व इस ओर ि ै और र्वे अर्के अक्षुदध रिना चािते िैं, तो कोई कारण निहं ंकक सर्ाज उनको अर्के रिने ेकी स्र्वतन्त्रता क्यों दे। यि बबिकुि अनुधचत ि ै कक उन्िें घरेिूपन के झंझट र्ें फंसने को र्वर्वि ककया जाए, ल्जसके शिए र्वे उपयुक्त निहीं। र्वचार और सर्ाज की सारह परम्परा, ओछा र्वातार्वरण और र्ाता-वपता की स्र्वाथ-मभार्वना, जो अपने र्वंि को आगे चिता देखना चािते िैं, आत्र्ा की र्ुल्क्त के शिए प्राथनमा करनेर्वािे र्वंिज के अभार्व का भय और तथाकधथत धर् मअतनछुक व्यल्क्तयों को भी र्वर्वाि के शिए र्वर्वि कर देते िैं। परन्तु ु वपछिे कुछ सर्य से आधथकम और अन्य दिाओं के कारण अर्वर्वाहित िोगों की संख्या बढती पर ि ै।

परन्तु कुछ ल्स्त्रयां पुरुषोधचत्त प्रकार की ऊजस्मर्वी और र्ित्त्र्वाकांक्षी िोती िैं। र्वे जीर्वन के पुरस्कारों के शिए संघष मकरती िैं और खिेिों तथा राजनीतत र्ें रुधच िेती िैं। र्वे प्रेर् और र्वर्वाि के सब सम्बन्धों से बचनेका यत्न करती िैं; परन्तु यहद दुघुटमनार्वि र्वे ऐसे ककसी सम्बन्ध र्ें आ पड़ती िैं, तो र्वे अपने-आपको अपने पततयों से उच्चतर शसद्ध करने का यत्न करती िैं; और इस प्रकार र्वर्वाहित जीर्वन के र्ाधुय मको बबगाड़ती िैं। र्वे यि शसद्ध करने ेर्ें गर्व मअनुभर्व करती ि ै कक उनर्ें घरेिूपन की भार्वना कभी र्वर्वकशसत िि निहं ंिुई। यद्यवप ऐसे र्ारि्े बिुत थोड़े िोतिै कफर भी सर्ाज को उनके शिए गुंजाइि रखनी िोगी। इस प्रकार की पौरुषी ल्स्त्रयां उस उच्चतर् सीर्ा तक निहं पिुंच पातीं, जिां ंतक कक नारह पिुंच सकती ि ै।

ल्स्त्रयों को अिग-अिग रखनेकी प्रथा भी पिि े निहं ंथी। युर्वती कन्याएं स्र्वच्छन्द जीर्वन बबताती थीं और अपने पतत के चुनार्व र्ें उनकी आर्वाज़ तनश्चायक िोती थी। उत्सर्वों के सर्य और क्रीड़ा-प्रततयोधगताओं

---

[262] पुराकलपेषुनारहणांर्ुञ्जीबन्धनशर्ष्यते,े अध्यापने च र्वेदानां सावर्वत्रीर्वचनं तथा। िह्र्चयेण कन्या युर्वात र्वन्दते े पततर् ्। अचर्वर्वेमद, 9-5-18। गोशभि ने यज्ञोपर्वीत धारण करने र्विाि के रूप र्ें पत्नी का उलिेख ककया ि ै, यज्ञोपर्वीततनीर्।् 2-1-19

[263] 2-67

(सर्न) रें् िड़ककयां ंखूब सज-धजकर सार्नेआती थीं।'[264] ल्स्त्रयों को अपनेपतत की सम्पवत्त रें् अधधकार िोता था और कभी-कभी उनको अवर्ववाहित रिकर अपनेर्ाता-वपता और भाइयों के साथ रिने हदया जाता था।265 अथर्ववेमद रें् ऐसी कन्याओं का उल्लेख िै, जो आजीर्वन अपनेर्ाता-वपता के साथ रिती थीं।266 पैतृक सम्पवत्त का कुछ अंि उनको दिेज के रूप रें् हदया जाता था, जो उनकी सम्पवत्त बन जाता था, ल्जसे बाद के िेखकों ने स्त्रीधन नार् हदया।

र्ाकाव्यों के कारि रें् ल्स्त्रयों को ककन्हिंर्विेष अक्षर्ताओं का शिकार निहं िोना पड़ता था। र्वे तप करती थीं और र्वलकि पिनती थीं। धृतृव्रता, श्रुतर्वती और सुिभा अवर्ववाहित रिंऔर आध्याल्त्र्क जीर्वन बबताती रिं।

संन्यास के र्ान आदि मकी छाया रें् ल्स्त्रयों की दुबिमताओं का साधुओंको चेतार्वनी देनेके शिए अततरंजन ककया गया।267 प्रव्रज्या को प्रोत्सािन देने के शिए ल्स्त्रयों को दुतुनयादारह का रूि बताकर घृणा का पात्र किा गया। िेर्चन्द्र की दृल्ष्ट रें् र्वे 'नरक का र्ाग महदखानेर्वाि दीि' थीं।268 एक र्ान धर् मकी परम्परा के अनुसार अभी स्त्री का सृजन भी रुल्श्क से िुआ िह था कक उसपर इस र्वाक्य द्र्वारा अशभयोग िगाया गया, "स्त्री ने रुझे प्रोशभत ककया।" ईसाई यूरोप इस र्वर्वश्र्वास की छाया रें् पिा िै कक यहद ल्स्त्रयां इतनी तनष्ठुर न िोतीं, तो संसार रें् रृतृयु का अल्स्तत्र्व िह न िोता। स्त्री पर र्वर्वश्र्वासघात, चुगिखोरह और र्नुष्यों को र्वर्वनाि-पथ की ओर प्रर्ववृदध करने का आरोप िगाया गया। परन्तु र्वराशर्हिर (ईस्र्वी सन् ्छठी िताददह) का कथन िै कक धर् म और अथ मकी शसद्धध ल्स्त्रयों पर िह तनभरम िै और र्ानर्वीय प्रगतत के शिए र्वे अत्यन्त आर्वश्यक िैं। उसको यि शिकायत िै कक परिोक का ध्यान रखनेर्वािे िोग ल्स्त्रयों के गुणों की ओर से आंख र्ींच िेते िैं और उनकी

---

264 1-48-6;1-124-8;4-58-8। काएगी ने सर्न का धचन खींचंते िुए शिखा िै, "ल्स्त्रयांऔर कन्याएं अच्छे-अच्छे कपड़े े पिनकर आनन्दपूण मसिभोज के शिए चि पड़ती िैं। युर्वक और युर्वततयांजलदह-जलदह घास के र्ेदानों की ओर जाते िैं जबकक जंगि और खेत ताजा िररयािह से ढके िोते िैं। र्विां ंर्वे नृतृय रें् भाग िेतीं; र्वाद्य बजते िैं और िड़के और िड़ककयां ं एक-दूसरे को पकड़कर तेजी रें् घूर्ते िैं, यिां तक कक उनके पैरह ति धरती कांपने िगती िै और धूि के बादि आनन्द से नाचती िुई भीड़ को ढक िेते िैं।" - ऋग्र्वेद, पृष्ठ 19

265 देखखए ऋग्र्वेद, 1 - 117 - 7 अर्ाजुः उस िड़की को किते ेथे, जो अपने वपता के घर रें् िह बुढह िो जाती थी। देखखए 2-17-7; 10-39-3; 8-21-5

266 1 - 14 - 3

267 तुिना कील्जए, न र्वैं स्त्रीणां सख्यातन सल्न्त सािर्वृकाणां ंहृदयातन एता। ("ल्स्त्रयों के साथ स्थायी प्रीतत निहं ंिो सकती। इनके हृदय बघेरों के हृदयों के सर्ान िोतेिैं।") - ऋग्र्वेद 10 - 95 - 15 । यि ध्यान रखना चाहिए कक ये िदद उर्वमिी अप्सरा ने किे थे। साथ िह देखखए, "स्त्री के र्न को संयर् रें् निहं रखा जा सकता" (ल्स्त्रया अिोम्ये र्नः); 7-33-17

268 बीजं भर्वस्य नरकर्ागद्र्वारस्य दहवपका। टठुशियन की इस कटूल्क्त सेतुिना कील्जए, "इस पीढह रें् भगर्वान का दंड तुर् ल्स्त्रयों की जातत पर िै। तुर् िैतान का दरर्वाज़ा िो। र्नुष्य रें् परर्ात्र्ा की जो रूतत मिै, उसे तुर् नष्ट कर देती िो।" एक िैहटन का िेखक किता िै, "स्त्री पुरुष की अस्तव्यस्तता िै।"

दुबुिमताओं का बढा-चढाकर र्वणनम करते िैं।269 ल्स्त्रयों के दोष र्विह िैं, जो पुरुषों के दोष िैं। सच किा जाए, तो उनरें पुरुषों की अपेक्षा किहं ंअधधक गुण िैं।270

यहद ल्स्त्रयों को बबना ककसी परम्परा के पथ-प्रदिनम के अपने भरोसे छोड़ हदया जाए, तो र्वे न तो पुरुषों से अधधक ल्स्थर िोती िैं और न कर् ल्स्थर। उनकी कार्-र्वृत्तयां ंपुरुषों की अपेक्षा कर् पररर्वतनिीिमी निहंिोतीं।271 न तो स्त्री राूसूर् रेनर्ी िै और न पुरुष तनगि जानेर्वािा राक्षस । आहदर् युग रें स्र्वेच्छाचार की प्रथा थी और र्वि बुरा निहं ंसझर्ा जाता था। ल्स्त्रयां ंजैसा चािें, रि सकती थीं।272 जब भी पररल्स्थततयां अनुकूि िोती थीं, र्वे एक र्वर्वािा-सम्बन्ध को त्याग देती थीं। र्वर्वक्टोररया के दिी तनर्वािसयों रें ल्स्त्रयों के इतने अधधक प्ेरेरी िोते िैं कक उनरें यि बता पाना िगभग असम्भर्व िोता िै कक ककस बच्चेका वपता कौन िै।273 अरब और र्डागास्कर रें किुहन घरों की र्हिंिाएं र्वर्वाि तो केर्वि एक िह पुरुष से करती िैं, परन्तु उसके साथ िह उनके अनेक प्ेरेरी भी िोते िैं। सन्तानोत्पादन के बोझ के कारण ल्स्त्रयों का झुकार्व एक पतत के साथ जीर्वन बबताने की ओर िोता िै। यहद उसे आधथकम पराधीनता से र्ुल्क्त शरि् जाए, तो उसकी एक र्वर्वािर्वािी िोने ेकी सम्भार्वना पुरुष की अपेक्षा अधधक निहं ंिै। ऐसे एक र्वर्वािा बिुत थोड़े िैं, ल्जनरें बीच- बीच रें बार-बार तिाक िुए िों। रिाभारत रें ऐसे प्रदेिों का उल्लेख िै, जिांस्र्वेच्छाचार प्रचशित था। ये प्रदेि उत्तर कुरुओं274 का देि और राहिष्री नगर'275 थे। इस स्र्वेच्छाचार के शिए पूर्व मघटनाओं के कारण अनुर्ति प्राप्त थी और बड़े-बड़े ेऋवषयों ने इसकी प्रिंसा की थी।'276 रिाभारत रें बताया गया िै, श्र्वेतकेतु को उस सर्य बिुत दुःख िुआ, जब एक िाह्र्ण उसके वपता की उपल्स्थतत रें उसकी राता का िाथ पकड़कर िे जानेिगा। परन्तु उसके वपता ने िाल्न्तपूर्वकम किा, यि तो प्राचीन प्रथा िै। उसनेकिा, "र्वत्स, पृथ्र्वी पर सब र्वगों की ल्स्त्रयां ंस्र्वतंत्र िैं। इस रारि् रें पुरुष अपने-अपनेर्वणों रें गौओंकी भांतत आचरण करते िैं।"277 स्र्वेच्छाचार के स्थान पर तनयशर्त र्वर्वाि की प्रथा प्रारम्भ करनेका शे्रेय श्र्वेतकेतु को

---

269 . येऽवप अंगनानां प्रर्वदल्न्त दोषान् ्रैर्वैराग्यर्ागेण गुणर्वान् ्र्वर्विाय।

270 गुणाधधकाः। युररवपडीज़ ने अपनी र्ीडडया रें ल्स्त्रयों के साथ ककए जानेर्वािे व्यर्विार के र्वर्वरुद्ध प्रततर्वाद ककया िै, "ल्जन भी र्वस्तुओं रें जीर्वन िै और अनुभूतत िै, उन सबरें िर् ल्स्त्रयों की दिा सबसे अधधक िोचनीय िै क्योंकक िरें सोना देकर अपना पतत खरहदने को र्वर्वि िोना पड़ता िै, जो, सबसे बुरह बात यि िै कक, िरारे िरहर का भी स्र्वारी िोता िै... किा जाता िै कक िर् सुरक्षापूण मजीर्वन बबताती िैं, जबकक िरारे पतत युद्धों रें जाते िैं। पर यि बेिूदह बात िै। र् ैंएक बार सन्तान जनने की अपेक्षा दो बार युद्ध रें जाना पसन्द करूंगी।"

271 जाज मसैण्ड से तुिना कील्जए, "स्त्री का सदाचार पुरुष का सुन्दर आवर्वष्कार िै।"

272 कार्ाचारवर्विाररण्यः स्र्वतन्त्राः। रिाभारत 1-122-4

273 देखो, डदलयू० र्वर्वनरुवुड रहड की पुस्तक 'सैरेवेज अफ्रीका'; दूसरा संस्ंकरण, 1864, पृष्ठ 259

274 यत्न नायःम कार्ाचाराः भर्वल्न्त। 12-102-26

275 स्र्वैररण्याः तत्न नायो हि यथेष्ट र्वर्वचरन्त्युत। 2-32-40

276 प्रर्ाणदृष्टः धर्ीय पूज्यते ेच र्विषशमभः। तुिना कील्जए, "ओ र्धुररािशसनी, यि प्राचीन प्रथा, जो ल्स्त्रयों के शिए बिुत अनुकूि िै, प्राचीन िोगों द्र्वारा अनुर्त िै। र्वतर्मान व्यर्विार तो बिुत िाि रें िह स्थावपत िुआ िै।" (स्त्रीणार्नुग्रिकरः स हि धर् मसनातनः, अल्स्रंस्तु िोके धचरात् ्रयहदये िुधचल्स्ते।) - 1-122-8

277 अनार्वृता हि सरेवेषां र्वणानमारे्गना भुर्वव। यथा गार्वः ल्स्थता तात स्र्वस्र्वर्वण मतथा प्रजाः। 1-122-14

हदया जाता ि ै।278 उस सर्य पुरुष और स्त्री दोनों के शिए एक िि र्ानदंड तनयत कर हदया गया। आज से जो पत्नी अपनेपतत के साथ निहं रिेगी, वि पावपनी सर्झी जाएगी। उसका पाप भ्रूणित्या के पाप के सर्ान बड़ा और घृखृणत सर्झा जाएगा। जो पुरुष अपनी पततव्रता और प्रेर्र्यी पत्नी की, ल्जसने ेअपनेयौवनकाि से िेकर पववनता की िपथ का पािन ककया ि ै, उपेक्षा करके दूसूरह ल्स्त्रयों के पीछे जाएगा, वि भी उसी पाप का भागी िोगा।"[279] एक वववाि कोई स्वाभाववक दिा निीं, अवपतु सांस्कृततक ल्स्थतत ि ै। स्वेच्छाचार के धचह्न वैहदकपूर्व म युग र्ें पाए जाते ि ैं, क्योंकक ऋग्वेद के सर्य तक वववाि संस्था भिह भांतत स्थावपत िो गई थी।

वववाि ल्स्त्रयों के शिए सम्भवतः बौद्ध और जैन धर्ों की प्रततकक्रया के रूप र्ें एक दातयत्व बन गया। दहघतमर्ा ऋवष ने तनयर् बनाया कक भववष्य र्ें कोई स्त्री अवववाहित न रिे।280 र्नु ने यि युल्क्त प्रस्तुत की कक ल्स्त्रयों के सब संस्कार िोने ेचाहिएं, परन्तु वैहदक ववधधयों के अनुसार निहं।281 उनके शिए वैहदक संस्कार केवि एक िि ि ै- वववाि।'[282] स्रृततयों र्ें दहघकमाि तक िह्मचारह रिने की तनन्दा की गई ि ै और गृिस्थ धर् मकी प्रिंसा की गई ि ै। पत्नी िहन पुरुष को यज्ञ करनेका अधधकार निहं िंि ै।283 ल्स्त्रयों के सदा पुरुषों पर तनभरम रिने ेका शसद्धान्त र्नु और धर्िमास्त्रों र्ें प्रततपाहदत ककया गया ि ै।'[284] उनकी दृल्ष्ट र्ें स्त्री एक नाजुक पौध की भांतत ि ै ल्जसकी देख-रेख और पािन-पोषण पुरुष द्वारा ककया जाना चाहिए। परवती व्याख्याकारों ने ल्स्त्रयों पर अधधकाधधक प्रततबन्ध िगानेर्ें एक-दूसूरे से िोड़-सी की ि ै। परन्तु िर्ें र्नु र्ें भी स्त्रीत्व के सम्बन्ध र्ें उच्च्चोहट के ववचार शर्िते ि ैं, काशिदास, बाण और भवभूतत का तो किना िह क्या ! यद्यवप जिां-तिांऐसे सन्दभ मभी शर्िते ि ैं ल्जनर्ें किा गया ि ै कक ल्स्त्रयों को वैहदक अनुष्ठानों र्ें पुरुषों के सर्ान अधधकार निहं िंि ै, कफर भी र्ुख्य दृल्ष्टकोण यि ि ै कक उसे या तो पतत के साथ पत्नी के रूप र्ें, या कन्या के रूप र्ें स्वतन्त्र रूप से उन्र्ें

("पिु-जगत् र्ें र्ादा यि तनणयम करती ि ै कक वि ककस नर को प्रजनन के शिए अपने पास आने देगी। र्नुष्य-जगत् र्ें भी अंल्त्तर् तनणयम नारह के िि िाथ र्ें ि ै। जब तक कोई स्त्री िि न चािे, तब तक उसेपथभ्रष्ट निहं ककया जा सकता।")

[278] 1-128

[279] व्युच्चरन्त्याः पतत मनायाम अद्यप्रभृतृत पातकर्,

'भ्रूणित्यासर्ं घोरं भववष्यत्यसुखावि र्् ।

भाया मतथा व्यच्चरतः कौर्ारिह्मचाररणी,

पततव्रतार् ्एतदेव भववता पातकं भुवव । - 1-122-17-18

[280] अपततना तु नारहणाद्यप्रभृतृत पातकर्। र्िाभारत 1-114-36

[281] 2-36

[282] 2-37

[283] अयाक्षिज्ञको वा एष यो अपनीकः । - तैवत्तरहय िाह्मण 2-2-2-6

[284] वपता रक्षतत कौर्ारे भताम रक्षतत यौवने

पुत्रो रक्षतत वाधक्मये न स्त्री स्वातन्त्र्यर्िमतत। र्नु9-33

अरस्तू का तकम ि ै कक न्याय की धारणा पुरुष के अपनी पत्नी और बच्चों के साथ सम्बन्ध पर िागू निहं िोती क्योंकक न्याय को व्यल्क्त की सम्पवत्त पर िागू निहं ककया जा सकता। यूनानी संस्कृतत के चरर् ववकास के सपा भी ल्स्त्रयों की ल्स्थतत बिुत कहठन थी।

धर् मऔर सर्ाज 143 करने ेका अधधकार ि ै। बाद र्ें जब नारह की ल्स्थतत धगर गई, तब भल्क्तधर् मप्रारम्भ ि ुआ, ल्जसर्ें ल्स्त्रयों की सब
धाशर्कम आर्वश्यकताओं को तृप्ूत करने की गुंजाइि थी।

इन सब अक्षर्ताओं से पीडड़त ि ोते ि ुए भी ल्स्त्रयों को कुछ वर्विेषे सुवर्वधाएं भी प्राप्त थी। र्वे चािे जो भी अपराध करें, ककन्तु उन्िें त्र्ार्गा निहं ंजा सकता था। व्यशभचार का दोषी ि ोने ेपर भी उन्िें त्यागा निहं जा सकता था। गौतर् ने आदिे हदया ि ै कक जो पत्नी व्यशभचार की दोषी ि ो उसे प्रायल्श्चत्त करना चाहिए और कफर उसे शिह भांतत देखभाि र्ें रखा जाना चाहिए।285 र्वशिष्ठ286 का कथन ि ै कक "ि ाह्णणों, क्षबत्रयों और र्वैश्यों की जो पल्त्नयां िूद्रों से व्यशभचार करें, उन्िें प्रायल्श्चन द्र्वारा उसी दिा र्ें ि ुद्ध ककया जा सकता ि ै जबकक कोई सन्तान न ि ुई िो, अन्यथा निहं।"[287]

र्ानर्व जीर्वन र्ें प्रे्र्

संसार र्ें बड़ी-बड़ी सफिताओं के शिए स्फुरणा नारह के प्रे्र् से ि ह प्राप्त ि ुई ि ै। काशिदास288 जैसे प्रततिभािाह कवर्व, नैपोशियन जैसे वर्वजेता और र्ाइकि फैरेडे ेजैसे वर्वज्ञानर्वेत्ता तथा अन्य अनेक संसार के तनर्ातमा और संसार को त्यागनेर्वािे वर्वरक्त इस बात के साक्षी ि ै कक उनके जीर्वन र्ें प्रे्र् ने बड़ा र्ित्र्वपूण मकाय म ककया ि ै। गीतकार कवर्वयों को ऊंची से ऊंची उड़ान तेनेकी प्रे्रणा, इल्न्द्रयों के आनन्द, सफि सन्तुल्ष्ट और साथ हि साथ प्रे्र् के तीव्र आर्वेि से प्राप्त ि ोती ि ै। रार्ायण र्ें रार् और रार्वण के बीच वर्वरोध का केन्द्र एक नारह थी और राय का युद्ध एक स्त्री पर अधधकार करनेके शिए ि ह ि ड़ा गया था। प्रे्र् का नोर्वेग जीर्वन के केन्द्र र्ें अधग्र के रूप र्ें वर्वद्यर्ान ि ै। यि सारह सृजनात्र्कता का स्त्रवर ि ै। बिुत से ि ोग अपनी प्रततभाओं के अनुकूि सफिता इसशिए प्राप्त निहं ंकर सके, क्योंकक उन्िें जीर्वन र्ें कोई प्रे्रपात्न प्राप्त न ि ो सका। दांते को बबयेहरस से जो प्रे्र् था, उसीसे प्रे्ररत ि ोकर उसने'डडर्वाइना कोर्ैडडया' र्िाकाव्य शिखा, ि ािांकक उस सर्य बबयेहरस का वर्वर्वाि एक अन्य व्यल्क्त से ि ो चुका था। चंडीदास की अर्र कवर्वताएं एक कृषक-युर्वतीकन्या के प्रे्र् से प्रे्ररत ि ोकर शिखी गई थींऔर वर्वद्यापतत को गीतों के शिए स्फुरणा एक रानी से प्राप्त ि ुई थी। बीथोर्वन के भार्वोद्र्वार उसकी "अर्र वप्रयतर्ा" को ि क्ष्य करके शिखे गए थे।

नर और नारह के सम्बन्धों का वर्वर्वेचन करते ि ुए हिन्दू-िास्त्रकारों ने अत्यधधक छद्र् ि ज्जा और अत्यधधक कार्ेच्छा, दोनों की चरर् सीर्ाओंसे बचने का यत्न ककया ि ै। कार्िास्त्र, प्रे्र् और वर्वर्वाि के प्रशसद्ध

---

[285] 22-35

[286] 11-12

[287] व्यासका वर्वचार ि ै कक "जो पत्नी व्यशभचार की दोषी ि ो, उसे घर के अन्दर रखा जाना चाहिए, पतिू से धाशर्कम, दाम्पत्य और सम्पवत्त के अधधकारों से र्वंधचत कर हदया जाना चाहिए। उसके साथ घृणा के साथ अक्षत ककया जाना चाहिए, परन्तु व्यशभचार कर् मके बाद जब उसे र्ाशसक धर् मिो जाए (और र्वि दुबारा व्यशभचा करे) तब पतत को उसे पिि े की भांतत पत्नी के सब सार्ान्य अधधकार दे देने चाहिए।" 2-49-50

[288] ककम्र्वदन्ती के अनुसार काशिदास ने अपने तीन र्िाकाव्य 'कुर्ारसम्भर्व: 'र्ेघदूत' और 'रघुर्वंक आज पत्नी के प्रथर् प्रश्न 'अल्स्त कल्श्चत् ्र्वागथ'म से प्रे्ररत ि ोकर शिखे थे। ये तीनों ि दद क्रर्ि: इन तीनों र्िाका प्रथर् ि दद ि ैं।

अध्ययनकताम िर्वैर्लॉक एशिस ने शिखा िै कक भारत र्ें "यौन जीर्वन को इतनी अधधक सीर्ा तक पवर्वन और हदव्य र्ाना गया िै कक ल्जतना संसार के अन्य ककसी भाग र्ें निहं र्ाना गया। ऐसा िगता िै कक हिन्दू-ूस्त्रकारों के ल्स्तष्क र्ें यि बात कभी आई िह निहंकक कोई स्वाभावर्वक र्वस्तु घृखृणत रूप से अश्लीिि भी िो सकती िै। यि बात उनके सब िेखों र्ें पाई जाती िै। परन्तुयि उनके सदाचार की िहनता का प्रर्ाण निहं ंिै। भारत र्ें प्ेरेर् को शसद्धान्त और व्यर्विार, दोनों की दृल्ष्टयों से इतना अधधक र्ित्र्व प्राप्त िै कक ल्जसकी कलपना तक कर पाना र् िोगों के शिए असम्भर्व िै।"[289]

जिां ंएक ओर प्रकृतत सार्ग्री प्रस्तुत करती िै, र्विंर्ानर्व-र्न उसपर काय मकरता िै। इसके अभार्व र्ें र्िरा यौन जीर्वन बन्दरों और कुत्तों की भांतत बबिकुि अरोचक िो जाता। जब कार् की स्वाभावर्वक र्ू प्रर्वृवृत्त ल्स्तष्क और हृदय द्र्वारा, बुद्धध और कलपना द्र्वारा तनयंबत्रत रिती िै, तब प्ेरेर् िोता िै। प्ेरेर् न तो कोई रिस्यपूण मउपासना िै और न पिु-तुलय उपभोग। यि उच्चतर् भार्वों की प्ेरेरणा के अधीन एक र्ानर्व-प्राणी का दूसूरे र्ानर्व-प्राणी के प्रतत आकषणम िै। र्वर्विाि एक संस्था के रूप र्ें प्ेरेर् की अशभव्यल्क्त और र्वकास का एक साधन िै। यद्यवप इसके आदि मबदिते रिते िैं, कफर भी यि र्ानर्व-सिाचय मका एक स्थायी रूप प्रतीत िोता िै। यि प्रकृतत के प्राखणिास्त्रीय िक्ष्यों और र्नुष्य के सर्ाजिास्त्रीय िक्ष्यों के र्ध्य सर्ेजन (तािर्े बबठाना) िै। यि सर्ंजन सफि िोता िै या निहं,ं यि इस बात पर तनभरम िै कक इसे ककस प्रकार कक्रयाल्न्र्वत ककया जाता िै। यि र्िें इस पृथूर्वी पर िह स्वग मतक पिुंचा सकता िै और कुछ दिाओंर्ें यि िर्ारे शिए बाकायदा नरक भी बन सकता िै।

र्वतर्मान झुकार्व अधधकाधधक व्यल्क्तगत स्र्वतंतता की ओर िै। प्रततबन्ध, िारहररक और नैततक दोनों िह िोकवप्रय निहं िैं। ज्यों-ज्यों अर्वचेतन के सम्बन्ध र्ें और दर्न की प्रकृतत के सम्बन्ध र्ें िर्ारा ज्ञान बढता जाता िै, त्यों-त्यों परम्परागत नैततकता बिुत संहदग्ध र्वस्तु बनती जा रिह िै।'[290] काउंट िरर्ैन कैसरशिंग द्र्वारा संपाहदत 'हद बुक ऑफ र्ैरेज' (र्वर्विािों की पुस्तक) र्ें िेख भेजनेके शिए हदए गए तनर्ांमण के उत्तर र्ें बनाडम मिा ने शिखा था, "पत्नी के जीर्वर्वत रितेकोई भी व्यल्क्त र्वर्विाि के सम्बन्ध र्ें सत्य शिखने का सािस निहंकर सकता। र्ेरा र्तिब िै कक यहद र्विं ल्स्रंडबग मकी भांतत अपनी पत्नी से घृणा िह न करता िो, तब : और र् ैंघृणा निहं करता। र् ैंइस पुस्तक को बड़ी रुधच के साथ पढेगा, यि जानते िुए कक यि र्ुख्यतया टिारि़ों से भरह िै।"[291] सार्ल्जक दृल्ष्ट से बढते िुए उद्योगीकरण और संस्कृतत के प्रजातन्त्रीकरण के कारण पाररर्वाररक जीर्वन का

289 'स्टडीज़ इन हद साइकोिोजी ऑफ सेक्स'; 6-126

290 तुिना कील्जए, फ्रायड "ल्जन्िेंसंसार अपने सदाचार के तनयर् किता िै, उनके शिए उसकी अपेक्षा करें अधधक बशिदान करने पड़तेिैं ल्जतने के कक र्वे योग्य िैं और सर्ाज का व्यर्विार न तो ईर्ानदारह से प्ेरेरत िै औ न बुद्धधर्त्ता द्र्वारा स्थावपत।" - इण्रोडक्टरह िेक्चर ऑन साइको ऐनेशिसस (1922), पृष्ठ 362

291 बनाडम मिा की एक और ऐसी िह रोचक उल्क्त िै। जब उसका र्वर्विाि िुआ, तो ककसी ने उससे पूछा 'कई अब र्वर्विाि के बारे र्ें तुम्िारा क्या र्वचार िै?" "इसका जर्वाब देना कहठन िै," उसनेउत्तर हदया। "यहद डोक क तो यि फ्रीर्ेसनरह (गुप्त संसद्) की भांतत िै। जो िोग उस सम्प्रदाय र्ें दहक्षक्षत निहं िो पाते, र्वे इसके साथ र्ें कुछ कि निहं सकते ेऔर जो इसके सदस्य बन जाते िैं, उन्िें रिस्य गुप्त रखने की िपथ िेनी पड़ती िै।"

र्ित्र्व कर् िोता जा रि िै, ल्स्त्रयां ंआधथकम दृल्ष्ट से स्र्वाधीन िोती जा रिह िैं, सार्ाल्जक और राजनीततक वर्विेषाधधकार सर्ान िोतेजा रिे िैं और इस बात के प्रयत्न ककए जा रिे िैं कक र्ातृत्र्व के शिए आधथकम सिायता दह जाए। इस सबसे पाररर्वाररक जीर्वन के ढांचेर्ें क्रांततकारह पररर्वतनम िोने की संभार्वना िै।

यहद िर् वर्वर्वाि जैसी प्राचीन संस्था के सम्बन्ध र्ें उपयोगी वर्वचार करना चािते िैं और यहद िर् ताल्त्र्वक और औपाधधक र्ें भेद करना चािते िैं, तो िर्ें उन कुछ प्रर्वृवृत्तयों और उद्देश्यों का वर्वश्िेषण करना चाहिए, जो इस संस्था के जन्र् और र्वृद्धध के कारण थे। तभी िर्ें पता चिेगा कक र्वे अनेक बातें, ल्जन्िें िर् वर्वर्वाि र्ें, और सार्ान्यतया यौन संबंधों र्ें, बिुत र्ित्र्व देते िैं, िर्ारह बुद्धध और कलपना द्र्वारा बनाए गए कानूनों और प्रथाओं के पररणार् िैं।

जिां ंतक वर्वर्वाि की संस्था के र्ूि का सम्बन्ध िै, इसका आधार न तो भार्वप्रधान प्रेर्् िै और न पािवर्वक कार्र्वासना। कोई कारण न था कक आहदर् र्नुष्य अपनी यौन प्रर्वृवृत्त की स्र्वतंत्रता को क्यों सीशर्त रखता। उसकी दृल्ष्ट र्ें ल्स्त्रयों की पवर्वत्रता या पुरुष के वपतृत्र्व का कोई र्ूलय न था। उसे यौन ईष्याम या भार्वना-प्रधान प्रेर्् का भी पता निहं ंथा। आहदकािहन वर्वर्वाि ल्स्त्रयों को अपने अधीन रखनेपर आधाररत था और इसकी स्थातयता आधथकम आर्वश्यकताओं पर आधाररत थी, चंचि आर्वेि पर निहं। र्ानर्व-वर्वज्ञानिास्त्री बतातेिैं कक आहदकािहन पतत स्र्वेच्छा से अपनी पत्नी को ककसी भी अततधथ को केर्वि आततथ्यसत्कार की दृल्ष्ट से संभोग के शिए प्रस्तुत कर देता था। परन्तु कार्गार के रूप र्ें र्वि उसके ऊपर अपना स्र्वाशर्त्र्व जर्ाए रखनेके सम्बन्ध र्ें बिुत ईष्र्यािुम था। परन्तु अपेक्षाकृत जर्कर जीर्वन बबताने के वर्वकास के साथ और सम्पवत्त के बढते जानेऔर स्र्वाशर्त्र्व को अपनेर्वैध उत्तराधधकाररयों के िाथों र्ें बनाए रखनेकी इच्छा के कारण वर्वर्वाि की संस्था को और अधधक बि शर्ि गया।'[292] िीघ्र िह सभ्यता की उन्नतत िोनेके कारण पत्नी को एक व्यल्क्त के रूप र्ें, केर्वि दास जर्दूर के रूप र्ें या सन्तान जननेर्वािी प्राणी के रूप र्ें िह निहं, र्ान्यता प्राप्त िुई और वर्वर्वाि की संस्था पर इसके बिुत दूरगार्ी प्रभार्व िुए।

भौततक आधार

कार्-र्वासना को अपवर्वत्न या अशिष्ट सर्झना नैततक वर्वकृतत का धचह्न िै। फ्रायड ने र्ानर्व- जीर्वन के यौन-आधार पर जो इतना बि हदया िै, र्वि अततरंल्जत अर्वश्य िै, परन्तु गित निहं िै। यौन प्रर्वृवृत्तयांअपने-आपर्ें कोई िज्जाजनक र्वस्तु निहंिै। इस वर्वषय र्ें ईसाइयत ने जो अत्यन्त कठोर रुख अपनाया था293, उसके

---

292 डडर्ास्थनीज नेयूनातनयों की सार्ान्य भार्वना को इस रूप र्ें अशभव्यक्त ककया था, "िर्ारे पास आनन्द के शिए र्वेश्याएं िैं, िर्ारह की दैतनक पररचयाम के शिए रखैिें िैं और सन्तानोत्पादन के शिए पल्त्नयाँ, जो िर्ारे घर की वर्वश्र्वस्त देखभाि करने र्वािह भी िैं।" 'फ्यूचर ऑफ र्ैरेज इन र्वेस्टन मशसवर्वर्िाइजेिन' र्ें र्वैस्टरर्ाकम द्र्वारा उद्धृत, पृष्ठ 23

293 सेण्ट पाि किता िै, "पुरुष के शिए यि अच्छा िै कक र्वि स्त्री का स्पिम न करे। कफर भी अर्वर्वाहित व्यशभचार को रोकने के शिए यि उधचत िै कक िरएक पुरुष की अपनी पत्नी िो और प्रत्येक स्त्री का अपना पतत िो। स्त्री को अपने िरहर पर अधधकार

साथ हिन्दू ूदृल्ष्टकोण की कोई सिानुभूतत निहं। ईसा ने वर्वर्वा निहंककया और तनष्किंक गभधमारण की सरूची धारणा िह इस बात की सूचक ैं कक सार्ान्य यौन जीर्वन र्ें कुछ अपवर्वनता ि। सैण्ट जैरोर् ने किा ि, "वर्वर्वा पृथ्र्वी की जनसंख्या को बढाते िैं, ककन्तु ुकौर्ाय मस्र्वग मकी।" र्वि शिखता ि, "कई कुर्ाररयां ंिारहररक दृल्ष्ट से कुर्ारह िोते िुए भी आल्त्क दृल्ष्ट से कुर्ारह निहं ंिोतीं। उनके िरहर तो अछूते िोतीं, परन्तु उनकी आत्र्ा भ्रष्ट ितिी ि। केर्वि ऐसा कौर्ाय मईसा के सम्र्ुख प्रस्तुत करनेयोग्य ि, जो कभी र्शिन न िुआ िो, न तो िारहररक इच्छा से और न आल्त्क इच्छा से।" यहद िर्ें पूण मिोना ि, तो िर्ें अपनेयौन जीर्वन और साधारण पाररर्वाररक अनुरागों को त्याग देना चाहिए। िर्ारह कलपना और िाि एक सापेक्ष पूणतमा तक सीशर्त कर दह गई ि। वर्वर्वाहित जीर्वन की अपूण मदिाओंर्ें िर्ें पूण मजीर्वन बबताना ि।

दूसूरह ओर हिंदू िोग यौन जीर्वन को पववर्वत्र र्ानते िैं। रार्ायण का प्रारंभ व्याथ को हदए गए एक िाप से िोता ि। उस व्याध ने कार्क्रीड़ा र्ें िगे क्रौंचयुगि र्ें से एक को र्ार डिा था।'[294] कार्-र्वासना कोई रोग या वर्वकार निहीं, अवपतु एक स्र्वाभावर्वक सिजर्वृवत्त ि।295 हिन्दू ूदृल्ष्टकोण र्ें गृिस्थ की ल्स्थतत को ऊंचा बताया गया ि। जैसे सब प्राणी र्ाता के सिारे जीते िैं, उसी प्रकार सब आश्रर् गृिस्थ पर तनभरम रिते।ं "र्कान घर निहं ; घर पत्नी के कारण बनता ि, बबना पत्नी का घर र्ुझेजंगि के सर्ान प्रतीत िोता ि।"[296] "िकड़ी और पत्थर से जो बनता ि, उसे घर निहं किते;े बल्लक जिां पत्नी ि, र्विंघर िोता ि।"[297] हिन्दू ूदृल्ष्टकोण र्ें यि ज़ोर निहं हदया गया कक सब नर-नारह सन्त बन जाए और एक िूनूय पूणतमा को पानेका प्रयत्न करते रिें। यिां यौन संयर् को सबसे बड़ा गुण निहं ंर्ाना गया। यहद िर् प्राकृततक िल्क्तयों पर चोट करेंगे, तो िीघ्र या वर्विम्ब से र्वे अर्वश्य बदिा िेंगी। 'कार्सूत्र' के िखक ने यौन जीर्वन और आकषणम के वर्वशभन्न पक्षों का र्वणनम प्रस्तुत ककया ि और िर्ारे सम्र्ुख र्ानर्व-हृदय की उन उत्तेजनाओं का र्वणनम प्रस्तुत ककया ि, जो जीर्वन को इतनी पूण मऔर आकषकम निहींअवपतु पतत कि और इसी प्रकार पतत कोअपनेिरहरपर अधधकार निहं ि अवपतुउसकी पत्नी कि।तुर् दोनों

, , ,

एक-दूसूरे को र्वंधचत र्त करो। यहद करो भी, तो केर्वि एक-दूसूरे की सिर्तत से और थोड़े ेसर्य के शिए, ल्जससे कक तुर् उपर्वास और प्राथनमाएंइत्याहद कर सको, और कफर एक-दूसूरे के पास आ जाओ, ल्जससे ितान तुर्िं व्यशभचार के शिए फुसिा न सके। परन्तु यि र् ैंअनुर्तत के रूप र्ें किता ि. आदेि के रूप र्ें निहं:ं क्योंकक जिने की अपेक्षा वर्वर्वा कर िना अधधक अच्छा ि। परन्तु परर्ात्र्ा ने प्रत्येक व्यल्क्त को जो कुछ हदया ि और िरएक के शिए एक पिा तनयत कर हदया ि, उसीके अनुसार उसे चिना चाहिए। प्रेंक व्यल्क्त को उसी पिेर्ें ि गे रिना चाहिए, जो उसेसौंपा गया ि। जो िोग इस संसार का उपयोग करतें, के इसका दुरुपयोग निहं कर रिे क्योंकक इस संसार के रंग-ढंग क्षखणक और अस्थायी िैं।" इसके बाद अंततर् चोट आती ि, "जो व्यल्क्त अवर्वर्वाहित रिता ि, उसे उन र्वस्तुओं का ध्यान रिता ि, ल्जनका सम्बन्ध परर्ात्र्ा से ि, बकैंक र्वि परर्ात्र्ा को प्रसन्न कर सक: पर जो व्यल्क्त वर्वर्वा कर िता ि, उसे सांसांररक र्वस्तुओं का ध्यान रिता ि ल्जससे र्वि अपनी पक्षी को प्रक्षन्त्र रख सके।" - 1 कोररल्न्थयन्स 7

294 र्ा तनषाद प्रततष्ठां ंत्र्वर्गर्: िाश्र्वती: सर्ा:

यत्क्रौञ्ज्ञशर्थुनादेकर्र्वधी: कार्ीहितर् ्।

295 र्ौतेन के िददों से तिुना कील्जए, "क्या र्ेवे स्र्वयं ंपिु निहं ंि, जो उस कृत्य को पिावर्वक किते िैं ल्जसके फिस्र्वरूप स्र्वयं ं उनका जन्र् िुआ?"

296 न गिृ गिृशर्त्याङ्कगु: गृह्हिणी गिृरुच्यते।
गिृं च गृह्हिणीहिनर्रण्यसदिृर्

297 न गिृ काष्ठपाषाणै:, दतयता यत्न तद्गिृर् ्।- 'नीततर्ंजरह, 68

बनाती िैं। उसका सारा वर्वरण, जो जीर्वन के प्रतत उत्सािपूण मपे्रर् और आर्वेपूण मआध्यात्त्क सौम्यता से भरा िै उस संयर् से बबिकुि िह लर्न् िहं खाता त्जसका प्रततपादन कष्ट सिन के सर्थकमों ने ककया िै। आत्र्ा की रु्त्क्त इच्छाओं को बिपूर्वकम दबा देने से निहं ंिोगी, अवपतु उनका सर्ुधचत संगठन करने से िोगी। आत्र्ा को रिहर के दोषों से र्ुक्त करने का उपाय िरहर को नष्ट कर देना निहं। िह्चय मउपर्वास तथा िरहर की अन्य इच्छाओं के दर्न के सर्ान िह तपस्यात्र्क अनुिासन िै। यि इससिए खतरनाक िै, क्योंकक इससे र्न र्ें उस वर्षय की स्रृतत बराबर बनी रिती िै त्जससे कक यि र्न को बचाना चािता िै। यि एक तनषेधात्र्क ढंग का बंधन उत्पन्न कर देता िै। यौन वर्षयों र्ें भी सर्वोच्च आदि मअनासत्क्त का िै। सम्बन्धों का उस सर्य उपयोग ककया जाए, जबकक र्वे िाभदायक िों और उसके बाद उन्िें बबना ककसी कष्ट के त्यागा भी जा सके।

हिन्दू–र्वैर्वाहिक र्ें वर्वािि को न केर्वि सह्य र्ाना गया िै, अवपतु ुप्रिंसनीय बताया गया िै। तपत्स्र्वयों को जीर्वन पर खतरनाक संयर्ों को िादने ेकी प्रर्वृत्त की तनन्दा की गई िै। त्जस परर्ात्र्ा ने नर और नारह का सृजन ककया िै, उसका उपिास निहं ककया जाना चाहिए। पवर्वत्रता के र्वे कठोर आदि,म त्जनर्ें िर्से यि आिा की जाती िै कक िर् जातत के नष्ट िोनेका खतरा उठाकर भी अपनी आत्र्ा की रक्षा करें, िर्ारह स्र्वाभावर्वक सिज प्रर्वृत्त्तयों के प्रततकूि िैं। यद्यवप िारहररक इच्छा को कोई गिरह या स्थायी र्वस्तु सर्झने की भूि करना ठीक न िोगा, कफर भी यि एक आर्वश्यक आधार िै, त्जसके ऊपर स्थायी और तृत्प्तदायक सम्बन्ध का भर्वन खड़ा िोता िै। यहद वर्वािि के िारहररक पिि ू असंतोषजनक िों, तो वर्वािि असफि शसद्ध िोतेिैं।'[298] परन्तु केर्वि िारहररक पिि ू काफी निहंिै। कैण्ट की वर्वािि की यि पररभाषा कक वर्वािि "वर्वशभन्न शिंगों के दो व्यत्क्तयों को उनकी यौन योग्यताओं पर पारस्पररक अधधकार के शिए जीर्वन-भर के शिए परस्पर बांध देना िै" दोषपूण मिै। यहद यि पररभाषा सत्य िोती, तो यौन इच्छाओं र्ें िान्तता आने के साथ-साथ वर्वाििों का वर्वच्छेद िो जाया करता। परन्तु जैसे सारा जीर्वन िरहर-रचना निहं ंिै, उसी प्रकार पे्रर् भी कार्वासना िह निहं ंिै। यौन इच्छा को संतुष्ट करना कॉफी का प्यािा पी िेने के सर्ान निहं िै। यि कोई तुच्छ या पररणािहहन रचना निहं िै, त्जसकी कोई स्र्ृतत उसके बाद िेष न रिती िो। इसका पररणार् अनुराग, शर्त्रता और पे्रर् िोता िै। आधुतनक यौन जीर्वन की आकत्स्र्कता बढते िुए गंर्वारपन का एक धचन्ि र्ात्र िै।

र्नुष्य र्ें कार्वासना की कुछ अपनी अिग वर्विेषताएं िैं। र्नुष्य र्ें आर्वतकमता (तनयत सर्य पर िोना) निहं िै। र्वि बबना भूख के खाता िै, बबना प्यास के पीता िै और सब ऋतुओं र्ें कार्ोपभोग करता िै। यि वर्विेषाधधकार खड़े ेबंदर को, जो सबसे पिि बंदरों र्ें से एक िै, भी प्राप्त िै। गौण यौन वर्विेषताएं केन्द्रहय तत्र्वों की अपेक्षा भी प्रर्ुख िो उठती िैं। िर् ककसी आकृतत, आंख या र्त्स्तष्क से पे्रर् करने िगते िैं। र्नोर्वेग अपने िह शिंग के प्राणी की ओर भी र्वापस झुक आ सकता िै। र्ानर्व-प्राखणयों को अपनेर्ाता-वपता से बिुत देर तक पािन-पोषण की आर्वश्यकता िोती िै। कुछ िह पिु अपनेबच्चों का पािन-पोषण करते िैं। कुत्ते और कुततया का सािचय म बिुत अलप अर्वधध के शिए िोता िै। सारस और सारसी अपने बच्चों र्ें हदिचस्पी िेते िैं और इसशिए उनका

---

298 तुिनाकीत्जए,"अपनेिरहरसेर्ैंतुम्िरह पूजा करता िंूं/करती िंूं।"

 सम्बन्ध अपेक्षाकृत अधधक देर तक बना रिता ि ै। पर ज्योंहि बच्चे बड़े ि ो जाते ि ैं, तो र्ाता-वपता को बच्चों के
साथ सम्बन्ध भिा हदया जाता ि ै। पिुओं र्ें भाई और बिन के सम्बन्ध जैसी कोई र्वस्तु निहं ि ोती।

र्ानर्व-प्रकृतत की आधारभूत आकांक्षाओं को अर्वश्य पूरा ककया जाना चाहिए। सार्ान्य व्यल्क्तयों के शिए दूसूरे शिंग के व्यल्क्त के साथ घतनष्ठ सम्बन्ध अत्यन्त आर्वश्यक ि ै। प्राखणिास्त्रीय दृल्ष्ट से यौन र्वृवृत्तयों को सन्तुष्ट न कर पाने का पररणार् स्नायु-सम्बन्धी अल्स्थरता ि ो सकता ि ै। र्नोर्वैज्ञातनक दृल्ष्ट से इसका पररणार् ि ून्यता और र्ानर्व जातत के प्रतत घृणा ि ोता ि ै। जिां-तिांजॉन दह बैल्प्टस्ट, ईसा, सेण्ट पाि या किंराचाय मजेसे कुछ व्यल्क्त ि ो सकति ैं, जो अपने जीर्वन की ऊजाम को प्राकृततक र्ाग मसे दूसूरह ओर र्ोड़ सकें और उसका उपयोग आध्याल्त्मक उपिल्ब्धयों के शिए कर सकें, परन्तुअधधकांि नर-नाररयों के शिए और सर्ूची जातत के शिए यौन सम्बन्ध अत्यन्त आर्वश्यक और र्ित्त्वपूण मिै।

जातीय तत्त्व

ल्जसे फि ने 'र्ातृत्र्व की सार्वभमौर् सिजर्वृवृत्त' किा ि ै, र्वि पिुजीर्वन का भी सबसे र्वर्वस्र्यकारह पक्ष ि ै, ल्जसर्ें ि र्ें प्रेर् और बशिदान और दुबिम की रक्षा हदखाई पड़ती ि ै। हिंस्र बातघन भी अत्यन्त कोर्िहृदय र्ाता बन जाती ि ै। हिन्दू ि ास्त्रों र्ें तीन ऋणों'[299] का र्वणनम ि ै, ल्जन्िें िर्ें चुकाना ि ै: ऋवषयों का ऋण र्वेदाध्यन द्र्वारा, देर्वताओं का ऋण यज्ञों द्र्वारा और वपतरों का ऋण सन्तानोत्पादन द्र्वारा चुकाया जाना ि ै। "जो उपिार ककसी सन्तानिहन स्त्री द्र्वारा भेंट ककए जाते ि ैं, उनसे ि ोनेर्वािी की जीर्वनी ि ल्क्त क्षीण ि ो जाती ि ैं।" जब तक पुरुष को पत्नी प्राप्त निहंिोती, तब तक र्वि केर्वि आधा र्नुष्य रिता ि ै। ल्जस घर र्ें बच्चे न खेिते ि ों, र्वि श्र्िान के सर्ान ि ै।"[300] पररर्वार को बनाए रखने की भार्वना प्रबितर् सार्ाल्जक ि ल्क्तयों र्ें से एक ि ै। पररर्वार सार्ाल्जक ि रहर र्ें एक कोषाणु(सेि) ि ै; और यहद कोषाणु र्ें प्रजनन की इच्छा सर्ाप्त ि ो जाए तो जातत नष्ट ि ो जाएगी। पेतां ने किा था कक फ्रांस का पतन इसशिए ि ुआ, क्योंकक र्वि र्ां-बाप र्ें बच्चे नहीं िोते थे। घटती ि ुई जन्र्दर भवर्वष्य के प्रतत उस उदासीनता का ि क्षण ि ै, जो ि र्ें र्रती ि ुई सभ्यताओं के अल्न्तर् दौर र्ें हदखाई पड़ती ि ै। "प्रजा सूत्र को तोड़ना निहं" यि उपतनषद् का उपदेि ि ै; और यहद ककसी जातत को जीर्वर्वत रिना ि ो, तो उसे इसका पािन करना ि ह ि ोगा।301 सन्तान के बबना यौन सम्भोग, भिे ि ह र्वि ककतना ि ह सुन्दर और पवर्वत्र क्यों न ि ो, अपूण मिह रिेगा। र्वन्ध्यता ि ह एक आधार ि ै, ल्जसके कारण दूसूरह स्त्री से र्वर्वर्वाि करना उधचत सर्झा जाता ि ै।

---

299 ि ूहचयणऋवषभ्यो यज्ञेनदेर्वेभ्य:प्रजया वपतृभ्यः । तैवत्तरहय संहिता 6-3-10-5

300 यार्वन्न र्वन्दतेजायां तार्वदधो भर्वेत् ◌ुर्ान् ◌्

यन्न बिै: पररर्वृतं ◌्श्र्िानिर्व तद्िर् ◌्।

301 तुिना कील्जए, "देखो, र्ैंने उसे आिीर्वादम हदया ि ै। र् ैं उसे फियुक्त बनाऊंगा और उसके खूब सरि ि ोंगी। " "स्त्री एक र्िपेह ि ै, ल्जसका फि सन्तान ि ै।" - नीरो का कथन ि ै।

वर्ववर्ा एक वैंध पररर्वार की स्थापना के शिए सार्ाल्जक अधधकार पत्र अधधक िै और यौन सम्भोग के शिए अनुज्ञापन कर्। पतत और पत्नी र्ें पारस्पररक प्रेर् सन्तान उत्पन्न िोने के बाद और प्रबि िो जाता िै। भिे हि र्वे एक-दूसूरे को चोट पिुंचाएं और एक-दूसूरे से घृणा करें, परन्तु उनकी सनकों की अपेक्षा कुछ अधधक सुदृढ र्वस्तु, उनके झगड़ों और र्वर्वद्र्वेष की अपेक्षा कुछ अधधक स्थायी र्वस्तुउनके बीच र्ें उत्पन्न िो चुकी िोती िै। बच्चों के कलयाण के शिए अशभभार्वकता की सिजर्वृवृत्त र्ाता और वपता दोनों र्ें सर्ान रूप से पाई जाती िै। यि हित की एकता कृबत्रर् निीं। यि र्ानर्व-स्र्वभार्व र्ें िी ि निं, अवपतुसारह प्रकृतत र्ें र्वर्वद्यर्ान एक आधारभूत सत्य की अशभव्यल्क्त िै, ल्जसने र्ाता के हृदय र्ें एक स्थायी र्वात्सलय और आत्र्बशिदान के शिए उद्यतता पैदा कर दह िै। वपतृतूर्व प्राखणिास्त्रीय नींर्व के ऊपर जीर्वनव्यापी र्नोर्वेगात्र्क बन्धन और पेचीदा सांस्कृततक गठबन्धन खड़े ंकरने र्ें सिायता देता िै। इसके द्र्वारा पारस्पररक कत्तव्मय और सेर्वा के सार्ाल्जक सम्बन्ध स्थावपत िोते िैं। जब तक प्राखणिास्त्रीय आर्वश्यकताओं के क्षीण िोनेका सर्य आता िै, तब तक सन्तान के प्रतत अनुराग बढ चुका िोता िै और वपतृर्वात्सलय के द्र्वारा िर् संसार का ज्ञान और आन्तररक अनुभर्व प्राप्त करते िैं। सन्तान र्ाता-वपता के शिए आध्याल्त्र्क अर्विम्ब का साधन िै।

िोग पुत्र जन्र् की उत्सुकता से प्रतीक्षा ककया करते थे ंऔर कन्या के जन्र् को भि निंसर्झा जाता था। सम्भर्वतः इसका कारण यि था कक भौततक िल्क्तयों के र्वर्वरुद्ध अल्स्तत्र्व के शिए संघष मर्ें पुरुष ल्स्त्रयों की अपेक्षा अधधक उपयोगी थे। वपतृप्रधान सर्ाजों र्ें और आहदकािन दिाओं र्ें पुत्न पुत्नी की अपेक्षा आधथकम दृल्ष्ट से अधधक र्ूलयर्वान था। इसका यि अथ मनिं िै कक र्ाता-वपता अपनी कन्याओं से कर् प्रेर् करते थे। उस सर्य भी सुसंस्कृत िोगों का दृल्ष्टकोण अपेक्षाकृत अधधक स्र्वस्थ था। सुशिक्षक्षत कन्या पररर्वार के शिए अशभर्ान की र्वस्तु सर्झी जाती थी।302 ज्यों-ज्यों पूर्वजमों की पूजा र्ें िोगों की रुधच बढती गई, त्यों-त्यों वपतरों को वपण्डदान करने ंका अधधकार केर्वि पुत्नों को िह हदया जानेगा। कन्याओंके शिए उपयुक्त पतत ढूंढने र्ें कहठनाई िोती िै और र्वर्ववर्ा के बाद भी भवर्वष्य के सम्बन्ध र्ें दैर्वयोग की बात बड़ी सीर्ा तक बनी रिती िै। कन्याओं के जीर्वन को सुखी बना सकनेकी यि कहठनाई िह पुत्रों को अधधक चािने का कारण थी, स्त्री-जातत के प्रतत अन्याय की कोई अन्य भार्वना निं।'303

सब ल्स्त्रयों र्ें र्ातृतूर्व की सिजर्वृवृत्त निं िोती। कुछ नाररयां र्ाता की अपेक्षा पल्त्नयााँ अधधक अच्छी िोती िैं। ये दोनों बबलकुि अिग-अिग प्रकार िैं। कुछ ऐसी ल्स्त्रयां िै, जो र्ातृतूर्व न चािते िुए यौन जीर्वन पसन्द करती िैं; और कुछ ल्स्त्रयां ऐसी िोती िैं, ल्जनर्ें यौन इच्छा बिुत कर् िोती िै या बबलकुि निं िोती, परन्तु जो र्ाता बनना चािती िैं। र्वर्ववर्ा की संस्था र्ें इन दोनों प्रर्वृवृत्तयों का र्ेि बबठानेका यत्न ककया गया िै।

---

302 पुत्रीतत जाता र्ितिी धचन्ता कस्यैप्रदेयेतत र्िान् ्वर्वतकमः
दत्र्वा सुख प्राप्यतत र्वा न र्वेतत कन्यावपतृतूर्व खस्तुनार् कष्टर् ्। - पंचतंत्न, शर्त्रभेद ,5

303 कन्येयंकुिजीवर्वतर् ्- कुर्ारसम्भर्व, 6-63। साथ िह देखखए :
र्वर्वद्यार्वती धर्पमरा कुिस्त्री िोके नारहणांरर्णीयरत्नर्।्

शर्त्रता

पुरुष और ल्स्त्रयां कोई बिुत उत्कृष्ट प्राणी निहं ि◌ैं। और न वर्ववार्ि का उद्देश्य केर्वि सन्तानोत्पादन ि◌ह ै। प्रेर् कोई तनद्रा ि◌ानेर्विाह औषध निहीं, ल्जसर्ें स्त्री-पुरुष प्राखणिास्त्रीय स्तर पर एक-दूसूरे र्ें अपने-आपको भुिा बैठें और न ऱानर्व-प्राणी केर्वि जातत को जीवर्वत बनाए रखने के उपकरणऱात्र ि◌ैं। प्राखणिास्त्रीय पूिि से शभन्न एक सिाचय मकी आर्वश्यकता ि◌ै, ल्जसे वर्ववार्ि पूण मकरता ि◌ै। नुष्य र्ें सचेतनता की, वर्वचारों के आदान-प्रदान की, बौद्धिक आनन्दों र्ें हिस्सा बटानेकी और सुकुऱारता की, संक्षेप र्ें अनुभर्व की पूणतमा की ि◌िसा ोती ि◌ै। ि◌र् बबलकिु अके निहं ि◌जी सकते। ि◌र्ें शरि् चाहिएं; परन्तु यहद ि◌र् अपनेगम्भीरतर् वर्वचारों का आदान-प्रदान न कर सकें, तो र्वि शर्त्रता थोथी ि◌ै। यहद ि◌र्ें कोई ऐसा शरि् शरि् सके, ल्जसपर ि◌र् पूण मवर्वश्र्वास कर सकें और ल्जसके साथ ि◌र् अपनेअन्ततर्म वर्वचारों और अनुभूततयों को बेटा सकें, तो उससे ि◌ऱारा व्यल्क्तत्र्व और गम्भीर ि◌ो जाता ि◌ै। दूसूरह ओर यहद ि◌र् दूसूरे ि◌ोगों के साथ केर्वि अपनेव्यल्क्तत्र्व के बन्धन से ऱुल्क्त पाने के शिए सम्र्वन्ध स्थावपत करें, तो र्वि आत्र्ववर्वास का ि◌ह एक रूप ि◌ै, जो उकतिाट से ऱुल्क्त पाना-ऱात्र ि◌ै। ि◌र् अपनेकेन्द्रस्थ जीर्वन को एक संहदग्ध सीऱान्तस्थ जीर्वन के शिए त्याग देते ि◌ैं। रिर र्ेररया ररलके के ि◌ददों र्ें प्रेर् "इस बात र्ें ि◌ै कक दो अकेिपन एक-दूसूरे की रक्षा करते ि◌ैं, एक-दूसूरे को स्पि मकरते ि◌ैं और एक-दूसूरे का अशभर्वादन करते ि◌ैं।" जब उर खैयार् पुकारकर किता ि◌ै:

> घनी शसर पर तरुर्वर की डिा, ि◌रह पैरों के नीचे घास
> बगि र्ें र्धु र्हदरा का पात्र, सार्ने रोटह के दो ग्रास
> सरस कववर्वता की पुस्तक ि◌ाथ और सबके ऊपर तुर् प्राण
> गा रिहंछेड़ सुरहिह तान ऱुझे ि◌अब रु नन्दन उद्यान।

तब उसका अशभप्राय यिह ि◌ै कक र्वि तब तक जी निहंसकता या जीर्वन का आनन्द निहीं सिकता, जब तक कक उसकी वप्रयतऱा उसके पास न ि◌ो। यि ि◌ै अच्छा सिाचय।म ि◌ोंठों पर का गीत दृढता, सत्यतनष्ठा और प्रेर्पूण मदेखभिा का सूचक ि◌ैं। ये र्वे र्वस्तुएं ि◌ैं, ल्जन्र्ें ि◌र् प्राप्त करनेका यन तो बिुत करते ि◌ैं, परन्तु प्राप्त कर् हि कर पाते ि◌ैं। शर्त्रता यौन आकषणम से शभत्र र्वस्तु ि◌ै। पुरुषों के शिए ल्स्त्रयों के और ल्स्त्रयों के शिए पुरुषों के बुद्धिर्त्तापूण मऔर सिानुभूततपूण मर्ेिजो का तनषेध निहं ि◌ककया जा सकता। क्योंकक इस प्रकार का र्ेिजो पूणतमया अपाधथर्वम स्तर पर निहीं सिकता, इसशिए पल्त्नयों से ि◌ह यि आिा की जाती ि◌ै कक र्वे शर्त्त भी ि◌ो। किा गया ि◌ै कक "पत्नी का र्न पतत के साथ एक ि◌ोना चाहिए; र्वि उनकी छाया के सऱान ि◌ोनी चाहिए और सब अच्छे कार्ों र्ें उनकी सिाचररणी ि◌ोनी चाहिए; उसे सदा प्रसन्न रिना चाहिए और पर के कार्-काज का ध्यान रखना चाहिए।"[304] ऋग्र्वेद की वर्ववाहिता नारह अपने पतत की साधधत (सखी) ि◌ै और उसकी रुधचयां पतत की रुधचयों के सऱान ि◌ैं। ल्जसे र्नोर्वैज्ञातनक पूरकता अथर्व स्र्वभार्वों की सऱानता किा जाता ि◌ै, उसके फिस्र्वरूप वर्वचारों और

---

304 छायेर्वानुगता स्र्वच्छ सखीर्व हितकर्सुम ि◌ु
सदा प्रहृष्टया भाव्ये गृिकर्सुम र्वक्षया।

अनुभूततयों की सर्ानता उत्पन्न िोती ि ै और बढती ि ै। बौद्धधक और सुरुधचपूण मसिाचय मकी अनुभूतत, जीर्वन-रू्लयों के र्ान र्ें सर्ानता सफि र्वर्वार्ि के शिए एक शिाप्रद प्रस्थान-भूशर् प्रस्तुत करती ि ै। र्वर्द्याचे और र्ित्र्वाकांक्षाओं की एकता से भी बढकर कष्टों र्ें हिस्सा बंटाना र्ानर्वी सिानुभूतत की आधारशिशा का कार् करता ि ै। र्वर्वार्ि का उद्देश्य यि निहं ंि ै कक सर्रूप व्यल्क्त तैयार कर हदए जाएं। पतत-पत्नी र्ें अन्तर तो रिेगा हि; जैसे सबसे बड़ा अन्तर तो शिंगं का िह ि ै; परन्तु दोनों र्ें अन्तर या र्वभेद बिुत अधधक निहं िोनेचाहिएं। यहद दोनों र्ें से एक डरपोक और दूसूरा कोचे ि ै, एक र्ें सूझबूझ नार् को निहं ंि ै और दूसूरा बिुत सिासी ि ै, तो र्वर्वार्ि सफि शसद्ध न िोगा। दोनों एक-दूसूरे के पूरक िोने ेचाहिए, ल्जससे एक-दूसूरे को आत्र्-अनुसंधान र्ें सिायता दें सकें और दोनों र्वास्तवर्वक व्यल्क्त के रूप र्ें र्वकशसत िो सकें और दोनों र्ें एक सर्स्र्वरता स्थावपत िो जाए। र्वर्वार्ि-सम्बन्ध का उद्देश्य यि ि ै कक उससे जीर्वन और र्न दोनों को बि शर्िे। शिांनारह अपेक्षाकृत उन गततवर्वधधयों र्ें अधधक उिझी रिती ि ै, जो प्रकृतत ने उसे सौंपी िैं, र्वर्शुष्य र्ानशसक सृजन र्ें अधधक व्यस्त रिता ि ै। कठोर श्रर् करना, सेर्वा करना और पररर्वार का पािन-पोषण करना राष्ट्र की र्ित्र्वपूण मसेर्वा ि ै। यहद स्त्री उन गततवर्वधधयों र्ें 'भाग िेनिेगती ि ै, जो जाततरक्षा के काय मर्ें बाधक िोती िैं, तो र्वि अपनेस्र्वभार्व के र्वर्वरुद्ध काय मकर रिह िोती ि ै। स्त्री आनन्द देने र्वािह और गततवर्वधध को प्रेरणा देने र्वािह ि ै; और यहद र्वि पुरुष की नकि करनेिगे, तो र्वि अपना काय मभिह भांतत सम्पन्न निहं कर सकती। आधुतनक नारह अपनेसन्तान-उत्पादन और घर की संभाि के काय मसे असन्तुष्ट ि ै और र्वि अपने-आपको ककसी उच्चतर गततवर्वधध र्ें िगा देना चािती ि ै। यि ठीक ि ै कक िर्ें ल्स्त्रयों को शिक्षा और तनयोजन की सुवर्वधाएं देनी चाहिए, कफर भी स्त्री का र्ुख्य काय मर्ातृत्र्व और घर को संभािना िह िोगा।

यहद र्वर्वार्ि की संस्था इस आर्वश्यक शर्त्रता-सम्बन्ध को प्रदान करने ेर्ें असर्थ मरिती ि ै, तो उसके शिए दूसूरे साधन ढूंढ शिए जाते िैं। ऐथेन्स के चरर् उत्कष मके हदनों र्ें पैरहक्हिज़ के यिांएक शर्िेशियन स्त्री ऐस्पैशसया रखैि के रूप र्ें रिती थी। डडर्ास्थनीज़ ने खुिे न्यायािय र्ें किा था कक "प्रत्येक पुरुष के पास अपनी पत्नी के अततररक्त कर् से कर् दो रखैिें िोनी चाहिए।"

प्रेर्

प्राखणशास्त्रीय, जातीय और र्ानर्वीय तत्त्व िह र्वे आधार िैं ल्जनके ऊपर िर् आत्र्ा के सृजनशिी जीर्वन के सुन्दर र्ल्न्दर का तनर्ाणम करना चािते िैं। यौन आनन्द, जाततयों का र्वंशक्रर् बनाए रखने या सिाचय मकी अपेक्षा प्रेर् कुछ अधधक र्वस्तु ि ै। यि एक व्यल्क्तगत र्ार्िा ि ै, ल्जसर्ें पािवर्वक आर्वश्यकताओं की तृल्प्त या पररर्वार की स्थापना या स्र्वाथपूमण मआनन्द की अपेक्षा कुछ और घतनष्ठ बन्धन पाए जाते िैं। प्रेर् के द्र्वारा िर् एक आध्याल्त्र्क र्वास्तवर्वकता का सृजन करते िैं और व्यल्क्तयों के रूप र्ें अपनी भवर्वतव्यता का र्वर्वकास करते िैं और िारहररक आनन्द के द्र्वारा र्न की प्रसन्नता और आल्त्र्क आनन्द का र्वर्वकास करते िैं। हृदय के तूफान प्रेर् के द्र्वारा आत्र्ा की िल्न्त तक पिुंच जाते िैं। प्रेर् केर्वि ल्र्विा का ल्र्विा से शर्िन निहं ंि ै, अवपतु आत्र्ा की पुकार ि ै।

र्ानर्व-जीर्वन के सुतनहदमष्ट क्षेत्र र्ें सर्ानता बिुर्ूलय र्वस्तुि ै। इसर्ें सन्दिे निहं ंकक र्वर्वर्वाि के र्वर्वषय र्ें तनयर् सर्ान िोने ेचाहिएं। परन्तु कोई न कोई बबन्दु ुऐसा आ जाता िै, जिांपिुंचकर िर् न केर्वि असर्ानता को स्र्वीकार कर िेते िैं, अवपतु उसर्ें आनन्द भी अनुभर्व करते िैं। सच्चे प्रेर् र्ें सम्पूण मआत्र्सर्पणम का र्वि भार्व िोता िै, जो प्रेर् को सफि बना सकता िै।305 र्विुद्ध प्रेर् प्रततपादन र्ें कुछ निहं ंचिाता। यि बबना ककसी प्रततबन्ध या दुरार्व के बिार तनकि पड़ता िै। यि भारह कार्ों को भी िलका बना देता िै; यि बड़े ेसे बड़े ेबोझ को बबना भार अनुभर्व ककए ढो सकता िै। यि कभी थकता निहं। ककसी काय मको असम्भर्व निहं सर्झतों और सब कष्टों का सार्ना करने के शिए तैयार रिता िै। ऐसा प्रेर् िाश्र्वत िोता िै। यि िर्ारह आत्र्ा की गिराइयों र्ें र्वर्वद्यर्ान रिता िै। यि एक न बुझ सकनेर्वािह पवर्वत्र ज्र्वािा िै, ल्जसे िर् अपनेजीर्वन के अन्त तक बनाए रि सकतिैं। इस प्रकार के प्रेर् का तनम्न, पािर्वक, स्र्वाथपूमण,म उग्र या तुच्छ र्ानर्वीय िािसाओं या भंगुर, ऊपरह और थकानेर्वािह भार्वनाओं से कोई र्ेि निहीं। यि तो र्वि िल्क्त िै, जो स्र्वग मसे पृथ्र्वी पर इसशिए भेजी गई िै कक पृथ्र्वी को कफर स्र्वग मतक र्वापस िे जा सके। िरहर के साथ-साथ र्न और आत्र्ा का ऐसा संयोग अर्र िोता िै। यि पवर्वत्रतर् सम्बन्ध िै, जो िर्ें आन्तररक दृल्ष्ट से पूण मऔर संतुष्ट बनाता िै। प्रेर् िह एक र्वस्तु िै ल्जसे र्नुष्य अपना कि सकता िै। जीर्वन की एक यिह तनधध िै, क्योंकक जीर्वन की और सब र्वस्तुएं सर्ाज की सांझी बना दह गई िैं। भिे िह इसके कष्ट ककतने िह कठोर क्यों न िों और इनकी बबछुहटयां ंककतनी िह िोचनीय क्यों न िों,

यि जीर्वन का सर्वोच्च र्वरदान िै।

र्ेि से अधधकांि के शिए र्वर्वर्वाि केर्वि दाम्पत्य, सन्तानोत्पादन के शिए एक-दूसरे को सिन करने का संकलप, एर्वं आदान-प्रदान के शसद्धान्त पर साथ रिनेका तनश्चय-र्ात्र िोता िै। परन्तु कभी-कभी कोई पुरुष या कोई स्त्री ऐसे आ शर्िते िैं, ल्जनके जीर्वन एक-दूसरे से पूरह तरि र्ेि खाते िैं। इस प्रकार के व्यल्क्त सदा के शिए साथ रिनेिगते िैं। सच्चा प्रेर् आत्र्ा और िरहर का शर्िन िै, इतना घतनष्ठ और इतनी दृढता से स्थावपत, कक ऐसा अनुभर्व िोनेिगता िै कक यि आजीर्वन बना रिेगा। यि इतना गिरा और बांधनेर्वािा, अपनी सुकुर्ारता से हृदय को जकड़ िेनेर्वािा और अपनेआर्वेि की तीव्रता से जीर्वन का रूपान्तर कर देनेर्वािा सम्बन्ध िै कक इसी प्रकार का दूसरा सम्बन्ध बनानेकी कलपना भी अपवर्वत्र र्ािूर् िोती िै। सावर्वत्री से उसके वपता ने दूसरा पतत चुनने ेके शिए किा था, क्योंकक जो पतत उसनेचुना था उसके भाग्य र्ें जलदह र्र जाना शिखा था। इसपर सावर्वत्री ने उत्तर हदया था, "चािे र्वि दहघामयु िो अथर्वा अलपायु, चािे उसर्ें गुण िों या र्वि गुणिहन िो, परन्तु र्नैं ेएक बार पतत चुन शिया िै; अब र् ैंदूसरा पतत कदावप निहं चुनूंगी।"[306] िनुर्ान जब सीता से, जो किा जाता िै कक र्वस्तुतः देर्वर्ाया थी और राक्षस-र्ाया को पराल्जत करने ेके शिए अर्वतररत िुई थी307, शर्िकर आया, तब उसने

---

305 र्ृदुत्र्वं च तनुत्र्वेच पराधीनत्र्वर्ेर्व च
स्त्रीगुणाः ऋवषशभः प्रोक्ताः धर्तमत्र्वाथदमशिशमभः ।

306 दहघायुमरथर्वालपायुः सगुणो तनगुणमोवप र्वा
सकृर्वृतो र्या भतामन द्वर्वतीय र्वणोम्यिर्।ॅ

307 जनकस्य कुिे जाता देर्वर्ायेर्व तनशर्तमा। - रार्ायण बािकांड 1-25

रार् को बताया कक विं िका र्ें बिुत कष्ट पा रिह िै और जब र् ैंउससे शरि्ा तो विं र्रनेका तनश्चय ककए बैठी थी।308 और कफय भी रार् ने रार्वण पर वर्वजय पाने के बाद जब सीता को देखा, जो आनन्द और प्रेर्र् के साथ-साथ ज्जिा से भरह िुई थी, तो उसे बताया कक नैं ेतुम्ार िे प्रेर्र् के कारण यि युद्ध करके वर्वजय निहंपाई िै, अवपतु अपनेऔर अपनेर्वंि के यि की रक्षा करनेके शिए यि युद्ध ककया िै।"[309] "र् ैंतुम्ेंकिफर ग्रिण निहंकरना चािता। तुर् िक्ष्मण, भरत, सुग्रीर्व या वर्वभीषण, ल्जसे भी चािो उसके साथ चिह जाओ।"[310] कुछ िोगों का किना िैकिक ये आपवत्तजनक श्िोकि बाद र्ें शरि्ए गए प्रक्षक्षप्त अंि िैं। परन्तु इन श्िोकों से यि बात ध्वतनत िोती िै कक िर्ें से अच्छे से अच्छे पुरुष प्रेर्र् और कष्ट सिन करनेके र्ार्ि र्ें बड़ी-बड़ी भिूें करनेर्वािे नौशसखखए िैं, जबकक ल्स्त्रयां इन र्ार्िों र्ें श्रेष्ठ किाकार िैं। जब सीता को उसके पतत ने त्याग हदया तो, काशिदास के अनुसार, विं किती िै कक "पुत्र का जन्र् िोने के बाद र् ैंसूय मकी ओर दृल्ष्ट िगाकर तपस्या करूंगी, ल्जससे अगिे जन्र् र्ें भी तुर् िह र्ेरे पतत बनो और तुर्से र्ेरा वर्वयोग न िो।"[311] र्वे ेल्स्त्रयां ंर्िानतर् प्रेर्शर्काएं िैं, जो प्रततदान र्ें प्रेर्र् पाने की भी आर्वश्यकता निहं ंसझ्र्ती और जो उन्ें त्याग जानेर्वािे पुरुष से कि सकती िैं कक "र्ेरा प्रेर्र् इस बात पर तनभरम निहं ंिै कक तुर् र्ेरे साथ कैसा बतार्वम करते िो।" क्या ल्स्पनोजा ने िर्ें यि निहंबताया िै कक परर्ात्र्ा से बबना ककसी प्रततफि के आिा ककए, प्रेर्र् करना उच्चतर् और वर्विुद्धतर् प्रेर्र् िै? परन्तु सार्ान्य र्नुष्यों के शिए प्रेर्र् दोनों पक्षों की ओर से िोना चाहिए।

प्रेर्र् ऐसी र्वस्तु निहं िै, ल्जसपर िर्ारा विं िो। दो व्यल्क्तयों के बीच का विं सम्बन्ध एकांततक िोता िै और उनके बीच र्ें कोई तीसरा व्यल्क्त स्थान निहं ंपा सकता। अवर्वश्र्वास व्यल्क्त की प्रकृतत को नष्ट कर देता िै, क्योंकक र्नुष्य के व्यल्क्तत्र्व को जो पूणतमा प्राप्त िुई िोती िै, विं अवर्वश्र्वास से सर्ाप्त िो जाती िै। वर्वर्वाि का यि पिि्ू संस्कृतत का वर्वषय िै। ऐसी अनेक जाततयााँ िैं, जिां ंअपररधचत अततधथ को अपनी पत्नी प्रस्तुत करना आततथ्य का धचह्न सर्झा जाता िै और जिां ंपररर्वार की आय बढाने के शिए पत्नी का कार् करना र्वैध सर्झा जाता िै। परन्तुअधधकांपितत अपनी पल्त्नयों के बारे र्ें दूसरों के साथ हिस्सा बंटाने को अतनच्छुक िोतिैं और वर्वकशसत संस्कृततयां ंएक वर्वर्वाि के आदि मको बढार्वा देती िैं।

वर्वर्वाि, यद्यवप एकर्ात्र निहंपरन्तु, एक सरि उपाय िै, ल्जसके द्र्वारा िर् एक उच्चतर संयोग बनाने से शिए अपनी स्र्वाभावर्वक सिजर्वृवृत्तयों को आत्र्ा र्ें िहन कर सकते िैं। वर्वर्वाि का उद्देश्य प्रेर्र् के द्र्वारा, जोकक एक स्थायी गठबन्धन िै, र्ानर्वीय पूणतमा और व्यल्क्तत्र्व का वर्वकास करना िै। िर् वर्वर्वाहित जीर्वन प्राकृततक र्वासना को पूरा करने ेके शिए निहं ंअपनाते, अवपतु ुआत्र्ा के शिए, आत्र्नस्तु ुकार्ाय, आल्त्क सम्पवत्त को

---

308 तर्व्मयेतत कृततनश्चया।- सुन्दरकांड 45-18

309 युद्धकाण्ड, 118-15-16

310 िक्ष्णे र्वाथ भरते ेर्वा ककं बुद्धधं ंयथासुखर् ्

सुग्रीर्वे र्वानरेन्द्र र्वा राक्षसेन्द्र वर्वभीषणे

तनर्वेिय र्नः सीतेयथा र्वा सुखर्ात्र्नः । - युद्धकाण्ड 118-20-23

311 सिां तपः सूयतमनवर्वष्टदृल्ष्टः, ऊध्र्व ंाप्रसूतेश्चररतु यततष्ये ।

भूयो यथा र्े जननान्तरेवप त्र्वर्ेर्व भताम न च वर्वप्रयोगः। रघुर्वंि 14-66

बढानेके शिए, तृलू्प्त की सर्द्ूधध के शिए। प्ेरेर् की भार्वना के कारण िर्ारे उत्सुक धचत्त अनुभर्वों को नये उत्सा के साथ ग्रिण करते िैं; सभी इल्न्द्रयांतीव्रतर आनन्द से पुिककत िोती िैं, र्ानो ककसी अदृश्य आत्र्ा ने संसार के सब रंगों को नया कर हदया िो और प्रत्येक जीर्वर्वत र्वस्तु र्ें नर्वजीर्वन भर हदया िो। प्ेरेर् को इल्न्द्रयों से पृथक् कर पाना, उसे िरहर का बुित दास न बनाए रखना सम्भर्व िै, ल्जसर्ें कक आत्र्ा िर्ारे अन्दर र्वर्वद्यर्ान पि ुको अपनेर्वि र्ें ककए रिे। िर् ककसी पुरुष या स्त्री से प्ेरेर् निहंकरते, अवपतु उसके अन्दर तनहित व्यल्क्त से प्ेरेर् करते िैं; पद, सम्पवत्त, नौकरह या सुन्दरता, चारुता या िाशित्य से प्ेरेर् निहंकरते, अवपतु ुइनके पीछे तछपे व्यल्क्त से प्ेरेर् करते िैं। र्वर्वर्वाि दो स्र्वतन्त्र और सर्ान व्यल्क्तयों का सल्म्र्निन िै, जो पारस्पररक सम्बन्ध द्र्वारा उस आत्र्वर्वकास को प्राप्त करने का प्रयत्न कर रिे िोतेिैं, ल्जसे अकेिे रिकर उन दोनों र्ें से कोई भी प्राप्त निहं ंकर सकता था। र्वर्वसादृश्य अर्वश्य िोता िै और िर्ें उसके अन्दर यथासम्भर्व गिराई तक पैठना चाहिए। ल्स्पनोज़ा का कथन िै कक "िर् अिग-अिग व्यल्ष्ट र्वस्तुओंको ल्जतना अधधक सर्झ पातेिैं, उतना िह अधधक िर् परर्ात्र्ा को सर्झ पाने र्ें सर्थ मिोतेिैं। यहद ककसी र्नुष्य ने इस संसार र्ें परर्ात्र्ा के बनाए ककसी प्राणी को 'भिह-भांतत प्यार निहंककया, तो र्वि परर्ात्र्ा से भी प्ेरेर् निहं ंकर सकता। एक र्ानर्व-प्राणी के दूसूरे र्ानर्व-प्राणी के प्रतत प्ेरेर् से बढकर आनन्द का सुतनल्श्चत और सच्चा साधन दूसूरा कोई निहीं। इसके द्र्वारा िर् पिपे की अपेक्षा अधधक ज्ञानी, अधधक अनुभर्वी और अधधक उत्कृष्ट बनते िैं। अपनी क्षया और असिायता के कारण हृदय यि अनुभर्व करता िै कक, चािे जैसे भी िो, उसे प्ेरेर् करना िह चाहिए। इससे कर् से कर् उसे यि तो अनुभर्व िो जाएगा कक उसका अल्स्तत्र्व व्यथ मनिहं िै। स्र्वग मका रास्ता कष्टों से भरे िुए और आंसुओं से तर भौततक प्ेरेर् र्ें से िोकर िह िै।

किा जाता िै कक भगर्वान ने अपने-आपको पतत और पत्नी के दो रूपों र्ें र्वर्वभक्त कर हदया।'[312] पुरुष अपनी स्त्री के बबना पूण मनिहं ंिै। पतत और पत्नी दोनों शर्िकर एक पूण मर्वस्तु बनते िैं। पत्नी अधाांधगनी, आधा अंग िै। भारत र्ें बुित से प्रदेिों र्ें शर्वदेर्व और पार्वतमी का एक िह िरहर र्ें अंकन ककया गया िै। प्ेरेर् के शिए दो र्ूितः शभन्न एकाकी व्यल्क्तयों के िारहररक सद्भार्व, बौद्धधक सम्बन्ध और आल्त्क सर्झ द्र्वारा शर्िकर एक िो जाने की आर्वश्यकता िोती िै। पुरुष और स्त्री केर्वि एक िरहर िह निहं,ं अवपतु एक आत्र्ा िैं। यि बात निहं कक उनकी रुधचयां और दृल्ष्टकोण ठीक एक जैसे िों, अवपतु र्वे एक-दूसूरे के अनुकूि सस्र्वर िोतेिैं। क्योंकक इसर्ें आल्त्क िक्ष्य के अन्दर अनुभर्वजन्य तत्त्र्व रिता िै, इसशिए र्वर्वर्वाि को सांस्काररक किा जाता िै। िर्ारा िक्ष्य ऐसे दो व्यल्क्तयों का सल्म्र्निन िोता िै, जो एक-दूसूरे से प्ेरेर् करते िैं। उनकी इच्छाएं पूण मिो चुकी िोती िैं (आप्तकार्) और इसशिए उन्िेंकोई इच्छा िेष निहंरिती (अकार्)। यि गंभीर और सुकुर्ार संयोग पथभ्रष्टता के र्वर्वरुद्ध सर्वोत्तर् बचार्व िै। जब िर् ऐसे व्यल्क्त के साथ िोतेिैं, ल्जसे िर् बुित प्ेरेर् करते िैं, तो िर् सन्तुष्ट िोतेिैं और यि प्रश्न निहं ंउठता कक िर् ककसशिए जी रिे िैं और िर्ारा जन्र् ककसशिए िुआ िै। िर् जानते िैं कक िर् प्ेरेर् और शर्त्रता के शिए पैदा िुए िैं।

---

312 सइर्ार्एर्वात्र्ानेद्वेधापातयत्ततः पततश्च्ःप्त्नी चाभर्वतार्।ः बृिदारण्यक उप० ,1-4-3

वर्ववर्ा और प्ऱेर्

कुछ वर्ववर्ा ऐसे भी िोर्ते िैं, जो प्राखणिास्त्रीय स्तर पर िी रि जाते िैं। वे प्ऱेर् के उदािरण निीं, अवपतु यौन-उपभोग और पिावर्वक इच्छा के उदािरण िैं, जो आवेि िून्य और स्वाथपूमण िोती िै। इन ऱार्ऱों ऱें एक संगी की ऱृत्यु का अथ म"एक आदत के छूट जानेका दुःख अधधक िोता िै और एक व्यल्क्त के छूट जानेका दुःख कर्।" यहद वर्ववर्ा को केवि कतव्मय और सुवर्वधा की वस्तु ऱाना जाए, तो यि एक सीशर्त प्रयोजनर्वाि उपयोधगतार्वादह संस्था बन जाती िै।'[313] यि स्वाभावर्वकता ऱनुष्य पर कुछ प्रततबन्ध िार्व देती िै, जो प्रततबन्ध के रूप ऱें अनुभर्व िोता रिता िै, क्योंकक प्ऱेर् तो र्वाििा निीं। वे वर्ववर्ा भी, जो धन या पद की इच्छा से ककए जाते िैं, बिुत बार सऱृद्धतर और गम्भीरतर वस्तु के रूप ऱें वर्वकशसत िो सकते िैं। प्ऱेर्पूण मसल्म्ऱिन का आनन्द वििं वर्वकशसत िो सकता िै। ककसीकी पत्नी िोना एक संयोगऱात्र िै, ककन्तु प्ऱेर् करना र्वास्तवर्वकता िै।

एक ऐसा भी दृल्ष्टकोण िै, जो यि ऱानता िै कक वर्ववर्ा की संस्था की प्रकृतत ऱें िी कुछ घातक तत्त्व वर्वद्यऱान िैं। 31[4]र् असुख के पीछे भटकते प्रतीत िोते िैं। तनवषद्ध वस्तु िऱें आकवषकम करती िै और अकट्टर प्ऱेर् बिुत कुछ ऱानवीय असुख, संन्यास, धर्मऱाग,म वर्वच्छेद, पश्चात्ताप और वर्वद्रोि का कारण िै। उपन्यास और धचत्रपट जीर्वन के र्वासनात्ऱक पििू का अततरंजन करते िैं और यि सऱझा जाता कक वे िऱें याल्न्त्रक उकतािट से छुटकारा हदिाते िैं। अर्वैध यौन सम्बन्ध सभ्य िोगों का ऱुख्य धन्धा प्रतीत िोते िैं।

कभी-कभी गम्भीर प्ऱेर् और वर्वस्फोटक र्वासना ऱें घपिा िो जाता िै। िऱ् सऱझते िैं कक जब िऱें कोई आर्वेिपूण मअनुभर्व िो रिा िो, कुछ चक्कर-सा आ रिा िो, बबना चेतना के और बबना इच्छा के ऱन पर कुछ बादि-सा छाया िो, तो िऱ् अधधक पूणतमा और तीव्रता के साथ जी रिे िोते िैं। यि वस्तु एक रूपान्तरकारह िल्क्त सऱझी जाती िै। कुछ ऐसी वस्तु, जो आनन्द और कष्ट के ऊपर िै, एक आर्वेि-भरा ज्वर, एक उत्तेजनापूण मजीर्वन, जो सब रूहढयों को और सब कानूनों को एक स्वाभावर्वक और हदव्य वस्तुके नाऱ पर तोड़ डािता िै। इस प्रकार के सम्बन्धों ऱें कुछ दुःखान्तता रिती िै, जो थकानेर्वािी अधधक और सिायक कऱ िोती िै। जब िऱ् र्वासना की िल्क्त के अधीन िोते िैं, तो िऱ् अपने-आपऱें निीं िोते। र्वासना ऱनुष्य का अपने हृदय ऱें िी बैठा िुआ ित्रु िै,

---

313 एच० जी० वेल्स ने शिखा िै : "वर्ववर्ा की पररभाषा एक ऱूखतमापूण मसौदे के रूप ऱें की गई िै, ल्जसऱें एक पुरुष दूसरे पुरुष की कन्या के भरण-पोषण का प्रबन्ध करता िै। परन्तु इस बात के शिए कोई कारण निीं कक यि भरण-पोषण इतनी दूर तक क्यों जाए कक उस कन्या की शिक्षा पूरह करना भी सल्म्ऱशित कर शिया जाए।"

314 सत्रिवीं ितादददह के राजतन्त्रोद्ध्वार काि के नाटककारों का वर्वश्र्वास था कक वर्ववाहित प्ऱेर् उबानेवािी वस्तु िै। र्वान िच ने इस प्रवृत्त का दातयत्व सर जौन छूट के शसर बााि िै, प्ऱेर् भी ककतना उबानेवािा ऱांस िै - जबकक वर्ववर्ा के शिए चटनी िै। वर्ववर्ा के दो वषों ऱें ऱेरह सूकूऱ् अनुभूततयां नष्ट िो गई िैं। कोई िड़का अपनेशिक्षक से इतना ऊबा िुआ न िोगा, कोई िड़की अपने गिे की गततया (ठोड़ी के नीचे बांधनेका कपड़ा) से, कोई साधुनी प्रायल्श्चत्त करने से और कोई वृद्धा कुऱारह ह्चियपमिान से इतनी ऊबी िुई न िोगी, ल्जतना ऱ् वर्ववाहित िोने से ऊब गया िूं। अर्वश्य िी पती िदद को िी कोई गुप्त अशभिाप िगा िुआ िै।" "स्ती िोना काफी िै। जिां तक ऱुझे ऱािूऱ् िै स्हि ऱें कोई पाप निीं िै। परन्तु वि पत्नी िोती िै और पत्नी को िानत।" प्रोर्वोक्ड र्वाइफ, 1-1, 2-1

ल्जससे उसे संघष मकरना ि◌ै। यि एक दूवूषत अततरेक ि◌ै; प्रकृतत की एक ऐसी ि◌ल्क्त, जो प्ेरेशर्यों को जकड़ देती ि◌ै और सार्ान्यतया उनका वर्विनाि करके ि◌ह सर्ाप्त ि◌ोती ि◌ै। प्ेरेर् कोई दौरा निहं ि◌ै, यि तो अपने वप्रयतर् के प्रतत गम्भीर आत्र्सर्पणम और उसके साथ एकात्र्ीकरण ि◌ै। ि◌र्ें पररो्च्य र्वस्तु की तुच्छ र्वस्तु से सर्ता निहं ◌ंकरनी चाहिए। र्वासनात्र्क प्ेरेर् की उते्तेजनाओंका गम्भीर प्ेरेर् के साथ घपिा निहंकरना चाहिए।
प्ेटो ने अपने 'फैड्रूस' और 'हद शसम्पोल्ज़यर्' र्ें एक ऐसे उन्र्ाद का उलिेख ककया ि◌ै, जो ि◌रहर से फैिता ि◌ुआ सांघाततक नोर्विनोदों से आत्र्ा तक को आक्रांत कर ि◌ेता ि◌ै। इस प्रकार के प्ेरेर् को र्वि प्रिसंनीय निहंर्ानता। परन्तु एक और प्रकार का उन्र्ाद या प्रिाप ि◌ै, जो र्नुष्य की आत्र्ा र्ें बबना स्र्वग मकी प्ेरेरणा के उत्पन्न निहं ◌ं ि◌ोता। यि ि◌र्ारे शिए बबिकुि नई र्वस्तु ि◌ै। इसका जादू ि◌ूर्पर बिार से छा जाता ि◌ै। यि एक प्रकार का उत्तारण ि◌ै, एक ऐसा असीर् आनन्द, जो तकम और स्र्वाभावर्वक इल्न्द्रयों से परे ि◌ै। इसे सर्ुत्सिा (ऐन्थ्यूल्ज़याज़्र्) किा जाता ि◌ै, ल्जसका र्वस्तुत अथ मिै "परर्ात्र्ा द्र्वारा आवर्वष्ट", क्योंकक यि उन्र्ाद न केर्वि स्र्वग मसे आया ि◌ोता ि◌ै, अवपतु इसका अन्त भी सर्वोच्च ल्स्थतत र्ें पिुंचकर हदव्यता की एक नई प्राल्प्त र्ें ि◌ोता ि◌ै। यि पागिपन और सर्वोच्च र्ानशसक स्र्वस्थता दोनों ि◌ह ि◌ै।

आदि मनारह उस प्ेरेर् की प्रतीक ि◌ै, जो ि◌र्ें खींचकर उच्चतर् ल्स्थतत की ओर िे जाता ि◌ै। ि◌र्ें स्त्री को केर्वि आनन्द का साधन निहं सर्झना चाहिए। यि सच ि◌ै कक र्वि नारह ि◌ै र्वि सिायता करनेर्वािह भी ि◌ै, परन्तु सबसे पििे और सबसे र्ित्त्वपूण मर्वि एक र्ानर्व-प्राणी ि◌ै। उसके साथ पवर्वत्रता और रिस्य जुड़ा ि◌ुआ ि◌ै। उसके साथ उसे चि सम्पवत्त या नौकरानी या घर की देखभाि करनेर्वािह गृहिणी सर्झकर ि◌ह व्यर्विार निहंककया जाना चाहिए। उसर्ें भी आत्र्ा ि◌ै और सार्ान्यतया र्वि पुरुष के र्वास्तवर्वकता तक पिुंचने के शिए एक सेतु ◌ुका कार् करती ि◌ै। यहद ि◌र् उसे केर्वि गृहिणी या र्ाता बना देते ि◌ैं और उसका स्तर घटाकर उसे सार्ान्य बातों की सेर्वाओं र्ें िगा देते ि◌ैं, तो उसका सर्वोत्तर् अंि अशभव्यक्त निहं ◌ंि◌ो पाता। पुरुष की भांतत प्रत्येक स्त्री को भी अपनी आर्वि की आग को, हृदय के उत्तारण को और आत्र्ा की ज्र्वािा को वर्वकशसत करने का अर्वसर शर्िना चाहिए। रर्वीं बाबू ◌ू की धचना किती ि◌ै, "र् ◌ैंधचत्रा ि◌ंू◌ं। न तो र् ◌ैंदेर्वी ि◌ंू◌ं, ल्जसकी कक पूजा की जाए; और न र् ◌ैंकोई दया की पात्न ि◌ंू◌ं चींटह की भांतत उपेक्षा से ि◌टाकर अिग कर हदया जाए। यहद तुर् संकट और सािस के र्ाग मर्ें र्ुझे ◌ेअपनेसाथ रखोगे और अपनेजीर्वन के र्िान कतव्मयों र्ें र्ुझे ◌ेहिस्सा बंटाने दोगे, तब तुर् र्ेरे र्वास्तवर्वक रूप को सर्झ पाओगे।" वर्वर्वाि की संस्था को इस बात को र्ानकर चिना चाहिए। सुखी प्ेरेर् का कोई इततिास निहं ि◌ोता। ि◌र् प्ेरेर् के वर्वषय र्ें तभी चचामकरते ि◌ैं, जबकक र्वि अभाग्यग्रस्त ि◌ो और जीर्वन द्र्वारा अशभिप्त ि◌ो।

एक कुछ ऐसी अस्पष्ट-सी धारणा चिह आ रिह ि◌ै कक वर्वर्वाि और प्ेरेर् परस्पर बेर्ेि ि◌ै।[315] कभी-कभी किा जाता ि◌ै, "वर्वर्वाहित र्नुष्य प्ेरेर् के वर्वषय र्ें जानता ि◌ह क्या ि◌ै?" "र्वे एक-दूसूरे को इतना अधधक चािते ि◌ैं कक

315 काउंटेस ऑफ ि◌म्पेन के घर र्ें प्ेरेर् के न्यायािय द्र्वारा सुनाए गए एक प्रद्धधस तनणयम र्ें यि किा गया ि◌ै, "ि◌र् इस बात को घोवषत और पुष्ट करते ि◌ैं कक इन उपिारों के प्रयोजन की दृल्ष्ट से प्ेरेर् अपने अधधकारों का वर्वस्तार दो वर्वर्वाहित व्यल्क्तयों के ऊपर निहं कर सकता। क्योंकक प्ेरेर्ी एक-दूसूरे को अपनी सब र्वस्तुएं, स्र्वतन्त्रतापूर्वकम देते ◌ेऔर ि◌ेते ि◌ैं, चािे उनकी आर्वश्यकता ि◌ो या निहं: जबकक पतत और पत्नी का यि कतव्मय ि◌ोता ि◌ै कक र्ेव एक-दूसूरे की इच्छा के आगे शसर झुकाएं

उनका वर्वर्वा िो िह निहंसकता था।" वर्वर्वा प्ेरेर् की कि निहीं, अवपतुजैसाकक क्रोचेका कथन िै, वि केर्वि बबरम प्ेरेर् या कार्-र्वासना की कि िै। जब िक्ष्य पूण मिो जाता िै, तब प्ेरेर् और वर्वर्वा दोनों साथ वर्वद्यर्ान रिते िैं, परन्तु यि र्ाग मबुित िम्बा और कहठन िै। प्ेरेर् वर्वर्वा-सम्बन्ध का प्रारम्भ-बबन्दु ुनिहं िै, अवपतु एक उपिल्दध ै, ल्जसे प्रयि और धीरता द्रवारा प्राप्त ककया जाना िै। वर्ववाहित जीर्वन र्ें असफिताएं उन िोगों र्ें अधधक िोती ैं, जो प्रारम्भ िह एक शर्थ्या आदि मसे करते िैं और यि आदि मप्रारल्म्भक प्ेरेर् और उर्ंगपूण मआनन्द पर आधाररत रिता िै। जब वर्वर्वा की नर्वीनता सर्ाप्त िोने िगती िै, नये अनुभर्वों की उत्ेतेजना और भार्वना-प्रधान स्र्वप्नों का स्थान जीर्वन की नीरसता और तनत्य की हदनचयाम िे िेती िै, तब भार्वुक प्ेरेर्ी अभ्यासगत पतत के रूप र्ें वर्विहन िो जाता िै और असंयत उलास घरिू ूसन्तुल्ष्ट के रूप र्ें िान्त िो जाता िै। वर्वर्वा गिुाबों और स्र्वप्नों का अन्तिहन दौर निहं िै; यि तो िान्त आनन्द के शिए तैयारह िै। आनन्द क्षखणक िोता िै और कििा तथा दिे की दुघुटमनाओंका इसपर प्रभार्व पड़ता िै। जीणतमा र्ें, जो सब नश्र्वर र्वस्तुओंकी प्रतीक्षा र्ें खड़ी िै, िरहर के सौन्दय मऔर र्वासना की आग को नष्ट कर देनेकी िल्क्त िै, ककन्तु वि उस अनश्र्वर आनन्द को नष्ट निहं ंकर सकती, जो संयर् का पुरस्कार िै। िर्ारह र्वांतछत र्वस्तु िरहर निहं िै, जो र्वास्तवर्वक पूण मजीर्वन का एक भ्रार्क और क्षखणक पिपू िै। वर्ववाहित युगि की पारस्पररक तनष्ठा िै अपने साथी-प्राणी को अंगीकार करना, दूसूरे को उसकी सब वर्विेषताओं (गुण-दोषों) के साथ अपनानेकी इच्छा। कुछ र्वषों के बाद प्रारल्म्भक उर्ंगों और असंयत उत्ेतेजना का स्थान वर्वश्र्वासपूण मसिाचय,म काय मऔर रुधचयों र्ें हिस्सा बांटना, सहिष्णुता और सर्झौता िे िेते िैं। वर्वर्वा र्ें आनन्द प्राप्त करने ेके शिए उदारतापूण मआत्र्त्याग, अन्तिहन सहिष्णुता और भद्रता तथा हृदय की वर्वनम्रता की आर्वश्यकता िोती िै।

यि वर्वचार िह, कक वर्वर्वा से एक व्यल्क्त को दूसूरे पर स्र्वाशत्र्व का अधधकार प्राप्त िो जाता िै, सच्चे प्ेरेर् के वर्वकास का वर्वरोधी िै।'[316] सुरक्षक्षतता की भार्वना िह आर्वेि को न्यून कर देती िै। आदत अनुभूततयों को तनजीर्व कर देती िै, नोर्वेगों को र्ार डािती िै और आत्र्ा को तृलूप्त और िातन दोनों के प्रतत सर्ान रूप से अंधा कर देती िै।

िर्ारा िक्ष्य तनष्ठिी एकवर्ववाहि वर्वर्वा का आदि मिोना चाहिए, यद्यवप इस िक्ष्य तक पिुंच पाना कहठन िै। संसार की र्िान प्ेरेर्कथाएं तनष्ठिी प्ेरेर् की िह कथाएं िैं। कष्टों और र्वेदनाओंर्ें भी तनष्ठा को बनाए रखना िह वि र्वस्तु िै, ल्जसने संसार को द्रवर्वत कर हदया िै और उसकी श्रद्धांजशि प्राप्त की िै। संसार के र्िानतर् वर्वचारकों र्ें से एक ने कििा िै, "सच्चेप्ेरेर् का र्ाग मकभी सुगर् निहं ंरिा," भिे िह यहद िर्

और एक-दूसूरे को ककसी बात से इन्कार न करे।" 1174 के र्वष मर्ें ई के तीसरे हदन सुनाया गया; घोषणा 7 । डेतेनस डड रुजर्ेण्ट द्रवारा 'पैन एंड सोसाइटह' र्ें उद्धृत अंग्रेजी अनुर्वाद (1940), पृष्ठ 42

316 सकिै: नायकगुणै: सहित: सखख र्े पतत:
स एर्व यहद जार: स्यात् ्सफिे र्ें जीवर्वतर्।्

सिल्जया सम्प्रदाय के िोगों का वर्वश्र्वास िै कक परर्ात्र्ा के शिए जैसेतीव्र प्ेरेर् की अनुभूतत र्नुष्य को िोनी चाहिए, वि केर्वि गुप्त और तनवषद्ध प्ेरेर् र्ें िह सम्भर्व िै।

सौभाग्यिाह िों, तो सुसंयोग से इस र्ाग मपर चि पड़ें। वर्वविा एक किा िै, ल्जसर्ें कष्ट और आनन्द, दोनों िह िीिेिैं। वर्वविा से जीर्वन की कहठनाइयों का अन्त निहं,ं अवपतु आरम्भ िोता िै। वर्वविा को सफि बनानेके शिए पतत-पत्नी दोनों के प्रयि की अपेक्षा िै, परन्तु उसे वर्वफि बनानेके शिए दोनों र्ें से कोई भी एक काफी िै। यि एक ऐसी साझेदारह िै, ल्जसर्ें धैय मकी बड़ी आर्वश्यकता िोती िै। यि कोई परहक्षण निहीं, अवपतु एक गम्भीर अनुभर्व िै, जो यद्यवप िरूु र्ें बिुत सुकुर्ार और भंगुर िोता िै, परन्तुर्वेदनाओंऔर कष्ट र्ें बढता िह जाता िै। द्रौपदह सत्यभार्ा से किती िै कक "सुख सुख से निहं शर्िता, अवपतुसाध्र्वी नारह कष्टों र्ें िह सुख का अनुभर्व करती िै।'[317] ल्जस स्त्री ने वर्वपवत्तयां निहं ंसिहं, र्वि अपूण मिै, क्योंकक कष्टों द्र्वारा उसका पार्वनीकरण निहं ंिुआ। उर्ा ने शिर्व पर अपने िारहररक सौन्दय मद्र्वारा वर्वजय निहंपाई, अवपतु तप और कष्टसिन द्र्वारा पाई। ल्स्त्रयों र्ें कष्टसिन की एक वर्वशिक्षण िल्क्त िोती िै; और यहद र्वे उस िल्क्त के प्रतत सच्ची न रिें, तो र्वे जीर्वन को सर्द्ृध करने ंकी अपनी एक प्रततभा गंर्वा बैठती िैं। काशिदास ने अपने'िाकुन्ति' र्ें हदखाया िै कक ककस प्रकार दो प्रेर्ी आत्र्ाएं कष्ट द्र्वारा रूप धारण करती िैं और एक-दूसूरे के अनुकूि ढिती िैं। देर्वता भी वर्वधचि िैं। िर्ें जो कुछ अच्छा, भद्र, र्ानर्वोधचत और प्रेर्र्य ंिै, उसीके द्र्वारा र्वे िर्ें कष्टों र्ें िा पटकते िैं। र्वे िर्ारे पास कष्ट इसशिए भेजते िैं कक िर् र्ानतर बातों के शिए उपयुक्त बन सकें। िताल्ददयों की परम्परा ने भारतीय नारह को सारे संसार र्ें सबसे अधधक तन:स्र्वाथ,म सबसे अधधक आत्र्त्यागी, सबसे अधधक धैयमिी और सबसे अधधक कतव्मयपरायण बना हदया िै। उसे अपनेकष्टसिन पर िह गर्व मिै।

वर्वविा अपने-आपर्ें कोई साध्य निहं िै। यि तो आत्र्-पूणतमा प्राप्त करने ंका सार्ान्य साधन िै। र्ानर्वीय सम्बन्ध िर्ारे जीर्वन का सर्वाधमधक र्वैयल्क्तक अंग िै, ल्जनर्ें िर् अपने पूण मरूप र्ें जीवर्वत रि सकते िैं। सार्वजमतनक जीर्वन र्ें िर्ारह सत्ता के केर्वि कुछ िह अंग काय मकरते िैं। िर्ारे र्वैयल्क्तक जीर्वन का, जो प्रेर् और सिाचय मिै, अपने-आपसे आगे और कोई िक्ष्य निहीं। र्ानर्व-प्राखणयों के शिए यि बबिकुि स्र्वाभावर्वक िै कक र्वे दूसूरों के अनुभर्वों र्ें हिस्सा बटाएं, एक-दूसूरे को सर्झें, और पारस्पररक वर्वश्र्वास र्ें आनन्द और सन्तोष अनुभर्व करें। इस प्रकार के सम्बन्ध ककसी आंशिक या सीशर्त प्रयोजन को पूरा निहं ंकरते और न उनका अल्स्तत्र्व िह सर्ाज के शिए िोता िै, अवपतु सर्ाज और कानूनों का अल्स्तत्र्व िह उन सम्बन्धों के शिए िोता िै। िोगों के कुछ ऐसे संगठन िोते िैं, जो र्वैयल्क्तक निहंिैं, उनर्ें व्यल्क्त का स्थान इस बात से तनधारमरत िोता िै कक र्वि उस सर्ूि र्ें क्या कृत्य करता िै; उस वर्वशिष्ट सेर्वा से, जो र्वि उस सारे सर्ूि के कलयाण के शिए करता िै। जब िर् ककन्िहं सांझेउद्देश्यों को पूरा करने के शिए दूसूरे िोगों के साथ सम्बन्ध स्थावपत करते िैं, तो कृत्यात्र्क सर्ूिों के सार्ाल्जक सियोग का जन्र् िोता िै। शभर्वन्त न िोने ंदेनेके शिए और सांझे ंउद्देश्यों को पूण मकरनेके शिए िर् कानून द्र्वारा िागू ककए अथर्वा प्रथा द्र्वारा बनिुए तनयर्ों और वर्वतनयर्ों की वर्वर्वतततमा स्र्वीकार करते िैं। क्योंकक व्यल्क्त सर्ाज का सदस्य िै, इसशिए सर्ाज को व्यल्क्तयों की स्र्वतन्त्रता पर प्रततबन्ध िगानेका अधधकार िै। सुव्यर्वल्स्थत सर्ाज र्ें ये प्रततबन्ध व्यल्क्तगत स्र्वाधीनता पर बन्धन के रूप अनुभर्व निहं िोंगे। क्योंकक वर्वविों का पररणार् सर्ाज पर पड़ता िै, इसशिए वर्वविा करनेके सम्बन्ध र्ें

317

सुखसुखेनेिनजातुिभ्यंदु:खेनसाध्र्वी िभते ंसुखातन। - र्वनपर्वम,233-4

साराल्जक वर्वधान संहिताएं बनाई गई िैं। साराल्जक कानून अपने- आपर्ें साराल्जक दोषों और बुराइयों के शिए कोई सार्वभमौर् रार्बाण औषध निहं िैं। नुष्य के बनाए िुए कानून कभी भी अपने-आपको रानर्व-र्न की रौज के अनुकूि निहं ढिा सकते। परन्तु यहद ये कानून कठोर, िचकिहन िोंगे, तो सम्भर्व िै कक र्वे व्यल्क्तयों के रूप र्ें चुनें नष्ट कर डिें और िर्ें जीर्वन के वर्वकृत और अथिमहन रागों का अर्विम्बन करने को वर्वर्वि कर दें।

हिन्दू–ूसंस्कार

वर्वर्वािा का हिन्दू ूआदि मसारतः एक पुरुष और एक स्त्री के बीच सिाचय मिै, जो जीर्वन के चार रिान क्षियों - धर्,म अथ,म कार्, रोक्ष-की शसद्धध के शिए शर्िकर सृजर्िनी बंग से जीर्वन बबताना चािते िैं। इसके प्रयोजन के अन्तगतम सन्तान का प्रजनन, उसकी देखभिा और पिान-पोषण और एक उत्कृष्टतर साराल्जक व्यर्वस्था र्ें सियोग देना भी िै, परन्तु इसका रुख्य िक्ष्य िै पतत और पत्नी के व्यल्क्तत्र्व को उनकी स्थायी सिाचय मकी आर्वश्यकताओं की पूतत मद्र्वारा सरृद्ध करना; ऐसे सिाचय मकी, ल्जसर्ें िरएक दूसूरे के जीर्वन का पूरक बन सके और दोनों शर्िकर पूणतमा प्राप्त कर सकें। वर्ववाहित युगि व्यल्क्तरूप र्ें एक-दूसूरे की सृलूष्ट िोते िैं। यि आदि मर्वैहदक कािा से चिा आ रिा िै और एक वर्विद वर्वर्वािा-संस्कार के रूप र्ें सुरक्षक्षत रखा गया िै। र्वि संस्कार आजकि भी प्रचशित िै। वर्वर्वािा-संस्कार नोर्वैगात्रक पररपक्कता की र्वृद्धध के शिए, ल्जसर्ें न्याय की, दूसूरों को सर्झने ेकी, दूसूरों का ध्यान रखनेकी और दूसूरों के प्रतत सहिष्णुता की भार्वनाएं उत्पन्न िोती िैं, प्राप्त िोने र्वािा एक रिान सुअर्वसर का प्रारम्भ िै। इसे सरि बनाया जा सकता िै, क्योंकक र्वे रित्र्वपूण मवर्वधधयां, ल्जनके द्र्वारा पतत-पत्नी को आदि मसर्झाए जाते िैं, केर्वि थोड़ी-सी िैं।

पिपा सोपान (स्टेज) िै पाखणग्रिण, ल्जसर्ें र्वर र्वधू का िाथ पकड़ता िै और उसके साथ यथोधचत न्त्र पढते िुए तीन बार अल्ग्न की पररक्रर्ा करता िै। पूषन्, ् भग और अथर्मन् ्को आिुततयां ंदह जाती िैं, जो क्रर्ः सरृद्धध, सौभाग्य और र्वैर्वाहिक तनष्ठा के देर्वता िैं। र्वर-र्वधू एक-दूसूरे के हृदय का स्पि मकरते िैं और प्राथनमा करते िैं कक भिै िह उनके िरहर दो िैं, पर र्वे र्न और हृदय से एक िो सकें। "तुम्िरि हृदय र्ें कभी दुःख प्रर्वि न करे; तुर् अपने पतत के घर जाकर फिो-फूिो; पतत के दहघ मजीर्वन और प्रसन्न बच्चों का सुख तुर्ें प्राप्त िो !" र्वे एक पत्थर पर चढते िैं और प्राथनमा करते िैं कक उनका पारस्पररक प्रेर्् उस पत्थर की भांतत दृढ और अचि िो, ल्जस पर र्वेखड़े िैं। रात र्ें उन्िें ध्रुर्व और अरुन्धती तारों के दिनम कराए जाते िैं। र्वर से किा जाता िै कक र्वि ध्रुर्व तारे की भांतत ल्स्थर रिे और र्वधू से कक र्वि अरुन्धती की भांतत पततव्रता रिे। 'सप्तपदह' की वर्वधध र्ें र्वर और र्वधू ू साथ-साथ सात कदर् चिते िैं और प्राथनमा करते िैं कक उनका जीर्वन प्रेर््, उलिास, सुअर्वसरों, सरृद्धध, सुख, सन्तान और पवर्वत्रता से भरा रिे। तब र्वर र्वधू से किता िै, "तू र्ेरे साथ सात कदर् चि चुकी िै; अब र्ेरह सिचरह बन। र् ैंतेरा साथी बनूं। तेरे साथ र्ेरे सिाचय मर्ें कोई बाधा न डिा पाए। जो िोग िर्ारे आनन्द को बढते देखना चािते िैं, र्वे र्ेरे साथ तेरे सम्बन्ध का सर्थनम करें।" र्वर और र्वधू िपथ िेते िैं कक र्वे धर्,म प्रेर्् और सांसाररक

सरूदृ्धध के क्षेत्रों र्ें एक-दूसूरे की आािाओं और आकांक्षाओं को प्रोत्साहित करेंगे।'[318] संस्कार इस प्राथनमा के साथ सर्ाप्त िोता िै कक यि उत्कृष्ट संयोग अवर्वच्छेद्य रि। "वर्वश्र्व के देर्वता िर्ारे हृदयों को शर्ीिकर एक कर दें, जि िर्ारे हृदयों को शर्ीिकर एक कर दें, र्ातररश्र्वा, धाता और द्र्वेष्टा िर्ें परस्पर घतनष्ठ रूप से बांध दें।"[319] र्वधू को आिीर्वादम हदया जाता िै कक र्वि अच्छी पत्नी बने और उसका पतत धचरकाि तक जीर्वर्वत रि।320 सप्तपदह की वर्वधध के बाद र्वधूपतत के पररर्वार र्ें आ जाती िै। इसके पूरा िोते िह वर्वर्वाि पूण मिुआ सर्झा जा सकता िै। कुछ अन्य िोगों का कथन िै कक वर्वर्वाि की पूणतमा के शिए संभोग िोना आर्वश्यक िै। वर्वर्वाि के बाद तीन रात तक दोनों को एक िह करें र्ें, पर अिग-अिग बबस्तरों पर सोना िोता िै और कठोरतापूर्वकम ब्रह्मचय मका पािन करना पड़ता िै।321 यि इस बात को सूधचत करनेके शिए िै कक वर्वर्वाहित जीर्वन र्ें आत्र्-संयर् बिुत आर्वश्यक िै। र्वधू और र्वर अपनेपवर्वत्र ब्रह्मचयपूमण मजीर्वन िेकर वर्वर्वाि तक पिुंचते िैं। र्वे अपनेकौर्ाय मकी रक्षा करते िैं और वर्वर्वाि के सर्य उसे उपिार के रूप र्ें अपनेसाथी को सर्वपतम करते िैं। कोई अन्य उपिार इसकी कर्ी को पूरा निहं कर सकता।322

पत्नी की ल्स्थतत बिुत ऊंची िै। उसे गृिस्र्वाशर्नी बनना िै और ससुर और सास, ननदों तथा अन्य िोगों पर उसका िासन रिना िै।'[323] र्वि जीर्वन र्ें प्रभार्वी साझी िै।324 धाशर्कम कृत्यों, व्यार्वसातयक र्ार्िों और

---

318 ईसाई नर्त से तुिना कील्जए, "र्ैं तुझेअपनी वर्वर्वाहिता पत्नी अंगीकार करता िूं, आज के हदन से भिे र्ें और बुरे र्ें, अर्ीरह र्ें और गरहबी र्ें, बीर्ारह और स्र्वास्थ्य र्ें, तब तक, जबकक र्ृत्यु िह िर्ें अिग न कर दे, र्ैं तेरा साथ पाऊंगा और दूंगा... और तब तक के शिए र्ैं तुझेअपनी तनष्ठा का र्वचन देता िूं।"

319 सर्ञ्जन्तु वर्वश्र्वेदेर्वा:, सर्ापो हृदयातन नौ

सम्र्ातररश्र्वा, संधाता सर्ुद्रेष्ट्र दधातु नौ। ऋग्र्वेद 10-85-37

320 अवर्वधर्वा भर्व र्वषाखमण िंतसायं च सुव्रता

तेजस्र्वी च यिस्र्वी च धर्पमत्नी पततव्रता।

321 "एक सिा तक (वर्वर्वाि के हदन के बाद) उन्िें संयोग निहं करना चाहिए, या बारि रात तक, या छः रि तक; या कर् से कर् तीन रात तक।" (संर्वत्सरं न शर्थुनर्पेयातां, द्र्वादिरात्रं, षडार्वं, बत्ररिर्न्तत:) पारस्कर गृह्यसूत्र 1-8-1

स्पाटाम के िास्त्रकार नेभी नर्वर्वर्वाहित पततयों को काफी सर्य तक संयर् से रिने का आदेि हदया िै।

322 हिन्दू-परम्परा र्ें ब्रह्मचय मऔर नारहत्र्व के गौरर्व के प्रतत आदर रखने पर बिुत बि हदया गया िै। जब रार् और िक्ष्मण सीता की खोज र्ें कफर रि थे, तब सुग्रीर्व नेउनके सार्ने कुछ आभूषण, जो सीता ने अपने र्ाग-मधचन्ि के रूप र्ें फेंके थे, पिचानने के शिए िा रखे। रार् की आंखें आंसुओंसे धुंधिह िो रिह थीं, इसशिए उन्िोंने िक्ष्मण से आभूषणों को पिचानने के शिए किा। िक्ष्मण ने उत्तर हदया कक र्ैं केयूरों और कुण्डिों को निहं पिचान सकता, िां, नूपुरों को अर्वश्य पिचान सकता िूं, क्योंकक र्ैं तनत्य उनके चरणों र्ें नर्स्कार ककया करता था।

नािं जानाशर् केयूरे, नािं जानाशर् कुण्डिे

नूपुरे त्र्वशभजानाशर्, तनत्यंपादाशभर्वन्दनात्।

323 सम्राज्ञी श्र्वसुरे भर्व, सम्राज्ञी श्र्वश्रुर्वां भर्व ननान्दरर सम्राज्ञी भर्व, सम्राज्ञी अधध देर्वृषु।

324 अध मभाया मिरहरस्य। ("स्त्री पुरुष के िरहर का आधा भाग िै।")

भार्वर्य जीर्वन र्ें उसकी उपेक्षा निहं ्की जानी चाहिए। सारे थाशर्कम कृत्य पतत-पत्नी को साथ शरि् कर िह करने चाहिए।325

सीता के तनर्वामसन के सर्य रार् ने सीता की स्वणरू्मतत मअपने पास रखकर यज्ञ की वर्वधधयांपूरह की थीं। कुलिूक ने र्नुसूतृत'[326] पर टहका करते िुए र्वाजसनेयी िाह्णण से एक अंि उद्धृत ककया िै, जो इस प्रकार िै, "पुरुष अपना केर्वि आधा भाग िै। जब तक उसे पत्नी प्राप्त निहं ्िोती, र्वि अपूण मरिता िै और इस शिए पूरह तरि उत्पन्न (जात) निहं ्िोता। जब र्वि पत्नी को ग्रिण करता िै, तभी र्वि पूरह तरि उत्पन्न िोता िै और पूण मबनता ि।" इसशिए र्वेदवर्वद् िाह्णण किर्ते िैं, "ल्जसे पतत सर्झा जाता िै, र्विह पत्नी भी िै।"[327] अधनमारहश्र्वर की र्ूतत म 'भारत द्र्वारा नर-नारह के पारस्पररक सम्बन्धों को र्ान्यता देने की प्रतीक िै; र्वि सियोगात्र्क, परस्पराधश्रत पुरुषोधचत और स्त्रीजनोधचत कृत्यों की, जो अिग रिते िुए अपूण मरिते िैं और शर्िकर परस्पर पूण मिो जाते िैं, एक धारणा िै। "पतत और पत्नी एक-दूसूरे के सर्वोत्तर् शर्त्र िैं; शर्न्नता, जो सब सम्बन्धों का सार िै, यिां ्तक कक स्र्वयंजीर्वन िह िै। इसी प्रकार पतत-पत्नी के शिए और पत्नी पतत के शिए िै।328 सीता अपनेपतत के कष्टों र्ें हिस्सा बंटाने के शिए र्वनर्वास र्ें गई। गान्धारह ने अपनी आंखों का उपयोग करने ्से इन्कार कर हदया, ल्जससे उसे र्वि सुख प्राप्त न िो, जो उसके पतत को प्राप्त निहं ्िै। आदि मपत्नी अपनी सिज्ज सुकुर्ारता, र्नोजयी र्ुस्कान और अच्छे सिाचय मद्र्वारा पतत के शिए अनन्त तृप्ल्त का साधन िोती िै।'[329] जो पत्नी अपनेपतत के सुख और कलयाण का ध्यान रखती िै, ल्जसका आचरण पवर्वत्त िै और जो अपने-आपको र्वि र्ें रखती िै, र्वि इस

---

325 धर्े च अथ मच कार्ेच अनततचररतव्या
सिधर्ाःम चररतव्याः सिापत्ये उतादतयतव्यर् ्।

वर्वर्वेकानन्द ने र्वणनम ककया िै कक ककस प्रकार रार्कृष्ण परर्िंस पत्नी के प्रतत अपने कतव्मय का पािन करने के शिए अपनेजीर्वन के उद्देश्य का भी बशिदान करने को तैयार थे। उन्िोंने अपनी पत्नी से किा था, "र्ैं स्त्रीर्ा् को र्ातृरूप र्ें देखना सीख शिया िै। तुर्िें भी र् ्ैंकेर्वि र्ाता िह सर्झ सकता िं्ूू। परन्तु यहद तुर् र्ुझेकफर संसार र्ें घसीटना चािती िो, तो, क्योंकक र्ेरा तुर्से वर्ववर्वाि िुआ िै, र् ्ैंतुम्िारह सेर्वा के शिए तैयार िं्ूू।" इस प्रकार यहद रार्कृष्ण अपने अभीष्ट जीर्वन-र्ाग मपर चि सके, तो इसीशिए कक उन्िें अपनी पत्नी की सिर्तत प्राप्त िो गई थी। - 'कम्प्िहिट क्लस, तृतीय संस्करण (1928) 6-169

326 9-45
327 अर्धो हि एष आत्र्नः, तस्र्ात् ्जायां न र्वर्वन्दते, नैतार्वत् ्प्रजायते, असर्वों हि तार्वद् भर्वल्न्त। अध दैर्व जाया र्वर्वन्दते, अथ प्रजायते, तहि मसों भर्वतत। तथा च एतद् र्वेदवर्वदो र्वप्राः र्वदल्न्त, यो भताम सैर्व आयामस्ता म।-9-45

328 भैयो शर्न्न बन्धुता र्वा सग्रा सर्वे कार्ाः सेर्वधधजीर्वर्वत र्वा स्त्रीणांभती धर्ादमरश्च पुष्प इत्यन्योन्ये र्वत्सयोः ज्ञातस्तु । - र्ातीर्ाधर्व 6-18 साथ िह देखखए, उत्तर रार्चररत 6-39
अद्र्वैत सुखदुःखयोरनुगुण सर्वास्मर्वर्वस्थासु यत् ्
वर्वश्रार्ो हृदयस्य यत्न जरसा यल्स्र्न् ्न िायो रसः ।

329 तुिना कील्जए :
कायेषु र्न्त्री, करणेषु दासी, भोज्येषु र्ाता, ियनेषु रम्भा
धर्ानुमकूिा क्षर्या धररत्री, साद्गुण्यर्ेतद्धि पततव्रतानार् ्।

िकि र्ें यि प्राप्त करती िै और परिोक र्ें उसे परर् सुख शरि्ता िै।330 कातिदास की बात से ध्वतनत िोता िै कक जैसे िददों के साथ उनका अथ मजुड़ा रिता िै, उसी प्रकार पतत और पत्नी भी सदा सम्बद्ध रिते िैं।'[331] सीता अनुसूया को बताती िै। कक उसका पतत उसे उसी प्रकार प्ेरेर् करता िै, जैसे वपता या र्ाता करती िै।'[332] यि िै र्वि कलपना और आदि,म ल्जसकी ओर बढने के शिए नर और नारह दोनों प्रयत्निी रिते िैं।

सार्ाल्जक संरचना र्ें परर्वार एक आर्वश्यक तत्र्व िै। इस परर्वार द्र्वारा िि गृिस्थ व्यल्क्त र्ुल्क्त प्राप्त करता िै। र्वशिष्ठ का कथन िै कक गृिस्थ का जीर्वन सेर्वा और तपस्या का जीर्वन िै और सब आश्रर्ों र्ें यि आश्रर् र्विेषे रूप से उत्कृष्ट िै।333 केर्वि पत्नी और बच्चों के िोनेसे िि कोई घर घर निहंबन जाता, अवपतु सार्ाल्जककतव्मयों का पािन करने ेसे बनता िै।"[334] "जो गृिस्थ भगर्वान का भक्त िै, र्वि सच्चेज्ञान की खोज र्ें रिता िैऔर र्वि जो कुछ कर् मकरता िै, उसे भगर्वान को सर्वपतम कर देता िै।"[335]

330 पततवप्रयहितेयुक्ता स्र्वचारा संयंतेल्न्द्रया
इि कीततर्मर्वाप्नोतत प्ेरेत्य चानुयर्ंसुखर् ्।
साथ िी ि तुिना कील्जए :
पततव्रता पततप्राणा पत्युः वप्रयहिते र्ता
यस्य स्यादहदृी भायाम धन्यः स पुरुषो भुवर्व।
331 र्वागथावमर्वब संपृक्ृतौ र्वागथ मप्रततपत्तये
जगतः वपतरौ र्वन्दे पार्वतमीपरर्ेश्र्वरह।- रघुर्ंर्वं 1-1
332 र्ातृर्वत् ्वपतृर्वत् ्वप्रयः । रार्ायण र्ें कौिलया का धचत्रण इस रूप र्ें ककया गया िै कक स्त्री अपने पतत के शिए जो कुछ भी िो सकती िै, र्वि सब र्वि अपने पतत दिरथ के शिए थी।

यदा यदा हि कौिलया दासीबत् ्च सखीर्व च
भायार्वमद् भधगनीर्वत् ्च र्ातृर्वच्चोपततष्ठते े।

रघुर्ंर्वं र्ें कातिदास इन्दुर्ती के र्वर्वषय र्ें शिखता िै कक र्वि "गृहिणी सधचर्वः सखी शर्थः वप्रयशिष्या िशिते ेकिावर्वधी," थी। र्वैरािशर्िर किता िै:

जाया र्वा जनतयत्नी र्वा, सम्भर्वः स्त्रीकृतो नृणार् ्
िे कृतर्घनाः, तयोतनन्मदां कुर्वतमां ेर्वः कुतः सुखर् ्?

333 गृिस्थ एर्व यजते,े गृिस्थस्तप्यते ेतपः
चतुणा मआश्रर्ानां तु गृिस्थस्तु र्वर्विशिष्यते े।
334 गृिस्थोऽवप कक्रयायुक्तो न गृिेण गृिाश्रर्ी
न चैर्व पुनदारेण स्र्वकर् मपरर्र्वल्जतमः ।
335 . िह्रतनष्ठो गृिस्थः स्यात् ्तत्र्वज्ञानपरायणः
यद्यत् ्कर् मप्रकुर्वीत तद् िह्रखण सर्पयेमत् ्

वर्वर्वा के प्रकार

र्ाकाव्यों, सूतृतयों और धर्मास्त्रों र्ें आठ प्रकार336 के वर्ववार्ों का उलेख शर्ता ि ै, ल्जनर्ें प्राचीनतर सोपानों (स्टेज) के अर्वेषे भी सल्म्र्शत िैं, जो बाद के सर्य तक बचे ेरि गए थे। इनर्ें से कुछ के संकेत तो ऋग्वेद के कि तक र्ें भी ढूंढे जा सकते िैं। हिन्दू ूधर् मर्ें पुराने ेवर्वश्र्वासों और प्रथाओं को, जबकक र्वे पुराने ेपड़ गए िों, तब भी, उन्िें नि िटाकर, सुरक्षक्षत बनाए रखनेकी प्रर्वृत्त ि ै। इनर्ें से चार प्रकार अनुर्ोहदत िैं और िेषे चार प्रकार अनुधचत सर्झे ेजाते िैं।

पैाच वर्ववार्ा, ल्जसर्ें र्वधूपर बिपूर्वकम अधधकार ककया जाता ि ै, बुित तनम्न कोहट का वर्ववार्ा ि ै। र्वधू को धोखा हदया जाता ि ै या ककसी दर्वाई या पेय के कारण र्वि अपनेऊपर तनयंत्रण खो बैठती ि ै और उस र्ानशसक ल्स्थतत र्ें पतत के सम्र्ुख आत्र्सर्पणम कर देती ि ै। बौधायन किता ि ै, "जब कोई पुरुष ककसी कन्या से, जब र्वि सो रिह ि ो, अचेत ि ो या पागि ि ो, वर्ववार्ा करता ि ै, तो र्वि पैाच वर्ववार्ा किाता ि ै।"[337] इस प्रकार के वर्ववार्ा को प्रोत्सािन निहं हदया जाता और इसे बुित नीचा सर्झा जाता ि ै। परन्तुक्योंकक कुछ जाततयां इसका अर्वम्बन करती थीं, इसशिए इसे र्वैध र्ाना जाता था। इसके अततररक्त, ल्जस सर्ाज र्ें कुर्ारहत्र्व को पार्वन सर्झा जाता था, उसर्ें ल्जस कन्या का कुर्ारहत्र्व नष्ट ि ो गया ि ो, उसका सम्र्ानपूण मवर्ववार्ा ि ोनेकी कोई गुंजाइि निहं थी। इसशिए वर्वधानिाल्स्त्रयों ने यि तनयर् बनाया कक अपराधी िह उस स्त्री से वर्ववार्ा करे, ल्जसके प्रतत उसने अपराध ककया ि ै।

राक्षस-वर्ववार्ा उस कि की र्वस्तु ि ै, जब ल्स्त्रयों को युद्ध का पुरस्कार सर्झा जाता था। वर्वजेता र्वधूका अपिरण करके ि े जाता ि ै और उससे वर्ववार्ा कर िेता ि ै। कुछ र्ार्ों र्ें इसर्ें ल्स्त्रयों की भी शर्िह भगत रिती थी। रुल्क्र्णी, सुभद्रा और र्वासर्वदत्ता ने अपनेपततयों कृष्ण, अजुनम और उदयन की सिायता की थी, ल्जससे र्वे उन्िें भगा ि े जाएं। ऋग्वेद के कि र्ें, आय मिोग दास-कन्याओं से वर्ववार्ा कर िेते थे, े परन्तु इन सम्बन्धों को भी र्वैध र्ान शिया जाता था।

आसुर वर्ववार्ा र्ें र्वर कीर्त देकर र्वधू को खरहदता ि ै। यि वर्ववार्ा खरहद द्र्वारा ि ोने ेवर्वार्ा वर्ववार्ा ि ै।'[338] इसर्ें यि र्ान शिया गया ि ै कक स्त्री का कुछ र्ूल्य ि ै और र्वि बबना कुछ हदए प्राप्त निहं ंि ो सकती। वर्ववार्ा का यि प्रकार भी व्यर्विार र्ें था, पर अनुर्ोहदत निहं ंथा। जो जार्ाता र्वधू को कीर्त देकर खरहदता था, र्वि 'वर्वजानाता"[339] किा जाता था। ये तीनों प्रकार के वर्ववार्ा बबिकुि अनुधचत सर्झे ेजाते थे।

---

336 र्वशिष्ठ औरआपस्तम्ब केर्वि छ:प्रकार र्ानते िैं: ब्राह्र्, दैर्व, आष,म गान्धर्व,म क्षात (या राक्षस) और र्ानुष (आसुर)। गौतर् और बौधायन इनर्ें दो और जोड़ते िैं: प्राजापत्य और पैाच। र्िाभारत भी देखखए, 1-74-8-9

337 1-11-9 देखखए ऋग्र्वेद, 10-27-12

338

339 ऋग्र्वेद, 1-109-2। बौधायन (1-2-20-21) इसकी तनन्दा करता ि ै। साथ िह देखखए 'पद्र्पुराण, ब्रह्र्काण्ड, 24-26

गान्धर्व मववर्विा सार्ान्यतया अनुर्ोहदत ि◌ै, क्योंकक यि पारस्पररक सिर्तत पर आधाररत ि◌ै।'[340] प्ेरेर्ी अपनी वप्रयतर् को चुन ि◌ेता ि◌ै। 'कार्सूत्र' र्ें इस प्रकार के वर्विा को आदि मववर्विा र्ाना गया ि◌ै।341 स्वतन्त्र प्ेरेर् के वर्विा को सम्पन्न करनेके शिए कोई वर्वधध या संस्कार निहंतिा। आधी रात र्ें प्ेरेर्ी के साथ भागकर, र्ाता-वपता को अप्रसन्न करके तथा भार्वुकता की अन्य घटनाओं के साथ ककए गए वर्विा इस र्वग मर्ें आते ि◌ैं। इस प्रकार के वर्विा का सबसे रोचक र्ार्ि दुष्ुयन्त और ि◌कुन्तिा का ि◌ै, जो काशिदास के र्िन नाटक 'अशभज्ञानिाकुन्तिर् ्का वर्वषय ि◌ै। कवर्व यि संकेत करता ि◌ै कक इस प्रकार के वर्विा की, जो र्वासना के आर्वेग र्ें ककया गया ि◌ै, स्थायी रिने ्की सम्भार्वना निहं ्ि◌ै। क्योंकक प्रथर् दृल्ष्ट र्ें ि◌ुए प्ेरेर् पर आधाररत गुप्त शर्िन पयाप्मत निहीं, इसशिए र्वधू पर एक ि◌ाप आ पड़ता ि◌ै और अपना दण्ड र्वसूि करता ि◌ै। ि◌कुन्तिा राजसभा र्ें अपर्ातनत ि◌ोती ि◌ै और अस्वीकार कर दह जाती ि◌ै। जब र्वि अनुिासन द्र्वारा कफर पवर्वत्न ि◌ोती ि◌ै और कार्ना का बन्धन कतव्मय की अनासल्क्त के सार्ने घुटने टेक देता ि◌ै, तब र्वि कफर पत्नी और र्ाता के रूप र्ें ग्रिण की जाती ि◌ै। पररत्याग की कठोरता द्र्वारा र्वासना के आर्वेि को तनष्ठा की तपस्या र्ें पररणत ककया ि◌ह जाना ि◌ै। क्योंकक गान्धर्व मसल्म्र्नि बबना र्ंत्रपाठ'[342] के ि◌ो जाते थे, इसशिए उन्िें सम्र्ानयोग्य बनानेके शिए यि तनयर् बनाया गया कक वर्विा संस्कार सल्म्र्नि के बाद343 कर शिया जाना चाहिए; कर् से कर् ऊपरह तीन र्वषों र्ें तो अर्वश्य ि◌ह।344 औपचाररक सर्ारिो सार्ाल्जक अनुर्ोदन का सूचक ि◌ै। जब बाि-वर्विा प्रारम्भ ि◌ो गए, तब पारस्पररक प्ेरेर् के शिए कोई गुंजाइि ि◌ह निहंरिह।

आष मववर्विा र्ें र्वधूका वपता अपनेजार्ात से एक गाय और एक बैि ि◌े सकता ि◌ै। यि आसुर वर्विा का हि एक पररष्कृत रूप ि◌ै और वर्विा के अनुर्ोहदत रूपों र्ें तनकृष्ट सर्झा जाता ि◌ै।

दैर्व वर्विा र्ें यजर्ान अपनी पत्नी को यज्ञ करानेर्वािे पुरोहित को सर्वपतम करता ि◌ै। इसे दैर्व वर्विा इसशिए किा जाता ि◌ै क्योंकक वर्विा देर्वताओं के बशि देने(यज्ञ) के सर्य ककया जाता ि◌ै। इसे उच्चकोहट का निहं सर्झा जाता, क्योंकक र्वैर्वाहिक सम्बन्धों को धाशर्कम र्ार्िें के साथ इस प्रकार निहं ्शर्ि हदया जाना चाहिए। र्वैहदक यज्ञों का ि◌ोप ि◌ोने ्के साथ ि◌ह वर्विा का यि रूप भी ि◌ुप्त ि◌ो गया।

प्राजापत्य वर्विा र्ें र्वधू यथोधचत वर्वधधयों के साथ र्वर को प्रदान की जाती ि◌ै और युगि से किा जाता ि◌ै कक धाशर्कम कतव्मयों के पािन र्ें अशभन्न साथी रिें। वपता इस आदेि के साथ कन्यादान करता ि◌ै, "तुर् दोनों शर्िकर धर् मका पािन करो।" यि वर्विा ि◌ाह्र् वर्विा से शभन्न निहंजान पड़ता, ल्जसर्ें र्वधू को यथोधचत

---

340 गान्धर्वर्मप्येके प्रिंसल्न्त सर्वेषां ्नेिानुगतत्र्वात् ्। बौधायन (1-2-13-7)

341 3-5-30

342 तनर्न्त्ः

343 देर्वि, र्नु पर टहका र्ें कुल्िूक द्र्वारा उद्धृत, 8-226

344 गान्धर्वेषुवर्विोिेषु पुनर्वैर्वाहिको वर्वधध:

कतव्मयश्च वर्वशभर्वणम:म सर्येनाल्नसाक्षक: ।

सजाकर र्वर को सौंप हदया जाता िै, ल्जसे वर्विेषे रूप से इसी प्रयोजन के शिए तनर्ंबत्रत ककया गया िोता िै। पतत प्रततज्ञा करता िै कक र्वि सभी कायक्षेमत्रों र्ें पत्नी के साथ घतनष्ठ रूप र्ें सम्बद्ध रिेगा।'[345]

कोई र्वर्विा उर्विमी और पुरुर्वा के र्वर्विा की भांतत केर्वि युगबन्धात्र्क (कंरैक्चुअि) िोतीं, ल्जनर्ें स्त्री अपना िरहर तो सर्वपतम करती िै, पर आत्र्ा निहं।346 यि यौन सम्बन्ध का दुरुपयोग िै। िारहररक संयोग तो आन्तररक आल्त्र्क सौंदय मका बाह्य धचह्न-र्ात्र िै। आल्त्र्क दृल्ष्ट से र्वकशसत व्यल्क्तयों के शिए िरहरों का सम्र्िन आत्र्ाओं के सम्र्िन की बाह्य अशभव्यल्क्त िै। िर्ें यि अनुभर्व करना चाहिए कक यौन संयोग जीर्वन का र्िान संस्कार िै। आध्याल्त्र्क कौर्ाय मके ऐसे भी उदािरण िैं, ल्जनर्ें भिे िह बित्कार के कारण स्त्री के िरहर की पवर्वत्रता जाती रिह या जब िरहर का उसके शिए कोई आल्त्र्क अल्स्तत्र्व िेषे न रिा, तो उसनेउसे पुरुष को सर्वपतम कर हदया, पर उसका आल्त्र्क कुर्ारहत्र्व अक्षत रिा।

ह्र् र्वर्विा िह एक ऐसा िै, जो अनुर्ोहदत िै और सब र्वगों र्ें िोकवप्रय िै। इसर्ें र्वर- र्वधू प्राथनमा करते िैं कक उनकी शर्त्रता और प्रेर् धचरस्थायी और सच्चा रिे। र्वर्विा के दूसरे रूप, जो अपिरण (आसुर), बित्कार (राक्षस) और फुसिाने े(गन्धर्व)म तक र्वैध बनातें, सभ्यता के र्वकृत रूप िैं, और र्वे स्त्री को, उसे यौन इकाई के स्तर तक घटाकर और उसके व्यल्क्तत्र्व को ररक्त करके, सर्ानता के अधधकार से र्वंधचत करते िैं। संहिताएं उनको इसशिए अनुधचत सर्झती िैं क्योंकक र्वे चािती िैं र्वर्विा र्वर्विुद्ध रूप से व्यल्क्त की रुधच पर िह न छोड़ हदए जाएं। र्वर्विों को ल्स्त्रयों के हित की दृल्ष्ट से र्ान्यता दह जाती थी। र्वैहदक ऋवषयों की शिक्षा िै कक यौन र्वषयों र्ें बड़ी सहिष्णुता की आर्वश्यकता िै, क्योंकक व्यल्क्त व्यल्क्त र्ें बिद अन्तर िै। नैततकता का र्वास्ता र्वैधातनक संस्कार से कर् और पारस्पररक सम्बन्धों से अधधक िै। यद्यवप जिां–तिां गान्धर्व मऔर आसुर र्वर्विा भी िोतेपाए जाते िैं, परन्तु र्वर्विा के प्रचशित रूपों र्ें िाह्र् र्वर्विा का आदि मिह िक्ष्य रिता िै।

बाि-र्वर्विा

बाि-र्वर्विा की प्रथा र्वैहदक युग और र्िाकाव्यों के युग र्ें र्वद्यर्ान निहंथी। सुश्रुत ने बताया िै कक पुरुष की िारहररक िल्क्तयों का पूण मर्वकास पच्चीस र्वष मकी आयु र्ें िोता िै, और स्त्री का सोिि र्वष मकी आयु र्ें'[347] िािांकक र्वयस्क िोने ेके िक्षण बारि र्वष मकी आयु र्ें िह हदखाई पड़ सकतें।348 यहद र्वर्विा पुरुष और स्त्री

---

345 र्विार्वर के 'सम्बन्ध' र्वर्विा शसवर्वि र्वर्विा जैसे िैं, ल्जनर्ें ताक का अधधकार रिता िै। र्वर र्वधूको एक र्वस्त उपिार देता िै और इष्ट बन्धुओं का एक सिभोज िोता िै; बस संस्कार की कुि र्वधध इतनी िह िै। पत्नी की र्वैधातनक ल्स्थतत िै, िािांकक र्वि पतत के धाशर्कम जीर्वन र्ें हिस्सा निहं ंबटाती। इस प्रकार के र्वर्विों र्ें बच्चों की जातत र्ां की जातत िह र्ानी जाती िै।

346 ऋग्र्वेद 10-95-5

347 पंचर्वंितततो र्वषे पुर्ान् ्नारह तु षोडिे।

सत्र्वागतर्वीयथी ती जानीयात् ्कुििो शभषक् । - 35-8

की इस आयुसे पूर्व मिोगा, तो उसके पररणार् ितनकारक िोंगे। "यहद कोई पुरुष पचीस र्वष मकी आयु िोनेसे पिूिे ककसी सोि र्वष मसे कर् आयु की कन्या र्ें गभाधमान करता िै, तो भ्रूण गभ मर्ें िी र् र जाता िै। यहद बच्चा उत्पन्न िोगा भी, तो र्वि देर तक ल्जएगा निहं,ं और यहद र्वि जीर्वर्वत रिा 'भी, तो दुबिुम रिेगा। इसीशिए अपररपक्र्व कन्या र्ें कभी गभाधमान निहंकरना चाहिए।"[349] प्राचीन काि र्ें व्यर्विार इस आयुर्वेहदक उपदेि के अनुसार िी था।
र्वैहदक संस्कारों र्ें यि बात र्ान िी गई िै कक र्वधू र्वयस्क स्त्री िै, ल्जसका र्न और िरहर पररपुष्ट िै और जो र्ववर्वाहित जीर्वन बबताने के शिए तैयार िै। 'उद्र्वाि' िब्द से िी यि अथ मप्रकट िोता िै कक कन्या इस ल्स्थतत र्ें िै कक र्वि पत्नी के रूप र्ें जीर्वन बबता सके। र्ववर्वाि के र्ंत्र'[350] र्ें यि बात र्ान िी गई िै कक कन्या यौर्वन से खखि उठी िै और पतत के शिए िािातयत िै। उसे 'कन्या' किा जाता िै, अथामत् ्जो अपने शिए पतत स्र्वयं चुनती िै।351 सीता, कुन्ती और द्रौपदी र्ववर्वाि के सर्य पूरी तरि र्वयस्क िो चुकी थीं, इन र्ववर्वािों र्ें उपभोग र्ववर्वाि के बाद अर्वर्विम्ब िी िो गया था। गृह्य सूत्रों र्ें यि तनयर् बनाया गया िै कक र्ववर्वाि का उपभोग र्ववर्वािसंस्कार के बाद चौथेहदन िोना चाहिए। 'नाल्ग्नका' िब्द का अथ मिै कक िड़की कुर्ारी िै, सुकुर्ार बच्ची निहं ंिै, ल्जसर्ें िीिहनता और सिज्जता की 'भार्वना िी र्वर्वकशसत न िुई िो।"[352] र्वर और र्वधू दोनों को अपनेकौर्ाय मकी रक्षा करनी चाहिए और एक-दूसरे के पास िह्र्चय मकी तनधध िेकर पिुंचना चाहिए। पूण मकौर्ाय मपर अत्यधधक आग्रि िोने ्के कारण िि ईसा के बाद पिि िताब्दी र्ें र्वयस्क िोनेसे पिूे र्ववर्वाि िोने िगे थे। िड़कों के शिए उपनयन की सर्ानता िड़ककयों के शिए र्ववर्वाि पर िागू की गई। संयुक्त पररर्वार-प्रणािी के कारण पररर्वार के उपाजनम न करनेर्वािे सदस्यों के भी र्ववर्वािों को प्रोत्सािन शर्िा। कुछ स्र्ृततयों र्ें किा गया िै कक यहद अच्छा र्वर न भी शर्ि सके, तो कन्याओं का र्ववर्वाि गुणिीन पुरुषों के िी साथ कर देना चाहिए।'[353] र्ववर्वाि यद्यवप पुरुषों के शिए अतनर्वाय मनिहं था, पर िड़ककयों के शिए अतनर्वाय मथा। कफर भी यि व्यर्विार केर्वि िाह्र्ण र्वण मतक िी सीशर्त था। धर्िास्त्रों के प्रणेताओं ने, जो ईस्र्वी सन् ्से दो-तीन िताब्दी पिूे िुए थे,ं यि शििा दी कक तारुण्य आने ्के बाद िड़ककयों के र्ववर्वाि र्ें देर निहंकरनी चाहिए। उन्िोंनेयि अनुर्तत दी िै कक यहद उपयुक्त पतत न शर्िे, तो रजोदिनम के बाद तीन साि तक कन्याओंको अर्ववर्वाहित रखा जा सकता िै, और र्नुउनसे सिर्त िैं।354 यहद तारुण्य को प्राप्त

र्वाग्भटभी इस र्वर्वचारसे सिर्त िै।तिुनाकील्जएतीसर्वषमकीआयुर्वािेपुरुषकोसोिर्वषमकीकन्या

,

से र्ववर्वाि करने की सिाि दी गई िै:

हिंद्वर्वष:म षोडिदांभायाम र्वर्वन्देदनल्ग्नकार्।् - र्िाभारत

348 14-2

349 10-13
तिुना कील्जए,
350

यस्र्ात् ्कार्यते सर्वान् म ्कार्ेधातमोश्च भार्वर्वतन।

तस्र्ात् ्कन्येतत सुश्रोखण स्र्वतन्त्रा र्वरणनी

351 ऋग्र्वेद 10 - 185

352 हिरण्यकेशिन और जैशर्तन तारुण्य से पिूे र्ववर्वाि का तनषेध करतेिैं। उनका आदेि िै कक र्वद्याथी अपना अध्ययन

सर्ाप्त करने के बाद अनशसका, अथात्म ्जो अपररपक्र्व निहं ंिै, कन्या से र्ववर्वाि करे।

353 दद्यात् ्गुणर्वते ्कन्यां नाल्ग्नकां ंिह्र्चाररणे

अवप र्वा गुणिीनाय नोपरुन्ध्याद्रजस्र्वार् ्॥

354 4-12

िनेे ेके बाद तीन सिा तक भी अशभभार्वक िोग िड़की के शिए उपयुक्त पतत न ढूंढ पाएं, तो र्वि अपना पतत स्र्वयं चुन सकती िै।'[355] सार्वर्त्री तरुण िोने के बाद बिुत सर्य तक अर्वर्वाहित रिह थी, और उसे अपना पतत स्र्वयं चुनने ेकी अनुर्तत शर्ि् गई थी। उसने सत्यर्वान को चुना, जो प्रत्येक दृल्ष्ट से एक र्वांछनीय युर्वक था; उसर्ें केर्वि एक दोष था कक उसकी कुण्डिह से पता चिता था कक र्वि एक र्वष मके अन्दर र् जाएगा। सार्वर्त्नी के वपता ने उसे बिुत सर्झाया कक र्वि सत्यर्वान से र्वर्वार्वि न करे; पर र्वि अपने तनश्चय पर दृढ रिह, क्योंकक र्वि अपना हृदय सौंप चुकी थी। र्वर्वार्वि िुआ और भवर्वष्यर्वाणी शर्थ्या शसद्ध िुई। जो िास्त्रकार छोटह आयु र्ें र्वर्वार्वि के सर्थकम िैं (जैन र्नु), र्वे भी, यहद उपयुक्त पतत प्राप्त न िो सके, तो िड़ककयों को अर्वर्वाहित रिने की अनुर्तत देते िैं।356 अयोग्य पुरुष से कन्या का र्वर्वार्वि िोने ेसे तो यिह भिा िै कक र्वि र्त्यूपयन्मत अपनेवपता के घर र्ें िह रिे।'[357] 'कार्सूत्र' र्ें छोटह आयु र्ें िोनेर्वािे और बड़ी आयु र्ें िोनेर्वािे, दोनों प्रकार के र्वर्वािों का ध्यान रखा गया िै।358 जिांकन्याओं को अपना पतत स्र्वयंचुनने ेका अधधकार िोता भी था, र्विांभी र्वे सार्ान्यतया अपने र्ाता-वपता से परार्ि् मकरती थींऔर उनकी सिर्तत प्राप्त करती थीं। जब र्वर और र्वधू र्वयस्क भी िोतेथे, तब भी आर् तौर से व्यर्विार यिह था कक र्ाता-वपता अपनेपुत्नों और पुबत्रयों के साथ परार्ि् मकरके र्वर्वार्वि की व्यर्वस्था करते थे। अथर्वर्वेमद र्ें र्वणनम शर्िता िै कक र्ातावपता अपने यिांर्वर्वािाथी युर्वकों को बुिाकर उनका स्र्वागत-सत्कार करते थे और पुबत्रयां ंउनर्ें से अपनेशिए पतत चुन िेती थीं।359 जातक कथाओंर्ें ऐसे अनेक उदिारण शर्िते िैं, ल्जनर्ें र्ाता-वपता अपनेपुत्र और पुबत्रयों से उनके र्वर्वार्वि के बारे र्ें परार्ि् मकरते िैं। स्र्वयंर्वर (र्वधू द्र्वारा स्र्वयं अपनेपतत का चुनार्व करने) की प्रथा र्िाकाव्यों के युग र्ें िोकवप्रय िुई। तनजी झुकार्व और र्ाता-वपता की िसिा, दोनों िह सुयोग्य पतत के चुनार्व र्ें सिायक िोतेथे। ऐसा िायद िह कभी िोता िो कक अतनच्छुक और अबोध र्वधुएं अधीर युर्वक र्वरों को सौंप दह जाती िों। आखखरकार, एक ऐसे र्वर्वषय र्ें, ल्जसका नोर्वर्वज्ञान, जातत, पारररर्वाररक परम्पराओंऔर शिक्षा, सभी से सम्बन्ध िै, तनणयम व्यल्क्त की अपनी र्न की र्ौज पर निहंछोड़ा जा सकता। छोटह आयु र्ें र्वर्वार्वि, जो बाि-र्वर्वार्वि से शभन्न िै, और जो र्ाता-वपता द्र्वारा अपनेपुत्रों और पुबत्रयों से परार्ि् मकरके ककए जाते थे, े भारत र्ें सबसे अधधक प्रचशित रूप रिे िैं। उनके सर्थनम र्ें बिुत कुछ किा जा सकता िै। प्रेर्् र्ुख्यतः एक कताधमश्रत अनुभर्व िै, ल्जसके सारभूत उपादान कलपना और इच्छा िैं। प्रेर्ी र्ुतुनर्वमार रूप से ककसी र्वास्तर्वर्वक व्यल्क्त की ओर आकृष्ट निहं ंिोता, अवपतु ुअपनेर्न र्ें र्वर्वद्यर्ान एक कलपना र्ूतत मकी ओर आकृष्ट िोता िै। प्रत्येक पुरुष के र्न र्ें एक नारह की र्ूतत मर्वर्वद्यर्ान रिती िै, यद्यवप यि इस या उस ककसी अर्ुक नारह की र्ूतत मनिहं ंिोती। इसी प्रकार स्त्री के र्न र्ें भी एक जन्र्शसद्ध पुरुष-र्ूतत मरिती िै। छोटह

---

355 9-90, साथ िह देखखए, बौधायन 4-1-4 र्वशिष्ठ 17-67-68

356 कार्् ्आर्रणात् ्ततष्ठेत् ्गृिे कन्यातुर्मत्यवप।

न चैर्वैनां प्रयच्छेत्तु ्गुणिहनाय किमधचत्।् 9-89

र्ेधाततधथ किता िै, "रजोदिनम से पूर्व मतो कन्या का र्वर्वार्वि करना िह निहं ंचाहिए और यहद अच्छा पतत न शर्िे, तो रजोदिनम के बाद भी उसका र्वर्वार्वि निहं करना चाहिए।" (प्राग् ्ऋतो कन्यायाः न दाने, ऋतुदिनेमवप न दद्यात् ्या र्वद्गुणर्वान् ् र्वरो न प्राप्तः ।)

357 9-89

358 3-2-4

359 6-61-1

आयु र्ें िुए वर्वविों र्ें, जब न ग्रिणिी और ढिो जा सकनेयोग्य िोते िैं, युर्वक पुरुष अपनी उस स्त्री के व्यल्क्तत्व पर आकषणम की िल्क्त फेंकता िै, जो युर्वक के अन्दर वर्वद्यर्ान रिती िै। बुद्धधर्ान से बुद्धधर्ान पुरुष भी उस स्त्री की र्वास्तवर्वक प्रकृतत से अनशभज्ञ रिते िैं, ल्जसने उन्िें आकृष्ट ककया िै। प्रेर् का अधधकांि कारण स्वयं प्रेर्ी र्ें वर्वद्यर्ान रिता िै, और प्रेर्-पान तो केर्वि उपिक्षण (गौण र्वस्तु) र्ात्र िोता िै। प्रेर्-पात्न चािे कोई भी क्यों न िो, उसके शिए िर्ें िगभग एक जैसी िी ििािसा िोगी।360 ििािसा की तीव्रता िर्ारी र्वस्तुरूपात्रक दृल्ष्ट को अंधा कर देती िै और प्रेर्-पात्न के ऊपर एक ऐसा आर्वरण-सा डाि देती िै, ल्जसे पार करके िर् देख निीं सकते। जब िर् एक बार ककसी स्त्री की ओर अपनी उन सब ििािसाओं और स्वप्नों को प्रेररत कर दें, ल्जन्िें िर् सर्झते िैं कक र्वे ककसी दूसरी आत्र्ा के साथ सल्म्र्िन से पूणम िो जाएंगे, तो र्वि स्त्री चािे बुद्धध और रूप से ककतनी िी िीन क्यों न िो, िर्ें पूरी तरि अपने अधीन कर सकती िै। इसी प्रकार ड़िककयांभी

अपनेस्वप्नों को अपनेपतत की ओर, जो व्यल्क्त की अपेक्षा एक र्ूितत्व अधधक िोता िै, प्रेररत करती िैं। पतत या पत्नी िर्ारी सृल्ष्ट िैं; िर् एक आदिम की सेर्वा के शिए अपने-आपको सर्वपतम करते िैं। पररचय से प्रेर् के गुण वप्रय व्यल्क्त के अनुरूप ढि जाते िैं। शिज प्रर्वृवत्तक ििािसा धीरे-धीरे पररपक्र्व िोती िै और अपने-आपको दूसरे व्यल्क्त के अनुकूि ढाि िेती िै। परस्पर अनुकूिता एक प्रकक्रया िै, कोई आकल्स्क घटना निीं। जो िड़के और ड़िककयां तनकट सम्पकम र्ें आते िैं, उनर्ें एक-दूसरे की ओर बढनेऔर सार्ंजस्य स्थावपत करनेकी एक स्र्वाभावर्वक प्रर्वृवत्त िोती िै। एक बुित प्रशसद्ध श्िोक र्ें किा गया िै कक राजा, ल्स्त्रयां और बेिें, जो भी पास िो, उसीको िपेट िेती िैं।'361 ल्स्त्रयां अपना र्ार्ि सब जगि बबठा िेती िैं। उन्िें जिां भी रख हदया जाए, र्वे र्विींजड़े जर्ा िेती िैं।

---

360 वर्ववाि के सम्बन्धर्ें बोस्र्वेि के प्रश्न के जान्सन द्र्वारा हदए गए उत्तर का ख्याि कील्जए, "र्िोदय, क्या आप सर्झते िैं कक संसार र्ें ऐसी पचास ल्स्त्रयािैं, ल्जनर्ें सेककसी के भी साथ पुरुष उतना िी सुखी िो सकता िै ल्जतना उनर्ें से ककसी एक वर्वशिष्ट स्त्री के साथ !"

"जी, िा" डाक्टर जान्सन ने किा, "पचास िज़ार।"

"तब तो र्िोदय," बोस्र्वेि बोिा, "आप उन िोगों से सिर्त निीं िैं, जो यि र्ानतेिैं कक कुछ पुरुष और ल्स्त्रयां एक-दूसरे के शिए िी बने िोते िैं, और यहद उन्िें उनके र्विी संगी न शर्िें, तो र्वे सुखी निीं िो सकते?" "अर्वश्य िी सिर्त निीं िूं।" डॉक्टर जॉनसन ने उत्तर हदया, "र्ेरा वर्वश्र्वास िै कक सार्ान्यतः वर्ववाि उतने िी सुखर्य िोंगे, और िायद कुछ अधधक िी, यहद स्र्वभार्वों और पररल्स्थततयों का उधचत ध्यान रखते िुए उन्िें िाई चांसिर द्र्वारा तय कर हदया जाए और पतत या पत्नी को एक-दूसरे का चुनार्व करने का बबिकुि अर्वसर न हदया जाए।"

जब कैल्लर्वन से उसके शर्त्रों ने वर्ववाि करने के शिए किा तो उसने यि जताते िुए कक र्वि इस पद के शिए ककसी भी उपयुक्त आर्वेदक के आर्वेदन पर वर्वचार करने को तैयार िै, किा, "र्ैं उन उन्र्त्त प्रेशर्यों र्ें निीं िै, जो ककसी स्त्री के सौन्दयम पर पागि िोते िैं। यहद र्ेरी पत्नी शर्तव्ययी, पररश्रर्ी, नाजुक शर्ज़ाज िो और र्ेरे स्र्वास्थ्य के वर्वषय र्ें खूब सार्वधान रिे, तो र्ैं भी िर भांतत सन्तुष्ट रिूंगा।"

361 प्रायेण भूशर्पिय प्रर्दा िताश्च,

यत्पाश्र्वतमो र्वसतत तत्पररर्वेष्टयल्न्त।

प्रेर् सातनध्य का वर्वषय िै। र्ाता-वपता की कूटनीतत यथोधचत सल्न्नधान (तनकट रिने देने) की िोती िै।

वर्ववार्ा र्ें र्ाता-वपता के नेतृत्र्व पर आक्षेप इसशिए ककया जाता िै, क्योंकक इस नेतृत्र्व का दुरुपयोग ककया जाता िै, वर्विेष रूप से उस सर्ाज-व्यर्वस्था र्ें, ल्जसर्ें ल्स्त्रयों के तो छोटह आयु र्ें वर्ववार्ा को और वर्वधुरों के पुनवर्ववर्वमिा को प्रोत्सािन हदया जाता िा। कुछ र्ाता-वपताओंने, जो कट्टर परम्पराओं का पािन करनेके साथ-साथ पैसा बनानेके शिए भी उत्सुक थे, े सौन्दय मके प्रथर् उन्र्ेष र्ें खखिह युर्वती कन्याओं के वर्ववार्ा धनी र्वृद्ध पुरुषों से कर हदए। वर्ववार्ा की आयु बढानेके कारण अब ऐसा कर पाना असंभर्व िोता जा रिा िै। संयुक्त पररर्वार-प्रणािह के वर्वघटन, स्त्री-शिक्षा की प्रगतत और आधथकम संघष मके कारण धीरे-धीरे िड़कों और िड़ककयों की वर्ववार्ा की आयु बढा दह गई िै। िारदा अधधतनयर् कभी का तनयर् बन चुका िै, ल्जसके अनुसार वर्ववार्ा के सर्य िड़के और िड़की की न्यूनतर् आयु कर् से कर् क्रर्ि: अठारि और चौदि सिा िोनी चाहिए। पुरुषों और ल्स्त्रयों, दोनों की िह वर्ववार्ा की आयुर्विह बना दह जानी चाहिए, जो उनके र्वयस्क (बाशिग) िोने ेके शिए तनधारमरत िै। रजोदिनम के बाद िह वर्ववार्ा के तनयर् को अपनाकर हिन्दू ूधर् मकफर र्वैहदक व्यर्विार की ओर िौट रिा िै।

संधगयों का चुनार्व

र्ििा े देख चुके िैं कक वर्ववार्ा का िक्ष्य यि िै कक र्वि नोर्वैज्ञातनक, जातीय और र्ानर्वीय उपकरणों का सार्ंजस्य (ठीक र्ेि) बन सके। परन्तु ये सब बािरह सार्धग्रयां िैं, जो बिुत र्ित्र्वपूण मिैं, और िर्ें किा जाता िै कक िर् इनके आधार पर उत्तरदायी और पररपक्र्व प्रेर्'[362] को वर्वकशसत करें, जो व्यल्क्त की भवर्वतव्यता िै और वर्ववार्ा का असिह उद्देश्य िै। िर् उस स्त्री से वर्ववार्ा निहं ंकरते, ल्जससे िर् प्रेर् करते िैं, अवपतु उस स्त्री से प्रेर् करते िैं, ल्जससे िर् वर्ववार्ा कर िेते िैं। वर्ववार्ा कोई बहढया गणना (योजना) का वर्वषय निहं िै। िर् ििा े से निहं ंजान सकते कक र्वर और र्वधू, प्रत्येक का अिग-अिग और दोनों का सल्म्र्शित वर्वकास ककस प्रकार का िोगा। संधगयों के चुनार्व के वर्वषय र्ें सर्ाज सार्ान्य तनयर् बना सकता िै। "कन्या र्वर र्ें रूप देखती िै, कन्या की र्ाता धन देखती िै, कन्या का वपता वर्वद्या देखता िै। सम्बन्धी िोग उसके कुि को देखतें िैं और बाकी िोग केर्वि सिभोज के शिए िािाातयत रिते िैं।"[363] क्योंकक वर्ववार्ा र्नुष्य-जातत को आगे चिाते रिने ेका साधन िै, इसशिए िर्ें सुसंततत वर्वज्ञान (यूजेतनक्स) के तनयर्ों को भी ध्यान र्ें रखना चाहिए। जो आदर्ी पौधे िगाता िै, र्वि भी शर्ट्टह और जिर्वायु का ध्यान रखता िै और अपनेर्न की र्ौज से िह सब कुछ निहं ंकर डािता, तो वर्ववार्ा भी प्रगततिीि जीर्वन के साधन बननेचाहिए। िर्ें न केर्वि र्नुष्य जातत को बनाए रखना िै, अवपतु उसे उन्नत भी करना िै। साधारणतया वर्ववार्ा ऐसे पररर्वारों के सदस्यों के बीच िह िोने ेचाहिए, जो सार्ाल्जक और

---

362 भार्व बन्धन प्रेर्।--काशिदास

363 कन्या र्वरयते रूपे, र्ाता वर्वत्तं ंवपता शु्रुतर् ्
बान्धर्वा: कुिशर्च्छल्न्त, शर्ष्टान्त्रशर्तर जना:।

बकि ने शिखा िै कक वर्ववार्ों का व्यल्क्तगत भार्वनाओं ंसे कोई सम्बन्ध निहं ंिै, अवपतु र्वे तो केर्वि औसत उपाजनम द्र्वारा तनयशर्त िोते िैं।

सांस्कृततक दृल्ष्ट से एक-से स्तर के िों।364 अत्यधधक अन्तः प्रजनन (एक िह रक्त के सम्बल्न्धयों र्ें वर्वार्ि) अनुधचत िै, परन्तु हिन्दू ूवर्वार्ि के तनयार्क र्वतर्मान कानून बिुत कठोर िैं। उनर्ें इस बात का आग्रि िै कक वर्वार्ि व्यल्क्त की अपनी जातत र्ें िह िोना चाहिए (ऐंडोगैर्ी), अपनी सीधी पैतृक परम्परा से बािर िोना चाहिए (गोि बाह्य वर्वार्ि) और वपतृपृक्ष तथा र्ातृपृक्ष दोनों ओर की रक्त-सम्बन्ध की कुछ बताई िुई श्ेरेखणयों से बािर िोना चाहिए (सवपण्ड बाह्य वर्वार्ि)। एक गोि की सदस्यता का अथ मयि निहं िै कक र्वे दोनों व्यल्क्त सर्-रक्तीय िैं। सम्भर्व िै कक ऐसा सम्बन्ध प्रारम्भ र्ें रिा िो, ककन्तु र्ूि संस्थापक के अनन्तर कई पीहढयांबीत जानेके बाद ऐसे सम्बन्ध र्ें कुछ जान निहं ंरिती। सगोत्र िोगों र्ें वर्वार्ि के तनषेध का कोई औधचत्य प्रतीत निहं ंिोता और इस वर्षय का एक कानून बनाकर इसे सर्ाप्त िो जानेदेना चाहिए कक हिन्दुओंर्ें िुआ कोई वर्वार्ि केर्वि इस कारण अर्वैध निहं ंर्ाना जाएगा कक र्वर और र्वधू एक िह गोि के िैं, भिे िह हिन्दू िास्त्रों के तनयर्, प्रथाएं या ररर्वाज इसके वर्वरोध र्ें िह क्यों न िों। सवपण्ड सम्बन्धर्वािे व्यल्क्तयों र्ें वर्वार्ि के तनषेध को सर्ाप्त करने ेके प्रश्न को अभी उठाने की आर्वश्यकता निहींं। चचेरे, फुफेरे, र्र्ेरे और र्ौसेरे भाई-बिनों र्ें वर्वार्ि को अधाशर्कम या अहिन्दू ूनिहं र्ाना जाना चाहिए। अजनम ने सुभद्रा से वर्वार्ि ककया था, जो उसके र्ार्ा की पुत्री थी। कृष्ण ने शर्विर्वन्दा और भद्रा से वर्वार्ि ककया था, जो दोनों उसकी बुआओंकी िड़ककयां ंथीं। राजकुर्ार शसद्धाथ म(गौतर् बुद्ध) ने गोपा (यिोधरा) से वर्वार्ि ककया था, जो उसके र्ार्ा की िड़की थी। 'संस्कार कौस्तुभ' का

कथन िै कक र्िान र्नु, पराशर, अंधगरस और यर् वपतृपृक्ष और र्ातृपृक्ष दोनों के तीसरह पीढह के र्वंशजों र्ें वर्वार्ि की अनुर्तत देते िैं।'[365] सवपण्ड सम्बन्ध के तनयर्ों का उल्लंघन बिुत प्राचीन काि र्ें भी िोता रिा िै। र्वैद्यनाथ अपने'स्र्ृतत र्ुक्ताफि' र्ें किता िै, "आन्र िोगों र्ें अच्छे व्यल्क्त, जो र्वेदों र्ें भिह-भांतत तनष्णात िैं, र्ातुि-सुता-पररणय (र्र्ेरह बिन से वर्वार्ि) की प्रथा का पािन करते िैं और द्रवर्वड़ों र्ें प्रततल्ष्ठत िोग भी पुरुष का वर्वार्ि ऐसी कन्या से िोने ेदेते िैं, जो दोनों के एक िह, सर्ान पूर्वजम की चौथी पीढह की र्वंशज िै।"

क्योंकक वर्वार्ि का उद्देश्य यौन आकषणम और बच्चों के प्रतत प्र्ेर् पर आधाररत पारस्पररक सम्बन्ध के वर्वकास द्र्वारा व्यल्क्तत्र्व को सर्द्ृध करना िै, इसशिए यि स्पष्ट िै कक इसे सफि बनानेके शिए जो गुण आर्वश्यक िैं, उनका तनणयम र्वे िोग अधधक अच्छी तरि कर सकते िैं, जो स्र्वयं इस र्ार्िे र्ें तनशिप्मत िैं और ल्जनके र्नोर्वेग पििे िह बंधे िुए निहींं। िर्ें सार्वधान रिना चाहिए कक वर्वार्ि उससे िह न कर शिया जाए, ल्जसके नयन-युगि सुन्दर िों या ल्जसका िरहर क्रीड़ा के शिए आकषकम िो।366

---

364 ययोरेर्व सर्ं वर्वत्तं,ं ययोरेर्व सर् कुिर् ं
तयोर्र्ैत्री वर्वर्वािश्च, न तु पुष्टवर्वपुष्टयोः। -र्िाभारत 1-131-10

365 तृतीये र्ातृतः कन्यां ंतृतीयं वपतृतृस्तथा
वर्वर्वािये्त् ंर्नुः प्राि पराशरोऽङ्कधगरा यर्ः।

366 जब एक अपररधचत र्हििा नेबनाडम शा के सार्ने प्रस्तार्व रखा, "आपर्ें संसार र्ें सबसे अधधक बुद्धध िै और र्ेरा िरहर सबसे अधधक सुन्दर िै, इसशिए िर्ें शर्िकर सबसे अधधक पूण मसन्तान उत्पन्न करनी चाहिए।" तो शा नेउत्तर हदया, "पर यहद सन्तान र्ें र्ेरा िरहर आया और तुम्िरह बुद्धध, तो क्या िोगा?"

अनुिोर् वर्ववािा, ल्जनर्ें उच्चतर र्वण मका पुरुष तनम्नतर र्वण मकी स्त्री से वर्ववाि करता िै, िोगों द्र्वारा अनुर्त थे। इस प्रकार के वर्ववािों से उत्पन्न बच्चों को ऱाता और वपता के र्वषों के बीच के र्वण मर्ें रखा जाता था। शभन्न र्वणर्वमािह पल्त्नयों से उत्पन्न पुत्नों को उत्तराधधकार र्ें हिस्से के वर्वषय र्ें तनयर् धरि्मास्त्रों र्ें हदए गए िैं। हिन्दू–इततिास र्ें अनुिोर् वर्ववािों के उदािरण बड़ी संख्या र्ें शर्िते िैं, परन्तु ईसा की दसर्वीं िताददह के बाद उन्िें तनरुत्साहित ककया जानेिगा। प्रततिोर् वर्ववाि, ल्जनर्ें उच्चतर र्वण मकी स्त्री तनम्नतर र्वण मके पुरुष से वर्ववाि करती िै, तनवषद्ध थे; और इस प्रकार के वर्ववािों से उत्पन्न सन्तान को चारों र्वणों र्ें सल्म्र्शित निहं ककया जाता था और र्वे चांडाि या तनषाद बनते थे। क्योंकक कुछ जाततयों का ऩूि इस प्रकार के तनवषद्ध वर्ववाि िह सझे ेजाते िैं, इससे स्पष्ट िै कक इस प्रकार के वर्ववाि बिुत असाधारण निहं ंथे। पर ऋग्वेद र्ें िर्ें अन्तजातमीय वर्ववािों के अनेक उदािरण शर्िते िैं। र्वणों के बीच सांस्कृततक अन्तर धीरे- धीरे घटते जा रिे िैं; अन्तजातमीय वर्ववाि कफर अधधक संख्या र्ें िोने िगेंगे और यि निहंकिा जा सकता कक उनसे हिन्दू ूधर् मकी आत्ऱा को चोट पिुंचती िै। चाणक्य किता िै कक र्वधू ककसी भी जातत या सम्प्रदाय र्ें से, चािे र्वि नीचा िह क्यों न िो, चुनी जा सकती िै। कुछ शििािेखों र्ें शिखा िै कक हिन्दू ूराजाओं ने वर्वदेी राजकुर्ाररयों से वर्ववाि ककया था।367 र्नु यि अनुर्तत देता िै कक यहद कन्या ल्स्त्रयों र्ें रत्न के सऱान िो, तो पुरुष को उसे नीच और बुरे कुि र्ें से भी ग्रिण कर िेना चाहिए।'[368] 'र्ितनर्वाणम तंत्' र्ें िैर्व वर्ववाि369' का उल्लेख िै, और इस वर्ववाि के शिए केर्वि दो ित ेंबताई गई िैं: एक तो स्त्री वर्ववाि के शिए तनवषद्ध श्रेखणयों र्ें से (सवपण्ड) न िो और दूसरे उसका कोई पतत न िो। आयु और जातत के वर्वषय र्ें कुछ सोचनेकी आर्वश्यकता निहं।'[370] इस प्रकार के तनयर् से अन्तजातमीय वर्ववािों और वर्वधर्वा-वर्ववािों का औधचत्य शसद्ध िोता िै। र्वतमान हदनों र्ें, शसवर्वि वर्ववाि अधधतनयर् का वर्वस्तार इस प्रकार कर हदया जाना चाहिए, ल्जससे वर्वशभन्न धर्ोंर्वािे स्त्री-पुरुषों के वर्ववाि भी उनके अन्तगतम आ जाएं, और उनसे औपचाररक रूप से धर्-मत्याग की र्ांग की जाए, जैसी कक इस सर्य की जाती िै।

बिुपततत्र्व और बिुपत्नीत्र्व

पत्नी को पत्नी इसशिए किा जाता िै, क्योंकक उसे पतत के सऱान अधधकार प्राप्त रिते िैं।371 दम्पतत का अथ मयि िै कक पतत और पत्नी दोनों पररर्वार के संयुक्त रूप से र्ाशिक िैं। इससे यि तनष्कष मतनकिता िै कक

---

367 देखखए काणे, 'हिस्रह ऑफ धरि्मास्त्र, खण्ड 2, भाग 1 (1941), पृष्ठ 389

368 वर्वषादप्यर्ृतंग्राह्य, र्ेध्यादवप च काञ्चनर् ्

नीचादप्युत्तर्ां वर्वद्यांस्त्रीरत्नं दुषुकुिादवप ।

369 र्वयोजाततवर्वचारोत्न िैर्वोद्र्वािो न वर्वद्यते े

असवपण्डां ंभतृमहनांउद्र्वेच्छिम्भुासनात् ्।

370 2-238

दम्पत्योः सिाधधकारात्।् तिुना कील्जए:

371

आम्नाये स्र्ृततन्त्रे च पूर्वाचमायैश्र्च सूररशभः,

उनके बीच र्ें कोई तीसरा निहंीं सिकता। एक वर्वर्वाि आदि मिेै और नैततकता के दो अिंग प्रर्ाप निहंीं सिकते। शिर्व और पार्वतमी, रार् और सीता, नि और दर्यन्ती, सत्यर्वान और सावर्वत्री के उदिारणों की भारतीय जनता के र्न पर गिरह छाप िगी िै।

बिुपततत्र्व और बिुपत्नीत्र्व, दोनों तनवषद्ध थे,े कफर भी कुछ वर्वर्वेषे दिाओंर्ें दोनों की िह अनुर्तत थी। बिुपततत्र्व की प्रथा कुछ खास जाततयों र्ें िह प्रचशित थी।372 इस वर्वषय र्ें प्रशसद्ध उदिारण द्रोपदह का िै, ल्जसका वर्वर्वाि पांच पांडर्व भाइयों से िुआ था। उसका वपता इस प्रस्तार्व को सुनकर स्तदध रि गया था और उसने किा था कक यि धर् मवर्वरुद्ध िै (िोकधर् मवर्वरुद्ध); परन्तु युधधल्ष्ठर ने किा था कक यि पाररर्वाररक परम्पराओं के अनुकूि िै, और सब र्ाररि्र्ों र्ें यि जान पाना कहठन िोता िै कक उधचत क्या िै।'373 इसे उधचत शसद्ध करनेके शिए अजीब युल्क्तयां ंप्रस्तुत की गई िैं; और 'तिर्वाततकम' तो इस सीर्ा तक जाता िै कक र्वि इस वर्वर्वाि के िोने ेसे हि इनकार करता िै और इसे इस अिंकाररक रूप र्ें ग्रिण करनेको किता िै कक पांच व्यल्क्तयों ने एक राजिक्ष्र्ी से वर्वर्वाि ककया था। यि प्रथा क्षतनय जाततयों र्ें प्रचशित थी। अन्य िोगों के साथ-साथ तांबत्रक िेखिकों नेइसका वर्वरोध ककया था। र्िाबार की जाततयों तक र्ें, जिां ंयि प्रथा अब तक बची िुई थी, अब यि सर्ाप्त िोती जा रिह िै।

अन्य प्रारल्म्भक सर्ाजों की भांतत यिां ंभी बिुपत्नीत्र्व राजाओं और अशभजात र्वग मका वर्वर्वेषाधधकार था।374 जन साधारण आर् तौर से एकवर्वर्वाहि िह िोतेथे। परन्तु िास्त्रों र्ें पतत को अनुर्तत दह गई िै कक र्वि अपनी पत्नी की सिर्तत से दूसूरा वर्वर्वाि कर सकता िै। जिां पििह पत्नी जड़बुद्धध िो या ककसी असाध्य रोग से पीडड़त िो या र्वन्ध्या या व्यशभचाररणी िो, र्विांयि उधचत भी िै। यद्यवप बिुपत्नीत्र्व बिुत वर्विर िोता जा रिा िै,

---

रिहराथ मसूत्रृा भाया मपुण्यापुण्यफिे सर्ा,
यस्य नोपरता भायामदिधि ांतस्य जीर्वतत,
जीर्वत्यधिमरहरे तु कथन्र्यः स्र्वर्ाप्नुयात्।्

372 आपस्तम्ब का उल्िेख िै कक कुछ जाततयों र्ें एक स्त्री का वर्वर्वाि पूरे पररर्वार के साथ कर हदया जाता था। (2-27-3) वर्वर्वाि दो पररर्वारों के बीच िुआ युगबन्ध (कंरैक्ट) िै। (कन्या कुिाय एर्व दहयते)। बृिस्पतत नेइस प्राचीन प्रथा का उल्िेख करतेिुए किा िै कक यि कशियुग र्ें तनवषद्ध िै।

373 सूक्ष्र्ो धर्ो र्िाराज नास्य वर्वद्र्ो गततं मर्वयर्् ं
पूर्वेषार्नुपूर्वेण यातेर्वर्ानुमयाहि्। - र्िाभारत 1-210-29

374 किोम्बस ने ल्जन नये द्र्वीपों को खोजा था, उनके तनर्वाशसयों के वर्वषय र्ें 12 अक्टूबर, 1442 को शिखते िुए र्वि किता िै, "इन सब द्र्वीपों र्ें प्रत्येक व्यल्क्त केर्वि एक पत्नी से सन्तुष्ट रिता िै। राजा और राजकुर्ार अर्वश्य बीस पल्त्नयांरख सकते िैं।" भूर्ध्यरेखा के तनकट के अफ्रीका की कुछ जाततयों के सम्बन्ध र्ें डदलयू० वर्वनरुवुड रड का कथन िै, "यहद कोई पुरुष वर्वर्वाि करता िै और उसकी पत्नी यि सर्झती िै कक र्वि एक और स्त्री का भरण-पोषण कर सकता िै, तो र्वि एक और वर्वर्वाि करने के शिए उसके पीछे पड़ जाती िै और यहद र्वि इनकार करे, तो उसेकंजूस किती िै।"

पर अभी तक भी यि किहं-किहं ंव्यर्विार र्ें िै। बिुपत्नीत्र्व को र्वैध र्ान्यता प्रदान करने ेका पररणार् बड़ा दु:खजनक रिा िै।375

ल्स्त्रयों के प्रतत र्नु का अन्याय तब बबलकिु स्पष्ट िो जाता िै, जब र्वि किता िै कक अच्छी पत्नी को अपनेबुरे पतत की भी पूजा करनी चाहिए।376 यि तो पतत के प्रतत स्त्री की एक प्रकार की दासता िुई। इस प्रकार की अततरंल्जत शिक्षा द्र्वारा र्वि पततव्रत धर् मकी उच्चता स्थावपत करने का प्रयत्न करता िै। यि भी ठीक िै कक जो पतत अपनी पल्त्नयों के प्रतत तनर्ष्ठिा निहं िैं, उनकी भी कठोर भत्सनमा की गई िै। आपस्तम्ब का कथन िै कक उन्िें गधे की खाि उढाकर उनसे शभक्षा र्ंगर्वानी चाहिए। परन्तु व्यर्विार की परंपरा ल्स्त्रयों के प्रतत तनष्ठुर रिह िै। वर्वधुरों और वर्वधर्वाओं के साथ िोने र्वाले व्यर्विार र्ें भी अन्तर िै। पत्नी के र्र जाने पर पुरुष को इस आधार पर कफर वर्वर्वाि करनेकी अनुर्तत शर्ल् जाती थी कक र्वि दुबुारा वर्वर्वाि ककए बबना धाशर्कम कतव्मय पूरे निहं ंकर सकता, क्योंकक धाशर्कम कतव्मयों को करनेके शिए पत्नी की उपल्स्थतत अतनर्वाय मनिहं ंिै। 'ऐतरेय ब्राह्र्ण' का कथन िै कक वर्वधुर पत्नी के न िोने ेकी दिा र्ें 'भी यज्ञ कर सकता िै। श्रद्धा या भल्क्त उसकी पत्नी का काय म करेगी।'377 वर्वष्णु का र्त िै कक र्ृत पत्नी की प्रततर्ाओं को कार् र्ें िाया जा सकता िै। रार्ायण र्ें बताया गया िैकिक रार् ने सीता की र्ूतत मपास रखकर यज्ञ पूरा ककया था।

वर्वधर्वाओं की ल्स्थतत

375 स्र्वगीय श्री० एस० श्रीतनर्वास आयंगर ने शिखा था, "अब तनल्श्चत रूप से र्वि सर्य आ गया िै, जब हिन्दू ूसर्ाज को हिन्दू ूकानून के एक तनयर् के रूप र्ें बिुपत्नीत्र्व को सर्ाप्त कर देना चाहिए। प्राचीन हिन्दू ूकानून के अनुसार एक वर्वर्वाि िह अनुर्ोहदत तनयर् था और बिुपत्नीत्र्व की व्यर्वस्था अपर्वाद रूप र्ें िह थी।... पुराने सर्य र्ें एक से अधधक पत्नी रखने के शिए र्वैधातनक औधचत्य शसद्ध करने की आर्वश्यकता िोती थी; परन्तु हिन्दू ूकानून का र्वतर्मान तनयर्, कक पतत पर पतनयों की संख्या के वर्वषय र्ें कोई प्रततबंध निहं िै और र्वि पत्नी की सिर्तत के बबना और ककसी भी उधचत कारण के बबना कफर वर्वर्वाि कर सकता िै, किहं अधधक बुरा िै।... इन हदनों, जबकक ल्स्त्रयों की सर्ानता को स्र्वीकार ककया जाना चाहिए, इस सुधार को स्थधगत करना र्ूखतमा िोगी। स्पेिै र्ैररज रेक्ट के अन्तगतम हिन्दुओं र्ें िुए वर्वर्वाि एक-वर्वर्वाि िोते िैं, और आश्चय मकी बात िै कक र्वे वर्वर्वाि, जो रिबार के स्र्कययर् कानून के अनुसार िोते िैं, एक िाि के वर्वधान द्र्वारा एकवर्वर्वाि िो गए िैं, और सार्ान्य हिन्दू ूसर्ाज अब भी बिुपत्नीत्र्व से धचपटा िुआ िै।" 'र्द्रास िा जनिम', स्र्वण मजयन्ती अंक, 1941

376 र्विवर्वाि: कार्वृत्तो र्वा गुणैर्वा मपररर्वल्जतम:
उपचय मल्स्त्रयां साध्व्या सततं ंदेर्ववत् ्पतत: ।-5-154
साथ िह तुिना कील्जए,
दु:र्विि: कार्वृत्तो र्वा धनैबाम पररर्वल्जतम:
स्त्रीणार्ायस्मर्वभार्वानां परर् ंदैर्वत मपतत:। रार्ायण 2-117-24

377 7-9-10

ऋग्वेद के सर्य से, ल्जसर्ें िर्ें वर्वधर्वाओंके पुनवर्ववमािों का उलिेख शर्िता िै, बाद र्ें वर्वधर्वाओंकी ल्स्थतत र्ें काफी अन्तर पड़ गया िै। ककसी स्त्री के एक िह सर्य र्ें दो पतत िोना अवांछनीय िै।378 याज्ञवलक्य ने जो यि सिा दह िै कक उस स्त्री से वर्वािि करना चाहिए "जो उस सर्य तक ककसी पुरुष की न रिह िो, [379]उसके र्ि र्ें पूर्व मपररणीता स्त्री से वर्वाि करने ेकी अतनच्छा की भार्वना िह िै। परन्तु र्िाकाव्यों र्ें ऐसे अनेक उदािरण शर्िते िैं, जिां यि भार्वना सकक्रय निहं िुई। जयद्रथ द्रौपदह को अपनी पत्नी बनाना चािता था। ततनिंकु ने एक राजा को र्ारकर उसकी पत्नी से वर्वाि ककया था, ल्जससे उसका एक पुत्न भी उत्पन्न िुआ था। दर्यन्ती के दूसूरे स्र्वयंर्वर र्ें राजा ऋतुपण मउससे वर्वाि करने को उत्सुक था, जबकक उसे यि र्ािूर् था कक र्वि नि की पत्नी थी। सत्यर्वती के पतत की र्ृतृयु के कुछ िह सर्य बाद राजा उग्रायुध ने उससे वर्वाि करना चािा था। अजुनम ने नाग राजा ऐरार्वत की वर्वधर्वा कन्या से वर्वाि ककया था; उससे उसका एक पुत्र भी उत्पन्न िुआ था। जातकों र्ें भी इस प्रथा के कई संकेत शर्िते िैं। कोसि के राजा ने बनारस के राजा को र्ार डािा, और उसकी वर्वधर्वा रानी को, जो गिपि से िह र्ांथी, अपनी पत्नी बना शिया।'[380] उछंग जातक र्ें एक स्त्री अपने भाई को, ल्जसे उसके पतत और पुत्र के साथ र्ृतृयुदण्ड का आदेि िुआ था, छुड़ाने ेके शिए प्राथनमा करते िुए किती िै कक इन तीनों र्ें से उसे नया पतत शर्ि सकता िै और नया पुत्र भी शर्ि सकता िै, परन्तु नया 'भाई उसे ककसी प्रकार निहं शर्ि सकता।'[381] कौहटलय अपने 'अथिमास्त्र' र्ें शिखता िै, "पतत की र्ृत्यु के बाद जो स्त्री धाशर्कम जीर्वन बबताना चािे, उसे तुरन्त न केर्वि उसकी स्थायी तनधध, धनराशि और आभूषण, दे दह जाएगी, अवपतु यहद उसका दिेज का कोई अंिभी उसे शर्िना िेष िोगा, र्वि भी दे हदया जाएगा; यहद र्वि दुबुारा वर्वाि करना चािे, तो वर्वाि के अर्वसर पर उसे र्वि सब कुछ दे हदया जाएगा जो उसके ससुर या पतत या दोनों ने उसे हदया िोगा। यहद कोई वर्वधर्वा ककसी ऐसे पुरुष से वर्वाि करना चािे, जो उसके ससुर द्र्वारा चुने िुए पुरुष से शभन्न िो तो स्त्री को अपने ससुर और पतत द्र्वारा दह गई र्वस्तुएं पानेका अधधकार न िोगा।382

सूतृत ग्रन्थों र्ें िर्ें वर्वधर्वाओंके पुनवर्ववमाि का वर्वरोध बढता हदखाई पड़ता िै। आपस्तम्ब तनयर् बताता िै कक "यहद कोई पुरुष एक बार गिपि वर्वाहित स्त्री के साथ या अपने से शभन्न जातत की स्त्री के साथ रिेगा, तो र्वे दोनों पाप के भागी िोंगे।"[383] स्पष्ट िै कक उस सर्य अन्तजामतीय वर्वाि और वर्वधर्वाओंके वर्वाि, दोनों िह िुआ करते थे। र्नु को इस प्रकार के वर्वािों का ज्ञान था, क्योंकक र्वि इस बात का उलिेख करता िै कक पुनः वर्वाहित

---

378 तैवत्तरहय संहिता, 6-6-4; ऐतरेय िाह्र्ण, 3-12। एक स्त्री अल्श्र्वनों को पुकारकर किती िै, "तुर्िें विस्तर पर कौन शिठाता िै, जैसे वर्वधर्वा अपने देर्वर को शिटाती िै?" (को र्वांियुत वर्वधर्रे्वेर्व देर्वरं कृणुते)े। साथ िह अथर्वर्वेमद से तुिना कील्जए, "जब कोई पूर्व मपररणीता कफर दूसूरे पतत से वर्वाि करती िै, तब यहद र्वे पेचीदन और बकरह का दान करें, तो र्वे दोनों कभी अिग निहं िोते।े दूसरा पतत जब अच्छी दक्षक्षणा के साथ-साथ पंचौदन और बकरह का दान करता िै, तब र्वि अपनी पुनवर्ववमाहिता पत्नी के साथ उसी िोक र्ें पिुंचता िै । - 9 - 27 - 28

379 1-52

380 'अष्टरूप जातक'; साथ िह 'कुणाि जातक' भी देखखए।

381 'रुविुनर स्र्ारक ग्रन्च' (1940) श्री एन० के० दत्त ने अपने िेख 'प्राचीन भारत र्ें वर्वधर्वा' र्ें अनेक उदािरण प्रस्तुत ककए िैं।

382 3-2

383 2-6-13-4

वर्वधर्वा से उत्पन्न (पुनभर्वम) िाह्मण वपता का पुत्र अिाह्मण निहं ंिो जाता, यद्यवप उसे व्यापारजीर्वी िाह्मण के सर्कक्ष र्ाना जाएगा।384 गौतर् वर्वधर्वा वर्वर्वािों के अल्स्तत्र्व को स्र्वीकार करता िै; क्योंकक र्वि वर्वधर्वा के पुत्र को, जो दूसूरे पतत से उत्पन्न िुआ िो, र्वैध उत्तराधधकाररयों के अभार्व र्ें अपनेवपता की एक चौथाई सम्पवत्त उत्तराधधकार र्ें पाने का अधधकार देता िै।385 र्वररष्ट 386और वर्वष्णु[387] की दृल्ष्ट र्ें वर्वर्वाहित वर्वधर्वा के दूसूरे पतत से उत्पन्न पुत्न का उत्तराधधकार दृल्ष्ट से स्थान बारि प्रकार के पुत्रों र्ें प्राथशर्कता की दृल्ष्ट से चौथा िै और र्वि गोद शिए िुए पुत्न की अपेक्षा अच्छा र्ाना गया िै। थोड़ी-सी अर्वधध के शिए वर्वधर्वाओं को कठोर जीर्वन बबताने का आदिे हदया गया िै। "रूतृ पुरुष की वर्वधर्वा पत्नी छः र्हिनेतक ज़र्ीन पर सोए और धाशर्कम कृत्य करती रिे.... उसके बाद उसका वपता उसको रूतृ पतत के शिए सन्तान उत्पन्न करने के काय मर्ें तनयुक्त करेगा।"[388] ल्स्त्रयों के पुनवर्वर्वमिा के वर्वषय र्ें र्वशिष्ठ ने बिुत उदार तनयर् बनाए िैं। "यहद ककसी कन्या का बिपूर्वकम िरण ककया गया िो और उसका धाशर्कम वर्वधध से वर्ववर्वा संस्कार न िुआ िो, तो उसका वर्ववर्वा र्वैध रूप से दूसूरे व्यल्क्त के साथ ककया जा सकता िै; र्वि ठीक कुर्ारह कन्या की तरि िै। यहद ककसी कन्या का अपनेरूतृ पतत के साथ केर्वि र्न्त्र-पाठ द्र्वारा वर्ववर्वा िुआ िो और यौन सम्भोग द्र्वारा वर्ववर्वा तनष्पन्न न िुआ िो, तो उसका दुबुारा वर्ववर्वा ककया जा सकता िै।"[389] अशर्तगतत अपनी 'धर् मपरहक्षा' (1014 ईस्र्वी) र्ें वर्वधर्वा-वर्ववर्वािों का उल्लेख करता िै। "यहद एक बार स्त्री का वर्ववर्वा िो भी गया िो, और दुभुामग्य से उसका पतत र् र जाए, तो उसको दुबुारा वर्ववर्वा-संस्कार कर देना चाहिए, बिते कक रूतृ पतत से उसका यौन संयोग न िुआ िो। जब पतत घर से बिार चिा गया िो, तब साध्र्वी स्त्री को, यहद उसके पीिे िह कोई सन्तान िो चुकी िो, तो आठ सिा उसकी प्रतीक्षा करनी चाहिए और यहद सन्तान न िुई िो, तो चार सिा। यहद इस प्रकार उधचत कारण िोने ेपर स्त्री पांच बार नये पतत स्र्वीकार करे, तो उसे पाप निहं ंिगता। यि बात व्यास आहद ने किह िै।"[390] जिां वर्वधर्वाओं को वर्ववर्वा की अनुर्तत दह गई िै, र्विंनु आहद का वर्वचार िै कक तपस्या का जीर्वन वर्वधर्वाओंके शिए आदि मजीर्वन िै।391 यिां ंतक कक परािर भी, जो वर्वधर्वाओं के पुनवर्वर्वमिा को र्वैध र्ानता िै, किता िै कक "जो स्त्री पतत के र्रने के बाद सतीत्र्व के व्रत का पािन

384 3-181
385 29-8
386 17-18
387 15-7
388 र्वशिष्ठ 17-55-56, साथ िह देखखए 'बौधायन' 2-2-4-7-9
389 17 साथ िह देखखए 'बौधायन' 4-1-17-18
390 एकर्वा पररणीतावप वर्वपन्ने दैर्वयोगतः
भतयमक्षमतयोतनः स्त्री पुनः संस्ंकारईतत
प्रतीक्षताष्ट र्वषाखमण प्रसूता बतनता सतत
अप्रसूता च चत्र्वारर प्रोवषते ेसतत भतरमर
पञ्चस्र्वेषुगृिहतेषु कारणे सतत भतृषुम
न दोषो वर्वद्यतेस्त्रीणा, व्यासादहनाशर्दं र्वचः
देखखए, सर आर० जी० भण्डारकर के संकशित ग्रन्थ, खण्ड 2 (1928), पृष्ठ313
391 याज्ञर्वलक्य 1-75; परािर 4-31 और 35-14

करती ि ै, र्वि रृतू्यु के बाद ि ह्नचारह की भांतत सीधी स्वग मजाती ि ै।"[392] परर्वती टहकाकार ि ेर्ाहद्र, रघुनन्दन और कर्िाकर र्वर्धर्वाओं के पुनर्वर्वमाि का तनषेध करते ि ैं। अपेक्षाकृत प्राचीन सर्य र्ें र्वर्धर्वाओंके पुनर्वर्वमाि की प्रथा प्रचशित थी। चन्द्रगुप्त द्र्वतीय ने अपनेबड़े ेभाई रार्गुप्त को र्ारकर उसकी पत्नी रुर्वदेर्वी से र्ववर्वाि ककया था और रुर्वदेर्वी से उत्पन्न उसका पुत्न कुर्ारगुप्त प्रथर् उसके बाद राजशसंसािन पर बैठा।393 इस प्रकार के और भी उदािरण ि ैं, ल्जनसे उस काि की कट्टरता को आघात निंहपिंुचता था। ककसी आदि मके प्रतत स्वेच्छा से आत्र्सर्पणम एक र्वस्तु ि ै और उस आदि मका अतनर्वाय मरूप से थोप हदया जाना बबिकुि शभन्न दूसूरह बात। ल्स्त्रयों के सतीत्र्व की प्रिंसा करते िुए उसे सबसे बड़ा गुण बताया गया ि ै और र्वर्धर्वाएं अपनेहदर्वंगत पततयों के प्रतत प्रगाढ प्रेर् के कारण भी पुनर्वर्वमाि से इन्कार कर सकती थीं।

र्वर्धर्वाओंके पुनर्वर्वमाि सन् ्300 ईस्र्वी से पूर्व मिेकर सन् ्200 ईस्र्वी के बीच की अर्वधध र्ें अिौकवप्रय ि ो गए। उस सर्य भी बाि-र्वर्धर्वाओंको पुनर्वर्वमाि करने ेकी अनुर्तत थी।'[394] अिबेरूनी शिखता ि ै कक र्वर्धर्वाओं को पुनर्वर्वमाि प्रथा द्र्वारा तनवषद्ध था और यि तनषेध बढाकर बाि-र्वर्धर्वाओं पर भी िागू कर हदया गया।

र्वर्धर्वाओंकी कहठनाइयांककसी सीर्ा तक तनयोग की प्रथा द्र्वारा कर् ि ो गई थीं, जो 300 ईस्र्वी पूर्व मतक काफी सार्ान्य रूप से प्रचशित थी।395 रृत पवत्त के भाई, देर्वर (द्र्वतीयो र्वरः) के साथ र्वर्धर्वा के पुनर्वर्वमाि की प्रथा प्रचशित थी। जब पतत का ि र्व जिाया जाने को ि ोता ि ै, तब रृत व्यल्क्त का भाई इन ि ददों के साथ र्वर्धर्वा का ि ाथ पकड़ ि ेता ि ै, "ओ नारह, उठ, तू ूउसके पास पड़ी ि ै, ल्जसका जीर्वन जा चुका ि ै। अपने पतत को छोड़कर जीर्वर्वतों के संसार र्ें ि ौट आ और उसकी पत्नी बन, जो तेरा ि ाथ पकड़े ेखड़ा ि ै और प्रेर्पूर्वकम तुझे ेअपनाना चािता ि ै।"[396] इस प्रथा का संकेत र्िाभारत र्ें भी शर्िता ि ै, "जैसे स्त्री पतत के र्रनेपर उसके भाई (देर्वर) से र्ववर्वाि कर ि ेती ि ै, र्वैसे ि ह जब ि ाह्नण पृथ्र्वी की रक्षा करने ेर्ें असर्थ मरिा, तब पृथ्र्वी ने क्षबत्रय को अपना पतत बना शिया।"[397] पतत के भाई या ककसी अन्य तनकट सम्बन्धी के साथ संभोग द्र्वारा जो पुत्र अपनेरृत पतत के शिए उत्पन्न ककया जाता ि ै, र्वि क्षेत्रज िकिाता ि ै। तनयोग का र्ुख्य प्रयोजन संतानोत्पादन था और पुत्र उत्पन्न

---

392 र्नु० 5-160

393 देखखए, अलतेकेर, 'ए न्यू गुप्त कक्ंग' जे० बी० ऐंड ओ० आर० एस० (1928), पृष्ठ 222-253 ि ह (1929), पृष्ठ 134-14।

394 र्वशिष्ठ 17-66, : 'बौधायन' 2-2-47

395 तुिना कील्जए, "यहद ककसी स्र्वस्थ प्रज्ञा स्त्री का र्ववर्वाि ककसी अस्र्वस्थप्रज्ञ पुरुष से ि ो जाए, और र्वि चुि तौर पर ककसी दुसुरे पुरुष से सम्बन्ध न कर सकती ि ो और अपने धर् मके र्वरुद्ध भी काय मन करना चािती ि ो. क्योंकक पोप का आदेि ि ै कक कई साक्षी ि ोने चाहिए... तो र्वि अपने पतत से इस प्रकार किे, 'देखो, र्ेरे प्यारे पुरुष, तुर्नेर्ुझ तरुणी को ठगा ि ै और इससे र्ेरे धर् मऔर आत्र्ा को संकट र्ें डाि हदया ि ै और परर्ात्र्ा की दृल्ष्ट र्ें ि र् दोनों का र्ववर्वाि िुआ ि ह निंह।ं अब तुर् र्ुझे ेअपने भाई के साथ या अपने सबसे घतनष्ठ शर्त्र के साथ गुप्त्युप र्ववर्वाि करने दो, और नार् तुम्िारा ि ह रिेगा, ल्जससे तुम्िारह सम्पवत्त तुम्िारे बाद उत्तराधधकार र्ें एकदर् अपररधचतों को न शर्िेगी। अब तुर् स्र्वेच्छापूर्वकम र्ुझसे ठगे जाओ, क्योंकक तुर्ने र्ुझे ेर्ेरह इच्छा के बबना ठगा ।"- ि ायन शिन, 'र्ाहटमन लयूचर' (1934), पृष्ठ 212-213

396 ऋग्र्वेद 10-81-8, साथ ि ह देखखए 10-40-2

397 ि ाल्न्त पर्व म72-12

मिने ◌ेके साथ ◌िह इसकी अनुर्तत सर्ाप्त ◌ो जाती थी। जब वर्वधर्वा का कोई पुत्र वर्वद्यर्ान ◌ो, तो उसे पाररर्वाररक सम्पवत्त र्े से हिस्सा शर्िता ◌ै। र्िाभारत र्े पांडु, धृतराष्ट्र और पांचों पांडर्व तनयोग द्र्वारा ◌िह उत्पन्न ◌ुए थे।

क्योंकक यि प्रथा पवर्वत्रता और यौन सम्बन्धों र्े ल्स्थरता के आदिों के साथ असंगत थी, इसशिए आपस्तम्ब और बौधायन ने इसका वर्वरोध ककया। र्नु ने तो इसे पिावर्वक किकर इसकी तनन्दा की।398 यि उन प्रथाओंर्े से एक ◌ै, जो ◌िर्ारे युग र्े तनन्दनीय र्ानी गई ◌ै। यद्यवप आयसमर्ाज के प्रर्वतकम दयानन्द सरस्र्वती ने तनयोग की अनुर्तत दह, परन्तु उनके अनुयातययों ने वर्वधर्वा-वर्वर्वाि का सीधा र्ागे ◌िह अपनाया।

सती-प्रथा या आत्र्-बशि के सम्बन्ध र्े र्वैहदक साहित्य र्े कोई सीधा संकेत निहंशर्िता। गृह्य सूत्र, ल्जनर्े घरेिू जीर्वन के र्ित्र्वपूण मसंस्कारों (वर्वधधयों) का अन्त्येल्ष्ट संस्कार सर्ेत बिुत वर्वस्तार से र्वणनम ◌ै, इस वर्वषय र्े बबिकुि र्ौन ◌ैं।'[399] परर्वती टहकाकारों और वर्वधान-तनर्ातमाओं ने सती-प्रथा के सर्थनम र्े ऋग्र्वेद की एक ऋचा को उद्धृत ककया ◌ै।400 उसका अथ मइस प्रकार ◌ै, "ये ल्स्त्रयां जो वर्वधर्वा निहं ◌ैं, ल्जनके पतत अच्छे ◌ैं, अपनी आंखों र्े अंजन ◌िगाते ◌ुए प्रवर्वष्ट ◌ों; अश्रुिहन, रोगिहन, और आभूषणों से भूवषत ये र्वान र्े मििे (अग्र्े) प्रर्वेि करें।"[401] यि ऋचा वर्वधर्वाओंको संबोधधत करके किह गई निहंिो सकती, अवपतु ◌ुएकबत्रत ◌ुई ल्स्त्रयों को संबोधधत करके किह गई ◌ै; और अग्र्े' (मििे) के स्थान पर 'अग्नेः' (आग र्े) ◌िदद रख देनेसे इसका अथ मवर्वकृत िो गया ◌ै। संभर्वतः यि प्रथा इंडो-जर्ेतनक जातत र्े प्रचशित थी और र्विं से इंडो-आयनम जातत र्े आ गई। पर यि स्पष्ट ◌ै कक ऋग्र्वेद की दृल्ष्ट र्े यि अनुधचत थी। यि प्रथा भारत र्े प्रचशित थी, इस वर्वषय र्े यूनानी प्रर्ाण

398 पिु धर् म9-66

399 कशिर्वज्य।म परिार द्र्वारा दह गई वर्वधर्वाओंके पुनवर्वर्वाि की अनुर्तत इस आधार पर व्यथ मिो गई कक यि कशियुग ◌ै और कशियुग र्े ऐसा वर्वर्वाि तनवषद्ध ◌ै। सोऽयंपुनरुद्र्वािो युगान्तर वर्वषयः । 'तनणयमशसन्धु, 3 र्े, कशिर्वज्य मवर्वषयक अध्याय र्े यि र्ूि पाठ उद्धृत ◌ै:

अल्ग्निोत्ने गर्वाम्भि संन्यासं ◌पिपैतृकर् ◌्

देर्वराच्च सुतोत्पवत्तः किौ पञ्च वर्वर्वजयेमत्।◌्

तनरन्तर जिती ◌ुई यज्ञाल्ग्न, गोर्वध, संसार-त्याग, श्राद्ध या वपतृपूजा के अर्वसर पर र्ांस भोजन और तनयोग, ये पांच बातें कशियुग र्े तनवषद्ध ◌ैं। संन्यास पर से प्रततबन्ध ◌ंकराचाय मने ◌िटा हदया।

400 10-1-87 देखखए, अथर्वर्वेमद 12-2-31, तैवत्तरहय-आरण्यक 6-10-2

401 इर्ा नारहरवर्वधर्वाः सुपत्नीरञ्जनेन सवपषमा संवर्वन्तु ।

अनश्रर्वोऽनर्ीर्वाः सुरत्ना आरिोन्तु जनयो योतनर्ग्ने।

र्े अथर्वर्वेमद र्े एक ऐसी र्वैहदक किा से पूर्व मकी कथा का संकेत शर्िता ◌ै, ल्जसके अनुसार पत्नी का र्ृत पतत के साथ ◌िह दाि-संस्कार कर हदया जाता था।

इयं ◌ंनारह पततिोक र्वृणाना ◌ंतनपद्यतेउपत्र्व र्त्य मप्रेतं ◌ंधर् मपुराण अनुपाियन्ती तस्यै ◌ैप्रजां द्रवर्वण च देहि। -18-3-1

"यि स्त्री अपने पतत के ◌िोक को चुनकर तेरे पास ◌िेटह ◌ुई ◌ै, तू शसधार चुका ◌ै, ओ र्त्य,म पुरानेधर् मका पािन करती ◌ुई इसे सम्पवत्त और सन्तान दे।" बाद र्े स्त्री के स्थान पर एक गाय रखी जाने ◌िगी। स्त्री को जीर्वर्वत रिने हदया जाता था और र्वि दूसरा साथी चुन सकती थी; ◌ित मकेर्वि यि थी कक र्वि र्ृत पतत की बबरादरह का ◌िह ◌ोना चाहिए।" देखखए अथर्वर्वेमद 9-5-27-28

उपिदध ि ैं, और 'वर्वष्णु सूतृत' इसकी प्रिंसा करती ि ै। यि प्रथा केर्वि राजा िोगों र्ें िि प्रचशित थी। रिाभारत र्ें सती-प्रथा के दो उदिारणों का उल्लेख ि ै रािद्रह अपनेपतत पाण्डु की धचता पर उसके साथ िि जिकर सती िो गई थी।402 र्वसुदेर्व की पल्लनयांअपनेपतत के िर्व के साथ जि र्रह थीं।403 राजाओंर्ें भी सती-प्रथा साधारण बात निहं ंथी। कुरु र्वंि की वर्वधर्वाओं ने अपने पततयों के िर्वों का दाि संस्कार करने के बाद यथोधचत रहतत से श्राद्धकर् मककया था।404 ईस्र्वी सन् ्की प्रारल्म्भक िताल्ददयों र्ें, जब िकों ने इस दिे पर आक्रर्ण ककया और भीषण उत्पात र्चाया, तब राज-परर्वारों ने अपनी ल्स्त्रयों के सम्र्ान की रक्षा के शिए इस प्रथा का अर्वर्िम्बन ककया। हिन्दू ूआचार संहिताओंर्ें वर्वशभन्न जाततयों के व्यर्विारों और उनकी जीर्वन पद्धततयों का संकिन ि ै, ल्जनर्ें से सभी िाह्र्ण संहिताओं को अपनानेकी अशभिाषा रखती ि ैं। तनराशर्ष भोजन और वर्वधर्वाओं का वर्वर्वाि न करने के वर्वषय र्ें तनम्नतर् जाततयां भी उच्चतर् जाततयों का अनुकरण करती ि ैं। अव्यर्वस्था र्ें र्वृद्धध िोने के साथ-साथ सती प्रथा की घटनाओंर्ें भी र्वृद्धध िुई; पर सारे सर्य बीच-बीच र्ें प्रततर्वाद भी ककए िाते रिे। बाणभट्ट अपनी 'कादम्बरह' र्ें किता ि ै कक "यि अशिक्षक्षतों द्र्वारा अपनाया जानेर्वािा र्ागर् िै, यि र्ूढता का प्रदिर्न ि ै, अज्ञान का पथ ि ै र्ूखतर्ा और अदूरूदशितर्ा का कायर् िै, और र्ंद बुद्धध र्ें भटकना ि ै कक र्ाता-वपता, भाई, शर्त्र या पतत के र्रनेपर एक जीर्वन को सर्ाप्त कर हदया जाए... यहद ठीक प्रकार सोचा जाए, तो यि आत्र्ित्या एक स्र्वाथपूर्ण मउद्देश्य से की जा रिह िोती ि ै, क्योंकक इसका उद्देश्य िोक के असह्य कष्ट को िीघ्र से िह रोक देना िोता ि ै।" र्नुका टहकाकार र्ेधाततधथ सती-प्रथा की तनन्दा करते िुए किता ि ै कक यि तो आत्र्ित्या ि ै, धर् मनिहं।405 शसखों के आहद ग्रन्थ र्ें शिखा ि ै, "ओ नानक, र्वे सततयांनिहंं, जो आग र्ें जि र्रती ि ैं; सततयांतो र्वे ि ैं जो टूटा िुआ हदि िेकर भी जीवर्वत रिती ि ैं।" जब प्रेर्ी जाता रिे, तो सम्भर्व ि ै कक गिरा प्रेर् आर्ूि कल्म्पत िो जाए, और ऐसे र्ार्िों र्ें व्यल्क्त र्रनेपर उतर आ सकता ि ै। परन्तु यि बात ककसी एक दिे या जातत की िह वर्विेषता निहं ंि ै।406 पल्श्चर्ी वर्वचारों द्र्वारा िाई गई सार्ाल्जक चेतना के जागरण का िह यि सुपररणार् था कक ईश्र्वरचन्द्र वर्वद्यासागर और राजा रार्र्ोिन राय ने सन् ्1856 र्ें एक आर्वश्यक कानून पास करर्वाया, ल्जसके द्र्वारा कुछ वर्विेष दिाओं र्ें वर्वधर्वाओंके पुनवर्वर्वर्वाि की अनुर्तत दह गई; यि बात र्वैहदक परम्परा और व्यर्विार की भार्वना के अनुकूि ि ै।

---

402 1 - 126 - 25 - 26

403 अथर्वर्वेमद 17-7-18-24

404 र्विह 27, स्त्री पर्व म

405 5-147 बृिस्पतत से तुिना कील्जए:

आर्ातेम र्ुहदते हृष्टा प्रोवषते र्शिना कृिा

र्ृते ल्म्नयेत या पत्यु: सा स्त्री ज्ञेया पततव्रता।

संभर्व ि ै कक यि अदि मपत्नी के र्वणनर् का केर्वि अततरंजनापूण मढंग िह िो।

406 जब 1917 के र्ास्को वर्वद्रोि र्ें उसका प्रेर्ी र्ारा गया और उसे 'िाि अन्त्येल्ष्ट' र्ें दफनाया जा रिा था, सब वर्वद्रोिह कन्या कि र्ें कूद पड़ी और उस सन्दुक से, ल्जसर्ें प्रेर्ी का िर्व था, यि किती िुई धचपट गई, "र्ुझेभी दफना दो: अब जब र्वि र्र चुका ि ै, र्ुझेक्राल्न्त का क्या करना ि ै?" प्रेर्, र्ातृत्र्व-वपतृत्र्व और र्ृत्युबिाह र्ानर्व-जीर्वन की केन्द्रहय धारा की तुिना र्ें क्राल्न्तयां कुछ भी निहं ि ैं।

तिाक (वर्ववर्ाि-वर्वच्छेद)

रि् पत्नी के जीते जी पुरुषों के पुनवर्ववमिा की व्यर्वस्था का उलिेख पीपे कर आए िैं। यजुर्वेद र्ें किा गया िै कक एक पुरुष कई पल्त्नयां रख सकता िै, परन्तु एक स्त्री के कई पतत निंिीं सकते। दूसूरे िददों र्ें, पुरुष एक िि सर्य र्ें एक से अधधक पल्त्नयां रख सकता िै, परन्तु स्त्री एक सर्य र्ें एक से अधधक पतत निंकर सकती, यद्यवप र्वि अिग-अिग सर्यों र्ें एक से अधधक पतत कर सकती िै।"[407] कुछ खास दिाओं र्ें स्त्री को पुनवर्ववमिा की भी अनुर्तत दह गई िै। "प्रर्वास र्ें गए पतत के शिए स्त्री पांच र्वष मतक प्रतीक्षा करे। पांच र्वष मबीत जानेके बाद र्वि दूसूरा पतत कर सकती िै।"[408] नारद सूतृत' र्ें किा गया िै, "जब पतत 'भाग जाए, या र जाए, या संन्यासी िो जाए, या नपुंसक िो, या जातत-भ्रष्ट िो गया िो, इन पांच दिाओंर्ें स्त्री दुसुरा पतत कर सकती िै। िाह्मण स्त्री र्वदेि गए पतत के शिए आठ र्वष मतक प्रतीक्षा करे, यहद अर्व तक उस स्त्री की कोई सन्तान न िुई िो, तो र्वि केर्वि चार सिा प्रतीक्षा करे, इस अर्वधध के बाद र्वि दूसूरे पुरुष से वर्ववर्ाि कर सकती िै। क्षल्त्नय स्त्री यहद सन्तानर्वती िो तो छः सिा और यहद सन्तानर्वती न िो तो तीन सिा प्रतीक्षा करे। सन्तानर्वती र्वैश्य स्त्री चार सिा और सन्तानिहन दो सिा प्रतीक्षा करे। िूदू्र ल्स्त्रयों के शिए प्रतीक्षा करने के वर्वषय र्ें कोई तनयर् निंिीं। यहद यि सुनने र्ें आए कक र्वदेि र्ें पतत जीवर्वत िै तो प्रतीक्षा की अर्वधध दुगुनी िोगी। यि प्रजापतत का आदेि ै।"[409] यहद पांच सिा बाद पतत के िौटने ेपर स्त्री उसके पास न जाना चािे, तो र्वि उसके ककसी तनकट सम्बन्धी से वर्ववर्ाि कर सकती िै।410 धर्सूमत्र तो िाह्मण स्त्री को पांच र्वष मतक प्रतीक्षा करने ेको किते िैं, पर कौहटलय ने इस प्रतीक्षा की अर्वधध को घटाकर केर्वि दस र्िहने कर हदया िै।411 र्वशिष्ठ और नारद का अनुकरण करते िुए कात्यायन का यि र्त िै कक "यहद र्वर शभन्न जातत का िो, जातत से बहिष्कृत िो नपुंसक िो, दुराचारह िो, सर्ान गोत्र का िो, दास िो, धचर-पंगु (रोगी) िो तो र्वधू का, भिे िह उसका वर्ववर्ाि िो भी चुका िो, दूसूरे पुरुष से वर्ववर्ाि कर हदया जाना चाहिए।"[412] अत्यन्त परिरधचत श्लोक,

नष्टे र्ूतृे प्रव्रल्जते क्िहिबे च पततते पतौ,
पञ्चस्र्वापत्सु नारहणांपततरन्यो र्वर्वधीयते ।413

र्ें कुछ वर्वशिष्ट पररल्स्थततयों र्ें पुनवर्ववमिा की अनुर्तत दह गई िै। कौहटलय शिखता िै, "यहद पतत दुशुचररत्न िो या बिुत सर्य से र्वदेि गया िुआ िो या राजद्रोि का अपराधी या अपनी पत्नी के शिए खतरनाक िो या जातत से

---

407 सिैतत युगपद्धिुपततततनषेधोनतुसर्यभेदेन ।

408 र्वशिष्ठ 17

409 र्विह 12-66

410 र्विह 17-67

411 3-4

412 र्ाधर्व के 'पारिार भाष्य' तथा 'तनणयम शसन्धु' र्ें उद्धृत

413 परिार, 4 - 30 गरुड़ पुराण, 107 - 28 अल्ग्नपुराण , 154-5, नारद 12-67

बहिष्कृत कर हदया गया िो या पुंसत्र्व िल्क्त खो चुका िो, तो उसकी पत्नी उसे त्याग सकती िै।"[414] जो पतत-पत्नी एक-दूसूरे के साथ रि पाना असम्भर्व सझीतें, उनके पृथुक्करण के शिए उसनेवर्वस्तृत् अनुदेि (हिदायतें) हदए िैं; पर उसनेयि वर्वर्षोधधकार केर्वि उन्हिंीगों को हदया िै, ल्जनका वर्ववर्वा असुर, गान्धर्व,म राक्षस या पैिाच रहतत से िुआ िो। पृथृक्करण और तिाक की अनुर्तत वर्ववर्वा की अवर्वच्छेद्यता के शसद्धान्त के कारण सर्ाप्त िो गई, जो सम्भर्वतः इसशिए बनाया गया था कक िोग बौद्ध धर् मद्र्वारा प्रिंशंसत शभक्ष-जीर्वन की ओर आकवषतम न िों। ल्जस सर्य उच्चतर र्वगों र्ें तिाक तनवषद्ध भी था, उस सर्य भी अन्य र्वगों को तिाक का वर्वर्षोधधकार प्राप्त था। ईसा से पूर्व मके िा र्ें सर्ाज के सभी र्वगों र्ें तिाक और पुनवर्ववर्वमि िोतेथे। र्वात्स्यायन जब यि किता िै कक "तनम्नतर जातत की स्त्री या दुबुारा वर्ववर्वाहित स्त्री से संभोग न तो र्वांछनीय िै और न तनवषद्ध िै"415, तब र्वि ल्स्त्रयों के पुनवर्ववर्वमि को स्र्वीकार कर रिा िोता िै। दूसूरे िददों र्ें, यद्यवप र्ानर्वीय संस्था के रूप र्ें वर्ववर्वा एक पवर्वन र्वस्तुि, परन्तु ऐसी पररल्स्थततयां उत्पन्न िो सकती िैं, ल्जनर्ें पतत-पत्नी को तनरन्तर कष्ट से बचाने का एकर्ात्न उपाय वर्ववर्वा-वर्वच्छेद िह िो। दो व्यल्क्तयों का केर्वि इस कारण साथ रिकर दुखुी रिना कक र्वे एक ऐसे बन्धन र्ें बंध गए िैं, ल्जसे र्ृतूयु िह तोड़ सकती िै, िर्ारे सर्वोत्तर् अंि के प्रतत पाप िै।416 कभी-कभी यि आत्र्ा पर गिरह चोट करता िै। बच्चों की दृल्ष्ट से भी यि भिा िै कक खखन्न र्ाता-वपता साथ न रिें। िर्ारे कानून, उन धर्-मशसद्धान्तों के प्रतत आदर हदखाते िुए, ल्जन्िेंकिक अब िर् निहं र्ानते, र्िरह घर्ेिूघतनष्ठताओं के साथ भयंकर उत्पात करते िैं। खिुे तौर पर तिाक की अनुर्तत देनेसे सार्ाल्जक ल्स्थरता को क्षतत पिुंचेगी। यि एक प्रश्न िह िै कक पल्श्चर्ी देिों र्ें तिाक की अधधक सुवर्वधाओंने र्ानर्वीय आनन्द की कुि र्ात्रा र्ें उलिेखनीय र्वृदूधध की िै या कर् से कर् र्ानर्वीय तनरानन्द र्ें कुछ कर्ी की िै या निहं। वर्ववर्वा की पवर्वत्रता पर गिृस्थ धर् मका व्यर्विार, पररर्वार की अखण्डता और बच्चों का पािन-पोषण तनभरम िै। यहद वर्ववर्वा एक संस्कार िै और केर्वि एक युगबन्ध (ठेका, सझौता) निहं, ंतो बुित िलकेपन से निहं ंकर डािना चाहिए। यहद िर् वर्ववर्वा को एक संस्कार की दृल्ष्ट से िें, तो इसको सफि बना पाने का अर्वसर किहं अधधक िै। हिन्दू ूसर्ाज र्ें िताल्ददयों से चिा आ रिा र्नोभार्व ल्स्त्रयों के पुनवर्ववर्वमि के वर्वरोध र्ें िै।

कुछ हिन्दू ूजाततयों र्ें तिाक और पुनवर्ववर्वमि की अनुर्तत िै। इन जाततयों र्ें तिाक के शिए आधार दुवु्यर्विार, तनरन्तर कििि, पतत की नपुंसकता या पििे वर्ववर्वा िह र्ें िुई कोई अतनयशर्तता िैं। वर्वधर्वाओं के दुबुारा वर्ववर्वा की और तिाक के बाद ल्स्त्रयों के दुबुारा वर्ववर्वा की अनुर्तत देनेर्ें िर् अपनेप्राचीन िास्त्रकारों की भार्वना के अनुकिू िह काय मकर रिे िैं। जे० डी र्ेन० शिखता िै, "चािे तिाक के बाद या वर्वधर्वा िोने के बाद ल्स्त्रयों के पुनवर्ववर्वमि के तनषेध के शिए प्राचीन हिन्दू ूकानूनों या प्रथाओंर्ें कोई आधार निहंशर्िता। प्राचीन िेखकों ने

414 अथिमास्त्र 3-3

415 न शिष्टह न प्रततवषद्धः । कार्सूत्र, 1-5-3

416 शर्लटन से तुिना कील्जए, "जो भी कोई वर्ववर्वा की या अन्य ककसी भी वर्वधान को र्नुष्य की भिाई से ऊँचा स्थान देता िै, र्वि चािे अपने-आपको रोर्न कैथोशिक किे, चािे प्रोटेस्टेंट या कुछ और, पर र्वि पाखण्डी से अधधक कुछ निहं िै।"

धर् मऔर सराज 181 उन ल्स्त्रयों के, जो ककसी उधचत कारण से अपनेपततयों को छोड़ आई िैं, या ल्जन्िें उनके पततयों ने त्याग हदया िै,
या ल्जनके पतत र् गए िैं, पुनववर्वमिा को बिुत स्पष्ट रूप से अनुर्तत दह िै।"[417]

आज तो ल्स्थतत यि िै कक पतत को तो एक के बाद एक अनेक वर्वावि करनेकी स्वतिमता िै, परन्तु स्त्री को उस दिा र्ें दूसूरा वर्वावि करने ेकी स्वाधीनता निहं िै, जबकक यि पतत द्र्वारा त्याग दह गई िो। जब पतत पत्नी के र् जाने पर और कई बार उसके जीते जी पुनववर्वमिा कर सकता िो, तब वर्वावि के बन्धन को अववच्छेय निहं र्ाना जा सकता। प्रेरर्हन वर्वावि और वर्वावि के थोथेअशभनय, ल्जन्िें रूहढवादह परम्परा सिन करती आती िै, सच्ची आत्र्ाओं की चोट पिुंचाते िैं।418 ऐसी अनेक पररत्यक्ता पल्त्नयां िैं, ल्जनके शिए दु:ख से छुटकारा पाने का कोई उपाय निहं िै। इसर्ें से अनेक को दूसूरा वर्वावि करने के शिए, वर्वावि िोकर, धर्-मपररवतनम करना पड़ता िै। यहद वे चािें, तो उन्िें पुनववर्वमिा की अनुर्तत शर्िनी चाहिए। तिाक के शिए उदारतापूण मकानून बना देना िह अपने-आपर्ें काफी निहंिै। कुछ एक अवप्रय प्रसंग, चुभते िुए कुछ िदद, वास्तववक या कालपतनक अन्यायों का गिातार धचन्तन, स्वभाव का सार्ंजस्य इत्याहद का पररणार् भी पृथक्करण िो सकता िै। परन्तु इन बातों को थोड़े–से त्याग और सर्ंजन (बैठ-वठाव) द्र्वारा ठीक ककया जा सकता िै, ल्जसे तिाक के आसान कानून प्रोत्सािन निहं ंदेते। बोल्िेववक क्रांतत के प्रारल्म्भक हदनों र्ें वर्वावि वैसी बांधनेवािह िल्क्त निहं रि गए थे,े जैसी कक पििे थे : तिाक के शिए केवि पृथक् िोने ेके इरादे को प्रख्यावपत (प्रकट) कर देना िह काफी था। कफर भी पतत-पत्नी को इस बात की छूट थी कक कफर सर्झौता कर पाने की आिा र्ें वे ेएक-दूसूरे के साथ रितेरिें। एक युगि एक िह रल्जस्रह दफ्तर र्ें एक हदन र्ें वर्वावि कर सकता था, और उसी हदन तिाक भी िे सकता था। "परन्तु अलपकािहन वर्वावि के आंकडे ेइतने धचन्ताजनक िो उठे, कक िाि र्ें िह एक नया तनयर् िागू ककया गया िै, ल्जसके अनुसार वर्वावि के पश्चात् ्एक तनयत अवधध के बाद िह तिाक हदया जा सकता िै- जिांतक र्ेरा ख्याि िै, कुछ सप्ताि बाद। वर्वावि की रल्जस्रह कराने और तिाक के शिए व्यय 'भी थोड़ा िह िोता िै, केवि िगभग पांच डािर।"[419]

सार्ान्यतया वर्वावि-सम्बन्ध को स्थायी सर्झा जाना चाहिए।420 तिाक का आश्रय केवि उन अत्यधधक कहठन र्ार्िों र्ें शिया जाना चाहिए, जिां ंवैवाहित जीवन बबलकुि असम्भव िो गया िो। तिाक एक

417 'हिन्दू िॉ ऐंड यूसेज, दसवां संस्करण, िेखक एस० श्रीतनवास आयंगर (1938), पृष्ठ 185

418 गालसवदी शिखता िै "र्ुल्क्त पाने का कोई भि अवसर न िोने की दिा र्ें वर्वावि एक प्रकार का दासों का स्वाशत्व िै। िोगों को एक-दूसूरे का स्वार्ी निहं िोना चाहिए। िर कोई अब इस बात को सर्झता िै।"- 'ट्रिट'

419 ड्रीज़र िुक्स ऐट रशिया, पृष्ठ 165

420 वर्वावि की पववत्रता का उपदेि संसार के सब र्िान धर्ों नेहदया िै। "और फेररसी (पाखण्डी यिूदह) िोग उसके पास आए और उसे झांसें र्ें िाने के शिए पूछने िगे कक क्या पुरुष के शिए अपनी स्ती को त्याग देना उधचत िै? और उसने उत्तर र्ें किा, 'र्ूसा ने तुर्िें क्या आदेि हदया िै?' और उन्िोंने किा, र्ूसा ने तो तिाक का और उसे छोड़ देने का कानून बनाया िै।' और ईसा ने उत्तर हदया तुम्िारे हृदय की कठोरता के कारण उसने तुर्िें ऐसा आदेि हदया िै। परंतु सृल्ष्ट के प्रारम्भ से िह परर्ात्र्ा ने उन्िें नर और नारह बनाया िै। इस कारण पुरुष अपने वपता और र्ाता से अिग िोकर पत्नी के साथ रिने िगता िै र्वे दोनों शर्िकर एक िरहर िो जाते िैं, इसशिए र्वे दो निहं रिते,े बल्लक एक िारहर िो जाते िैं। ल्जन्िें परर्ात्र्ा र्ें शर्िाकर एक ककया िै, र्नुष्य को उन्िें पृथक् निहं करना चाहिए।'- सटें र्ाकम, 10-2-9

ऐसी उम्र औषध िै, जो व्यल्क्त के अपने जीर्वन को तो जड़ से ह्हिा िह देती िै, साथ िह दूसूरों के जीर्वनों पर भी प्रभार्व डािती िै। िर् बच्चों को र्वर्वभक्त जीर्वन और र्वर्वभक्त तनष्ठा के दुष्प्रभार्वों के सम्र्ुख खिुा छोड़ देते िैं। बच्चों के हितों को दृल्ष्ट र्ें रखकर, र्वर्वािि के बन्धन को स्थायी सर्झना चाहिए। र्वर्वाहित्ति र्ाता-वपता स्वयं काफी कष्ट सिकर भी अपने बच्चों को र्नोर्वेगात्र्क दबार्व और स्नायु-क्षतत से बचानेका प्रयत्न करेंगे। जिां र्वर्वािि के बाद सन्तान न भी िुई िो, र्विाँ भी तिाक बेरोक-टोक निहं दे हदया जाना चाहिए। र्वर्वािि एक युगबन्ध (ठेका)-भर निहं िै; यि आत्र्ा के जीर्वन का अंग िै। जोखखर् और कहठनाइयांर्ानर्व-जीर्वन का अंग िैं और िर्ें उन दोनों का सार्ना करने के शिए तैयार रिना चाहिए। िर्ें दो ऐसे र्ानर्व-प्राखणयों की भांतत और साधथयों की भांतत शर्िना चाहिए, ल्जनर्ें दोनों र्ें िह एक-से दोष िैं, दुबिुमताएं िैं और एक-सी इच्छाएं िैं; और सर्ंजन (र्ि बबठाना) एक िम्बी प्रकक्रया िै। कैथोशिक चच मर्ें र्वर्वािि के सर्य र्वर-र्वधू एक-दूसूरे की ओर झुकतेिैं और उनके शसर पर क्रास और तिर्वार रखी जाती िै; क्रास इस र्ानर्वीय व्यर्वस्था की अपेक्षा एक उच्चतर व्यर्वस्था र्ें उनके करुण सिासपूण मवर्वश्र्वास का प्रतीक िै और तिर्वार इस बात की प्रतीक िै कक क्रास के कानून के प्रत्येक उल्िंघन का दंड उन्िेंअतनर्वाय मरूप से भुगतना पड़ेगा। र्वर्वािि का संस्कार रूपर्विाा दृल्ष्टकोण, इस र्वश्र्वास के द्र्वारा कक प्रेर्े् िह उस चरर् आधार की प्रेर्े् योग्यता का धचह्न और िपथ िै, ल्जससे सब र्वस्तुएं उत्पन्न िोती िैं, िर्से र्यि र्ांग करता िै कक िर् जोखखर्ों का सार्ना करें और र्िन काय मर्ें िार कदावप न र्ानें। िर् र्वर्वािि-सम्बन्ध र्ें व्यल्क्त की सम्पूणतमा के र्वकास के शिए, और उस र्वास्तर्वर्वकता को अपनानेके शिए दहक्षक्षत िोते िैं, ल्जसके अभार्व र्ें व्यल्क्त या सर्ाज, दोनों के शिए िह कोई आनन्द निहं िै। इस परम्परागत दृल्ष्टकोण की भारतीयों पर अब भी र्ज़बूत जकड़ िै, ल्जनर्ें संभर्वतः संसार के अन्य ककसी भी दिे की अपेक्षा धचरस्थायी र्वर्वािि अधधक संख्या र्ें िोतेिैं और पाररर्वाररक प्रेर्े् किहं अधधक सबि िोता िै। इसका श्रेय र्ुख्यतया भारतीय र्हिाओंके, जो गौरर्व, दयािुता और िाल्न्त का चात्काररक स्वरूप िैं, चररत्न को िै। उनर्ें से अधधकांि का जीर्वन का उद्देश्य जीर्वन को सिन करना र्ात्र िै। सर्वोच्च सत्ता र्ें र्वश्र्वास के कारण नर-नाररयों के र्न र्ें यि आिा रिती िैकक सहिष्णुता का पुरस्कार अर्वश्य शर्िेगा और र्वनम्रतापूर्वकम कष्ट सिते जानेसे पत्थर से पत्थर हदि भी पसीज जाता िै। तिाक को सिन करना पुरुषों के शिए ल्स्त्रयों की अपेक्षा किहं अधधक सरि िै; क्योंकक पुरुष तो अपने-आपको काय मर्ें व्यस्त रखकर ककसी सीर्ा तक घरेिूजीर्वन के उजड़ जाने को भूि सकता िै, परन्तु स्त्री के शिए तो यि सूनापन िह सूनापन िै। बेडड़यों के उतार फेंकने से िह िर्ें उड़ने को पेख तो निहंशर्ि जाते !

र्वर्वािि की अर्वर्वच्छेद्यता का धर्-मशसद्धान्त अल्न्तर् प्रर्ाण निहं िै; कफर भी र्वि आदि मअर्वश्य िै। इसका उल्िंघन केर्वि अत्यधधक अपर्वादरूप पररल्स्थततयों र्ें िह िोना चाहिए। बिुत-से तनयर् और प्रथाएं, जो ककसी सर्य बिुत र्ित्त्वपूण मऔर आर्वश्यक थीं, आज अपना अथ मखो चुकी िैं और अब र्वे केर्वि थोथा खिो िह खिो िेषे रि गई िैं। उनर्ें से कुछ को, जो आत्र्ा का दर् घोटनेर्विह िैं, त्यागना िह िोगा। हिन्दुओंर्ें एकर्वर्वािि की स्थापना करनेके शिए कानून कभी का बन चुकना चाहिए था। इस प्रकार का कानून केर्वि तभी न्यायोधचत िो सकता िै, जबकक कुछ र्वशिष्ट दिाओंर्ें र्वर्वािि को रद्द करने की अनुर्तत देनेर्विा कानून भी स्र्वीकार कर शिया जाए। पररत्याग, स्र्वाभावर्वक क्रूरता, व्यशभचार, पागिपन और असाध्य रोग केर्वि इनको िह र्वर्वािि को रद्द करने के शिए आधार र्ाना जाना चाहिए, पतत या पत्नी, दोनों र्ें से कोई भी इन आधारों पर र्वर्वािि को रद्द

करने ेकी र्ांग कर सके। इस प्रकार का कानून एक स्र्वच्छ, स्र्वस्थ और सुखी जीर्वन स्थावपत करने र्ें, जिां ंतक कानूनों द्र्वारा ऐसा िो पाना सम्भर्व िै, सियक िोगा, और ऐसा कानून हिन्दू ूपरम्परा की साधारण भार्वना से असंगत न िोगा।

सर्ाज-सुधार

ि्रारे सार्ाल्जक वर्वधान र्ें कुछ अतनयशर्तताएं (गड़बड़झािा) िैं। हिन्दू–ूपुरुष, ल्जसकी एक से अधधक पल्त्नयां िों, ईसाई बनने के बाद भी, यहद पल्त्नयां एतराज़ न करें तो, उन्िें अपने पास रख सकता िै, िािांकक ककसी ईसाई के शिए एक सर्य र्ें एक से अधधक पल्त्नयांरखना अपराध िै। जब कोई हिन्दू ूर्ुसिर्ान बन जाता िै, तो उत्तराधधकार के वर्वषय र्ें उस पर र्ुल्स्िर् कानून िागू िूोता िै; या कफर र्वि यि प्रर्ाखणत कर दे, उसके यिां कोई ऐसी प्रथा प्रचशित िै, ल्जससे यि प्रकट िोता िै कक उत्तराधधकार वर्वषयक र्ुसिर्ानी कानून वर्वशभन्न प्रकार का िै, तब र्ुल्स्िर् कानून उस पर िागू निं ंिोगा। यहद कोई र्ुसिर्ान पतत धर्-मपरर्वतनम कर िे, तो उसका वर्वर्वाि रद्द िुआ सर्झा जाता िै। यहद कोई हिन्दू ूईसाई बन जाए, तो उसकी पत्नी उसके पास रिती िै। यहद कोई ईसाई र्ुसिर्ान बन जाए, तो र्वि अपनी पत्नी के जीते जी ककसी अन्य स्त्री से वर्वर्वाि कर सकता िै, जब कक यहद र्वि ईसाई रिते िुए दूसूरा वर्वर्वाि कर िेता, तो द्वर्ववर्वर्वाि का दोषी िोता। कोई हिन्दू ूअपनी पत्नी को तिाक निं दे सकता, परन्तु यहद र्वि र्ुसिर्ान बन जाए, तो तिाक दे सकता िै। कफर, अनिुोर् वर्वर्वािों को 46 बम्बई और 871 तथा 55 बम्बई 1 के र्ुकदर्ों र्ें र्वैध और प्रार्ाखणक र्ाना गया था।'[421] परन्तु इस दृल्ष्टकोण को आि इंडडया ररपॉटर 1941 तथा र्द्रास 513 र्ें अस्र्वीकृत कर हदया गया। कफर, वर्वधर्वा पुनवर्वर्वमाि अधधतनयर् (1856 का 15र्वांअधधतनयर्) की धारा 2 र्ें किा गया िै कक वर्वधर्वा के पुनवर्वर्वमाि के बाद पििे पतत की जायदाद र्ें उसका हिस्सा निं रिेगा। जब यि प्रश्न उठाया गया कक ल्जन वर्वधर्वाओं को अपनी जातत र्ें प्रचशित प्रथाओं द्र्वारा पुनवर्वर्वमाि की पििे से िी अनुर्तत िै, उन पर यि धारा िागू िोती िै या निं, ं तो इिािाबाद उच्च न्यायािय ने तनणयम हदया कक यि िागू निंिोती'[422], परन्तु दूसूरे उच्च न्यायाियों का र्त यि रिा कक यि िागू िोती िै। इसी प्रकार 'हिन्दू ूल्स्त्रयों को जायदाद का अधधकार अधधतनयर्' के बारे र्ें भी कुछ कहठनाइयां िैं। आर्वश्यकता इस बात की िै कक स्र्वतन्त्रता और सर्ानता की आधुतनक भार्वना के अनुकूि कानून की एक वर्वधधर्वद्ध सार्ान्य प्रणािी तैयार की जाए, जो सारे सर्ाज पर िागू िोती िो। हिन्दू–ूवर्वधध-सशर्तत उत्तराधधकार और वर्वर्वाि के कानूनों को वर्वधधबद्ध करने ेका प्रयत्न कर रिी िै।

> स्त्री को अबिा अथार्त ्दुबिम किा जाता िै। ल्जस सभ्यता र्ें पिरहररक बि िी तनणायमक तत्र्व था, उसर्ें स्त्री की, दुबिम जननी की, सबि पुरुषों के अत्याचार से रक्षा की आर्वश्यकता थी। अभी िाि तक भी यि र्ाना जाता था कक ल्स्त्रयां ंअपेक्षाकृत दुबिम और सुकुर्ार िैं और इसशिए उन्िें रक्षा की आर्वश्यकता िै; उनको

421 साथिहदेखखए ,52 र्द्रास ,160
422 55 इिािाबाद ,24

जीवर्वकोपाजनम करने ेकी भी आर्वश्यकता निहंथी, क्योंकक र्वे ेजो कार् घर पर करती थीं, र्वि अन्य कायों की भांतत हि र्त्रिवपूण मिोता था। जब तक घर र्ानर्व-जीर्वन का केन्द्र िै, तब तक स्त्री पररर्वार का सबसे र्त्रिवपूण मसदस्य बनी रिेगी। परन्तु घर का स्थान िनैः िनैः िोटि िो रिा िै, ककसान की कुहटया का स्थान िोटि के करों के सेट लेतिजा रिे िैं। िर् एक आर्वारा जीर्वन बबता रिे िैं; परन्तु हिन्दू ूआदि मयि िै कक पररर्वार को अटूट बनाए रखा जाए। र्नुष्य की जड़ अपनेदिे र्ें िह जर्ी िोती िै। भारतीय नारह र्ाता िै। यिह र्वि धन्धा िै, ल्जसके शिए र्वि बचपन से िह िािातयत रिती िै। िािा के हदनों र्ें ल्स्त्रयों की आधथकम स्र्वाधीनता पर बिुत काफी बि हदया गया िै। िर्ें र्ानना िह िोगा कक आज भी र्ववर्वाि और आश्रय देनेर्वािा घर सारे संसार की अधधकांल्स्त्रयों के िक्ष्य िैं। यहद ल्स्त्रयां नौकरह करके पैसा कर्ाने िगें, तो उससे कोई बड़ा िाभ िोने ेकी सम्भार्वना निहं ंिै। घर के कार् काफी भारह िोते िैं; इतने भारह कक ल्स्त्रयां घर के कार्ों का नुकसान ककए बबना कोई दूसूरा धन्धा कर िह निहंसकतीं। ल्स्त्रयों को आधथकम स्र्वाधीनता घर र्ें िह शर्ि सके, ऐसा उपाय खोजना िोगा। इस बात के शिए यत्न िोना चाहिए कक ल्स्त्रयों को जायदाद के बारे र्ें स्र्वाशर्त्र्व, उत्तराधधकार और जायदाद के तनस्तारण के, स्थार्वर और तनजी दोनों प्रकार की जायदाद के, र्वेिह अधधकार हदए जानेचाहिए, जो पुरुषों को िैं। ल्स्त्रयों को जायदाद के अधधकार देनेके सम्बन्ध र्ें कानून तुरन्त बनना चाहिए। हिन्दू ूधर् मर्ें तनराधश्रतों और आधश्रतों, र्वर्वेिषे रूप से बच्चों, र्वृद्ूधों और र्वृद्ूधाओं ंकी देखभाि पर र्वर्वेिषे ध्यान हदया गया िै। आधश्रत स्त्री का दातयत्र्व पििे उसके पररर्वार पर िै और कफर उसकी बबरादरह (कुि) पर। कौहटलय ने ल्स्त्रयों के शिए कायिमिाएं' खोिने का सुझार्व रखा िै और उनके भरण-पोषण की ल्ज़म्र्ेदारह पुरुष सम्बल्न्धयों पर डािह िै। पतत की चि और अचि दोनों प्रकार की सम्पवत्त र्ें पत्नी का अधधकार उदारतापूर्वकम स्र्वीकार ककया जाना चाहिए। िास्त्रों र्ें किा गया िै कक पत्नी पतत का आधा भाग िै और जीर्वन के उद्देश्यों की साधना र्ें उसकी सिचाररणी िै। जब तक र्वि जीर्वर्वत रिे, तब तक उसे अपनेर्तृ पतत की जायदाद पर अधधकार प्राप्त िै। बृिस्पतत के र्तानुसार सन्तानिहन र्वर्वधर्वाओंको वपतृपृक्ष के सम्बल्न्धयों से पििे पतत की जायदाद पर उत्तराधधकार प्राप्त िै।'[423] नाना की सम्पवत्त का उत्तराधधकार, यहद उसके कोई पुत्न न िो तो, पुत्री को न िोकर दौहित (पुत्री के पुत्र) को िै; इसर्ें कुछ संिोधन ककया जाना आर्वश्यक िै। दौहित वपण्डदान करेगा, जो कक पुत्री निहं ंकर सकती, यि कोई बड़ी बाधा निहीं। उत्तराधधकार र्ें पुत्रों के साथ- साथ पुबत्रयों का िक भी स्र्वीकार करना िह िोगा।

र्ववर्वाि के बारे र्ें चािे जो भी ित ेक्यों न िों, ककन्तु र्ातृत्र्व की रक्षा िर िाित र्ें की जानी चाहिए।424

र्ाता-वपता के दोषों के शिए बच्चों को दल्ण्डत करना उधचत निहं ंिै। सब बच्चेर्वैध िैं और कानून की दृल्ष्ट र्ें सर्ान िैं।

423 देखखए के० र्वी० रार्स्र्वार्ी अयंगर, 'राजधर्'म (1941), पृष्ठ 51

424 नाज़ी जर्नमी र्ें सैतनकों की ओर से ऐसे र्वर्वज्ञापनों को प्रोत्सािन हदया जाता िै, ल्जनर्ें र्वे जर्नम ल्स्त्रयों और िड़ककयों से अनुरोध करते िैं कक र्वे उनके र्ोचे के शिए प्रस्थान से पििे उन सैतनकों के द्र्वारा र्ां ंबन जाएं, यद्यवप इस प्रकार के र्वर्वज्ञापनों से अतनयशर्त यौन सम्बन्ध बढते िैं, परन्तु राज्य की हदिचस्पी इस बात र्ें िै कक उनकी जनसंख्या बढे। 'न्यू स्टेट्ससैन, 6 जुिाई, 1940, पृष्ठ 8

पुराने ेसर्य र्ें स्रृततकार और उनके टहकाकार प्राचीन रू्ि ग्रन्थों र्ें से यथोधचत चुनार्व और व्याख्या की प्रकक्रया द्र्वारा कानून को बदिते िुए सर्य की आर्वश्यकताओं के अनुसार ढािते रिते थे। अब उनका स्थान न्यायियों और वर्वधान बनानेर्वािी तनकायों ने िे शिया िै। न्यायियों को व्याख्या करने ेकी र्वैसी स्र्वतन्त्रता निहं िै, जैसी प्राचीन टहकाकारों को थी। अतः, यहद कानून के वर्वकास को रोकना अभीष्ट निहं िै, तो वर्वधानांगों (िेल्जसिेचर) को इसर्ें िस्तक्षेप करना िह िोगा।425

---

425 1942 का वर्वधेयक संख्या 26 र्वसीयतनार्ारहित उत्तराधधकार और स्त्री-धन के सम्बन्ध र्ें िै और 1942 का वर्वधेयक संख्या 27 वर्विार्ि के सम्बन्ध र्ें िै। इनर्ें सेपििे वर्वधेयक की धाराओं के अनुसार वर्वधर्वा, पुत्न और पुत्नी एकसाथ उत्तराधधकारह र्ाने गए िैं, वर्वधर्वा और पुत्र को बराबर भाग शर्िेगा, परन्तु पुत्नी को, चािे र्वि वर्वर्वाहित िो या अवर्वर्वाहित, चािे उसके िड़का िो या न िो, इसका आधा भाग शर्िेगा। जिांतक पूर्व र्रृत पुत्र का प्रश्न िै, यि व्यर्वस्था रखी गई िै कक उसके पुत्िको, उसके अभार्व र्ें पुत्र के पुत्र को उतना भाग शर्िेगा, ल्जतना कक पूर्वर्रृत पुत्न को, यहद र्वि जीवर्वत िोता तो, शर्िता। परन्तुइसर्ें एक बड़ी गम्भीर चूक यि रि गई िै कक पुत्रर्वधू का कोई भाग निहं रखा गया, ल्जसे िायद इस आधार पर उधचत ठिराया जाए कक उसे अपने वपता की सम्पवत्त र्ें हिस्सा दे हदया गया िै, पूर्वर्रृत पुत्िकी पुत्री का भी कोई ध्यान निहं रखा गया िै।

ल्स्त्रयों को 'उत्तराधधकार या बंटंर्वारे र्ें शर्िह या वर्वभाजन या तनर्वाि-व्यय के शिए शर्िह या वर्विार्ि के पििे या बाद ककसी सम्बन्धी या अपररधचत व्यल्क्त सेउपिार र्ें शर्िह या अपने िािैं या श्रर् द्र्वारा उपाल्जतम था खरहदकर प्राप्त की िुई या ककसी परम्परागत अधधकार से शर्िह या अन्य ककसी भी ढंग से शर्िह िुई सम्पवत्तं ंपर स्र्वाशत्र्व का पूरा अधधकार, ल्जसर्ें तनस्तारण (डडस्पोज़ि) का अधधकार भी सल्म्र्शित िै, हदया गया िै।

स्त्री-धन की पररभाषा ऐसी की गई िै कक उसर्ें स्त्री की सब प्रकार की सम्पवत्त आ जाए, और यि व्यर्वस्था की गई िै कक स्त्री-धन पर उत्तराधधकार र्ें सबसे पििा िक पुत्री और उसके बच्चों का िोगा। उनके अभार्व र्ें पुत्र और उसके बच्चों को उत्तराधधकार का िक िोगा और उनके अभार्व र्ें पतत का। स्त्री उत्तराधधकाररयों को प्राथशर्कता उस सर्य प्रचशित थी, जब पुरुषों की सम्पवत्त का उत्तराधधकार, केर्वि पुरुषों को िह प्राप्त िोता था। अब क्योंकक पुरुषों की सम्पवत्त र्ें भी ल्स्त्रयों को उत्तराधधकार हदिानेका यत्न ककया जा रिा िै, इसशिए स्त्री-धन के उत्तराधधकार के तनयर् भी पुरुषों की सम्पवत्त के अधधकार के तनयर्ों से शभन्न न िोने चाहिए।

वर्वधेयक संख्या 27 र्ें वर्विार्ि के दो भेद ककए गए िैं: संस्कार द्र्वारा ककया गया वर्विार्ि और शसवर्वि वर्विार्ि। इनर्ें से पििे प्रकार के वर्विार्ि र्ें दोनों पक्ष हिन्दू िोने चाहिए और वर्विार्ि के सर्य ककसीका भी जीवर्वत पतत या पत्नी निहं िोनी चाहिए। र्वे एक िह जातत के िोनेचाहिए; पर एक िह गोत्र या प्रर्वर के निहं िोने चाहिए। र्वे एक-दूसरे के सवपण्ड भी न िों। यहद र्वधू की आयु पूरे सोििि र्वष मकी न िुई िो, तो उसके अशभभार्वक, वपता, र्ाता, दादा, भाई या वपतृपृक्ष के ककसी अन्य सम्बन्धी की या र्ार्ा की वर्विार्ि के शिए स्र्वीकृतत आर्वश्यक िै। र्वर तनवषद्ध कोहटयों (डडग्री) र्ें से न िोना चाहिए। संस्कारात्र्क वर्विार्ि की र्वैधता के शिए दो वर्वधधयांअतनर्वाय मिैं, यज्ञाधग्न के सम्र्ुख र्ंत्रपाठ और सप्तपदह- पतत-पत्नी का यज्ञाल्ग्न के सम्र्ुख साथ-साथ सात कदर् चिना। ज्यों िह सातर्वां कदर् रखा जा चुकता िै, वर्विार्ि पूण मिो जाता िै। यौन संभोग िोना इसके शिए आर्वश्यक निहं िै।

शसवर्वि वर्विार्ि र्ें भिे िह एक पक्ष हिन्दू िो, दूसरा पक्ष हिन्दू, ू बौद्ध, शसख या जैन िो सकता िै। दोनों र्ें से ककसी भी वर्विार्ि के सर्य जीवर्वत पतत या पत्नी न िोनी चाहिए। पुरुष की आयु के 18 र्वष मपूरे िो चुके िों और स्त्री के 14 र्वष।म यहद

देर्वदाशसयों या ल्न्दर-कन्याओंका र्ू चािो कुछ भी क्यों न रिा िो, ककन्तु प्रथा के कारण जो र्वेश्यार्वृवृत्त की प्रणािह िुरू िो गई िै, र्वि अत्यन्त दूवूषत िै और उसे सर्ाप्त ककया जाना चाहिए। सार्ाल्जक पवर्वत्रता के सभी सर्थकमों ने इस प्रथा का वर्वरोध ककया िै और द्रास राज्य र्ें तो यि कानून द्र्वारा तनवषद्ध भी कर दह गई िै। शर्स्र, यूनान और रोर् की प्राचीन सभ्यताओं र्ें देर्वताओं के सम्र्ान र्ें कुर्ाररयों को सर्वपतम करनेकी प्रथा प्रचशित थी। ये िड़ककयां बिुत असंयत जीर्वन बबताती िैं; और यि संस्था एकाएक आकल्स्क रूप से निहंउठ खड़ी िुई, अवपतु यि िर्ारे सार्ाल्जक आचार-तनयर्ों और वर्वर्वाि के कानूनों का आर्वश्यक अंग िै। भारत र्ें प्रत्येक ल्न्दर र्ें र्ध्यर्वती पवर्वनतर् स्थान (गभगृमि) के अततररक्त एक नाट्य ल्न्दर, नृत्र्यिाा िोती िै। शिर्व पुराण र्ें शिर्व ल्न्दर के तनर्ाणम के सम्बन्ध र्ें तनयर् बतातेिुए शिखा िै कक उसर्ें नृत्य और गीत की किाओं र्ें प्रर्वीण िज़ारों उत्तर् कन्याएं िोनी चाहिए और उनके साथ बिुत-से तार र्वाद्यों (र्वीणा, शसतार आहद) को बजाने र्ें र्ििु पुरुष संगीतज्ञ रिने ेचाहिए।'

कुछ िोग युल्क्त देते िैं कक कुछ र्ार्िों र्ें तो वर्वर्वाि भी र्वेश्यार्वृवृत्त का िह एक रूप िोता िै: पैसा िेकर यौन सार्ग्री प्रदान करने ेका, िायद, एक अपेक्षाकृत अधधक िोकाचारसम्र्त रूप; ऐसा रूप ल्जसे कानून, प्रथा और धर् मद्र्वारा पवर्वत्न बना हदया गया िै। अन्तर केर्वि यि िै कक र्वेश्या ज़रा तनम्न कोहट की िै, जो अपनी सेर्वाओं के शिए र्ज़दूरूह की बाज़ार दर - अथातम वर्वर्वाि- से कर् िेने को तैयार िो जाती िै। आधथकम आश्रय के िाभ के शिए स्त्री अपना र्वि काय मछोड़ देती िै और अपने उस तनजी व्यल्क्तत्र्व को त्याग देती िै, ल्जसर्ें र्वि अवर्वर्वाहित व्यल्क्त के रूप र्ें आनन्द अनुभर्व करती थी। एक बार अपनेिरहर और अपनेगुणों को अधधकतर् प्राप्त िो सकने र्वािह कीर्त के बदिे बेचने के बाद र्वे बबना कुछ शिकायत ककए उस सौदे पर हटकी रिती िैं, भिे हि र्वे र्न र्ें गुपचुप ककतनी िह व्यथा क्यों न अनुभर्व करती िों। बिुत-से िोग अपनी पुबत्रयों को जो शिक्षा देते िैं, र्वि इसशिए कक ल्जससे र्वे अपनेयौर्वन के रितेककसी पुरुष को अपनी ओर आकवषतम कर सकें और अपनेसाधनों का उपयोग अपने- आपको पररर्वार का एक र्ूलयर्वान सदस्य बनाने के शिए कर सकें। वर्वर्वाि का उद्देश्य ककसी पुरुष को फंसाना िै कक र्वि ककसी तरि िड़की के भरण-पोषण का ठेका िे िे।

यि वर्वर्वाि के प्रतत अन्यायपूण मदृल्ष्टकोण िै; क्योंकक वर्वर्वाि की संस्था र्ें तनष्ठा और पाररर्वाररक जीर्वन के वर्वकशसत िोनेकी सम्भार्वनाएं गिराई तक सर्ाई िुई िैं। यि युल्क्त देना कक र्वेश्यार्वृवृत्त की प्रथा भद्र र्हििाओं की रक्षा करती िै, सार्वजमतनक स्र्वास्थ्य की रक्षा का उपाय िै और बदनाशर्यों को रोकती िै, अन्याय पर पदाम ~~कोईभी पक्ष21 वर्षमसेकर् आयु का िो तोउसे वर्वर्वािके शिए अपने अशभभार्वककीस्र्वीकृततप्राप्तकरनीचाहिए।दोनोंपक्ष~~

,

परस्पर तनवषद्ध कोहटयों के न िों। इस प्रकार के वर्वर्वािों पर भारतीय तिाक अधधतनयर् (1869) िागू िोगा।

दोनों प्रकार के वर्वर्वािों र्ें एकवर्वर्वाि का शसद्धान्त िागू ककया गया िै। क्योंकक संस्ंकारात्क वर्वर्वाि र्ें तिाक की अनुर्तत निहं िै, इसशिए संभार्वना िै कक शसवर्वि वर्वर्वािों को अधधक अपनाया जाएगा।

1. उत्तर् स्त्रीसिस्तैश्र्च नृत्र्यगीतवर्विारदैः
र्वेणुर्वीणावर्वदग्धैश्च पुरुषैबिुमशभयुतमर् ्।
-'र्वायर्वीय संहिता, उत्तर खण्ड, 20-114

डिाना ि ै। पुरुष की 'भ्रष्टता के शिए स्त्री को नीचेधगराना गित कार् ि ै। जब ल्स्त्रयों का इस प्रकार दुरुपयोग ककया जाता ि ै, तब आत्र्ा की उनरें र्ुल्श्कि से ि ह कोई चर्क ि ेषे रि पाती ि ै। व्यल्क्तगत दुबिुमताएं एक बात ि ै, और पितुा को अधधकृत रूप से र्ान्यता प्रदान कर देना बबिकुि दूसूरह बात। ल्स्त्रयों के साथ ऐसा बतार्वम निहं ं ककया जाना चाहिए कक र्ानो र्वे ेकोई सार्ग्री ि ैं। यहद ि र् ल्स्त्रयों को व्यल्क्तगत रूप र्ें देखें, तो र्वेश्यार्वृवृत्त उनके व्यल्क्तत्र्व के प्रतत अपराध ि ै।

सन्ततत-तनरोध

र्ालथस ने 'जनसंख्या पर एक तनबन्ध' शिखा था। उसरें उसने शिखा था कक यहद ि र्नें र्नुष्य की रेखागखणतीय अनुपात र्ें बढते जाने की स्र्वाभावर्वक प्रर्वृवृत्त को रोकने के शिए कुछ न ककया तो बिुत ि ीघ्र र्ानर्व जातत पर भयानक वर्वपवत्त आ जाएगी, क्योंकक भूशर् की उपज, जोकक र्नुष्य के जीर्वन का आधार ि ै, अधधक से अधधक अंकगखणतीय अनुपात र्ें बढती ि ै, और यि अंकगखणतीय र्वृद्धधध भी बिुत सीशर्त सर्य तक ि ह रिती ि ै। उसनेर्वे उपाय सुझाए थे, े ल्जनके द्र्वारा इस र्ावर्वपवत्त को रोका जा सकता ि ै: देर से वर्वर्वाि (वर्वर्वाि से पििे पूण म आत्र्संयर् के साथ); और उसके बाद भी केर्वि तभी सम्भोग, जब सन्तान उत्पादन करना अभीष्ट ि ो। परन्तु र्ालथस ने जो बिुत-सी बात र्ान ि ह थीं, उनरें से कई गित ि ैं। यि बात प्रार्ाखणत निहं ं ि ो पाई कक गरहबी का कारण अतत-जनसंख्या ि ै। साथ ि ह यि बात भी गित ि ै कक प्रकृतत के साधन तेजी से बढती ि ुई जनसंख्या का भरण-पोषण करने ेके शिए अपयाप्मत ि ै।

र्ात्र्ा गांधी, यद्यवप र्वि ल्स्त्रयों को अत्यधधक सन्तानोत्पादन से छुटकारा हदिानेके शिए धचल्न्तत ि ैं, कफर भी, यि अनुभर्व करते ि ैं कक गभ मतनरोधकों का उपयोग सर्ाज के स्नायर्वीय (स्नायु-सम्बन्धी) और नैततक स्र्वास्थ्य के शिए खतरनाक ि ै। र्वे निहं चािते कक ि र् सन्तानोत्पादन की पुरानी अपव्ययात्र्क प्रणािह को अपनाए रिें, ल्जसरें ि र् बारि बच्चे उत्पन्न करते ि ैं और उनरें से केर्वि छः ि ह जीर्वर्वत रि पाते ि ैं। उनकी दृल्ष्ट र्ें बार-बार के शिशु–जन्र् को रोकनेका उपाय यौन संयर् ि ै। गभ मतनरोधकों के प्रयोग का अथ मिै कक ि र् यौन आनन्द को अपने-आपरें एक ि क्ष्य सर्झते ि ैं और उसके साथ जुड़ी ि ुई ल्ज़म्र्ेदाररयों से बच जाना चािते ि ैं। ि र् सुखोपभोग को अपने-आपरें कोई ि क्ष्य निहंर्ान सकते। गभ मतनरोधकों के प्रयोग द्र्वारा ि र् यौन संभोग के कृत्य को दूवूषत कर रि ि ोतेिैं। जातत को तनरन्तर बनाए रखनेका ि क्ष्य वर्वफि ि ो जाता ि ै और आनन्द अपने-आपरें एक उद्देश्य बन जाता ि ै। अिेग्जेंडड्रया के क्िहर्ेंट ने किा था, "संतान उत्पन्न करने ेके शसर्वाय संभोग करना प्रकृतत को चोट पिुंचाना ि ै।"

अन्य र्ार्िों की भांतत यिांभी आदि मल्स्थतत उससे कुछ शभन्न ि ै, ल्जसकी कक ि ोगों को छूट दह जानी चाहिए। वर्वर्वाि की अवर्वच्छेद्यता आदि मिै; परन्तु कुछ खास पररल्स्थततयों र्ें तिाक की छूट देनी ि ह ि ोगी। इसी

प्रकार संयर् द्र्वारा सन्ततत-तनरोध आदि मिै426, कफर भी गभ-मतनरोधकों के प्रयोग का एकदर् तनषेध निहं ◌ंककया जा सकता। यि सोचना ठीक निहं ◌ंि◌ै कक पुरुष और स्त्री को एक-दूसूरे के साथ केर्वि आनन्द के शिए ि◌ारहररक आनन्द निर्हेंनाि चाहिए और केर्वि सन्तान उत्पन्न करने ◌ेके शिए ि◌ह ऐसा आनन्द ि◌ेना चाहिए। यि सोचना गित ि◌ै कक यौन र्वासना अपने-आपर्ें कोई बुरह र्वस्तु ि◌ै और यि कक शसद्धान्ततः इसे र्वि र्ें रखना या इसका दर्न करना ि◌ह धर् मिै। र्वर्वार्वि केर्वि ि◌ारहररक प्रजनन के शिए निहंककया जाता, अवपतु ◌ुआल्त्क र्वकास के शिए भी ककया जाता ि◌ै। पुरुष और स्त्री एक-दूसूरे को भी उतना ि◌ह चािते ि◌ैं, ल्जतना कक संतान को। नर-नाररयों के सर्ुदाय के जीर्वन से उनके एक आनन्द को ि◌टा देना र्वार्वि र्ात्रा र्ें ि◌ारहररक, र्ानशसक और नैततक कष्ट उत्पन्न कर देना ि◌ोगा। ि◌ाड मडौसन शिखता ि◌ै, "पररर्वार के आकार को सीशर्त करना, र्ान ि◌ो कक चार बच्चों तक, र्वर्वाहित युगि पर संयर् की इतनी बड़ी र्ात्ना थोप देना ि◌ोगा, जो ि◌म्बी अर्वधधयों के शिए ि◌ह्र्चय म (अवर्वर्वाहित जीर्वन) के बराबर ि◌ोगा; और जब इस बात को याद रखा जाए कक आधथकम कारणों से इस अनुपभोग को र्वर्वाहित जीर्वन के प्रारल्म्भक हदनों र्ें, जबकक इच्छाएं तीव्रतर् ि◌ोती ि◌ैं, अपेक्षाकृत अधधक कठोर रखना ि◌ोगा, तब र्ेरा यि र्त ि◌ै कक ि◌ोगों से एक ऐसी र्ांग की जा रिह ि◌ै, ल्जसका पूरा ककया जा सकना असम्भर्व ि◌ै: कक इसे पूरा करनेके प्रयत्नों से एक ऐसा तनार्व उत्पन्न ि◌ोगा जो स्र्वास्थ्य और आनन्द के शिए क्षततकर ि◌ोगा, और ऐसे प्रयत्नों से उनैततक शसद्धांतों और आचरणों के शिए गम्भीर खतरा उत्पन्न ि◌ो जाएगा। यि बात बबिकुि ि◌ह तनरथकम ि◌ै। यि ऐसा ि◌ह ि◌ै कक आप एक तृषात मव्यल्क्त के पास पानी रख दें और उसे कि दें कक र्वि उस पानी को वपए निहं। निहं; अनुपभोग (संयर्) द्र्वारा संततत-तनरोध या तो प्रभार्वी निहं ◌ंि◌ोगा, और यहद प्रभार्वी ि◌ोगा, तो ि◌ातनकारक ि◌ोगा।"

कभी-कभी यि युल्क्त दह जाती ि◌ै कक सन्ततत-तनरोध प्रकृतत की प्रकक्रया र्ें अप्राकृततक ि◌स्तक्षेप ि◌ै। परन्तु ि◌र्ने अनुसन्धानों और आवर्वष्कारों द्र्वारा भी तो प्रकृतत की प्रकक्रया र्ें ि◌स्तक्षेप ककया ि◌ै। ि◌र्ारह आदतें असभ्य जंगिह ि◌ोगों के व्यर्विारों से शभन्न ि◌ैं, और यि इसीशिए कक ि◌र्नेप्रकृतत के कार्ों र्ें ि◌स्तक्षेप ककया ि◌ै। यहद यि किा जाए कक प्राचीन बातें आधुतनक बातामकी अपेक्षा अधधक प्राकृततक थीं, तो बिुर्वर्वार्वि और स्र्वैराचार को अधधक प्राकृततक र्ानना ि◌ोगा। कुछ दिर्ें र्ें सन्ततत-तनरोध आधथकम असुरक्षा से भरे र्वतर्मान सार्ाल्जक र्वातार्वरण और र्ाता-वपता की अपनेबच्चों का जीर्वन अच्छे ढंग से प्रारम्भ करने ◌ेकी इच्छा के कारण, र्वैसा ि◌ह स्र्वाभावर्वक ि◌ोता जा रिा ि◌ै, जैसाकक र्वस्त्र पिनना।

सन्ततत-तनरोध के व्यर्विार पर एतराज़ इस कारण ककए जाते ि◌ैं कक इसका दुरुपयोग ककया जाता ि◌ै। जो ल्स्त्रयां ◌ंगभार्वमस्था, सन्तान जन्र् और बच्चों के पािन-पोषण के कष्टों से बचना चािती ि◌ैं, और जो पुरुष अपने

426 यि जानना र्नोरंजक ि◌ोगाकक प्राचीन हिन्दूिस्त्रकारोंनेकुछवर्वशिष्ट अर्वसरों परयौन सम्बन्धसे दूरू रिने का आदेि हदया ि◌ै। कर्ािकर नेव्यास का एक श्िोक उद्धृत ककया ि◌ै, ल्जसका अथ मयि ि◌ै, "पुरुष को, अपनी पत्नी से, जब र्वि र्वृद्धा ि◌ो या र्वन्ध्या ि◌ो या दुराचाररणी ि◌ो या जब उसके बच्चे र् जाते ि◌ों या जब अभी र्वि रजस्र्वा ि◌ह न ि◌ुई ि◌ो या जब र्वि पुबत्रयों ि◌ह पुल्त्नयों को जन्र् देती ि◌ो या जब उसके बिुत-से पुत्र ि◌ो चुके ि◌ों, संभोग निहं करना चाहिए।"
(र्वृद्धार्वन्ध्यार् ◌्असर्वृत्तां ◌ंर्ृतापत्यार् ◌्अपुल्ष्पणीर् ◌्
कन्यासू बिुपुत्रांच र्वजयेम र्ुच्यते ◌ेभयात्।◌)

कायों के उत्तरदातयत्र्व से बचना चािते िैं, र्वे इसका प्रयोग करते िैं। ककसी र्वस्तु के दुरुपयोग के कारण उसके उधचत उपयोग को भी त्याज्य निहं ं र्ाना जा सकता। यहद सन्ततत-तनरोध की पद्धततयों का अर्विम्बन र्वे िोग करते िैं, जो बच्चों का पािन- पोषण करने ें र्ें असर्थ िैं, तो िर् उन्िें दोषी निहं ंठिरा सकते। गरहब िोगों को बच्चेिोना निहं अखरता, पर र्वे उन्िें किष्ट और दररद्रता की दिा र्ें निहं पािना चािते। उधचत इिाज तो यि िै कक उनके शिए र्वे साधन जुटाए जाएं, ल्जनसे र्वे बच्चों का पािन-पोषण उधचत पररल्स्थततयों र्ें कर सकें। िर्ें पररल्स्थततयों को सुधारने ेका यत्न करना चाहिए, यि निहंर्ान िेना चाहिए कक र्वे पररल्स्थततयां स्थायी िैं। िर् पिु निहं िैं। यौन सम्बन्धों का तनयर्न, उत्तरदायी व्यल्क्तयों के रूप र्ें, दोनों पक्षों की सिर्तत से िोना चाहिए। यहद बच्चों की आर्वश्यकताओं को दृल्ष्ट र्ें रखते िुए आत्र्संयर् की ज़रूरत िो, तो र्वि ककया जाना चाहिए। यहद र्ाता-वपता यि अनुभर्व करें कक अपने पारस्पररक आनन्द को बनाए रखने के शिए र्वे भवर्वष्य का जोखखर् उठा सकतेिैं, तो उन्िें जोखखर् उठानेसे रोकनेकी कोई आर्वश्यकता निहं िै। िर् इस बात से इन्कार निहंकरते कक यौन र्वासना का संयर् संततत-तनरोध से अधधक अच्छा िै, पर सब र्नुष्य, भिे िह र्वे संत बनना चािते िों, सन्त निहं ंिैं। र्वतर्मान पररल्स्थततयों र्ें, सार्ाल्जक अथ-मव्यर्वस्था के हित र्ें, सन्ततन-तनरोध की सुवर्वधाएं उपिदध रिनी चाहिए, र्वि भी वर्विेष रूप से गरहब िोगों को।

वर्वफिताओं ंके प्रतत रुख

ककसी भी सभ्यता की परख इस बात से िोती िै कक र्ानर्व-प्राखणयों की असंगततयों और दुबिुमताओंके प्रतत उनका रुख क्या िै। वर्विवाि के सम्बन्ध र्ें िर् चािे कुछ भी तनयर् क्यों न बना िें, वर्विवाितेर (वर्विवाि के बािर) सम्बन्ध भी िोते िह रिेंगे। तनयर्तः, हिन्दू ूऋवषयों र्ें र्ानर्वीय दुबिुमताओंऔर पराजेयता के प्रतत असीर् सहिष्णुता थी। प्रायः ल्जसे अपराध किा जाता िै, र्वि एक पततत और पावर्वक र्न की अशभव्यल्क्त निहं ंिोता, अवपतु अनुभूततिीि और प्रेर्पूण मप्रकृतत का प्रकटन िोता िै। कानून के प्रतत अर्वज्ञा र्वास्तवर्वक दुष्टता निहं िै। आजकि की नैततकता का काफी बड़ा अंि अस्र्वस्थ और रूहढग्रस्त िै। िर्ारे आधार के तनयर्, जीर्वन िल्क्त के क्षीण िो जाने के कारण, प्रर्वािरुद्ध िोकर यांबत्रक आदतों र्ें बदि गए िैं। रुहढ सर्ाज की सार्ान्य रुधच की र्वस्तु िै। कानून या कतव्मय की नैततकता, यद्यवप र्वि सार्ाल्जक व्यर्वस्था और र्यादमा के शिए अत्यार्वश्यक िै, उच्चतर् कोहट की नैततकता निहं ंिै। इसके तनषेध नैततक अन्तदृल्मष्ट को सजग करनेके तनशर्त्त िोतेिैं, ककसीकी आत्र्ा को खल्ण्डत कर देनेके तनशर्त्त निहं। परन्तु जीर्वन नैततक शिक्षाओं का यांतनक पािन करना-र्ात्र निहं ंिै। जब कोई पुरुष और कोई स्त्री आत्र्ा और र्न की गिरह एकता र्ें बंध जाते िैं, जब भी र्वि पुरुष या र्वि स्त्री एक-दूसूरे की आंखों र्ें देखतेिुए उस एक व्यल्क्त को प्रततबबल्म्बत देखते िैं, ल्जसके सम्र्ुख र्वि पुरुष या स्त्री अर्वाक् आराधना, आश्चय मऔर प्रेर्र् र्ें िहन िो जाती िै, जब भी कभी उनके िरहरों का र्ेि िोता िै, उससे पििे उनकी आत्र्ाओं का र्ेि िो चुका िोता िै, तब र्वे एक-दूसूरे के साथ जो कुछ भी करते िैं, र्वि सब पवर्वत्र िोता िै। ऐसे प्रेर्र् की पवर्वत्रता के वर्वरुद्ध जो कोई भी कुछ किता िै उसका र्न ठीक दिा र्ें निहं िै। आगस्टाइन की यि उल्क्त, "परर्ात्र्ा से प्रेर्र् करो और कफर जो जी चािे करो", इसकी सूचक िै कक प्रेर्र् के सच्चे जीर्वन र्ें कुछ र्वस्तु ऐसी िै,

जो तनयर्ों और रूहढयों से ऊपर ि ै।'[427] यहद परम्परागत तनषेध और संस्थागत रुख कभी प्रेर् और आनन्द के जीर्वन र्ें बाधा डािती ि ैं, तो उनको उलिंघन ककया जा सकता ि ै। वर्वर्वाि के तनयर्ों का उद्देश्य व्यल्क्त की

[427] ऐबेिाड मऔर ि ेिोयेस की त्रिर्र् कथा पर ध्यान दहल्जए। र्वे एक-दूसरे से गिरा प्रेर् करते थे, पर वर्वपवत्तयों नेउन्र्ें पृथक् कर हदया था। "उनके प्रेर्र्ार्वेि को ि ददों र्ें ि ह सर्ाप्त ि ो जाना पड़ा। ि ेिोयेस ने, जो एक र्ठ र्ें बन्द थी, अपने गंर्वाए ि ुए प्रेर्ी को शिखने की प्रेरणा दह, 'ि र्ें ि ापरवर्वाि से अपनी उस एकर्ान प्रसन्नता को निहं गंर्वा देना चाहिए, ल्जसे ि र्ारे ि त्रुओं का सारा द्र्वेष ि र्से छीन सकता। र् ैं पढ़ूंगी कक तुर् र्ेरे पतत ि ो और तुर् र्ुझे अपनी पत्नी के रूप र्ें ि स्ताक्षर करते देखोगे।' र्वि उसे अपनेप्रेर्र्ार्वेि की सुकुर्ारता की याद हदिाती ि ै, ल्जसके कारण र्वि कफर भी उससे वर्वर्वाि करने से इनकार करती रिह थी, 'र् ैं तुर्से वर्वर्वाि करने र्ें इतनी अधधक अतनच्छा प्रकट की थी, उससे तुर्र्ें इस बात का वर्वश्र्वास हदिा पाना असम्भर्व ि ै, यद्यवप र् ैं जानती थी कक 'पत्नी' कि िाना संसार र्ें अधधक सम्र्ानजनक और धर् मर्ें अधधक पवर्वत्न ि ै; कफर भी 'तुम्ि रिह वप्रयतर्ा' कि िाने का आकषणम र्ेरे शिए किहंअधधक था, क्योंकक र्वि अधधक स्र्वतन्त्रतापूण मथा। वर्वर्वाि के बन्धनों के साथ, चािे र्वे ककतने ि ह सम्र्ानजनक क्यों न ि ों, एक दातयत्र्व-सा रिता ि ै और र् ैं निहं चािती थी कक र्ुझे आर्वश्यक रूप से सदा एक ऐसे पुरुष को प्रेर् करना पड़े, जो ि ायद सदा र्ुझेप्यार निहं करेगा। र्ुझेपत्नी कि िाने से धूणा थी, ल्जससे र् ैं वप्रयतर्ा कि िा कर सुख सेजी सकूं।' यद्यवप उसने ि ह्र्चय मव्रत धारण ककया ि ुआ था, पर उसे अपने अतीत पर पश्चात्ताप निहं ि ो सकता था। उसके आंसू अपने पापों के शिए निहं, अवपतु अपने प्रेर्ी पुरुष के शिए थे। याद रखो, र् ैं अभी तुर्र्ें प्यार करती ि ूं और कफर भी प्रयास करती ि ूं कक तुर्र्ें प्यार करना छोड़ सकूं। र् ैं बिुत बार प्रततर्वाद र्ें कि ा ि ै कक र्ुझे ऐबेिाई के साथ उसकी वप्रयतर्ा' के रूप र्ें रिना ककसी दूसरे पुरुष के साथ सारे सेसर की सम्राज्ञी बनकर रिने से भी किहं अधधक पसन्द ि ै। तुम्ि रिह आज्ञा का पािन करने र्ें र्ुझेउससे भी किहं अधधक आनन्द ि ोता था, ल्जतना कक सारह पृथ्र्वी के राजा की धर्पमत्नी बनने से शर्ि सकता। धन और आडम्बर प्रेर् के रक्षा कर्वच ि ैं।" - 'ए रेज़रह आफ हद र्वल्डड्स पेट ि ेटस,म एर्० शिंकन ि ्स्टिर द्र्वारा सम्पाहदत (1941), पृष्ठ 37

"ऐबेिाड मनिपथपूर्वकम पररत्यक्त प्रेर् और आकांक्षक्षत प्रेर् के अन्तद्र्वमन्द्र्व र्ें, जबकक धर् मएक ओर चिनेका आदिे देता था और दूसूरह ओर प्रेर् अपना प्रभुत्र्व जर्ाए ि ुए। था, उत्तर हदया। वर्वफि और वर्वक्षत दितमनक ने अनुभर्व ककया कक संसांर-त्याग के पररणार् सदा पवर्वत्रता और कतव्मय ि ह निहं ि ोते, 'र्रुस्थि र्ें भी, जबकक स्र्वग मके ओस-बबन्दु ि र्पर निहं धगरते, ि र् उसेप्रेर् करते ि ैं, ल्जसेर्ें प्रेर् करना छोड़ देना चाहिए। उसने सटें पािा और अरस्तू के ग्रन्थों र्ें ध्यान गिाकर अपनी वप्रयतर्ा की स्र्तृत सेअपनी रक्षा करनेका तनष्फि प्रयत्न ककया था, और उससे (अपनी वप्रयतर्ा से) अनुरोध ककया था कक र्वि अपने प्रेर् की ल्स्थरता द्र्वारा उसके कष्टों र्ें और र्वृद्धध न करे। यि श्रेष्ठ प्रेर्-कथा एक ऐसी दुवुर्वधा को सार रूप र्ें प्रस्तुत करती ि ै, जो उतनी ि ह प्राचीन ि ै ल्जतनी र्ानर्व-जातत। सारा आर्वेि सर्ाप्त ि ो जाने पर यि धर्-मवर्वज्ञान और शसद्धान्तों के पन्नों र्ें जाकर सर्ाप्त ि ुई। एक पिायनर्वाद, ल्जसे सब पररत्यक्त प्रेशर्यों को सान्त्र्वना दे सकना चाहिए, पर जो दे निहं पाता।" 'टाइम्स शिटरेरह सप्िर्ेंट' 21 जून, 1941, पृष्ठ 298

'र्वुदररंगं ि ाइट्स' र्ें कैथी किती ि ै, "इस संसार र्ें र्ेरे बड़े कष्ट ि हचक्हिफ के ि ह कष्ट रिे ि ैं; और र् ैं उनर्ें प्रत्येक को ि ुरू से ि ह देखती और अनुभर्व करती रिह ि ूं, जीर्वन र्ें र्ेरा सबसे बड़ा वर्वचार र्वि स्र्वयं (ि ह थक्हिफ) ि ह ि ै। यहद और सब कुछ नष्ट ि ो जाए और र्वि बचा रिे, तो र्ेरा अल्स्तत्र्व भी बना रिेगा; परन्तु यहद और सब कुछ बना रिे, और र्वि सर्ाप्त ि ो जाए, तो यि संसांर एकदर् अपररधचत ि ो उठेगा; र् ैं इसका कोई अंग प्रतीत ि ह न ि ोऊंगी। शिंटंन के प्रतत र्ेरा प्रेर् जंगि की ररयािह की भांतत ि ै, र् ैं भिह भांतत जानती ि ूं कक जैसे शिशिर र्वृक्षों को बदि देता ि ै, र्वैसे ि ह सर्य इस प्रेर् को बदि देगा। परन्तु ि हथक्हिफ के प्रतत र्ेरा प्रेर् उन र्वृक्षों के नीचे की ि ाश्र्वत चट्टानों की भांतत ि ै, ल्जनर्ें देखकर कोई वर्विेष दहख सकने योग्य आनन्द निहं ि ोता, पर र्वे आर्वश्यक ि ैं। नेिह, र् ैं ि हथकिहफ ि ह ि ूं। र्वि सदा, सदा र्ेरे र्न र्ें रिता ि ै, एक आनन्द के

प्रकृतत को अनुिासन र्ें रखना और िरहर रचनात्र्क, जातीय, सार्ाल्जक, र्ानर्वीय और आल्त्र्क तत्र्वों र्ें सर्स्र्वरता उत्पन्न करना िै। इसके शिए तनयन्त्रण और अनुिासन की आर्वश्यकता िोती िै। असफिताएं ककसी भी स्तर पर, िरहर रचनात्र्क र्ानर्वीय या आल्त्र्क स्तर पर, उत्पन्न िो सकती िैं। िर् यि र्ान िेते िैं कक एकवर्वर्वािी स्र्वाभावर्वक िै। परन्तु यि बात इतनी सीधी-सादह निहं ंिै। िर्ारे अंदर र्वासनाएं िैं। तनष्ठा बनाए रखना, यद्यवप अत्यन्त आर्वश्यक िै, पर सरि निहं िै। कुछ िोग ऐसे भी िैं, जो तनष्ठा को एक बेूदा और क्रूरू संस्कार, पूणरूमप से जी पाने की असर्थतमा का पररणार्, रुहढयों के प्रतत भार्वनािहन रुधच, घृखृणत कायरता और सूझ-बूझ का अभार्व र्ानतें। बुित बार िर् सझतें कक यहद स्त्री को पतत और सन्तान शर् जाएं, तो जो कुछ र्वि चािती िै, र्वि सब उसे शर् गया। सम्भर्व िै र्वि प्रर्वंचना से र्ुक्त िोनेसे, या एक शर्थ्या र्ि से छुटकारा पाने से डरती िो; सम्र्ातनत िोने ेका भार्व, घरेिू अनुराग और कतव्मय की एक यि कठोर भार्वना, कक सार्ाल्जक जीर्वन रुहढयों के, चािे र्वे ककतनी िह दोषर्ुक्त क्यों न िों, पािन करने ेपर िह तनभरम िै, उसे सीधे रास्तेपर चािते रि सकतें, पर कफर भी सम्भर्व िै कक उसकी सम्पूण मप्रकृतत पूरह तरि पलिवर्वत और पुल्ष्पत न िो पाए। सम्भर्व और उसकी इच्छा जागररत तो िो चुकी िो, पर िान्त न िुई िो। यि तनार्व र्वर्वर्वाि की सर्स्या' ल्जनक िै। प्ेर्र् की व्यथाएं सुन्दर तो र्ानी जाती िैं, परन्तु नैततक निहं। यहद िर् उलिंघनों कें प्रतत सहिष्णु न िों, तो िर् पयाप्मत रूप से र्ानर्वीय निहीं। सुकरात का र्ित्र्व शर्ेिटस की अपेक्षा, जो केर्वि नैततक व्यल्क्त था, किहंअधधक िै। ईसा र्ें फेररसी की अपेक्षा, जो केर्वि रुरहपािन की दृल्ष्ट से सिह था, किहंअधधक अच्छाई थी। यहद र्वर्वर्वाि के बबना प्ेर्र् अर्वैध िै, तो प्ेर्र् के बबना र्वर्वर्वाि अनैततक िै। कठोर और अपूण मसार्ाल्जक तनयर्ों के पररणार्स्र्वरूप अनेक र्ित्र्वाकांक्षाएं कुचिह जाती िैं और अनेक जीर्वन नष्ट िो जाते िैं। िर् िरहर की परर् तनष्ठा को आत्र्ा की वर्वचशित आस्था की अपेक्षा अधधक र्ित्र्व देते िैं। एक बार एक युर्वक रास्ते के ककनारे बैठा था और उसनेएक दोषी स्त्री से किा था, "र् ैंतुर्म्िें दोषी भी निहं ंठिराता। जाओ! अब आगे पाप र्त करना।" वर्वर्ुद्धर्वादह (प्योररटन) बनकर िर् प्रायः अर्ानर्वीय ढंग से काय मकरने िगते िैं। नैततकता दो प्रकार की िोती िै; एक तो परर्, जो औधचत्य की िोती िै; और दूसूरह सापेक्ष, जो सार्ाल्जक रूहढयों की िोती िै, और ल्जसे प्रत्येक सर्ाज अपने-अपनेढंग से अिग िह रच िेता िै। नैततक तनयर्ों का पािन करने के द्र्वारा िर्ें उस आदि मके तनकटतर् पिुंचने का यत्न करना चाहिए, जो नैततक की अपेक्षा पवर्वत्र अधधक िै, जो सिह की अपेक्षा सुन्दर अधधक िै, जो यथेष्ठ की अपेक्षा पूण मअधधक िै और जो कानून की अपेक्षा प्ेर्य अधधक िै।

कभी-कभी तो रार्ायण तक भी गित आदि मप्रस्तुत कर बैठती िै। रार्वण की पराजय के पश्चात् ंरार् सीता को कफर ग्रिण करने से इसशिए इनकार कर देते िैं, क्योंकक र्वि इतने िम्बे सर्य तक रार्वण के घर रिह।'[428] सीता प्रततर्वाद करते िुए किती िै कक कैद र्ें रिते िुए उसका अपने िरहर पर कोई र्वि निहं था। र्न पर अर्वश्य ~~रूपर्ें निहंल्जतनाआनन्द र् ैंसदास्र्वयंअपनेशिए िैं,उससेअधधकनिहंअवपतुर्ेंरेअपनेअल्स्तत्र्वकेरूपर्ें|इसशिए~~

, ं ,

र्िरे वर्वच्छेद की बात कफर र्त किना, यि अव्यर्वाय िै..."

[428] रार्वणाङ्ककपररचष्टां दृष्टा दुषुटेन चक्षुषा,

कथं ंत्र्वां पुनरादद्यां कुिं व्यपहदिन् ्र्ति्।्

- 6-118-20

 उसका अपना विं था, और विं सदा उसके प्रतत तनष्ठावान रिा।429 सूतृतकारों ने इस कठोर वर्वधान को निहं ं अपनाया। यजुर्वेद र्ें, यज्ञ र्ें एक वर्वशिष्ट स्थि पर स्त्री से प्रश्न ककया गया िै, "तेरा प्रेर्ेरी् (यार) कौन?" (कस्ते जारः) और जब विं अपनेप्रेर्ेरी् का नार् बता देती िै, अथात्म ्अपनेदुराचार को स्वीकार कर िेती िै, तो विं पाप से रुक्त िो जाती िै। र्नु ने वर्वशभन्न प्रकार के पुत्रों का पररगणन करते िुए प्रेर्ेरी् से उत्पन्न पुत्र (जारज) का उलिेख ककया िै। यहद ल्स्त्रयों को कोई कैदह बना िे और उनके साथ बिात्कार कर िे, तो उन ल्स्त्रयों के प्रतत सिानुभूतत का बतार्वम िोना चाहिए, और प्रायल्श्चत की कुछ वर्वधधयां पूरह करके उन्र्ें किर ग्रिण कर शिया जाना चाहिए। र्वशिष्ठ का र्त िै कक यहद कोई स्त्री िजुद्र्वारा कैद कर िह जाए, या डाकुओंद्र्वारा भगा िह जाए, या उससे उसकी इच्छा के प्रततकूि बिात्कार ककया जाए, तो उसका पररत्याग करना उधचत निहं।'[430] अवत्त का वर्वचार यिह िै।431 बिात्कार के ऐसे र्ार्िों पर भी वर्वचार ककया गया िै, ल्जनके बाद गभ मरि गया िो; और अतन तथा देर्वि के र्तानुसार, सन्तान-जन्र् के बाद स्त्री को किर पररर्वार र्ें ग्रिण कर शिया जाता िै, यद्यवप शििु ुको त्याग देना िोता िै, जोकक अनुधचत िै। तेरिर्वीं िताददह के बाद आचार के तनयर् और सख्त िो गए और बिात्कार की शिकार िुई ल्स्त्रयों को किर पररर्वार र्ें ग्रिण निहं ंककया जाता था। इस घोर अन्याय के कारण हिन्दू ूजातत को नुकसान उठाना पड़ा िै और इसका बिुत भारह रूलय चुकाना पड़ा िै।

र्वैहदक काि र्ें जो ल्स्त्रयां पथभ्रष्ट िो जाती थीं, र्वे यहद अपनी भूि स्वीकार कर िेती थीं, तो उन्र्ें किर धाशर्कम कायों र्ें भाग िेनेकी अनुर्तत शर्ि जाती थी।432 र्वशिष्ठ तो उन ल्स्त्रयों को भी, ल्जन्िोंनेव्यशभचार ककया िो, किर ग्रिण कर िेने के पक्ष र्ें िैं, यहद उन ल्स्त्रयों को अपने ककए पर पश्चात्ताप िो और र्वे उसके शिए प्रायल्श्चत करें। पराशर का र्त िै कक व्यशभचाररणी ल्स्त्रयों का पररत्याग केर्वि उसी दिा र्ें ककया जाना चाहिए, जब र्वे पक्की पावपष्ठा बन गई िों।433 व्यशभचार के शिए भी स्त्री की अपेक्षा पुरुष अधधक ल्ज़म्र्ेदार िै।434

अतीत के युग र्वास्तवर्वक र्ानर्व-प्राखणयों से भरे थे,े अरूत मधारणाओं से, निहं,ं ऐसे व्यल्क्तयों से, ल्जनके अनुभूतिितिी और सुकुर्ार हृदयों र्ें र्वासनाएं भरह थीं, जो नर्वोहदत प्रेर्, अंधी र्वासना, आर्वेिपूण मसुकुर्ारता, सन्देि, आिंका, अर्वसाद, वर्वषाद और तनरािा र्ें से िोकर गुजरते थे;े ऐसे व्यल्क्त, जो अपने-आपको र्वासना के

---

429 र्दधीने तुयत्तन्रे् हृदयं ंत्र्वतय र्वततेम,
पराधीनेषुगिोषु कंकंकररष्याम्यनीश्र्वरा।
-6-1198-8

430 स्र्वयं ंवर्वप्रततपन्ना र्वा यहद र्वा वर्वप्रर्वाशसता
बिात्कारोपभुक्ता र्वा चोररस्तगतावप र्वा
न त्याज्या दूवूषता नारह नास्यास्त्यागो वर्वधीयते े
पुष्पकािरुपासीत ऋतुकािेन िुद्धयतत।
- धर्सूमनू, 36-2-3, 5-58, 11-8 साथ िह देखखए अथर्वर्वेद 1-3-4-24

431 5-15: साथ िह देखखए, पराशर, 10-26-7

432 'ितपथ िाह्रण' 2-5-2-20

433 10-35

434 तस्र्ात् ्पुरुषेदोषो ह्राधधको नान संियिः। र्िाभारत ,12-58-5

प्रर्वा र्ें छोड़ देते थे और ल्जन्ेंनैततक तनयर्ों का उलिंघन करने र्ें संकोच निहंिोता था। ऋग्र्वेद तक र्ें िर्ें पथभ्रष्ट िो जानेर्वािह ल्स्त्रयों का, असिह पल्त्नयों का, प्ेर्ेशयों के साथ भाग जानेका और अर्वैध संयोगों का उलिेख शर्िता िै। िर्ारे र्िाकाव्य र्वर्वश्र्वाशर्त्न और र्ेनका की-सी किातनयों से भरे पड़े िैं, ल्जनर्ें बड़े– बड़े े र्िान व्यल्क्त भी रूहढगत कतव्मय के संकीण मर्ाग मपर िड़खड़ाते और ठोकरें खाते ेहदखाई पड़ते िैं। िर्ें से अधधकांिकी अपेक्षा किहं अधधक अच्छे आदर्ी भी, ल्जन्िोंने ऐसे-ऐसे कार् ककए, ल्जन्ें करने की िर् कलपना भी निहं ंकर सकते, िर्ारह सार्ान्य दुबुिमताओंके शिकार थे। व्यास का जन्र् एक अवर्वर्वाहित र्ोह्ूण कन्या से िुआ था, ल्जसका िार्वण्य तपस्र्वी परािर के शिए असह्य रिा। भीष्र् एक अवर्वर्वाहित स्त्री का पुत्र था। पुरु शिर्ष्मठा का सबसे छोटा पुत्र था; िशर्ष्मठा रानी की पररचाररका एक राजकुर्ारह थी, और इसीशिए ठीक-ठीक राजा ययातत की पत्नी निहं ंथी; कफर भी, काशिदास के कथनानुसार, कण्र्व ऋवष जब िकुन्तिा को उसके पतत के घर भेजनेिगतें, तो उसे र्वैसा िह बतार्वम करने ेको किते िैं, जैसाकक िशर्ष्मठा ने ययातत के साथ ककया था।'[435] िर्ारे सार्ने र्ाधर्वी का भी उदािरण िै, जो ययातत की पुत्री थी। र्वि एक तपस्र्वी गािर्व के आश्रय र्ें रखी गई थी। गािर्व ने उसे, एक के बाद एक, चार राजाओंके पास इस ित मपर रखा कक उन्ें उससे एक पुत्न का जन्र् िोने ेके बाद उसे छोड़ देना िोगा। इस प्रकार र्वि चार पुत्रों की र्ाता बनी। जब र्वि अपने र्ाता-वपता को र्वापस िौटा दह गई, तो गािर्व ने उसे वर्ववाि करने ेको वर्वर्वि ककया और उसके शिए स्र्वयंर्वर का आयोजन ककया। स्र्वयंर्वर र्ें र्ाधर्वी नेर्वरर्ािा एक पेड़ पर रख दह, जो इस बात की सूचक थी कक उसनेर्वन र्ें रिकर तपस्र्वी जीर्वन बबताने का तनश्चय कर शिया िै। एक वर्वधर्वा स्त्री, उिूपी ने अजुनम से याचना की और उससे अजुनम का पुत्र इरार्वण उत्पन्न िुआ। र्िाकाव्य र्िाभारत स्पष्ट रूप से ल्स्त्रयों के पक्ष र्ें िै। यौन दुराचरण अपनी पररल्स्थततयों से िह अपराध या पाप बनता िै, और आखखरकार िरहर के पाप आत्र्ा के पापों से अधधक बड़े ेनिहं ंिै। िर्ें उन बातों को, जो र्ानर्वीय िैं, धर्-मपरायणता की भार्वना से परखना चाहिए। यौन जीर्वन का सकारात्र्क पक्ष (पॉल्ज़हटर्व साइड) एक तनतांत व्यल्क्तगत र्वस्तु िै, ल्जसका पथप्रदिनम रुधच और स्र्वभार्व द्र्वारा िोता िै; यि बिुत कुछ आकांक्षा और कारहगरह का-सा र्ार्िा िै। व्यल्क्तगत (तनजी) आचरण पर ये सब तनषेध और प्रततबन्ध, केर्वि उनको छोड़कर, जो सर्ाज के हित र्ें, वर्विेष रूप से दुबुिम और अलपर्वयस्कों के हित र्ें िगाए िै, िटा शिए जानेचाहिए। र्िाभारत र्ें सुतनल्श्चत रूप से उस बात की ओर सार्ाल्जक झुकार्व हदखाई पड़ता िै, ल्जसे पुरुषों और ल्स्त्रयों के बीच वर्ववाि-शभन्न या परहक्षणात्र्क सम्बन्ध किा जा सकता िै। इस प्रकार के सम्बन्धों पर र्ुख्य एतराज़ यि िै कक उनसे यौन गैरल्ज़म्र्ेदारह की आदत बढनेया जनद्र्वेषी यौन स्र्वैराचाररता बढनेकी ओर झुकार्व रिता िै। परन्तु िर् स्र्वैराचरण के ढंग की र्वस्तु के र्वर्वषय र्ें र्वर्वचार निहं ंकर रिे, ल्जसे ककसी भी उपाय से ककसी दूसरह चीज़ र्ें बदिा िह निहंजा सकता। स्र्वैराचरण तो एक रोग िै, ल्जसकी धचककत्सा की जानी चाहिए। अनुभूतििीि नर-नाररयों के पतत िोकर स्र्वैराचारह व्यल्क्त बन जाने की कोई र्आिंका निहं ंिै।

> कुछ बिुत िह अपर्वादरूप र्ार्िों र्ें कुछ िोगों के शिए वर्ववाि-शभन्न सम्बन्ध िह एकर्ात्र उपाय िोते िैं, ल्जनके द्र्वारा र्वे अपने यौन जीर्वन को तृलूप्तजनक, बिुर्ूलय और यिांतक कक स्थायी बना सकतेिैं। र्वि

---

435 ययातेररर्विशर्ष्मठाभतुबमिुर्मताभर्व।

सर्य कभी का बीत चुका, जब कक पुरुषों और ल्स्त्रयों को इस उपाय से तनष्ठिाी बनाए रखा जा सकता था कक उनके शिए तनष्ठािहन बन पाना कहठन कर हदया जाए। िर्ारे पास सबसे बड़ा उपिार अपना सच्चा आत्र् (सेलफ) िै। इस ईर्ानदारह के बबना ककसी भी व्यल्क्त का ककसी के शिए कोई र्ूलय निहं, यिां तक कक स्वयं उसके अपने शिए भी निहं।

पतत द्वारा ककया गया व्यशभचार साधारणतया पत्नी द्वारा ककए गए व्यशभचार की अपेक्षा अधधक क्षम्य सर्झा जाता िै। इसका कारण यि िै कक वपछिह इन सब िताल्ददयों र्ें पुरुषों का िह बोिबािा रिा िै। वे अपनी पल्त्नयों को यि किकर ठगते रिे िैं, कक उनकी चूक का कोई खास र्ित्त्व निहं, क्योंकक इससे र्ूि सम्बन्धों र्ें कोई पररवतनम निहं िोता, यि तो क्षखणक र्ारिा िै, एक ऐसा काय,म ल्जसका बाद र्ें कोई पररणार् निहं िोगा। यहद पत्नी रुष्ट िो और शिकायत करे, तो पुरुष ज़ोर-जबरदस्ती का रुख अपनाता िै कक इस प्रकार का काय मउसके शिए अत्यावश्यक िै और यि कक िर्ारे छोटे-छोटे नैततक तनयर्ों की अपेक्षा उसका सुख किहंअधधक र्ित्त्वपूण िै। यि दुिरा र्ापदण्ड (र्ानक) अंततः स्वाशर्त्व की 'भावना के कारण भी िै।'[436] स्त्री सम्पवत्त िै। व्यशभचार सम्पवत्त के प्रतत अपराध िै।437 यि उन अनन्य अधधकारों का अवैध उपभोग िै, जो पतत को अपनी पत्नी के ऊपर प्राप्त िैं।438 गालसवदी ने स्त्री की एक सम्पवत्त के रूप र्ें, फोसाइमट द्वारा प्रस्तुत, धारणा के सम्बन्ध र्ें बिुत बहढया शिखा िै। वववाि के नार् पर िर् स्त्री की दिे पर तनहित अधधकार प्राप्त कर िेते िैं। स्त्री भी अपने पुरुष पर सम्पवत्त का-सा अधधकार अनुभव करती िै। यहद कोई पुरुष वववाि सम्बन्ध की तनष्ठा को भंग करता िै, तो वि अपनेपररवार र्ें कोई नया रक्त निहं िा रिा िोता, जबकक पत्नी के असतीत्व से पररवार र्ें नया रक्त प्रववष्ट िो रिा िै, इसशिए पत्नी का व्यशभचार अधधक पापपूण र्ाना जाता िै। पर िर् यि निहंकि सकते कक सब यौन प्रततबन्धों के र्ूि र्ें सम्पवत्त की धारणा िह कार् कर रिह िै। यौन ईष्यामव्यल्क्त की तनजी सम्पवत्त का उलिंघन िोनेकी अपेक्षा कुछ और अधधक वस्तु की द्योतक िै। यि िोक की अनुभूतत िै। यि एक ववचार भी कार् करता िै कक सतीत्व और पववत्रता साथ िह रिती िैं।

अनुिासन या अपनी प्राकृततक प्रवृवत्तयों को र्यादमाओं र्ें बांधना र्ानवीय गौरव के शिए अतनवाय िै। प्िेटो अपने 'कफैबस' र्ें किता िै, "प्यारे कफैबस, जब र्यादमाओं की देवी ने उद्दंडता और तृल्प्त, पेटूपन और िोभ के र्ारि र्ें सब प्रकार की दुष्टता को सीर्ा का उलिंघन करते देखा, तो उसने र्याहमदत िोने का कानून या व्यवस्था बनाई, और तुर् किते िो कक यि प्रततबन्ध आनन्द की र्ृत्यु था; और र् ैंकिता िूं, यि प्रततबन्ध िह आनन्द का बचाव था।" यहद िर्ारह र्ित्त्वाकांक्षा सत्य, शिव और सुन्दर जीवन तक पिुंचने की िै, तो िर्ें अनुिाशसत जीवन बबताना िोगा। वासनाओंकी छिकती िुई उग्रता इस बात की र्ांग करती िै। यहद ऐसा न िुआ, तो िर् प्रेर् के नार् पर उस सबको उधचत ठिराने िगेंगे, जो कुल्त्सत, दुःखद और िज्जाजनक िै।

436 सटें पाि किता िै, "पुरुषपरर्ात्र्ा कीप्रततर्ूततमऔर र्हिर्ा िै, परन्तु स्त्री पुरुष की र्हिर्ा िै।क्योंककपुरुषस्त्रीका निहं िै, अवपतु स्त्री पुरुष की िै। पुरुष का सृजन भी स्त्री के शिए निहं िुआ, अवपतु स्त्री का सृजन पुरुष के शिए िुआ िै।"-। 'कोररल्न्थयन्स' 11-7-9

437 अको हि कन्यो...। काशिदास, 'िकुन्ति' 4

438 र्नु सेतुिना कील्जए, "पुरुष को ककसी दूसरे के क्षेत्र र्ें बीज निहं बोना चाहिए।" (9-42)

र्शिनता िर्ें पवर्वन निहंबना सकती। यि स्पष्ट िै कक साधारण र्नुष्यों के शिए िक्ष्य तक पिुंचने का सरितर् र्ाग मरूहढगत तनयर्ों का पािन करना िै। केर्वि उन िोगों को जो भिह भांतत अनुिाशसत िैं और ल्जनर्ें ज्ञान ग्रिण की सूक्ष्ता वर्वकशसत िो चुकी िै, जैसीकक संत िोगों र्ें स्पष्ट हदखाई पड़ती िै, इन तनयर्ों से आगे जाने का अधधकार िै।

गिगों र्ें एक ऐसी धारणा फैिह िुई िै कक रूस र्ें गित अथों र्ें स्वतंत्र प्रेर् का सर्थनम ककया जाता िै। इसे शर्थ्या शसद्ध करने के शिए िेतनन ने 1920 र्ें जो कुछ क्िारा जैटककन को शिखा था, उसे उद्धृत कर देना पयाप्मत िोगा। "िर्ारे युर्वक-युर्वततयों का यौन सर्स्याओं के प्रतत बदिा िुआ रुख एक 'शसद्धान्त का प्रश्न' िै, और यि एक उपशसद्धान्त (थ्योरह) पर तनभरम िै। कुछ िोग अपने इस रुख को 'क्रान्ततकारह' और 'कम्युतनस्ट' (साम्यर्वादह) रुख बतातेिैं। र्वे िसचर्ुच वर्वश्र्वास करते िैं कक बात ऐसी िह िै। पर र्ुझे ियि बात ज़रा भी निहंजंचती। यद्यवप र्ैं ककसी तरि भी अततसंयर्ी तपस्वी निहं िंू। कफर भी अपने युर्वक िोगों का और कभी-कभी प्रौढतर गिगों का भी, यि तथाकधथत 'नया यौन जीर्वन' र्ुझे िबुिधा केर्वि बुजुआम (र्ध्यर्वग मके) िोगों का धन्धा, बुजुआम र्वेश्यागार का वर्वस्तार-र्ात्न प्रतीत िोता िै। िर् कम्युतनस्ट िोगों के र्न र्ें प्रेर् की स्वतंत्रता की जो धारणा िै, उससे इसका कोई र्वास्ता निहंिै। तुर्ने र्विबदनार् उपशसद्धान्त र्ूर्ि िह िोगा कक कम्युतनस्ट सर्ाज र्ें यौन र्वासना की तृल्प्त......उतना िह सीधा-सादा और र्ार्ूिह कार् िै, ल्जतना कक एक धगिास पानी पी िेना। इस 'पानी के धगिास' के शसद्धान्त ने िर्ारे युर्वक- युर्वततयों को बबिकुि सनकी बना हदया िै। यि शसद्धान्त अपनेजर्वान ड़िकों और िड़ककयों के वर्वनाि का कारण बना िै। जो िोग इसका सर्थनम करते िैं, र्वे अपने-आपको र्ाक्सर्वमादह किते िैं। उनका धन्यर्वाद ! ककन्तु र्ाक्सर्वमाद यि निहंिै। ये बातें एकदर् उतनी (पानी के धगिास ल्जतनी) सरि निहं िैं। यौन जीर्वन र्ें जो कुछ र्वस्तु पूण मिोती िै, र्वि सबकी सब केर्वि प्राकृल्त्तक िह निहंिोती, अवपतु कुछ र्वस्तु ऐसी भी िोती िै, ल्जसे िर्नेसंस्कृतत द्र्वारा अधधगत ककया िै, भिे िह र्वि ककतनी िह उच्च या ककतनी िह तनम्न क्यों न िो। यि ठीक िै कक प्यास अर्वश्य बुझाई जानी चाहिए। पर क्या कोई ऐसा सार्ान्य व्यल्क्त िोगा, जो सार्ान्य पररल्स्थततयों र्ें कीचड़ र्ें िोटनेिगे और छोटे-से जोिड़ र्ें से पानी पीने िगे? या कफर ऐसे धगिास र्ें पानी वपए, ल्जसके ककनारे िोगों के िोंठों को छू-छूकर चीकटे िो गए िों? और सबसे र्ित्त्र्वपूण मतथ्य इस सर्स्या का सार्ाल्जक पिू िै। पानी पीना एक र्वैयल्क्तक काय मिै। दूसरह ओर, प्रेर् र्ें दो व्यल्क्त फंसे िोतेिैं। और तीसरा, एक नया जीर्वन और प्रकट िो सकता िै। यिह र्वि बबन्दु िै, यि तथ्य, कक जिां पिुंचकर सर्ाज के हितों का सम्बन्ध उपल्स्थत िोता िै। सर्ाज के प्रतत भी कुछ कतव्मय िै। क्रान्तत के शिए जनता और व्यल्क्त, दोनों से एकाग्रता की और िल्क्त बढानेकी अपेक्षा िै। र्वि ऐसी िम्पटताओं को सिन निहंकर सकती, जो डैनुंल्जयों के नायकों और नातयकाओंके शिए साधारण िो सकती िैं। यौन उच्छृंखिता बुजुआम जगत् की र्वस्तु िै। यि जीणतमा का प्रर्ाण िै। परन्तु श्रशर्क-र्वग मतो उन्नतत की ओर बढता िुआ र्वग मिै। उसे नींद िानेके शिए या उत्तेजना पाने के शिए र्ादक र्वस्तुओंकी कोई आर्वश्यकता निहं िै। आत्र्-संयर्, आत्र्-अनुिासन दासता निहं िै। निहं, प्रेर् र्ें भी आत्र्-संयर् दासता निहं किा जा सकता।"[439] िर्ें अपने-आपको इस भ्रर् से र्ुक्त कर िेना चाहिए कक

[439] क्िहस र्ै नटम र्ें उद्धृत , 'यूचइनसोवर्वयत एशिया, डेर्वेर्वडसन द्र्वारा सम्पाहदत, पृ० 207

आहदर्कािहन कार्ुकताएं उन्नत वर्वचार का नर्वीन रूप िैं। सभ्यता र्नुष्य द्र्वारा असंस्कृत प्रकृतत पर क्रर्िः प्राप्त आधधपत्य का नार् िै। ल्जस राष्र र्ें यौन र्ारर्ों र्ें ििह्र्चय मऔर आत्र्-संयर् का पिान अधधक वर्वस्तृत रूप से ककया जाएगा, र्वि बिर्वान और सृजर्िीिी राष्र बनेगा।'[440]

जीर्वन के केर्वि दो िह र्ाग मिैं। एक तो आत्र्-उपभोग का सरि और वर्वस्तृत र्ाग मदूसूरा आत्र्-संयर् का कहठन और संकीण मर्ाग।म इनर्ें से वपछिे र्ाग मपर चिने के शिए जोखखर्, र्वीरता, अपसरण (डैज़िैनम) और गितफिशर्यों की गुंजाइि रिती िै, परन्तु पुरुष की आत्र्ा के योग्य यिह र्ाग मिै। जीर्वन सरि िोने के शिए निहं िै। इसका उद्देश्य आर्वेपूण मआनन्द या कौतुक निहं ंिै, अवपतु आत्र्ा की र्ुल्क्त िै। वर्वर्वाि इस र्ुल्क्त के शिए एक साधन िै। प्रत्येक पीढह र्ें भारत र्ें ऐसी करोड़ों ल्स्त्रयां िोती रिह िैं, ल्जन्िोंने यद्यवप कोई यि निहंशर्िा, कफर भी ल्जनके दैतनक अल्स्तत्र्व ने जातत को सभ्य बनानेर्ें सिायता दह िै, ल्जनके हृदय का जिो, आत्र्-बशिदानी उत्सािा, आडम्बरिहन तनष्ठा, और जबकक उन्िें कहठनतर् परहक्षाओं र्ें से गुजरना पड़ा, तब भी कष्ट-सिन र्ें सिक्तता, िर्ारह इस प्राचीन जातत के गौरर्व की र्वस्तुओंर्ें से िैं। ल्स्त्रयां र्ाता के रूप र्ें र्वतर्मान व्यर्वस्था के अत्याचार और अन्याय के प्रतत और भी अधधक सचेत िोती िैं और आत्र्ा र्ें एक गिरा और दूरू-पररणार्ी पररर्वतनम कर सकती िै और उसे एक नई जीर्वनर्िी–ह का रूप दे सकती िैं। तभी एक 'नर्वीन र्ानर्व' का जन्र् िोगा। एक ल्स्थतत ऐसी भी आ जाती िै, जब आध्याल्त्र्क स्र्वतन्त्रता की साधना र्ें पाररर्वाररक बन्धन भी टूट जाते िैं। सार्ाल्जक बन्धनों को स्र्वीकार करके िर् उनसे ऊपर उठ जाते िैं। वर्वर्वाहित जीर्वन र्ुल्क्त के शिए आर्वश्यक निहं िै। र्नुष्य की नैततक उन्नतत र्ें एक ल्स्थतत ऐसी आती िै, जब िर् अपनी यौन इच्छाओं पर वर्वजय पा िेते िैं, नर और नारह के ििह्र्चय मकी साधना करते िैं और सम्पूण मवर्वश्र्व के कलयाण के साथ अपना एकात्र्य स्थावपत कर िेते िैं।

440 ऐलबुअसिक्सि से तुिनाकील्जए,"ककसी भी सर्ाज की सांस्कृततक दिा ठीक उन प्रततर्वन्धों के अनुपात र्ें उन्नत िोती िै, जो यि वर्वर्वाि से पूर्व मऔर वर्वर्वाि के बाद यौन संभोग के शिए अर्वसरों पर िगाता िै।" - 'ऐड्स ऐब र्ीन्स'

5 :युद्ध और अहिंसा

युद्ध का उत्कृष्ट वर्स्तु के रूप र्ें वर्णनम - हिन्दूदृल्ष्टकोणूईसाईदृल्ष्ट कोण - युद्ध की भ्राल्न्तयां - आदि मसर्ाज- जीर्वन रू्लयों के सम्बन्ध र्ें शिक्षण - गांधी जी।

युद्ध का उत्कृष्ट वर्स्तु के रूप र्ें वर्णनम

आइए, इस अल्न्तर् भाषण र्ें िर् सर्ाज र्ें िल्क्त या बिप्रयोग के प्रश्न पर वर्वचार कर िें। रि्ात्र्ा गांधी के अहिंसा पर आग्रि और युद्ध के कारण यि प्रश्न बिुत र्ित्त्वपूण मिो उठा िै और यि आर्वश्यक िै कक िर् इस वर्वषय र्ें यथासंभर्व स्पष्ट वर्वचार बना िें। िताल्ददयों से युद्ध को, जो एक-दूसूरे को र्ारनेका संगहठत प्रयत्न िै, स्र्वाभावर्वक और राष्रहय जीर्वन का एक स्र्वस्थ काय मबताया जाता रिा िै। िर्ें तकम-बुद्धध और सूझ-बूझ िै, ल्जसका उपयोग िर् अपनेकायों को उधचत शसद्ध करने ेके शिए करते िैं। किा जाता िै कक युद्ध अच्छे उद्देश्यों को पूरा करने ेके साधन िैं। यिां ंकुछ उद्धरण हदए जाते िैं, ल्जनसे यि बात स्पष्ट िो जाएगी। नीरो का कथन िै, "जो राष्र दुबिम और दयनीय िोते जा रिे िैं, उनके शिए, यहद र्वे सचर्ुच जीते रिना चािते िैं, युद्ध को ओषधध के रूप र्ें सुझाया जा सकता िै।" उसनेकिा, "पुरुषों को युद्ध का प्रशिक्षण हदया जाए और ल्स्त्रयों को र्वीर सन्तान उत्पन्न करने का; बाकी सब बातें बेिूदा िैं।" "तुर् किते िो कक यहद उद्देश्य अच्छा िो, तो उसके कारण युद्ध तक को भिा सर्झा जा सकता िै? र् ैंतुर्से किता िंूं कक अच्छे युद्ध के कारण ककसी भी उद्देश्य को भिा सर्झा जा सकता िै।" रल्स्कन का कथन िै, "संक्षेप र्ें, र्ेरा वर्वचार िै कक सब र्िान राष्रों ने अपने वर्वचारों की सत्यता और सबिता को युद्धों र्ें िह पिचाना िै; युद्धों द्र्वारा र्वेराष्र पनपे और िल्न्त द्र्वारा नष्ट िो गए; युद्ध से उन्िोंने शिक्षा िह और िाल्न्त द्र्वारा ठगे गए; एक र्वाक्य र्ें, युद्ध र्ें उनका जन्र् िुआ और िाल्न्त र्ें र्वे र्र गए।" र्ोलटके ने किा, "युद्ध परर्ात्र्ा के संसार का एक आन्तररक अंग िै, जो र्नुष्य के सर्वोत्तर् गुणों का वर्वकास करता िै।" र्वि शिखता िै कक स्थायी िाल्न्त केर्वि एक स्र्वप्न िै और साथ िह, "और र्वि भी कोई सुन्दर स्र्वप्न निहं।" बनिमाडी ने घोषणा की, "युद्ध एक प्राखणिास्त्रीय आर्वश्यकता िै; यि र्ानर्व-जातत के जीर्वन र्ें एक अतनर्वाय मतनयार्क र्वस्तु िै, ल्जसके अभार्व र्ें वर्वकास का एक ऐसा क्रर् चिेगा, जो र्नुष्यों की वर्वशभन्न जाततयों

के शिए ितनकारक िोता और जो साथ िह सारह संस्कृतत के पूणतमया प्रततकूि िोता ... युद्ध के अभार्व र्ें घहटया और चररत्निहन जाततयांस्वस्थ और सिक्त जाततयों पर िार्वी िो जातीं, और पररणार्स्वरूप सब क्षेत्रों र्ें पतन हि िोता। युद्ध नैततकता का एक अतनर्वाय मउपकरण िै। यहद पररल्स्थततयों के कारण आर्वश्यकता िो, तो युद्ध करर्वाना न केर्वि उधचत िै, अवपतु राजनीततज्ञों का नैततक और राजनीततक कतव्मय भी िै।" ओस्र्वालड स्पगैंरि शिखता िै, "युद्ध उच्चतर र्ानर्वीय अल्स्तत्र्व का िाश्र्वत रूप िै, राष्रों का अल्स्तत्र्व िह केर्वि युद्ध करनेके शिए ै।" र्ुसोशिनी का दार्वा िै, "केर्वि युद्ध िह र्ानर्वीय ऊजाम को तनार्व की उच्चतर् सीर्ा तक उभार सकता िै और र्वि उन िोगों पर श्रेष्ठता की छाप िगा देता िै, ल्जनर्ें उसका सार्ना करने ेका सिास िै।" सर आथरम कीथ ने 1931 र्ें ऐबडीन वर्वश्र्वववर्वद्याय के छात्रों के सम्र्ुख रैक्टर पद से 'भाषण देते िुए किा था, "प्रकृतत अपने र्ानर्वीय उद्यान को छंटाई द्र्वारा स्वस्थ बनाए रखती िै, युद्ध उसकी कतरनी िै। िर् उसकी सेर्वाओं के बबना कार् निहं चिा सकते।" सभी राष्रों र्ें ऐसे व्यल्क्त िुए िैं, ल्जन्िोंने युद्ध की, िल्क्त प्रदान करने र्वािे के रूप र्ें, संघष मर्ें बचे रिने ेर्ें सिायक के रूप र्ें और दुबुिमता को सर्ाप्त करने र्वािे के रूप र्ें, स्तुतत की िै। किा जाता िै कक युद्ध से सािस, स्र्वाशभर्ान, तनष्ठा और र्वीरता जैसे उच्च गुणों का वर्वकास िोता िै।

सर्य के साथ-साथ र्नुष्य का अन्त:करण भी वर्वकशसत िुआ िै। आजकि युद्ध का उत्कृष्ट र्वस्तु के रूप र्ें र्वणनम निहं ंककया जाता, अवपतु खेद के साथ उन्िें स्र्वीकार ककया जाता िै। एक ओर जिां ंधुरह िल्क्तयां (जर्नम और इटिह) अब भी युद्धों के सम्बन्ध र्ें इस धारणा से धचपकी िुई िैं कक र्वे सर्ाजों की उन्नतत के आर्वश्यक अंग िैं, और उनका यि वर्वश्र्वास िै कक िल्क्त िह राष्र की र्िानता की कसौटह िै, सबि का ध्येय तनबिम को अपने अधीन करना िै; आक्रर्णात्र्क युद्ध गौरर्व की र्वस्तु िै, अपराध निहं,ं और यि कक छि, वर्वश्र्वासघात, आतंकर्वाद और अर्ानुवषकता, ल्जससे भी वर्वजय प्राप्त िो, र्वि सब उधचत िै, र्विंदूसरह ओर शर्त्र राष्रों ने यि एिान ककया िै कक र्वे िाल्न्त-स्थापना के शिए वर्वर्वि िोकर युद्ध कर रिे िैं, ल्जससे वर्वश्र्व र्ें एक ऐसी व्यर्वस्था कायर् की जा सके, ल्जसर्ें राज्यों के सम्बन्ध इस प्रकार तनयशर्त िों कक सर्य-सर्य पर िोने र्वािे युद्धों से बचा जा सके। र्वे न केर्वि युद्धों से घृणा करते िैं, अवपतु ुउस भार्वना, उस आर्वेि और उस र्नोर्वृवत्त से भी, जो धुरह ल्क्तयों के पीछे कार् कर रिह िै।'[441] युद्ध के र्वातार्वरण र्ें शिक्षा के सब उपकरणों का प्रयोग इस युद्ध की भार्वना को जगानेके शिए ककया जा रिा िै। िर्ारे धचत्रपटों र्ें ित्या के यंत्रों की गततवर्वधधयों का प्रदिनम रिता िै; तोपों का छूटना, टारपीडो और सुरंगों का वर्वस्फोट, टैंक और वर्वर्ान। िर् बबरम द्र्वेष से भरे हृदय और र्वैज्ञातनक िकौि से सम्पन्न र्ल्स्तष्क के साथ ित्रु से युद्ध करते िैं।

परन्तु धर्ों ने अहिंसा को सर्वोच्च गुण का आसन प्रदान ककया िै और हिंसा को र्नुष्य की अपूणतमा के रूप र्ें िह स्र्वीकार ककया िै। इस अपूण मसंसार र्ें अच्छाई (गुड) कभी वर्विुद्ध रूप र्ें प्राप्त निहं िोती; उसके

---

[441] हिटिर नेअपनी पुस्तक 'र्ीन कैम्फ' र्ें शिखा, "जर्नम िल्क्त को उन्नत करनेकी सर्स्या यि निहं िै कक िर् िस्त्रास्त्रों का तनर्ाणम ककस प्रकार कर सकते िैं, अवपतु यि िै कक िर् िोगों र्ें र्वि भार्वना ककस प्रकार उत्पन्न कर सकते िैं, जो िोगों को िस्त्र धारण करने र्ें सर्थ मबनाती िै। जब एक बार यि भार्वना िोगों र्ें भर जाएगी, तो र्वि िस्त्रीकरण के िज़ार रास्तेखोज िेगी।"

वर्विुद्ध रूप र्ें दिनम के शिए िर्ें एक ऐसे संसार र्ें पिुंचना िोगा, जी अच्छाई और बुराई से परे िै। यहद संसार र्ें आदि मउतने पूण मरूप र्ें उपिदध निीं, ल्जतना कक िर् चािते िैं, तो इसका यि अथ मकदावप निीं किक आदि मको छोड़ हदया जाए। पूण मशसद्धान्तों का सम्बन्ध िर्ें इस भौततक जगत् ्से जोड़ना िै, जो पररर्वतनिीमी िै और ल्जस पर र्ानर्वीय र्ूखतमा और स्वाथों का प्रभार्व भी पड़ता रिता िै। िर्ें सार्ाल्जक ल्स्थतत र्ें ऐसे पररर्वतनम िानेके शिए प्रयास करना चाहिए, ल्जनसे आदि मकी अपेक्षाकृत अधधक यथेष्ट उपिल्दध र्ें सिायता शर्िे। इस प्रश्न पर धर्ों का यिि रुख रिा िै। उदिारण के रूप र्ें र् ैंहिन्दू ्और ईसाई धर् मको िेता िूँ।

हिन्दू–दृल्ष्टकोण

हिन्दू िास्त्र अहिंसा को परर् धर् मर्ानते िैं। अहिंसा का अथ मिै-हिंसा न करना। सब जीर्वों को, र्नुष्यों और पिुओं को दुःख देना या सताना हिंसा िै। 'छान्दोग्य उपतनषद्' र्ें किा गया िै कक यज्ञों र्ें बशि नैततक गुणों की िी दह जानी चाहिए।442 आश्रर्ों र्ें र्नुष्यों और पिुओं के प्रतत शर्त्रता की भार्वना व्याप्त रिती थी। परन्तु िर् यि निहंकि सकतेकक हिन्दू–िास्त्रों र्ें बि के प्रयोग का एकदर् तनषेध कर हदया गया िै। हिन्दू–दृल्ष्टकोण र्ें ऐसे सुदूरू आदि मकी कठोरतापूर्वकम स्थापना निहं की गई िै, ल्जसके सम्बन्ध र्ें कोई छूट िी न दह जा सकती िो। हदव्यता सार्ान्य जीर्वन से पृथक् िोकर किहं न शर्िेगी। प्रत्येक वर्विशष्ट पररल्स्थतत की सुतनल्श्चत आर्वश्यकताओं का अध्ययन ककया जाता िै और उनके अनुकूि शसद्धान्त बनाए जाते िैं। दूरूस्य आदि म व्यार्विाररक कायक्रमर् से शभन्न िोता िै। बि का अनार्वश्यक और अनुधचत प्रयोग हिंसा िै। जब आश्रर्वाशसयों को अनाय मजाततयां सताती थीं, तो र्वे बबना बदिा शिए अत्याचारों को सिते रिते थे; परन्तु र्वे याचना करते थे कक क्षल्त्रय िोग िुओं के आक्रर्ण से उनकी रक्षा करें। 'ऋग्र्वेद' र्ें किा गया िै, "जो ब्राह्र्णों को कष्ट देते िैं, उन सबके र्वविनाि के शिए र् ैंरुद्र के धनुष पर प्रत्यंचा चढाता िूं। र् ैंधर्ामत्र्ाओं की रक्षा के शिए िड़ता िूं और र् ैंस्वग म तथा पृथ्र्वी र्ें व्याप्त िूं।"[443] जिांएक ओर िर्ें किा जाता िै कक िर् भौततक पाप पर आध्याल्त्र्क बि द्र्वारा वर्वजय पाने का यत्न करें, जैसा कक र्वशिष्ठ-वर्वश्र्वाशर्त्र संघष मसे स्पष्ट िै, र्विीं पाप का भौततक रूप से प्रततरोध करने ेकी भी अनुर्तत दह गई िै। यद्यवप सारे सर्य ज़ोर इस बात पर हदया गया िै कक ित्रु ुको जीतने के शिए आल्त्र्क बि का प्रयोग ककया जाए, कफर भी बिप्रयोग का एकदर् तनषेध निहं ंकर हदया गया िै। साधु और तपस्वी िोग, जो संसार से वर्वरक्त िो चुके िैं और इसशिए ल्जनका सुसंगहठत सर्ाजों के कलयाण से कोई सीधा सरोकार निीं, 'भिे िी व्यल्क्तयों या सर्ुदायों की रक्षा के शिए िस्त्र न उठाएं, परन्तु नागररकों पर ऐसा कोई प्रततबंध निहं िै कक र्वे,े यहद आर्वश्यकता िो और संभर्व िो तो, आक्रर्ण का िस्त्रों द्र्वारा प्रततरोध करें। जब एक

---

442 अथ यत् ्तपो दाने, आजर्वेम, अहिंसा, सत्यर्वचनेइतत ता अस्य दक्षक्षणः3-17-4

साथ िी देखखए,

अहिंसा प्रथर्ं ंपुष्पे पुष्पर् ्इल्न्द्रयतनग्रिः सर्वभूमतदया पुष्पं, क्षर्ा पुष्प वर्विेषतः

िाल्न्त पुष्पं तपः पुष्पं, ध्यानंपुष्पंतथैर्व च

सत्यर् ्अष्टवर्वधं पुष्पे, वर्वष्णोः प्रीततकरं भर्वेत्।् - 'पद्र्पुराण'

443 1 - 10 - 125

योद्धा सेनापतत शसंनिे बुद्ध से पूछा कक क्या अपनेघर-बार की रक्षा के शिए युद्ध करना बुरा िै, तो बुद्ध ने उत्तर हदया, "जो दण्ड का पात्र िै, उसे दण्ड हदया िी जाना चाहिए। तथागत की शिक्षा यि निीं िै कक जो िोग िाल्न्त बनाए रखने का कोई उपाय िेष न रिने पर धर् मके शिए युद्ध करते िैं, वे दोषी िैं।" 'भगवद्गीता' र्ें भी इसी प्रकार का दृल्ष्टकोण अपनाया गया िै। इसर्ें अजुनम को, जो अपने कतव्मय का पािन करनेसे हिचक रिा था, 'स्वधर्'म का उपदेि हदया गया िै। अहिंसा जीवन के अल्न्तर् दो सोपानों, वानप्रस्थ और संन्यास के शिए िै। अजुनम क्षत्रिय गृिस्थ िोतेिुए संन्यासी के आदि मपर निीं चि सकता। कृष्ण ने न्याय के शिए सब िाल्न्तपूण म उपायों को आज़र्ा देखा, पर जब उनर्ें सफिता न शर्िी, तो उसने अजुनम को सिाि दी कक वि स्वाथी और पापी िोगों के ववरुद्ध न्याय के शिए कतव्मय-भावना से युद्ध करे। कृष्ण अपनेिाल्न्तपूण मदौत्यकर् मर्ें असफि वापस िौटा; उसने किा, "जो कुछ सत्य, उधचत और िाभदायक था, वि सब दुयोधन को बताया गया, पर वि र्ूढ र्ानने वािा निीं। इसशिए र्ेरे ववचार र्ें उन पावपयों के शिए अब चौथा उपाय, युद्ध द्वारा दंड देना, िी उधचत िै। अन्य ककसी उपाय से उन्िें सिी रास्ते पर निीं िाया जा सकता।" कफर यहद कोई र्नुष्य अपने हित के शिए दूसरे र्नुष्य को र्ारता िै, तो वि गित कार् करता िै, परन्तु यहद वि सार्ान्य हित के शिए ककसी को र्ारता िै, तो उसे दोष निीं हदया जा सकता। इसके अततररक्त, अजुनम की र्नोवृवत्त दुबिुमताजतनत थी, िल्क्तजतनत निीं। उसे र्ारकाट करने र्ें इसशिए एतराज़ निीं था कक र्ारकाट अपने-आपर्ें बुरी चीज़ िै; उसे तो केवि अपने सम्बल्न्धयों को र्ारनेर्ें एतराज़ था। अब उसे उपदेि हदया गया कक वि क्रोध, भय और द्वेष को त्याग कर युद्ध करे। प्रेर् का ववरोधी घृणा िै, बि निीं। ऐसे भी अनेक अवसर िोते िैं, जब प्रेर् बि का प्रयोग करता िै। प्रेर् केवि भावुकता निीं िै। वि असत् (बुराई) का तनवारण करने और सत् (अच्छाई) की रक्षा के शिए बि का प्रयोग कर सकता िै। कृष्ण अजुनम को वस्तुओंकी सारी योजना सर्झाता िै और उसे प्रेरणा देता िै कक वि संसार के कल्याण के शिए काय मकरने वािे िोगों र्ें अपना स्थान ग्रिण करे। वि किता िै कक संसार र्ें प्रत्येक व्यल्क्त को अपना कतव्मय करना चाहिए, और उसर्ें अपनी सारी िल्क्त िगा देनी चाहिए। ल्जस र्ानवता और प्रेर् के नार् पर अजुनम िड़ने से इनकार कर रिा था, अब उसी र्ानवता और प्रेर् के नार् पर उसे युद्ध करने को किा जाता िै। अहिंसा कोई िारीररक दिा निीं, अवपतु यि तो र्न की प्रेर्र्यी वृवत्त िै।"[444] र्ानशसक ल्स्थतत के रूप र्ें अहिंसा अ-प्रततरोध से शभन्न वस्तु िै। यि वैर्नस्य और द्वेष का अभाव िै। कई बार, प्रेर् की भावना के कारण बुराई का प्रततरोध करने की वस्तुतः आवश्यकता पड़ती िै। िर् िड़ते िैं, ककन्तु आन्तररक िाल्न्त से भरे िुए। िर्ें स्वयं बबना बुरा बनेबुराई का ववनाि करना चाहिए। र्ानव-कल्याण सबसे बड़ी अच्छाई िै; िाल्न्त और युद्ध केवि उसी सीर्ा तक अच्छे िैं, जिांतक वे र्ानव-कल्याण र्ें साधक िैं। िर् यि निीं कि सकते कक हिंसा अपने-आपर्ें बुरी िै। पुशिस द्वारा की गई हिंसा का उद्देश्य सार्ाल्जक िाल्न्त िोता िै। इसका उद्देश्य िै आपाधापी को रोकना। सब र्ार्िों र्ें युद्ध का उद्देश्य ववनाि निीं िोता। जब युद्ध का उद्देश्य र्ानव-कल्याण िो, जब युद्ध व्यल्क्तत्व के प्रतत आदर िी िो, तब वि क्षम्य िै। यहद िर् यि किें कक अपराधी के व्यल्क्तत्व पर भी आंच निीं आनी चाहिए, तब भी जबकक वि दूसरे िोगों के व्यल्क्तत्वों का अततिंघन करता िो; यहद िर् गुंडे के जीवन को भी

[444] देखो 'योगसूत्र, 2-35
अहिंसाप्रततष्ठायां तत्सल्न्नधौ वैरत्यागः ।

पुनीत र्ानकर व्यर्विार करें, जबकक र्वि अपनेसे किहं अधधक रूलयर्वान जीर्वनों को नष्ट कर रिा िो, तो िर् बुराई के सार्ने घुटने ेटेक रिे िोते िैं। िर् बिप्रयोग को पररल्स्थततयों से पृथक् करके अच्छा या बुरा निहंकि सकते। डाक्टरह आपरेिन र्ें भी रोगी को कष्ट हदया जाता िै, परन्तु र्वि रोगी की जान बचा सकनेके शिए ककया जाता िै। चाकू धचककत्सक का िै या ित्यारे का, इसी र्ें सारा अन्तर िै।'[445]

इस अपूण मसंसार र्ें, जिां ंसब र्नुष्य सन्त निहं ंिैं, संसार का कार् चिाते रिने ेके शिए बि का प्रयोग करना िह पड़ेगा। सत्य युग र्ें बि-प्रयोग की आर्वश्यकता निहं ंथी; परन्तु कशियुग र्ें, जबकक िोग धर् मसे पततत िो गए िैं, बि का प्रयोग आर्वश्यक िै। राजा दण्ड को धारण करनेर्वािा िै- दण्डधर। क्षबत्रय र्वण मको र्ान्यता देने से बि-प्रयोग का औधचत्य स्पष्ट िो जाता िै। र्नु और याज्ञर्वलक्य स्र्वीकार करते िैं कक धर् मया कतव्मय का पािन करने ेर्ें कभी-कभी दंड की भी आर्वश्यकता पड़ती िै।446 र्वतर्मान पररल्स्थततयों र्ें उच्छृंखिों को तनयंत्रण र्ें रखने के शिए, असिायों की रक्षा के शिए, और र्नुष्य र्नुष्य तथा सर्ुदाय सर्ुदाय र्ें व्यर्वस्था बनाए रखनेके शिए बि का प्रयोग आर्वश्यक िै। परन्तुइस ढंग का बि का प्रयोग र्वैर्नस्य के इरादे से निहंककया जाता। ल्जन पर इसका प्रयोग ककया जाता िै, अन्ततोगत्र्वा उनका इससे भिा िह िोता िै। यहद िर्ें अराजकता से बचना िै, तो इस प्रकार की न्यायसंगत पुशिस (आरक्षक) कारमर्वाई आर्वश्यक िै।

हिंसा या सताना दंड या सज़ा से शभन्न र्वस्तुिै। हिंसा से तनदोष व्यल्क्त को चोट पिुंचती िै; दंड अपराधधयों की र्वैध रूप से रोकथार् करता िै। बि कानून बनानेर्वािा निहं ंिै, अवपतु कानून का सेर्वक िै। िासन करने र्वािा शसद्धान्त िै धर् मया औधचत्य; और बि तो केर्वि उनके आदेिों का पािन करर्वाता िै। र्िाभारत र्ें र्वर्वद्याथी का आदि मइस प्रकार प्रस्तुत ककया गया िै, "आगे चारों र्वेद िों; पीछे बाण सर्ेत धनुष िो; एक ओर आत्र्ा अपने आल्त्र्क बि से अपनी िक्ष्य-प्राल्प्त र्ें िगी िो और दूसूरह ओर सैतनक बि अपना उद्देश्य पूरा कर रिा िो;[447] परन्तु जैसा रार्ायण र्ें किा गया िै, "योद्धा का बि घृणणत बि िै; ऋवष का बि िह सच्ची िल्क्त िै।"[448] जिां अहिंसा सम्भर्व न िो, र्विां हिंसा की अनुर्तत दह गई िै। यि किा गया िै कक "यहद कोई ग्रार् के कलयाण के शिए, स्र्वार्ी के प्रतत तनष्ठा के कारण, या असिायों की रक्षा के शिए ककसी को र्ारे, कैद करे या कष्ट दे तो उसे पाप निहं िगता।"[449] कफर, "यहद गुरु शिष्य को दंड दे, स्र्वार्ी सेर्वकों को दण्ड दे और राजा अपराधी को दण्ड दे, तो उसे धर् म

---

445 धचककत्सकश्च दुःखातन जनयन् ्हितर्ाप्नुयात्। ् - अनुिासन पर्वम227-5

446 िह्यतेजोर्य दण्डर् ्असृजत् ्पूर्वर्मीश्र्वरः । - र्नु०, 7-14

कफर,

चरो हि दण्डरूपेण िह्र्णा तनशर्तः पुरा। - याज्ञर्वलक्य, 1-533

447 अग्रतश्चतुरो र्वेदाः पृष्ठतः सिरं धनुः,

इदं िह्र् ्इदं क्षिं, िापादवप िरादवप।

448 धधग्बिं क्षबत्रयबिं ंिह्यतेजोबिं बिर् ्।

449 ग्रार्ाथ मभतृर्वमपण्डाथ ंदहनानुग्रिकारणात्, ्

र्वधबन्धपररक्िीन् ्कुर्वन्म ्पापात् ्प्रर्ुच्यते।

-अनुिासन पर्व,म 231-23

का फि (पुण्य) शर्िता िै।"[450] र्नु का कथन िै, "आततायी को, चािे र्िे गुरु िो, बूढा िो या जर्वान िो या चािे वर्वद्र्वान िाह्मण िह क्यों न िो, बबना हिचक र्ार डािना चाहिए।"[451] र्वेदों र्ें युद्धों और िड़ाइयों का र्वणनम िै; और उनर्ें अपनी र्वजय और ित्रु ुकी पराजय के शिए प्राथनमाएं िैं। र्िाकाव्यों के नायक देर्वताओं के ित्रु ुअसुरों से युद्ध करते ज़रा निहं ंहिचकते। यिांतक कक िाह्मण भी िस्त्र धारण करते थे, े जैसा कक परिुरार्, द्रोणाचाय मऔर अश्र्वत्थार्ा जैसे िाह्मण योद्धाओंके उदिारण से स्पष्ट िै।452 कौहटलय ने तो िाह्मण सेनाओं तक का उलिेख ककया िै, जो िरणागत या दहन िुए ित्रु ुपर दया करने ेके शिए प्रशसद्ध थीं। र्िाभारत र्ें प्रश्न ककया गया िै, "ऐसा कौन िै, जो हिंसा निहं ंकरता? अहिंसा-व्रती तपस्वी िोग तक हिंसा करते िैं, ककन्तुबिुत प्रयत्न करके र्वे ेउसे न्यूनतर् करते िैं।"[453] आत्र्रक्षा के शिए और आिार पाने के शिए िर्ें जीर्वन का कुछ न कुछ नाि करना िह पड़ता;[454] परन्तु उसके शिए िर्ें खेद िोना चाहिए, उसके र्वषय र्ें प्रसन्न निहंिोना चाहिए। ल्जतनी तनतान्त आर्वश्यक िै, उससे अधधक ित्या या हिंसा िर्ें कदावप न करनी चाहिए। पूण मअच्छाई की आकांक्षा और पूण म आदि मको दूवूषत करने ेर्वािे आंशिक कायों को करने ेकी आर्वश्यकता र्ें कुछ र्वरोध िै; कफर भी कायों को आगे बढानेका यि र्वरोध िह एकर्ात्र र्ाग मिै। सारे र्ानर्वीय प्रयत्न का र्ूि यि र्वरोध िह िै। िर्ें पूण मअहिंसा के सर्वोच्च आदि मऔर उन र्वास्तवर्वक पररल्स्थततयों के बीच र्ें से, ल्जनर्ें कक िर्ें अपूण मसाधनों के सिारे उच्चतर् आदि मतक पिुंचना िै, र्ाग मतनकािना िोगा। धर् मके ये तनयर् सार्ाल्जक दिाओं ंके सापेक्ष िैं और िो सकता िै कक इनका पूण मअच्छाई के शसद्धान्तों से र्वरोध िो; परन्तु इनके अभार्व र्ें सर्ाज र्ें कोई कानून िह न रिेगा और

---

450 गुरुः सन्तजयमन् ्शिष्यान् ्भताम भृतूयजनान् ्स्र्वकान् ्
उन्र्ागप्रमततपन्नांश्च िास्ता चर्फर्मिं िभेत्।्
-अनुष्ठान पर्व,म 227-4

451 8-350

452 र्वद्यवप अनेक स्थानों पर यि किा गया िै कक िाह्मणों के शिए अहिंसा िह परर् धर् मिै, कफर भी हिन्दू िास्त्रकार दिे और धर् मकी रक्षा के शिए िाह्मणों को िस्त्र उठाने की अनुर्तत देतेिैं। र्नु० 8-348। देखखए,

अहिंसा परर्ो धर् मसर्वप्रमाणभूतांर्वर
तस्र्ात् ्प्राणभृतः सर्वाम्न् ्न हिंस्र्यात् ्िाह्मणः क्र्वधचत् ्
अहिंसा सत्यर्वचने क्षर्ा चेतत र्वतनल्श्चतर् ्
िाह्मणस्य परो धर्:म बेदानां धारणोवप च।

र्िाभारत, आहदपर्व,म 9-13-14

453 केन हिंसंल्न्त जीर्वान् ्र्ैर्वै िोकेल्स्र्न् ्द्वर्वजसत्तर्
बिु संधचत्य इ र्ैर्वै नाल्स्त कल्श्चद् अहिंसकः।
अहिंसायास्तु तनरताः यतयो द्वर्वजसत्तर्
कुर्वन्मत्येर्व हि हिंसां ते यत्नादलपतरा भर्वेत्।्

-र्वनपर्व म212-32-34

454 सत्त्र्वैः सत्त्र्वातन जीर्वल्न्त। (जीर्व जीर्व को खाकर जीता िै।) - र्िाभारत

 अराजकता र्च जाएगी। परर् आदि मका वर्वद्यर्ान सार्ाल्जक पररल्स्थततयों के साथ रि् बबठाया जाना चाहिए;
और इन दोनों की पारस्पररक कक्रया से सर्ाज का वर्वकास तनल्श्चत रूप से िोता रि सकता िै।

सार्ाल्जक उन्नतत एक तनरन्तर वर्वकशसत िोती िुई सार्ाल्जक प्रकक्रया िै, ल्जसर्ें पूण मपे्रर् के आदि मके प्रतत तनष्ठा और ल्जन सुतनहदमष्ट दिाओं र्ें िर्ें कार् करना िै, उनके प्रतत संर्वेदनशीलता दोनों की िह आर्वश्यकता िोती िै। तनःसन्देि आदि मतो पूण मअहिंसा िह िै। पे्रर्् और न्याय द्र्वारा िाशसत संसार र्ें बि-प्रयोग की कोई आर्वश्यकता न िोगी। िास्त्रकार नारद ने किा िै, "जब िोग स्र्वभार्वतः धाशर्कम थे और सत्यपरायण रितेथे, तब न कोई व्यर्विार' (कानूनी झगड़ा-र्ुकदर्ेबाज़ी) था, न द्र्वेष था, न स्र्वाथपमरता थी।"[455] संसार-भर के सन्तों का वर्वश्र्वास पूण मअहिंसा र्ें रिा िै। र्वे बुराई का वर्वरोध नर्ने, सहने और तनल्ष्क्रय प्रततरोध द्र्वारा करते िैं। र्वे सहिष्णुता, स्र्वेच्छा से कष्ट सिन अथात्म ्तप र्ें वर्वश्र्वास करते िैं। हिंसा भय, द्र्वेष और तनष्ठुरता को जन्र् देती िै और केर्वि उन्हिं ्िोगों के शिए सम्भर्व िै, जो आध्याल्त्र्क दृल्ष्ट से अपररपक्र्व या वर्वकृत िैं। सन्त िोग शाल्न्तपूण मबतार्वम की, सबके प्रतत न्यायपूण मव्यर्विार की और दुबिमों के प्रतत दया की परम्पराएं स्थावपत करते िैं। भीष्र् ने युधधल्ष्ठर को बताया था कक अहिंसा सर्वोच्च धर् मिै, सर्वोच्च तप िै और सर्वोच्च सत्य िै, और इसीसे बाकी सब गुणों का जन्र् िोता िै।456 सन्त आत्र्ाएं बि का प्रयोग निहं ्कर सकतीं, क्योंकक उनकी सब र्वासनाएं र्र चुकी िोती िैं; कफर भी र्वे बुराई पर वर्वजय पाने र्ें सर्थ मिोती िैं। "कठोर को र्ृदु ्से जीता जाता िै; अकठोर को भी र्ृदु ्जीत िेता िै; र्ृदु ्के शिए असाध्य कुछ निहं िै; इसशिए र्ृदु ्अधधक िल्क्तिाह िै।"[457] जो िोग पूणतमा का आध्याल्त्र्क जीर्वन बबताना चािते िैं, र्वे संसार को त्याग कर र्ठों र्ें चिे जाते िैं या ककसी धाशर्कम सम्प्रदाय र्ें दहक्षक्षत िो जाते िैं। इन संन्याशसयों से आिा की जाती िै कक र्वे अहिंसक रिेंगे। "सबको सर्ान दृल्ष्ट से देखता

---

455 छान्दोग्य उपतनषद् 502, जिां अश्र्वपतत कैकेय यि दार्वा करता िै कक उसने अपने राज्य से चोरों, शराबबयों, अशिक्षक्षतों और व्यशभचाररयों को साफ कर हदया िै:

न र्ें स्तेनो जनपदे, न कदयो न र्द्यपः,
नानाहिताधग्रन मचावर्वद्र्वान् ्न स्र्वैरह स्र्वैररणी कुतः ।

456 अहिंसा परर्ो धर्:म, अहिंसा परर्ं तपः
अहिंसा परर्ं सत्ये, ततो धर्:म प्रर्वततेम। अनुष्ठान पर्व म4-25

साथ िह देखखए, आहदपर्व म115-25

457 र्ृदुना दारुण िल्न्त, र्ृदुना िन्त्यदारुणर्, ्
नासाध्ये र्ृदुना ककल्ञ्चत् ्तस्र्ात्तीक्ष्णतरे र्ृदुः ।
- र्िाभारत

तुिना कील्जए:

अक्कोधेन ल्जने कोथर्, ्असाधु साधुना ल्जने,
ल्जने कररयं ्दानेन, सच्चेनािहकर्वाहदनर् ्।
अक्रोधेन जयेत् ्क्रोधर्, ्असाधु साधुना जयेत्, ्
जयेत् ्कदय ्दानेन, सत्येनािहकर्वाहदनर् ्।

ुआि विं सब प्राखणयों के प्रतत शत्र भार्व रखे। और भक्त िोने ेके कारण उसे ककसी भी प्राणी को, चािे विं र्नुष्य िो या पि्ु,ु र्न, र्वचन या कर् मसे कष्ट निं ंपिुंचाना चाहिए और उसे सब प्रकार के िगार्व (राग) का त्याग कर देना चाहिए।" बुद्ध ने अपनेशिष्यों को सार्वधान ककया था कक र्वे ककसी भी प्राणी को चोट न पिुंचाएं और न सताएं। पाश्र्वनमाथ ने अपनेशिष्यों से चार र्िाव्रत ग्रिण करर्वाए : प्राखणयों को न सताना (अहिंसा), सत्यपरायण रिना, चोरह न करना (अस्तेय) और धन-सम्पवत्त का संग्रि न करना (अपररग्रि)। र्वे संन्यासी िोग सर्ाज के उन बाह्य रूपों के अन्तगतम निं ंआते, जो अपने ककसी र्वशिष्ट कृत्य को कर रि िोतिें और जब उनका र्वि कृत्य सर्ाप्त िो जाता िै, तो र्वे स्र्वयं भी िुप्त िो जाते िैं। ये बाह्य रूप तो आन्तररक संगठन का आकल्स्र्क प्रकटन र्ात्र िैं। र्वे संन्यासी यद्यवप सार्ाल्जक संघषों र्ें कोई भाग निं िेते, कफर भी र्वे प्रभार्वी रूप से सार्ाल्जक उन्नतत र्ें सिायक िोते िैं। र्वे सार्ाल्जक आन्दिोन के सच्चेतनदिेक िैं, भिे िह र्वे उस आन्दिोन र्ें स्र्वयं भाग न िे रिे िों। उन्िें देखकर िर्ें अरस्तू की गततिहन पे्ररेरकिल्क्त458, (र्ोटर इम्र्ोबबशिस) याद आ जाती िै।

हिन्दू िास्त्र अहिंसा को सर्वोच्च कतव्मय र्ानतिें, परन्तुर्वे ेऐसे अर्वसरों का भी संकेत करते िैं, जब अहिंसा के इस शसद्धान्त से र्वर्चशित िोने की भी अनुर्तत दह जा सकती िै। िर् ऐसे सर्ाज र्ें रिते िैं, ल्जसके कुछ कानून, संहिताएं और प्रथाएं िैं, जो आदि मनिं ंिैं, बल्लक उनर्ें कुछ बीच का सर्झौते का-सा र्ाग मतनकािा गया िै, ल्जसर्ें सेना का, पुशिस का और जेिों का प्रयोग िोता िै। ऐसे सर्ाज र्ें भी िर् सब र्नुष्यों के प्रतत पे्रेर्-भार्व से पूण मजीर्वन बबता सकते िैं। आदि मको सम्र्ुख रखते िुए और उसे पानेका सतत प्रयत्न करते िुए भी हिन्दू ू दृल्ष्टकोण कानूनों और संस्थाओं के औधचत्य को इसशिए स्र्वीकार करता िै, क्योंकक र्नुष्यों के हृदय इतने ेकठोर िैं। "बुद्धधर्ान िोग जानते िैं कक धर् मऔर अधर् मदोनों दूसूरे को कष्ट देनेसे शर्धश्रत िैं।" परन्तु ये सब संस्थाएं तो और अच्छी व्यर्वस्था तक पिुंचने ेकी सीहढयां-भर िैं। यि ठीक िै कक असम्भर्व पूणतमा की खोज से िर्ें अपने-आपको खो बैठने की आर्वश्यकता निं ंिै, कफर भी िर्ें अपूणतमा को िटानेऔर आदि मकी ओर बढनेके शिए तनरन्तर प्रयत्नशीि रिना चाहिए। सभ्यता र्ें प्रगतत की परख इस बात से की जाती िै कक ऐसे अर्वसर ककतने े आए और र्वेककस ढंग के थे,े ल्जनपर तनयर् का अपर्वाद करने की अनुर्तत दह गई। बिाकों के अध्यापन की पिार्वर्वक पद्धततयों को और अपराधधयों को हदए जानेर्वािे बबरमतापूण मदण्डों को सर्ाप्त ककया जाना चाहिए। अहिंसा के आदि मको िर्ें एक श्रेष्ठ िक्ष्य र्ानकर चिना चाहिए और इससे िुए र्वर्वचिनों को खेद के साथ िह अंगीकार करना चाहिए। ईसा और उसके शिष्यों के उपदिेों र्ें भी इससे बिुत कुछ शर्िता-जुिता दृल्ष्टकोण प्राप्त िोता िै।

ईसाई-दृल्ष्टकोण

458 र्वर्वष्णुपुराण ,3-9

'ओलड टेस्टार्ेंट' (ईसाइयों की प्राचीन धर् मपुस्तक) र्ें दो वर्वचारधाराएं िैं, एक िाल्न्तपूण[4]म59 और दूसूरह, जो अधधक प्रर्ुख िै, तनल्श्चत रूप से सैन्यर्वादह। 'ओलड टेस्टार्ेंट' का परर्ात्र्ा युद्ध और कर्त्-आर् की अनुर्तत देता िै। इस सैन्यर्वादह र्नोर्वृत्त को अपनाने के कारण िह राष्र नष्ट िो गया।

ईसा की शिक्षा क्या थी, यि प्रश्न ऐसा निहं िै, ल्जसका तनणयम युद्ध की वैंधता से असंगत र्वक्तव्यों या दूसूरह ओर बि प्रयोग की अनुर्तत देनेर्वािे र्वक्तव्यों के आधार पर ककया जा सके। इसका पता तो ईसा के चररत्र और आचरण से िह चिाना िोगा। इस दृल्ष्ट से िर् कि सकतेिैं कक ईसा सब प्रकार की हिंसा का तनषेध करता िै और राष्रों की इच्छा को दूसूरों पर िादने ेके शिए युद्ध की र्नांह करता िै। जब ईसा 'ओलड टेस्टार्ेंट के इस आदेि को उद्धृत करता िै "तू िूत्या न करेगा," तो र्वि इसे और भी वर्वस्तृत र्ित्र्व प्रदान करता िै। र्वि किता िै "जो कोई अपनेभाई से नाराज़ िोता िै, र्वि इस खतरे र्ें िै कक फैसिा उसके वर्वरुद्ध िो जाए।" 'न्यू टेस्टार्ेंट' र्ें एक प्रशसद्ध दृष्टान्त द्र्वारा सैन्यर्वाहदयों के अंधेपन पर प्रकाि डािा गया िै, "जब एक सित्त और सिस्त्र पुरुष अपनेर्ाि की रक्षा करता िै, जब उसकी चीजें िाल्न्त से पड़ी रिती िैं, पर जब कोई उससे भी िल्क्तिाह पुरुष उसपर आक्रर्ण करता िै और उसे िरा देता िै, तो र्वि उससे र्वे ेकर्वच और िस्त्रास्त्र छीन िेता िै, ल्जनपर उसे भरोसा था और िूट के र्ाि को िोगों र्ें बांट देता िै।"[460]

ईसा के इस र्िािर् (दैवीय ज्ञान की स्फुरणा) के, कक परर्ात्र्ा िर् सबका वपता िै, क्राल्न्तकारह तनहिताथ मउन जाततयों के व्यर्विारों के कारण ढंक से गए, ल्जन्िोंनेईसाइयत को अपनाया। 'सर्नम ऑन हद र्ाउंट' (ईसा द्र्वारा एक पिाड़ी पर हदया गया उपदेि) को बड़ा तनरािा-भरा उपदेि सर्झा गया, जो व्यल्क्तयों पर भिे िह िागू िो सके, परन्तु राष्रों पर िागू निहं ंिोता। ईसा की इन उल्क्तयों को, "जो कोई तुम्िारे दाय ेंगाि पर थप्पड़ र्ारे, उसके सार्ने अपना बायांगाि भी कर दो," "बुराई का प्रततरोध र्त करो", "जो तिर्वार उठाते िैं, र्वे तिर्वार से िह नष्ट िो जाएंगे", "यहद र्ेरा राज्य इस संसार र्ें िोता, तो र्ेरे अनुयायी िड़ते; परन्तु अब र्ेरा राज्य यिां निहं ंिै," केर्वि व्यल्क्तयों के पारस्पररक सम्बन्धों से सम्बद्ध बताया गया, ल्जनर्ें क्रोधपूण मप्रततिोध की अपेक्षा र्वर्वािहदयता अधधक सफि शसद्ध िोती िै। ईसा कोई वर्वधान- तनर्ातमा निहं था, और उसका अ-प्रततरोध का शसद्धांत अपने उन थोड़े-से अनुयातययों के शिए था, जो प्रततकूि पररल्स्थततयों से तघरे थे: ईसा ने िर्ें सार्वजमतनक कानून की प्रणािह को सर्ाप्त कर देने को निहं ंकिा। कोई भी संगहठत सर्ाज बि प्रयोग ककए बबना निहंरि सकता। यिां तक कक ईसाई राज्यों को भी अपराधधयों के धगरिों का दर्न करना िोगा और आक्रर्णकाररयों से अपनी रक्षा करनी पड़ेगी। सिस्त्र प्रततरोध ईसा की शिक्षाओंके प्रततकूि निहं ंिै। ईसा ने स्वये बड़े ेउग्र िददों र्ें चोरेल्जन, बेधसैदा और केपरनीर् नगरों की तनन्दा की थी। र्वि स्क्राइबों (जातत-वर्विेषे) और फेरर शसयों पर बिुत कुवपत था। उसने पैसे का िेन-देन करनेर्वािों को कोड़े ेर्ार-र्ारकर र्न्दर से तनकाि हदया था। "और ईसा परर्ात्र्ा के र्न्दर र्ें गया और उसनेर्िाजनों की र्ेजें और घुल्धयां(फाख्ता) बेचनेर्वािों की कुशसययमां ंउिट दहं।" यि आचरण, जो ईसा के प्रेर्पूण मऔर र्ृतु स्वभार्व से बबिकुि असंगत िै और ल्जसकी बुद्ध या गांधी के

459 देखखए र्ैथ्यू , 5-43-44; लयूक,9-51-56

460 लयूक,9-21-22

र्ारिे र्ें कलपना भी निहंकी जा सकती, हिंसा को उधचत ठिराने के शिए प्रस्तुत ककया जाता रिा िै।

सैन्यर्वाहदयों ने ईसा के उस पक्ष पर ज़ोर हदया िै, ल्जसर्ें र्वि किता था कक रुल्क्त सम्प्रदाय के आधार पर िोगी, केर्वि यिूहदयों की, सैर्ेररटन (सर्ारह) िोगों तक की निहं,ं ल्जसने िैरोड को 'श्रृगाि' (िोर्ड़ी) किा था, ल्जसने अंजीर के र्वृक्ष को िाप हदया था, ल्जसने ेसीरोफोतनशियन ल्स्त्रयों को फटकारा था, और ल्जसने ेअनेक बार बड़े उग्र दिदों र्ें फेररशसयों को सांप, पाखंडी, प्रपंची और झूठे किकर तनन्दा की थी, िािांकक र्वि उनका अततधथ बनकर रिा था। अपनी र्ृत्यु के बाद ल्जस राजनीततक उथि-पुथि की उसने प्रत्यािा की थी, उसकी ओर संकेत करते िुए अपनेअनुयातययों को जो हदिाितेुए उसने किा था कक जब उपयुक्त क्षण आ जाए तो र्वे अपनेकपड़े ेतक बेचकर तिवरि खरहद िें। "र् ैंिाल्न्त देनेनिहं आया बल्लक तिर्वार देनेआया िंूं।" उसनेघोषणा की थी कक "जो कोई इन नन्िें-र्ुन्नों को सताए, अच्छा िै कक उसके गिे र्ें चक्की को पाट बांधकर उसे गिरे सर्ुद्र र्ें डुबा हदया जाए।" र्वि बुरे िोगों के र्वर्वरुद्ध बिुत उप था और पश्चात्ताप न करने र्विे पावपयों के प्रतत अत्यन्त कठोर। र्ानर्व जीर्वन अन्तवर्वरमोधों से भरा िै और िर्ें दो बुराइयों र्ें से उसे चुनना िोता िै, जो कर् बुरह िो। ककसी सुतनहदमष्ट पररल्स्थतत र्ें िर्ें अच्छाई और बुराई को तोिकर देखना चाहिए और उस पररल्स्थतत र्ें ल्जससे अधधकतर् र्ानर्व-कलयाण िो, र्विह करना चाहिए। बिुत बार इन दो बातों र्ें से एक को चुनना िोता िै- बड़ा आपरिेन या रोगी की सुतनल्श्चत र्ृत्यु। ईसाई चच मकी िर्ेंशिा िै कक अहिंसा के शसद्धान्त का िलके तौर पर पािन ककया जाए और ईसाई चच मअपने अनुयातययों से यि आयि भी निहं करता कक र्वे "सम्पवत्त या स्त्री या िस्त्रों" को पूण मरूप से त्याग दें।

प्रारल्म्भक हदनों र्ें चच मने युद्धों का प्रततर्वाद भी ककया। जल्स्टन र्ाहटमयर र्ाशसयमोन, ओररगैन, टटुमशियन, साइवप्रयन, िैक्टेहटयस और युसेबबयस सभी ने युद्ध को ईसाइयत से बेर्ेि बताकर उसकी तनन्दा की। क्हिर्ेंट आफ अिेग्जेंडड्रया (ईस्र्वी सन् ्190-225) ने युद्ध की तैयाररयों के र्वर्वषय र्ें एतराज़ ककया और ईसाई गरहबों की तुिना "एक िस्त्रिहन, युद्धिहन, रक्तपातिहन, क्रोधिहन और भ्रष्टहकरणिहन सेना" से की। टटुमशियन (ईस्र्वी सन् ्198-203) ने किा िै कक जब पीटर ने र्ालकस का कान काट शिया, "उसके बाद से ईसा ने सदा के शिए तिर्वार की करतूतों को िाप दे हदया।" हिप्पोिाइटस (ईस्र्वी सन् ्203) रोर्न साम्राज्य को ऐपोकैिहप्स (प्रकाशित र्वाक्य) का चौथा हिंसं्र पिु र्ानता था और युद्ध की सज्जा को इसका एक र्वर्वशिष्ट अंग बतातेुए इसे ईसाई चच मका िैतानी अनुकरण किता था। साइवप्रयन (ईस्र्वी सन् ्257) ने "शिवर्वरों के रक्तपातर्य आतंक के साथ सब ओर फैिे िुए युद्धों" की तनन्दा की। प्रारल्म्भक किा र्ें ईसाई चच मने प्रबितर् राजकीय िल्क्त से अत्याचार-पीडड़त िोने ेपर भी बि-प्रयोग की तनन्दा की; ककन्तुधचयोबोशसयस र्िान (ईस्र्वी सन् ्379-395) के सर्य से, जब ईसाइयत राज्य-धर् मबनी और दुधुचत िो गई, ईसाई धर् मअहिंसा का र्वर्वरोध करता रिा िै। तब से िेकर चच मऔर राज्य के बीच अनेक बार युद्ध िुए िैं और चच मको हिंसा के अनौधचत्य या औधचत्य पर र्वर्वचार करनेका सर्य िह निहं ंशर्िा। पििह तीन िताल्ददयों तक ईसाई चच मसुतनल्श्चत रूप से युद्ध का र्वर्वरोधी रिा। कफर भी जब ईसाइयत राज्य-धर् मके रूप र्ें प्रततल्ष्ठत िो गई, तब युद्ध का प्रर्वेि ईसाई-व्यर्वस्था र्ें िुआ; पििे तो युद्ध को केर्वि सिा र्ाना गया, पर बाद र्ें उसे चच मका िुभािीर्वादम भी प्राप्त िो गया। सतैंीसर्वें अनुच्छेद र्ें किा गया िै कक "ईसाई िोगों के शिए यि र्वैध काय मिै कक र्वे र्ल्जस्रेट (दंडनायक) के आदेि पर िस्त्र

धारण करें और युद्धों र्ें 'भाग िें।" इसर्ें यि निहं ंकिा गया कक न्यायोधचत युद्ध र्ें राष्र की सियता करना नैततक कतव्मय िै; बल्लक यि कक जो वैसा करते िैं, वे ईसाई दृल्ष्टकोण से वैध आचरण कर रिे िैं। कैथोशिक का र्त्तव्य िै कक धर्ात्मर्ा िोगों को "तिवार उठाने का अधधकार" प्राप्त िै. यहद वे उसका उपयोग ककसी न्याय पक्ष के शिए और ककसी व्यल्क्तगत िाभ का ववचार ककए बबना कर रिे िों। सटें टार्स ऐक्वाइनास ने पादररयों को प्रेरणा दह कक वे सैतनकों को उत्साहित करें, क्योंकक "पादररयों का यि कतव्मय िै कक वे न्यायोधचत युद्धों र्ें भाग िेनेके शिए दूसूरे िोगों को िसिा दें और प्रेररत करें।" यहद आज पोप और आकमबबिप िर्ें यि बताते िैं कक वध करना ईसाई-कतव्मय िै, तो यि केवि इसी भावना की अशभव्यल्क्त-र्ात्र िै, जो अब से िताल्ददयों पििे ईसाई-जगत् र्ें आ प्रववष्ट िुई थी। आर० एच० िेग्रोडू ने 1915 र्ें किा था, "यहद नज़ारथ का ईसा, जो ित्रुओंसे प्रेर् करने का उपदेि देता था, आज कफर सिरहर िर्ारे बीच आ सकता - जर्नम को छोड़कर वि और किहंजन् िेना पसन्द न करता - तो तुर् क्या सोचते िो कक विाँिाँ? क्या तुर् सर्झते िो कक वि ककसी चबूतरे पर खड़ा िोकर क्रोध के साथ कि रिा िोता, 'ओ पापी जर्नमीर्वाशसयों, अपनित्रुओं से प्रेर् करो ?' बबिकुि निहं। इसके बजाय वि सीधा र्ोचे पर हदखाई पड़ता, उन िस्त्रधाररयों की सबसे अगिह पंल्क्त र्ें, जो प्रचण्ड उग्रता के साथ युद्ध कर रिे िैं। िां, वि विहंताि और िोिर्ािन िाथों को और र्ारकाट करनेके िस्त्रों को आिीर्वादम देता और िायद खुद एक न्याय की तिवार उठा िेता और जर्नमी के िुओं को प्रततज्ञात भूशर् की सीर्ाओंसे ठीक उसी प्रकार दूरू और दूरू खदेड़ता जाता, जैसे उसनेएक बार व्यापाररयों और सूदखोरों को धर्मल्न्दर से खदेड़ा था।"[461]

"बुराई का प्रततरोध र्त करो" का "बुराई का बि द्वारा प्रततरोध करो" से और "दूसूरा गाि भी सार्ने कर दो" का "कफर चोट करो" से र्ेि बबठाना प्रकाि का अन्धकार से और अच्छाई का बुराई से र्ेि बबठाना िै। इस प्रकार का र्ेि बबठानेकी चेष्टा को केवि र्ानव-स्वभाव की दुबििता के प्रतत ररयायत की दृल्ष्ट से िह देखना उधचत िोगा। ररफॉर्ेिन (पुनगठमन) के युग र्ें युद्ध के ववरोध र्ें एक उत्कृष्ट प्रततवाद कणगमोचर िोता िै। इरैस्र्स शिखता िै, "ऐसी कोई वस्तु निहं, जो युद्ध की अपेक्षा अधधक पापर्य, ववपवत्तर्य और अधधक नीचतापूण,म संक्षेप र्ें र्नुष्य के शिए अिोभन िो, कफर ईसाई के शिए तो किना िह क्या । युद्ध पिावक से भी बुरा िै। र्नुष्य के शिए कोई जंगिह पिु इतना ववनािकारह निहं िै, ल्जतना कक उसका अपना साथी र्नुष्य। जब पिु आपस र्ें िड़ते िैं, तो वे उन िस्त्रों से िड़ते िैं, जो उन्िें प्रकृतत ने हदए िैं, जबकक िर् र्नुष्य पारस्पररक ित्या के शिए उन िस्त्रों का प्रयोग करते िैं, ल्जनकी प्रकृतत ने कभी कलपना भी निहं की थी। कफर पिु जरा जरा-सी बात पर आक्रर्ण के शिए क्रुद्ध निहं िो उठते, बल्लक वे तभी आक्रर्ण करते िैं, जब वे या तो भूख के र्ारे पागि िों, या जब खुद उनपर आक्रर्ण ककया जाए, और या जब उन्िें अपने बच्चों की सुरक्षा पर आंच आने का डर िो। परन्तु िर् र्नुष्य बबिकुि थोथेबिानों पर, युद्ध के रंग-र्ंच पर ककतने दुखान्त अशभनय करते िैं?" 'अपने ित्रुओं से प्रेर् करो' र्ें अपने साधथयों के प्रतत एक उधचत र्नोभाव रखने का आग्रि िै। इसर्ें केवि अ-प्रततरोध की र्ांग निहं- अप्रततरोध र्ें घृणा और आन्तररक हिंसा िेष रि जाती िै और आधारभूत िल्क्त-िािसा अछूती बच जाती िै- बल्लक प्रेर् की भावना की र्ांग िै। क्रास की शिक्षा यि िै कक िर् संसार को युद्ध जैसी बुराई से तब तक

461

'दसस्पेकजर्नम ी,'कूिऐंडपौटरपृष्ठ 8

र्ुक्त निहंकर सकते, जब तक िर् उससे उत्पन्न िोनेर्वािे कष्टों को सिन करनेको उद्यत न िों। जिां ंतक सम्भर्व िो, िर्ें बबरमता से और अपनेआसपास के संसार की ित्या-भरह र्वासनाओंसे अिग रिने ेका प्रयत्न करना चाहिए और यि आिा करनी चाहिए कक ककसी न ककसी हदन स्र्वस्थतर शसद्धान्त के र्वर्वकास का र्ौका आएगा। घृणृा से उन्त्त इस संसार र्ें िर्ें प्रेर् के शिए एक ज्योतत जिानी िह िोगी।

किा जाता िै कक बुराई को केर्वि बि द्र्वारा िह संयत रखा जा सकता िै और इस संघष मऔर हिंसा से भरे संसार र्ें यहद न्याय की रक्षा न की जाए, तो र्वि र् र जाएगा। पर क्या प्रेर्-भार्वना पर दृढ रिने ेके पररणार्ों की धचंता करने का कार् िर्ारा िै? इसका ध्यान परर्ात्र्ा रखेगा कक बुराई पर अच्छाई की र्वर्वजय िो। िर्ारा कतव्मय यि िै कक सर्वदमा और सर्वत्रम प्रेर् के र्वर्वधान को िागू करें और कभी भी कायसमाधकता, व्यार्वािररकता, प्रततष्ठा, सम्र्ान, सुरक्षा आहद के झर्िों र्ें, जो सबके सब भय और अिंकार से उत्पन्न िोते िैं, पड़कर रि न भूिें। एक सार्ान्य (सांझे)े वपता र्ें र्वर्वश्र्वास रखते िुए िर् ऐसी प्रणािह के साथ कभी सिर्त निहं ंिो सकते, जो तनतान्त अर्वर्वचार के साथ र्नुष्यों के दिों का र्वर्विाि करती िै। ईश्र्वर र्ें र्वर्वश्र्वास करने ेर्वािों को युद्ध का, बुद्धधर्त्ता और प्रेर् की भार्वना का र्वर्वरोधी िोनेके कारण, र्वर्वरोध करना िह िोगा। आप इसे चािो ककसी तरि क्यों न तछपाएं ककन्तु युद्ध िोगों के एक सर्ूि का िोगों के दूसूरे सर्ूि पर ित्या और र्वर्विाि द्र्वारा अपनी इच्छा िादने ेका प्रयत्न-र्ात्र िै। युद्ध की जड़ें िोगों के हृदय र्ें, अशभर्ान और भय र्ें, ईष्याम और स्र्वाथ मर्ें िैं, चािो ये दुबिुमताएं राष्रहय बाना भी धारण क्यों न कर िें।

क्या िर् 'पर्वर्वत्र', 'न्याय्य' या 'रक्षात्र्क' युद्धों र्ें भाग निहं ंिे सकते? इस र्वर्वषय र्ें ईसा का उत्तर स्पष्ट और तनश्चायक िै। जब ईसा के शिष्य ित्रुओं से उसे बचाना चािते थे, उनके उद्देश्य से बढकर तो और कोई पर्वर्वि उद्देश्य िो निहं सकता। र्वे केर्वि पृथृर्वी के राज्य के शिए निहं,ं अवपतु परर्ात्र्ा के राज्य के शिए िड़ना चािते थे,े ल्जसके सार्ने देिभल्क्त का बड़े ेसे बड़ा दार्वा फीका पड़ जाता िै। परन्तुइस संसार का उद्धार िस्त्रों के प्रयोग द्र्वारा निहं िो सकता। इसका उद्धार केर्वि कष्ट सिन पूण मधैय मऔर क्रॉस के बशिदानपूण मप्रेर् द्र्वारा िह िो सकता िै। कोई बदिा निहं,ं कोई प्रततिोध निहं–ंन राष्रहय, न व्यल्क्तगत। िर् यि निहंकि सकतेकक प्रेर् के शसद्धान्त को केर्वि व्यल्क्तगत सम्बन्धों तक िह सीशर्त रखा जाए और उसका क्षेि सार्वजमतनक तथा अन्तराष्मरहय सम्बन्धों तक न बढाया जाए। ईसाई चेतना उन्नत िो रिह िै; और इसीशिए पन्द्रि र्वष मपिि िैम्बेथ र्ें िुए एक सम्र्ेिन र्ें आकमबबिपों और बबिपों ने घोषणा की थी कक युद्ध "ईसा के र्वर्वचारों से बेर्ेि िै।" िर् यि अनुभर्व करनेिगे िैं कक यहद िर् सभ्य सर्झे ेजाना चािते िैं, तो िर्ें युद्धों का आर्ूि उन्र्ूिन करने का प्रयत्न करना चाहिए। यि र्ानर्वीय चेतना का र्वर्वकास जैसी एक र्वस्तु िै- सिह और गित के िर्ारे र्वर्वर्वेक र्ें र्वृद्धधि।

युद्ध की भ्राल्न्तयां ं

ल्जसे िर् गित सर्झते िैं, उसके कारण इस संसार ने इतनी र्वेदना-कूरूरता निहं ंसिह, ल्जतनी कक ल्जसे िर् ठीक सर्झते िैं, उसके कारण। अपराधधयों और गुण्डों द्र्वारा संसार को हदया गया कष्ट भिे आदशर्वादियों के

दुषुकर्ों के पररणार्स्वरूप शरिे् कष्टों की तुिना र्ें बुित कर् िै। धार्शकम युद्धों को ईसाई चच मका आिीवादम प्राप्त था। न्यायोधचत यंत्रणा न केर्वि अपराधधयों को दह जाती थी, अवपतु सत्य उगिर्वाने के उपाय के रूप र्ें साक्षक्षयों को भी सिन करनी पड़ती थी। अलप र्वेतन के शिए कठोर पररश्रर् करर्वाने, बिा-श्रर्, और दासता को न्यायोधचत र्ाना जाता था। अच्छे नागररक युद्धों को भी सभ्य जीर्वन की स्र्वाभावर्वक और ितनरहित संस्था र्ानतेरिे िैं। परन्तु िर्ारे र्वंशज राष्रों के रूप र्ें िर्ारे सार्ाल्जक व्यर्विार को उसी प्रकार िज्जाजनक सर्झेंगे, जैसे आज िर् बिपूर्वकम सती प्रथा और दास-व्यापार को सर्झते िैं और िर् अपनेर्वंशजों के दृल्ष्टकोण को ल्जतना िीघ्र सर्झ सकें, र्ानर्व-जातत के शिए उतना िह भिा िोगा। इन र्ार्िों र्ें िर्ें कृबत्रर् उपायों द्र्वारा बबरमता की दिा र्ें रखा जा रिा िै। र्वास्तवर्वक खतरा दुष्ट िोग निहीं, अवपतु कानून का पािन करनेर्वािे, दयािु और पररश्रर्ी साधारण नागररक िैं, ल्जनपर राष्रहयता का उन्र्ाद सर्वार िै, क्योंकक उधचत और अनुधचत के बारे र्ें उनके वर्वचारों को जन-बूझकर और सुयोल्जत ढंग से वर्वकृत कर हदया गया िै। कोई बुराई सार्ाल्जक प्रणािह र्ें ल्जतनी अधधक गिरह पैठ जाती िै, उसके वर्वरुद्ध र्नुष्य की अन्तरात्र्ा को जगाना उतना िह अधधक कहठन िो जाता िै। आधारभूत वर्वचारों को, और र्नोर्वेगों से सम्बद्ध जर्ी िुई आदतों को उखाड़नेकी प्रकक्रया बुित कष्टप्रद िोती िै। िर्ें ल्स्थरतापूर्वकम एक युद्धिहन संसार के िक्ष्य की ओर बढना िै। र्ानर्व-स्र्वभार्व र्ूितः सुघट्य िै और इसके भवर्वष्य की संभार्वनाओं की खोज की जानी अभी िेष िै। िर्पिे की अपेक्षा अब अधधक अच्छे बन जानेके बाद िर् अनुभर्व करते िैं कक ल्जतनेअच्छे िर् अब िैं, भवर्वष्य र्ें उससे भी अधधक अच्छे बन सकते िैं। यद्यवप एक अथ मर्ें, परर्ात्र्ा का राज्य पृथ्र्वी पर कभी भी उपिदध निहंिोगा, कफर भी एक और अथ मर्ें यि सदा उपिदध िो रिा िै। संसार कभी भी बबिकुि र्िर्ा-िून्य निहं ंरिा, भिे िह र्वि र्वैसा न िो, जैसाकक उसे िोना चाहिए। बुराई को र्ानना- अनुभर्व करना- जो र्ानर्व-स्र्वभार्व और र्ानर्व-संस्थाओंर्ें वर्वद्यर्ान िै, और ल्जसके कारण आज संसार र्ें आग िगी िै, आगे प्रगतत की प्रस्तार्वना िै। िर्ें िाल्न्त के शिए दृढ संकलप को वर्वकशसत करना िै और ऐसी पररल्स्थततयां स्थावपत कर देनी िैं, ल्जनर्ें युद्ध का अशभयान आकषकम न रिे। र्ानर्व-स्र्वभार्व सारतः अनुदार िै और उसे अकर्मण्य भी किा जा सकता िै। केर्वि तीव्रतर् आर्वश्यकता िह उसे जगाकर सकक्रय बना सकती िै। यि केर्वि आन्तररक और बाह्य आर्वश्यकताओं की प्रेरणा के अधीन िह परर्वततमत िोता िै; परन्तु परर्वततमत यि अर्वश्य िोता िै। यहद र्वि परर्वततमत न िोता, तो र्नुष्य कभी का एक िुप्त जातत बन चुका िोता। र्ानर्व र्न की भांतत सुघट्य र्वस्तु और कुछ निहं ंिै। र्नुष्य अभी भी तनर्ाणम की दिा र्ें िै; उसका तनर्ाणम पूण म निहं ंिो चुका।

सभ्य राष्र धीरे-धीरे यि सर्झने िगे िैं कक युद्ध वर्वर्वादों का तनणयम करानेका पुराना पड़ गया तरहका िै। आधुतनक युद्ध र्ें उद्देश्यों के अनुपात र्ें इतनी अधधक िित्या िोती िै कक अतीत र्ें युद्ध को उधचत ठिराने के शिए जो युल्क्तयां ंऔर र्नोभार्व प्रस्तुत ककए जाते थे,े र्वे अब सर्थनमीय निहं रिे। ित्या करना और जीर्वन को असह्य बना देना र्ानर्व-स्र्वभार्व का अतनर्वाय मअंग बताया गया िै। स्पेंगिर शिखता िै, "र्नुष्य शिकार-जीर्वी पिु िै। र्ैं इस बात को बार- बार किूंगा। धर् मके सब आदि मऔर सार्ाल्जक नैततकतार्वादह, जो इससे कुछ आगे िोना या जाना चािते िैं, ऐसे शिकार-जीर्वी पिु िैं, ल्जनके दांत टूटे िुए िैं, और जो दूसरों से इसशिए घृणा करते िैं कक र्वे आक्रर्ण करते िैं, ल्जनसे र्वे बड़ी सतकमता के साथ बचतेरिते िैं।" राष्रहयता के वर्वषय र्ें िर्ारा र्ें िह

प्रकाशित एक पुस्तक र्ें र्विह िेखक शिखता िै, "युद्ध की आर्वश्यकता न तो राष्रहयता र्ें तनर्वास करती िै, न राष्र र्ें, अवपतु इसका तनर्वास तो र्ानर्व-स्र्वभार्व र्ें िह िै। ऐसे किा की प्रतयािा करना, ल्जसर्ें र्नुष्य दूसूरे र्नुष्य-सर्िूों से संघष मकरने के शिए अपने- आपको सर्िूों के रूप र्ें संगहठत करना छोड़ देंगे, केर्वि आर्ािदिमोक (यूटोवपया) की कलपना प्रतीत िोती िै।"[462] र्नुष्य कोई शिकार-जीर्वी पिु निहं िै, जो अपनेतनबिमतर पड़ोशसयों को सदा खा िह जाता िो। र्ानर्व-प्राणी हिंस्र पिुओंके सर्ान निहं िै। कफर, र्ानर्वीय बतार्वम र्ुख्यतया अधधगत िै, सिज प्रर्वृत्तक निहं। इस बतामर्व का तनधारमण जीर्वाणु-कोषों द्र्वारा निहंिोता, जैसे ततैयों और चींहटयों के बतार्वम का िोता िै। सर्ुद्र पार जानेके शिए िर्ारे पंख या र्छशियों की तरि पर निहं ितनकिते, अवपतु िर् र्वर्वर्ान और जिाज़ बनाते िैं। र्नुष्य की इस वर्विेषेता के कारण िह र्वि िेषे सृलूष्ट से उत्कृष्ट िै। र्वि पररल्स्थततयों के अनुकूि अपनेबतार्वम को ढाि सकता िै। युद्ध-प्रेर् कोई सिज प्रर्वृत्तक र्नोर्वृत्त निहीं, अवपतु अधधगत र्ानशसक आदत िै। आज का सर्ाज चािता िै कक िर् युद्धक्षेत्र र्ें जाकर कष्ट उठाएं और र्र जाएं, जैसे अन्य कािों र्ें यि चािता था कक िोग आत्र्बशि दें या जगन्नाथ के रथ के नीचेिेटकर र्र जाएं। िर्ारे र्न सार्ाल्जक व्यर्वस्था द्र्वारा वर्वकृत कर हदए गए िैं। बर्ों और गोिों के भय से बढकर भय सर्ाज का िै। इसे झाड़ फेंकने के शिए िर्ें र्ानशसक और सार्ाल्जक रुहढयों की िहक र्ें से बािर तनकिना िोगा। िर्ें र्नोर्वैज्ञातनक र्वातार्वरण को बदिना िोगा। पिुओं को पाितू बनाए जानेसे पििे शिकारह एक सार्ाल्जक कतव्मय को पूरा करता था, क्योंकक र्वि शिकार द्र्वारा खाद्य की व्यर्वस्था करता था। आज उस प्रयोजन के शिए शिकारह की आर्वश्यकता निहं िै; कफर भी शिकार िोकाचार (फैिन) की र्वस्तु बना िुआ िै, क्योंकक 'जीर्वर्वका के शिए शिकार' का स्थान 'आनन्द के शिए शिकार' ने शिया िै। इसी प्रकार जब िर् असभ्य आक्रर्णकाररयों से तघरे रिते थे, तब सैतनक जीर्वन को अधधक सुसह्य बनानेर्ें सिायक िोता था, पर आज युद्ध अतनर्वाय मिै क्या? केर्वि र्नुष्य िह एक ऐसा प्राणी िै, जो ऐसे कारणों से ित्या करता िै, जो कुछ कर् या अधधक आधधर्वर्वद्यक (र्ेटाकफल्ज़कि) िैं, ककसी प्रदेि पर पुराने पड़ गए दार्वे के शिए, ककसी सुन्दरह को पाने की बचकानी-सी इच्छा के कारण, सम्र्ान के शिए या ककसी एक स्थान के बजाय ककसी दूसूरे स्थान पर सीर्ा-रेखा खींचनेके शिए। जब ककसी संस्था को और आगे चािते रिने की आर्वश्यकता सर्ाप्त िो जाती िै, तो िर् अपनी उन अधधगत रुधचयों को तृपूत करने के शिए, जो दहघकमिाहन आदत के कारण उत्पन्न िो जाती िैं, अर्वास्तवर्वक कारण गढ िेते िैं। कुछ सर्य तक युद्ध राजाओंतथा उच्चतर र्वग मके िोगों के शिए एक क्रीड़ा-प्रततयोधगता-र्ात्न था, ल्जसर्ें पुरस्कार सम्पवत्त और सम्र्ान थे।'[463] युद्ध अपने- आप र्ें एक िक्ष्य बन गया था, एक उत्तेजनार्य खेि, पूंजीपततयों का एक तनहित स्र्वाथ।म जो िोग युद्ध र्ें भाग िेते िैं, र्वे बुरे आदर्ी निहं िोते, जोकक यि सर्झते िों कक र्वे कोई बुरा कार् कर रिे िैं, अवपतु र्वे भि

---

462 'नैनशिज्र्', पृषूठ 335

463 चालस मसाग्रोबोस 'हद राइज़ आफ हद यूरोवपयन शसवर्विाइज़ेिन' र्ें शिखता िै, "युद्ध को (र्ध्ययुग र्ें) अर्ीर िोग कोई दुभाग्मय निहं सर्झतेथे, अवपतु उसे एक आनन्द की र्वस्तुसर्झतेथे, और यिां तक कक उसे रातु के राज्य को िूटकर या रातु को कैद करके और उसकी प्राण रक्षा के शिए धन िेकर सम्पवत्त प्राप्त करने का सुअर्वसर सर्झते थे। कभी-कभी युद्ध के स्थान पर एक िह देि के अशभजातर्वग मके िोगों र्ें पििे से तय की िुई िड़ाइयों का आयोजन ककया जाता था। टूनार्मेंट का र्ूि रूप यिह था, ल्जसर्ें दोनों पक्षों के िोग युद्ध केसे िह रास्तों से िड़ते थे और ल्जन प्रततपक्षक्षयों को र्वे घोड़ों से धगरा देतेथे, उन्िें कैद कर िेतेथे और धन पाने पर िह उन्िें छोड़ते थे।"

आदर्ी िोते िैं, ल्जनका यि पक्का वर्वश्र्वास िोता िै कक र्वे ठीक कार् कर रिे िैं। जब तक सत्ता और सफिता की पूजा िोती िै, तब तक सैतनक परम्परा, अपनेयांबत्रक अर्ानर्वता के आधुतनक रूप र्ें फिती-फूिती रिेगी। िर्ें अपनेजीर्वन-र्ूलयों को बदिना िोगा : िर्ें यि र्ानना िोगा कक हिंसा सर्ुदाय-भार्वना का दुभामग्यपूण मउलिंघन िै और िर्ें संतोषजनक सम्बन्ध स्थावपत करनेके अन्य उपाय खोजने िोंगे। ककसी जगि बनाडम मिा ने किा िै कक ककसी र्वस्तुतः सभ्य सर्ाज र्ें कोड़ों की सज़ा असंभर्व िोगी, क्योंकक ककसी भी व्यल्क्त को इस बात के शिए तैयार निहं ंककया जा सकेगा कक र्वि ककसी को कोड़े ेर्ारे। परन्तु आज ल्स्थतत यि िै कक कोई भी भिा जिे का शसपाि एक रुपया िेकर कोड़े ेर्ारनेको तैयार िो जाता िै, सम्भर्वतः इसशिए निहं कक र्वि इसे पसन्द करता िै या दंड िास्त्र की दृल्ष्ट से र्वांछनीय सर्झता िै, अवपतु इसशिए कक उससे इस बात की प्रत्यािा की जाती िै। यि सार्ाल्जक प्रत्यािाओंके प्रतत आज्ञापािन की भार्वना िै। युद्ध की करुण और कुल्त्सतता इस बात र्ें िै कक िर्ें कोई बुराई न िोते िुए भी िर् इसर्ें भाग िेते िैं; इसशिए निहं ंकक िर् ककसी प्रकार क्रूर िैं, बल्लक इसशिए कक िर् दयािु िोना चािते िैं। िर् युद्धों र्ें भाग िेते िैं प्रजातंत्र की रक्षा के शिए, संसार को स्र्वाधीनता हदिानेके शिए, अपनी ल्स्त्रयों और बच्चों की रक्षा करने ेके शिए और अपने घर-बार का बचार्व करने के शिए। कर् से कर् िर्ारा वर्वश्र्वास यिह िोता िै।

ल्जस प्रकार नर-र्ांस-भक्षण, नर-र्ुंड-संग्रि जादूगूरतनयों को जीते जी जिा देना, और द्र्वन्द्र्वयुद्ध सर्ाज-वर्वरोधी कृत्य सर्झे जाते िैं, उसी प्रकार युद्ध को भी एक र्िा भयानक बुराई सर्झा जाना चाहिए। िर्ें यि स्र्वीकार करना चाहिए कक नैततक प्रर्ाप (स्टैंडड)म राज्यों पर भी िागू िोतेिैं। जो कर् मव्यल्क्त के शिए बुरे सर्झे ेजाते िै, र्वे िह राज्य द्र्वारा ककए जाने पर उधचत और ठीक निहं बन सकते। युद्ध, जो बड़ी संख्या र्ें िोगों द्र्वारा की गई ित्या और चोरह िै, चािे ककतना भी आर्वश्यक क्यों न िो, िै बुराई िह।

यि युल्क्त प्रस्तुत की जाती िै कक सािस और त्याग, कतव्मय के प्रतत तनष्ठा और बशिदान के शिए उद्यतता इत्याहद कुछ सैतनक गुण िैं। सैतनक का बड़प्पन का दार्वा युद्ध-यंत्र के प्रतत उसकी स्र्वेच्छापूर्वकम र्वश्यता स्र्वीकृतत के कारण िह तो िै। यि युद्ध के कलपना-धचत्र र्वणनम, उसकी र्हिर्ा और संकटों का र्िाकाव्यों की पद्धतत पर र्वणनम करने ेके कारण िह संभर्व िुआ िै। युद्ध को सभ्यता और प्रगतत का एक साधन र्ाना जाता िै, सद्गुणों और आनन्द का एक स्रोत।'[464] पुराने ेप्रारल्म्भक हदनों र्ें युद्ध अपेक्षाकृत तनदोष र्वस्तु थे, र्ुक्केबाज़ी की प्रततयोधगताओं की एक र्िा की भांतत, ल्जसर्ें योद्धा िोग एक-एक करके आपस र्ें िड़ते थे। यिां ंतक कक र्ध्य युग र्ें 'भी िोग सैतनक पेिा अपना िेते थे ेऔर अपने-आपको प्रततद्र्वन्द्र्वी राष्रों के िाथों

---

464 दृट्के से तुिना कील्जए, "ओलड टेस्टार्ेंट' र्ें न्याय्य और पवर्वत्न युद्ध के सर्वर्वोच्च सौन्दय मका ल्जस धूर्धार् के साथ र्वणनम ककया गया िै, उसकी ओर से केर्वि कुछ भीरु स्र्वप्नद्रष्टाओं ंने अपनी आंखें र्ींच िह िैं.... जो जातत स्थायी िांतत की र्हधचका सदृ शिा से धचपटह रिती िै, र्वि अपने गौरर्वपूण मशिगार्व र्ें सड़-गिकर नष्ट िो जाती िै और उसके सुधार का भी कोई उपाय निहं रिता... युद्ध संसार से कभी सर्ाप्त कर हदया जाएगा, यि शिा न केर्वि बेिूदह िै, अवपतु अत्यन्त अनैततक भी। कलपना कील्जए इससे र्ानर्व-आत्र्ा की अनेक आर्वश्यक और श्रेष्ठ िल्क्तयां ंअलपवर्वकशसत रि जाएंगी और सारा संसार शिकार के एक वर्वर्वाि ल्न्दर र्ें जा पिुंचेगा।" देखखए 'दस स्पेक जर्नमी, िु तथा पोटर (1941), पृष्ठ 59-60

र्वेतन भोगी सैतनकों के रूप र्ें युद्ध के शिए बेच देते थे। इन राष्ट्रों से उनका अपना कोई सम्बन्ध न िोता था। र्वे उन राज्यों के शिए ित्याएं करते थे,े ल्जनके प्रतत उनकी कोई तनष्ठा निहं ंिोती थी। पर आधुतनक युद्ध, ल्जनर्ें आक्रर्ण के बबरम अस्त्रों का प्रयोग िोता िै, ल्जनर्ें जनसर्ुदाय के सबसे असिाय और सबसे कर् ल्ज़म्र्ेदार तत्र्वों का कत्िेआर् िोता िै, ककसी भी राष्ट्र पर आ सकने र्वािे भयंकरतर् वर्वपवत्त िैं। ल्स्त्रयों और बच्चों का नम्बर सबसे पििे आता िै। र्नुष्य की सूझ-बूझ चकर्क पत्थर से इस्पात तक, इस्पात से बारूद तक, बारूद से वर्वषैिह गैस और रोगों के कीटाणुओंतक आगे बढ आई िै। युद्ध अपने सघन स्र्वरूप और दूरगार्ी पररणार्ों के कारण यन्त्रों के आधुतनक संसार र्ें सभ्यता के शिए भयंकर संकट बन गया िै। यि िारहररक हिंसा तथा ित्रु के वर्वरुद्ध घृणा के तनरन्तर प्रचार, दोनों के द्र्वारा र्नोर्वेगों को पिार्वर्वक बना देता िै। यि घर्रेिू नीतत के शिए पद्धतत के रूप तक र्ें आतंकर्वाद का प्रयोग करने के शिए िर्ें तैयार कर िेता िै। बड़े–बड़े वर्वचारकों ने इसके नैततक भ्रष्टता र्वािे स्र्वरूप का र्वणमन ककया िै। सटें आगस्टाइन प्रश्न करता िै, "युद्ध र्ें क्या बात तनन्दा योग्य िै? क्या यि तथ्य िै कक यि उन िोगों को र्ारता िै, जो सबके सब ककसी न ककसी हदन र्रेंगे िी? इस बात के शिए दुबिुमधचत्त व्यल्क्त युद्ध की तनन्दा करें तो करें, ककन्तु धाशर्मक व्यल्क्त निहं कर सकते। युद्ध र्ें जो तनन्दनीय र्वस्तु िै, र्वि िै िातन पिुंचाने की इच्छा, अदम्य घृणा, प्रततिोध की उग्रता और प्रभुत्र्व जर्ाने की र्वासना।" तालस्ताय ने अपने र्िान उपन्यास 'युद्ध और िाल्न्त' र्ें शिखा िै, "युद्ध का उद्देश्य ित्या िै; इसके उपकरण िैं- जासूसी, द्रोि और द्रोि के शिए प्रोत्सािन, तनर्वाशसयों का वर्वनाि, सेना की आर्वश्यकताएं पूरह करने के शिए उन्िें िूटना या उनका सार्ान चुरा िेना और शर्थ्याभाषण, ल्जसे सैतनक चािाकी किा जाता िै। सैतनक पेिे के िोगों की आदतें िैं- स्र्वाधीनता का अभार्व अथामत ्अनुिासन, सुस्ती, अज्ञान, क्रूरता, व्यशभचार और र्हदरापान की उन्र्त्तता।" फ्रेडररक र्िान ने अपने र्न्त्री पोडेर्वेर्वलस को शिखा था, "यहद ईर्ानदार आदर्ी बननेसे कुछ िाभ िोता िो, तो िर् ईर्ानदार आदर्ी बनेंगे, और यहद ठग बनना आर्वश्यक िोगा, तो िर् ठग बनकर रिेंगे।"[465] जो कोई भी युद्ध के कारण िोने र्वािे प्रर्ापों की सार्ान्य धगरार्वट से, युद्ध के कष्टों और आतंकों से और र्ानर्व जातत की यंत्रणा से पररधचत िै, र्वि कभी भी र्वीरत्र्व और वर्वजयों का अततरंजना के साथ र्वणमन निहंकरेगा। युद्ध र्ें िर्ें सब अपराध एक जगि घनीभूत रूप र्ें हदखाई पड़ते िैं। ड्यूक आफ र्वैशिंगटन ने किा था, "इतनी बात र्ेरह र्ान रखो कक यहद तुर्ने युद्ध का केर्वि एक भी हदन देख शिया, तो तुर् सर्वमिल्क्तर्ान परर्ात्र्ा से यि प्राथमना करोगे कक तुम्िें किर युद्ध की एक घड़ी भी न देखनी पड़े।े" िाओत्से का कथन िै कक "वर्वजय को अन्त्येल्ष्ट संस्कार की वर्वधध द्र्वारा र्नाया जाना चाहिए।"[466]

किा जाता िै कक युद्ध तो एक ऐसी बुराई िै, ल्जससे बच पाना सम्भर्व निहं ंिै; यि एक वर्वपवत्त िै, परर्ात्र्ा की ओर से भेजा गया दैर्वीय कोप, एक प्राकृततक र्िावर्वपवत्त, भूकम्प या तूफान, एक ऐसी र्वस्तु ल्जसका

---

465 10-25। तुिना कील्जए, "ककसी भी िासक के शिए अपनी गुप्त र्ित्र्वाकांक्षाओं को तछपाने का सबसे अच्छा तरहका यि िै कक र्वि अपनी गुप्त योजनाओं को प्रकट करनेके शिए उपयुक्त सर्य आने तक िाल्न्तपूणम र्नोभार्वों का प्रदिमन करता रिे।" - फ्रेंडररक र्िान् ्'पोशिहटकि टेस्टार्ेंट' (1768)

466 ताओ का ग्रन्थ, 31

व्यल्क्तयों से कोई सम्बन्ध निहं ंिै। असभ्य आक्रान्ताओं का आगर्न हटड्डयों के दि या रोगों के कीटाणुओंके बादि के आक्रर्ण से शरि्ता-जुिता िै और िर्ें उस आक्रर्ण का प्रततकार बि-प्रयोग द्र्वारा करना चाहिए। परन्तु युद्ध केर्वि पररा्त्रा के कृत्यों के रूप र्ें या प्रकृतत के तनयऱों के अनुसार निहं ंिोते; र्वे ेतो र्नुष्यों द्र्वारा, और जो प्रशिक्षण र्नुष्यों को हदया जाता िै, उसके द्र्वारा रचे जाते िैं। र्वे तब तक अतनर्वाय मिैं जब तक िर् िल्क्त की राजनीतत को स्र्वाभावर्वक ऱानतेिं। यहद न्याय और सहिष्णुता की ऱान्यताओंको सत्ता प्राप्त करने ेके उद्देश्य के अधीन कर हदया जाएगा, तो 'जंगि के कानून' (अराजकता) पर र्वर्वजय निहंपाई जा सकती। यहद राजनीततक यथाथर्वमाद का अथ मयि िै कक युद्ध को स्र्वाभावर्वक ऱाना जाए तो िर् ऱानर्वीय स्र्वतन्त्रता को अस्र्वीकार कर रिे िोतेिं। पृथ्र्वी पर िाल्न्त की स्थापना एक र्वर्वश्र्वास का काय मिै, तनयततर्वाद के र्वर्वरुद्ध स्र्वतन्त्र संकलप का एक काय म!

कुछ िोग किते िैं कक जब घर र्ें आग िगी िो, िर्ें आग का र्ुकाबिा आग से करना चाहिए; पर अन्य िोगों का र्वर्वचार िै कक पानी अल्ग्न-ज्र्वािाओं को बुझा सकता िै, आग निहं। "अस्त्र अस्त्र से िह िान्त िोता िै।"[467] यहद िर् भी बि र्ें िह र्वर्वश्र्वास रखते िैं, तो िर् उन नाल्ज़यों को दोष निहं दे सकते, जो ऱानर्वीय संकलप को तोड़ने के शिए बि का सुस्पष्ट, र्वैज्ञातनक और तनष्ठुर रहतत से प्रयोग करते िैं। पर क्या िर् बि-प्रयोग और धर्कान े की नीतत अपनाकर फाशसज्र् को परास्त कर सकतेिं, जबकक इन्िहं ंनीततयों पर र्वि फिता-फूिता िै? िऱारह युल्क्त यिी िै कक आज सभ्यता की परम्परा को एक नये प्रकार की असभ्यता (बबरमता) से खतरा पैदा िो गया िै; यि नई असभ्यता अतीत की ककसी भी िल्क्त की अपेक्षा अधधक दुजेय िै, क्योंकक इसके पास अत्यधधक िल्क्तिाि र्वैज्ञातनक और तकनीकी उपकरण िैं। इस बबरमता की र्ुख्य र्वर्विेषता एक प्रकार का साऱाल्जक यन्त्रीकरण िै, जो किा और संस्कृतत को, र्वर्वज्ञान और दिनम को सत्ता के शिए संघष मर्ें साधन से अधधक कुछ निहं सझ्ता। उसके शिए कुछ पुनीत निहं ंिै, न पुरुष, न स्त्री, न बच्चा, न घर, न र्वर्वद्यािय, न धर्।म राज्य को एक र्विािा सऱाज के रूप र्ें संगहठत ककया गया िै और सम्पूण मभौततकर्वादह प्रणािह को कक्रयाल्न्र्वत कर हदया गया िै। नाज़ी जर्नम, जिां ंसैतनकर्वाद हिंस्र राज्य का प्रर्ुख कृत्य िै, बि के शसद्धान्त का चरर् उदािरण िै। िाड मबालडर्वर्वन के इस प्रशसद्ध र्वक्तव्य का, कक रक्षा का एकऱात्र उपाय आक्रर्ण िै, अथ मयि िै कक यहद िर् अपनी रक्षा करना चािते िैं, तो िर्ें ल्स्त्रयों और बच्चों को ित्रु ुकी अपेक्षा भी अधधक िीघ्रता से ऱार डािना िोगा। यहद ित्रु ुर्वर्वषैिह गैस का प्रयोग करता िै, तो िर्ें भी र्वैिह करना िोगा। यहद ित्रु अतनर्वाय मसैतनक भती को अपनाता िै, तो िर्ें भी र्वैिह अपनानी चाहिए। ित्रु को परास्त करनेके शिए िर्ें भी उसके सऱान बनना िोगा। शरि् राष्ट्रों को सर्वाांगीण युद्ध के यंत्र बन जाना िोगा। िर् किते िैं कक प्रजातंत, सहिष्णुता और स्र्वाधीनता के शसद्धान्तों को अस्थायी रूप से कुछ देर के शिए छोड़ना िह िोगा। िर् अपनेशिए भी र्वैिह िासनतंत्र अपनाएंगे, ल्जसे अपनाने के कारण िर् अपनेित्रुओं से घृणा प्रदशितम करते िैं। िर्ें बुराई का र्ुकाबिा बुराई से करना िोगा, यिांतक कक िर् स्र्वयंभी र्वैिह बुराई बन जाएं, ल्जसके र्वर्वरुद्ध िर् िड़ रिे िैं। ित्रुओंको जीतना तो दूर रिा, िर् ित्रुओंको यि अर्वसर दे

467 अस्नेअस्त्रेणिाम्यतत

 रि ि कक र्वे िर्ें ठीक अपनी प्रततर्ा बना िें।468 रूस के नार् हदए गए स्टाशिन के इस सन्दिे से यि बात स्पष्ट िो

जाती िै कक यि खतरा ककतना बड़ा िै, "अपनी सम्पूण मआत्र्ा के साथ ित्रु ु से घृणा ककए बबना उसे िरा पाना असंभर्व िै।469 िर् अपनेउद्देश्य अपने ित्रुओंके उद्देश्यों से शभन्न बताते िैं, परन्तु िर् साधन ठीक उनके जैसे हि अपनाते िैं। िर्ारा र्वर्वश्र्वास िै कक प्ेरेर् का र्वर्वकास करनेके शिए िर् तनिंसं घृणा का प्रयोग कर सकतेिैं, और अधधक स्र्वतन्त्रता पाने के शिए सर्वाांगीण बि प्रयोग का। यि तो धर्वमर्वचारिहनता और अन्याय र्ें प्रततयोधगता िै; परन्तुइसका पररणार् आत्र्ा का एक ऐसा पागिपन िोगा, ल्जसका कोई इिाज िह न िोगा। टार्स ऐक्र्वाइनास का कथन िै, "अच्छे उद्देश्यों के शिए भी िर्ें उधचत र्ागों का िह अर्विम्बन करना चाहिए, गित र्ागों का निहं।"

---

468 सर ऐडर्वडमधग्रग, "यहद यि शसद्ध करने के शिए कक िस्त्र उठाना र्ानर्वता के र्वर्वरुद्ध अपराध िै, र् ैंस्र्वयं ंभी िस्त्र उठा ि,ू तो र् ैंअर्वश्य िह अपने उस पड़ोसी की अपेक्षा कुछ भिा निहं िंूू, जो यि शसद्ध करने के शिए िस्त्र उठाता िै कक र्वि उनका प्रयोग र्ेरह अपेक्षा अधधक अच्छी तरि करना जानता िै और इसशिए उसे र्ुझपर िासन करनेका अधधकार िै। उसका और र्ेरा उद्देश्य, उसकी और र्ेरह पद्धतत ठीक एक जैसी िै। या तो र्ुझे ेउसपर बिपूर्वकम िासन करना िै या उसेर्ुझपर ।" - फेथ ऑफ ऐन इंगशिर्ैन'

469 बबस्र्ाकम ने फ्रांसं के प्रतत जर्नमी के र्वर्वद्र्वेष को इस कठोर र्वक्तव्य र्ें अशभव्यक्त ककया था, "फ्रांसीशसयों को केर्वि आंखें हि आंखें िेष रिने हदया जाए, ल्जनसे र्वे रो सकें।"

प्रथर् र्वर्वश्र्वयुद्ध र्ें अन्र्सस्ट हटसैनार ने 'इंग्िैंड के प्रतत घृणा का एक गीत' शिखा था:

तुर् धचरस्थायी घृणापूर्वकम घृणा करोगे।
िर् अपनी घृणा कभी त्यागेंगे निहं।
जि के नार् पर घृणा, स्थि के नार् पर घृणा
शसर से घृणा, िाथ सेघृणा
िथौड़े ेसे घृणा, र्ुकुट से घृणा
घुटते िुए सात करोड़ िोगों की घृणा,
िर् एक िोकर प्यार करते िैं और एक िोकर घृणा करतेिैं
िर्ें अपने ित्रु से घृणा िै, केर्वि एक इंग्िैंड से।

(अंग्रेजी अनुर्वाद, बारबारा िेंडरसन द्र्वारा)

18र्वीं िताददह का एक िंगेररयन िोक-गीत इस प्रकार िै:

"ओ ग्र्यार, ककसी जर्नम को सच्चा र्त सर्झो
चािे र्वि तुम्िारह ककतनी िह खुिार्द क्यों न करे
चािे उसके र्वायदों के पत्र
तुम्िारे िबादे से भी बड़े–बड़े िों
और चािे र्वि (कायर किहं का) उनपर िगा दे
र्वसन्त पूखणर्मा के चन्द्रर्ा ल्जतनी र्ुिर;
पर र्वर्वश्र्वास रखो कक उसके इरादे भिे निहं िैं
'भगर्वान उसकी आत्र्ा को नरक र्ें पटके।

यहद िर् युद्ध को जीतने के शिए द्रवेष और कटुता की भार्वना को जागररत करें तो जब संधथ करने का सर्य आएगा, तब िर् उर्न्ें परे निहं फेंक सकते। यि युल्क्त देना बढह दुःखद भिू ै कक ितु को िरानेके शिए चिो िर् अपने आदिों की उपेक्षा कर दें और उनका उलिंघन कर िें, परन्तु जब उपद्रव िान्त िो जाएगा, तब िर् उर्न्ें किफर से स्थावपत कर देंगे। यहद िर् ित्रु ुको िरानेके शिए ितु की िह पद्धततयों को अपनातिें और यहद, रणभूशर् र्ें वर्वजय पाने के शिए, िर् भार्वना के साथ वर्वश्र्वासघात करते िैं, तो यि सभ्यता की परम्पराओंके साथ वर्वश्र्वासघात िै। युद्ध आर्वेिों को उग्र करता िै, कलपना को उत्तप्त कर देता िै और िर्ें उन्र्ादग्रस्त बना देता िै; और युद्ध द्रवारा उत्पन्न िुई नोंदिा र्ें कोई न्यायोधचत सझौता संभर्व निहं िोता। प्रथर् वर्वश्र्वयुद्ध यद्यवप रणभूशर् र्ें तो जीत शिया गया था, परंतु र्वसाईम के िर्र् र्ें िार हदया गया। र्वसाईम-सल्न्ध से पिपे जो चचाएंम चिह थीं, उनके बीच िायड जाज मने क्हिर्ि के नार् एक ज्ञापन भेजा था, जो िायड जाज मकी पुस्तक 'हद टू थ एबाउट हद पीस रहटहज़' (िाल्न्त-सल्न्थयों के वर्वषय र्ें सत्य) र्ें छपा िै। इस ज्ञापन र्ें उसनेशिखा, "आप जर्नमी से उसके उपतनर्वेि छीन सकतिें, उसके सैन्य बि को घटाकर केर्वि पुशिस दि ल्जतना कर सकतिें और उसकी जि-सेना को घटाकर उसे संसार की पांचर्वें दजे की (बुित िह घहटया) िल्क्त बना दे सकतिें; परन्तु साथ िह, यहद अन्त र्ें जर्नमी को यि अनुर्ान िुआ कक 1919 की िाल्न्त-सल्न्ध र्ें उसके साथ अन्यायपूण मव्यर्विार िुआ था, तो र्वि अपनेवर्वजेताओं से बदिा िेनेके साधन ककसी न ककसी प्रकार ढूंढ िह िेगा। र्वि छाप, गिरह छाप, जो र्ानर्व-हृदय पर चार र्वषों की अभूतपूर्व मर्ारकाट द्रवारा िगी िै, उन र्वषों के बीतने के साथ-साथ िुप्त निहं िो जाएगी, ल्जनर्ें यि र्ियुद्ध की भयार्वि तिर्वार द्रवारा िगी थी। उस दिा र्ें िाल्न्त को बनाए रखना इस बात पर तनभरम िोगा कक उकसिाट के शिए कोई ऐसे कारण न रिें, जो तनरन्तर दििभल्क्त की, न्याय या ईर्ानदारह की भार्वनाओं को उत्तेल्जत करते रिें। परन्तुवर्वजय के क्षणों र्ें प्रदशितम ककया गया अन्याय और दपनम कभी भुिाया जाएगा और न क्षर्ा ककया जाएगा।[470] बाद र्ें िुई घटनाओं के शिए र्वसाईम सल्न्ध भी कुछ कर् ल्ज़म्रेदार निहं िै। उस सल्न्ध के बाद चिे राजनतयक पेंचों र्ें, कुछ राष्ट्रों की वर्वफिता और तनरािा के कारण तथा कुछ अन्य राष्ट्रों की भीरुता और भयातुरता के कारण तनार्वपूण मल्स्थततयां उत्पन्न िोती गईं, यिां तक कक राष्ट्रों के नेता उत्तेल्जत िो उठे, पागि िो गए और उर्न्िेंसंसार को अल्न्न-ज्र्वािाओं र्ें झोंक हदया। संभर्व िै कक िर् इस युद्ध को जीत जाएं; पर क्या िर् िाल्न्त को जीत पाएंगे ?

कफर, यहद ककसी वर्ववाद का तनपटारा बि द्रवारा िो जाता िै, तो क्या र्वि तनपटारे का ठीक ढंग िै? ल्जस पक्ष के पास सबसे अधधक जनबि, धन और िस्त्रास्त्र िोते िैं, र्वि जीत जाता िै। इससे यि पता निहं चिता कक उनका िक्ष्य न्यायोधचत था, अवपतुकेर्वि यि पता चिता िै कक उनका िस्त्र बि उत्कृष्टतर था। युद्ध के द्रवारा ककसी सर्स्या का सर्ाधान निहं िोता, शसर्वाय इसके कक कौन-सा पक्ष अधधक िल्क्तिाह िै। जो िोग वर्वश्र्व के संगठनकताम बनना चािते िैं, र्वे यंत्र- सभ्यता की नई तकनीकों र्ें कुिता प्राप्त कर िेते िैं और उनका उपयोग दूवूषत उद्देश्यों के शिए करते िैं, ल्जर्न्ें र्वे नागररकता के प्रतत तनष्ठा और स्र्वतन्त्रता का प्रेर् आहद के नार्ों से तछपाते िैं। यहद युद्ध अन्तराष्ष्ट्रहय जीर्वन का एक स्थायी अंग बन जाए, यहद िर्ें तनरंतर उच्चतता की दिा और

---

[470] (1938), पृष्ठ 405

तनरन्तर चरर् संकट की दिा र्ें जीना िो, तो सभ्यता सदा के शिए अन्धकारर्न िो जाएगी। युद्ध र्ानर्वीय आर्वश्यकताओं को पूरा करने ेका कोई उपाय प्रस्तुत निहं ंकरता: उलटे, यि अपनेपीछे अर्वणनमीय र्ानर्वीय दु:ख और कष्ट िेकर आता िै।

प्रश्न उठता िै, दूसूरा वर्वकलप क्या िै? अपर्ानजनक दासता, ल्जसर्ें प्रत्येक आदि मऔर पररष्कृत र्वस्तु सर्ाप्त िो जाएगी और आध्याल्त्क प्रगतत असम्भर्व िो जाएगी : एक र्नृंस, तनरानन्द, अर्ानर्वीय जीर्वन, ल्जसकी कलपना से िह र्ान र्वन कांप उठता िै। युद्ध भयंकर िोने पर भी दो बुराइयों र्ें से न्यूनतर बुराई िै। युद्ध िह एकर्ात्र तरहका िै, ल्जसके द्र्वारा आल्त्क र्वस्तुओंर्ें र्नुष्य की तनष्ठा को जीवर्वत रखा जा सकता िै। यूनानी िोग ग्जैक्ससम के गुिार् बननेके बजाय उससे िड़े,े यि उन्िोंने ठीक िह ककया। अरे्ररकार्वाशसयों ने जाज म तृतीय के अधीन रिने के बजाय युद्ध करना पसन्द ककया, यि भी ठीक िह था। फ्रांसीसी क्राल्न्तकाररयों ने आल्त्क स्र्वाधीनता प्राप्त करने ेके शिए र्नुष्यों का खून बिाकर ठीक िह ककया। इसी प्रकार नाज़ीर्वाद का अन्त करके िर् भी ठीक िह कर रिे िैं। कुछ युद्ध न्याय्य युद्ध िोतेिैं।

परन्तु प्रत्येक युद्ध को िड़ने र्वािे दोनों वर्वरोधी पक्ष अपने-आपको न्याय्य िह बतातेिैं।'[471] न्याय क्या िै? यहद यि वर्वतरणात्र्क न्याय िै, तो सम्पवत्तयों के अर्वसरों के, कच्चे र्ाि के, धूप र्ें वर्वद्यर्ान स्थानों के, आधथकम और राजनीततक प्रभार्व के क्षेत्रों के अन्याय्य या असर्ान बंटर्वारे को ठीक ककया जाना चाहिए। यहद न्याय का अथ मयि िो कक ककसी भी राष्र के र्ित्त्र्व और उसकी सम्पवत्त के बीच ठीक अनुपात रिना चाहिए तो र्ित्त्र्व की कसौटह क्या िै? र्वि जनसंख्या िै, िल्क्त, संस्कृतत या सरकारह कार्काज का अनुभर्व ? क्या कोई ऐसी

---

471 "अब परर्ात्र्ा आप सबकी रक्षा करे और परर्ात्र्ा न्याय का साथ दे" नेर्वाइि चेम्बरिेन (3 र्ाच,म 1939) "... और िर् श्रद्धापूर्वकम अपना र्ार्ि परर्ात्र्ा को सौंपतेिैं" - राजा जाज मषष्ठ (3 शसतम्बर, 1939)

परर्ात्र्ा आपका साथ दे" ग्रीनर्वुड ('र्ज़दूरू दिहय वर्वरोधी दि' की ओर से) "हदव्य भगर्वद्वर्वधान की िरण र्ें दृढ वर्वश्र्वास के साथ.."- सर अधचबमालड शसक्र्यिर (उदारदिहय वर्वरोधीदि की ओर से)

"िर् केर्वि यि चािते िैं कक सर्वमल्क्तर्ान परर्ात्र्ा, ल्जसने िर्ारे िस्त्रों को आिीष हदया िै, दूसूरे राष्रों को भी ज्ञान प्रदान करे..." हिटिर (डेनेल्ज़ंग का 'भाषण)

"िर्ारे युद्ध को सर्वमल्क्तर्ान परर्ात्र्ा का आिीर्वादम प्राप्त िै।"- प्रेशसडेंट र्ौशसकी

"िर्ारे सन्र्ुख जो अवप्रपरहक्षा उपल्स्थत िै, उसर्ें परर्ात्र्ा िर्ारह सिायता करे।" कैंटरबरह का आकमबबिप तथा चच मके अन्य पदाधधकारह।

"यहद आप इसपर वर्वचार करे, तो यि बड़े ेगौरर्व की बात िै कक इतने र्िान संघष मर्ें परर्ात्र्ा ने आपको अपना शस्त्र चुना िै ।"- कैनन सी० र्ौगनम ल्स्थ।

र्ि परर्ात्र्ा का धन्यर्वाद करते िैं कक उसनेिर्ारे िस्त्रों को इतनी िीघ्र वर्वजय प्रदान की.. "िर् उसे धन्यर्वाद देतेिैं कक िताल्ददयों पुराना अन्याय उसकी कृपा से नष्ट- भ्रष्ट िो गया.." पिोडैं पर कदज़ा िोनेके वर्वषय र्ें आध्याल्त्क पररषद् की घोषणा र्ें जर्नम इर्वेंजेशिकि 'वर्वरोधी दि'

"र्ुझेपक्का वर्वश्र्वास िै, ल्जतना कक अपने यिां बैठै िोने का, कक यहद आज ईसा प्रकट िो जाए तो र्वि इस गुद्ध का सर्थनम करेगा।" (नैततक आपवत्त करने र्वािों के न्यूकैसि न्यायािय का अध्यक्ष)

वर्वधान-व्यर्वस्था िै, ल्जसके शिए िर् युद्ध करते िैं! क्या िर् इस बात का आग्रि करते िैं कक ककसी भी राष्र को तब तक संसार को युद्ध र्ें निहं ंझोंकना चाहिए जब तक कक सर्झौते की बातचीत, वर्वचार-वर्वर्् मऔर ध्र्यस्थता के सब साधन आज़र्ाकर न देख शिए गए िों? न्यायोधचत युद्ध अनाक्रर्णात्र्क और स्र्वाधीनता हदखानेर्वािे िोते िैं। उनका उद्देश्य यि िोता िै कक िोगों की वर्वर्दी आक्रर्ण से और उन्िें दास बनानेके प्रयत्नों से रक्षा की जाए। अन्यायपूण मयुद्ध आक्रर्णात्र्क िोते िैं और उनका िक्ष्य दूसूरे दिेों पर कदज़ा करना और उन्िें अपना दास बनाना िोता िै। पर क्या यि वर्वभेद खूब स्पष्ट िै? ये बिुत उिझे प्रश्न िैं और िर्ारे जानकारह के स्रोतों को सरकारों ने वर्वभक्त कर हदया िै, अतः िर्ारे शिए यि तनश्चय कर पाना कहठन िो गया िै कक कौन-सा युद्ध न्यायोधचत िै। ठीक और गित इतनेस्पष्ट रूप से अिग-अिग वर्वभक्त निहीं िैं कक एक पक्ष र्ें केर्वि एक िी और दूसूरे पक्ष र्ें दूसूरा। अधधक से अधधक यि कर् न्यायोधचत और अधधक न्यायोधचत का अन्तर िो सकता िै। आक्रर्णकारह और आत्र्रक्षक और अन्तर भी र्वास्तवर्वक निहं ंिै। िर्ें यि निहंसर्झना चाहिए कक िर्ारे शत्रु ु घोर राक्षस िैं, जो िर्ारे बच्चों को कच्चा खा जाते िैं। आत्र्रक्षा के शिए िड़नेर्वािे भी उन र्वस्तुओंकी रक्षा के शिए िड़ रिे िैं, ल्जन्िें उन्िोंनेपिि आक्रर्ण करके जीत शिया था। र्वे यथार्वत् ्ल्स्थतत की रक्षा के शिए िड़ रिे िैं, ककसी नये और न्याय्य सर्ाज की रक्षा के शिए निहं। कानून पर आधाररत सर्ाज के अततररक्त अन्य किहं आधधपत्य के दार्वे का कोई अथ मिह निहीं; और अराजकतापूण मअन्तराष्मरहय जगत् ्को कानून की कोई परर्वाि िह निहं ंिै। िर् सर्झते िैं कक िर् यहद जर्नमों और जापातनयों को कुचि देंगे, तो सब कुछ ठीक िो जाएगा। परन्तु िर्ारे इतना आिार्वादी या सन्तुष्ट िोने ्के शिए कोई कारण निहं ंिै। प्रथर् वर्श्र्वयुद्ध के अन्त र्ें जर्नमों को दुबिम बना हदया गया था और अपर्ातनत ककया गया था; जर्नमी को युद्ध का सम्पूण मदोष अपनेशसर िेनेको वर्वर्वि ककया गया था। जर्नमी की नौसेना सर्ुद्र-ति र्ें डुबा दह गई थी और उसकी सेना घटाकर एक िाख कर दह गई थी, जो केर्वि पुशिस-दि का कार् कर सके। उसका यि र्वचन देकर तनःस्त्रीकरण ककया गया था कक बाकी दिे भो अपना तनःस्त्रीकरण करेंगे, जबकक यूरोप के ककसी बड़े ्राष्र का अपने तनःस्त्रीकरण का ज़रा भी इरादा निहं ं था। जर्नमी पर युद्ध-क्षतत के िजानेम की बेतुकी राशि िादह गई, ल्जसके कारण न केर्वि र्वि पीढह, ल्जसनेयुद्ध र्ें भाग शिया था, अवपतु उनके बेटे और पोतेभी नौकर और दास बन गए। सर ऐररक गैदबैस के िददों र्ें, "िर्ने जर्नमी को इतना तनचोड़ा, कक बीच तक चटख गए।" जर्नमी के चारों ओर छोटे-छोटे राष्रों का जिा बबछा हदया गया। सारे प्रदिे को 'िहग आफ नेिन्स' (राष्रसंघ) की देख-रेख र्ें एक स्र्वतन्त्र राज्य बना हदया गया, राइनिैड पर अधधकार कर शिया गया और रूस पर आक्रर्ण कर हदया गया। यि सब 'ल्जसकी िाठी उसकी भैस' (बिं धर्ोनुर्वततेम) के शसद्धान्तों पर ककया गया। कोई भी अशभर्ानी राष्र, ल्जसके साथ ऐसा बतार्वम ककया जाता, अर्वश्य तनरािा की खाई र्ें धगर पड़ता और हिटिर तथा नाज़ीर्वाद की वर्वनािात्र्क सकक्रयता को अपना िेता, ल्जसका नारा था कक "र्वतर्मान दिा से िर चीज़ अच्छी िै।" जापान के र्ार्िे को िहल्जए। उसकी जनसंख्या प्रतत र्वगर्मीि 465 िै जबकक संयुक्त राज्य अर्ेररका र्ें यि 41 िै। जापान की जनसंख्या प्रतत र्वषम दस िाख बढ जाती िै, उसका जीर्वनतनर्वािम का स्तर ततरंतर धगर रिा िै और अन्ततोगत्र्वा भुखर्रह का भवर्वष्य उसके सार्नेर्ुंि बाए खड़ा िै। र्वि भयभीत िै। उसे कच्चा र्ाि शर्िता रिना चाहिए, अन्यथा र्वि र् र जाएगा। उसनेदेखा कक रूस चीन पर उत्तर और पल्श्चर् की ओर से छाता जा रिा िै; दक्षक्षणी चीन र्ें फ्रांस का बड़ा साम्राज्य था, और यांग्त्सी घाटह

र्ें बिटेन का बुित बड़ा प्रभावर्-क्षेि था। जापानी कोई हिंस्र राक्षस निहं िैं, बल्लक साधारण आदर्ी िैं, जो इस बात से डरे िुए िैं कक यहद उन्िोंने विं न ककया, जो वें कर रिे िैं, तो वें सर्ाप्त िो जाएंगे। िर् यिूहदयों पर िुए जर्नमी के अत्याचारों से घृणा करते िैं; परन्तु संयुक्त राज्य अर्ेररका ने जापातनयों को कोट (अर्ेररका र्ें आकर बसनेके) र्ें सल्म्र्शित करने से इनकार कर हदया िै। वर्जनम अधधतनयर् (ऐक्सक्लूजिन ऐक्ट) कभी वर्वद्यर्ान िै, ल्जसके कारण करोड़ों हृदयों र्ें असन्तोष भर रिा िै। नाल्ज़यों ने, जो जातीयभेद- भार्व का कायक्रमर् अपना रिे िैं, अपनी तकनीक का बड़ा भाग शर्त्र राष्ट्रों र्ें से िि कुछ से सीखा िै। श्री िायड जाज मकिते िैं कक वर्साईम सझौतेके प्रणेताओं का फैसिा "इस सझौतेकी रातों और अधधकारों के, उन कुछ राष्ट्रों द्र्वारा, ल्जन्िोंने ये िितेंथोपी थीं, बाद र्ें ककए गए दुरुपयोगों के आधार पर न करें। कानून के गुण-दोषों का तनश्चय उन िोगों द्र्वारा, जो अस्थायी रूप से कानूनी अधधकारों का दुरुपयोग करनेऔर न्याय्य उत्तरदातयत्र्वों को टिो जानेकी ल्स्थतत र्ें िैं, की गई छिपूण मव्याख्याओं के आधार पर निहं ककया जा सकता। इसके शिए सल्न्धयों को दोष निहंहदया जाना चाहिए। दोषी तो वें िैं, ल्जन्िोंने अपनी अस्थायी उत्कृष्टता का िाभ उठाकर अपने पवर्वत्युिगबंधों (कंरैक्ट) और प्रततज्ञाओं को भंग करके उन िोगों को न्याय देनेसे इनकार कर हदया, जो कुछ सर्य के शिए, उसे बिपूर्वकम िे पाने र्ें असर्थ मथे।"[472] जब जर्नमों ने वर्वलसन की चौदि बातों पर आधाररत वर्वरार्-सल्न्ध को स्वीकार कर शिया, तब वर्वजयी िल्क्तयों ने उनके साथ कैसा बतार्वम ककया, इसका वर्णनम करते िुए श्री िायड ज़ाज मने शिखा िै, "जर्नमी ने िर्रह वर्वरार्-सल्न्ध की रातों को, जो काफी कठोर थीं, स्वीकार कर शिया था और उनर्ें से अधधकांि का पािन भी कर हदया था। परंतु अब तक, एक टन भी अन्न जर्नमी निहं भेजा गया था। यिां तक कक र्छिहर्ार बेड़े को भी थोड़ी-सी र्छशियांपकड़ िानेसे रोक हदया गया था। इस वर्क्त शर्त्रराष्ट्रों का शसतारा बुिन्द था, पर भुखर्रह की याद ककसी हदन उनके खखिाफ पड़ सकती थी। एक ओर जर्नमों को भूखों र्रनेहदया जा रिा था, जबकक रौटरडर् र्ें िाखों टन खाद्य जि- र्ागों द्र्वारा जर्नमी िे जानेके शिए पड़ा था। शर्त्र-राष्ट्र भवर्वष्य के शिए वर्वद्र्वेष के बीज बो रिे थे, वें प्राणान्तक र्वेदना का ढेर जर्ा रिे थे, जर्नमों के शिए निहं, बल्लक अपने शिए।"[473] जब तक वर्तर्मान आदि मबने रिेंगे, तब तक युद्ध की रंगिाा र्ें यिह नाटक चिता रिेगा; केर्वि अशभनेता बदिते रिेंगे।

परन्तु यहद िर्ें र्ूिर् भी िो कक िर्ारा उद्देश्य न्यायपूण मिै, तब भी क्या िर् सदा युद्ध र्ें भाग िे सकतेिैं? युद्ध का भिा उद्देश्य केर्वि एक िि िो सकता िै- अन्याय का तनर्वारण। इसके शिए िर् युद्ध को दो बुराइयों र्ें से न्यूनतर बुराई के रूप र्ें अपनाते िैं। परन्तु यहद जीतने की कोई तकमसंगत आिा न िो, तो सैतनक प्रततरोध से बुराई बढेगी िि, घटेगी निहं। िर्ें बि र्ें वर्वश्र्वास त्याग िि देना चाहिए और िर्ें अपने उद्देश्य को उसके पीछे वर्वद्यर्ान िल्क्त की सरिता के द्र्वारा परखना चाहिए।

---

472 हद दूधू एबाउट हद पीस रहटहज़ (1938) पृष्ठ 6

473 'हद दूधू एबाउट हद पीस हरटहज़' (1938), पृष्ठ 294-265। काउंट र्वान िोकडोफम रैटज़ाउ ने, जो सल्न्ध श्री िेते प्रस्तुत िोने के सर्य जर्नम प्रततततनधध र्ंडि की ओर से बोिा था, युद्ध की निृंसताओंका उल्लेख करतेिुए किा था, "युद्ध र्ें ककए गए अपराध भिे िि क्षम्य न िो, परन्तु र्ेवे वर्वजय के शिए संघष मर्ें, राष्ट्रहय अल्स्तत्र्व को सुरक्षक्षत बनाए रखने की अधीरता र्ें और आर्ेवि के उत्ताप र्ें, जो राष्ट्रों की अन्तरात्र्ा को कुंहठत कर देता िै, ककए आतेिैं। परन्तु 11 नर्वम्बर के बाद घेराबन्दह के कारण जो िाखों असैतनक व्यल्क्त र्रे िैं, र्ेवे जान-बूझकर और तनष्ठुरतापूर्वकम तब र्ारे गए िैं, जब वर्वजय िर्ारे वर्वरोधधयों को सुतनल्श्चत रूप से प्राप्त िो चुकी थी। जब आप दोष और प्रायल्श्चत्त की चचामकरें, तब इस बात का भी ध्यान रखें।"

युद्ध से भी अधधक भयार्वि एक और र्वस्तु ि ै ि रहर के भीतर आत्र्ा का ि नन। ि ो सकता ि ै कक नाज़ी संसार र्ें उससे किहं ं अधधक एकता ि ो जाए, ल्जतनी कक ििपे कभी भी अतीत र्ें ि ुई थी, पर र्वि आत्र्ारहित एकता ि ोगी, जैसी कक कीट-जगत के सर्ुदायों र्ें ि ुआ करती ि ै। बुद्धधत्ता और प्रेर् के वर्वर्षेतासूचक र्ूलयों का, बुद्धध के स्र्वतन्त्र उपयोग और र्वैयल्क्तक उत्तरदातयत्र्व का ततरस्कार ककया जाएगा; यूथचारह पिुओंकी अन्धी सार्ाल्जकता, अंधवर्वश्र्वास और जातत की पूजा का गुणगान ककया जाएगा। अपनी सब अपूणतमाओंके ि ोतेिुए भी शर्त्राष्ट्र र्ानर्वीय संतुल्ष्ट और स्र्वतन्त्रता के पक्ष र्ें, सार्ाल्जक ि ंतत के और संसार के र्वंधचतों को न्याय हदिानेके पक्ष र्ें ि ैं। परन्तु संसार के करोड़ों ि ोगों के र्न र्ें यि प्रबि भार्व वर्वद्यर्ान ि ै कक दोनों पक्षों के र्ू र्ें र्विह पुरानेरंग-ढंग ि ैं। और दोनों ि ह दशितों के साथ-साथ न्याय निहंकरना चािते। र्वे दोनों ि ह प्रदेिों पर अधधकार करने ि के शिए अथर्वा ििपे से अधधकृत प्रदेिों की रक्षा के शिए ि ड़ रिे ि ैं और र्वे ि अपनेहितों की रक्षा के शिए युद्ध के भयंकर कष्टों को स्र्वीकार करने ि को तैयार ि ैं।

राज्य की ि र्ारह सर्ूची धारणा र्ें ि ह पररर्वतनम की आर्वश्यकता ि ै। र्ानर्व-सर्ाज र्ें ि ल्क्त और बि ि ह चरर् र्वास्तवर्वकताएं निहं ि ैं। राज्य ऐसे र्नुष्यों का सर्ूि या संघ ि ै, जो ककसी एक सुतनहदमष्ट भू-भाग र्ें तनर्वास करते ि ैं और ल्जनकी एक सांझी सरकार ि ै। जब यि किा जाता ि ै कक कोई एक राज्य ककसी दूसरे राज्य से अधधक बिर्वान ि ै, तो उसका सारा अथ मयि ि ोता ि ै कक उस दिे के तनर्वासी कुछ वर्विेष सुवर्वधाओंके कारण, जैसे जनसंख्या, सार्ररक ििकौ की दृल्ष्ट से ल्स्थतत, कच्चे ि र्ाि पर तनयंत्रण, कृवष और उद्योग या ि स्त्रास्त्रों की उन्नतत के कारण ऐसी ल्स्थतत र्ें ि ैं कक दूसरे राज्य के तनर्वाशसयों को बिपूर्वकम अपनी इच्छा के अनुसार काय म करने ि को र्जबूर कर सकें। प्रारल्म्भक हदनों र्ें, ि ारहररक दृल्ष्ट से बिर्वान व्यल्क्त तनबिमतर व्यल्क्त पर इसी प्रकार तनयंिण रखा करता था, जैसे आज ि ल्क्तिाह राज्य दुबिमतर राज्यों पर रखते ि ैं। क्या यि बात शसद्धान्ततः, जो पतत अपनी स्त्री को पीटता ि ै, उससे, या जो डाकू गिह के र्ोड़ पर ककसी आदर्ी को रोककर उसका बटुआ छीन ि ेता ि ै, उससे, या जो र्ाशिक ि ड़ति को तुरुर्वाता ि ै, उससे ककसी प्रकार शभन्न ि ै? बि-प्रयोग र्ें वर्वश्र्वास एक व्याधध ि ै, ल्जसने संसार को ऐंठ-र्रोड़कर खूच येक्षणा दह ि ै। यि ि र्से ि र्ारा र्नुष्यत्र्व छीन िेती ि ै।'[474] ऐसा संसार, ल्जसर्ें इतनी अकथनीय ि ैतातनयत संभर्व ि ै, बचानेयोग्य निहंं। ि र्ें इस सार्ाल्जक व्यर्वस्था से छुटकारा पाना ि ोगा। इस दुःस्र्वप्न के-से संसार से, जो ि ाउडस्पीकरों, फ्िडि ि ाइटों और बार-बार ि ोने र्विो युद्धों द्र्वारा कायर् रखा जा रिा ि ै। युद्ध एक दुष्चक्र को प्रारम्भ कर देता ि ै: प्रततिोध की भार्वना से दूसरे पर थोपी गई संधध, पराल्जत का क्रोध और बदिा ि ेने की ि ािसा और कफर युद्ध। वर्वनय ि र् सभी के शिए र्िनीय ि ै। एक नई तकनीक, क्राल्न्तकारह तकनीक, ि र्ें अपनानी ि ोगी। कैल्म्ब्रिज और र्ांटेग्यू के घरानों र्ें चि रिह ि त्रुता के वर्वषय र्ें र्क्युशमियो, जो द्र्वन्द्र्वयुद्ध र्ें र्ारा गया था, र्ृत्युके क्षणों की अन्तदृल्मष्ट र्ें

[474] ररर्वरसाइड चचमर्ें 19फरर्वरह,1939कोउपदिदेतेिुए डाक्टर ि रह इर्सनम फीसबबकनेकिा था,"इस वर्वषय र्ेंर्ि र्नुष्य कुत्तों से ककतना अधधक शर्िते-जुिते ि ैं। एक कुत्ता भौकता ि ै, दूसरा कुत्ता उसके जर्वाब र्ें भीकता ि ै। तब ििपा कुत्ता और जोर से भौंकता ि ै और दूसरा कुत्ता युद्ध-ल्स्थतत के बढते ि ुए िििकोि र्ें और भी अधधक ि ोर र्चाते ि ुए तनश्छि ि ो जाता ि ै। इसशिए एक आदर्ी नेअपने टैररयर कुत्ते के शिए एक-दूसरे कुत्ते के र्ाशिक से क्षर्ा र्ांगते ि ुए किा, 'आखखर, यि कुत्ता र्नुष्य जैसा ि ह तो ि ै न।'"

धचलिा उठता ि ै, "यि तुर् दोनों के घरानों के शिए रि्ार्रह ि ै।" एक घरानेकी दूसूरे घरानेके साथ कटु ि्त्रुतुा एक प्ेरेर् द्र्वारा सर्ाप्त ि ुई थी, ल्जसने घृणृा के दुशु्चक्र को तोड़ हदया था। उस नाटक के अन्त र्ें कैप्यिुैट किता ि ै, "भाई र्ौटेग्यू, ि ाओ, अपना ि ाथ र्ुझेदो।"

आदि मसर्ाज

ल्जस आदि मके शिए ि र्कार् करें, र्वि उस सर्य की र्वास्तवर्वक ल्स्थतत की अपेक्षा अच्छा ि ोना चाहिए, पर साथ ि ह र्ानर्व जीर्वन की दिाओं ंसे बिुत दूरू का भी न ि ोना चाहिए। संसार को एकाएक ऐसा पररर्वततततम निहं ककया जा सकता कक र्वि प्ेरेर् के र्वर्वधान को शिरोधाय मकर ि े। ि र् किते ि ैं कक ि र्ारे ि नु नये युग पर प्रभुत्र्व जर्ाने के शिए ि ड़ रि े ि ैं और ि र् उस नये युग को स्र्वाधीन करने के शिए ि ड़ रि े ि ैं। ि र् संसार को केर्वि नाज़ीर्वाद के जुए से र्ुक्त करनेके शिए निहं ि ड़ रि,े अवपतु ऐसी सकारात्र्क (पॉल्ज़हटर्व) दिाएं उत्पन्न करने के शिए ि ड़ रि े ि ैं, ल्जनर्ें संसार की र्वर्वशभन्न जाततयां अपनी-अपनी बात कि सकें और अपना र्वर्वशिष्ट योग दे सकें। यि युद्ध ि ोषण की उस र्वर्वचार-प्रणािह की आदतों की र्रणान्तक र्वेदना ि ै, ल्जन्िें ि र् इन वपछिह ि ताल्ददयों र्ें अपनाए रि े ि ैं। हिटिर एक पररणार् ि ै, ि क्षण ि ै, कारण निहं। र्वि कोई आकल्स्क घटना निह,ीं अवपतु ुर्वतर्मान व्यर्वस्था का एक स्र्वाभावर्वक और अतनर्वाय मपररणार् ि ै। हिटिरर्वाद को रोकनेके शिए ि र्ें यि दृढ तनश्चय करना ि ोगा कक सब र्नुष्यों को, जातत, धर् मऔर रंगभेद का बबना र्वर्वचार ककए, काय मकरने ेऔर जीर्वन-तनर्वाि योग्य उपाजनम करनेका आधारभूत अंर्वसर अर्वश्य हदया जाना चाहिए; यि कक शिक्षा, सम्पवत्त, सर्ुधचत तनर्वास-स्थान, और नागररक स्र्वाधीनताएं सब ि ोगों को प्राप्त ि ोनी चाहिएं। उस अथ-मव्यर्वस्था के, ल्जसर्ें एक ओर खाद्य को नष्ट ककया जाता ि ै, जबकक दूसूरह ओर ि ोग भूखों र् रि े ि ोति[475], और जो एक ओर असह्य दररद्रता के साथ-साथ दूसूरह ओर अर्वर्वश्र्वसनीय र्वर्विास को बनाए रखती ि ै, अन्तर्वर्वरमोधों को सर्ाप्त ककया जाना चाहिए। प्रभुत्र्व-स्थापना की इच्छा का कारण यि ि ै कक ि ोगों र्ें इतना अधधक अन्तर ि ोनेके कारण उनर्ें असुरक्षा की भार्वना घर कर जाती ि ै। यहद दुबिुम ि ोगों पर अत्याचार करने र्वािे बिर्वान ि ोग न ि ों, तो बि-प्रयोग की कोई गुंजाइि ि ह न रिेगी।

कारण चािे धाशर्कम, नर्ोर्वैज्ञातनक, आधथकम या संगठन-सम्बन्धी, कुछ भी क्यों न ि ो, पर सरकारों पर केर्वि दबार्व ि ह उन्िें परस्पर ि ड़नेसे रोक सकता ि ै। संकट के क्षणों र्ें गैर सरकारह संस्थाएं सरकार के र्वर्वरुद्ध

---

475 सर जान और शिखता ि ै, "संयुक्त राज (बिटेन) की ि गभग एक तताई जनता को और ि गभग इतने ि ह अनुपात र्ें संयुक्त राज्य (अर्ेररका) की जनता को स्र्वास्थ्य के शिए आर्वश्यक स्तर पर भोजन और तनर्वास प्राप्त निहं ि ै। अन्य अधधकाि दिें र्ें उन ि ोगों का अनुपात, ल्जन्िें न ठीक खानेको शर्ि्ता ि ै और न ठीक रिने को, और भी अधधक ि ै। उन दिें जाततयों र्ें, ल्जनके कलयाण के शिए बिटेन ल्ज़म्र्ेदार ि ै, जनसंख्ंया के अनुपात की दृल्ष्ट से बिुत कर् ि ोग ऐसे ि ैं, ल्जनको भिे आदर्ी की तरि रिने योग्य र्कान और स्र्वास्थ्य के स्तर पर खाने के शिए भोजन प्राप्त ि ो।"
- 'फाइहटंगं फॉर र्वि्ाट?', 1942

कोई कारमर्वाई निहं ंकर सकतीं, क्योंकक उसका अथ मिोगा वर्वद्रिो। िर्ें ऐसी संस्थाएं बनानी चाहिए, ल्जनके द्र्वारा रर् अच्छाई और िाल्न्त की आदतों को वर्वकशसत कर सकें।

जो िोग युद्ध र्ें िड़नेजाते िैं, र्वे अपराध-जीर्वी निहं ंिोते, अवपतु ुर्वे ऐसे र्नुष्य िोते िैं, जो यि अनुभर्व करते िैं कक उनके साथ अन्याय ककया गया िै। िर्ारे अन्याय का उत्तर र्वे और भी अधधक उग्र अन्याय करके देते ैं। क्रुद्ध िोने ेके बजाय िर्ें उनके अपराधों के प्रेरक कारणों की खोज करने ेऔर उन्र्ें िटाने ेका यत्न करना चाहिए। िर्ें यि स्वीकार करना चाहिए कक र्वतर्मान संसार र्ें न कुछ गिती िै, जो बिुत गिराई तक पिुंची िुई िै। िर्ें िाल्न्तपूर्वकम ऐसा सार्ाल्जक रुपान्तर करना िोगा, ल्जसका िक्ष्य न्याय िो, व्यल्क्तगत और राष्रहय दोनों प्रकार का न्याय।

राज्य के िनैः िनैः सर्ाप्त िो जानेका अथ मिै कक बि प्रयोग का स्थान पररचय, वर्वचार- वर्वर्र् मऔर
तकम, एक कानून, स्वाधीनता और िाल्न्त की प्रणािह का तनर्ाणम िे िे। ल्जस प्रकार िर्ारे यिां ंडाकू या त्यारे की
गैर कानूनी हिंसा के शिए वैंध बि-प्रयोग की व्यर्वस्था िै, उसी प्रकार वैंध बि-प्रयोग की व्यर्वस्था िान्त पड़ोसी
दि पर अकारण आक्रर्ण करनेर्वािों के शिए भी िोनी चाहिए। िाठी-प्रिार और गोिहकांड कोई सुखद र्वस्तुएं निहं
ैं, परन्तु र्वे उन्त्त भीड़ द्र्वारा की जानेर्वािह हिंसा और अल्ग्नकांड की अपेक्षा किहं अच्छी िैं। शसद्धान्ततः
उपद्रर्वों का दर्न करने के शिए इतने पररर्ाण र्ें बि का प्रयोग करने के िर् र्वर्वरुद्ध िैं, इस अथ मर्ें कक िर्ें इस
बात पर खेद िोता िै कक िर्ें इतने ेबिप्रयोग की आर्वश्यकता पड़े,े कफर भी यि एक खेद-योग्य आर्वश्यकता िै
हि,
क्योंकक यहद िर् अकारण आक्रर्ण को चिते रिने ेदें और बबना रोक-धार् ककए फैिने दें, तो िर् बुराई के कि
पररर्ाण र्ें र्वृद्धिध कर रिे िोंगे। यि राज्य का कतव्मय िै कक र्वि बि के गैर कानूनी प्रयोग की प्रभार्वी रूप से
रोकथार् करे, यद्यवप इसके शिए, ल्जतना आर्वश्यक िै उससे अधधक बि का प्रयोग निहंकरना चाहिए। यि बि
प्रयोग काफी िोना चाहिए, अन्यथा गैरकानूनी बि वर्वजयी िो जाएगा। पििे राष्रहय जीर्वन व्यल्क्तगत र्ानुताओं
की अंधेरगदी बना िुआ था, जैसाकक आज अन्तराष्मरहय जीर्वन िै। राष्रहय जीर्वन र्ें व्यर्वस्था और स्वाधीनता बि
के वैंध प्रयोग और शिक्षा द्र्वारा स्थावपत की गई थी। अन्तराष्मरहय र्ार्िों र्ें भी ऐसी िह ककसी पद्धतत को अपनाना
िोगा। ककसी अपूण मसर्ाज र्ें बि द्र्वारा सर्वपतम कानून वर्वद्यर्ान रिता िै, ल्जससे भिे आदशयों का
बिुत बड़ा बिुर्त कुछ थोड़े ेसे बुरे आदशयों के बीच रि सके। तनित्था आदिर्वमाद बुराई को परास्त निहं कर
सकता। पास्कि ने किा था, "बि के बबना न्याय अिक्त िै।"[476] जब तक ऐसे िोग वर्वद्यर्ान िैं, जो न्याय की
उपेक्षा करने पर उतारू िैं, तब तक न्याय के पीछे िल्क्त रिनी चाहिए। िर्ारह दिा उन जिाजों की-सी िै, जो यहद
र्वायु और र्ौसर् के साथ थोड़ा-सा सर्झौता करके चिें, तो उनकी बन्दरगाि तक पिुंच पाने की अधधक
~~सम्भार्वना िोती िै। यहद बि का~~ प्रयोग ककसी अन्तराष्मरहय प्राधधकारह (अथॉररटह) द्र्वारा ककया जाए, तो उसे

[476] तुिना कील्जए, "बि के बबना न्याय अिक्त िै। न्याय के बबना बि अत्याचार िै। बि के बबना न्याय व्यथ मरिेगा,
क्योंकक अपराधी िोग सदा रिेंगे। बबना न्याय के बि प्रयोग की तनन्दा उधचत िह िै। न्याय और बि, दोनों को कन्धे शर्िाकर
साथ चिना चाहिए, ल्जससे जो न्याय्य िो, र्वि सबि रिे और जो सबि िो, र्वि न्याय्य रि सके।"
- पैसाज

ल्क्ति का नग्न नृतूय निहं ंकिा जा सकता। उसका प्रयोग सार्ाल्जक व्यर्वस्था की सृजृनात्र्क क्षर्ताओं के स्र्वाधीन करने ेके शिए ककया जा रिा िोता िै। इसे सकारात्र्क (पौल्ज़हटर्व) सार्ाल्जक कृत्य िोने के कारण नैततक स्र्वीकृतत प्राप्त रिती िै। इस अराजकतापूण मप्रणािह को, जो विंर्प्रचशित रिती िै, जिां िल्क्त का िासन चिता िै और जिां राष्ट्र िस्त्रों से सल्ज्जत रिते िैं, बदिा िह जाना चाहिए। अन्तराष्ट्मरहय अराजकता दास-साम्राज्यों को और हिटिरों को जन्र् देती िै। इसका दूसूरा वर्वकलप िै कानून, सियोग और िांतत पर आधाररत अन्तराष्ट्मरहय सम्बन्धों की व्यर्वस्था। िर्ें न्यायाधीि को सिक्त बनाना चाहिए, र्वादह और प्रततर्वादह को निहं। यहद िर्ें िल्न्तपूण मसियोग की अन्तराष्ट्मरहय व्यर्वस्था के शिए काय मकरना िै, तो साम्राज्यर्वादह िल्क्तयों को अपनेउन आधथकम िाभों और वर्विेषाधधकारों को त्यागना पड़ेगो, ल्जन्िें उन्िोंने िल्क्त की राजनीतत की प्रणािह द्र्वारा स्तिगत ककया था।

कभी-कभी यि किा जाता िै कक िर् कुछ सीशर्त संघ (फेडरिेन) बना सकते िैं और उनके कारण कुछ तनल्श्चत भौगोशिक क्षेत्रों र्ें युद्ध का खतरा कर् िो जाएगा। परन्तु इससे सर्स्या िि निहं िोगी, क्योंकक राज्यों के सम्बन्ध भौगोशिक दृल्ष्ट से सीशर्त िुए निहं ंिोते। अन्तराज्मयीय सम्बन्ध वर्वश्र्व-सम्बन्ध िैं और बबना ककसी वर्वश्र्व-संगठन या वर्वश्र्व-सरकार के उन्िें कक्रयाल्न्र्वत निहं ंककया जा सकता 'िहग आफ निेन्स' (राष्ट्रसंघ) िल्क्त और बि के कानून से दूरू िटनेऔर सिर्तत तथा सियोग पर आधाररत कानून की ओर बढनेकी गतत को एक अंग िै। यि अन्तराष्ट्मरहय सम्बन्धों को वर्वचार-वर्वर्र्,म सर्झौते और कानून की अहिंसात्र्क पद्धततयों द्र्वारा तनधारमरत करनेका प्रयास िै। 'िहग आफ निेन्स' के प्रततज्ञा-पत्न का र्ंचूररया र्ें, इधथयोवपया र्ें, स्पेन र्ें, अलबातनया र्ें और आल्स्रया र्ें भंग िुआ और जो कुछ म्यूतनख र्ें िुआ, उसका तो किना िह क्या । िहग की कौंशसि (पररषद्) और असेम्बिह (वर्वधान सभा) प्रारम्भ से िह कोई ऐसी कारमर्वाई करने से हिचक रिह थी, ल्जससे राज्यों की प्रभुसत्ता के प्रतत कुछ भी अनादर ध्वतनत िो। बनाडम शिा के नाटक 'जेनेर्वा' र्ें 'िीग के अन्तराष्ट्मरहय न्यायािय के वर्वररष्ठ न्यायाधीि द्र्वारा अपनाया गया धचड़धचड़ा दृल्ष्टकोण एकदर् तनरथकम निहं िै।"[477] श्री नर्वािइ चेम्बरिेन ने अपने रेडडयो द्र्वारा प्रसाररत भाषण र्ें किा था, "ककसी बड़े ेऔर िल्क्तिािह पड़ोसी के सम्र्ुख खड़े िुए ककसी छोटे राष्ट्र के साथ िर्ें चािे ककतनी िह सिानुभूतत क्यों न िो, ककन्तु िर िाित र्ें िर्

---

[477]सर औकफमयस शर्डिडैर, "परन्तु जब बड़ी िल्क्तयांिहग र्ें सल्म्र्शित िुई थी, तब अर्वश्य िह ऐसी कोई कक्रयावर्वधध उनके ध्यान र्ें निहं आई?"

वर्वररष्ठ न्यायाधीि, "र्ेैंनिहं ंसर्झता कक जब बड़ी िल्क्तयां ंिहग र्ें सल्म्र्शित िुई थीं,ं उस सर्य कोई भी बात ककसी के ध्यान र्ें आई थी। उन्िोंने िहग के प्रततज्ञा-पि पर बबना पड़े,े केर्वि प्रेशसडटें वर्वलसन को कृताथ मकरनेके शिए, स्तिाक्षर कर हदए थे। उसके बाद संयुक्त राज्य अर्ेररका ने प्रेशसडटें वर्वलसन को कृताथ मन करनेके शिए उसपर, र्वि भी बबना पढे, िस्ताक्षर करने से इनकार कर हदया। तब से िेकर बड़ी िल्क्तयां ंप्रत्येक दृल्ष्ट से इस प्रकार बतार्वम करती रिह िैं, उन अर्वसरों को छोड़कर जबकक र्वे िहग को अपने र्तिब के शिए प्रयुक्त कर सकती िैं, र्ानो िहग का अल्स्तत्र्व िह निहं िै।"

सर औकफमयस शर्डिडैर, "पर र्वे इसका और ककस प्रकार उपयोग कर सकती िैं।"

वर्वररष्ठ न्यायाधीि, "र्वे राष्ट्रों के बीच न्याय और व्यर्वस्था को कायर् रखनेके शिए इसका उपयोग कर सकती िैं ।"

- पृषूठ 40

केर्वि उसके कारण सरूचे ेबिहटि साम्राज्य को युद्ध र्ें डिाने की ल्ज़म्रेदारह निहं ंिि सकते। यहद िर्ें िड़ना िह ीि, तो र्वि इसकी अपेक्षा कुछ और बड़े ेउद्देश्यों के शिए िोना चाहिए।" "यहद र्ुझे ेवर्वश्र्वास िो जाए, ककसी राष्ट्र ने अपनी िल्क्त का भय हदखाकर सारे संसार पर प्रभुत्र्व जर्ानेकी ठान िह िै, तो र्ुझे िगेगा कक उसका प्रततरोध अर्वश्य ककया जाना चाहिए।"[478] यि िहग के प्रततज्ञा-पत्न की शिक्षा निहं िै। यि तो िल्क्त संतुिन की पुरानी नीतत िै। बिटेन बेल्लजयर् या चैकोस्िर्विाककया को बचानेके शिए युद्ध निहं ंकरेगा; केर्वि एक िील्क्तिाह पड़ोसी की, चािे र्वि हिटिर िो, कैसर या नैपोशियन, रोकथार् िह युद्ध के शिए पयाप्मत उधचत कारण िै। राष्ट्रहय आत्र्हित के उद्देश्य अन्तराष्मरहय न्याय की अपेक्षा अधधक र्ित्त्वपूण मिैं। िैरलड तनकलसन इस बात को स्पष्ट रूप से किता िै कक बिटेन एक "तनदोष प्राखणिास्त्रीय सिज र्वृत्त, आत्र्रक्षा की सिजर्वृत्त" के कारण युद्ध कर रिा िै। और उस सिजर्वृत्त को िह "िल्क्त का सन्तुिन", "छोटे राज्यों की रक्षा" आहद अनेक नार् हदए जाते िैं। हिग इसशिए असफि रिह, क्योंकक जो राष्ट्र उसके सदस्य बने, र्वें हिंसा के प्रयोग द्र्वारा िधथयाए िुए अपने अधधकारों को त्यागनेके शिए तैयार निहंथे। िहग का उपयोग एक अन्याय्य व्यर्वस्था को बनाए रखने के शिए ककया गया और इस प्रकार िल्क्त की राजनीतत के पुराने ेखिै को आदरणीयता प्रदान की गई। राष्ट्रों की स्र्वाथिमहनता व्यल्क्तयों की तनःस्र्वाथतमा की अपेक्षा भी किहं अधधक दुष्प्राप्य रिह। इसके अततररक्त, िहग के पीछे कोई प्रभार्वी दंड र्वर्वधान निहंथा। यि उस बन्दूक की तरि थी, जो खािह कारतूस र्वागती िो। यहद िहग को ठीक प्रकार काय मकरना िो, तो उसके स्थायी प्राधधकारह (अधौररटह) िोनेचाहिए; एक र्वि जो उन कानूनों और तनयर्ों को बनाए, ल्जनके अनुसार राज्यों के ध्र्य सम्बन्ध तनयशर्त रिें; और दूसूरा र्वि, जो उन काननों और तनयर्ों के अनुसार र्वर्वर्वादों का तनणयम करे। इनर्ें से दूसूरे प्राधधकारह को यि अधधकार हदया जा सकता िै कक र्वि राज्यों के सम्बन्धों र्ें आर्ूि पररर्वतनम कर सके। ककसी भी िहग का एक अपना र्वर्वधानांग (संघीय संसद्), एक न्यायिाय और एक कायपमिाक प्राधधकारह िोना चाहिए; क्योंकक कोई भी राष्ट्र अपनेर्वाद (र्ुकदर्े) का स्र्वयं तनणायमक या अपनेअपराधों का स्र्वयंदण्ड देनेर्वािा निहं िो सकता। जैसे िर्ारे पास व्यल्क्तयों द्र्वारा आक्रर्ण की रोकथार् के शिए बि द्र्वारा सर्धथतम कानून की व्यर्वस्था िै, जो तनष्पक्ष और सार्वजमतनक िै, ठीक उसी प्रकार िर्ें एक अन्तराष्मरहय पुशिसि–ल्क्त की भी आर्वश्यकता िै। यहद कोई राज्य राष्ट्रों के कानून का उलिंघन करे और बि प्रयोग पर उतर आए, तो कानून का सर्थनम राज्य-सर्ुदाय की िल्क्त द्र्वारा िोना चाहिए और आक्रर्णकारह राज्य का यथोधचत न्याय-र्वर्वचार िोना चाहिए। इन दिाओंर्ें यि ऐतराज़ करना उधचत न िोगा कक िहग युद्ध द्र्वारा युद्ध को रोकनेका यत्न कर रिह िै। इसर्ें कोई सन्दिे निहंकक बात यिह िै, परन्तु र्वतर्मान दिाओं र्ें बि-प्रयोग का पूण मरूप से पररत्याग निहं ंककया जा सकता। र्ानर्वीय सम्बन्धों र्ें चुनार्व अच्छे और बुरे र्ें से निहं ककया जाना िोता, अवपतु बद और बदतर र्ें से करना िोता िै। राज्यों द्र्वारा बि का अतनयंशित प्रयोग र्वर्वश्र्व-राष्ट्रर्ंडि द्र्वारा कानून की िल्क्त के रूप र्ें ककये जाने र्वािे बि प्रयोग की अपेक्षा असीर् बुरा िै। यहद हिंसा पर उतर आनेर्वािे राज्यों के र्वर्वरुद्ध, अंतर् उपाय के रूप र्ें, राज्यसर्ुदाय की िल्क्त का प्रयोग न ककया जाए, तो िर् कानून के िासन और सियोग की पद्धतत को आगे निहं बढा सकते। अन्तराज्मयीय सम्बन्धों के बारे र्ें हिन्दूिास्त्र सार् (िर्लता), दार् (पररतोषण), भेद (फूट डािना) और दण्ड (सिस्त्र प्रततरोध), इन चार पद्धततयों

[478] 27 शसतम्बर, 1939

का सुझार्व रखते ि ैं। यहद ि र् अहिंसां तक एक ि ह दौड़ र्ें पिुंचने ेका यत्न करें, तो ि ायद र्विंतक न पिुंच पाएं; पर यहद ि र् एक-एक सोपान करके उसकी ओर बढने को तैयार ि ों, तो ि र् उस तक पिुंच भी सकतिें।

एक दूसूरा ऐतराज़ यि ि ै कक आज राष्र इस र्नोंदिा र्ें निहं ि ैं कक र्वे ककसी एक राष्र के र्वर्वरुद्ध छेड़े ेगए युद्ध को सब राष्रों के र्वर्वरुद्ध छेड़ा गया युद्ध र्ान ि ें। प्रभुत्र्वसम्पन्न राज्यों के हितों र्ें र्वि सांझापन निहं ि ै, जो ि हग के प्राधधकार (औथौररटह) का सर्थनम कर सके। शत्रे राष्र, जो आदिों के एक सांझेसूत्र र्ें बंधे ि ुए ि ैं, युद्ध-कािि र्ें अपना एक संघ बना सकतिें, ल्जसकी पाशियमार्ेंट या कांग्ेरेस सीधी जनता द्र्वारा चुनी गई ि ो; और युद्ध के बाद बाकी दूसूरे दिों को इसर्ें सल्म्र्शित ककया जा सकता ि ै। एक नया सर्ाज जन्र् ि ेने के शिए संघष म कर रिा ि ै और पुरानी व्यर्वस्था उसे रोकना चािती ि ै। जो ि ोग धुरह ि ल्क्तयों (जर्नमी, इटिह और जापान) के र्वर्वरुद्ध ि ड़ रि े ि ैं, र्वे क्रांतत के पक्ष र्ें ि ड़ रि े ि ैं। यहद ि र् स्र्वतंत्रता और प्रजातंत्र के उद्देश्यों तक पिुंचने ेके शिए दृढ संकलप ि ैं, तो ि र्ें उनके साधनों के शिए भी दृढ संकलप ि ोना ि ोगा। स्थायी ि ाल्न्त तक पिुंचने का और कोई र्ाग मनिहीं।

जीर्वन-रूूलूयों के सम्बन्ध र्ें शिक्षण

यहद ि र्ारह सभ्यता नष्ट ि ुई, तो उसका कारण यि निहंिोगा कक यि पता निहं था कक उसकी रक्षा करने के शिए क्या करना आर्वश्यक ि ै; अवपतु उसका कारण उस सर्य भी, जबकक रोगी र्रता दहख रिा ि ै, ओषधध न िेनेका ि ठ ि ोगा। ि र्ें ि ाल्न्त और व्यर्वल्स्थत स्र्वाधीनता के नये सर्ाज के शसद्धान्तों को सर्झ पाने की नैततक ऊजाम और सार्ाल्जक सूझ-बूझ का अभार्व ि ै। शिक्षा का प्रयोजन यि निहीं कक र्वि ि र्ें सार्ाल्जक पररर्वेि (आस-पास की पररल्स्थतततयों) के उपयुक्त बना दे, अवपतु यि ि ै कक र्वि बुराइयों से ि ड़ने ेर्ें और एक पूणतमर सर्ाज के सृजन र्ें ि र्ारह सिायता करे। संसार का र्वर्वकास बबरमता और रक्तपात द्र्वारा निहं ि ोता। यि युद्ध सुखी भर्वर्वष्य के तनशर्त्त र्वर्वकास-संघष मर्ें कोई अतनर्वाय मसोपान निहं ि ै। ि र् सार्ाल्जक पररर्वेि की दया पर उतनी पूरह तरि तनभरम निहं ि ैं, ल्जतना कक र्वर्वकासर्वादह दृल्ष्टकोण बताता ि ै। सार्ाल्जक र्वर्वफिता र्ें र्नुष्य की र्वर्वफिता ि ह प्रततबबल्म्बत ि ोती ि ै। ि हग र्वर्वफि ि ुई, तो इसशिए कक ि हग को चिाने की तीव्र इच्छा ि ह ि ोगों र्ें निहं ि ैथी। राजनीततक संस्थाएं व्यल्ष्ट नागररकों की भार्वनाओं और र्वर्वचार की आदतों से आगे निहं तनकि जा सकतीं। राजनीततक सर्झदारह सार्ाल्जक पररपक्र्वता से पििे निहं आ सकती। सार्ाल्जक प्रगतत बािरह साधनों द्र्वारा निहींि सकती। इसका तनधारमण र्नुष्य के अन्तस्तर् ि ोकोत्तर अनुभर्वों द्र्वारा ि ोता ि ै। ि र्ें हृदय को कफर नर्वीन बनाने के शिए, जीर्वन-रूलयों के रूपान्तर के शिए और ि ाश्र्वत के दार्वों के सम्र्ुख आत्र्ा के सर्पणम के शिए काय मकरना चाहिए। ि र् सब उन्हिं एक ि ह तारों की ओर देखतिें, ि र् सब एक ि ह आकािा के नीचे स्र्वप्न ि ेते िैं, ि र् एक ि ह ग्रि पर रि रि े सि-यात्री ि ैं; और यहद ि र् अिग- अिग र्ागों द्र्वारा परर् सत्य को पाने का यत्न करें, तो र्वि कोई खास बात निहीं। अल्स्तत्र्व की पिेिह इतनी बड़ी ि ै, कक इसके उत्तर तक पिुंचने का केर्वि एक ि ह रास्ता निहं ि ो सकता। चरखे से ि ेकर आन्तररक ज्र्विन र्वािे इंजन तक के साधन र्वर्विुद्ध रूप से सार्ाल्जक उपयोधगता के साधन ि ैं। उनका कोई तनजी नैततक रूलय निहं ि ै। र्वेकेर्वि तभी तक रूलयर्वान ि ैं, जब तक उनका

उपयोग उच्चतर नैततक उद्देश्यों के शिए िोता िै। प्रगतत के साधन अपने- आपरें कोई उद्देश्य निहं िैं। िाश्र्वत को सांसाररक के अधीन करके, अतनर्वाय मको आकल्स्क के अधीन करके, अनन्त को क्षखणक के अधीन करके जीर्वन-रूलयों को वर्वकृत करनेकी आदत को केर्वि सबि शिक्षा द्र्वारा रोका जा सकता िै। शिक्षा आत्रा रें र्नुष्य का सतत जन्र् िै। यि आन्तररक राज्य की ओर जानेर्वािा राजराग मिै। सारह बाह्य र्हिरा आन्तररक प्रकिा का प्रततफिन-रात्र िै। शिक्षा सर्वोच्च जीर्वन-रूलयों के चुनार्व की और उन पर दृढ रिनेकी पूर्व मकलपना करती िै। िरें ऐसे सरुदाय के शिए काय मकरना चाहिए, जो राज्य की अपेक्षा अधधक वर्वस्तृत और अधधक गम्भीर िो। र्वि सरुदाय ककस ढंग का िो, यि िरारे आदिों पर तनभरम िै। यहद िर् उदारदिहय िैं, तो यि रानर्वता िै; यहद िर् अनुदारदिहय िैं, तो यि राष्र िै; यहद िर् साम्यर्वादह िैं, तो यि वर्वश्र्व का श्रर्जीर्वी र्वग मिै; यहद िर् नाज़ी िैं, तो यि जातत िै। राज्य अपने-आपरें कोई अल्न्तर् उद्देश्य निहं िै। उससे भी आगे एक और वर्वस्तृततर सरुदाय िै. ल्जसके प्रतत िरारह गम्भीरतर् तनष्ठा िोनी उधचत िै।

राजनीततक कायों के अल्न्तर् उद्देश्यों का वर्वचार वर्वचारकों और िेखकों द्र्वारा ककया जाना चाहिए। वर्वचारकों और िेखकों के रूप रें सराज सचेतन और आत्रआिोचक बनता िै। र्वे ककसी भी सराज के जीर्वन-रूलयों के संरक्षक िैं, उन जीर्वन-रूलयों के, जो ककसी 'भी सराज का र्वास्तवर्वक जीर्वन और स्र्वभार्व िैं। वर्वचारकों और िेखकों का कार् िरें सराज की र्वास्तवर्वक आत्रा की चेतना तक शिक्षक्षत करना, िरें आल्त्क आिस्य और रानशसक गंर्वारपन से बचाना िै। संसार के िोगों रें शर्त्रता और सिाचय मकी भार्वना का वर्वकास करने रें उन्िें िरारह सिायता करनी चाहिए। अरस्तू किता िै कक बबना शर्त्रता के न्याय िो िह निहंसकता। र्िान वर्वचारक रानर्वता से िघुतर ककसी र्वस्तु को अपने प्रेर् का पात्र निहं रानते। सारा संसार उनके शिए कुटुम्ब िै। गेटे को िगता था कक फ्रांसीशसयों से घृणा कर पाना उसके शिए असंभर्व िै। उसनेऐकररैन को शिखा था, "रेरे शिए, जो िड़ाकू प्रर्वृवत्त का निहंू और न ल्जसे युद्ध से अनुराग िह िै, ऐसे गीत एक रुखौटे के सरान िोते, जो रेरे रुख पर ज़रा भी न फबते। र्नैं अपनी कवर्वता रें कभी कृबत्रर् प्रदिनम निहंककया। बबना वर्वद्र्वेष के र् ैंघृणा के गीत ककस प्रकार शिख सकता था? और, यि रेरे और तुम्िारे बीच िह रिे, र् ैंफ्रांसीशसयों से घृणा निहं करता था, यद्यवप जब उनसे िरें रुल्क्त शरिह, तो र्नैं ेपररात्रा का धन्यर्वाद ककया। र्, ैं ल्जसके शिए सभ्यता और असभ्यता िह केर्वि दो रित्र्वपूण मअन्तर िैं, एक ऐसे राष्र (फ्रांसीशसयों) से कैसे घृणा कर सकता था, जो संसार के सबसे अधधक सभ्य राष्रों रें से एक िै, रेरह अपनी अधधकांि शिक्षा का श्रेय ल्जस राष्र को िै! सारान्य रूप से, राष्रहय र्वैर्नस्य एक वर्वर्वक्षण र्वस्तु िै। सभ्यता की तनम्नतर् कोहटयों रें यि सदा तीव्रतर् और उग्रतर् िोता िै। पर एक ल्स्थतत ऐसी िै, जिांपिुंचकर यि िुप्त िो जाता िै, र्विांिर् रानो राष्रों से ऊपर खड़े िोते िैं और िर् अपनी पड़ौसी जाततयों के सुख और दुःख को उसी प्रकार अनुभर्व करते िैं, जैसे र्वि िरारा अपना िो।" दिेभल्क्त सारान्यतया केर्वि वर्वद्र्वेष िह िोती िै, उस वर्वद्र्वेष को ऐसी िददार्विह रें तछपाया गया िोता िै, ल्जससे र्वि िोगों को ग्राह्य िो सके। इस दिेभल्क्त को धारहदार र्वदीर्वािों, चांदह के पदक िगाए और धुर गीत गाते िुए सारान्य िोगों के सार्ने प्रिंसनीय बताकर प्रस्तुत ककया जाता िै। वर्वश्र्व-प्रेर् िह र्वि िक्ष्य िै, जिांतक पिुंचने का दिेभल्क्त साधन-रात्र िै। िरारे रातु भी रानर्व-प्राणी िैं। सुख और दुःख की प्रततकक्रया उनरें भी िरारह भांतत िह िोती िै। त्र्वचा के अन्दर िर् सब भाई-बहिन िैं। िरें अपनी वर्वर्वेकिीिता और िाल्न्त को कफर प्राप्त करना चाहिए और

इस संसार के पागिखाने र्ें, जो असह्य रूप से र्ीकिोपूण मऔर कूरूर िोता जा रि िै, िर्ें बेचैनी अनुभर्व िोनी चाहिए। इस संसार का िासन सर्झदारह से िोना चाहिए।

बुद्धधजीर्वी िोगों को राजनीतत या प्रिासन के र्वास्तवर्वक कायों र्ें भाग िेनेकी आर्वश्यकता निहं िै। उनका र्ुख्य कार् बौद्धधक ईर्ानदारह की पूणतमा के साथ सर्ाज की सेर्वा करना िै। उन्िें इस प्रकार की सार्ाल्जक चेतना और उत्तरदातयत्र्व की भार्वना उत्पन्न करनी चाहिए, जो राजनीततक सर्ुदाय की सीर्ाओं से ऊपर िो। जो िोग इस ढंग से सर्ाज की सेर्वा कर सकते िैं, उनका यि कतव्मय िो जाता िै कक र्वे राजनीतत र्ें हिस्सा न िें। प्रत्येक सर्ाज र्ें कुछ ऐसे व्यल्क्त िोतें, ल्जनके शिए राजनीततक गततवर्वधध र्ें हिस्सा िेना प्रततभा का दुषुप्रयोग और अपनेप्रतत तनष्ठािहनता िोगी। र्वे जिां िैं, र्विं रितेुए अपनी प्रततभा के प्रतत सच्चे रितें और सर्ाज की, अपनेअज्ञान को िटानेसे, थोड़ी-बिुत सिायता करते िैं। र्वे संसार को तभी कुछ दे सकते ैं, जबकक र्वे संसार से स्र्वतन्त्र रिें। उन्िें सार्ाल्जक और आध्याल्त्क र्ूलयों (र्ान्यताओं) की सेर्वा के शिए काय म करना चाहिए, परन्तु दुभाुग्मय से एकतंत्रीय िासन पद्धततयां सार्ाल्जक और बौद्धधक गततवर्वधधयों का भी प्रयोग अपनिेह उद्देश्यों को पूरा करने ेके शिए करती िैं। नई राजनीततयां एक प्रकार के राजनीततक धर् िैं, जो सार्ाल्जक र्ुल्क्त के शिए र्सीिह (पैगम्बरह) जिाओं ंपर आधाररत िैं। एकतंत्नर्वादों के आध्याल्त्क वपता तो बुद्धधजीर्वी र्वग मिह िैं। यहद बुद्धधजीर्वी िोग िह संस्कृतत के हितों को त्याग दें, और आध्याल्त्क र्ूलयों (र्ान्यताओं) का खंडन करें, तो िर् उन राजनीततज्ञों को दोष निहं ंदे सकते, जो राज्य की सुरक्षा के शिए ल्ज़म्र्ेदार िैं। यहद जिाज़ का कप्तान याबत्रयों के हितों की अपेक्षा जिाज़ की सुरक्षा को अधधक र्ित्र्व दे, तो उसे दोष निहं ंहदया जा सकता। राज्य एक साधन िै, िक्ष्य निहं। ऐसे कुछ न कुछ आदर्ी सदा िोंगे िह, जो परर् र्ूलयों की दुतुनया र्ें रितें और उसी के शिए जीते िैं; जीर्वन या सुख, दोनों की िह धगनती उन परर् र्ूलयों र्ें निहं। राजनीततक और आधथकम र्ूलय (र्ान्यताएं) सापेक्ष िोतें और गौण िोतें। क्रांतदिी (पैगम्बर) िोग अदृश्य को देखने र्ें िर्ारह सिायता करते िैं और र्वतर्मान जीर्वन की दिाओंर्ें िाश्र्वत का िर्ारे सम्र्ुख उद्घाटन करते िैं। इस संसार के र्ूलयों की ओर से र्वे िापरर्वाि िोतें और र्वे ेअच्छाई (सत्)् को कक्रयाल्न्र्वत करने ेर्ें जुटे िोतें। र्वे एकत्र्व को देखते िैं और दूसूरों को भी इसे देख पाने र्ें सर्थ मबनातें। र्वे िर्ारह शर्त्रता की भार्वना को सचेत करते े ैं। उनर्ें िोता िै हृदय का सिास, आत्र्ा का सौजन्य और तनभीकों का आनन्दिास। 'सोसायटह आफ फ्रेंड्स' के टार्स नेिर ने 'अपने अल्न्तर् साक्ष्य भाषण र्ें, जो किा जाता िै कक उसने अपनेर्िाप्रयाण से िगभग दो घण्टे पिि हदया था' किा था, "इस सर्य र् ैंएक ऐसी भार्वना का अनुभर्व कर रिा िंूं, ल्जसे बुराई करने र्ें कोई आनन्द निहं ंआता और जो न ककसी बुराई का बदिा िह िेना चािती िै, अवपतु ुर्वि सब बातों को सिने र्ें िह आनन्द अनुभर्व करती िै, इस आिा र्ें कक अन्त र्ें र्वि अपने-आपर्ें आनन्द पा सकेगी। उसे आिा िै कक र्वि सम्पूण म क्रोध और वर्ववर्वाद की सर्ाल्प्त के बाद भी वर्वद्यर्ान रिेगी; और र्वि सारे िष मऔर कूरूरता को, तथा अन्य जो भी कुछ उसके प्रततकूि प्रकृतत का िै, उस सबको जीण मकर चुकने ेके बाद भी िेष रिेगी। यि सब प्रिोभनों के अन्त को देखती िै। क्योंकक स्र्वयंइसके अन्दर कोई बुराई निहं िै, इसशिए यि दूसूरों के प्रतत वर्वचारों र्ें भी कोई बुरह बात निहं ंिाती। यहद कोई इसके साथ दगा करे, तो यि उसे सि िेती िै... यि िोक र्ें गभ मरूप र्ें पिुंचती िै, और तब इसका जन्र् िोता िै, जब इसपर दया करनेर्वािा कोई निहं ंिोता; दु:ख और अत्याचार पर यि बुड़बुड़ाती भी

निहं। इसे केर्वि कष्टों र्ें ििह आनन्द शरि्ता िै, अन्य ककसी प्रकार निहं,ं क्योंकक संसार के आनन्द से तो इसकी त्यिा िो जाती िै। र्नैं ेइसे एकान्त र्ें, पररत्यक्त िोने पर पाया िै। इसके द्र्वारा र्ुझे ेउनके साथ शर्त्रता की अनुभूतत शरि्ह िै, जो खिोंिों र्ें और उजाड़ स्थानों र्ें रितेिैं।"

गांधीजी

केर्वि कभी-कभी कोई वर्वरिह आत्र्ा सार्ान्य स्तर से ऊपर उठती िै, जो परर्ात्र्ा का साक्षात् ्दिनम करके हदव्य उद्देश्य को स्पष्टतर रूप र्ें प्रततफशित करती िै, और हदव्य पथ-प्रदिनम को और अधधक सिास के साथ व्यर्विार र्ें िाती िै। इस प्रकार के र्नुष्य का प्रकिा इस अन्धकारर्य और अव्यर्वस्था-भरे संसार पर संकेत-दहप की भांतत चर्कता िै। आज 'भारत की ल्स्थतत इसशिए अपेक्षाकृत अच्छी िै, क्योंकक उसके जीर्वन र्ें एक ऐसा व्यल्क्तत्र्व अर्वतररत िुआ िै, जो परर्ात्र्ा को भेजी िुई अधग्रशिखा िै। उसका कष्ट सिन भारत के अिात अशभर्ान का साकार रूप िै और उसके सत्याग्रि र्ें भारत की बुद्धधर्त्ता का िाश्र्वत धैय मप्रततफशित िोता र्ै। एक तनभीक 'भार्वना, िगभग अजेय इच्छाि–ल्क्त, सत्य और न्याय के प्रतत एक अततर्ानर्वीय उत्सिा उसकी प्रर्ुख वर्वर्षेताएं िै। गांधी िर्ारे सम्र्ुख अब तक र्नुष्यों को ज्ञात आदिों र्ें सबसे अधधक वर्वर्िुद्ध, उन्नायक और प्रेरेणाप्रद आदि मप्रस्तुत करता िै। उसका आध्याल्त्र्क प्रभार्व एक तनर्ि म और वर्वर्िुद्ध करनेर्वािह ज्र्वािा िै, ल्जसने बिुत-सी र्ि् को जिा डािा िै और बिुत-से वर्वर्िुद्ध स्र्वण मको तनखारा िै। उसका सारा जीर्वन अन-आल्त्र्क के वर्वरुद्ध अवर्वरार् युद्ध के रूप र्ें रिा िै। बिुत-से िोग ऐसे भी िैं, जो उसे ऐसा पिर्ेवर राजनीततज्ञ बतातेिैं जो ठीक र्ौके पर कार् बबगाड़ देता िै। राजनीतत एक अथ मर्ें एक पिेा िै, और राजनीततज्ञ र्वकीि और इंजीतनयर की भांतत एक ऐसा व्यल्क्त िै, ल्जसे सार्वजमतनक कायों को सुचारु रूप से करने ेके शिए प्रशिक्षक्षत ककया जाता िै। परन्तु एक और भी अथ मिै, ल्जसके अनुसार राजनीतत एक धन्धा िै और राजनीततज्ञ एक ऐसा व्यल्क्त िै, ल्जसे अपने दिेर्वाशसयों की रक्षा करने ेऔर उनर्ें एक सांझे ेआदिों के प्रतत प्रेर् जगानेके अपने जीर्वनि–क्ष्य का ज्ञान िै। सम्भर्व िै कक इस प्रकार का व्यल्क्त िासन के व्यार्विाररक कार्-काज र्ें असफि शसद्ध िो, और कफर भी अपने अनुयातययों र्ें अपनेसांझिेक्ष्य के प्रतत अदम्य वर्वश्र्वास भरने र्ें सफि रिे। क्रौर्र्वेि और शिंकन जैसे नेताओं र्ें इन दोनों प्रकार के राजनीततज्ञों का शर्धश्रत रूप वर्वद्यर्ान रिता िै। एक ओर तो र्वे स्र्वयंसार्ाल्जक आदिों के जीते-जागते र्ूत मरूप िोतेिैं और दूसूरह ओर सार्वजमतनक कायों के व्यार्विाररक संगठनकताम भी िोतेिैं। गांधी, भिे िह र्वि िासन की किा र्ें 'भिह भांतत प्रर्वीण न िो, दूसूरे अथ मर्ें सचर्ुच िह राजनीततज्ञ िै। सबसे बढकर, र्वि एक नये संसार की आर्वाज़ िै, एक पररपूणतमर जीर्वन की आर्वाज़, एक वर्वस्तृततर और अपेक्षाकृत अधधक सर्वागांसम्पूण मचेतना की आर्वाज़। उसका दृढ वर्वश्र्वास िै कक धर् मके आधार पर िर् एक ऐसे संसार का तनर्ाणम कर सकतेिैं, ल्जसर्ें न दररद्रता िो, न बेकारह, और न युद्ध िों, न रक्तपात। "उस संसार र्ें अतीत के ककसी भी काि की अपेक्षा परर्ात्र्ा र्ें किहं अधधक और गिरा वर्वश्र्वास िोगा। एक वर्वस्तृत अथ मर्ें संसार हटका िह धर् मके सिारे िुआ िै।" र्वि किता िै, "आगार्ी कि का संसार अहिंसा पर आधाररत िोगा, उसे िोना िह िोगा। सम्भर्व िै कक यि एक सुदुर िक्ष्य जान पड़े,े एक आदि मिोक (यूटोवपया)। परन्तु यि ततनक भी अप्राप्य निहं िंै,

क्योंकक इसका तनर्ाणम अभी और यिहं ◌ंप्रारंभ ककया जा सकता ◌ै। कोई भी व्यल्क्त भववर्ष्य की जीर्वन पद्धतत अहिंसात्र्क पद्धतत-को, बबना यि प्रतीक्षा ककए कक दूसूरे भी उसे अपनाएं, अभी अपना सकता ◌ै। और यहद एक व्यल्क्त ऐसा कर सकता ◌ै, तो र्नुष्यों के सर्ूचे ◌ेके सर्ूचे ◌ेसर्ूि ऐसा क्यों निहं ◌ंकर सकते? सर्ूचे राष्र? र्नुष्य बुिधा प्रारम्भ करने ◌ेर्ें इसशिए हिचकते ◌ैं, क्योंकक र्वे सर्झते ◌ैं कक ◌िक्ष्य को पूण मरूप र्ें प्राप्त निहं ककया जा सकता। यि र्नोर्वृवृत्त ◌िह प्रगतत के र्ाग मर्ें ◌िर्ारह सबसे बड़ी बाधा ◌ै- एक ऐसी बाधा, ल्जसे ◌िर एक र्नुष्य, यहद र्वि केर्वि दृढ संकलप कर ◌े, दूर्र ◌िटा सकता ◌ै।479 ◌िर्ें इस दृल्ष्टकोण को परे ◌िटा देना ◌ोगा कक परर्वि (आस-पास की पररल्स्थततयां) किहं ◌ंअधधक र्िबिाह ◌ैं और ◌िर् असिाय ◌ैं।

यहद ◌िाश्र्वत अच्छाई को सर्य रिते प्राप्त करना ◌ो, तो ◌िर्ें केर्वि उन साधनों का प्रयोग करना ◌ोगा, जो ताल्त्र्वक रूप से अच्छे ◌ैं। उसे जलदह या बिप्रयोग के ताल्त्र्वक रूप से बुरे कायों द्र्वारा प्राप्त करनेके छोटे रास्तों को अर्विंबन करने ◌ेका पररणार् केर्वि वर्वफिता ◌िह ◌ोगा। अपराधी को बिपूर्वकम तनयंबत्रत रखने या उसे नैततक रूप से प्रभावर्वत करने के दो उपायों र्ें से दूसूरा अधधक अच्छा ◌ै; यि युल्क्त दह जाती ◌ै कक यहद ◌िारहररक बि द्र्वारा दर्न बुरा ◌ै, तो नैततक बि द्र्वारा दर्न भी कुछ भिा निहं ◌ै। यि भी दर्नात्र्क ◌ै, र्नर्नेके ढंग का निहं;◌ं यि पे्रर्पूण मकी अपेक्षा उग्र अधधक ◌ै। बबना गोिह चिाए या बबना ◌िाठी का उपयोग ककए भी ◌िोगों की भीड़ को उनकी इच्छा के प्रततकूि, उनके उत्कृष्टतर वर्वर्वेक के प्रततकूि ककसी वर्वशिष्ट प्रकार का काय मकरनेके शिए वर्वर्वि ककया जा सकता ◌ै। कफर भी नैततक रहतत, र्नाकर, सर्झाकर काय मकरने ◌ेकी पद्धतत अधधक अच्छी ◌ै, क्योंकक इसर्ें यि स्र्वतंत्रता तनहित ◌ै कक दूसूरा व्यल्क्त उस दबार्व को चािे तो स्र्वीकार करे, या अस्र्वीकार कर दे।

अहिंसा कायरता या दुबिुमता को तछपाने के शिए बिाना निहं ◌ै। केर्वि र्वे ◌िह ◌ोग, ल्जनर्ें र्वीरता, कष्ट-सहिष्णुता और बशिदान की भार्वना के गुण ◌ैं, अपने-आपको संयर् र्ें रख सकते ◌ैं और ◌िस्त्रों का प्रयोग ककए बबना रि सकते ◌ैं। हिंसा के पररणार् से डरकर अहिंसक बन जाना खतरनाक ◌ै। यि सोचना गित ◌ै कक गांधी के दृल्ष्टकोण र्ें जीर्वन का र्ूलय स्र्वाधीनता से बढकर ◌ै। गांधी को र्ािूर् ◌ै कक ◌िारहररक कष्ट सिना और र्र जाना ◌िारहररक बुराइयां ◌ं◌ैं; ल्जन्िें सिन ककया जा सकता ◌ै और उधचत ठिराया जा सकता ◌ै, यहद उनके द्र्वारा ◌िर् इतनी अच्छाई उत्पन्न कर सकें कक ल्जससे उनकी क्षततपूतत िो सके। र्नुष्य को नष्ट कर देने से कोई ◌िाभ निहं ◌ं◌ै; ◌िर्ें उनके आचरणों को (तौर-तरहकों को) नष्ट करना चाहिए। यहद ◌िर् र्वतर्मान ◌िासकों को ◌िटा भी दें, और उसके बाद भी प्रणािह ज्यों की त्यों रिे, तो उससे कोई ◌िाभ न ◌ोगा। युद्ध के र्ोचे पर जाकर ◌िड़ना ◌िह सबसे बड़ी बुराई निहं ◌ं◌ै; उससे भी अधधक बुरह सर्ाज की र्वि दिा ◌ै, ल्जसर्ें सबि द्र्वारा तनबिम के प्रतत हिंसा का प्रयोग संभर्व ◌ो पाता ◌ै। हिटिर तो सर्ाज की सड़ांध की (वर्वषाक्त) दिा के बाह्य धचह्न-र्ाि ◌ैं, ल्जनकी केर्वि र्रर्-पट्टह कर देनेया उन्िें काटकर अिग कर देनेसे सर्ाज की र्वास्तवर्वक धचककत्सा निहं ◌ं◌ो सकती। यहद सर्ाज को बचाना ◌ै, तो र्वतर्मान व्यर्वस्था का प्रततरोध आर्वश्यक ◌ै; परन्तु यि प्रततरोध ऐसा ◌ोना चाहिए, जो झूठ और बेईर्ानी को कुचि दे। कुल्त्सत जीर्वन की अपेक्षा र्ृतूयुबुरह निहं ◌ं◌ै।

479 शिबटी (◌ि)◌ंदं न

अहिंसात्र्क प्रततरोध के शिए धीरता और अनुिासन की आर्वश्यकता िोती िै; पर इन गुणों की आर्वश्यकता तो युद्ध र्ें भी िोती िह िै। यहद िोग रणभूशर् र्ें र्रने को तैयार िो सकते िैं. तो उन्िें र्विंहंसास और र्विह आदिर्वमाद अहिंसात्र्क प्रततरोध र्ें हदखाना चाहिए। संभर्व िै कक युद्ध र्ें िर्ारह िातन इस प्रकार के प्रततरोध र्ें िोनेर्वािह िातन की अपेक्षा किहं अधधक िो।

यि युल्क्त दह जाती िै कक प्रततरोध न करनेर्वािे िोगों को, संभर्व िै कक अपनेदेि का र्वर्विनाि िोते देखना पड़े।े परन्तु प्रततरोध करनेर्वािे िोगों को भी तो पररणार् का सार्ना करना िह िोगा। न्यायियों र्ें अन्तःकरणानुयायी (युद्ध के प्रतत) एतराज़ करनेर्वािों से पूछा जाता िै कक यहद जर्नम आकर उनकी पल्त्नयों, बहिनों और र्ाताओं से बिात्कार करने िगें, तो र्वे क्या करेंगे? तनःसन्देि र्वे उन्िें ऐसा करने ेसे रोकेंगे, परन्तु ु बदिे र्ें र्वेजर्नमों की पल्त्नयों, बहिनों और पुल्त्रयों की ित्या निहं कर डािेंगे। यि तुिना ठीक निहं िै, क्योंकक आक्रर्ण के शिकार एक व्यल्क्त द्र्वारा आत्र्रक्षा के शिए बि का प्रयोग उन युद्धों से बबिकुि शभन्न प्रकार का िै, ल्जनर्ें तनदोष व्यल्क्तयों पर बि का प्रयोग ककया जाता िै। गांधी की अहिंसा एक सकक्रय बि िै, जो तनबिम का अस्त्र निहं, अवपतु ुर्वीरों का अस्त्र िै। "यहद रक्त बिना िह िै, तो र्वि िर्ारा रक्त िो। बबना र्ारे र्रनेके िान्त धैय म की साधना करो। र्नुष्य तभी स्र्वच्छन्द जी सकता िै, जबकक र्वि, आर्वश्यकता पड़नेपर, अपने भाई के िाथों, बबना उसे र्ारनेका प्रयत्न ककए, र्रनेके शिए तैयार रिे।... प्रेर्र् दूसरों को निहंजिाता, स्र्वयंको िह जिाता िै; र्वि र्ृत्यु के कष्ट र्ें भी आनन्द अनुभर्व करता िै।"

अहिंसा बुराई के साथ र्ौन सर्झौता निहं िै। गांधी को र्ािूर् िै कक सबसे बड़ा दुभामग्मय अन्याय के सार्ने शसर झुकाना िै, अन्याय का कष्ट सिना निहं। र्वि िर्ें प्िेटो के दिातमनक के दृष्टान्त का अनुकरण करने को निहं ंकिता, जो (प्िेटो का दिातमनक) जनसर्ुदाय के पागिपन को देखकर, आंधी और ओिों के तूफान र्ें दहर्वार के पीछे तछपकर खड़े िुए व्यल्क्त की भांतत, बुराई से आच्छन्न इस संसार को बुराई के िह िाथों र्ें सर्वपतम कर देना चािता था। अहिंसा 'कुछ न करना' निहं ंिै। िर् बुराई का प्रततरोध इस ढंग से कर सकतिैं कक उसके साथ सियोग करने से इनकार कर दें। भारतीय इततिास इस प्रकार के अहिंसंक असियोग के उदािरणों से भरा पड़ा िै; र्वे र्िाजन, ल्जन्िोंने राजा की अतनयंबत्रत िल्क्त के प्रतत र्वर्विरोध प्रदशितम करते िुए अपनी दुकानें बन्द कर दह थीं, बनारस के िाह्र्ण, ल्जन्िोंनेईस्ट इंडडया कम्पनी द्र्वारा िगाए गए करों के र्वर्विरोध र्ें उपर्वास ककया था, र्वे राजपूत नाररयां, जो आक्रर्णकाररयों की र्वासना से अपनेसतीत्र्व की रक्षा करने ेके शिए जौिर की आग र्ें जि र्रह थीं। इन उदािरणों र्ें र्ानर्वीय आत्र्ा की बुराई पर र्वर्विजय पाने की िल्क्त भिह भांतत स्पष्ट िो जाती िै। अहिंसा सिक्त र्ांसपेशियों पर, र्वर्विनाकारह िस्त्रास्त्रों पर और िैतानी जिरहिह गैसों पर भरोसा निहं राती, अवपतु नैततक सिास, आत्र्तनयंत्रण और इस सुदृढ चेतना पर भरोसा रखती िै कक प्रत्येक र्नुष्य के अन्दर, चािे र्वि ककतना िह क्रूर और व्यल्क्तगत रूप से ककतना द्र्वेषी क्यों न िो, दया की एक जिती िुई ज्योतत, न्याय के प्रतत प्रेर्र् और अच्छाई तथा सत्य के प्रतत सम्र्ान यी भार्वना र्वर्विद्यर्ान रिती िै; और उसे कोई भी व्यल्क्त, जो ठीक साधनों का प्रयोग करे, जाग्रत् ्कर सकता िै। रोर्न िोगों के अर्विकाि के हदनों को र्नानेके शिए (खेिों के र्ैदान

र्ें पिुओं या र्नुष्यों से तिर्वार िेकर िड़नेर्वािो) तरर्वाररयों की र्रने के शिए वर्वर्वि न ककया जाए, यि तनश्चय करानेके शिए टिेहरेकस का बशिदान आर्वश्यक था।

गांधी ने अपनी पद्धततयों का प्रयोग भारत की स्र्वाधीनता की सर्स्या को िि करनेके शिए भी ककया िै। यहद िर् स्र्वतन्त्र नर-नाररयों की भांतत जीर्वन निहं बबता सकते, तो िर्ें र् जानेर्ें संतोष अनुभर्व करना चाहिए। भारत र्ें अंग्रेज़ी राज्य भारतीय जनता के एक बिुत बड़े भाग की स्र्वेच्छापूण मऔर र्वास्तवर्वक सिर्त के आधार पर हटका िुआ िै। यहद यि सियोग न रिे, तो यि िासन सर्ाप्त िो जाएगा। इस अहिंसात्र्क असियोग की पद्धतत र्ें िर् कई उपाय बरत सकतेिैं। जो बात भारत की स्र्वाधीनता की िड़ाई पर िागू िोती िै, र्विह बािरह आक्रर्ण के र्ार्िें पर भी िागू िोती िै। किा जाता िै कक र्वतर्मान संसार र्ें, जिांयुद्ध एक तन्त्रात्र्क (टोटशिटेररयन) िै, जिांयोद्धा िोग िििे की भांतत एक-दूसूरे के सम्पकम र्ें निहं आते, अवपतु दूरू रिकर िह र्ार-काट का आयोजन करते िैं, अहिंसात्र्क असियोग र्वीरतापूण मभिे िह िो, ककन्तुप्रभार्विहन प्रतीत िो सकता िै। यहद भारत जापानी आक्रर्ण का हिंसा से तो प्रततरोध न करे, ककन्तु प्रत्येक पुरुष, स्त्री और बच्चा जापातनयों का कोई भी कार् करने, उन्िें खाद्य-सार्ग्री बेचनेया अन्य कोई भी सेर्वा करने से इनकार कर दे, और उसके शिए कोड़े खाने, जिे जाने, गोशियां तथा अन्य प्रकार की हिंसा को सिने को तैयार रिे, तो भारत ित्रु को जीतने र्ें सफि िो जाएगा। इस नीतत का अर्विम्बन करने के शिए ऐसी र्वीरता, ऐसे सािस और ऐसी सहिष्णुता की आर्वश्यकता िै, ल्जसका जोड़ युद्ध र्ें भी किहं हदखाई निहंपड़ता। वर्वदेिी आक्रान्ताओं को पुशिस के शसपािह, डाककये आहद का कार् करने के शिए यिां के आदर्ी निहं शर्ि पाएंगे। सारह जनता को जिे र्ें निहंडािा जा सकता। सबको गोिह भी निहं र्ारह जा सकती। कुछ थोड़े-से िोगों को गोिह र्ार देनेके बाद तनरिा िोकर यि प्रयत्न छोड़ देना पड़ेगो। राजस्र्व निहं उगािा जा सकेगा और बन्दरगािों र्ें कार् करनेर्वािो र्ज़दूरू और दूसूरे र्ज़दूरू िड़तािो करेंगे।'[480] कोई भी सरकार तब तक कार् निहं कर सकती, जब तक र्वि जनता को अपनेअनुकूि न कर िे।'[481] 'भारत का प्रततरोध प्रभार्वी िोगा। यि सब प्रेर् के साथ और अत्याचारह के वर्वरुद्ध र्न र्ें कुछ

---

480 र्वतर्मान दिाओं र्ें भी ित्रु के साथ असियोग की नीतत अपनानी पड़ेगी। र्ाच,म 1942 र्ें हदल्िह की रोटरह क्िब र्ें भाषण देतेिुए जनरि स्टाफ के उप-अध्यक्ष जनरि र्ोिस्र्वथ मने किा था, "इस सर्य भारत का िर कोई आदर्ी िर्से पूछ रिा िै कक िर् जापातनयों को भारत से परे रखने के शिए क्या करनेर्वािे िैं। सेना के दृल्ष्टकोण से इस बिुत बड़े युद्ध के र्ोचे पर िर्ें उन र्ित्र्वपूण मस्थानों की रक्षा तो करनी िह िोगी, ल्जनपर कदज़ा रखना भारत को सुरक्षक्षत रखने के शिए आर्वश्यक िै, परन्तु िर् सब स्थानों पर कदज्ञा बनाए निहं रख सकते। इसशिए िेष भारत र्ें क्या ककया जाए, जिांर्ि सेना, र्वायुसेना या नौसेना रख पाने र्ें असर्थ मिैं? िर् सब िोगों को िधथयार भी निहं दे सकते। पर दूसूरह ओर, िर् जनता को इस वर्वषय र्ें काफी कुछ शिक्षक्षत कर सकते िैं कक र्वि ककस प्रकार जापातनयों को तंग करे, अटकाए और उनके आक्रर्ण को सर्ाप्त कर दे। सम्भर्व िै कक तनचिे स्तर पर यथोधचत पथ-प्रदिनम और यथोधचत नेतृत्र्व न िो; कफर भी र्ुझेिगता िै कक यहद जनता को इस हदिा र्ें शिक्षक्षत ककया जाए कक जापानी यिां से गुजरने निहं पाएंगे, तो िर् जापानी आक्रर्ण को परास्त कर सकते िैं। र्नोर्वैज्ञातनक दृल्ष्ट से यि कार् केर्वि ऐसे बुद्धधजीर्वी र्वग मद्र्वारा ककया जा सकता िै, जो र्ज़दूरूों और ककसानों के साथ कन्धे से कन्धा शभड़ाकर कार् कर रिा िो।"

481 जब अक्टूबर, 1938 र्ें चेकोस्िोर्वाककया के तनर्वाशसयों ने आत्र्सर्पणम कर हदया, तब गांधीजी ने उनके नार् जो संदेि हदया था, उससे तुिना कील्जए, "र्ैं चेक िोगों से कुछ िदद किना चािता िूँ. क्योंकक उनकी दुदुमिा ने र्ुझेिारहररक और र्ानशसक कष्ट की सीर्ा तक द्रवर्वत कर हदया िै और र्ुझेिगा कक इस सर्य जो वर्वचार र्ेरे र्न र्ें घुर्ड़ रिे िैं, यहद र् ैं

वर्वद्र्वेष रखे बबना ककया जाना चाहिए और इस प्रकक्रया रें् दि पवर्वत्रीकृत, श्रे्रेष्ठता प्राप्त और स्र्वतंत्र िो जाता

ै।'[482]

उनरें्चेकोंके साथ सर्ान रूपसे हिस्सा न बटाके तो यि रे्रह कायरता िोगी। यि स्पष्ट ि ै कक छोटे राष्ट्रों को डडक्टेटरों (अधधनायकों) के संरक्षण रें् आना िोगा या आने के शिए तैयार रिना िोगा या कफर रे्वे यूरोप की िांतत के शिए तनरन्तर खतरा बने रिेंगे। सम्पूण मसद्भार्वना के िोते िुए भी इंग्िैण्डि और फ्रांस उन्िें बचा निहं ंसकते। उनके िस्तक्षेप का अथ मिोगा केर्वि रक्तपात और वर्वनाि, ऐसा, जैसाकक पििे कभी िुआ न िोगा। इसशिए, यहद र् ैंचेक िोता, तो र् ैंइन दोनों राष्ट्रों को रे्रे दि की रक्षा करने के दातयत्र्व से रु्लुक्त दे देता। और कफर भी जीना तो रु्झे िोता िह। र् ैंककसी भी राष्ट्र या व्यल्क्त का वपट्ठ बनकर रिने को तैयार न िोता। या तो रु्झेपूण मस्र्वतन्त्रता शरि्ती या कफर र् ैंसर्ाप्त िो जाता। िस्त्रों की टक्कर द्र्वारा वर्वजय पानेका प्रयत्न केर्वि र्वीरता का हदखार्वा-भर िोता। परन्तु यहद र्,ैं जो रु्झुसे रे्रह स्र्वतन्त्रता छीनना चािता, उसकी ल्क्त की अर्वज्ञा करते िुए उसकी इच्छा का पािन करनेसे इनकार कर देता और इस प्रयत्न रें् तनःस्त्रि रिकर प्राण दे देता, तो यि केर्वि 'र्वीरत्र्व का आडम्बर' न िोता। र्वैसा करतेिुए भी िह र् ैंअपने िरहर से िाथ धो बैठता, परन्तु अपनी आत्र्ा को, अथात्म ्अपनी आन को अर्वश्य बचा पाता। यि असम्र्ानपूण मिांतत रे्रे शिए काय मका अर्वसर बननी चाहिए। रु्झे े इस अपर्ानजनक ल्स्थतत से रु्ल्क्त पानी चाहिए और सच्ची स्र्वतन्त्रता प्राप्त करनी चाहिए। पर, एक सान्त्र्वना देनेर्वािा आकर किता ै, 'हिटिर दया करना निहं जानता। आपके आल्त्िक प्रयत्न का उसके सार्ने कोई िाभ न िोगा।' रे्रा उत्तर िै, संभर्व ि ै कक जो तुर् किते िो, र्वि ठीक िो। इततिास रें् ऐसेककसी राष्ट्र का अशभिेख निहं ंिै, ल्जसनेअहिंसक प्रततरोध का अर्वम्बिन ककया िो। यहद कष्ट-सिन को हिटिर पर कोई प्रभार्व निहं पड़ता, तो कोई बात निहं। रे्रह कोई ऐसी क्षतत तो िोगी हि निहं, जो धचन्तनीय िो। रे्रह तो केर्वि आन िह एक ऐसी र्वस्तु िै, ल्जसे र् ैंबचाने योग्य सर्झता िंूं। और र्वि हिटिर की दया पर आधश्रत निहं िै। परन्तु अहिंसा का वर्वश्र्वासी िोने के कारण र् ैंउसकी (अहिंसा की) सम्भार्वनाओंको सीशर्त न कर सकूंगा। अब तक र्वि और उसके जैसेदूसरे िोग इस अपररर्वतनीिि अनुभर्व के आधार पर कार् करते ेरिे ि ैं कक िोग िल्क्त के सार्ने झुकु जातेि ैं। उनके शिए तनित्ये पुरुषों, ल्स्त्रयों और बच्चों द्र्वारा, बबना ककसी प्रकार की कटुता र्न रें् रखे, अहिंसक प्रततरोध एक बबिकुि नया अनुभर्व िोगा। कौन कि सकता ि ै कक उच्चतर और सूक्ष्तर िल्क्तयों का प्रततभार्वन (ररस्पांस) करना उनके स्र्वभार्व रें् िह निहं ंिै? उनरें् भी र्विह आत्र्ा िै, जो रु्झरें् िै।' पर, एक और सान्त्र्वना देनेर्वािा किता ै कक 'जो आप किते िैं, र्वि आपके शिए तो ठीक िै। परन्तु आप यि कैसेआिा करतेि ैं कक आपके अनुयातययों पर आपकी इस नई पुकार की अनुकूि प्रततकक्रया िोगी? उन्िें िड़ने का प्रशिक्षण हदया गया िै। र्वैयल्क्तक र्वीरता रें् रे्वे संसार रें् अद्वर्वतीय िैं। और अब आप उनसे किते ि ैं कक रे्वे अपने िधथयार फेंक दें, और अहिंसक प्रततरोध का प्रशिक्षण िें; रु्झेतो र्वि प्रयत्न तनष्फि रिता दहख पड़ता िै।' िो सकता ि ै कक आपका किना ठीक िो। परन्तु रु्झेतो एक पुकार सुनाई पड़ी िै, ल्जसका उत्तर रु्झेदेना िह चाहिए। रु्झेअपने अनुयातययों को अपना संदेि सुनाना िह िोगा। यि अपर्ान रे्रह आत्र्ा रें् इतना गिरा पैठ गया ि ै कक इसे बािर तनकिने का र्ाग मशरिना िह चाहिए। कर् से कर् रु्झे ेतो उस प्रकाि के अनुसार िह काय मकरना चाहिए, जो रु्झे ेदहख पड़ा िै। र् ैंसर्झता िंूं कक यहद र् ैंचेक िोता, तो रु्झेइसी ढंग से काय मकरना उधचत था।

जब र्नैं पििे-पिि सत्याग्रि छेड़ा था, तब रे्रा कोई साथी निहं ंथा। िर् तेरि िजार पुरुष, ल्स्त्रयांऔर बच्चे थे, जो एक ऐसे सर्ूचेराष्ट्र के रु्काबिे रें् गाड़े िुए थे, जो कुचिकर िर्रा नार्ोतनिान तक शर्टा सकता था। रु्झे ेरािूर् निहं था कक रे्रह बात कौन सुनेगा। यि सब कुछ बबजिह की एक कौंध की तरि िुआ। सबके सब तेरि िज़ार िोगों ने िड़ाई रें् हिस्सा निहं ं शिया। कई पीछे िट गए। पर राष्ट्र की आन रि गई। दक्षक्षणी अफ्रीका के सत्याग्रि द्र्वारा एक नया इततिास शिखा गया। र् ैं बाक्टर र्वैनेस (चेकोस्िोर्वाककया के तत्कािहन राष्ट्रपतत) के सम्रु्ख एक ऐसा िस्त्र प्रस्तुत कर रिा िंूं, जो कायरों का निहं,ं अवपतु र्वीरों का िै। इससे बढकर और कोई र्वीरता निहं िो सकती कक ककसी भी पाधथर्व मिल्क्त के सम्रु्ख, चािे र्वि ककतनी भी र्विह क्यों न िो, घुटने टेकने से दृढतापूर्वकम इनकार कर हदया जाए, और यि इनकार आत्र्ा रें् बबना कटुता िाए और इसे पूण म र्वश्र्वास के साथ वुद्धया जाए, कक केर्वि आत्र्ा िह जीवर्वत रिता िै, और कुछ जीवर्वत निहं रिता।'

481 बटॅं्ड रसैि े 'युद्ध और अप्रततरोध के वर्वषय रें् वर्वचार ... 'ििर थि कल्पना ... आकर्णकारह सेना िदन रें् आ पिुंचेगी, जिार्वि राजा को बककंघर् पैिस से और िाउस आफ कार्न्स (िोकसभा) के सदस्यों को पाशियमार्ेंट भर्वन से तनकािकर बािर कर देगी। बशिनम से कुछ सुयोग्य दफ्तरिह अफसर िाए जाएंगे, जो व्िाइट िॉि रें् असैतनक अफसरों से

यि परारि् मकरेंगे की 'कलचर' (संस्कृतत) के राज्य का प्रारम्भ ककन कानूनों द्वारा ककया जाए। इतने र्वश्य (अनुपद्रर्वी) राष्ट्र का प्रबन्ध करनेरें् ककसी प्रकार की कहठनाई ि◌ोने की आिंका निहं की जाएगी, और ि◌ुरू र्ें ि◌गभग सभी कर्चमाररयों को उनके र्वतर्मान पदों पर ि◌ह रिने हदया जाएगा। क्योंकक ककसी भी बड़े ◌ेआधुतनक राज्य का ि◌ासन बिुत पेचीदा र्ार्ि ि◌ोता ि◌ै और यिह ठीक सर्झा जाएगा कक संक्रर्ण की प्रकक्रया को उन ि◌ोगों की सियता से सुवर्वधाजनक बनाया जाए, जो ि◌ासन के र्वर्वद्यर्ान यंत्तजात (र्ीनरह) से 'भिह भांतत पररधचत ि◌ैं।

"परन्तु यहद इस बबन्दु ◌ुपर पिुंचकर राष्ट्र उतना ि◌ह सिास हदखाए, ल्जतना कक र्वि युद्ध र्ें सदैर्व हदखाता रिा ि◌ै, तो कहठनाइयां ◌ं(जर्नमों के शिए) ि◌ुरू ि◌ो जाएंगी। सब र्वर्वद्यर्ान कर्चमारह जर्नमों के साथ सियोग करनेसे इनकार कर देंगे। उनर्ें से कुछ को, जो अधधक प्रर्ुख ि◌ोंगे, जेि र्ें डाि हदया जाएगा, ि◌ायद गोिह भी र्ार दह जाए, ल्जससे दूसूरे ि◌ोगों को सियोग करने के शिए प्रोत्सािन शर्िे। पर यहद बाकी ि◌ोग दृढ रिें, और र्वे जर्नमों द्वारा हदए गए आदेिों को र्ानने या उन्िें आगे तक पिुंचाने से इनकार कर दें और र्वे अंग्रेज़ी पाशियमार्ेंट और अंग्रेज़ी सरकार द्वारा पििे से हदए गए आदेिों का ि◌ह पािन करते रिें, तो जर्नमों को र्वर्वि ि◌ोकर उन सबको, यिां तक कक छोटे से छोटे डाककये को भी पदच्युत कर देना ि◌ोगा और उनके स्थान की पूतत मकरने के शिए जर्नमों को बुिाना पड़ेगा।

"पदच्युत कर्चमाररयों र्ें से सबको न तो कैद ि◌ह ककया जा सकेगा और न गोिह ि◌ह र्ारह जा सकेगी। क्योंकक कोई िड़ाई तो ि◌ोगी ि◌ह निहं, इसशिए इस प्रकार की अन्धाधुंध पािवर्वकता का प्रश्न ि◌ह निहं उठता। और जर्नमों के शिए यि बिुत हि कहठन ि◌ोगा कक र्वे एकाएक बबिकुि 'कुछ निहं,◌ं र्ें से पूरा प्रिासन यिेजात खड़ा कर सके। र्वे चािे कुछ भी राजाज्ञाएंजारह क्यों न करें, जनता उनकी पूरह तरि उपेक्षा करेगी। यहद र्वे आदेि दें कक स्कूिों र्ें जर्नम भाषा पढाई जाए, तो अध्यापक ि◌ोग अपना कार् इस प्रकार जारह रखोगे, र्ानो इस प्रकार का कोई आदेि हदया ि◌ह निहं गया ि◌ै। यहद अध्यापकों को नौकरह से ि◌टा हदया गया, तो बच्चों के र्ाता-वपता उन्िें स्कूि भेजना बन्द कर देंगे। यहद जर्नम आदेि दें कक अंग्रेज़ युर्वकों को सैतनक सेर्वा करनी पड़ेगी, तो युर्वक ि◌ोग सीधा-सादा इनकार कर देंगे। कुछ थोड़े–से ि◌ोगों को गोिह र्ारने के बाद तनरि ि◌ोकर जर्नमों को यि प्रयास छोड़ देना पड़ेगा। यहद जर्नम ि◌ोग बन्दरगािों पर सीर्ािुलक ि◌गाकर राजस्र्व उगािना चािेंगे, तो इसके शिए उन्िें जर्नम सीर्ािुलक अफसर रखने ि◌ोंगे। इसका पररणार् यि ि◌ोगा कक बन्दरगािों के सब र्ज़दूर ि◌ड़ताि कर देंगे, और इस प्रकार इस उपाय से भी राजस्र्व प्राप्त करना असम्भर्व ि◌ो जाएगा। यहद जर्नमों नेरेिों पर कदज़ा करने का प्रयत्न ककया, तो रेिर्वे कर्चमारह ि◌ड़ताि कर देंगे। र्वे ल्जस ककसी भी र्वर्वभाग को छुएंगे, र्वि तुरन्त इस प्रकार तनल्ष्क्रय ि◌ो जाएगा, र्ानो ि◌कर्वा र्ार गया ि◌ो, और इस तरि ि◌ीघ्र ि◌ह, जर्नमों तक को भी, यि स्पष्ट ि◌ो जाएगा कक जब तक जनता के साथ सर्झौता न ककया जाए, तब तक इंग्िैंड से कोई ि◌ाभ निहं उठाया जा सकता।

"आक्रर्ण का इस पद्धतत से र्ुकाबिा करने के शिए अर्वश्य ि◌ह धीरता और अनुिासन की आर्वश्यकता ि◌ोगी। परन्तु धीरता और अनुिासन की आर्वश्यकता तो युद्ध र्ें भी ि◌ोती ि◌ै। वपछिे ककतने ि◌ह युगों से इन गुणों का र्वकास र्ुख्यतया युद्ध के शिए करनेकी शिक्षा दह जाती रिह ि◌ै। अब ये गुण इतने र्वस्तृत रूप र्ें र्वर्वद्यर्ान ि◌ै कक प्रत्येक सभ्य देि र्ें ि◌गभग ि◌रएक व्यल्क्त, जब भी सरकार उपयुक्त सर्य सर्झे, युद्ध के र्ोचे पर ि◌ड़ते ि◌ुए र्रने को तैयार रिता ि◌ै। ल्जस सािस और आदिर्वमाद का उपयोग आजकि युद्ध के शिए ककया जाता ि◌ै, उसीको शिक्षा द्वारा सरिता से तनल्ष्क्रय प्रततरोध की हदिा र्ें र्ोड़ा जा सकता ि◌ै। र्ुझेर्ािूर् निहं ◌ंकक इस युद्ध की सर्ाल्प्त ि◌ोने तक इंग्िैंड की ककतनी जनिातन ि◌ोगी; पर यहद यि ि◌ातन दस ि◌ाख तक ि◌ो गई तो ककसीको अचरज न ि◌ोगा। इसकी तुिना र्ें तनल्ष्क्रय प्रततरोध र्ें अत्यन्त कर् जनिातन से ककसी भी आक्रर्णकारह सेना को यि बात स्पष्ट की जा सकेगी कक इंग्िैण्ड को र्वदेिी ि◌ासन के अधीन कर पाना एक असंभर्व काय मिै। और यि प्रर्ाण एक बार सदा के शिए और सब ि◌ोगों के शिए प्रस्तुत ककया जा सकेगा; इसके शिए युद्ध की अतनल्श्चत, संहदग्ध घटनाओं ◌ंपर तनभरम रिने की भी आर्वश्यकता न ि◌ोगी।"

अहिंसांत्र्क प्रततरोध भी प्रततरोध का िह एक रूप िै और इसशिए विं भी बि-प्रयोग िह िै। यि अहिंसंक सिस्त्र प्रततरोध से ककस प्रकार उत्कृष्ट िै? िर्ें तनणयम पररणार्ों को देखकर करना िोगा। बि के प्रयोग का पररणार् उनके शिए नैततक दृल्ष्ट से ह्रासकारह िोता िै, जो उसका प्रयोग करते िैं। िर्ें र्न के उस स्वभार्व को प्रोत्सािन निहं ंदेना चाहिए, जो िर्ारे िर्िुओंके प्रतत कुद्ध िोने र्ें आनन्द का अनुभर्व करता िै। एक इस प्रकार का आल्त्र्क गर्व मिोता िै, कक िर् तो प्रे्रेर्ास्पद िैं और िर्ारे िर्िु घृणास्पद। जब तक िर् वर्वद्र्वेष के बन्धनों को तोड़ न डािें, तब तक िर् प्रगतत करने र्ें असर्थ मरिेंगे। अहिंसंक प्रततरोध ऐसी नई बुराइयों का जन्र् निहं र्वेता, जो िर्ारे ककन्हिंसर्वुद्देश्यों र्ें बाधक बन सकें। िर् नैततक दृल्ष्ट से स्वयंपततत िुए वर्वना चुनौती का सार्ना करते िैं।

ल्जस सर्य बबरमता की 'भार्वना सारे संसार पर छाई िुई प्रतीत िोती िै, उस सर्य गांधी िर्ारे सर्वोत्तर् अंिको जगाने का यत्न करता और घोषणा करता िै कक सहिष्णुता का कोई उद्देश्य िोना चाहिए और उस िक्ष्य तक पिुंचने का प्रयत्न करना चाहिए। गांधी को र्ािूर् िै कक यहद िर् जीर्वन और सत्य के साथ अपनेसर्ूचे सम्बन्ध को बबिकुि नये रूप र्ें न ढािें, तो िर् बुराई का अहिंसांत्र्क प्रततरोध करने र्ें सर्थ मनिहं ंिो सकते। िर्ें 'उधचत' की आन्तररक भार्वना को वर्वकशसत करना िोगा और, चािे कुछ भी क्यों न िो जाए, अपनी र्वैयल्क्तक न्यायतनष्ठा पर आंच न आने देनी िोगी। िर् अनुधचत जलदबाज़ी के साथ सारे संसार को उच्चतर् स्तर तक निहं ं उठा सकते। हिन्दूर्ास्त्रों की शिक्षा िै कक िर्ें सर्ूचे सर्ाज र्ें आदि मको अर्वतररत करनेके प्रयत्नों को छोड़ना निहं ंचाहिए। संन्याशसयों का वर्वधान र्ानर्व जातत का र्ूत मसद्र्वर्वेक िै, जो िर्ें उन उच्चतर र्ान्यताओंके जगत् ् की याद हदिाता िै, ल्जनका प्रततभार्वन (ररस्पांस) सार्ान्य र्नुष्य भी करते िैं। संन्याशसयों के शिए सिस्त्र बि का पूण मपररत्याग परर् शसद्धान्त की बात िै। र्वे सम्पूण मक्रोध और भय को त्याग चुके िोतेिैं और उन्िेंउन 'भौततक र्वस्तुओं की कोई आर्वश्यकता निहं िोती, ल्जनके शिए िोग िड़तेिैं। र्वे 'स्वाधगकम' आत्र्ाएं आदान और प्रदान के तनयर् से ऊपर उठ चुकी िोती िैं। र्वे राज्य के संरक्षण से बािर पिुंचकर युद्ध की बुराई को देखती िैं, परन्तु र्वे इसे दूसूरे िोगों पर आदेि के रूप र्ें निहं ंथोपतींऔर उन्िेंकानून के संरक्षण से र्वंधचत निहं ंकरना चािती। चािे र्वे अत्याचाररयों के वर्वरुद्ध अपनेसारे दार्वे त्याग दें, ककन्तु र्वे अपने वर्वचारों को उन िोगों पर निहं थोपना चािती, ल्जनकी राय उनसे शभन्न िै। ककसी राष्र के शिए अहिंसंक असियोग की नीतत तभी उधचत ठिराई जा सकती िै, जबकक िर्ें यि काफी कुछ तनश्चय िो कक राष्र ऐसी नीतत पर चिने के शिए सचर्ुच तैयार िै। परन्तु र्वे थोड़े-से िोग, जो न केर्वि िाल्न्त की बातें करते िैं और उसके वर्वषय र्ें सोचते िह िैं, अवपतु ुअपनी आत्र्ा से उसे चािते िैं, संकट का अर्वसर आनेपर युद्ध के र्ोचे ेपर गड़े ेतम्बू की अपेक्षा जेि की कोठरह की चार दहर्वारों र्ें जाना अधधक पसन्द करेंगे; र्वे ककसी दहर्वार के पास खड़े ेरिने ेके शिए भी तैयार िोंगे कक उनपर थूका जाए, उनपर पत्थर फेंके जाएं, या गोिह र्ार दह जाए।

यहद िर् अहिंसंक प्रततरोध के शिए तैयार निहं ंिैं, तो अन्याय का बबिकुि प्रततरोध न करने ेकी अपेक्षा तो हिंसा से उसका प्रततरोध करना अधधक अच्छा िै। "जिांकेर्वि कायरता और हिंसा, दो र्ें से एक का चुनार्व करना िो, र्ैं हिंसा की सिाि दूंगा। र्ैंतो बबना र्ारे र् जानेके िान्त सािस को उत्पन्न करना चािता िूं। परन्तु

ल्जसरें यि सिास निहं ि ै, उसे रें रह सिा िै कक जातत को नपुंसक बनाने के बजाय वि र्ारे, और र्ारते-र्ारते र जाए। र् ैंचािता िूंि कक भारत कायरतापूण मढंग से बेइज़्ज़ती का असिाय शिकार बने या बना रिे, इससे अच्छा तो यि िै कक वि अपनी आन की रक्षा के शिए िस्त्र बि का प्रयोग करे।"

गांधी कट्टर शसद्धान्तवादिह निहं ि ै। "र् ैंनिहंकिता कक 'डाकुओं और चोरों के साथ या भारत पर आक्रर्ण करनेवािे राष्ट्रों के साथ बरततेिुए हिंसां र्त करो।' परन्तु हिंसां करने रें भी अधधक सर्थ िोने के शिए रिें अपने-आपको संयर् रें रखना सीखना चाहिए। ज़रा-ज़रा- सी बात पर वपस्तौि तान िेना ताकत की निहं, कर्ज़ोरिह की तनिानी िै। आपसी र्ुक्केबाज़ी हिंसां की शिक्षा निहं, अवपतुनपुंसकता की शिक्षा िै। रें रह अहिंसां की पद्धतत कभी िल्क्त को घटा निहं सकती, बल्लक संकट के सर्य, यहद राष्ट्र चािेगा िह, तो केवि यिह पद्धतत उसे अनुिाशसत और सुव्यवल्स्थत कर पाने रें सर्थ मबनाएगी।"[483] "रें रह अहिंसां रें खतरे से डरकर और अपने वप्रयजनों को अरक्षक्षत छोड़कर भाग जाने की गुंजाइि निहीं। हिंसां और भयातुर पिायन, इन दो रें से र्ुझेकेवि हिंसां िह स्वीकार िो सकती िै। कायर को अहिंसां का उपदेि देना ठीक ऐसी िह िै, जैसा ककसी अन्धे को स्वस्थ दृश्यों का आनन्द िेने के शिए उत्साहित करना। अहिंसां वीरत्व की चरर् सीर्ा िै। और अपनेअनुभव रें र्ुझे अहिंसां की ववचारधारा रें प्रशिक्षक्षत िोगों के सम्र्ुख अहिंसां की श्रेष्ठता प्रदशितम करने रें कोई कहठनाई निहंिुई। कायर रिते िुए, जैसा कक र् ैंवषों तक था, र् ैंहिंसां का आश्रय िेता था। जब र्ैं कायरता का छोड़ना िुरू ककया, केवि तभी र्ुझे अहिंसां का र्ूलय पता चिना िुरू िुआ।"[484]

"जो आदर्ी र्रनेसे डरता िै और ल्जसरें प्रततरोध करने की िल्क्त िै िह निहं, उसे अहिंसां का पाठ निहं पढाया जा सकता। एक असिाय चूिा इसशिए अहिंसक निहं िो जाता कक बबलिह उसे सदा खा जाती िै। यहद उसका बस चिे, तो वि ित्यारिह बबलिह को कच्चा चबा जाए, पर वि सदा उससे दूर िह दूर भागने की कोशिि करता िै। िर् उसे कायर निहंकिते; क्योंकक प्रकृतत ने उसे बनाया िह ऐसा िै कक वि इससे अच्छा आचरण कर िह निहं सकता। परन्तु जो आदर्ी संकट सार्ने आने पर चूिे की तरि आचरण करता िै, उसे कायर किना िह ठीक िै। उसके हृदय रें हिंसां और ववद्वेष भरा िोता िै और यहद वि ककसी तरि स्वयंबबना चोट खाए ित्रु को र्ार पाए, तो अवश्य र्ार डािे। अहिंसां उसके शिए अनजानी वस्तु िै। उसे अहिंसां का ककतना िह उपदेि क्यों न हदया जाए, सब व्यथ म रिेगा। वीरता उसके स्वभाव रें िह निहीं। इससे पििे कक वि अहिंसां को सर्झ सके, उसे यि शसखाना िोगा कक

---

483 'यंग इल्ण्डया', 29 ई, 1924

484 विह, 29 ई, 19241 "रेरा अहिंसां का शसद्धान्त एक अत्यधधक सकक्रय िल्क्त िै। इसरें कायरता तो दूर, दुबिमता तक के शिए स्थान निहं िै। एक हिंसक व्यल्क्त के शिए यि आिा की जा सकती िै कक वि ककसी हदन अहिंसक बन सकता िै, ककन्तु कायर व्यल्क्त के शिए ऐसी आिा कभी निहं की जा सकती। इसशिए र्ैंइन पृष्ठों रें अनेक बार किा िै कक यहद िर्ें अपनी, अपनी ल्स्त्रयों की, और अपने पूजा-स्थानों की रक्षा सिनिीिता की िल्क्त द्वारा, अथात्म अहिंसां द्वारा करना निहं आता, तो, अगर िर् र्द िैं तो, िर्ें इन सबकी रक्षा िड़ाई द्वारा कर पाने रें सर्थ िोना चाहिए।" (विह, शसतम्बर, 1927)

"संसार का िासन पूरह तरि तकमिास्त्र के अनुसार निहं िोता। स्वये जीवन रें भी कुछ न कुछ हिंसां िोती िह िै और रिें न्यूनतर् हिंसां के र्ाग मको चुनना िोता िै।" (28 शसतम्बर, 1924)

 र्वि उस आक्रर्णकारह का, जो उसे ि◌रा पाने की ल्स्थतत र्ें ि◌ै, उठकर र्ुकाबिा करे, और आत्रक्षा के प्रयत्न र्ें,

यहद आर्वश्यकता ि◌ो तो, र्रनेसे भी न हिचके। इसके अततररक्त और कुछ भी करना उसकी कायरता को पुष्ट करना और उसे अहिंसा से और दूरू ि◌े जाना ि◌ोगा। यि ठीक ि◌ै कक र् ◌ैर्वस्तुतः ककसी को बदिा ि◌ेनेकी अनुर्तत निहं ◌ंदे सकता, पर र्ुझेककसी कायर को इस तथाकधथत अहिंसा की ओट भी निहं ि◌ेने देनी चाहिए। यि न सर्झते ि◌ुए कक अहिंसा ककस तत्र्व से बनी ि◌ै, बिुत-से ि◌ोगों ने ईर्ानदारह से यि सर्झा ि◌ै कक खतरे के सार्ने से प्रततरोध करने ◌ेकी तिुना र्ें भाग खड़े ि◌ोना, र्वैसे तो सदा ि◌ह, पर र्विेषेतः तब, जबकक प्राण जानेका भय ि◌ो, सद्गुण ि◌ै। अहिंसा के शिक्षक के रूप र्ें र्ुझे,◌े जिां ◌ंतक र्ेरे शिए सम्भर्व ि◌ो, इस प्रकार के अपुरुषोधचत र्वर्वश्र्वास को फै◌ैने से रोकना चाहिए। अहिंसा र्नुष्य-जातत के पास सबसे बड़ी ि◌ल्क्त ि◌ै। र्नुष्य की सूझबूझ द्र्वारा आवर्वष्कृत बड़े ◌े से बड़े ◌ेर्वर्विनाकारह ि◌स्त्र की अपेक्षा भी यि अधधक ि◌ल्क्तिाह ि◌ै। र्विनाि र्ानर्वों का र्वर्वधान निहीं। र्नुष्य स्र्वतन्त्रतापूर्वकम तभी जी सकता ि◌ै, जबकक र्वि आर्वश्यकता पड़ने पर अपने'भाई के ि◌ाथों, उसपर ज़रा भी प्रिार न करते ि◌ुए, र्रनेको तैयार रिे। प्रत्येक ि◌त्या या ककसी दूसूरे व्यल्क्त पर की गई प्रत्येक चोट, चािे र्वि ककसी भी कारण क्यों न की गई ि◌ो, र्ानर्वता के प्रतत अपराध ि◌ै।"[485] "कोई व्यल्क्त ि◌रहर से चािे ककतना ि◌ह कर्ज़ोर क्यों न िो, यहद डरकर भाग खड़े ि◌ोना ि◌र् मकी बात ि◌ै तो, र्ैदान र्ें डटा रिेगा और अपना कतव्मय करते ि◌ुए र् र जाएगा। यि अहिंसात्र्क र्वीरता ि◌ोगी। दूसूरा व्यल्क्त, ककतना ि◌ह कर्ज़ोर ि◌ोने पर भी अपनी सारह ि◌ल्क्त ि◌गाकर ि◌त्रुपर चोट करेगा और इस प्रयत्न र्ें अपनेप्राण तक दे देगा। यि र्वीरता ि◌ै, पर अहिंसा निहं। पर यहद, जब खतरे का सार्ना करना उसका कतव्मय ि◌ै, तब व्यल्क्त भाग खड़ा ि◌ोता ि◌ै, तो यि कायरता ि◌ै। पिि◌े र्ार्िे र्ें व्यल्क्त के अन्दर प्र्ेर् और दया की भार्वना ि◌ोगी। दूसूरे और तीसरे र्ार्िों र्ें व्यल्क्त र्ें अरुधच या अर्वर्वश्र्वास और भय का भार्व ि◌ोगा।"[486]

"अहिंसा का शसद्धान्त दुबिुमों और कायरों के शिए निहीं; यि तो र्वीरों और सिक्त ि◌ोगों के शिए ि◌ै। सबसे बड़ा र्वीर र्वि ि◌ै, जो बबना र्ारे स्र्वयं को र्ार हदया जानेदे। और र्वि ि◌त्या करनेया चोट पिुंचाने ◌ेसे केर्वि इसशिए बचता ि◌ै क्योंकक र्वि जानता ि◌ै कक चोट पिुंचाना गित कार् ि◌ै।"[487]

"यहद ककसी र्ें सािस निहं ◌ंि◌ै, तो र् ◌ैचािता ि◌ं◌ूं◌ू कक खतरे से डरकर भाग खड़े ि◌ोने ◌ेके बजाय र्वि र्ारनेऔर र्रनेकी किा ि◌ह सीखे।... क्योंकक इनर्ें से पिि◌े प्रकार का व्यल्क्त डरकर भागतिुए भी र्ानशसक हिंसा तो करता ि◌ह ि◌ै। र्वि इसशिए भागता ि◌ै, क्योंकक उसर्ें र्ारते ि◌ुए र् र जानेका सािस निहं ◌ंि◌ै।"[488] यि सब हिन्दू–ू दृल्ष्टकोण की ि◌ह प्रततध्र्वतन ि◌ै।

> जीर्वन, अपनेसर्वोत्तर् रूप र्ें भी, द्र्वर्वतीय सर्वोत्तर् र्वस्तु ि◌ह ि◌ै- जो कुछ आदि िै और जो कुछ सम्भर्व ि◌ै, उनके बीच सर्झौता। परर्ात्र्ा के राज्य र्ें सर्झौते का नार् निहं ि◌ोता, कोई व्यार्विाररक र्यामदाएं निहं ◌ंि◌ोतीं।

---

485 ि◌ररजन, 30जुिाई, 1935

486 र्विहं, 17 अगस्त ,1935

487 र्विह, 20 जुिाई ,1937

488 र्विहं, 15 जनर्वरह1938

परन्तु यिांधरती पर तो प्रकृतत के तनर्म कानूनों का राज्य ि ै। बिुत-सी र्ानर्वीय र्वासनाएं (तीव्र इच्छाएं) िैं और र्ें उनके आधार पर एक सुव्यर्वल्स्थत ि्ह्मांड का तनर्ामण करना ि ै। संसार पूणतमा का नैसधगकम तनर्वास स्थान निहं ंि ै। यि तो दैर्वयोग और भ्रूिों का ि्ह साम्राज्य प्रतीत िोता ि ै। यिह प्रतीत िोता ि ै कक कोई र्न की र्ौज छोटह-बड़ी सब र्वस्तुओं पर िासन कर रिह ि ै। जो कुछ उदात्त और अच्छा ि ै, र्वि िायद ि्ह कभी अशभव्यक्त िो पाता ि ै; जबकक बेिूदगी और र्वर्वकृतता अपना आधधपत्य जर्ाए रिती िैं। इस अन्धकार के ऊपर आत्र्ा का आकाि दहल्प्त से दर्क रिा ि ै। प्रयत्नों और कहठनाइयों र्ें से िोकर आदि मकक्रयाल्न्र्वत िोने के शिए संघष मकरते िैं। जब िर्ारे सार्ने र्वस्तुएं उस रूप र्ें आती िैं, ल्जसर्ें कक र्वे अब िैं तो िर्ारे सार्ने सर्स्या यि निहंिोती कक ककतनी बुराई को तनकाकर बािर ककया जाए, अवपतु यि िोती ि ै कक, जैसाकक बकम ने बिुत तीक्ष्ण ढंग से किा ि ै, ककतनी बुराई को सिन कर शिया जाए।

सर्ाजों के उन्नतत क्रर् र्ें तीन सोपान स्पष्ट हदखाई पड़ते िैं। पििा सोपान र्वि ि ै, ल्जसर्ें जंगि का कानून प्रचशित रिता ि ै, उसर्ें िर्ारे अन्दर हिंसा और स्र्वाथ मभरा रिता ि ै, दूसरा सोपान र्वि ि ै, ल्जसर्ें अदाितों, पुशिस और जेिों के साथ कानून और तनष्पक्ष न्याय का िासन रिता ि ै; तीसरा सोपान र्वि ि ै, ल्जसर्ें िर्ारे अन्दर अहिंसा और तन:स्र्वाथतमा आ जाती ि ै, ल्जसर्ें प्रेर् और कानून एक िो जाते िैं। इनर्ें से अंततर् ल्स्थतत ि्ह र्ानर्वता का िक्ष्य ि ै, और इस िक्ष्य के तनकटतर पिुंचने का उपाय यि ि ै कक ऐसे पुरुषों और ल्स्त्रयों की संख्या बढाई जाए, जो न केर्वि बि पर तनभरम रिने का, अवपतु ्उन और सब िाभों का भी पररत्याग कर चुके िों, जोकक राज्य उन्िें प्रदान कर सकता ि ै, या उनसे र्वापस छीन सकता ि ै, जो अक्षरिः घर को त्याग चुके िों, और अपनी र्वैयल्क्तक र्ित्र्वाकांक्षाओं का बशिदान कर चुके िों, जो तनत्य इसशिए र्रते िों कक संसार िाल्न्तपूर्वकम जी सके। गांधी इसी प्रकार का एक ि ै। उसे तब भी याद ककया जाएगा, जबकक उसकी ओर ध्यान न देनेकी शिक्षा देनेर्वािों के नार् एकदर् भुिाए जा चुके िोंगे। भिे ि्ह इस सर्य इस आदि मको प्राप्त कर पाना असम्भर्व प्रतीत िोता िो, परन्तु यि अर्वश्य प्राप्त िोकर रिेगा। ऐसे व्यल्क्त के र्वर्वषय र्ें ि्ह शिखा गया था :

तेरे र्िान साथी िैं,
तेरे साथी िैं जयोल्िास, यंत्रणाएं
और प्रेर् और र्नुष्य का अपराजेय र्न।

र्वि आज स्र्वतन्त्र र्नुष्य निहंि;ै आप चािें तो ऐसे आदर्ि को सिूि पर चढा सकतेिैं, ककन्तुउसके अन्दर जो प्रकाि ि ै, जो सत्य और प्रेर् की हदव्य ज्योतत से आ रिा ि ै, उसे निहं ंबुझाया जा सकता। इन्िहं हदनों र्ें से ककसी हदन र्वि अपना जीर्वन त्याग देगा, ल्जससे र्वि अपनेअनुयातययों को जीर्वन दे सके। संसार ककसी हदन र्ुड़कर उसकी ओर देखेगा और उसे एक ऐसे र्िापुरुष के रूप र्ें प्रणार् करेगा, जो अपनेसर्य से पूर्व मउत्पन्न िो गया था और ल्जसे इस अन्धकारपूण मऔर असभ्य संसार र्ें प्रकाि हदखाई पड़ा था।

6: उत्तर िेख

जब यि पुस्तक शिखी गई थी, उसकेबाद भारत र्ें घटनाएं बिुत तेज़ी से घटह िैं। गांधी का असियोग आन्दिोन, ल्जसर्ें उन र्ाल्िूह नर-नाररयों का, जो वीरता और दम्भ के, प्रताप और नीचता के अववश्र्वसनीय *(अद्भुत)* शश्र्ण थे,े बिहटि िासन के ववरुद्ध तनःस्त्रि ववद्रो के शिए उपयोग ककया गया, *15* अगस्त, *1947* को आंशिक सफिता र्ें सर्ाप्त िुआ। भारत की वतर्मान ल्स्थतत का नैं स्वाधीनता-हदवस पर आकािवाणी द्वारा प्रसाररत अपने वक्तव्य र्ें संकेत ककया था।

भारत की स्वाधीनता

15 अगस्त, 1947 के साथ इततिास और गाथाएं जुड़ती चिह जाएंगी, क्योंकक यि ततथथ प्रजातन्त्र की ओर ववश्व की यात्रा र्ें एक र्ित्वपूण मर्ीि का पत्थर िै। एक राष्र की जनता द्वारा अपनेपुनतनर्माणम और रुपान्तरण के नाटक र्ें यि एक र्ित्वपूण मततथथ िै। भारत की पराधीनता की रात बिुत िम्बी रिह; उसर्ें अनेक भाग्यतनणायमक िकुन िोतेरिे; र्नुष्य स्वाधीनता के अरुणोदय के शिए तनःदिद प्राथनमाएं करते रिे। इस हदवस के शिए ककतनी बशियां चढाई गईं; ककतना रुदन और िोक तथा क्षुधा के प्रेतों और र्ृत्युका ककतना ताण्डव िुआ ! रात-भर पिरेदार अववचशित रिकर पिरा देते रिे; दहप उज्ज्वि काल्न्त से जितेरिे, और अब युग-युगव्यावपनी तनिा का अवसान करनेवािह उषा आ पिुंची िै।

पराधीनता से स्वाधीनता की ओर यि संक्रर्ण प्रजातन्त्रीय पद्धतत से िुआ, यि बात ल्जतनी अद्ववतीय िै, उतनी िह आनन्ददायक भी। बिहटि िोगों का िासन एक सुव्यवल्स्थत ढंग से सर्ाप्त िो रिा िै।

भारत र्ें बिहटि आधधपत्य ककस प्रकार स्थावपत िुआ, उन सब घटनाओं का उल्िेख यिां ंकरनेकी आवश्यकता निहीं। जनता ने इस आधधपत्य को पूरह तरि कभी भी स्वीकार निहं ककया। र्िान भारतीय ववद्रो बिहटि िासन को उखाड़ फेंकने ेके शिए ककया गया पिपिा संगहठत प्रयत्न था। जब ववद्रो को दबा हदया गया, तब 1858 र्ें भारत के अपेक्षाकृत अधधक अच्छे िासन के शिए बनाए गए एक अधधतनयर् द्वारा सारा प्रिासन ईस्ट इंडडया कम्पनी से तछनकर इंगिैंड की रानी के िाथ र्ें चिा गया। वायसराय के प्रोत्सािन पर भारतीय राष्रहय कांग्रेस (इंडडयन नेिनि कांग्रेस) ने स्वराज्य के शिए िोकर्त को संगहठत करने ेका अपना कार् 1885 र्ें िुरू ककया। बोअर युद्ध र्ें अंग्रेज़ों की कहठनाइयों और 1905 र्ें िुए रूस-जापान युद्ध र्ें रूस की पराजय के कारण

भारत र्ें राष्रहयता की भार्वना कफर जाग उठी और क्रांततकारह पद्धततयां अपनाई गईं। 'अिल्न्त' को िान्त करने के शिए 'र्ॉंटे-शर्ंटो सुधार' ककए गए, यद्यवप इन्हिंसुधारों ने पृथक् साम्प्रदातयक प्रतततनधधत्र्व के शसद्धान्त को स्र्वीकार करके दिे र्ें फूट के बीज बो हदए। 1919 और 1935 र्ें जो क्रशर्क सुधार ककए गए, र्वे जनता के बढते िुए प्रततरोध के फिस्र्वरूप िह ककए गए थे। 1942 र्ें कांग्रेस के अहिंसात्र्क प्रततरोध ने अंग्रेज़ो को इतना परेिान कर हदया कक चधचिम तक को र्वर्विि िोकर यिां कक्रप्स शर्िन भेजना पड़ा; चधचिम ने स्र्वयं स्र्वीकार ककया कक कक्रप्स शर्िन उस सर्य भेजा गया था, जब "बंगाि की खाड़ी पर जापातनयों का पूरा नौसैतनक आधधपत्य था, और यि िगता था कक जापातनयों की र्विर्वि सेना भारत पर आक्रर्ण करेगी और उसे ध्र्वस्त कर डािेगी।" युद्ध के बाद अंग्रेज़ों नेदेखा कक इस दिे के राजनीततक संगठन बिहटि िासन को जारह रखनेका सर्थनम निहं ंकरेंगे। िासन पर अधधकार करने ेके प्रयत्नों का पररणार् बिुत बड़े ेपैर्ानेपर साम्प्रदातयक र्ारकाट के रूप र्ें िुआ, ल्जसे अंग्रेज़ न तो रोक िह पाए और न तनयंत्रण र्ें िह रख पाए। असैतनक प्रिासन व्यर्विाररतः टूट िह-सा गया और कानून तथा व्यर्वस्था बनाए रखनेके शिए अंग्रेज़ों को सिस्त्र सेनाओं का प्रयोग करना पड़ता। ऐसा कर पाना िायद उनके बस से बािर था और बिहटि जनता तो ऐसा करनेके शिए तनल्श्चत रूप से िह इच्छुक निहं ंथी। इसशिए 20 फरर्वरह, 1947 को श्री एटिह ने किा कक "अब िर् अपनी भारत- र्वर्षयक िीति की नीतत को पूणतमा तक पिुंचाना चािते िैं" और भारत को छोड़ देना चािते िैं

'िाउस आफ कार्न्स' र्ें श्री एटिह ने इस सािसपूण मत्याग के कृत्य का बड़े ेस्पष्ट अशभर्ान के साथ उल्िेख ककया। उसनेकिा कक यि पििा अर्वसर िै, जबकक ककसी साम्राज्यिल्क्त ने अपनेअधीन उन िोगों को स्र्वेच्छा से अपना प्राधधकार सौंप हदया िो, ल्जनपर कक र्वि िगभग दो िताल्ददयों तक बि और दृढता के साथ िासन करती रिह िो। अतीत र्ें साम्राज्य या तो इसशिए नष्ट िोते रिे कक उनके केन्द्र के तनकट र्वर्वरोधधयों का दबार्व बढ गया, जैसेकक रोर् र्ें, या कफर पररश्राल्न्त के कारण, जैसे स्पेन र्ें, और या कफर सैतनक पराजय के कारण, जैसाकक धुरह िल्क्तयों के र्ार्िे र्ें िुआ। जान-बूझकर प्राधधकार (सत्ता) त्याग देनेकी तुिना अर्ेररका के कफिपाइन्स से र्वापस िट आनेया िायद दक्षक्षणी अफ्रीका से बिहटि िोगों के र्वापस िट आने ेके अततररक्त और किहं ंनिहं िै, यद्यवप इन दोनों र्ें भी पररर्ाण और पररल्स्थततयां भारत की अपेक्षा बिुत शभन्न थीं। ककसी सिक्त राष्र के शिए ऐसा कार् करनेसे अधधक कहठन कुछ निहंिो सकता, ल्जसके र्वर्षय र्ें यि सर्झे जानेकी सम्भार्वना िो कक र्वि दुबिुमता या भीरुता के कारण ककया गया िै। िर् इस बात पर सिर्त िो सकतेिैं कक अंग्रेज़ों ने भारत छोड़नेका तनश्चय दुबिुमता की भार्वना के कारण उतना निहं ंककया, ल्जतना कक खून और इस्पात के उपायों को अपनानेकी अतनच्छा के कारण। उन्िोंने भारतीयों की र्ांग को सुना और एक सािसपूण मराजनीततक काय मद्र्वारा अतीत की दुभामर्वना और संघष मकी स्र्ृतत को पोंछकर साफ कर हदया। जब िर् देखते िैं कक इंडोनेशिया र्ें डच ककस ढंग से बतार्वम कर रिे िैं और फ्रांसीसी ककस प्रकार अपने उपतनर्वेिों से धचपटे िुए िैं, तो िर्ें अंग्रेज़ों" की राजनीततक र्विक्षणता और सािस की सरािना करनी िह िोगी। अपनी ओर से िर्ने भी एक ऐसा उदािरण प्रस्तुत करके, ल्जसर्ें एक पराधीन जातत ने उग्रता का सार्ना धैय मसे करके नौकरिािह अत्याचारों का सार्ना आल्त्र्क िल्न्त द्र्वारा करके अपनी स्र्वतन्त्रता प्राप्त की, संसार के इततिास र्ें एक िानदार अध्याय जोड़ हदया िै। गांधी तथा उसके अनुयातययों ने भारत की स्र्वाधीनता की िड़ाई र्ें तनदोष अस्त्रों तथा सभ्यतापूण म

गौरर्व के साथ भाग शिया था। उन्र्िोंने संघष मर्ें इस ढंग से वर्वजय पाई कक बाद र्ें कोई वर्वद्र्वेष या कटुता की भार्वना िेषे निहंरिह। भारत के गर्वनरम जनरि-पद पर िाड मर्ाउंटबेटन की तनयुल्क्त से यि स्पष्ट िै कक र्िपिे जो कभी िुतुरि थे,े अब उनर्ें ककतनी शर्त्रता और सर्झौते की भार्वना वर्वद्यर्ान िै। इस प्रकार एक िाददह के प्रयन्नों और संघष मके फिस्र्वरूप बिहटि भारतीय इततिास र्ें एक नया युग प्रारम्भ िुआ िै और इसे भवर्वष्य र्ें अब तक स्र्रण रिह घटनाओं र्ें सबसे अधधक र्ित्र्वपूण मसर्झा जाएगा।

परन्तु िर्ारे आनन्द-उलिास पर एक छाया आ पड़ी िै, िर्ारे हृदयों र्ें एक उदासी भरह िै, क्योंकक ल्जस स्र्वाधीनता के िर् स्र्वप्न देखतेथे,े और ल्जसके शिए िर् िड़े ेथे,े र्वि िर्ें निहं ंशरि्ह। घटनाओं का दुरागग्रि हि कुछ
ऐसा िै कक िर्ारे सपनों का स्र्वराज्य ठीक उसकी प्राल्प्त के क्षण र्ें िर्ारह अंगुशियों र्ें से कफसिकर तनकि गया। यहद दोनों उपतनर्वेिों र्ें शर्त्रतापूण मसम्बन्ध स्थावपत न िो जाएं और र्वे दोनों सांझेके हितों के शिए काय मन करें, तो वर्वभक्त भारत पराधीन िह बना रिेगा। िर्ारह तनरािा की र्ात्रा इंग्िैण्ड के टोरह (अनुदार दिहय) िोगों की सन्तुल्ष्ट र्ें प्रततबबल्म्बत िुई िै। जिां एक ओर चधचिम ने कैबबनेट शर्िन की ररपोटम को एक 'वर्वषादपूण मिेख' और भारत छोड़नेकी घोषणा को 'जानबूझकर जिाज़ को डुबाना' बताया था, र्विांउसनेर्वतर्मान योजना का उत्सािपूर्वकम सर्थनम ककया था, ल्जससे यि सूधचत िोता िै कक यि योजना भारत के सम्बन्ध र्ें अनुदार दि की
नीतत को कक्रयाल्न्र्वत करती िै।

एक ऐसे सर्य, जबकक संसार के राज्य शर्िकर बड़े–बड़े ेसर्ूि बननेके शिए प्रयत्निीि िै, िर् उस राजनीततक और आधथकम एकता के िाभ को परे फेंक दे रिे िैं, जो बिहटि िासन से इस दिे को प्राप्त िुई थी। उधर तो नई दिाओं के कारण यि आर्वश्यक िो गया िै कक आधथकम योजनाएं र्िाद्र्वीपीय पैर्ाने पर बनाई जाएं, और इधर िर् कफर वर्वभक्त भारत की ओर िौट रिे िैं। एक सेना के बजाय दो सेनाएं रिनेसे भारत अधधक सुरक्षक्षत रिेगा या निहंयि देखना अभी बाकी िै।

र्िारे नेताओं ने दिे के वर्वभाजन का तनणयम करने ेकी ल्ज़म्र्ेदारह इसशिए िान के साथ उठा िह, क्योंकक और कोई ऐसा वर्वकलप था िह निहं,ं जो सब वर्वशभन्न पक्षों को स्र्वीकार िोता। एक के बाद एक, आत्र्सर्पणम के काय मकरते-करते िर् ऐसी ल्स्थतत तक आ पिुंचे ेथे,े ल्जसर्ें से तनकि पाने का एकर्ात्र उपाय दिे का वर्वभाजन िह था।

भारत र्ें वर्वशभन्न प्रकार के अंग्रेज आए; ऐसे अंग्रेज़, जो सैकड़ों वर्वशभन्न कारणों से यिां ंआए; पादरह और पादररने, व्यापारह और अशभयात्री, सैतनक और कूटनीततज्ञ, राजनीततज्ञ और आदिर्वमादह। उन्र्िोंने ेयिां ंरण-प्रयाण ककए और युद्ध िड़े;े यिांउन्र्िोंनेर्िि खरहदा और बेचा; यिां ंउन्र्िोंने षड्यन्त्र रचे ेऔर िाभ उठाया। परन्तु उनर्ें सबसे र्िान र्वे थे,े ल्जन्र्िोंने भारत के सार्ाल्जक और आधथकम स्तर को तथा राजनीततक प्रततष्ठा को ऊंचा उठाना चािा। उन्र्िोंने जनता के कलयाण के शिए और दिे को आधुतनक बनाने के शिए काय मककया। परन्तु उनर्ें जो क्षुद्र र्न के िोग थे, र्वे कपटपूण मउद्देश्यों को िेकर काय मकरते रिे। जब पृथक् साम्प्रदातयक चुनार्व-पद्धतत स्र्वीकार कर िह गई, तब िेडी शर्ंटो को एक र्ित्र्वपूण मपदाधधकारह से एक पत्न प्राप्त िुआ था; िेडी शर्ंटो ने इस पत्तन का

उलिेख ककया िै, ल्जसर्ें शिखा था, "र् ैंआपकी सेर्वा र्ें एक पंल्क्त शिखकर यि सूधचत करना चािता िूंू कक आज

एक बिुत, बिुत बड़ी बात िो गई िै। यि राजनय का एक ऐसा काय िमै ल्जसका प्रभार्व भारत पर और 'भारत के इततिास पर अनेक सुदहघ मर्वषों तक पड़ता रिेगा। यि सर्वा छः करोड़ िोगों को राजद्रोि वर्वरोधधयों र्ें सल्म्र्शित िोने सेे रोक देनेसे कुछ कर् निहं िै।" पृथक् चुनार्व-पद्धतत से साम्प्रदातयक चेतना बिुत बढ गई और उससे अवर्वश्र्वास और वर्वरोध का ऐसा र्वातार्वरण उत्पन्न िो गया कक पाककस्तान की र्ांग उठ खड़ी िुई। कक्रप्स-प्रस्तार्वों ने पाककस्तान का बनना सम्भर्व कर हदया और उनसे र्ुसिर्ानों नेस्र्वभार्वतः यि अथ मतनकािा शिया कक अंग्रेज़ उनके पाककस्तान के प्रस्तार्व का सर्थनम करेंगे। कैबबनेट शर्र्न नेजिां पाककस्तान की र्ांग को अस्र्वीकार कर हदया, र्विां दूसूरह ओर उसने केन्द्र के अधधकारों को सीशर्त करके और अनुभागों तथा सर्ूिों का प्रस्तार्व रखकर पाककस्तान की र्ांग को काफी बड़ी सीर्ा तक र्ान शिया। कांग्रेस की इस घोषणा से, कक र्वि दिे के ककसी भी अतनच्छुक प्रदिे पर संवर्वधान को बिपूर्वकम निहं िादेगी, र्ुल्स्िर् िहग को दिे का र्ुल्स्िर् और गैर-र्ुल्स्िर् क्षेत्र र्ें वर्वभाजन करने की र्ांग पर डटे रिने र्ें प्रोत्सािन शर्िा। इततिास को ज्ञात ऐसी कोई सरकार कभी निहं ंिुई, ल्जसे िठी वर्वरोधधयों का सियोग प्राप्त करने ेके शिए कभी न कभी बि-प्रयोग न करना पड़ा िो। जब दक्षक्षणी अर्ेररका के राज्यों ने स्र्वाधीनता की, अपना िासन आप करने ेके अधधकार की र्ांग की, तब िािर् शिंकन ने यि किकर र्वि अधधकार देने से इनकार कर हदया कक इससे नई दुतुनया र्ें प्रजातन्त्र इतना अधधक वर्वभक्त िो जाएगा कक र्वि अपनी रक्षा न कर सकेगा; इस इनकार करने ेके कारण कफर चािे उसे ज्ञात इततिास का एक घोरतर् रक्तपातपूण मयुद्ध भी िड़ना पड़ा था; परन्तु कांग्रेस तो अहिंसा के शसद्धान्त से प्रण-बद्ध थी, र्वि राष्रहय एकता वर्वकशसत करनेके शिए बि का प्रयोग निहंकर सकती थी। 20 फरर्वरह, 1947 के र्वक्तव्य र्ें यि ध्र्वतन थी कक बिहटि सरकार केन्द्र र्ें ककसी न ककसी प्रकार की सरकार को, या कुछ क्षेत्र्ों र्ें उस सर्य वर्वद्यर्ान प्रान्तीय सरकारों को या ककसी अन्य ऐसे रूप र्ें, जैसा कक स्र्वतन्त्र राष्र के सर्वोत्तर् हितों के शिए अधधकतर् तकमसंगत प्रतीत िोगा, सत्ता िस्तान्तररत कर देगी। र्वतमर्ान योजना इस सारे घटनाक्रर् का स्र्वाभावर्वक पररणार् िै। बिहटि िोगों द्र्वारा अतीत र्ें हदए गए प्रोत्सािन और िर्ारे नेताओं की र्वतमर्ान र्नोदिाएं इतनी प्रबि रिहंकक कोई शर्त्रतापूण मसर्झौता निहं ंिो सका।

र्िं सारे उत्पात का कारण अंग्रेज़ों को निहं ंकि सकते। िर्ने स्र्वयं पृथकता की नीतत को सिारा हदया िै। िर् उसके चटपट शिकार िो गए। यहद िर् अपनेचररत्र के राष्रहय दोषों को निहंसुधारेंगे, तो िर् संयुक्त भारत का पुनतनमर्माणम निहं ंकर सकते। िर्ारे सम्र्ुख राजनीततक वर्वभाजन की सर्स्या उतनी बड़ी निहं, ल्जतनी कक र्नोर्वैज्ञातनक फटार्व की। आज भारत अपनी प्रकृत दिा र्ें निहं िै। संधचत अवर्वश्र्वासों और तनार्वों के घटनेर्ें सर्य िगेगा। यहद स्र्वतन्त्रता को एक सकारात्र्क, गततिीि और उन्र्ोचनकारह िल्क्त बनना िै, तो उसे अपने-आपको एक-दूसूरे के वर्वचारों, सत्यों और वर्वश्र्वासों के प्रतत सहिष्णुता के रूप र्ें प्रकट करना िोगा। िर्ें इस भ्रर् र्ें निहं ंरिना काहिए कक क्योंकक दिे वर्वभक्त िो गया िै, इसशिए संकट टि गया िै। तनार्व की सार्तयक क्षखणक शिधथिता िह काफी निहं।

भिे िह िर्ारे हृदय िोक से भरे िों, कफर भी िर्ें अपने दिे को प्रगतत के पथ पर िे चिना िोगा। भारत का राजनीततक िरहर अब निहं ंरिा, परन्तुउसका ऐततिाशसक िरहर अब भी जीववत िै, चािे वि ककतना िह अन्यर्नस्क, और अपनेववरुद्ध ववभक्त और अपनेअल्स्तत्व सेककतना िह अनजान क्यों न िो। राजनीततक ववभाजन स्थायी निहं ंिोते। सांस्कृततक और आध्याल्त्क बन्धन किहं अधधक धचरस्थायी िोतेिैं। िर्ें सावधानी और श्रद्धा के साथ उनको बढाना चाहिए। भारत र्ें इस्िार् धर्-मपररवतनम द्वारा फिा िै- आव्रजन द्वारा निहं। नदबे प्रततित र्ुसिर्ान उसी एक िह सार्ाल्जक और नकृिहय (नर जातीय) वगं केिैं, उत्तराधधकार र्ें उन्िें विह एक िह संस्कृतत शरि्ह िै, वे उसी एक िह प्रदिे र्ें रितेिैं और उनकी आदतें तथा ववश्वास की पद्धततयां भी विह एक िह िैं, जो गैर-र्ुसिर्ानों की िैं। िर्ें एकता का ववकास शिक्षण की धीर्-ेधीर्ेप्रकक्रया द्वारा, धैयपूमण मववचार द्वारा और अन्ततः इस बात को हृदयंगर् करके करना िोगा कक ल्जन प्रश्नों को िेकर दिे का ववभाजन िुआ था, वेकभी के पुराने ेपड़ चुके िैं। साम्प्रदातयकता का इिाज िििे गरहबी, बीर्ारह, तनरक्षरता, कृवषक तथा औद्योधगक वपछड़ेपेन की बुराइयों को दूरू करने से िोगा। यहद इन बुराइयों पर काबू पा शिया जाए, तो िायद साम्प्रदातयक र्तभेद इतनेगम्भीर रूप से उत्तेजक न रिें। पाककस्तान के दो भागों के बीच र्ें भारतीय उपतनवेि फैिा िुआ िै और संचार के र्ार्गों र्ें पाककस्तान को भारत से ककसी न ककसी प्रकार का सम्बन्ध बनाना िह िोगा। इंडोनेशिया के प्रश्न पर दोनों उपतनवेिों की वविदे नीतत एक िह िै। अन्य कई ववषयों र्ें भी भौगोशिक ल्स्थतत के कारण दोनों को एक िह वविदे नीतत रखनी िोगी। जि–ल्क्त और पररविन के ववकास के शिए भी दोनों को शर्िकर कारमवाई करनी िोगी। इस प्रकार िर् पारस्पररक कलयाण के शिए दोनों उपतनवेिों के सियोग द्वारा, उनके तनवाशसयों के अबाध परस्पर शर्िन द्वारा और सांझे ेआदिों की रक्षा द्वारा दिे की यथाथ मएकता को बढा सकतेिैं। दिकते िुए भाषणों और संस्तावों से कार् निहं ंचिेगा। क्रोध की भाषा कभी भी कार् को संवारती निहं। इस सर्य की आववश्यकता िै- धीरज और एक-दूसूरे को सझनेका यत्न ।

स्वयंकर जब िर् यि अनुभव करते िैं कक अब िर् अपनेस्वार्ी स्वयं िैं, िर् अपने भववष्य का तनर्ाणम सकतेिैं, तब िर्ें उलिास की अनुभूतत िोनी चाहिए। सम्भव िै कक िर् गिततयां कर बैठें- भारह गिततयां, ल्जनसे िायद बचा जा सकता था- परन्तुस्वतन्त्रता प्राप्त िोने ेवािह प्रेरक िल्क्त की तुिना र्ें ये कुछ भी निहं ंिैं। इस सर्य वविद्यर्ान दिाएं िर्ारह सक्षर्ता और बुद्धधर्त्ता को चुनौती िैं। सबसे बड़ी ववपदा तब आती िै, जब िल्क्त (अधधकार) योग्यता की अपेक्षा अधधक िो जाती िै। ऐसा न िो जाए कक जब परख का अवसर आया, तो िर् अनुपयुक्त शसद्ध िुए। िर्ें हदव्य दिे शर्ि निहं ंगया िै। िर्ें उस तक पिुंचने ेका र्ाग मसाफ करने ेके शिए कार् करना िोगा। र्ाग मिम्बा िै और दुगुर्म िै। सम्भव िै कक यि रक्त और अश्रुओं र्ें से, श्रर् और कष्टों र्ें से िोकर गुज़रे। अन्त र्ें जनता की ववजय िोगी। िायद उसे देखने के शिए िर्ें से कुछ िोग जीववत न रिें, परन्तु िर् उसका भववष्य-दिनम अवश्य कर सकतेिैं।

सभ्यता कोई ठोस और बाह्य वस्तु निहिं। यि तो जनता का स्वप्न िै, र्ानवीय अल्स्तत्व की उनकी कलपना-प्रवण व्याख्या, र्ानवीय जीवन के रिस्य के ववषय र्ें उनका बोध। िर्ारह ववक्षक्षप्त र्ानवीय ज्ञान-वाहितनयां उनकी अपेक्षा एक वववेतर प्रयोजन चािती िैं, जो जाततयों और बबरादररयों से िर्ें शर्िते िैं, एक

ऐसा प्रयोजन, जो िर्ें िर्ारह क्षुद्रता से रु्क्त कर दे। पररर्ात्र्ा के सम्र्ुख वर्वनीत भार्व से खड़े ेरिकर, इस बात को अनुभर्व करते िुए िर् एक आवर्वभूतम िोते िुए प्रयोजन के शिए काय मकर रिे िैं, िर् अपनेकाय मर्ें जुट जाएं और अपनेइततिास के इस रिान क्षण र्ें िर् अपना व्यर्विार ऐसा रखें, जो भारत की कििातीत आप के सेर्वकों के शिए िोभास्पद िो।

सर्भूवतस्थमात्मानं ंसर्भूवतानन चात्मनन
सम्पश्यन् ्आत्मयाजी रै् स्र्राज्यमधिगच्छनत।

पररशिष्ट-

संस्थापककापत्र

(कमलाभाषणपीठकेसम्बन्ध् मेंं)

77, रसा रोड नाथ म
भर्वानीपुर, किकत्ता,

9 फरर्वरह, 1924

सेर्वा र्ें,

रल्जस्रार,

किकत्ता वर्वश्र्वववर्वद्याय

रर्ोदय,

र् ैंएक भाषण-पीठ की स्थापना के शिए, ल्जसका नार् र्ेरह वप्रय पुत्री करर्ा (जि 18 अप्रैि, 1895 - स्र्वगर्वमास 4 जनर्वरह, 1923) की स्र्तृत र्ें 'करर्ा भाषण-पीठ' िोगा, अपनेवर्वश्र्वववर्वद्याय को 3 प्रततित दयाजर्वाि 40 िज़ार रुपये की सरकारह शसक्यूररहटयां ंसौंप देना चािता िंू। भाषणकताम, ल्जसकी तनयुल्क्त प्रततर्वष म सीनेट ककया करेगी, बंगिा या अंग्रेज़ी र्ें 'हिन्दू ूजीर्वन और वर्वचार' के ककसी िििू पर कर् से कर् तीन 'भाषण हदया करेगा, ल्जनर्ें वर्वषय का प्रततपादन तिुनात्रक दृल्ष्टकोण से ककया जाएगा।

इस भाषण-पीठ के शिए तनम्नशिखखत योजना रिेगी:

(1) प्रततर्वष म31 र्ाच मतक पांच सदस्यों की एक 'वर्विेष सशर्तत' तनम्नशिखखत ढंग से बनाई जाया करेगी :

- आट्मस फैकल्टह का एक सदस्य आट्मस फैकल्टह द्र्वारा नर्ोनीत ककया जाएगा।
- साइंस फैकल्टह का एक सदस्य साइंस फैकल्टह द्र्वारा नर्ोनीत ककया जाएगा।
- एक सदस्य एशियाहटक सोसाइटह अफ बंगिा की पररषद् द्र्वारा नर्ोनीत ककया जाएगा।
- एक सदस्य बंगीय साहित्य-पररषद् द्र्वारा नर्ोनीत िोगा।
- एक सदस्य संस्थापक द्र्वारा या उसके प्रततततनधधयों द्र्वारा नर्ोनीत िोगा।

(2) वर्विेष सशर्तत, जैसी भी आर्वश्यक सर्झे,े जांच-पड़ताि करके 30 जून तक ररपोटम तैयार करेगी, ल्जसर्ें सीनेट के सम्र्ुख एक ख्याततप्राप्त वर्वद्र्वान के नार् का सुझार्व रखा जाएगा। इस ररपोटम र्ें उन प्रस्तावर्वत भाषणों के वर्वषय और उनके वर्वस्तार-क्षेत्र का संक्षक्षप्त वर्वर्वरण भी रिेगा।

(3) वर्विेष सशर्तत की ररपोटम शसंडीकेट के पास भेज दह जाएगी, ल्जससे र्वि सीनेट के सम्र्ुख 31 जुिाई तक पुल्ष्ट के शिए प्रस्तुत कर दह जाए।

(4) सीनेट, सुतनल्श्चत कारण बतातेिुए, वर्विेष सशर्तत से अपनेतनश्चय पर पुनवर्वचमार करने ेका अनुरोध कर सकती िै ककन्तु ुउसे यि अधधकार न िोगा कक र्वि वर्विेष सशर्तत द्र्वारा सुझाए गए नार् के स्थान पर कोई और नार् रख सके।

(5) सीनेट द्र्वारा तनयुक्त भाषणकताम सीनेट िाउस र्ें भाषण देगा, जो आगार्ी जनर्वरह र्ास के बाद निहं ंिोना चाहिए।

(6) किकत्ता र्ें भाषण हदए जा चुकने के बाद शसंडीकेट इस बात का प्रबन्ध ककया करेगा कक र्वे भाषण र्ूि रूप र्ें या कुछ संधिधित रूप र्ें किकत्ता से बिार कर् से कर् एक और स्थान र्ें हदए जाएं। इसके शिए शसंडीकेट आर्वश्यकतानुसार यात्ना-भत्ता देगा।

(7) भाषणकताम का र्ानदेय एक िज़ार रुपये नकद और दो सौ रुपये र्ूलय का एक स्र्वण-म पदक िोगा। र्ानदेय केर्वि तभी हदया जाएगा, जबकक भाषण हदए जा चुकेंगे और भाषणकताम उन भाषणों की र्ुद्रण-योग्य पूण म पांडुशिवप रल्जस्राार को सौंप देगा।

(8) ये भाषण हदए जा चुकने ेके बाद छः र्ास के अंदर वर्वश्र्ववर्वद्यािय द्र्वारा प्रकाशित ककए जाएंगे और र्ुद्रण का व्यय तनकािने के बाद बबक्री से िुई िेषे आय भाषणकताम को दे दह जाएगी। इन भाषणों का िेखस्र्व (कापीराइट) भाषणकताम के पास रिेगा।

(6) जो व्यल्क्त एक बार भाषणकताम तनयुक्त िो चुकेगा, र्वि पांच र्वष मबीतनेसे पििे दुबारा तनयुक्त िोनेका पात्न न िोगा।

आपका वर्श्र्ासभाजन

आशुतोष मुखजी

अनुक्रर्खणका

अ

आ

इ

ई

उ

ए

ऐ

ओ

औ

ऋ

क

ख

ग

च

ज

ट

ड

त

थ

ब

म

य

र

ल

र्

स

श

ि

प्रस्तुत पुस्तक के िेखक, भारत के भूतपूर्व मराष्रपतत, डॉ० सर्वेपल्लि राधाकृष्णन् ्वर्वश्र्व प्रशसद्ध दातमनक थे। उनके वर्वचार वर्वश्र्व की ऐततिाशसक घटनाओं की पृष्ठभूशर् र्ें भारतीय तथा पाश्चात्य वर्वद्र्वानों के र्त के साथ उनकी (िेखक की) तनजी र्ान्यताओं के तुिनात्र्क अध्ययन के रूप र्ें यिां ंसंकशित िैं। सार्वकमाशिक सत्य के रूप र्ें एक प्रौढ धाशर्कम र्ल्स्तष्क से तनकिे ये वर्वचार वर्वर्ेषेत: "आज के युद्धाकुि संसार के शिए आिंकाओं और अनाचारों के वर्वरुद्ध आिाओं ंऔर वर्वश्र्वासों के संकेत िैं।"

प्रस्तुत पुस्तक धर् मऔर सर्ाज ररिहजन ऐण्ड सोसाइटह का हिन्दह अनुर्वाद िै। इसर्ें धर् मकी आर्वश्यकता, धर् मकी प्र्ेरणा और नई वर्वश्र्व-व्यर्वस्था, हिन्दू–र्धर्,म हिन्दू–र्सर्ाज र्ें नारह का स्थान और युद्ध और िांतत वर्वषयक दातमनक वर्वचारों के तनबन्ध र्वक्तव्य के रूप र्ें संगृहत िैं, जो िेखक ने कर्िा भाषण-पीठ, किकत्ता वर्वश्र्ववर्वद्यािय र्ें सर्य-सर्य पर हदए िैं।

आर्वरण धचत्र एस गोपाि

आर्वरण डडज़ाइन: स्केनसेट

ISBN 978-9-353-49358-5

9789353493585

MRP 299 (incl.ofall taxes)

www.penguin.co.in

FSC

jab-ters/buy-hott